TANTRA SIDDHI- HAAJRAAT SAADHNAA

फटे कपडे, बिखरे और उलझे बाल , अजीब सी ही वेशभूषा थी उनकी और बहुत असहज सा महसूस कर रहा था मैं उनके साथ , पर बंगाली माँ का आदेश था मेरे लिए की मुझे उनके साथ रहना है और सदगुरुदेव के द्वारा प्रदत्त विभिन्न साधनाओं का जो संकलन और अनुभव उन्होंने प्राप्त किया है वो मुझे उनके सानिध्य लाभ से लेना है. उनके पास ऐसा संकलन है ऐसा सुनकर मैं काली खोह (विन्ध्याचल) से मुगलसराय स्टेशन पहुंचकर जबलपुर जाने वाली ट्रेन में बैठ गया .

रास्तेभर जो भी माँ ने उनके बारे में बताया था वही सब सोचता रहा , जबलपुर पहुच कर पहले बाज्नापीठ जाकर भैरव के दर्शन किये और फिर माँ नर्मदा के तट की और चल पड़ा. जबलपुर मेरा इसके पहले भी कई बार जाना हो चूका था. और आश्चर्य की बात ये है की हर बार एक नवीन रहस्य ही मेरे सामने खुलते जाता साधना जगत का.

एक से एक सिद्धों से भरा हुआ शहर , चाहे वो जैन तंत्र से सम्बंधित हो या फिर मुस्लिम या शाबर तंत्र से सम्बंधित , किसी ज़माने में यहाँ की जाने वाली तांत्रिक क्रियाओं का कोई जवाब नहीं होता था पर समय के साथ साथ ये सिद्ध और इनकी परम्पराएँ गुप्त सी ही हो गयी थी. भाई अरविन्द, हसदबक्स , जीवन लाल , मणिका नाथ , अवधूती माँ और अब एक नए गुरुभाई पारितोष बनर्जी से मुलाकात होने जा रही थी.

सन १९९३ की बात है चैत्र नवरात्री का शिविर संपन्न होने के बाद मैं अपनी साधनाओं के लिए सीधे विन्ध्याचल बंगाली माँ के पास चला गया था और तबसे से गर्मी, गर्मी और गर्मी.उस शिविर में ही गुरुदेव ने एक नवीन तथ्य का मुझे ज्ञान दिया था की **“तुम शाक्त साधनाओं को संपन्न करने के लिए विन्ध्याचल चले जाओ और ध्यान रखो की शाक्त साधनाओं के स्वर तंत्र का गहन अभ्यास करना,उससे साधनाओं में शीघ्र ही सफलता मिलती है क्योंकि बाये स्वर द्वारा जब श्वास प्रश्वास की क्रिया चल रही हो तभी शक्ति मन्त्रों का जप उचित होता है क्योंकि मन्त्र पुरुष तब चैतन्य होता है और दाये श्वास प्रश्वास की क्रिया के मध्य शक्ति सुप्त रहती है परन्तु और बेहतर होता है की जिस भी मंत्र का जप किया जा रहा हो उस मन्त्र के पहले और बाद में “ई” बीज जो की कामकला बीज है लगाकर जप करने से भगवती शक्ति की निद्रा भंग हो जाती है” इसी तथ्य को ध्यान में रख कर अपनी साधनाएं मैंने पूरी की.**

वहाँ से जब जबलपुर पंहुचा था तब मई का मध्य आ गया था और मई की गर्मी जैसे दिमाग को फोड ही डालती , सूरज सिर को जैसे पिघलाने को ही आतुर था, बोतल का पानी भी

खत्म होने वाला था पर जैसे तैसे जी कड़ा कर मैं लगातार चलते ही जा रहा था . मुझे माँ ने बताया था की तुम्हे सरस्वती घाट से नीचे उतर कर बस सीधे हाथ की तरफ नाक की सीध में चले जाना. लगभग ३ किलोमीटर के अंदर ही शमशान से लगी हुयी उनकी झोपडी है .
पर मैं उन्हें पहचानूँगा कैसे –मैंने माँ से पूछा था.
तुम उसे नहीं बल्कि वो तुझे पहचान लेगा-माँ ने कहा .
बस इसी शब्द के सहारे मैं चलता चला जा रहा था , नर्मदा जी की धाराओं में जो गति धुआँधार में रहती है उससे कही ज्यादा सौम्यता बस उससे २ कि.मी. आगे इस सरस्वती घाट से लगकर बह रही उनकी धाराओं में थी. तपती दोपहरी में जो सुकून मुझे जल को बहते देखकर हो रहा था वो शब्दों में वर्णन नहीं किया जा सकता है. सबसे पहले मैंने जी भर कर नहाया ,वस्त्र बदले और आगे बढ़ता चलागया नदी के किनारे किनारे ही. अचानक किसी ने मेरे नाम को पुकारा .... मैंने रुक कर देखा एक मध्यम कद काठी का गौर वर्णीय व्यक्ति मुझे हाथ हिलाकर आवाज़ दे रहा था. मैं उस और बढ़ गया.

जब मैं उनके नजदीक पंहुचा तो उन्होंने ‘जय गुरुदेव’ कहकर मेरा अभिवादन किया , मैंने भी उत्तर दिया तो उन्होंने मुझे साथ चलने के लिए कहा, बाकी सब तो ठीक था पर उनकी वेश भूषा से मुझे बड़ी कोफ़्त हो रही थी, खैर जैसे तैसे उनके घर तक पहुचे, कच्चा मकान जिसमे मात्र दो कमरे थे , एक कमरा रसोई और बैठक के काम आता था और दूसरे में बहुत सारे हस्तलिखित ग्रन्थ,खरल,मृग चर्म आसन,बाजोट,बाजोट पर करीने से रखे विविध यंत्र तथा पूर्ण तेजस्वी तथा भव्य सदगुरुदेव का चित्र उस कमरे को भव्य ही बना रहा था.

चाहे बाहर से कितना ही छोटा दिख रहा था वो मकान पर भीतर से अजीब सा सुख लग रहा था उस घर में, उस तपते दिन में भी अजीब सी शीतलता थी वहाँ पर.

शाम हो गयी थी,पारितोष भाई अपनी मध्यान्ह साधना में व्यस्त थे और अब शाम घिर आई थी.वे साधना कक्ष से बाहर निकले और मेरे पास बैठ गए, मैं भी भोजन और नींद लेकर स्फूर्ति से भर गया था.वे मुझे लेकर नदी के तट पर चले गए जहा हम पानी में पैर लटका कर बैठ गए और बहुत देर तक चुप रहने के बाद मैंने उनसे उनके बारे में पूछा तो, उन्होंने कहा-“ सन १९८२ में मेरी सदगुरुदेव से मुलाकात हुयी थी तब मैं अपने ननिहाल मिदनापुर (बंगाल) गया हुआ था, नाना जी कि तंत्र में बहुत रूचि थी और उन्होंने सदगुरुदेव से दीक्षा लेकर विविध साधनाएं भी संपन्न कि थी. बंगाली होने के नाते स्वभावगत हम सभी माँ आदि शक्ति कि पूजा करते थे, मेरा रुझान माँ काली कि साधनाओं में कही ज्यादा था , मैं घंटो नाना जी के पास बैठ कर उनकी साधनाओं के अनुभव को सुना करता था.वे भी अपने अनुभव बताते और कई चमत्कार भी

दिखलाते. क्या मैं भी ऐसा कर पाउँगा-मैंने नाना जी से पूछा. बिलकुल कर पाओगे, पर तंत्र का रास्ता इतना सहज नहीं है, तलवार कि धार पर चलने से भी ज्यादा खतरनाक है पर,ये बहुत आसान हो जाता है यदि कोई समर्थ गुरु आपको अपना ले तो. तब मेरी जिज्ञासा और रुझान को देखकर उन्होंने मुझे सदगुरुदेव से मिलवाया और उनसे दीक्षा देने कि प्रार्थना की.सदगुरुदेव ने मुझे दीक्षा दी और फिर मैं उनके निर्देशानुसार साधनाएं करने लगा, समय के साथ साथ साधनाओं को गति भी मिलने लगी. सफलता असफलता दोनों को पूरे मन से स्वीकार करता था मैं . ये देखकर एक बार सदगुरुदेव जब जबलपुर आये तब,उन्होंने मुझे अपने हाथ से लिखी हुयी एक तीन मोटी मोटी डायरी दी. जिसमे उन्होंने विविध प्रकार के तांत्रिक प्रयोग लिखे थे, बस उन्ही डायरी के आधार पर मैं साधनाएं संपन्न करने लगा और विविध प्रकार की सफलता भी मैंने पाई."

रात होते होते ही हम वापिस लौट आये. रास्ते में उन्होंने बताया की वे जीवन यापन के लिए बैंक में जॉब करते हैं. और उनका स्थायी निवास गोरखपुर(जबलपुर) में है , पर वो अपनी साधनाओं की वजह से विगत कई वर्षों से यहाँ पर रह रहे हैं. और मैं हमेशा ऐसा नहीं रहता हूँ- उन्होंने अपने स्वरुप की तरफ इंगित करते हुए कहा और हँसने लगे.

मैं अभी कोई अघोर क्रम कर रहा हूँ इसलिए ऐसी वेशभूषा हो गयी है, इसके लिए मैंने ३ महीने की बैंक से छुट्टी भी ली हुयी है.

रात में उन्होंने अपनी प्रेत शक्तियों की मदद से मेरा मनपसंद भोजन बुलवाया.

क्या आपको भय नहीं लगता?

किससे-उन्होंने पूछा .

इन भूत प्रेतों से ...

क्यूँ लगेगा भला, ये तो अत्यधिक निरापद होते हैं.और सदगुरुदेव ने इनको सिद्ध करने की इतनी सहज विधियाँ बताई हुयी है की सामान्य व्यक्ति भी भली भांति अपना जीवन यापन करते हुए इनको सिद्ध कर सकता है. रात को उन्होंने कालिका चेटक का प्रयोग कर स्वर्ण का निर्माण कर के दिखाया , पारद विज्ञानं के माध्यम से रत्नों का निर्माण कैसे होता है ये समझाया. उच्छिष्ट गणपति प्रयोग के द्वारा वशीकरण की अत्यधिक सरल क्रिया बताई. रोगमुक्ति, बगलामुखी साधना द्वारा शत्रु स्तम्भन का सरल मगर तीव्र प्रभावकारी प्रयोग,शमशान चैतान्यीकरण प्रयोग , दीप स्तम्भन का विधान समझाया, किन मन्त्रों से तंत्र प्रयोग दूर किया जाता है उसकी मूलभूत क्रिया समझाई. पूर्वजन्म दर्शन की गोपनीय क्रिया बताई. व्यापार वृद्धि के एक से बढ़कर एक प्रयोग प्रायोगिक रूप से करके दिखाया और इन सभी साधनाओं का आधार उन डायरियों को मुझे

देखने और नोट करने के लिए दिया, वे डायरियां १९६३,६५,६८ और ७३ की थी मैंने लगभग ४६८ प्रयोगों को उनमे से २२ दिनों में लिखा. बाद में भी कई बार मैं उनके पास गया और उन्होंने उदारतापूर्वक उन क्रियाओं और साधनाओं को मुझे समझाया भी और लिखने भी दिया

एक से बढ़कर एक प्रयोग थे वे सभी,बाद में मैंने उनमे से बहुत से प्रयोग और साधनाएं संपन्न की तथा पूरी तरह सफलता भी पाई. जब इस अंक का विचार आया था तो हम सभी अपनी साधनाओं के लिए ६४ योगनी मंदिर में मिले थे तब मैंने उनसे निवेदन किया तो उन्होंने मुझे कहा की अब वो प्रयोग तुम्हारे अपने हैं तुम उन्हें निश्चित ही अन्य गुरुभाइयों और बहनों के साधनात्मक जीवन को आगे बढ़ाने के लिए देने के लिए स्वतंत्र हो

हाजरात प्रत्यक्षीकरण प्रयोग

शुक्रवार को चाँद निकलने के बाद जौ के सवा किलो आटे से एक पुतला बनाओं जिसे की हाजरात कहा जाता है, ये क्रिया शहर या गाँव के बाहर किसी मजार पर जाकर संपन्न की जा सकती है. टोंटीदार लोटे में पानी अपने साथ लेजाकर अपने हाथ पाँव,मुह धो ले और लुंगी तथा जाली दर बनियान या कुरता धारण करे रहे , यदि हरा आसान और वस्त्र हो तो ज्यादा बेहतर रहता है .उस मजार पर हिने का इत्र और मिठाई चढ़ा दे और आसन पर वीर आसन की या नमाज पढ़ने की मुद्रा पश्चिम दिशा की और मुह करके बैठ जाये और दिशा बंधन कर अपने सामने हाजरात को स्थापित कर सबसे पहले १०१ बार दरूद शरीफ पढ़े.

अल्लाह हुम्मा सल्ले अला सैयदना मौलाना मुहदिव बारीक़ वसल्लम सलातो सलामोका या रसूलअल्लाह सल्ललाहो ताला अलैह वसल्लम.

इसके बाद निम्न मन्त्र की हकीक माला से ११ माला करे और ये क्रम एक शुक्रवार से दुसरे शुक्रवार तक करना है,पुतला वही रहेगा जिस पर आपने पहले दिन साधना की है.ऐसा करने से हाजरात प्रत्यक्ष हो जाता है तब उससे तीन बार वचन लेकर उसे जाने को कह देना और जब भी जरुरत हो उसे बुलाकर कोई भी उचित कार्य करवाया जा सकता है. कमजोर दिल वाले साधक इस साधना को ना करे और करने के पहले गुरु की आज्ञा अवश्य ले लें.

मंत्र- **या यैययल अलऊ इन्नी कलकिया इलैलया किताबून करीम**
ईन्न उन्नुहु मिन सुलैमाना मिन्न हु बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

अर्ध रात्रि का समय था और आकाश में चतुर्दशी का चंद्रमा अपनी चांदनी को बिखेर रहा था,सामने नर्मदा का जल कल-कल की ध्वनि के साथ बह रहा था,और ठंडी हवा बहते पानी को छू कर शीतलता का अनुभव दे रहा था,हम भेडाघाट के तट पर बैठकर आपस में वार्ता कर रहे थे.कई दिन हो गए थे मुझे यहाँ आये हुए.नित्य तंत्र के नवीन रहस्यों का उद्घाटन होना आम बात थी. नित्य रात्रि को हम भिन्न भिन्न घाटो पर बैठकर तंत्र की चर्चा करते और मध्य रात्रि और ब्रम्ह मुहूर्त में साधना का अभ्यास करता.मेरे मन की विविध उलझनों को सुलझाने का दायित्व उन्ही दोनों अग्रजों ने जो ले रखा था.पारितोष भाई और अवधूती माँ का साहचर्य जो मुझे प्राप्त था.

भाई, ये चौसठ योगिनी मंदिर का क्या रहस्य है ?

अरे भाई, जब माँ यहाँ पर उपस्थित है तो भला मैं कैसे कुछ कह सकता हूँ.आप माँ से ही इस विषय की जानकारी लीजिए ,उन्होंने सदगुरुदेव के निर्देशन में यहाँ के कई गुप्त रहस्यों को आत्मसात किया है.

हाँ हाँ क्यूँ नहीं,निश्चय ही इस रहस्य को तो प्रत्येक साधक को समझना ही चाहिए,साधना की पूर्णता योगिनियों की कृपा के बगैर.अगम तंत्र ६४ भागो में विभाजित है अर्थात ६४ तंत्रों की प्रधानता हैं और माँ आदिशक्ति की सहचरी उनके ये ६४ शक्तियां ही उन तंत्रों को की स्वामिनी होती है.ये योगिनी ही उन तंत्रों की मूल शक्ति होती है और जब साधक अपने साधना बल से इनका साहचर्य प्राप्त कर लेता है तो उसे वो तंत्र और उसकी शक्ति भी प्राप्त हो जाती तब साधक इनके सहयोग जगत से वैश्वानर और अगोचर सत्ता के ऐसी ऐसे रहस्यों को ज्ञात कर लेता है,जिसकी कल्पना भी नहीं की जा सकती.

माँ क्या ये साधना सहज रूप से की जा सकती है? मैंने पूछा.

नहीं मेरे बच्चे इन साधनों को कभी भी हलके में नहीं लिया जा सकता,जिनमे प्राणशक्ति की कमी हो वो तो इस साधना की शुरुआत भी नहीं कर पाते हैं ,जैसे ही साधक इन्हें आवाहन का मानस बनाता है वैसे ही,इनकी सहचरी उपशक्तियां व्यवधान उत्पन्न करने लगती है.घृणा और जुगुप्सा के भाव को ये अति संवेदनशील बनाकर तीव्र कर देते हैं और अंतर्मन में दबा हुआ भय तीव्र होकर बाह्यजगत में दृष्टिगोचर होने लगता है.और साधक का शरीर इस तीव्रता को बर्दाश्त नहीं कर पाता है फलस्वरूप साधक का शरीर फट ही जाता है.इसलिए बिना गुरु के उचित निर्देशन के ऐसी साधनाओं में हाथ नहीं डालना चाहिए.

प्राणशक्ति की तीव्रता के कारण इनके मानसिक शक्ति के विद्युतीय परिपथ के संपर्क में आने वाला साधक मानसिक विक्षिप्तता को ही पाता है,सफलता के लिए तो अद्भुत प्राणबल होना पहली और अनिवार्य शर्त है.और ये भी तय है की इनकी सहायता जिसे प्राप्त हो जाती है परा और अपरा जगत के विविध रहस्यों की परते उसके लिए उघड़ने लगती हैं.

क्या इस स्थान से ,इस योगिनी मंदिर से इनका कोई लेना देना भी होता है ?
हाँ बिलकुल होता है,वास्तव में जहाँ जहाँ इस प्रकार के या नाथ पीठ होते हैं (अर्थात जहाँ उन्होंने साधना की हो) वहां आकाश में निर्गत द्वार होगा ही.लोकिक रूप से तो ये तारों का घना झुण्ड होता है परन्तु वो उनके लोक विशेष में जाने का और उस तंत्र के उद्गम स्थल तक पहुचने का मार्ग होता है.जिसके द्वारा ये साधक उस लोक तक की यात्रा उन शक्तियों के सहयोग से आसानी से कर लेते हैं जो की उन्हें उन योगिनियों से प्राप्त होती है.उस शक्ति के कारण उनका सूक्ष्म शरीर सहजता से वासना शरीर या कारण शरीर से शिथिल होकर सरलता से विभक्त हो जाता है तब,काल,स्थान और दूरी का कोई महत्त्व नहीं रह जाता है. पंचतत्वों की सघनता भी इन क्षेत्रों में होती है.
इनका स्थापन यहाँ कैसे किया गया होगा और उसका उद्देश्य क्या था ?
देखो इस मंदिर की स्थापना कलचुरी नरेश के शासन काल में हुयी है. अक्सर अघोर पंथ, शाक्त या पाशुपत संप्रदाय के असीम शक्ति संपन्न साधक ही इनका पूर्ण रूप से आवाहन कर इनकी स्थापना कर सकते हैं.पाशुपत संप्रदाय के संस्थापक नकुलीश के समय अघोर साधनाओं का प्रभुत्व चल रहा था और कलचुरी नरेश कृष्णराव,शंकरगण और बुद्धराज,ये तीनों अघोर पद्धति से भगवान अघोरेश्वर महाकाल की उपासना करते थे. अपने सम्प्रदाय को आगे विस्तार देने के लिए ही ये सभी आदि शक्ति और शिवलिंग तथा शिव प्रतिमा को अलग अलग जगह फैलाते थे.ये सभी योगिनी मंदिर जो मध्य प्रदेश,छत्तीसगढ़ तथा अन्य प्रान्तों में स्थापित होते न सिर्फ वास्तु कला की दृष्टि से बल्कि भयंकर साधना की दृष्टि से भी महत्वपूर्ण रहे हैं.इन मंदिरों में जिन योगिनियों का स्थापन किया जाता है वो पूर्ण तामसिक भाव से की जाती है तथा बलि आदि कृत्य भी संपन्न किये जाते हैं ,उसके फलस्वरूप उस अगोचर तामसिक लोक की प्रधान शक्ति का सीधा संपर्क यहाँ से स्थापित हो जाता है.उसी के प्रभाव से ये समय समय पर किन्ही खास क्षणों में ये प्रतिमाये जीवंत हो जाती है और जब मन्त्र बल से इन्हें कोई साधक जीवंत कर दे तो ये सामूहिक रूप से अपनी उस प्रधान शक्ति को भी आवाहित कर साधक को प्रचंड शक्तियों का स्वामी बना देती हैं. और ऐसा जब भी होता है प्रकृति में कोई न कोई विकृति आ ही जाती है.
तो क्या इन्हें सामान्य रूप से सिद्ध नहीं किया जा सकता है ?
किया जा सकता है ,परन्तु सिर्फ सद्गुरु ही इनके आवाहन मन्त्रों की भयंकरता को सौम्यता में परिवर्तित कर सकते हैं, और उनके द्वारा प्रदत्त ध्यान तामसिक न होकर राजसिक और ज्यादातर सात्विक भाव युक्त ही होते हैं.और सद्गुरु अपने तपबल से इनकी ज्यामितीय आकृति को उकेर कर यन्त्र का रूप देकर इन सभी योगिनियों का स्थापन उसमे कर देते हैं.
और एक महत्वपूर्ण तथ्य भी मैं बता देती हूँ की मूल योगिनी पीठ हमेशा इस मंदिर के ऊपर या नीचे स्थापित होते हैं ,जहाँ विग्रह की स्थापना न होकर मूल यन्त्र ही वेदिमय होता है.और यदि साधक इसके द्वार को खोलने का तरीका जान कर सिद्ध कर ले तो वहां पहुचने पर उसने जिस प्रकार का ध्यान किया है तदनुरूप ही उसे वह का वातावरण और शक्ति का प्रभाव अनुभव होता है.इस द्वार भेदन की क्रिया चतुवष्टि कल्प कहलाती है.
क्या मैं इसमें प्रवेश कर सकता हूँ ?
आज नहीं कल,क्योंकि कल पूर्णिमा है और पूर्णिमा को इनकी तीव्रता उतनी नहीं रहती है,इनकी तीव्रता अमावस्या और अँधेरी रातों में भयानक रूप से रहती है ,खास तौर पर दीपावली और सूर्य ग्रहण की रात्रि में. अतः नए साधक को इस अदृश्य लोक में प्रवेश प्रारंभ करने का उपक्रम पूर्णिमा से ही प्रारंभ करना चाहिए. उसके कुलदेवी के वर्ग की योगिनी साधक का सहयोग कर इसके अन्तः गर्भगृह में जाने का मार्ग प्रशस्त करती है.
उसके बाद दुसरे दिन हम तीनों ही एक विशेष मन्त्र के द्वारा उस अन्तः गर्भगृह में प्रविष्ट हुए,लंबा गलियारा पार कर हम गर्भ गृह तक पहुचे, वो एक लंबा चौड़ा कक्ष था,जहा एक अद्भुत ही उर्जा प्रवाहित हो रही थी तथा दीवारों से मंद मंद प्रकाश फूट रहा था जिससे वह रौशनी बिखरी हुयी थी. कक्ष के मध्य में ही एक काले पत्थर पर उत्कीर्ण यन्त्र वेदी पर

स्थापित था जो ४ गुना ४ फुट के पत्थर पर अंकित था.वहां माँ और भाई ने विधिवत पूजन किया तथा मैंने भी उनका अनुसरण किया,वे जिन प्रणाम मन्त्रों को बोल रहे थे वे ऊपर स्थापित विग्रहों के नाम से मुझे भिन्न प्रतीत हुए,उस समय तो मैं शांत रहा पर बाद में जब मैंने भाई से उसकी वजह पूछी तो उन्होंने बताया की एक ही देवी के अलग अलग नाम सम्प्रदाय विशेष में होता है ,अतः जैसी परंपरा होगी साधक उन्ही स्वरूपों का ध्यान करता है ,परन्तु इससे कोई अंतर नहीं पड़ता,पानी को जल कह देने से तत्व तो नहीं बदल जाता. खैर अर्चना के मध्य ही उस यन्त्र के विभिन्न भागों से प्रथक प्रथक धूम्र रुपी किरणे लगी जो अंततः आखिर में रक्त वस्त्रों से सुसज्जित एक २५-२८ वर्षीय कन्या में परिवर्तित हो गयी.जो लाल पत्थरों की चूडियाँ और हार पहने हुए थी.जिनसे प्रकाश उत्सर्जित हो रहा था .उनके मुख से आशीष वचन निकल रहे थे,थोड़े समय बाद वो पुनः किरणों के रूप में विखंडित होकर यन्त्र में ही विलीन हो गयी.अद्भुत था वो दृश्य और यदि साधक उस कल्प का प्रयोग सिद्ध कर ले तो बहुतेरे अध्यात्मिक और भौतिक लाभ की प्राप्ति उसे होती ही है.परन्तु गुरु आज्ञा के बगैर ऐसा कल्प नहीं दिया जा सकता,क्यूंकि उसको सिद्ध करने का विधान जटिल है और उसमे बहुत सावधानी की जरुरत भी है परन्तु यदि साधक उन योगिनियों का प्रतिक चिन्ह चतुवाष्टि यन्त्र की प्राप्ति करके उस पर रविवार रात्रि से ११ दिन तक नित्य निम्न नाम के आगे 'ओम' और पीछे नमः लगाकर , जैसे-**ओम काली नित्या सिद्धमाता नमः**. लाल कुमकुम से रंगे हुए अखंडित अक्षत अर्पित करे और इसके बाद "**ओम चतुवष्टिः योगिनी मम मनोवांछित पूरय पूरय नमः**" मंत्र की २१ माला संपन्न करे उसके बाद पुनः निम्न नामो के साथ अक्षत अर्पित करें. थोड़े ही समय में उसे अद्भुत चमत्कार अपने नित्य जीवन में दिखाई देने लगेंगे.

Kali Nitya Siddhamata, Kapalini Nagalakshmi,Kula Devi Svarnadeha,Kurukulla Rasanatha,Virodhini Vilasini,Vipracitta Rakta Priya,Ugra Rakta Bhoga Rupa,Ugraprabha Sukranatha,Dipa Muktih Rakta Deha,Nila Bhukti Rakta Sparsha,Ghana MahaJagadamba,Balaka Kama Sevita,Matra Devi Atma Vidya,Mudra Poorna Rajatkripa,Mita Tantra Kaula Diksha,Maha Kali Siddhesvari,Kameshvari Sarvashakti,Bhagamalini Tarini,Nityaklinna Tantraprita,Bherunda Tatva Uttama,Vahnivasini Sasini,Mahavajreshvari Rakta Devi,Shivaduti Adi Shakti,Tvarita Urdvaretada,Kulasundari Kamini,Nitya Jnana Svarupini,Nilapataka Siddhida,Vijaya Devi Vasuda,Sarvamangala Tantrada,Jvalamalini NaginiChitra Devi Rakta Puja,Lalita Kanya Sukrada,Dakini Madasalini,Rakini Papa Rasini,Lakini Sarvatantresi,Kakini Naganartaki,Sakini Mitrarupini,Hakini Manoharini,Tara Yoga Rakta Poorna,Shodashi Latika Devi,Bhuvaneshwari Mantrini,Chinnamasta Yoni Vega,Bhairavi Satya Sukrini,Dhumavati Kundalini,Bagla Muki Guru Moorthi,Matangi Kanta Yuvati,Kamala Sukla Samsthita,Prakriti Brahmandri Devi,Gayatri Nitya Chitrini,Mohini Matta Yogini,Saraswathi Svarga Devi,Annapoorni Shiva Samgi,Narasimhi Vamadevi,Ganga Yoni Svarupini,Aprajita Samaptida,Chamunda Parianganatha, Varahi Satya Ekakini,Kaumari Kriya Shaktini,Indrani Mukti Niyantri,Brahmani Ananda Moorthi,Vaishnavi Satya Rupini,Mahesvari Para Shakti,Lakshmi Monoramayoni,Durga Satchitananda.

It was midnight time and the fourteenth night full moon was spreading soothing light in whole sky, and river Narmada was flowing with her full force and flowing sound was coming out, and the cold wind was touching that flowing water and in n all whole experiencing so cold soothing.At bank of Bhedaghat we were sitting and discussing.After I reached many days were passed on and daily new new secrets revealing was becoming a routine course.On daily basi we used to discuss about Tantra on every new new ghats and in midnight and in early morning we used to practice sadhnas.As responsibility of clarifying my mind's delima was already takenover by both of them englesh people, as I got opportunity to be with Paritosh Brother and Avadhuti Maa.Well whats the the secret about chousath yogini temple?
Oho brother if Maa is present here then how can I dare to say anything.Better u please ask to Maa about this.She had imbibed so many secrets under revered sadgurudev's instructions.Hmm hmm why not sure…, definitely each sadhak should understand this secret.There is no achievement without yogini's kindness.If Tantra is divided into 64 parts then it means there is prime importance of 64 Tantras. And Maa Aadishakti's associates are the goddess of those 64 Tantras.These Yoginis are mool/origin power. And when sadhak gets association of these yoginis by his hard persistence,he became the invisible and supreme human being and gets the entry in mysterious world of Tantra.Not only entry but embibe the knowledge too which is just beyond imagination..Wowww…Isnt it goosebuming…???

Maa, do this sadhna can be done in easy way? I asked.. No my child, this cannot be taken so lightly.Whosoever lack the Pranshakti cant even start this sadhna.The moment sadhak make up his mind to call, the sub associates of Associates starts creating obstacles for him. They make the hatred and disgust feeling more powerful in sadhaks mind so that he could not do the sadhna.And reflects the inner sacredness in outer world.So this is how the sadhak can't tolerate the intensity of it and resultant his body get blast.Therefore my dear, one should never indulge himself without the appropriate Guru's guidance.okkkk.

Due to intolerance of Pranshakti the sadhak meets with mental disability because of their electromagnetic waves.U know for success the first and necessary condition is to have terrific pranashakti. And this is also for sure whosoever get their association, it becomes easy for him to open page by page secrets of the mysterious para world. Do this place anyhow connected with Yoginis?

Yes definitely it is related, actually wherever these Nath Piths are formed (I mean where these sadhna are done successfully) there would be a Nirgat Gate.Materiallistacally it is a buch of stars, but it's a way to enter in their world and to reach the starting place of tantra. Via which the

sadhak is easily able to travel such a long distance with the help of these associates. Due to these power it becomes easy for them to detach the Astral body from Vasna Sharir and Karan sharir.In this course the time, place, distance is merely meaningless.

The density of Panchatatvas is also present there. Why they have established and with what purpose? See, this temple had been established in times of kalchuri Naresh.Generally, the Aghor Panth, Shakt or Pashupat sampradaies consists of infinite energies were able to call those and establish them here at this place. It was the prime time of the Administrator of Pashupat Sampraday Nakuleesh and the Kaluchari naresh Krishnarao, shankargan and Buddharaj kings, these three were attempting the Aghor sadhnas for Lord aghoreshvar Mahakal in aghor ways. And all this was done with the intension of spreading their legacy sampraday, the aadi Shaktis, Shivlings and shivstatues were established at various places.All these Yogini temples which are place in Madhyapradesh, Chattisgarh are other states are not only the beautiful archietecture but also the best place for terrifying Sadhnas also.

The Yoginis which are established under these temples which are done in full tamsik expressions and sacrifices etc are also done.Resultant its get directly connected with the prime yogini. In this way these yoginis get alive for few seconds in some special statues and when these are alive via mantras then they togetherly they call up their prime goddesses yogini and then bow the infinite powers to the sadhak. And whenever this happens then definitely some mishappening takes place in nature. So are they cannot be siddh in common way? Yes it can be…but only sadguru can convert its vulnerability into susceptibility. And the meditation given by him will not be inclusive of tamsik infact rajsik and satvik expressions.

And this is how Sadguru from his persistence converts the geographical figure into Yantras and establishes all yoginis in it. And one more important fact is this, Mool yogini piths are always established either above the temple or underneath. Were instead of separate the mool Yantra is established with sacrifice ritual.And if sadhak trys to find out the way of opening this gate and siddh it then, the way he accomplished the sadhna exactly the same environment and would experience the same powers be available for him.This penetrating process is known as Chatuvashti Kalpa.

Can I enter here? Not today, tomoro because tomoro is fuul moon and on full moon their intensity level is less. As they are more powerful, dangerous and intensified on dark fortnight of a lunar month, especially on Diwali and sun eclipse night. Therefore new sadhaks should start their procedure since full moon day only.At last Its classified level of Kuldevi’s yogini supports the sadhak’s in an inner room. And thereafter on next day we three entered into the inner room with some special mantras. After crossing the long passageway we reached to innerroom.It was

n extra long spacious hall, where a supernatural waves were flowing and dim light was coming out of the walls via which whole are was enlighten.
In middle of hall on a black stone a carved Yantra was established on Vedi which was established on 4*4 foot stone. Maa and brother completed the rituals and did the worship their and I also followed them. The pranam mantra which they were chanting was quite different from the established mantras which were written. I kept silent at that time thereafter I asked the reason, so he said see in different sampradays different name is taken for same goddess.therefore as the culture would be the sadhak remember those related forms only.But it hardly makes any difference, saying water with diff name like marine aqua etc can change the basic of water isn't it? In middle of adoration the different types of smoke were coming out which ultimately got converted into blood colored charming beautiful 25-26 year old lady which she was wering a red stoned colored bangles and jewellery.
From which the light was coming out. And blessings were coming out from her mouth.After sometime again it disbursed into waves and got disappeared. It was simply astonishing moment and if any sadhak siddha tha kalp then he gets the financial and spiritual benefits. But without permission of Sadgurudev this kalp is not given because the procedure of making them siddh is quite difficult and so many precautions are also needed. But if sadhak gets the chatuvaashti yantra and sumbols of that yohinis f and finishes the rituals starting from Sunday to 11 days from it and do the procedure of chanting "OM" in starting and ending with"Namah", Like "**OM KALI NITYA SIDHHIMATA NAMAH**" and offers the red kumkum rice/akshats to her and then say the "**OM CHATUVASHTI YOGINI MAM MANOVANCHHIT PURAY PURAY NAMAH"** and completes the 21 malas of it and thereafter again offer rice/akshats. After sometime a miracle happens in our daily routine life. The names are
Kali Nitya Siddhamata, Kapalini Nagalakshmi,Kula Devi Svarnadeha,Kurukulla Rasanatha,Virodhini Vilasini,Vipracitta Rakta Priya,Ugra Rakta Bhoga Rupa,Ugraprabha Sukranatha,Dipa Muktih Rakta Deha,Nila Bhukti Rakta Sparsha,Ghana MahaJagadamba,Balaka Kama Sevita,Matra Devi Atma Vidya,Mudra Poorna Rajatkripa,Mita Tantra Kaula Diksha,Maha Kali Siddhesvari,Kameshvari Sarvashakti,Bhagamalini Tarini,Nityaklinna Tantraprita,Bherunda Tatva Uttama,Vahnivasini Sasini,Mahavajreshvari Rakta Devi,Shivaduti Adi Shakti,Tvarita Urdvaretada,Kulasundari Kamini,Nitya Jnana Svarupini,Nilapataka Siddhida,Vijaya Devi Vasuda,Sarvamangala Tantrada,Jvalamalini NaginiChitra Devi Rakta Puja,Lalita Kanya Sukrada,Dakini Madasalini,Rakini Papa Rasini,Lakini Sarvatantresi,Kakini Naganartaki,Sakini Mitrarupini,Hakini Manoharini,Tara Yoga Rakta Poorna,Shodashi Latika Devi,Bhuvaneshwari Mantrini,Chinnamasta Yoni Vega,Bhairavi Satya

Sukrini,Dhumavati Kundalini,Bagla Muki Guru Moorthi,Matangi Kanta Yuvati,Kamala Sukla Samsthita,Prakriti Brahmandri Devi,Gayatri Nitya Chitrini,Mohini Matta Yogini,Saraswathi Svarga Devi,Annapoorni Shiva Samgi,Narasimhi Vamadevi,Ganga Yoni Svarupini,Aprajita Samaptida,Chamunda Parianganatha, Varahi Satya Ekakini,Kaumari Kriya Shaktini,Indrani Mukti Niyantri,Brahmani Ananda Moorthi,Vaishnavi Satya Rupini,Mahesvari Para Shakti,Lakshmi Monoramayoni,Durga Satchitananda.

Chand yogini sadhana(for getting success in our work)

योगिनी शब्द से हम में से अधिकाश भय ग्रस्त से हो जाते हैं , पर ये तो ,अनेको ने इनके बारे में जो भी सुना सुनाया लिख दिया ,, खुद का स्वानुभव कितनो का था , और जिनका स्वानुभव था , वह तो चुप साध के बैठे रहे वह जानते थे की इनके बारे में बोलना ठीक नही हैं क्योंकि एक तो लोग मानेगे नहीं दुसरे क्यों इस सर्वोच्च स्तर की साधना को क्यों सामने लाये ,

तंत्र जगत में चौसठ तंत्रों की बात होती हैं तो क्या चौसठ ही तंत्र हैं , नहीं नहीं यह तो शाक्त मार्ग का वर्गीकरण हैं अन्य सम्प्रदाय में अनेको और तंत्र हैं. डामर और यामल ग्रंथो को मिला कर साथ ही साथ यदि उप तंत्रों को भी मिला लिया जाये तो इतनी बड़ी संख्या बन जाती हैं जिसे देखकर ही हमारे मनीषियों पर गर्व होता हैं,पर इन्हें सुरक्षित रखने का प्रयत्न तो क रना ही चाहिए ही ..

पर इनको अपने जीवन में उतरना कभी ज्यादा लाभ दायक होगा , और स्वयम जान सकेंगे की इनकी वरदायक क्षमता के बारे में ,,

योगिनी इन तंत्रों की आधिस्थार्थी हैं इसका मतलब तो यह हुआ की इनके माध्यम से आप तंत्र जगत के अनबुझे रहस्य ही जान सकते हैं ,, आखिर कब तक आप मात्र वशीकरण ,और मोहन जैसी क्रियाओ में अटके रहेंगे, आखिर कभी न कभी आपको इस में आगे बढ़ना हैं ही तो क्यों नहीं अभी कदम बढ़ाएं.

जिन्होंने भी सदगुरुदेव भगवान् द्वारा निर्माणित " षोडश योगिनी साधना " cd तो एक बार सुन कर देखें तो सही फिर वह स्वयं ही कहेगा कि सद्गुरुदेव भगवान् ने इस एक हीcd में कितना ज्ञान भर दिया हैं, इस साधना की उच्चता पर हम क्या लिखे यह तो आप स्वयं ही उस cd को सुन कर जान कर प्राप्त कर ले .

पर यह चाहे प्रेमिका माता या बहिन जिस भी स्वरुप में सिद्ध की जाये या इनकी अनुकूलता प्राप्त कर ली जाये तो जीवन की कौन सी परिस्थितियां आपके लिए फिर कठिन हो सकती हैं .

प्रेमिका स्वरूप में हमेशा ध्यान रहा जाये, वासनात्मक दृष्टी से इन्हें देखना या व्यवहार करना उचित नहीं हैं , हाँ स्नेह और विशुद्ध प्रेम की बात कुछ और हैं ,

पर यहाँ यह साधना इनके भगिनी या बहिन स्वरुप में की जाने वाली हैं .

आपके जीवन की अनेको परिस्थितियां तो इनके वरदायक प्रभाव से स्वयं ही अनुकूल हो जाती हैं एक ऐसा ही प्रयोग आप सभी के लिए ,आपके समस्त कार्यों को सफलता दिलाने वाला और साथ ही साथ इनके वरदायक प्रभाव को आपके लिए संभव करने वाला आपके लिए ..

मंत्र ::

ॐ चंड योगिनी सर्वार्थ सिद्धिं देहि नमः

साधारण साधनात्मक नियम :

1. जप के लिए काली हकीक माला ले .
2. किसी भी शुक्र वार से यह साधना प्रारंभ की जा सकती हैं
3. दिशा आपकी उत्तर पूर्व रहेगी .
4. साधना के समय पहने जाए वाले वस्त्र और आसन लाल रंग के होंगे
5. रात्रि मे ११ बजे के बाद इस मंत्र का जप प्रारभ करे .
6. ११ माला मन्त्र जप १ हफ्ते (कुल सात दिन) किया जाता हैं .

तक करने से सभी प्रकार के कार्यों मे सफलता के लिए चंड योगिनी भगिनी स्वरुप मे अद्रश्य रहते हुए सहायता देती है.

आजके लिए बस इतना ही .

****

Many of us generally get fearful ,when herd the name of yogini sadhana. But these sadhana are.., majority of the writer , just wrote about them for the sake of writing ,how many of them have real in person experiences. And those who has real direct experience, have kept silence, reason would be either people would not believe them or why to reveal such great sadhana between common person.

There are enough writing regarding 64 tantra, are there are only 64 tatantra ?, no no this is not true,, this the classification based on shakt tantra, in other sect and we if includes damar and yamal tantra than theses list can be much much lengthy.

This is the things for getting proud that what our scholars provide to all of us. and its our duty that we should try to protect this.

Instead of just knowing , if we get successful in this sadhana than it would be much much better. We will have direct experience.

Yoginies are the ruler of tantra that simply means if have blessing of them or with the help of them you can learn any tantra in which you are interested….. after all, how long you are just be stand between maran and mohan.. when , in any day you have to move forward than why not today.

Those who have listen ”shodas yogini sadhana” cd can easily understand that how much valuable gyan ,Sadgurudev bhagvaan stored in that , what we can say more, you can listen yourself.

Theses yogini can be siddh as a mother , sister or as a lover. In the lover sense, always keep in our mind that there should be no physical gratification/sexual thought should be in our mind, , yes if having purity of sneh/love that is another case than on that level no need for physical realtion.

Here this Sadhana can be done , consider yogini as your sister,

Many of the obstacles problems already get solved through her blessing, success can be get in any field, have a taste of success through this sadhana.

Mantra :

om chand yogini sarvarth siddhim dehi namah||

General sadhanatmak rules:

- Jap can be done through black hakik mala
- Sadhana can be started on any Friday.
- Direction would be northeast facing.
- The clothes and aasan would be of red color.
- Start the mantra jap after 11PM(night).
- This sadhana is of 7 days .

After having success on this sadhana, this yogini help you in every work though she will be invisible,

This is enough for today.

YANTRA PRAYOG TO WIN COURT CASE (मुकदमे मे विजय प्राप्ति यन्त्र प्रयोग)

In This era of hidden animosity, it can’t be said which enemy can inflict blows-counterblows .Front-on attack can be faced but what can be said about attack done in hidden manner or done as part of conspiracy…….These all are the part and parcel of today’s era. Out of this, one way which is used most is to involve the

person in false court cases. Now the person can be innocent, but getting rid of it results into waste of time, energy and money. Mental harassment which one has to bear, that is entirely different.
Name of Balgamukhi and other Mahavidyas comes to our mind when we talk of failing these hidden enemies or the whole type of conspiracies. But these sadhnas are not that simple. Prayogs related to them can definitely be done but the person remains in state of confusion that somewhere nothing wrong is done or he is not aware of the complete Vidhaan. At such times, easiest ways in yantra Vigyan, which are very hard to believe, have proved to be very beneficial. Also whenever this court fight begins, person do not have any relation with court proceedings and therefore he gets anxious and wants to win court case at any cost so that he can again live that comfortable life.
It has also been said that weakness is evil and being strong is blessing. Life can't be lived weeping each moment. You all know this fact that getting no time in today's era is very big problem. However Sadgurudev has also said if we analyze it carefully, we will know automatically how much time is spent in unnecessary activities .If this time can be properly utilized then…..
If one has to achieve heights in materialistic life, then also attain achievements in Tantra world. This is height of life. So for this you have to take out your time. In the same way, if your problem is not that much critical, then do this prayog and upon doing it with dedication, you will definitely get success provided you are right. This much of neutral analysis should be done by the person himself.
This is very easy prayog of Yantra Vigyan and has been appreciated by others also.
You all know the general rules of yantra Vidhaan. They have been written many times. It is not appropriate to write them again and again. Make this yantra on Bhoj Patra by kumkum. The person against whom you are fighting the case, do not forget to write his name in the middle of yantra. Do the yantra poojan and other normal Vidhaans which are given in previous yantra related posts. The day you have to go to court for your court case, you put this yantra in amulet made up of three metals and pour it in milk ….Only this is the rule.

==

इस गुप्त शत्रुता वाले युग मे कौन सा शत्रु कब घात प्रतिघात कर दे कहा नही जा सकता हैं एक बार सामने के आघात तो सहन किये जा सकते हैं पर छुप कर या विभिन्न षडयंत्र बनाकर किये गए आघात के बारे मे क्या कहा जाए ... यह सब तो आज के युग की निशानी हैं इन्ही मे एक तरीका जो सर्वाधिक उपयोग होता हैं वह हैं सामने वाले को किसी भीझूठे मुकदमो मे फसवा दो , अब व्यक्ति कितना भी निर्दोष हो इस चक्कर से निकलते निकलते उसका बहुत संमय उर्जा और धन नष्ट हो जाता हैं मानसिक प्रताडना जो झेलनी पड़ती हैं वह तो बिलकुल ही अलग होती हैं.

यूँ तो गुप्तशत्रुओं और समस्त प्रकार के षड्यंत्रो को निष्फल करने मे भगवती बल्गामुखी और अन्य महाविद्याओ का नाम आता हैं पर इनकी साधनाए इतनी सरल भी तो नही हैं , इनसे सबंधित प्रयोग अवश्य किये जा सकते हैं पर व्यक्ति भी कुछ संशय की अवस्था मे रहता हैं की कहीं कुछ गलत न हो जाए या उसे पूरा विधान ठीक से मालुम भी नही होता , इस समय यंत्र विज्ञान के सरलतम तरीके जिन पर भले ही एक पल विस्वास न हो पर बहुत लाभदायक सिद्ध हुये हैं .
वेसे भी कानूनी जब लड़ाई प्रारंभ होती हैं तो एक व्यक्ति ,कानूनी दाव पेंच से उसका कोई वास्ता नही होता और वह परेशां होता जाता हैं और किसी तरह मुकदमो मे विजय भी चाहता हैं की फिर से व ह आरामदायक जीवन व्यतीत कर सके .

यह कहा भी गया हैं की कमजोरी ही पाप हैं और बलयुक्त होना ही पुण्य हैं और जीवन ऐसे रो रो कर घिसट घिसट कर तो काटा नही जा सकता हैं यह तो आप हम सभी जानते हैं की आज के युग मेसाधना के लिए समय न मिल पाना एक बहुत बड़ी समस्या हैं ,हलाकि सदगुरुदेव जी ने यह भी कहा हैं की अगर ध्यान से देखें तो स्वयं ही पता चल जाएगा की दिन का कितना समय यूँ ही बेकार के कामो मे जा ता हैं अगर वहां समय बचाया जा सके तो.

अगर भौतिक जीवन मे उच्चता प्राप्त कर ली हैं तो इस तंत्र जगत मे भी कुछ उपलब्धिया भी प्राप्त करें यही तो जीवन की उच्चता हैं .तो इसके लिए समय निकालना ही पड़ेगा .ठीक इसी तरह अगर समस्या बहुत गंभीर न हुयी हो तो आप इस प्रयोग को करें और पुरे मनो योग से करने मे सफलता आपको प्राप्त होगी बशर्ते आपका पक्ष सही होना चहिये .इतना तो व्यक्ति का स्वयं के लिए निष्पक्ष आकलन होना ही चाहिये.

यन्त्र विज्ञानं का यह बहुत ही सरल सा प्रयोग हैं अनेको द्वारा प्रशंशित भी हैं .

आप सभी को यंत्र विधान के सामन्य नियम ज्ञात हैं ही , अनेको बार लिखे जा चुके हैं तो बार बार उन्ही का उल्लेख उचित नही हैं , इस यंत्र को भोजपत्र पर कुकुम से बना ले . जिस व्यक्ति के विरुद्ध आपका मुकदमा हो उसका नाम यंत्र के मध्य मे पहले से लिखना न भूले ,यंत्र का पूजन और अन्य सामान्य विधान जो की यन्त्र सबंधित विगत कई पोस्ट मे दिए जा चुके हैं आप उन्हें करे और जिस दिन आपका मुकदमा हो कोर्ट मे जाना हो इस यन्त्र को त्रिलोह धातु के तावीज़ मे बंद करके दूध मे डा ल दे .. बस इतना विधान हैं .

सर्व जन अनुकूल सर्व मोहन कारक यन्त्र साधना

Every person wants to be famous, to get respect in the society, wherever he goes, people want his company and he is the deserving candidate for getting all the affection. But how this is possible whereas everywhere only one quality has been given all the consideration i.e. money. Sadgurudev has said in one cassette that few years before independence, person having very high character or possessing knowledge got all the respect and recognition of the whole society. Even rich to rich person used to respect that person. Now what has happened is that money has taken the place of character. There is no special change but…..due to it, prevailing condition of society and what has happened, this is well known to you and me.

But this state cannot be achieved by attaining money in one or two months. Now the alternative left is to do Mohan or Vashikaran prayog on someone….but on how many person this prayog can be done since we daily come across so many persons in our life.

So why not do one sadhna process which automatically creates attraction automatically within us. People see us and automatically become favorable. They do not create any problem without any reason and favor us .If such thing happens; it is no less than any miracle…..

But for this, we have to do so many sadhna. However, it is not about running away from sadhna. Sadgurudev has made many of us do so many high-order prayogs .Some of them like Brahmand Vashikaran prayog, Sampurna Charachar Vashikaran Prayog, such prayogs which were done by Lord Shri Krishna and Lord Buddha and they brought entire world under their control. But we considered only this prayogs as normal and there may be lack of trust too…..This was our shortcoming. But now is the time to understand these prayogs.

But today when there is shortage of time then yantra sadhnas can prove to be boon for us, if we do it with full trust.

Rules for making this yantra are like this.

- This can be created on any auspicious day or festival.
- This yantra can be made only on Bhoj Patra.
- Take bath in Morning and wear clean clothes..then do this work.
- Yellow dress and aasan will be more appropriate .North direction will be appropriate.
- Mixture of Red Sandal, Gorochan, Keshar and Kasturi should be used as ink for writing on yantra.
- Use the stick of Jasmine for making yantra.
- Worship it for 3 days after making yantra.
- Remain celibate for these three days.

After that, keep this yantra in amulet of triloh and wear it on your arm.As long as you wear this yantra, you can feel its affect automatically.

Now worship the yantra by dhoop and deep for 3 days. How to do Sadgurudev Poojan, chanting Guru Mantra and doing Nikhil Kavach necessarily in both beginning and end is well known to everyone. There is no point repeating it.

===

हर व्यक्ति चाहता हैं की वह लोक प्रिय हो, समाज मे उसका आदर हो ,वह जहाँ जाए लोग उसके सानिध्य मे रहना चाहे और सभी के स्नेह का पात्र हो .पर कैसे यह संभव हो जबकि चारो तरफ अब सिर्फ एक गुण का ही परिचम लहरा रहा हैं और वह हैं धन ...

सदगुरुदेव एक केसेट्स मे कहते हैं की आजादी के चंद साल पहले तक जिनका भी चरित्र उच्च रहता था या था या होता था , ज्ञानवान भी रहा तो वह पुरे समाज का स्वत ही आदर का पात्र रहा , धनी से धनी व्यक्ति भी उसका आदर करता था , अब बस इतना हो गया हैं की चरित्र की जगह धन ने ले ली हैं .कोई खास बदलाव नही हैं पर .. इस कारण समाज मे आज जो कुछ हैं या जो हुआ हैं वह हम और आप जानते समझते हैं .

पर एक दिन या महीने मे तो धन लाकर यह अवस्था नही लायी जा सकती हैं . तो अब दूसरा रास्ता बचता हैं की किसी पर मोहन या वशीकरण प्रयोग करे ..पर कितनो पर यह प्रयोग किये जा सकते हैं जबकि दिन प्रतिदिन के जीवन मे अनेको लोगों से मिलना होता हैं .

तो क्यों नही साधना का एक ऐसा विधान कर लिया जाए तो स्वतः हम मे ही आकर्षण पैदा कर दे . लोग हमे देखें और स्वत ही हमारे अनुकूल होते जाए बेवजह हमारे लिए समस्याए न पैदा करें और अनुकूलता भी दे अगर ऐसा होता हैं तो यह भी कोई चमत्कार से कम थोड़ी न हैं .

पर इसके लिए तो कितना न साधना करनी पड़ेगी .हालाकि साधना से बचने की बात नही हैं , सदगुरुदेव जी ने तो एक से एक उच्च कोटि के प्रयोग हमारे मध्य अनेको को सम्पन्न कराये हैं कुछ तो ब्रह्माण्ड वशीकरण प्रयोग , समपूर्ण चराचर वशीकरण प्रयोग ,ऐसे भी प्रयोग जिन्हें भगवान श्री कृष्ण और भगवान बुद्ध ने समपन्न कर के समपूर्ण विश्व को अपने वशीभूत मे कर लिया .पर हम उन प्रयोगों को एक सामान्य सा ही समझते रहे या यूँ कहूँ की विश्वास की कमी की ऐसा भी हो सकता हैं ...यही हमारी नुय्नता रही . पर अब समय हैं की उन प्रयोगों को समझे .

पर आज जब समय की आत्याधिक कमी हैं तब यन्त्र विधान की साधनाए हमारे लिए वरदान सिद्ध हो सकती हैं यदि पुरे विश्वास के साथ इनको करते हैं .

इस यंत्रके निर्माण के नियम इस प्रकार हैं .

- किसी भी शुभ दिन या पर्व मे इसका निर्माण कर सकते हैं .
- इस यंत्र को भोज पत्र ही बनाया जा सकता हैं .
- प्रातः काल स्नान करके स्वच्छ वस्त्र धारण करके यह कार्य समपन्न करें.
- वस्त्र और आसन पीले रंग के हो कहीं ज्यादा उचित होगा .दिशा उत्तर की उचित होगी .
- स्याही इस यंत्रलेखन के लिए –लालचंदन ,गोरोचन ,केशर और कस्तूरी से मिला कर बनायी गयी हो .
- यंत्र लेखन के लिए चमेली की लकड़ी का प्रयोग करें .
- यंत्र निर्माण के बाद तीन दिन तक इसका पूजन करना हैं .
- इस दौरान (इन तीन दिनों मे) ब्रम्हचर्य का पालन करे .

इसके बाद इस यन्त्र को त्रिलोह के ताबीज के अंदर रख कर अपनी भुजा मे धा रण कर लेना हैं , जब तक यह यंत्र आप धारण करे रहेंगे तब तक आप इसका प्रभाव स्वत अनुभव करते रहेगे .

अब यंत्र का तीन दिन धूप दीप से पूजन करना हैं और सदगुरुदेव पूर्ण पूजन , गुरू मंत्र का जप किस प्रकार करना हैं और निखिल कवच का सारी प्रक्रिया के प्रारम्भ और अंत मे क्यों अनिवार्य रूप से पाठ किया जाता हैं बार बार लिखने की आवश्यकता नही हैं यह तो सभी आप ,पहले से ही परिचित हैं .

******NPRU******

AAKASMIK DHAN PRAPTI - SWARNA MALA PRAYOG

No one can deny the importance of wealth in life. In today's era, basis of success in any field is wealth. It continuously works in person's life for his spiritual and materialistic progress. In order to achieve competence in field of knowledge and various other fields, person does physical and mental hard-work and spends his precious time and gathers experience from various activities. All this he does for a happy future where he can get complete happiness, complete pleasure and can become ideal person in society and earn respect. But is wealth not in root of all of these endeavours? Necessity of wealth has to be accepted indisputably in today's era. May be it is attaining prosperity, gaining pleasure through use of various things or attaining highest education. Money is prime basis of all of them. But sometimes there are some unfortunate people on which god do not show grace. In such circumstances, people have to sacrifice their dreams and have to be deprived of many types of pleasures. In such burdensome moments of life, his determination power gradually diminishes and in future also, he accepts this condition and his burden keeps on increasing. This is not pleasing condition in any respect, especially when we have sadhna force. Blessings of our ancestors are spread all round us in form of knowledge, in form of sadhna science.

There are so many special prayogs in tantra sadhna for providing assistance to sadhak for attainment of wealth by which new sources of wealth open for

sadhak , opportunities are created for getting wealth whose inflow has stopped due to some reason. He can get money by different ways. And what can be more better if all this he gets instantaneously . One such prayog out of them for attainment of instantaneous wealth is Swarna Mala Prayog.In this prayog , this dev yoni is compelled to provide assistance to sadhak under the intense attraction of Parad , that too joyfully , not under any compulsion.Becausewhere there is combination of Tantric procedure with consciousness of pure Parad , it is natural for Dev Yoni to get attracted towards sadhak.Prayog presented here is one such abstruse procedure which if done with dedication can provide above-said benefits to sadhak and his financial problems are resolved very quickly.

Sadhak can do this prayog on any Poornima night.

Sadhak should do this prayog under Banyan tree.

Sadhak should talk bath after 10:00 P.M in the night, wear decorative dress, sit under Banyan tree on yellow aasan .Sadhak should sit facing the North direction.

Sadhak should use incensed stick in this prayog. Sadhak should apply Itr (fragrance) on his clothes too. Sadhak can keep Bhog on any sweet with him. Besides it, sadhak can also offer edible Paan (containing catechu, betel-nut and cardamom).

First of all, sadhak should do Guru Poojan and chant Guru Mantra. After it, sadhak should establish **Yakshini Gutika made from pure Parad** in front of him in any container and do its poojan. In absence of Yakshini Gutika, sadhak can use**Saundarya Kankan.** After poojan sadhak should pray to Devi Swarna Mala for her cooperation in attainment of instantaneous wealth. After it, sadhak should chant Mrityunjay Mantra as per his capacity. After it, Sadhak should chant 21 rounds of below mantra by sfatik rosary or rudraksh rosary.

om shreem shreem swarnamaale dravyasiddhim hoom hoom thah thah

After completion of mantra Jap, sadhak should pray to Swarna Mala Yakshini and accept sweet/Paan himself. Sadhak should not immerse rosary. Sadhak can use it in future for this prayog.

==

जीवन में धन की आवश्यकता को कौन नकार सकता है, आज के युग में किसी भी क्षेत्र की सफलता का आधार धन ही तो है. एक व्यक्ति के जीवन में वह आध्यात्मिक तथा भौतिक उन्नति के लिए ही तो हमेशा कार्य करता रहता है. पढ़ाई तथा विविध कार्यमें निपूर्ण बनने में व्यक्ति शारीरिक तथा मानसिक श्रम कर जीवन के बहुमूल्य दिन और बहुमूल्य समय को व्यय करता है, या फिर विविध कार्यों से अनुभव एकत्रित करता है. और यह सब वह करता है एक सुखी भविष्य के लिए जिसमे उसे पूर्ण सुख की प्राप्ति हो सके, पूर्ण भोग की प्राप्ति हो सके तथा समाज में एक आदर्श व्यक्ति बन पूर्ण मान सन्मान को अर्जित कर सके. लेकिन इन सब के मूल में क्या धन नहीं है? धन की अनिवार्यता को निर्विवादित रूप से आज के युग में स्वीकार करना ही पड़ता है. चाहे वह समृद्धि हो, विविध वास्तुओ का उपभोग हो या फिर उच्चतम शिक्षा को अर्जित करना हो. इन सब का आधार धन ही तो है. लेकिन कई बार भाग्य से वंचित व्यक्ति के ऊपर कुदरत अपनी महेरबानी नहीं दिखाती. और एसी स्थिति में व्यक्तिको अपने कई कई स्वप्नों का त्याग करना पड़ता है तथा कई प्रकार के सुख भोग से वंचित रहना पड़ता है. जीवन के इन्ही बोजिल क्षणों में उसका आत्मबल धीरे धीरे क्षीण होने लगता है तथा भविष्य में भी वह अपनी स्थिति को स्वीकार कर जीवन को इसी प्रकार बोज पूर्ण रूप से आगे बढाने लगता है. यह किसी भी प्रकार से श्रेयकर स्थिति तो नहीं है. खास कर जब हमारे पास साधनाओ का बल हो, हमारे पूर्वजो का आशीर्वाद उनके ज्ञान के रूप में हमारे चारों तरफ साधना विज्ञान बन कर बिखरा हुआ हो.

तंत्र साधनाओ में एक से एक विलक्षण प्रयोग धन की प्राप्ति में साधक को सहायता प्रदान करने के लिए है जिसके माध्यम से साधक के सामने नए नए धन के स्त्रोत खुलने लगते है, रुके हुवे धन को प्राप्त करने का अवसर प्राप्त होता है तथा नाना प्रकार से उसको धन की प्राप्ति हो सकती है, और फिर अगर यह सब अचानक या आकस्मिक रूप से हो तो उसकी तो बात ही क्या. ऐसे ही दुर्लभ आकस्मिक धन प्राप्ति के प्रयोग में से एक प्रयोग है स्वर्णमाला प्रयोग. जिसमे पारद के संयोग से तीव्र आकर्षण के वशीभूत हो कर इस देव योनी को साधक की सहायता करने के लिए बाध्य होना पड़ता है, लेकिन विवशता पूर्ण नहीं, प्रशन्नता पूर्वक ही तो. क्यों की जहां तांत्रिक प्रक्रिया के साथ साथ विशुद्ध पारद के चैतन्यता का संयोग होता है, वहाँ तो साधक की तरफ देव योनी का भी आकर्षित होना स्वाभाविक ही है. प्रस्तुत प्रयोग ऐसा ही एक गुढ़ विधान है, जिसे पूर्ण

मनोयोग के साथ सम्प्पन करने पर साधक को उपरोक्त लाभों की प्राप्ति होती है तथा शीघ्र ही धन सबंधी समस्याओ का निराकरण प्राप्त होता है.

यह प्रयोग साधक किसी भी पूर्णिमा की रात्री में कर सकता है.

साधक यह प्रयोग किसी वटवृक्ष के निचे करे

साधक रात्री में १० बजे के बाद स्नान आदि से निवृत हो कर किसी भी सुसज्जित वस्त्रों को धारण करे तथा वटवृक्ष के निचे पीले आसन पर बैठ जाए. साधक को उत्तर दिशा की तरफ मुख कर बैठना चाहिए.

साधक को इस प्रयोग में सुगन्धित अगरबत्ती लगानी चाहिए, अपने वस्त्रों पर भी इत्र लगाना चाहिए. साधक को कोई मिठाई का भोग अपने पास रख सकता है. इसके अलावा साधक को खाने वाला पान जिसमे कत्था सुपारी तथा इलाइची डाली हुई हो उसको भी समर्पित कर सकता है.

सर्व प्रथम साधक गुरुपूजन तथा गुरुमन्त्र का जाप करे. उसके बाद साधक **विशुद्ध पारद से निर्मित यक्षिणी गुटिका** को अपने सामने किसी पात्र में स्थापित करे तथा उसका पूजन करे. यक्षिणी गुटिका की अनुपलब्धि में साधक **सौंदर्य कंकण** पर भी यह प्रयोग कर सकता है. पूजन के बाद साधक देवी स्वर्णमाला को वंदन करे तथा आकस्मिक धन प्राप्ति के लिए सहाय करने के लिए विनंती करे. इसके बाद साधक यथा संभव मृत्युंजय मन्त्र का जाप करे.

इसके बाद साधक स्फटिकमाला से या रुद्राक्ष माला से निम्न मन्त्र की २१ माला मन्त्र जाप करे.

ॐ श्रीं श्रीं स्वर्णमाले द्रव्यसिद्धिं हूं हूं ठः ठः

(om shreem shreem swarnamaale dravyasiddhim hoom hoom thah thah)

मन्त्र जाप पूर्ण होने पर साधक स्वर्णमाला यक्षिणी को वंदन करे तथा मिठाई/पान स्वयं ग्रहण करे. माला का विसर्जन साधक को नहीं करना है साधक इस माला का भविष्य में भी इस प्रयोग हेतु उपयोग कर सकता है.

****NPRU****

Posted by Nikhil at 11:20 PM No comments:
Labels: DHAN PRADAYAK SADHNA, YAKSHINI SADHNA

THURSDAY, OCTOBER 18, 2012

PAARAD SIDDH SOUNDARYA KANKAN पारद सिद्ध सौंदर्य कंकण (अप्सरा यक्षिणी साधना रहस्य एवं सूत्र सेमीनार मे उल्लेखित ...कंकण)

There have come so many articles and posts on Parad that now no-one can be ignorant of divine qualities of this metal which is lively, conscious and present in liquid form. We have published so many posts regarding it in very simple language through this blog, Tantra Kaumadi and Facebook group, though all this work was already started by Sadgurudev Ji through his magazine Mantra Tantra Yantra many years back. He not only wrote but also taught the related facts practically in shivirs organized by him. More than this how is it possible to create this.....he demonstrated it too.

Talking about Parad, Parad is most divine metal and its capability has no limits. But rather than saying, only after doing special sanskars and passing through various Mantric and Tantric procedures, Paara is transformed into Parad and subsequently attains the state where it can be transformed into special gutikas. Then instilling Vedhan ability in it.......only Vedhan ability is not enough for welfare of all common public, therefore SadaShiv has given blessing of infinite capability to bound Parad. That's why it is also worshipped by gods.

Sakalsurmunidarevaidi Sarvupaasy Tah Shambhu Beejam

Shambhu Beej 1.e Shiva Beej Parad is worshipped by every sage, saint and god. Upasana of which is done by god, then what its upasana cannot provide to humans.

Many among you have attained these special gutikas/idols/ Kankan and have been amazed by seeing its benefits in everyday life.

When we talk about beauty…………….then its definition includes entire world. Concept of Satyam Shivam Sundaram is prevalent in Indian thought process from long back. Beauty is basis of life and life has no meaning without beauty…….and how wonderful it will be if Parad gets connected to all these things. But Parad can be combined only through field of sadhna. When we talk about Saundarya Sadhnas then how is it possible to ignore the description of Apsara, Yakshini, Gandharv kanyas, Kinnari etc. Because if one has to really understand, know and experience beauty then he/she has to necessarily imbibe these sadhnas.These sadhnas may look very easy but in reality they are not that much simple because benefits which can be attained from any one of these sadhna, probably we have to do separate sadhnas for each of them. And this is truth also. But very few have got success in these seemingly easy sadhnas. Reasons is that sadhak do not have information of hidden secrets and those who have the secrets were miser to share the details.

So what should be our attitude towards these sadhnas? Considering this in mind, one day seminar based on Apsara Yakshini secrets was organised. Enthusiasm with which it was conducted is separate thing altogether……….You all got Apsara Yakshini Rahasya Khand book andeagerly awaited Poorn Yakshini Apsara Saayujya Shashth

Mandal Yantra on which along with any apsara yakshini sadhna , Saundarya sadhna, Sammohan sadhna, Kuber Sadhna, Shiv Sadhna, Aakarshan Sadhna can be done very easily. And in these moment of happiness Arif Bhai declared that there is one special and amazing gift which will be given to all persons attending the seminar free of cost……whose name isParad Soundarya Kankan.

But why there is so much importance of Parad Gutika or this Kankan?

Under Ras Siddhi, there is mention of rare idols and Gutikas of Parad but getting them is not so easy because procedures related to their formation have remained very abstruse and difficult. Sadgurudev provided the description of such various Gutikas and also put forward their formation process among common public and he used to make others construct these Gutikas and idols under his own direction.

Mohyodhah Paran Badho Jivyechhmritah Paran Murchritobodhyednyan Tam Sutam Kon Sevte

"Which can bind other after getting bounded itself i.e. Parad which gets bounded in solid idol or Gutika can bind others. In other words, it attains the quality to hypnotise anyone, attract anyone and do vashikaran of anyone, can manifest any god or goddess. It can provide life to others by becoming dead itself i.e. in form of Bhasm (ash) or bind his own speed and instead of using its own energy for its own provides it to sadhak and gives new life to sadhak. It can become unconscious i.e.it becomes solid after stopping his speed and provides

various abstruse knowledge to sadhak. Which learned person will not like to attain such rare and secretive Parad?"

Some qualities and benefits of this Parad Saundarya Kankan (even rare to god) are as follows:

- He while describing the speciality of this Kankan told that first of all this Parad Saundarya Kankan can be used in place of Yakshini Saayujjya Gutika given in Tantra Kaumadi. Though there are other prayog of gutika too and they are precious too. But those benefits can be attained through Kankan also……And when we talk about beauty, it is necessary to mention Parad Siddh Saundarya Kankan. This gutika has also been called Parad Siddh Saundarya Kankan, Ras Siddh Saundarya Kankan or Rasendra Saundarya Kankan. As compared to other gutikas , this gutika is less costly but its importance and utility in sadhna cannot be considered lesser .
- Saundarya Kankan is very special gutika under category of Parad Gutikas whose size is not big. But many types of prayog can be done on it. Basically it comes under Saundarya and Aakarshan Gutikas. Saundarya here does not mean only beauty of person rather it pertains to beauty of complete life of person and all its related aspects. And Aakarshan (attraction) here does not only mean bodily attraction, it is related to attraction of any person or Dev Yoni too. If person attains such attraction capability that Devta are attracted towards him then it is natural for life to be full of joy, pleasure and happiness.

- Also this will work as Parad Shivling in itself. It is true that a complete Parad Shivling is ultimately a Parad Shivling. But it can also be used like that.
- As it has been told about Saundarya Kankan that it is full of attraction capability. Thus it is natural for it to have special effect when any Aakarshan prayog for any person is done in front of it.To add to this, having this gutika in any sadhna of god or goddess is also fortunate because due to its intense attraction capability, this gutika can attract any god or goddess.
- Or there may be any type of Kaamy Prayog. May it be related to attainment of wealth or related to happiness and peace in home.Kaamy prayog means only this that fulfilling the desired wish or desired thing in sadhna by attracting abstruse power. If this gutika is used in any of such Kaamy Prayog i.e. mantra is chanted in front of gutika then Shakti influential in the prayog gets attracted and effect of Mantra increases multiple times. Possibility of fulfilment of desire also become more
- In the same manner in any Vashikaran sadhna too, by establishing gutika in front of him, sadhak moves by leaps and bounces towards attainment of benefit.
- It provides complete cooperation in being face to face with Dev Yoni in any type of Saundarya Sadhna. Sadhna of Apsara, Yakshini, Kinnari, Gandharv Kanya etc. may it for their visible company or may it be to attain wealth, prosperity , materialistic progress invisibly through them , in both forms Saundarya Kankan sadhna….helps to bring closer Apsara Yakshini or other Yonis towards sadhak in visible or invisible form very fast.

- Sthapan Sanskar and Pratishtha on this gutika are done through Shiv Shakti Saayujya Mantra._Therefore it is basically a combined form of Shiva and Shakti. Therefore, any type of Shiv i.e. any god and any type of Shakti sadhna can be done on it. Besides this, this gutika is also related to Chakra gods. Doing Kundalini related sadhnas in front of this Kankan definitely increases the benefits of sadhak.
- Sadhnas which are mentioned to get special benefits related to prosperity-attainment like Kuber Sadhna, Indra Sadhna, Asht Lakshmi Sadhna, doing them in front of this Kankan provides quick results to sadhak because the abstruse procedures like Koshadhyaksh and Devraj Sthapan procedure have already been done on this gutika at the time of Praan Pratishtha.
- Supreme feature of this gutika is that this gutika increases the sadhak's possibilities of attainment of success in any prayog related to any of god-goddess.
- But side by side one special fact is also that sadhak can take benefit out of it throughout his life. There is no need to immerse it.It is also not that sadhna of only one fixed Yoni or god-goddess is done on this gutika.
- If sadhak is doing Yakshini sadhna then also he can use this gutika many times for different Yakshini Sadhnas.
- All the facts mentioned above about Saundarya Kankan are only selected facts. Besides them, sadhak gets various types of benefits in daily life. This Gutika is capable of providing sadhak benefits like happy married life, favourable condition in field of work, business etc.
- Definitely there are many such secretive substances available in this universe through which person can take his life to higher pedestal by

combining Dev powers and can take benefits by doing this task with faster speed. Every gutika related to Parad has got its own speciality and importance though their importance cannot be described in words.

There was some discussion on Parad Siddh Saundarya Kankan in one day Apsara Yakshini seminar and many of its secrets and abstruse aspects were put forward in front of brothers and sisters.

And this Kankan wan available only to persons who participated in that seminar._After this various brothers and sisters enquired how to get this rare Saundarya Kankan but we remained silent on this subject._Because till the time we get permission from ascetic disciples of Sadgurudev Ji that this very special Gutika/Kankan can be made available to all.....how we could have said anything from our side.

And those brothers and sisters who could not participate in this seminar, they got the "Apsara Yakshini Rahasya Khand" book published in it.We were not able to make available this gutika to them though they all have written that they would like to get it at any cost.

But here it is not about cost rather it is about permission.

Cost of this Saundarya Kankan is very less as compared to other Gutikas of Parad. And it is opportunity for all of them who have read it or listened about it or want to attain it that they can get this rare gutika.

You all have now become aware of its benefits. It is being available only because it is our good fortune.

Those among you who want to get this gutika…those who want to attain completeness in Apsara Yakshini sadhna ….and those who wants to get above-said benefits, they should take benefit of this opportunity.

Because getting such sanskar Yukt Parad Vigrah is like establishment of Lord Shankar in home and Lakshmi element is inherent in Parad, so it is establishment of Lakshmi element in home. And when this high-level Kankan will be in front of you during sadhna time then automatically subtle changes will start coming automatically in your body…..which is like opening the door for success in sadhna.

Therefore what more should be written. Only this that…those who are intelligent, knowledgeable, intellectual, know the value of time, hint is enough for them. Those who are over-intelligent….what more can be written for them…

Those who want to get this gutika; they can send email tonikhilalchemy2@yahoo.com and get the information. Please do write Saundarya Kankan in the subject of the e-mail.

===

पारद पर आज हमारे मध्य इतने लेख और पोस्ट आ चुके हैं की अब कोई भी इस धातु को जो की जीवित जाग्रत तरल हैं उसके दिव्य गुणों के प्रति अनिभिज्ञता नही रख सकता हैं, हमने अपने इस ब्लॉग और तंत्र कौमुदी के माध्यम से साथ ही साथ फेसबुक के ग्रुप के माध्यम से इस पर अत्यंत सरल भाषा मे अनेको पोस्ट प्रकाशित की हैं .हलाकि यह सारा कार्य सदगुरुदेव जी ने अपनी पत्रिका मंत्र तंत्र यंत्र विज्ञानं के माध्यम से बहुत वर्षों पहले प्रारंभ कर चुके हैं.उन्होंने स्वयं न केवल लेख लिख कर बल्कि उनके द्वारा

आयोजित शिविरों मे उन्होंने स्वयं प्रायोगिक रूप से इन बातो को समझाया बल्कि कैसे संभव हो सकता हैं इनका निर्माण ... यह कर के दिखाया भी .

बात उठती हैं की पारद एक दिव्यतम धातु हैं, और उसके क्षमताओ की सीमा ही नही पर कहने की अपेक्षा जब विशिष्ट संस्कार करके बिभिन्न मंत्रात्मक और तंत्रात्मक प्रक्रियाओं से गुजरने के बाद ही पारा ..पारद मे और फिर विशिष्टं गुटिकाओ मे बदलने की स्तिथि मे आ पाता हैं, फिर उसे वेधन क्षमता युक्त करना पर ... मात्र वेधन क्षमता प्राप्त होने से सभी जन सामान्य का कल्याण संभव नहीं है, इसी लिए सदाशिव ने बद्ध पारद को अनंत क्षमता का आशीर्वचन दिया. इसी लिए यह देवताओं के द्वारा भी पूजित है.

सकलसुरमुनिदरेवैदि सर्वउपास्य तः शंभु बीजं

सभी ऋषिमुनियों तथा सुर अर्थात देवताओ देवगणों के द्वारा पूजित यह शंभुबीज अर्थात शिवबीज पारद है. जो देवताओ के द्वारा उपास्य है उसकी उपासना भला मनुष्य को क्या प्रदान नहीं कर सकती है.

आप मे से अनेको ने यह विशिष्ट गुटीकाए/विग्रह /कंकण प्राप्त किये हैं और इनके लाभों को अपने दिन प्रतिदिन के जीवन मे देख कर आश्चर्य चकित भी हुये हैं .

जब बात सौंदर्य की हो तो ..उसकी परिभाषा मे सारा विश्व ही आ जाता हैं .क्योंकिसत्यम शिवम सुन्दरम की धारणा तो भारतीय मानस मे पहले से हैं .तो सौंदर्य तो जीवन का आधार हैं.और बिना सौंदर्य के जीवन का कोई अर्थ नही ..और पारद का संयोग अगर इन सब बातों मे हो जाए तो फिर क्या कहना .पर पारद का संयोग साधना क्षेत्र के माध्यम से ही इस ओर हो सकता हैं, जहाँ बात सौंदर्य साधनाओ की आये तब निश्चय ही वहां पर अप्सरा, यक्षिणी, गन्धर्व कन्याए , किन्नरी आदि का विवरण न आये यह कैसे हो सकता हैं .क्योंकि अगर सच मे सौंदर्य को समझना हैं, जानना हैं, और अनुभव करना हैं तो इन साधनाओ को देखना पड़ेगा ही आत्मसात करना पड़ेगा ही पर यह अत्यन्त सरल सी लगने वाली साधनाए ..वास्तव मे इतनी सरल हैं नही .क्योंकि किन्ही एक की साधना से हमें जो लाभ प्राप्त हो सकते हैं शायद उनके अलग अलग अनेको साधनाए करनी पड़े.और यह सत्य भी तो हैं .पर इन सरल सी लगने वाली साधनाओ मे सफलता बहुत कम को मिली हैं ,कारण हैं की इनके गोपनीय सूत्रों का साधको मे न जानकारी होना और जिनके पास जानकारी भी तो ..उन्होंने कृपण भाव बनाए रखा .

तो साधनाओ के प्रति क्या रुझान रख जाए .इसी बात को अपने मन मे रख कर एक ... एक दिवसीय अप्सरा यक्षिणी साधना रहस्य एवं सूत्र पर आधारित सेमीनार का आयोजन किया गया .आप सभी के द्वारा जिस उत्साह पूर्वक माहौल मे इसका आयोजन हुआ वह तो एक अलग ही तत्व हैं ...आप सभी के लिए अप्सरा यक्षिणी रहस्य खंड किताब और उस बहु प्रतीक्षित पूर्ण यक्षिणी अप्सरा सायुज्ज्य षष्ठ मंडल यन्त्र का प्राप्त होना जिस यन्त्र पर कोई भी अप्सरा यक्षिणी की साधना के साथ साथ सौंदर्य साधना,सम्मोहन साधना,कुबेर साधना,शिव साधना,आकर्षण साधना भी

आसानी से समपन्न की जा सकती हैं .और प्रसन्नता के इन्ही क्षणों मे आरिफ भाई जी द्वारा घोषित किया गया की ..उनकी तरफ से एक अद्व्तीय उपहार जो इस सेमीनार मे भाग लेने वालों सभी व्यक्तियों के लिए निशुक्ल रहा हैं, उपलब्ध कराया गया .जिसका नाम पारद सौंदर्य कंकण हैं .

पर पारद गुटिका/या इस कंकण का इतना महत्त्व हैं ही क्यों ?

रस सिद्धि के अंतर्गत पारद के दुर्लभ विग्रह तथा गुटिकाओ कंकण का विवरण तो है लेकिन इनकी प्राप्ति सहज नहीं है क्योंकी इनके निर्माण से सबंधित सभी प्रक्रियाए अत्यधिक गुढ़ तथा दुस्कर रही है. सदगुरुदेव ने ऐसी विविध गुटिकाओ के बारे में विविरण प्रदान किया तथा उनके निर्माण पद्धति को जनसामान्य के मध्य रखा तथा वे अपने स्वयं के निदर्शन में ऐसी गुटिकाओ तथा विग्रहों का निर्माण कराते थे.

मोह्येधः परान बद्धो जिव्येच्छमृतः परान मूर्च्छितोबोध्येद्न्यन तं सुतं कोन सेवते

“ जो खुद बद्ध हो कर दूसरो को बाँध देता है अर्थात ठोस विग्रह या गुटिका रूप में जो पारद बद्ध हो जाता है, वह दूसरों को बाँध देता है, अर्थात किसी को भी सम्मोहित करने का, आकर्षित करना का, वशीभूत करने का गुण धारण कर लेता है, किसी भी देवी, देवता या देवगण को प्रत्यक्ष उपस्थित कर सकता है; जो खुद मृत हो कर दूसरों को जीवन देता है, अर्थात भस्म के रूप में या अपने आप की गति को बद्ध कर स्वयं की उर्जा स्वयं के लिए ना उपयोग कर अपने साधक को प्रदान कर नूतन जीवन प्रदान करता है, जो खुद ही मूर्छित हो कर अर्थात अपनी गति, मति को रोक कर ठोस रूप बन कर विविध गुढ़ ज्ञान का साधक को प्रदान करता है ऐसे दुर्लभ तथा रहस्यमय पारद की प्राप्ति कोन ज्ञानी नहीं करना चाहेगा?”

इस देव दुर्लभ पारद सौंदर्य कंकण के कुछ गुण और लाभ आप सभी के लिए ..इस प्रकार से हैं .

- उन्होंने इस कंकण की विशेषता बताते हुये कहा की सबसे पहले तो यह की तंत्र कौमुदी मे आये हुये यक्षिणी सायुज्ज्य गुटिका की जगह इस पारद सौंदर्य कंकण का प्रयोग किया जा सकता हैं .हालाकि उस गुटिका के अन्य प्रयोग भी हैं .और वह बहुत अधिक मूल्यवान भी हैं .पर उसके लाभ इस कंकण से भी प्राप्त किये जा सकते हैं .... और जब बात सौंदर्य तथा श्रृंगार की हो तोपारद सिद्ध सौंदर्य कंकण का उल्लेख अनिवार्य ही है. इसी गुटिका को पारद सिद्ध सौंदर्य कंकण, रस सिद्ध सौंदर्य कंकण या रसेंद्र सौंदर्य कंकण कहा गया है, दूसरी गुटिकाओ के मुकाबले भले इस गुटिका में लागत कम लगती है लेकिन इसका महत्त्व और साधनात्मक उपयोगिता को ज़रा सा भी कम आँका नहीं जा सकता.
- सौंदर्य कंकण पारद गुटिकाओ की श्रेणी में एक अति विशेष गुटिका है जिसका आकार बड़ा नहीं होता है, लेकिन जिसके ऊपर कई प्रकार के प्रयोग सम्प्पन किये जा सकते है. मूलतः यह सौंदर्य तथा आकर्षण गुटिकाओ के अंतर्गत है. सौंदर्य का अर्थ यहाँ पर मात्र व्यक्ति के सौंदर्य से नहीं बल्कि व्यक्ति के पूर्ण जीवन तथा उससे सबंधित सभी पक्षों के सौंदर्य से है तथा आकर्षण का भी अर्थ यहाँ पर देह से निसृत होने वाले आकर्षण मात्र से ना हो कर किसी भी व्यक्ति या देवयोनी के आकर्षण से भी है. अगर व्यक्ति अपने जीवन में

ऐसी आकर्षण क्षमता को प्राप्त कर ले की देवता भी उससे आकर्षित होने लगे फिर जीवन में रस उमंग तथा सुख भोग होना तो स्वाभाविक है.

- साथ ही साथ यह अपने आप मे एक पारद शिवलिंग का भी कार्य करेगी .यह सही हैं की एक पूर्ण पारद शिवलिंग एक पारद शिवलिंग ही हैं .पर इसका उपयोग भी उस तरह से किया जा सकता हैं .
- सौंदर्य कंकण के बारे में जैसे कहा गया है, वह पूर्ण आकर्षण क्षमता से युक्त होता है. अतः किसी भी व्यक्ति विशेष के आकर्षण प्रयोग को इस गुटिका के सामने करने पर उसका विशेष प्रभाव होना स्वाभाविक है. साथ ही साथ किसी भी देवी तथा देवता की साधना में इस गुटिका का होना सौभाग्य सूचक है क्यों की तीव्र आकर्षण क्षमता के माध्यम से यह किसी भी देवी तथा देवता का भी यह गुटिका आकर्षण कर सकती है.
- या किसी भी प्रकार के काम्य चाहे वह धनप्राप्ति हो या फिर घर में सुख शांति से सबंधित प्रयोग हो, काम्य प्रयोग का अर्थ ही होता है की गुढ़ शक्ति का आकर्षण कर के साधना में अभीष्ट को प्राप्त करना या मनोकामना को पूर्ण करना, अगर ऐसे किसी भी प्रकार के काम्य प्रयोग में इस गुटिका का उपयोग किया जाए तो अर्थात गुटिका को रख कर मंत्र जप किया जाए तो प्रयोग में जिस शक्ति का प्रभाव है, उस पर आकर्षण होता है तथा मंत्र का प्रभाव कई गुना बढ़ जाता है. अभीष्ट की प्राप्ति की संभावना अति तीव्र हो जाती है.
- इसी प्रकार किसी भी वशीकरण साधना में भी इस गुटिका को अपने सामने स्थापित करने पर साधक को निश्चय ही लाभ प्राप्ति की और छलांग लगाता है.
- किसी भी प्रकार की सौंदर्य साधनाओ में यह देव योनी के साक्षात्कार में साधक को पूर्ण सहयोग प्रदान करती है. अप्सरा, यक्षिणी, किन्नरी, गन्धर्वकन्या आदि की साधना चाहे वह उनके प्रत्यक्ष साहचर्य के लिए हो या फिर उनके माध्यम से अप्रत्यक्ष रूप से धन, ऐश्वर्य, भौतिक उन्नति को प्राप्त करना, दोनों ही रूप में सौंदर्य कंकण साधना... साध्य अप्सरा यक्षिणी या दूसरी योनी के प्रत्यक्ष अप्रत्यक्ष रूप से साधक को तीव्रतम रूप से निकट लाने के लिए कार्य करता है.
- इस गुटिका में प्रतिष्ठा तथा स्थापन संस्कार शिव शक्ति सायुज्ज मंत्रो के माध्यम से किया जाता है. अतः मूल रूप से यह शिव तथा शक्ति का समन्वित स्वरुप हीहै इस लिए इस पर किसी भी प्रकार की कोई भी शिव अर्थात कोई भी देवगण या देवता की साधना और कोई भी शक्ति साधना की जा सकती है. इसके अलावा इस गुटिका का सबंध चक्र देवताओं के साथ है, कुण्डलिनी से सबंधित साधनाओ को इस कंकण के सामने करने से निश्चय ही कई साधक के लाभों में वृद्धि होती ही है.
- वैभव प्राप्ति से सबंधित विशेष लाभ प्राप्त करने के लिए जिन साधनाओ का उल्लेख होता है वे कुबेर साधना, इंद्रसाधना, अष्टलक्ष्मी साधना जेसे प्रयोग इस कंकण के सामने करने पर साधक को लाभ तीव्रता से प्राप्त होता है क्यों की कोषाध्यक्ष तथा देवराज स्थापन प्रक्रिया जेसी गुढ़ क्रियाए इस गुटिका पर प्राणप्रतिष्ठा के समय ही संम्पन की जा चुकी होती है.

- इस गुटिका की सब से बड़ी विशेषता यह भी कही जा सकती है की यह गुटिका साधक को कोई भी देवी देवता से सबंधित कोई भी प्रयोग को करने पर साधक की सफलता की संभावनाओं तीव्रता पूर्वक बढ़ा देता है.
- लेकिन साथ ही साथ एक विशेष तथ्य यह भी है की साधक इसके माध्यम से जीवन भर लाभ उठा सकता है, इसको प्रवाहित या विसर्जित करने की आवश्यकता नहीं होती. या ऐसा भी नहीं है की किसी एक निश्चित योनी, या देवी देवता की ही साधना इस गुटिका पर हो सकती है.
- अगर साधक यक्षिणी साधना कर रहा है तब भी इस गुटिका का उपयोग वह कई कई बार अलग अलग यक्षिणी साधनाओ के लिए कर सकता है.
- सौंदर्य कंकण के बारे में ऊपर जितने भी तथ्य है वह चुने हुवे मुख्य तथ्य ही है, इसके अलावा भी इसके कई कई लाभ साधक को नित्य जीवन में प्राप्त होते रहते है, गृहस्थ सुख, कार्य क्षेत्र में अनुकूलता, व्यापर आदि में उन्नति इत्यादि कई प्रकार से यह गुटिका साधक को लाभ प्रदान करने में समर्थ है.
- निश्चय ही ऐसे कई रहस्यमय पदार्थ इस श्रृष्टि में है जिसके माध्यम से व्यक्ति अपने जीवन को उर्ध्वगामी बनाने के प्रयासों में देव बल तथा देव योग को जोड़ कर उसी कार्य को तीव्रता के साथ सम्प्पन कर लाभ को प्राप्त कर सकता है. पारद से सबंधित सभी गुटिकाओ की अपनी अपनी विशेषता तथा महत्त्व है हालाँकि उनके महत्त्व को शब्द के माध्यम से अभिव्यक्ति कितनी भी की जाए कम ही पड़ती है.

पारद सिद्ध सौंदर्य कंकण के बारे में अप्सरा यक्षिणी साधना पर एक दिवसीय सेमीनार में कुछ चर्चा हुई थी तथा इसके रहस्यमय तथा गुढ़ पक्ष और क्रम के बारे में कुछ तथ्यों के सभी भाई बहिनों के सामने रखा था. और यह कंकण केबल मात्र उस सेमीनार मे भाग लिए हुये व्यक्तियों के लिए ही उपलब्ध रही .बाद मे अनेको भाई बहिनों ने इस दुर्लभ सौंदर्य कंकण को कैसे प्राप्त किया जा सकता हैं उसके लिए लिखा पर हमारे द्वारा इस विषय मे मौन ही रखा गया .क्योंकि .यह तो अति विशिष्ट स्तर की गुटिका/कंकण के लिए जब तक सदगुरुदेव जी के सन्याशी शिष्य शिष्याओ द्वारा अनुमति नही मिल जाये की.. सभी को उपलब्ध कराई जा सकती हैं .हम कैसे अपनी ओर से कुछ भी कह सकते हैं .

और जिन भी भाई बहिनों ने जो इस सेमीनार मे भाग नही ले पाए हैं,उन्होंने इसमें प्रकाशित होने वाली किताब "अप्सरा यक्षिणी रहस्य खंड " को प्राप्त किया हैं हम उन्हें भी यह गुटिका उपलब्ध नही करा पाए हैं .हालाकि उन सभी ने यह लिखा था की वे किसी भी कीमत पर इसको प्राप्त करना चाहेंगे . पर यहाँ बात कीमत की नही बल्कि अनुमति की हैं .

यहाँ सौंदर्य कंकण की कीमत पारद की अन्य गुटिकाओ की कीमत की तुलना मे बहुत कम हैं .और .यह हमारा सौभाग्य हैं की जिन्होंने भी इसके बारे मे पढ़ा हैं, या सुना हैं. या जो भी इसको प्राप्त करना चाहते हैं,उनके लिए यह एक अवसर हैं की इस देव दुर्लभ गुटिका को प्राप्त कर सकते हैं .

क्योंकि इसके लाभ से आप अवगत हो ही चुके हैं .यह सिर्फ इसलिए उपलब्ध हो पा रही हैं की वस् इसे सौभाग्य कहा जा सकता हैं .

आप मे से जिन को भी यह गुटिका प्राप्त करना हो ..जिनको भी अप्सरा यक्षिणी साधना मे पूर्णता प्राप्त करना हो उसमे यह सहयोगी कारक कंकण ..और जो भी ऊपर बताये लाभों को प्राप्त करना चाहते हो उन्हें यह अवसर का लाभ उठाना ही चाहिये .

क्योंकि इस तरह से संस्कार युक्त कोई भी पारद विग्रह प्राप्त करना अपने आप मे भगवान शंकर का मानो घर पर स्थापन और पारद मे स्वत ही लक्ष्मी तत्व रहता हैं, उस लक्ष्मी तत्व का आपके घर पर स्थापन हैं और साधना समय मे एक इस तरह के उच्च कोटि का पारद कंकण आपके सामने रहेगा तो स्वत ही आपके अंत: शरीर मे सूक्ष्म परिवर्तन प्रारंभ होने लगेगे, जो की ...या जिनका प्रारंभ होना मानो जीवन मे साधना सफलता के लिए एक द्वार सा खुल जाना हैं .

अतः अब और अधिक क्या लिखा जाए .सिर्फ इतना ही की ...जो समझदार हैं , ज्ञानवान हैं, प्रज्ञा सम्पन्न हैं, समय का मूल्य जानते हैं,उनके लिए तो इशारा काफी हैं .शेष जो अतिबुद्धिमान हैं ..उन्हें क्या और लिखा जाए ..

आप मे से जो भी इस गुटिका को प्राप्त करना चाहे वहnikhilalchemy2@yahoo.com पर इ मेल कर और भी जानकारी ले सकते हैं .हाँ इ मेल के विषय मे ...पारद सौंदर्य कंकण अवश्य लिख दे ..

आहुति विज्ञानं कुछ ज्ञात अज्ञात तथ्य ...भाग -4

जब शाष्त्रीय गूढता युक्त तथ्य हमने समंझ लिए हैं तो अब सरल बातों और किस तरह से करना हैं पर भी कुछ विषद चर्चा की आवश्यकता हैं

1.कितना हवन किया जाए ??:

शास्त्रीय नियम तो दसवे हिस्सा का हैं इसका सीधा सा मतलब की एक अनुष्ठान मे १,२५,००० जप या १२५० माला मंत्र जप अनिवार्य हैं . और इसका दशवा हिस्सा होगा १२५० /१० = १२५ माला हवन मतलब लगभग १२,५०० आहुति ...(यदि एक माला मे १०८ की जगह सिर्फ १०० गिनती ही माने तो ..)

और एक आहुति मे मानलो १५ second लगे तब कुल १२,५०० * १५ =१८७५०० सेकेण्ड मतलब ३१२५ मिनिट मतलब ५२ घंटे लगभग .. तो किसी एक व्यक्ति के लिए इतनी देर आहुति दे पाना क्या संभव हैं ??

2.तो क्या अन्य व्यक्ति की सहायता ली जा सकती हैं .??

तो इसका उतरा हैं हाँ पर वह सभी शक्ति मंत्रो से दीक्षित हो या अपने ही गुरु भाई बहिन हो तो अति उत्तम हैं जब यह भी न संभव हो तो सदगुरुदेव जी के श्री चरणों मे अपनी असमर्थता व्यक्त कर मन ही मन उनसे आशीर्वाद लेकर घर के सदस्यों की सहायता ले सकते हैं .

3.तो क्या कोई और उपाय नही हैं .??

सद्गुरुदेव जी ने यह भी निर्देशित किया हैं यदि दसवां हिस्सा संभव न हो तो शतांश हिस्सा भी हवन किया जा सकता हैं

मतलब १२५० /१०० = १२.५ माला मतलब लगभग १२५० आहुति = लगने वाला समय = ५ /६ घंटे ...यह एक साधक के लिए संभव हैं .

4.पर यह भी हवन भी यदि संभव ना हो तो ??कतिपय साधक किराए के मकान मे या फ्लेट मे रहते हैं वहां आहुति देना भी संभव नही हैं तब क्या ??

सद्गुरुदेव जी ने यह भी विधान सामने रखा की साधक यदि कुल जप संख्या का एक चौथाई हिस्सा जप और कर देता हैं संकल्प ले कर की मैं दसवा हिस्सा हवन नही कर पा रहा हूँ इसलिए यह मंत्र जप कर रहा हूँ तो यह भी संभव हैं ......पर इस केस मे शतांश जप नही चलेगा इस बात का ध्यान रखे ,

5.श्रुक स्त्रुव ::

ये आहुति डालने के काम मे आते हैं .

स्त्रुक ३६ अंगुल लंबा और स्त्रुव २४ अंगुल लंबा होना चाहिए .इसका मुंह आठ अंगुल और कंठ एक अंगुल का होना चाहिए .

ये दोनों स्वर्ण रजत पीपल आम पलाश की लकड़ी के बनाये जा सकते हैं .

6.हवन किस चीज का किया जाना चाहिये ??

- शांति कर्म मे पीपल के पत्ते , गिलोय ,घी का
- पुष्टि क्रम मे बेलपत्र चमेली के पुष्प घी
- स्त्री प्राप्ति के लिए कमल
- दरिद्र्यता दूर करने के लिये .. दही और घी कीआहुति
- आकर्षण कार्यों मे पलाश के पुष्प या सेंधा नमक से .
- वशीकरण मे चमेली के फूल से
- उच्चाटन मे कपास के बीज से
- मारण कार्य मे धतूरे के बीज से हवन किया जा ना चाहिए .

7.दिशा क्या होना चाहिए ??

साधरण रूप से जो हवन कर रहे हैं वहकुंड के पश्चिम मे बैठे और उनका मुंह पूर्व दिशा की ओर होना चाहिये यह भी विशद व्याख्या चाहता हैं .यदि षट्कर्म किये जा रहे हो तो ..;

- शांती और पुष्टि कर्म मे ....पूर्व दिशा की ओर हवन कर्ता का मुंह रहे
- आकर्षण मे ---उत्तर की ओर हवन कर्ता मुंह रहे और यज्ञ कुंड वायु कोण मे हो
- विद्वेषण मे –नैरत्य दिशा की ओर मुंह रहे यज्ञ कुंड वायु कोण मे रहे .
- उच्चाटन मे – अग्नि कोण मे मुंह रहे यज्ञ कुंड वायु कोण मे रहे .
- मारण कार्यों मे -- दक्षिण दिशा मे मुंह और दक्षिण दिशा मे हवन हुंड हो .

8.किस प्रकार के हवन कुंड का उपयोग किया जाना चाहिए ??

- शांति कार्यों मे स्वर्ण ,रजत या ताबे का हवन कुंड होना चाहिए .
- अभिचार कार्यों मे लोहे का हवन कुंड होना चाहिए
- उच्चाटन मे मिटटी का हवन कुंड
- मोहन् कार्यों मे पीतल का हवन कुंड
- और ताबे का हवन कुंड मे प्रत्येक कार्य मे उपयोग की या जा सकता हैं .

9.किस नाम की अग्नि का आवाहन किया जाना चाहिए ??

- शांति कार्यों मे वरदा नाम की अग्नि का आवाहन किया जाना चहिये .
- पुर्णाहुति मे मृडा ना म् की
- पुष्टि कार्योंमे बल द नाम की अग्नि का
- अभिचार कार्योंमे क्रोध नाम की अग्नि का
- वशीकरण मे कामद नाम की अग्नि का आहवान किया जाना चहिये ..

10.सदगुरुदेव द्वारा निर्देशित कुछ ध्यान योग बाते ::

- नीम या बबुल की लकड़ी का प्रयोग ना करें .
- यदि शमशान मे हवन कर रहे हैं तो उसकी कोई भी चीजे अपने घर मे न लाये .
- दीपक को बाजोट पर पहले से बनाये हुए चन्दन के त्रिकोण पर ही रखे .
- दीपक मे या तो गाय के घी का या तिल का तेल का प्रयोग करें.
- घी का दीपक देवता के दक्षिण भाग मे और तिल का तेल का दीपक देवता के बाए ओर लगाया जाना चाहिए .
- शुद्ध भारतीय वस्त्र पहिन कर हवन करें .
- यज्ञ कुंड के ईशान कोण मे कलश की स्थापना करें .
- कलश के चारो ओर स्वास्तिक का चित्र अंकित करें .
- हवन कुंड को सजाया हुआ होना चाहिए .

सद्गुरुदेव द्वारा रचित पुस्तक " सर्व सिद्धि प्रदायक यज्ञ विज्ञानं "का अध्ययन करें आवश्यक अन्य सामान्य विधान उसमे पूर्णता के साथ वर्णित हैं की किस तरह से प्रक्रिया कीजाना चाहिए ..

अभी उच्चस्तरीय इस विज्ञानं के अनेको तथ्यों को आपके सामने आना बाकी हैं .जैसे की " यज्ञ कल्प सूत्र विधान"क्या हैं जिसके माध्यम से आपकी हर प्रकार की इच्छा की पूर्ति केबल मात्र २१ दिनमे यज्ञ के माध्यम से हो जाति हैं . पर
यह यज्ञ कल्प विधान हैं क्या??? ...यह और और भी अनेको उच्चस्तरीय तथ्य जो आपको विश्वास ही नही होने देंगे की यह भी संभव हैं ..इस आहुति विज्ञानं के माध्यम से ..आपके सामने भविष्य मे आयंगे .अभी तो मेरा उद्देश्य यह हैं की इस विज्ञानं की प्रारंभिक रूप रेखा से आप परिचित हो .. तभी तो उच्चस्तर के ज्ञान की आधार शिला रखी जा सकती हीं ...
क्योंकि कोई भी विज्ञानं क्या मात्र चार भाव मे सम्पूर्णता से लिया जा सकता हैं .???
कभी नही ..
यह १०८ विज्ञानं मे से एक हैं अतः ....हम अपनी पात्रता और ज्ञान लाभ की योग्यता बढ़ाते जाए ..और सदगुरुदेव जी के श्री चरणों मे नतमस्तक रहे तो जो ज्ञान नम्रता पूर्वक पाया जा सकता हैं वह व्यर्थ के अभिमान से नही ......हठ से नही .....
अगर हम दिखाने के लिए नही बल्कि सच मे सही अर्थो मे ..लगतार यदि साधनारत रहेंगे तो क्यों नही सदगुरुदेव एक से एक अद्भुत रहस्यों को सामने लाते जायंगे और अद्भुत रहस्य अनावृत होते जायेंगे.
यह तो अनेको भाई बहिनों की हवन और आहुति सबंधित समस्या देख कर मात्र प्रारंभिक परिचय ही हैं इस विज्ञानं का ......

When we have understood the difficult facts mentioned in shastras then now it's the need to elaborately discuss some easy things and how to do it.

1 How much Hawan should be done??

Rules of shastras says 1/10th part. This simply means that in one anushthan 1, 25,000 mantra jap or 1250 rounds of rosary are necessary then it's one-tenth part i.e. 1250/10=125 rosary hawan approximately 12500 oblations… (If we take 100 beads instead of 108 beads in one rosary…)

And if one oblation takes 15 seconds then total 12500*15=187500 seconds i.e. 3125 minutes meaning approximately 52 hours…..so is it possible for one person to offer oblation for such a long period?

2 So can we take help of any other person?

Answer to this is yes but all of them should have taken Diksha through Shakti mantras or if they are our Guru Brothers or sisters, then it is best. If this is also not possible then we can express incapability in the lotus feet of Sadgurudev and take assistance from our family members after taking blessings from him mentally.

3 So is there no other solution at all?

Sadgurudev has also directed that if 1/10th portion is not possible, then 1/100th portion hawan can also be done.

Meaning 1250/100=12.5 rosary i.e. approximately 1250 oblations. It will take 5-6 hours so it is possible for sadhak.

4 But if this hawan is also not possible then?? Few of sadhaks live in rented homes or flat where it is not possible to offer oblation then what they should do??

Sadgurudev has also put forward one rule that sadhak can do 1/4th of the total mantra jap extra by taking a resolution that since I am not able to do 1/10th hawan, I am doing this mantra jap…..but in such a case 1/100th mantra jap will not solve the purpose. Keep this thing in mind.

5 Struk and Struv::

These are used for offering oblation.

Struk should have length of 36 fingers and struv of 24 fingers. Mouth of it should be of 8 fingers and throat of one finger.

These two can be made up of gold, silver or the woods of Mango or Palash (Butea Fondosa).

6 Which things should be offered in Hawan?

- **Leaves of Peepal, Gilooy, ghee in Shanti Karma.**
- **Bel Petra ,flowers of jasmine, ghee in Pushti Karma**
- **Lotus for attaining female**
- **Curd and ghee for getting rid of poverty**
- **Flowers of Palash or Sendha Namak (a type of salt) for attraction purposes.**
- **Flowers of jasmine in Vashikaran**
- **Seeds of cotton in Ucchatan**
- **Seeds of Dhatura (Thorn-apple) in Maaran Karma.**

7 What should be the direction??

Those who are doing hawan in general way, they should sit on the west side of Kund and they should face east.

This also need elaborate discussion. If shatkarmas are being done then

- **In Shanti and Pushti Karmas….The person doing the hawan should face east.**

- **For Attraction**-The person doing hawan should face north and yagya kund should be in Vayu kon.
- **In Vidveshan**-Face should be towards Neiratya direction and yagya kund should be in Vayu kon
- **In Ucchatan**- Face should be in agni kon and yagya kund should be in Vayu kon
- **In Maaran Karmas**-Face should be in south direction and yagya kund should be in south direction.

8 Which type of Hawan Kund should be used??

- In Shanti karmas, hawan kund made up of gold, silver or copper should be used.
- For abhichaar karmas, hawan kund made up of iron should be used.
- Hawan Kund made up of clay in Ucchatan
- Bronze hawan kund in Mohan Karmas.
- And copper hawan kund can be used for any of the karmas.

9 Aavahan of which name of fire should be done??

- For shanti karmas, Aavahan of fire named Varda should be done
- In poornaahuti,of fire named Mreeda
- In Pushti karmas, of fire named Balad
- In abhichaar karmas, of fire named Krodha
- In vashikaran, aavahan of fire named Kaamad should be done.

10 Important points to take note of, as directed by Sadgurudev.

- Never use the wood of Neem or Babul.
- If you are doing hawan in shamshaan, then never bring the articles back to home.
- Keep the lamp only on the already made triangle of sandal.
- Use the cow ghee or oil of til in lamp.
- Ghee lamp should be placed on the right side of the god and Til oil lamp should be placed on the left side of god.
- Lamp of ghee should be placed on right side of god and Til oil lamp should be placed on left side of god.
- Do the hawan wearing clean Indian dress.
- In the Ishan Kon of yagya kund, set up the Kalash.
- On all the four sides of Kalash, make swastik sign.
- Hwan kund should be decorated.

Read the book "Sarv Siddhi Pradayak Yagya Vigyan" authored by Sadgurudev. All the other necessary generally rules are describedin it with completeness that how to do this activity.

High-order facts of this science is yet to be revealed like what is "Yagya Kalp Sootra Vidhaan" by which every desire can be fulfilled within merely 21 days through yagya. But what is this yagya kalp Vidhaan???...This and all other high-order facts which you will find it hard to believe that whether it is possible through this aahuti Vigyan will be revealed in future. Right now, my aim is to introduce you all to the preliminary outline……then only the founding stone of higher-order knowledge can be laid…

Because can any science be taken completely in merely four bhaavs..????
Never…
This is one among 108 vigyans. Therefore….we should keep on increasing our eligibility and capability of gaining knowledge….and should bow down on the lotus feet of Sadgurudev then this knowledge can be gained with courtesy, not with unnecessary ego….or stubbornness
If we indulge in sadhna in real sense, not for the sake of showing it off, then Sadgurudev will keep amazing secrets in front of you and all these astonishing secrets will be unveiled.
This was merely a preliminary introduction of this science considering the problems of various brothers and sisters related to hawan and aahuti…..

****NPRU****

Posted by Nikhil at 1:52 AM 1 comment:
Labels: YAGYA VIDHAAN RAHASYA

MONDAY, MAY 14, 2012

आहुति विज्ञानं कुछ ज्ञात अज्ञात तथ्य ...भाग -3

अब समय हैं यह जान ने का की भू हास्य कब होता हैं .साधारणतः यह लग सकता हैं की इतने नियम ..तो थोडा सा आप याद करे जब आप साधना मे प्रथम बार आये थे तब आपकी मंत्र, गुरु मंत्र, चेतना मंत्र , माला को कैसे पकडना हैं , कैसे माला से जप करना हैं मुख शुद्धि , आसन शुद्धि , गणपति पूजन , भैरव पूजन, निखिल कवच, सदगुरुदेव पूजन , विभिन्न न्यास , और कितनी न सारी चीजों ने आपको हैरानी मे डाल दिया होगा की कैसे करे ..

पर आज यह सब आपके लिए एक सामने सरल और सहज क्रम हैं जो अपने आप होता चलता हैं आपको कोई भी चिंता नही करना पडता .. एक समय गुरु आरती या स्त्रोत भी आपको कठिन लग सकते रहे होंगे पर आज... तो आपकी सांस सांस मे हैं .ठीक इसी तरह इस विज्ञानं को ले . मात्र १५ /२० मिनिट मे आप सही समय का निर्धारण कर सकते हैं .

भू हास्य –

तिथि मे ..पंचमी ,दशमी ,पूर्णिमा ,

वार मे - गुरु वार,

नक्षत्र मे – पुष्य , श्रवण

मे पृथ्वी हसती हैं अतः इन दिनों का प्रयोग किया जाना चाहिए .

गुरु और शुक्र अस्त :

यह दोनों ग्रह कब अस्त होते हैं और कब उदित ....आप लोकल पंचांग मे बहुत ही आसानी से देख सकते हैं , और इसका निर्धारण कर सकते हैं . अस्त होने का सीधा सा मतलब हैं की ये ग्रह सूर्य के कुछ ज्यादा समीप हो गए . और अब अपना असर नही दे पा रहे हैं .चूँकि इन दोनों ग्रहो का प्रत्येक शुभ कार्य से सीधा लेना देना हैं अतः इनके अस्त होने पर शुभ कार्य नही किये जाते हैं और इन दोनों के उदय रहने की अवस्था मे शुभ कार्य किये जाना चा हिये .

आहुति कैसे दी जाए :::

- आहुति देते समय अपने सीधे हाँथ के मध्यमा और अनामिका उँगलियों पर सामग्री ली जाए और अंगूठे का सहारा ले कर उसे प्रज्ज्वलित अग्नि मे ही छोड़ा जाए .
- आहुति हमेशा झुक कर डालना चाहिए वह भी इसतरह से की पूरी आहुति अग्नि मे ही गिरे .
- जब आहुति डाली जा रही हो तभी सभी एक साथ स्वाहा शब्द बोले .(यह एक शब्द नही बल्कि एक देवी का नाम हैं और सदगुरुदेव जी ने बहुत पहले स्वाहा साधना नाम की एक साधना भी हमें प्रदान की थी पत्रिका के माध्यम से ..
- जिन मंत्रो के अंतमे स्वाहा शब्द पहले से हैं उसमे फिर से पुनः स्वाहा शब्द न बोले ..यह ध्यान रहे .

वार ::

- रविवार और गुरु वार सामान्यतः सभी यज्ञों के लिए श्रेष्ठ दिवस हैं .
- शुकल पक्ष मे यज्ञ आदि कार्य कहीं ज्यादा उचित हैं .

किस पक्ष मे शुभ कार्य न करे ..

- सदगुरुदेव लिखते हैं की ज्योतिष स्कंध ग्रथ कार कहते हैं की जिस पक्ष मे दो क्षय तिथि हो मतलब वह पक्षः १५ दिन का न हो कर १३ दिन का ही होजायेगा उस पक्ष मे समस्त शुभ कार्य वर्जित हैं .
- ठीक इसी तरह अधिक मास या मल मास मे भी यज्ञ कार्य वर्जित हैं

किस समय हवन आदि कार्य करें ::

- सामान्यतः आपको इसके लिए पंचांग देखना होगा उसमे वह दिन कितने समय का हैं उस दिन मान के नाम से बताया जाता हैं उस समय के तीन भाग कर दे और प्रथम भाग का उपयोग यज्ञ अदि कार्यों के लिए किया जाना चाहिए .
- साधारण तौर से यही अर्थ हुआ की की दोपहर से पहले यज्ञ आदि कार्य प्रारंभ हो जाना चहिये .
- हाँ आप राहु काल आदि का ध्यान रख सकते हैं और रखना ही चहिये ,क्योंकि यह समय बेहद अशुभ माना जाता हैं .

<u>यज्ञ कुंड के प्रकार</u> ....

सदगुरुदेव ने यह हम सबको यह बताया ही हैं की यज्ञ कुंड मुख्यत: आठ प्रकार के होते हैं और सभी का प्रयोजन अलग अलग होता हैं

1. योनी कुंड –योग्य पुत्र प्राप्ति हेतु
2. अर्ध चंद्राकार कुंड –परिवार मे सुख शांति हेतु .पर पतिपत्नी दोनों को एक साथ आहुति देना पड़ती हैं .
3. त्रिकोण कुंड –शत्रुओं पर पूर्ण विजय हेतु
4. वृत्त कुंड ..जन कल्याण और देश मे शांति हेतु
5. सम अष्टास्त्र कुंड –रोग निवारण हेतु
6. सम षडास्त्र कुंड –शत्रुओ मे लड़ाई झगडे करवाने हेतु
7. चतुष् कोणा स्त्र कुंड –सर्व कार्य की सिद्धि हेतु
8. पदम कुंड –तीव्रतम प्रयोग और मारण प्रयोगों से बचने हेतु

तो आप समझ ही गए होंगे की सामान्यतः हमें चतुर्वर्ग के आकार के इस कुंड का ही प्रयोग करना हैं .

ध्यान रखने योग्य बाते :

अबतक आपने शास्त्रीय बाते समझने का प्रयास किया . यह बहुत जरुरी हैं ... क्योंकि इसके बिना सरल बाते पर आप गंभीरता से विचार नही कर सकते .सरल विधान का यह मतलब कदापि नही की आप गंभीर बातों को ह्रद्‌यगम ना करें ..

- .पर जप के बाद कितना और कैसे हवन किया जाता हैं ?,
- कितने लोग और किस प्रकार के लोग की आप सहायता ले सकते हैं?.
- कितना हवन किया जाना हैं .?
- हवन करते समय किन किन बातों का ध्यान रखना हैं .?
- क्या कोई और सरल उपाय भी जिसमे हवन ही न करना पड़े ..???

- किस दिशा की ओर मुंह करके बैठना हैं ?
- किस प्रकार की अग्नि का आह्वान करना   हैं ??
- किस प्रकार की हवन सामग्री का उपयोग करना   हैं ??
- दीपक कैसे   और किस चीज का लगाना   हैं .??
- कुछ ओर आवश्यक सावधानी ???

आदि बातों के साथ अब कुछ बेहद सरल बाते .... को अब   हम देखेगे ...

क्रमशः ....

Now is the time to know when does the Bhu-Haasay (Laughing of Earth) happen? Generally it seems that so many rules……Just remember when you entered the field of sadhna for first time then your Guru Mantra, Chetna Mantra, how to hold the rosary, how to chant the mantra with rosary, Mukh Shuddhi (purification of mouth), Aasan shuddhi (Purification of aasan), Ganpati poojan, Bhairav poojan, Nikhil Kavach, Sadgurudev poojan, various nyas and many more things would have put you into astonishment that how to do them…..

But now all these things are simple and easy process for you which happen on their own. You do not have to worry about it……One time you would also have faced difficulty doing Guru aarti and Stotra but today it is in our breaths. Like this, take this science. You can decide the correct time in merely 15-20 minutes.

Bhu Haasay (Time of laughing of earth)

In terms of tithi……Panchami (fifth day), Dashmi (tenth day), Poornima (15th day of Shukla Paksha)

In terms of Day…….Thursday

In terms of constellation…..Pushya, Shravan

In all these days, earth laughs. Therefore, these days should be utilized.

When Jupiter and Venus are ast :

When these two planets sets and when they rise……they can be seen very easily from the local Panchang and one can decide its timings. Ast simply means that these planets have got closer to sun and therefore are not able to give their own influence. Since these two planets shave a direct bearing on every auspicious work therefore when they are ast, no auspicious works are done. Auspicious work should be done only at the time when both are raised.

How to offer Oblation:

- At the time of offering oblation, take the articles in the middle and ring finger of right hand and while taking the assistance of thumb, drop it only in the ignited fire.
- Always offer the oblation while bending down and that too in such a way that entire oblation falls into the fire.
- When oblation is being offered, then all the persons should pronounce swaha together (this is not merely a word, rather it is the name of a goddess and Sadgurudev has provided a sadhna named Swaha sadhna in magazine earlier)

- In case of mantras ending in swaha, swaha should not be pronounced again…keep this thing in mind.

Day::

Sunday and Thursday generally are the best day for all yagyas.It is much better to do yagyas in Shukla paksha.

In which Paksha auspicious works should not be done…

- Sadgurudev has written that author of Jyotish skandha says that in the paksha which contains two kshaya tithi (meaning that paksha will contain 13 days instead of 15), all the auspicious works are prohibited.
- In the similar manner, yagya karma is prohibited in Aadhik month and Mal month.

At what Time Hawan etc. should be done::

- Generally, you have to see Panchang for this. The total time of that day is shown in it by the name of Din Maan.Divide that time by 3 and the first portion should be utilized for yagya like works.
- Normally it means that yagya related works should be started before the afternoon.
- You can keep note of Rahu Kaal and you should since this time is always considered as inauspicious.

Types of Yagya Kund

Sadgurudev has told us all that yagya kund primarily are of 8 types and purpose of each of them is different.

1. Yoni Kund –For getting capable son
2. Ardha Chandrakaar Kund (Kund having the shape of half-moon) –For peace in the family, but both husband and wife have to offer oblation together.
3. Trikon Kund (Triangular Kund) - For complete victory over enemies
4. Vrit Kund (Circular Kund)-For public welfare and peace in the country
5. Sam Ashtastra Kund-For removing diseases
6. Sam Shadastra Kund- For creating a fight between your enemies.
7. Chatush Kona Str Kund (having 4 sides) –For accomplishment of all work
8. Padam Kund – For safety from highly intense prayog and Maaran prayog.

So you would have understood that generally we have to use the kund of shape of square.

Points to Be Noted:

Till now you have tried to understand the things given in shastra. This is very much necessary. ………

Because without these, you cannot think deeply over these easy things. Simple process does not mean that you should not imbibe serious things in your heart.

- But How much and how the havan is done after chanting?
- How many persons and what type of person can help you?
- How much havan needs to be done..?
- What are the things to be kept in mind while doing havan..?
- Is there any easy process in which havan need not be done..?
- Facing which direction, you have to sit..?
- Which type of fire’s Aavahan needs to be done..?
- Which type of havan articles has to be used..?
- How to light the lamp and of which material?

- Any other precautions???

All these things along with other very easy facts will be seen now…..
…..
To Be continued……

SIMPLE PROCESS FOR MARRIED SISTERS FOR FAMILY HAPPINESS AND PEACE-विवाहित बहिनों हेतु पारिवारिक सुख शांति दायक सरल विधान

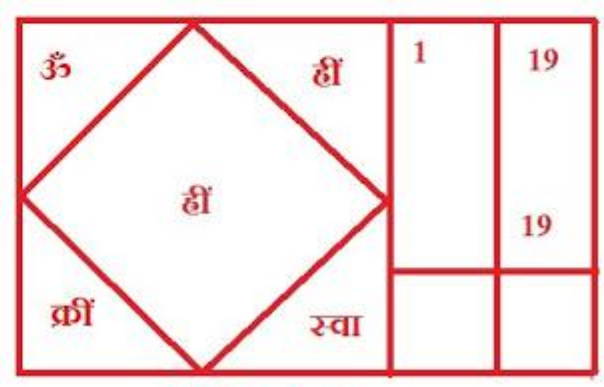

वशीकरण यन्त्र

Compulsion of female life and not that much broad attitude of social rules towards them increase their problems. Also the time when these rules would have been made, the circumstances and mental condition prevailing at that time would not have been the same as that of today. Thinking of saints of that time has been of higher order in itself.

We all know pretty well about various high-order female powers who knew the essence of scripture like Vedas. Just saying that woman is power will not solve the purpose but she also has to pretty well know her qualities, herself and her powers. Then only said things can be realized in real form.

And this is possible only by means of sadhna….and now no other path is left……Even Lord Shankar after seeing the change happening in this time, mental states and various shortcomings told in advance that in this era, only Tantra path will be beneficial. Those who take assistance of other path leaving this path, what can be said about their fate.

Rather than being the one who knows the path, it would be far better to move on that path. But this is also true that whatever may be the progress we are seeing in our society but still level of consciousness of many is orthodox. Their form outside is something different from their form inside the house. In few families, state of the female category can't be called good even till today.

When one girl enters another family, after few days same problem come in front of her.Only their form, magnitude and person changes.

Reason may be one, but they are always held responsible. Seeing all from one angle is also wrong. Nevertheless, if your father-in-law and mother-in-law are not in favor of you then do this prayog. Definitely it will help….their feeling towards you will definitely become softer.
It is also your responsibility that as you are Grah Lakshmi, you should always do Lakshmi related sadhnas because due to shortage on money various problems arise which in reality does not have any existence. If you are not able to do them, then at least you make Kanakdhara Stotra or any fortune-providing Stotra as part of your daily worship.
We also know that sometimes you want to do sadhna but due to some reason or absence of yantra or due to lack of appropriate knowledge of sadhna, you are not able to do it.For this reason, we have made the provision for seven sadhnas every month so that you can get yantra free of cost…..and related sadhna also.
Those who are capable of doing it, they should do these sadhnas and due to the energy of sadhna definitely transformation will come in your personality Also when Shakti element will be activated, then automatically all will get attracted towards you.
But this will not happen in one day. Slowly and steadily, be ready for the change. Then see how sadhnas take your life to higher pedestal.
On any Saturday, make this yantra on roti made up of wheat and offer it to black dog or bitch for eating. This will definitely help.(Offering black dog the wheat roti, dipped in oil lowers down the prevailing stress in family. This has been tested by many)
You should also know that the day you wish to do it, on that day you will not be able to find black dogs and if they are seen, they will not eat…This happens many times, these are amazing things of Tantra world.
With the wish that our married sisters see happiness and prosperity and good-fortune comes in family of you all…..But they also should bear in mind that they also have to be capable sadhika all the time and do the sadhnas. This is not possible that one prayog is done and then you get rid of problems for entire life.
==

नारी जीवन की विवशताए और सामाजिक नियमों का उनके प्रति उतना खुला रुख न होना समस्याओ को और भी बढ़ा देता हैं .यूँ भी जिस किसी काल मे यह नियम बनाये गए होने उस काल की परिस्थितियाँ और मानसिक अवस्था कम से कम आज जैसी तो न रही होगी उस काल के मनस्वियों का का चिंतन अपने आप मे उच्चता का परिचायक रहा .

यहाँ तक वेद जैसे ग्रथो के मर्म को जानने वाली अनेको उच्चस्तरीय नारी शक्तियों के बारे मे हम भली भांति जानते हैं ही .**सिर्फ यह कहने से ही तो काम नही चल सकता की नारी एक शक्ति हैं बल्कि उसे भी अपने गुणों को, आपने आप को और अपनी शक्तियों को भली भांति जानना ही होगा .तभी जो कहा गया हैं वह वास्तविक रूप मे सामने आ पायेगा .**

और यह संभव हो सकता हैं केबल और केबल साधना के माध्यम से ..और कोई मार्ग अब कम से कम शेष नही रहा …यहाँ तक भगवान शंकर ने भी इस काल मे आने वाले परिवर्तन और मानसिक अवस्थाये और विभिन्न कमियों को देख कर पहले ही कह दिया हैं की केबल और केबल तंत्र मार्ग ही इस काल मे सफलता दायक हैं जो इसे छोड़कर दूसरे मार्ग का अब्लंबन लेता हैं उसके भाग्य को क्या कहा जाए .

केबल किसी बात का जान कार होने के कई कई गुना जयादा बेहतर होगा की उस मार्ग पर चल कर देख जाए .पर यह भी सत्य हैंकि कितनी भी प्रगति क्यों न आज समाज मे दिख रही हो पर अभी भी अनेको का चेतना का स्तर उतना ही दकियानुसी हैं , उनका बाह्यगत एक रूप हैं और घर के अंदर एक अन्य रूप .कतिपय परिवार मे तो नारी वर्ग की अवस्था अभी भी बहुत अच्छी नही कहीं जा सकती हैं .

वही जब एक लड़की अन्य परिवार मे प्रवेश करती हैं तो कुछ दिन बाद वही समस्याए उनके सामने आने लगती हैं केबल उनका रूप और आकार और व्यक्ति बदल जाता हैं .

कारण कोई भी हो उन्हें ही दोषी ठहराया जाता हैं .सभी को एक दृष्टी से देखना भी गलत हैं . खेर अगर आपके परिवर मे आपके सास ससुर अनुकूल न हो रहे हो तो इस प्रयोग को करके देखें .निश्चय ही अनुकूलता आएगी ..उनके मन मे आपके प्रति कोमल भावना का आगमन होगा ही .

वहीँ आपका भी कर्तव्य बनता हैं की गृह लक्ष्मी होने के का रण आप भी लक्ष्मी सबंधित साधनाए हमेशा करती जाए .क्योंकि **धन की कमी के कारण अनेको ऐसी समस्याए आती हैं जिनका सच मे सीधे कोई अस्तित्व नही होता हैं तो इस कारण यदि कुछ आप न कर पा रही हो तो कनक धारा स्त्रोत और सौभग्य कारक किसी भी स्त्रोत का पाठ को अपनी दैनिक पूजा मे अंग तो बनाये .**

हम यह भी जानते हैं की कई बार आप साधना करना चाहती हैं पर किसी का रण वश या तो यन्त्र नही या फिर साधना का उचित ज्ञान नही होता इसी कारण हमने हर महीने सात साधनाओ का प्रावधान रखा हैं की यन्त्र आपको निशुल्क प्राप्त कर सकती हैं .. और सबंधित साधना भी .

जो कर सकने मे समर्थ हो वह तो इन साधनाओ को करते जाए और साधना त्मक उर्जा से निश्चय ही आपके व्यक्तितवमे परिवर्तन आएगा वहीँ जब शक्ति तत्व जाग्रत होगा तो स्वतः ही सभी आपके आकर्षण मे बंधते जायेगे ही .

पर यह एक दिन मे तो नही होगा धीरे धीरे आप परिवर्तन के लिए तैयार हो फिर देखिये साधनाए कैसे आपके जीवन को उच्चता की ओर ले जाती हैं .

किसी भी शनि वार को इस यन्त्र को आप गेहूं की रोटी पर बना ले और किसी भी काले रंग के कुत्ते और कुतिया को खिला दे इससे निश्चय ही अनुकूलता आएगी **(वेसे भी गेहूं की रोटी मे तेल भी चुपड़ कर किसी भी काले कुत्ते को खिलाने से घर परिवार मे व्याप्त तनाव मे कमी आती हैं यह भी अनेको का परीक्षित प्रयोग हैं)**

वेसे यह जान ले जिस दिन भी आप यह करना चाहोगे उस दिन कहीं आपको यह काले रंग के स्वान दिखेंगे ही नही और दिख गए तो तो ये खायेंगे ही नही..ऐसा अनेक बार होता हैं यही तंत्र जगत के कुछ अद्भुताये हैं .

आप सभी के परिवार मे अनुकूलता आये और हमारी विवाहित बहिने भी हर तरह से सुखी सम्पन्नता देख सके यही कामना के साथ ..**पर उन्हें भी यह ध्यान रखना होगा की उन्हें भी सदैव एक योग्य साधिका बने ही रहना हैं,साधनामय बनना हैं . यह संभव नही हैं की एक प्रयोग कर लिया और जीवन भर के लिए मुक्ति .. ....**

******NPRU******

Posted by Nikhil at 3:55 AM 3 comments:
Labels: KAARYA SIDDHI SADHNA, VIVAH BADHA NIVARAK

SUNDAY, APRIL 22, 2012

मनो वांछित निश्चित जीवन प्राप्ति हेतु सरल तंत्र साधना विधान …….(Saral Tantra Sadhna Process to get desired Life Partner)

भारतीय मनिषियों ने मानव जीवन को सुचारू रूप से गतिशील बनाये रखने और समाज में एक निरंतरता के साथ मर्यादा का पालन भी हो सके इसकेलिए अनेको संस्कार की कल्पना की .जिन्हें हम सोलह संस्कार के नाम से भी जानते हैं .पर आज इनमे से अनेको का पालन वेसे नही होता जैसे की होना चाहिये .अब न वेसे योग्य विद्वान रहे न ही उन संस्कारों को पालन करने लायक हमारा मानस ...पर कुछ संस्कारों का अस्तित्व आज भी हैं उनमे से प्रमुख हैं ..विवाह संस्कार ..जो जीवन की एक महत्वपूर्ण घटना कही जा सकती हैं .जिस पर एक पूरे समाज की आधार शिला रहती हैं.पर इसके लिए योग्य जीवन साथी का होना जरुरी हैं . अनेको विधिया हैं फिर चाहे कुंडली हो या अन्य .पर अगर कोई मन को भा गया हैं तब क्या ...क्या तब भी कुंडली के पीछे दौड़े ...खासकर उस समय जब की उसकी जन्म समय की शुद्धता के बारे में ही प्रशन चिन्ह हो ..और फिर प्रामाणिक विद्वान न मिले जो सत्य विश्लेषण कर सके तब ....

हमारी इस सनातन संस्कृति में क्या उन उच्चस्थ पुरुषों को यह न ज्ञात रहा होगा की कतिपय ऐसी भी स्थिति भी बन सकती हैं ...की जब कोई मन को भा गया.और उसे ही अपने जीवन साथी के रूप में देखना चाहता हो तब ..देवर्षि नारद ने यह व्यवस्था दी की .जो प्रथम बार के दर्शन में ही मन को भा जाए वही कन्या श्रेष्ठ हैं जीवन साथी के रूप में ..क्योंकि उन्हें तो जीवन के हर स्थिति को ध्यान में रखना था .आज के इस आधुनिक काल में यही समस्या बहुत विकट हैं.की कैसे योग्य जीवन साथी पाया जाए .

और जहाँ योग्य हैं वहां वह आपके लिए तैयार हो यह भी तो संभव नही .तब क्या किया जाए??

और यह अवस्था .किसी पुरुष के लिए ..स्त्री पक्ष की हो सकती हैं .

तो किसी स्त्री के लिए ...पुरुष पक्ष से हो सकती हैं .अर्थात यह प्रयोग दोनों के लिए ही लाभ दायक हैं .

पर ध्यान में रखने योग बात हैं .यह किसी भी उछंखलाता को बढ़ावा देनेके लिए नही हैं .जहाँ सच में मनो भाव पवित्र हो .उनके लिए हैं यह साधना ...क्योंकि जब कुछ ओर शेष न हो तब ...

ऐसे समय ही साधना की उपयोगिता सामने आती हैं ध्यान रखने योग्य बात हैं की हर साधना का एक अपना ही अर्थ हैं और कोई भी मंत्र जप व्यर्थ नही जाता हैं इस बात को किसी भी साधना करने से पूर्ण मन मस्तिष्क में अच्छे से उतार लेना चहिये .

सदगुरुदेव जी ने इस तथ्य को कई कई बार कहा हैं की लंबी साधनाओ का अपना महत्व तो हैं ही .पर इस कारण सरल और अल्प समय वाली साधनाओ को उपेक्षित भी नही किया जा सकता हैं .

अनेको बार यह सरल कम अवधि की साधनाए बहुत तीव्रता से परिणाम सामने ले आती हैं . इस प्रयोग को सिद्ध करना जरुरी नही हैं ,पर हमारी इच्छा शक्ति और कार्य सफल हो ही इस कारण मात्र दस हज़ार जप कर लिया जाए तो सफलता की सभावना कहीं ओर भी बढ़ जाती हैं

नियम :

- **मंत्र जप यदि करना चाहे तो केबल दस हज़ार .यह करने पर सफलता की सभावना कई गुणा अधिक होगी .**
- **पीले वस्त्र और पीले आसन का उपयोग होगा .**
- **कोई भी माला का उपयोग किया जा सकता हैं .**
- **किसी भी शुभ दिन से सदगुरुदेव जी का पूर्ण पूजन कर प्रारंभ कर सकते हैं .**
- **सुबह या रात्रि काल में भी मंत्र जप किया जा सकता हैं .**
- **दिशा पूर्व या उत्तर हो तो अधिक श्रेष्ठ हैं .**

मंत्र ::

ओं ह्रीं कामातुरे काम मेखले विद्योषिणि नील लोचने ....वश्यं कुरु ह्रीं नमः||

Om hreem kamature kaam mekhle vidyoshini neel lochne …….vasyam kuru hreem namah ||

जहाँ पर .... हैं वहाँ पर इच्छित पुरुष या स्त्री का नाम ले कर मंत्र जप करें . फिर इस प्रयोग को सम्पन्न करने के बाद जब भोजन करने बैठे तो जो भी पहला ग्रास आप काहये उसे पहले सात बार ऊपर दिए मंत्र से अभी मंत्रित कर स्वयं ग्रहण कर ले .

बहुत ही अल्प समय में आप इसका परिणाम देखसकते हैं .

पर इस प्रयोग में यह आवश्यक हैं की स्त्री पुरुष ..जो भी जिसके लिए प्रयोग कर रहा हो .उनका आपस में कहीं भी मिलने की सम्भावना तो होनी ही चहिये ...

==

Indian saints, in order to ensure smooth functioning of society and to maintain continuously the decorum in a society have imagined of various sanskars which are usually known by the name of 16 sanskars. However, most of these sanskars are not followed as they should be. Neither do we have the capable scholars nor do we have the mind to follow this sanskars.But still, some of these sanskars do exist. The most prominent among them is Vivah Sanskar (Marriage) , which is very important incident of anyone’s life. It is the foundation stone of any society, but for that able life partner is necessary. There are many methods whether it’s horoscope or some other. But if you start liking someone then what……still do we run after horoscope? Especially when there are question marks about the correctness of horoscope or when we can’t find an authentic scholar who can analyse it correctly…..

Would high level persons in ancient sanatan culture have not taken cognizance of the fact that there could be situation where you start liking someone and you want him/her to be your life partner? Then Devrishi Naarad made an arrangement that the girl whom one likes at very first sight is the best choice as life partner because they had to keep in mind all the possible situation in life. In today’s modern times also, the problem of getting a suitable life partner is grave.

And if you find a suitable match then there is no guarantee that he/she is ready to acceptyou. Then what should one do?
And this condition can be with female side for any male, it can be with male side for female…meaning thereby that this process is beneficial for both of them.
But one thing has to be kept in mind that this is not to promote any disharmony but rather this sadhna is for those whose hearts are pure …….because when nothing can be done then……
At such times the utility of sadhna comes into the picture. Important thing to take note of is that every sadhna has its own meaning and any mantra chanting does not go useless. We should imbibe this thing fully into our mind before doing any sadhna.
Sadgurudev ji has revealed this fact multiple times that lengthy sadhnas have importance of their own but we can't neglect the simple and less time-consuming sadhnas.
Many times, these simple less duration sadhnas yield result very quickly. There is no need to siddh(accomplish) this process but in order to ensure that our willpower and work is success, if this mantra is chanted 10000 times ,then possibility of our success increases.
Rules:

- Mantra Jap if one wants to do, then chanting 10000 amplifies your chance of success multiple times.
- Use yellow clothes and yellow aasan (mat).
- Any rosary can be used.
- One can start from any auspicious day after doing the complete poojan of Sadgurudev.
- Mantra Jap can be done in morning or night time.
- If direct is east or north, then it is best.

Mantra:

ओं ह्रीं कामातुरे काम मेखले विद्योषिणि नील लोचने ....वश्यं कुरु ह्रीं नम:||

Om hreem kamature kaam mekhle vidyoshini neel lochne …….vasyam kuru hreem namah ||

Where there is ……., there you should use the name of desired male or female. After completing the process when one sits for eating the food, before having first bite, chant the above mantra 7 times.
One can see the results in a very short period of time.
But it is important in this process that male or female…..whosoever is doing this process for any person…there should definitely be some possibility of their meeting each other anywhere.

******NPRU******

for our facebook group-
http://www.facebook.com/groups/194963320549920/

PLZ CHECK **: - http://www.nikhil-alchemy2.com/**

Posted by Nikhil at 2:52 AM No comments:

Labels: VASHIKARAN PRAYOG, VIVAH BADHA NIVARAK

SATURDAY, JULY 30, 2011

Vivah Badha Nivarak Saabar Sadhna

जन्मकुंडली में कई ऐसे योग होते हैं जिनकी वजह से किसी भी व्यक्ति फिर वो चाहे पुरुष हो या स्त्री अपने जीवन की सबसे बड़ी खुशी विवाह से वंचित रह जाते हैं.... साथ ही कई बार ये रूकावट बाहरी बाधाओं या प्रारब्ध की वजह से भी आती हैं. फिर चाहे लाख प्रयास करते जाओ उम्र मानों पंख लगाकर उड़ते जाती है पर एक तो रिश्ते आते नहीं हैं,और यदि आते भी हैं तो अस्वीकृति के अलावा और कुछ प्राप्त नहीं होता है. लोग लाख उपाय करते रहते हैं पर समस्या का समुचित निदान नहीं हो पाता है.परन्तु निम्न प्रयोग नाथ सिद्धों की अद्भुत देन है समाज,को जिसके प्रयोग से कैसी भी विपरीत स्थिति की प्रतिकूलता अनुकूलता में परिवर्तित होती ही है और विवाह के लिए श्रेष्ट संबंधों की प्राप्ति होती ही है.

किसी भी शुभ दिवस पर मिटटी का एक नया कुल्हड़ लाए. उसमे एक लाल वस्त्र,सात काली मिर्च एवं सात ही नमक की साबुत कंकड़ी रख दें.हांडी का मुख कपडे से बंद कर दें.कुल्हड़ के बाहर कुमकुम की सात बिंदियाँ लगा दे.फिर उसे सामने रख कर निम्न मंत्र की ५ माला करे.मन्त्र जप के पश्चात हांडी को चौराहे पर रखवा दे. इस प्रयोग का असर देख कर आप आश्चर्यचकित रह जायेंगे.

मन्त्र-

गौरी आवे ,शिव जो ब्यावे.अमुक को विवाह तुरंत सिद्ध करे.देर ना करे,जो देर होए ,तो शिव को त्रिशूल पड़े,गुरु गोरखनाथ की दुहाई फिरै.

===

A horoscope contains various calculations due to which any person whether male or female, the married life's greatest joy is missed.... They also often fail because of external constraints or by some destiny wish also. No matter, one works very hard to make it favorable the age just gets more and more but no one gets the right proposal and if they arrives one have no option left just to dismiss them. People work for lacs of the solutions but the problem remain unresolved…But the below mentioned devotional practice is the most divine and amazing gift to the society by which any of the unfavorable condition can be made favorable and the person gets the most best options for the marriage…

At any auspicious day, bring the Kulhad (Mud Pot)…Keep red cloth,7 black peeper and 7 pieces of Salt (raw salt) in that kulhad..Cover the open mouth of the pot by a cloth…Now, place 7 points of Kumkum on the exterior body of the pot…Perform the below mentioned Mantra 5 rounds and after the whole practice, place that handi (Pot) on a square (where the 4 diff.roads meet at a circle)….You will be amazed to see the results of this devotional practice…

Mantra: - Gauri Aave,Shiv Jo Byaave,Amuk Ko Vivaah Turant Siddh Kare,Der Na Kare,jo Der Hoye,To Shiv Ko Trishul Pade,Guru Gorakhnath Ki Duhaai Phirai.

LAKSHMI VAASUDEV PRAYOG

ANAASINIDHANAM SARV LOK MAHESHWARAM LOKAADHYAKSHAM STUVANNITYAM SARVDUH KHAATIGO BHAVET |

One of the most important aspects of many foundation pillars of our culture is mythological literature. This scripture, collection of mythological and historical incidents and many types of Aagam procedures makes sadhak a witness of many types of high-level incidents. Along with it, they provide amazing description of various personalities and their related life. One of such amazing personality was Bhishm, son of Shaantanu. He was embodiment of courage and valour in his times. Due to his life-character, he was revered in his times and after it too. Verse written above has been said by him. He has said these lines to Dharmraaj about Lord Vishnu. The one who is from eternity, beyond time, omnipresent, master of all the lok is none but maintenance-in-chief of all loks, Lord Vishnu who is capable of completely getting rid of sorrow and pain of his sadhaks.

Definitely Bhishm's personality was amazing. He practised many types of sadhna under Aagam knowledge which contained study of both Shaiva and Vaishnav path. His study of Shaiva sadhna included divine weapons and Yuddh Vigyan (Study of battles) and practising Raaj tantra. His study of Vaishnav tantra included sadhnas related to attainment of complete prosperity and luxury and attainment of complete pleasure in life. Therefore, he is called the promulgator of sadhna procedures of many Vaishnav and Shaiva sect. Certainly the procedures done by him are very accomplished. Due to his extraordinary maternal side, he was blessed with energetic personality and for this reason, he attained many procedures related to various god and goddesses and accomplished them. Moreover, it used to be the golden times for Vaishnav tantra. In this manner, complete luxury was obtained through various tantra sadhnasat that time. Though many procedures related to Lord Vishnu are in vogue but Lakshmi Vaasudev procedure is supreme prayog in itself. It is well known fact among accomplished sadhaks that sadhna procedure related to Lakshmi Vaasudev was done by Bhishm too and this procedure has been appreciated in many manners.

Through this prayog, sources of wealth-attainment become easily available to person and if person is facing problem in this regard, it is resolved. Sadhak attains progress in field of business. Besides it, this is the best procedure for person who wishes to acquire wealth through property, dwelling etc. Along with it, this procedure is also important for the person for getting complete affection from his life-partner and family so that there is establishment of peace and joy at home. In today's era, this procedure is boon for all sadhaks which should be done by every sadhak with complete dedication.

Sadhak can start this sadhna from any auspicious day. It is 3 day procedure.

Sadhak can do this prayog on anytime in day or night but it should be done daily at the same time.

Sadhak should take bath, wear yellow dress and sit on yellow aasan facing North direction.

After it, sadhak should spread yellow cloth on Baajot in front of him. On it, sadhak should establish picture of Lord Shri Lakshmi Vaasudev. Along with it, sadhak should establish authentic Shri Yantra also. Any Shri Yantra can be used but it should be completely energised. After it, sadhak should perform poojan of Sadgurudev and then do poojan of Ganesh and Shri Yantra also. In this prayog, Sadhak has to do all these procedures considering Shri Yantra as combined form of Lakshmi and Lord Vishnu. Sadhak should offer yellow colour flowers in poojan. After it, Sadhak should chant Guru Mantra. After completion of chanting, sadhak should pray for attaining complete success in sadhna. Then sadhak should do nyas procedure.

KAR NYAS
HREEM SHREEMANGUSHTHAABHYAAM NAMAH
HREEM SHREEM TARJANIBHYAAM NAMAH
HREEM SHREEM SARVANANDMAYI MADHYMABHYAAM NAMAH
HREEM SHREEM ANAAMIKAABHYAAM NAMAH
HREEM SHREEM KANISHTKABHYAAM NAMAH
HREEM SHREEM KARTAL KARPRISHTHAABHYAAM NAMAH

HRIDYAADI NYAS
HREEM SHREEM HRIDYAAY NAMAH
HREEM SHREEM SHIRSE SWAHA
HREEM SHREEM SHIKHAYAI VASHAT
HREEM SHREEM KAVACHHAAY HUM
HREEM SHREEM NAITRTRYAAY VAUSHAT
HREEM SHREEM ASTRAAY PHAT

After completion of Nyas, Sadhak should meditate Lord Vishnu sitting alongside Lakshmi. After meditation, sadhak should chant basic mantra. Sadhak has to chant 21 rounds of this mantra. Chanting can be done through crystal or Kamalgatta rosary.

OM HREEM SHREEM LAKSHMIVAASUDEVAAY SHREEM HREEM NAMAH

After completion of chanting, sadhak should perform poojan of Shri yantra again. After it sadhak should perform Guru Poojan, chant Guru Mantra and pray for blessings. In this manner, this procedure has to be done for 3 days.

==

अनादिनिधनं सर्व लोक महेश्वरम् लोकाध्यक्षं स्तुवन्नित्यं सर्वदुःखातिगो भवेत् |

हमारी संस्कृति के कई आधार स्तंभ में से एक महत्वपूर्ण पक्ष पौराणिक साहित्य है, पौराणिक ऐतेहासिक द्रष्टान्त तथा कई प्रकार के आगमिक प्रक्रियाओ के संग्रह सम यह ग्रन्थ अपने आप में कई कई प्रकार के उच्चकोटि की घटनाओ का साक्षी बना देता है किसी भी साधक को. साथ ही साथ विविध व्यक्तित्व तथा उनसे सबंधित जीवन भी अद्भुत विवरण प्रस्तुत करते है. ऐसे ही एक अद्भुत व्यक्तित्व के धनि रहे है शांतनु पुत्र भीष्म. अपने समय में बल और साहस की साक्षात् मूर्ति के साथ साथ अपने जीवन चरित्र के कारण सर्वदा ही यह व्यक्तित्व अपने समय में तथा उसके बाद भी वन्दनीय रहे है. प्रस्तुत पंक्तियाँ उनके द्वारा उच्चारित की गई पंक्तियाँ है. धर्मराज को संबोधित करते हुवे उन्होंने यह भगवान श्री विष्णु के सबंध में बोला है. जो आदि- अनादी है, समय से परे है, जो सर्वत्र है, वह सभी लोक के स्वामी अर्थात आधिपत्य को धारण करने वाले सभी लोक के पालक अध्यक्ष श्री भगवान विष्णु है जो की अपने साधको के सभी दुःख सभी विषाद को पूर्ण रूप से दूर करने में समर्थ है.
निश्चय ही भीष्म का व्यक्तित्व एक अद्भुत व्यक्तित्व रहा है, आगम शिक्षा के अंतर्गत उन्होंने कई प्रकार साधना का अभ्यास किया था जिसके अंतर्गत शैव तथा वैष्णव दोनों ही मार्ग का अध्ययन रहा था. शैव साधनाओ के अंतर्गत दिव्य अस्त्र तथा युद्ध विज्ञान और राज तंत्र के अभ्यास के साथ ही साथ, वैष्णव तंत्र सबंधित पूर्ण वैभव तथा ऐश्वर्य प्राप्ति के साथ साथ जीवन में पूर्ण सुख की प्राप्ति से सबंधित साधनाओ का प्रयोग भी शामिल है, इसी लिए कई वैष्णव तथा शैव मार्ग के साधना प्रयोग का प्रणेता उनको माना जाता है. निश्चय ही

उनके द्वारा किये गए प्रयोग अत्यधिक सिद्ध है, अपने असाधारण मातृ पक्ष के कारण जन्म से ही वे असहज रूप से उर्जात्मक व्यक्तित्व के धनि थे और इसी कारण विविध देवी देवताओं से सबंधित कई प्रकार के प्रयोग उन्होंने प्राप्त किये थे तथा उन्होंने सिद्ध किये थे. वैष्णव तंत्र का तो वह यूँ भी सुवर्ण समय हुवा करता था. इस प्रकार उस समय में निश्चय ही विविध तन्त्र साधनाओ के माध्यमसे पूर्ण ऐश्वर्य की प्राप्ति की जाती थी. भगवान विष्णु से सबंधित कई कई प्रकार के प्रयोग तो प्रचलन में हे ही लेकिन लक्ष्मीवासुदेव प्रयोग अपने आप में एक अत्यधिक श्रेष्ठ प्रयोग है. सिद्धो के मध्य तो प्रचलित तथ्य है यह की लक्ष्मीवासुदेव सबंधित साधना प्रयोग भीष्म के द्वारा भी सम्प्पन किया गया था तथा कई प्रकार से इस प्रयोग की प्रशंशा भी की गई है.

इस प्रयोग के माध्यम से व्यक्ति को धन प्राप्ति के स्त्रोत सुलभ होते है तथा इस सबंध में अगर कोई बाधा आ रही है तो उसका निराकारण होता है. व्यापर के क्षेत्र में व्यक्ति को उन्नति की प्राप्ति होती है. इसके अलावा भी अगर कोई सम्पति या मकान आदि से धन प्राप्ति करने के इच्छुक व्यक्तियो के लिए यह उत्तम प्रयोग है. इसके साथ ही साथ, व्यक्ति के लिए यह प्रयोग इस द्रष्टि से भी महत्वपूर्ण है की अपने जीवनसाथी तथा घर परिवार से पूर्ण स्नेह प्राप्त होता रहे तथा घर में सुख शांति का वातावरण स्थापित रह सके इसके लिए भी यह प्रयोग महत्वपूर्ण है. इस द्रष्टि से सभी साधको के लिए आज के युग में यह एक वाराण स्वरुप प्रयोग है जिसे सभी साधको को पूर्ण श्रद्धा सह यह प्रयोग करना चाहिए.

यह साधना साधक किसी भी शुभदिन शुरू कर सकता है. यह तिन दिन का प्रयोग है.

साधक दिन या रात्रि के किसी भी समय में यह प्रयोग कर सकता है लेकिन रोज समय एक ही रहे.

साधक को स्नान कर के पीले वस्त्रों को धारण करना चाहिए तथा पीला आसन बिछा कर उत्तर की तरफ मुख कर बैठना चाहिए.

इसके बाद साधक अपने सामने एक बाजोट पर पीला वस्त्र बिछाए. इस पर साधक भगवान श्री लक्ष्मीवासुदेव का कोई चित्र स्थापित करे. साथ ही साथ प्रामाणिक श्रीयंत्र का भी स्थापित करे, श्रीयंत्र कोई भी हो लेकिन वह पूर्ण प्राण प्रतिष्ठित होना चाहिए. इसके बाद साधक सदगुरुदेव का पूजन करे तथा गणेश एवं श्रीयंत्र का भी पूजन करे. प्रस्तुत प्रयोग में साधक को श्रीयंत्र को ही लक्ष्मी तथा भगवान विष्णु का संयुक्त स्वरुप मानते हुवे सभी प्रक्रियाएं करनी है. पूजनमें साधक को पीले रंग के पुष्प अर्पित करने चाहिए. इसके बाद गुरु मंत्र का जाप करे. जाप पूर्ण होने पर साधक साधना में पूर्ण सफलता की प्राप्ति के लिए प्रार्थना करे. इसके बाद साधक न्यास करे.

करन्यास

ह्रीं श्रीं अङ्गुष्ठाभ्यां नमः

ह्रीं श्रीं तर्जनीभ्यां नमः

ह्रीं श्रीं सर्वानन्दमयि मध्यमाभ्यां नमः

ह्रीं श्रीं अनामिकाभ्यां नमः

ह्रीं श्रीं कनिष्टकाभ्यां नमः

ह्रीं श्रीं करतल करपृष्ठाभ्यां नमः

हृदयादिन्यास

ह्रीं श्रीं हृदयाय नमः

ह्रीं श्रीं शिरसे स्वाहा

ह्रीं श्रीं शिखायै वषट्

ह्रीं श्रीं कवचाय हूं

ह्रीं श्रीं नेत्रत्रयाय वौषट्

ह्रीं श्रीं अस्त्राय फट्

न्यास करने के बाद साधक लक्ष्मी के साथ विराजमान भगवानश्री विष्णु का ध्यान करे. ध्यान के बाद साधक को मूल मन्त्र का जाप करना है. साधक को २१ माला मन्त्र का जाप करना है. यह जाप साधक स्फटिक माला से या कमलगट्टे की माला से सम्प्पन करे.

ॐ ह्रीं श्रीं लक्ष्मीवासुदेवाय श्रीं ह्रीं नमः

(om hreem shreem lakshmiVaasudevaay shreem hreem namah)

जाप पूर्ण होने पर साधक फिर से श्रीयंत्र का पूजन करे, गुरुपूजन तथा गुरुमन्त्र का जाप कर आशीर्वाद के लिए प्रार्थना करे. इस प्रकार यह प्रयोग ३ दिन करना चाहिए.

****NPRU****

Posted by Nikhil at 11:32 PM No comments: Links to this post
Labels: LAKSHMI SADHNA, VISHNU JI NARSINGH SADHNA

WEDNESDAY, FEBRUARY 13, 2013

MANAH BAL PRAAPTI- SHRI MAHABAL VISHNU PRAYOG

SushaarthirashvaanivYanmanushyaanNeneeyateabheeshubhirvaajinEv
HritpratishthamYadjiramJavishthamTanme Manah Shivsankalpmastu

Every word of knowledge which has been spread by ancient sages and saints through four vedas, foundation pillars of our civilization, is as precious as Kohinoor stone. Every verse and sloka of Veda is a vast scripture in itself. Vedas are collection of abstruse knowledge and procedures related to various sciences. Along with it, our ancient sages have demonstrated the incomparable power of humans and enormous mental capability of humans in many forms in Vedas. Words said above are taken from Yajurveda in which it has been said that as charioteer controls the chariot based on his concentration and competence and moves it in desired direction, in the same way our mind controls our body and senses of our body. If we have control over our mind then

definitely we can give direction to our life in the manner we want. Along with it mind is immortal and infinitely vast i.e. there is no parameter to measure its abilities. Its speed is also extra-ordinary. It has been said in relation to the mind that its speed is fastest than anything else, within fraction of a moment, it can understand so many things and extraordinarily can reach many place too. If our mind gets filled with auspicious resolutions or supreme thoughts then person can definitely attain spiritual and materialistic progress and achieve success. But how it will happen? May be it has not been told in above sloka but certainly these procedures have been told in various verses by various saints.

In fact, if we pay attention to things and related activities nearby us, we will definitely notice our mind and its related powers.Our mind plays major role in any of our minor activities. It is impossible to start a work without origin of thought in mind. If we pay attention to necessary daily chores then we can understand that mind possesses a power and this power is present in each person in varying proportion. If we develop it, then most of our works become easy. This power has also been called Manah Shakti (power of mind). Its development is crucial for success in any field.

Sadhna presented here is related to Manah Shakti through which this particular power is developed. Various types of benefits are attained by it. Self-confidence is very crucial element of today's life for getting success in any field. Through this prayog, self-confidence of person increases.Along with it, there is development in memory power. Therefore, this prayog is best for students. Besides it, there is also increase in decision-making power of sadhak. Development of all these aspects is crucial for success of sadhak in business and other work-fields. Therefore, this prayog can be done by all. It isrelated to Mahabala form of Lord Vishnu.

Mahabala form means omnipresent and completely powerful form of deity.

Sadhak can start this prayog on any day. It can be done anytime in day or night.

It is three day prayog. It should be done daily at the same time.

Dress and aasan of sadhak should be of yellow colour. Direction will be east.

Sadhak should take bath and establish any yantra or picture of Lord Vishnu in front of him. First of all, sadhak should do Guru Poojan, Ganesh poojan and chant Guru Mantra. Then sadhak should do normal poojan of picture/yantra of Lord Vishnu. Sadhak should light one oil-lamp in front of him. Sadhak should then seek blessings from Sadgurudev and Lord Vishnu for development in mental power. After it, sadhak should do Nyas.

KAR NYAS

HRAAM ANGUSHTHAABHYAAM NAMAH
HREEM TARJANIBHYAAM NAMAH
HROOM MADHYMABHYAAM NAMAH
HRAIM ANAAMIKAABHYAAM NAMAH
HRAUM KANISHTKABHYAAM NAMAH
HRAH KARTAL KARPRISHTHAABHYAAM NAMAH

ANG NYAS

HRAAM HRIDYAAY NAMAH
HREEM SHIRSE SWAHA
HROOM SHIKHAYAI VASHAT
HRAIM KAVACHHAAY HUM
HRAUM NAITRTRYAAY VAUSHAT
HRAH ASTRAAY PHAT

After it, sadhak should chant the below mantra while looking at lamp. There is no need of rosary in it. Sadhak should do chanting for half an hour to 1 hour.

OMHREEMLAKSHMIPATAYEMAHAABALAAY NAMAH

After completion of chanting, sadhak should pray with reverence and pray for attainment of success. Sadhak should do this prayog for 3 days.

~~~~~~

सुषारथिरश्वानिव यन्मनुष्यान् नेनीयतेऽभीशुभिर्वाजिन इव
हृत्प्रतिष्ठं यदजिरं जविष्ठं तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु

हमारी संस्कृति के आदि स्तंभ चार वेदों में जो ज्ञान हमारे पुरातन ऋषि मुनियों ने बिखेरा है, वह एक एक शब्द वस्तुतः एक एक हीरक खंड के बराबर मूल्यवान है. हर एक वेदोक्त ऋचा तथा श्लोक अपने आप में एक एक वृहद ग्रन्थ है. गुढ़ ज्ञान तथा विविध विज्ञान से सबंधित प्रक्रियाओ का भण्डार यह वेद ही है. साथ ही साथ मनुष्य की अतुल्य क्षमता तथा मनुष्य के मानस की विराटता को कई कई बार विविध रूप से वेदों में हमारे प्रचिन ऋषियों ने प्रदर्शित किया है. उपरोक्त शब्द यजुर्वेद के है. जिसमे यह समजाया गया है की जिस प्रकार एक रथ चलाने वाला सारथि अपनी एकाग्रता और कुशलता के साथ अश्वो पर अपना नियंत्रण स्थापित कर उनको योग्य दिशा की तरफ गतिशील करता है ठीक उसी प्रकार मन के हाथ में हमारे शरीर का, हमारे शरीर की इन्द्रियों का नियंत्रण रहता है. अगर हमारा मन के ऊपर हमारा अधिपत्य है तो निश्चय ही हम अपने जीवन को ठीक उसी प्रकार से गति दे सकते है जैसे हम देना चाहते है. साथ ही साथ यह मन अमर है, अजर है तथा अनंत वृहद है, अर्थात इसकी क्षमताओं का मापदंड संभव ही नहीं है, इसकी गति भी उतनी ही असहज है, निश्चय ही मन के सम्बन्ध में कहा गया है की इसकी गति किसी भी गति से ज्यादा तीव्र हो सकती है, एक क्षण में हमारा मन न जाने क्या क्या सोच समज भी लेता है और पता नहीं असहज रूप से ही , कहाँ कहाँ तक पहोच भी जाता है. यही मन अगर शुभ संकल्प से या उत्तम विचारों से युक्त हो जाए तो निश्चय ही जीवन में भौतिक तथा अध्यात्मिक उन्नति प्राप्त कर व्यक्ति पूर्ण सफलता की प्राप्ति कर सकता है. लेकिन यह सब होता कैसे है. इसके ऊपर श्लोक में भले ही कहा न हो लेकिन निश्चय ही इन प्रक्रियाओ के बारे में विविध ऋचाओ में विविध ऋषियों द्वारा इस बारे में बताया ही गया है.
वस्तुतः हम अपने आसपास की सभी चीजों पर तथा सबंधित सभी कार्यो पर अगर नज़र डाले तो निश्चय ही हमें हमारे मन तथा मन से सबंधित शक्तियों के बारे में ध्यान आएगा. हमारे किसी भी छोटे से छोटे कार्यों में हमारे मन का निश्चय ही वृहद योगदान है. बिना मानस में आये विचार के कोई भी क्रिया असंभव हो जाती है. हम अपने दैनिक जीवन के आवश्यक कार्यो पर एक बार द्रष्टि डाले तो हम यह समज पाते है की निश्चय ही मन की एक शक्ति है, तथा वह शक्ति विविध व्यक्तियो में विविध स्तर पर होती है. अगर उसका विकास कर लिया
~~~~~~

जाए तो हमारे कई काम सहज हो जाते है. इसी शक्ति को मनः शक्ति कहा गया है. इसका विकास किसी भी क्षेत्र में उन्नति के लिए आवश्यक ही कहा जा सकता है.

प्रस्तुत साधना यही शक्ति अर्थात मनः शक्ति से सबंधित प्रयोग है. जिसके माध्यम से इस शक्ति का विकास होता है. विविध रूप से इसके कई प्रकार के लाभ प्राप्त होते है. आत्म विश्वास आज के जीवन में एक अत्यंत ही महत्वपूर्ण अंग है किसी भी क्षेत्र में सफलता प्राप्त करने के लिए. प्रस्तुत प्रयोग के माध्यम से व्यक्ति के आत्म विश्वास में वृद्धि होती है. इसके साथ ही साधक की याद शक्ति का विकास भी होता है यूँ विद्यार्थीओ के लिए भी यह प्रयोग उत्तम है, साथ ही साथ अगर साधक की निर्णय शक्ति में वृद्धि होती है, इन सब का विकास निश्चय ही साधक को व्यापर या कार्य क्षेत्र आदि सभी स्थानों पर उन्नति के लिए अनिवार्य ही है. अतः इस प्रयोग को सभी व्यक्ति कर सकते है. यह प्रयोग भगवान विष्णु के महाबला स्वरुप सबंधित प्रयोग है. महाबला स्वरुप अर्थात इष्ट का सर्वत्र पूर्ण शक्ति स्वरुप.

इस प्रयोग को साधक किसी भी दिन शुरू कर सकता है. यह प्रयोग दिन या रात्रि के कोई भी समय किया जा सकता है.

यह तिन दिन का प्रयोग है, रोज समय एक ही रहना चाहिए. साधक के वस्त्र तथा आसन पीले रंग के हो. दिशा पूर्व हो.

साधक स्नान आदि से निवृत हो कर अपने सामने भगवान विष्णु का कोई भी यंत्र या चित्र स्थापित करे. पहले गुरुपूजन, गणेश पूजन करे तथा गुरु मन्त्र का जाप करे. भगवान विष्णु के चित्र या यंत्र का भी सामान्य पूजन करे. साधक को तेल का एक दीपक अपने सामने लगाना है. इसके बाद साधक प्रार्थना करे की मनः शक्ति के विकास के लिए यह प्रयोग किया जा रहा है, सदगुरुदेव तथा भगवान विष्णु मुझे आशीर्वचन प्रदान करे. इसके बाद साधक न्यास करे.

करन्यास

ह्रां अङ्गुष्ठाभ्यां नमः
ह्रीं तर्जनीभ्यां नमः
ह्रूं मध्यमाभ्यां नमः
ह्रैं अनामिकाभ्यां नमः
ह्रौं कनिष्टकाभ्यां नमः
ह्रः करतल करपृष्ठाभ्यां नमः

अङ्गन्यास

ह्रां हृदयाय नमः
ह्रीं शिरसे स्वाहा

हूं शिखायै वषट्
हैं कवचाय हूम
हौं नेत्रत्रयाय वौषट्
हः अस्त्राय फट्

इसके बाद साधक साधक दीपक को देखते हुवे निम्न मन्त्र का जाप करे. इसमें कोई माला की आवश्यकता नहीं है. साधक को आधे घंटे से एक घंटे तक मन्त्र का जाप करना चाहिए.

ॐ ह्रीं लक्ष्मीपतये महाबलाय नमः

(om hreem lakshmiPataye mahaabalaay namah)

जाप पूर्ण होने पर साधक पूर्ण श्रद्धा के साथ वंदन करे तथा सफलता प्राप्ति के लिए प्रार्थना करे, इस प्रकार साधक को ३ दिन तक यह प्रयोग्ग करना चाहिए.

****NPRU****

Posted by Nikhil at 9:23 AM No comments:
Labels: VISHNU JI NARSINGH SADHNA

WEDNESDAY, JANUARY 23, 2013

SHRIKAR SADHNA

There are different sects under Tantric system of traditional school. Primarily, Shaiva, Shaakt and Vaishnav sadhnas were most spread ones. Whereas on one hand Shaiva and Shaakt sadhnas were intense, strong and fiery, on the other hand were peaceful and related to rajas character. Prime basis or prime god of Tantric sadhnas of Vaishnav path was Lord Vishnu and his different forms. Vaishnav Tantric path was once best

path for attaining completeness in worldly pleasures as well as salvation and it was very easy for any completely Satvik person. But slowly and gradually this hard-work demanding path became obsolete and its place was taken by Bhakti path. As a result, amazing sadhnas related to Vaishnav tantra gradually started becoming obsolete. Definitely there are present such amazing Vidhaans under Vaishnav Yantra by doing which sadhak can fulfil his desire but with time, such type of amazing prayog vanished. But Sadgurudev from time to time has made sadhaks do this type of sadhna prayog and sadhaks have witnessed the intense capability of these sadhnas. In fact, significance of amazing tantric sadhnas of Vaishnav sect cannot be considered lower in any sense because aim of tantra path is to fulfil desired objective irrespective of any sect. Lord Vishnu is god of maintenance, one among the Tridev. How can a sadhak face any shortcoming in life after doing his sadhna? Sadgurudev from time to time has given amazing sadhnas relating to his various forms. One sadhna among many sadhna of different forms of lord is Shrikar Sadhna. This prayog resolves many obstacles coming in sadhak's life at once. It may be resolving financial problem, attaining new sources of income or getting supreme position in life. It may be attaining promotion or getting respect in life, sadhna of Lord Shrikar helps sadhak to achieve complete prosperity. And what more is left to be said when attaining such diverse results is possible only through very easy prayog. This easy and amazing prayog related to Shrikar sadhna can be done by any sadhak or sadhika and attain related results.
Sadhak can start this prayog from any auspicious day. It can be done any time in day or night but daily sadhna time should remain same.
Sadhak should take bath, wear yellow dress and sit on yellow siting mat (Aasan).
Sadhak should face North direction.
Sadhak should establish any conch on yellow cloth spread on Baajot in front of him.
Conch can be of smaller or bigger size but it should not be broken from anywhere.
Sadhak should do Guru Poojan and Ganpati Poojan. After it, sadhak should do poojan of conch and write "SHREEM" on it by vermillion.
After it, sadhak should do nyas and chant basic mantra in front of conch itself.

KAR NYAS

SHRAAM ANGUSHTHAABHYAAM NAMAH

SHREEM TARJANIBHYAAM NAMAH
SHRUM MADHYMABHYAAM NAMAH
SHRAIM ANAAMIKAABHYAAM NAMAH
SHRAUM KANISHTKABHYAAM NAMAH
SHRAH KARTAL KARPRISHTHAABHYAAM NAMAH

ANG NYAS
SHRAAMHRIDYAAY NAMAH
SHREEMSHIRSE SWAHA
SHRUMSHIKHAYAI VASHAT
SHRAIMKAVACHHAAY HUM
SHRAUMNAITRTRYAAY VAUSHAT
SHRAHASTRAAY PHAT

It is better if sadhak chant this mantra by conch rosary. In case conch rosary is not available, sadhak should use crystal rosary for chanting mantra. Sadhak should chant 21 rounds.

OM SHREEM SHREEM SHREEM UTISHTH SHRIKAR SWAHA

Sadhak should do this procedure for 3 days and after it, conch should be established in worship room.

सनातन मत की जो तांत्रिक प्रणाली है, इस साधना पथ के अंतर्गत कई प्रकार के मत्त है. मुख्य रूप से शैव, शाक्त तथा वैष्णव साधनाओ का प्रचार अधिक ही रहा था. शैव और शाक्त साधनाए जहां एक तरफ तीव्र, तीक्ष और उग्र थी. वहीँ वैष्णव मार्ग की साधनाए सौम्य और राजसिक भाव से सबंधित थी. वैष्णव मार्ग की तांत्रिक साधनाओ का मुख्य आधार या मुख्य देव भगवान विष्णु तथा उनके विविध स्वरुप थे. वैष्णव तांत्रिक मार्ग भोग तथा मोक्ष के क्षेत्र में पूर्णता को प्राप्त करने का एक समय पे श्रेष्ठ मार्ग था तथा किसी भी पूर्ण सात्विक व्यक्ति के लिए भी सहज मार्ग था लेकिन धीरे धीरे यह परिश्रम का मार्ग विलुप्त होता गया और उसकी जगह स्थान ले लिया भक्ति मार्ग ने.इसी कारण तंत्र क्षेत्र में वैष्णव तंत्र सबंधित अद्भुत साधनाएं धीरे धीरे लुप्त होने लगी.
वैष्णव तंत्र के अंतर्गत भी निश्चय ही ऐसे अद्भुत विधान है जिनको सम्प्पन करने पर साधक अपने अभीष्ट की प्राप्ति कर सकता है लेकिन काल क्रम में इस प्रकार के अद्भुत प्रयोग लुप्त होते गए. लेकिन सदगुरुदेव ने समय समय पर इस प्रकार के साधना प्रयोग को सम्प्पन करवाया है तथा साधको ने इन साधनाओ की तीव्रतापूर्ण

क्षमता का अनुभव किया है. वस्तुतः वैष्णवमत की अद्भुत तांत्रिक साधनाओ की महत्ता को किसी भी रूप से कम नहीं आँका जा सकता क्योंकि तंत्र मार्ग अपने अभीष्ट की प्राप्ति के लिए है भले ही वह किसी भी मत्त से क्यों न हो. भगवान विष्णु तो पालन के देव है, त्रिदेव में से एक है. इनकी साधना करने के पश्च्यात साधक को क्या कमी रह सकती है जीवन में? उन्ही के विविध स्वरुप की साधना के सबंध में सदगुरुदेव ने समय समय पर एक से एक साधन रत्न प्रदान किये है. भगवान के इन्ही स्वरुप में से एक स्वरुप साधना है श्रीकर साधना.
साधक के जीवन में आने वाली कई बाधाओं का एक साथ निराकरण यह प्रयोग के द्वारा हो जाता है. धन सबंधित समस्याओ का समाधान हो, आय प्राप्ति के नए स्त्रोत की प्राप्ति हो या जीवन में श्रेयकर स्थान प्राप्त करना हो. पद्दोन्नती की प्राप्ति या समाज में मान सन्मान को प्राप्त करना हो, भगवान श्रीकर की साधना साधक को पूर्ण ऐश्वय की प्राप्ति करवाती है. और फिर ऐसे विविधता से परिपूर्ण फल की प्राप्ति अत्यधिक सहज प्रयोग के माध्यम से कर सकता हो तो फिर कहना ही क्या. श्रीकर साधना सबंधित यह सरल और अद्भुत प्रयोग कोई भी साधक साधिका सम्पन कर सकता है तथा उससे सबंधित लाभों की प्राप्ति कर सकता है.
यह प्रयोग साधक किसी भी शुभदिन से शुरू कर सकता है. यह दिन या रात्रि के किसी भी समय किया जा सकता है लेकिन रोज साधना का समय एक ही रहे.
साधक स्नान आदि से निवृत हो कर पीले वस्त्र धारण कर पीले आसन पर बैठ जाए. साधक का मुख उत्तर दिशा की तरफ हो.
साधक अपने सामने बाजोट पर पीले वस्त्र पर कोई एक शंख को स्थापित करे. शंख कोई भी हो चाहे छोटा हो या बड़ा लेकिन शंख कही से भी खंडित नहीं होना चाहिए अर्थात टुटा हुआ नहीं होना चाहिए.
साधक को गुरु पूजन, गणपति पूजन करना चाहिए. इसके बाद साधक शंख का पूजन करे तथा उसके ऊपर कुमकुम से 'श्रीं' लिखे.
इसके बाद साधक न्यास करे तथा मूल मन्त्र का जाप शंख के सामने ही करे.

करन्यास

श्रां अङ्गुष्ठाभ्यां नमः
श्रीं तर्जनीभ्यां नमः
श्रूं मध्यमाभ्यां नमः
श्रैं अनामिकाभ्यां नमः
श्रौं कनिष्टकाभ्यां नमः
श्रः करतल करपृष्ठाभ्यां नमः

अङ्गन्यास

श्रां हृदयाय नमः
श्रीं शिरसे स्वाहा

श्रूं शिखायै वषट्
श्रैं कवचाय हूम
श्रौं नेत्रत्रयाय वौषट्
श्रः अस्त्राय फट्

इस मन्त्र का जाप साधक शंख माला से करे तो सर्वोत्तम है लेकिन शंख माला न मिलने पर साधक स्फटिक माला से मन्त्र का जाप करे. साधक को २१ माला जाप करना है.

ॐ श्रीं श्रीं श्रीं उतिष्ठ श्रीकर स्वाहा

(om shreem shreem shreem utishth shrikar swaha)

साधक यह क्रम ३ दिन तक करे तथा उसके बाद शंख को पूजा स्थान में स्थापित कर दे.

Sarva Vish Harak Garun Sadhna

साधना जगत में कई साधनाए निर्जन में होती हैं, कई बार मनो वांछित साधना के लिए किसी वनस्पति की आवश्यकता होती है .ऐसे में वन में जाने पर सर्प आदि का भय होता है , परन्तु यदि साधक निम्न गरुण मन्त्र को ३००० बार पारद शिवलिंग के सामने बैठकर उनकी पूजा करने के बाद कर ले तो ये मन्त्र सिद्ध हो जाता है और जब भी वन में जाये तो प्रवेश करने के पहले इस मन्त्र को १०८ बार पढकर जमीन पर लकड़ी से आघात कर दे तो कोसो तक सर्प का भय नहीं होता है. इस मंत्र का प्रयोग भी हमने दोनों वर्कशॉप में किया था .

मन्त्र- ॐ पक्षिराज राजपक्षि ॐ ठः ठः ठीम् ठीम् यरलव ॐ पक्षि ठः ठः

==

IN WORLD OF SADHNAS MANY SADHNAS ARE PERFORMED AT LONELY PLACES, WHEN DESIRED WISHFUL SADHNAS ARE ACCOMPLISHED THEN WE NEED THE HELP FROM HERBS.IN SUCH SITUATION WE HAVE TO VISIT WOODS FOR GETTING SUCH HERBS AND THEIR THERE IS AFRAID OF REPTILES LIKE SNAKE ETC. BUT IF THE SEEKER DO THE

FOLLOWING MANTRA GHAROON FOR 3000 TIMES AND SIT IN FRONT OF PARAD SHIVLINGAM AND DO WORSHIP AFTER THAT THE MANTRA IS SIDDH. WHEN YOU ENTER THE FOREST BEFORE LET CHANT THE MANTRA 108 TIMES AND THEN BLOW UP THE WOOD ON THE GROUND STRONGLY AND IN THAT WAY NO CURSE OF SNAKE FEAR DOES EXISTS. WE ALSO USE THIS MANTRA IN OUR WORKSHOP.

MANTRA : OM PAKSHIRAJ RAJPAKSHI OM THAH: THAH: THIM THIM YARALAV OM PAKSHI THAH: THAH:

CHANDRINI PRAYOG

Sadhna of nine planets is integral part of our culture and every planet has got its own importance. Basis of astrological calculation and higher-level Vidyas like Tantra Jyotish are planets only. State of these planets form the basis of daily activities of our life. It is also indisputably true that base of life sequence of every person is determined by position and strength of planets. It is also a principle of astrology science. Many times, due to various reasons, person may also have to face planetary obstacles in life due to negative energy related to these planets. This fact is now accepted by most of the persons.

There are many types of amazing Vidhaans in Tantric literature by which problems occurring due to planets can be resolved and beyond it, by taking assistance of sadhna of these planets and their related powers, many type of benefits can be obtained by attaining their grace. From this point of view, sadhnas related to sun and Saturn planet have been more in vogue. But it does not mean that there are no

procedures related to other planets. May be these procedures are not known to common public but such type of amazing procedures are known among Tantra siddhs. One of such amazing procedure is Chandrini sadhna. From mythological point of view, we find description of many wives of moon and we come to know about their different Kala Shaktis. Chandrini is one such Kala Shakti of moon planet which is capable of transforming human life completely. Rarest sadhna like Jal Gaman can be accomplished through the means of Goddess Chandrini. Some tantriks are of the view that Chandrini goddess is partial power of Bhagwati Kaali. From this point of view, they are also seen in Yogini form and sometimes she is also seen as goddess who continuously serves Bhagwati. From ancient times, many intense procedures related to goddess were done to attain Jal Gaman Siddhi. But procedure presented here is of Raajsik character doing which sadhak can attain many benefits. Sadhak can do this procedure for himself or for any other person.

The person whose moon is weak or is not giving suitable results, doing this procedure provides favourableness.

Those who face mental torture, mental problem and suffer from inferiority complex, this procedure is best for them. If person wishes, he can take resolution and do this prayog for any known person too.

This procedure is best for attaining mental satisfaction and family peace. This is an invaluable procedure for sadhaks practising Kalpana Yog doing which sadhak can witness increase in intensity of his Yoga practice.

This sadhna is highly useful for saving ourselves from emotional instability and negative results of negative feelings like anger.

This sadhna can be done by sadhak on any Poornima. If it is not possible then sadhak can start from Monday of Shukl Paksha. It should be done after sunset.

Sadhak should use white dress and white aasan in this sadhna.

Sadhak should take bath and sit on aasan facing north direction. After it, sadhak should ignite a big oil-lamp.

Sadhak should do Guru Poojan and Ganesh poojan. First of all, sadhak should do Nyas.

Chant 1 round of basic mantra of Moon. For this sadhna, sadhak should use Rudraksh or crystal rosary.

KAR NYAS

SHRAAM ANGUSHTHAABHYAAM NAMAH

SHREEM TARJANIBHYAAM NAMAH

SHROOM MADHYMABHYAAM NAMAH

SHRAIM ANAAMIKAABHYAAM NAMAH

SHRAUM KANISHTKABHYAAM NAMAH
SHRAH KARTAL KARPRISHTHAABHYAAM NAMAH

ANG NYAS
SHRAAM HRIDYAAY NAMAH
SHREEM SHIRSE SWAHA
SHROOM SHIKHAYAI VASHAT
SHRAIM KAVACHHAAY HUM
SHRAUM NAITRTRYAAY VAUSHAT
SHRAH ASTRAAY PHAT

Mantra:
OM SHRAAM SHREEM SHRAUM SAH CHANDRAAY NAMAH
After it, sadhak should chant 11 rounds of below Chandrini Mantra.
OM SHREEM CHANDRINI CHAARUMUKHI VIDYAAMAALINIHREEM OM
After completion of chanting, sadhak should bow down in reverence to moon and goddess Chandrini and pray for success. Sadhak should not immerse rosary. It can be used for doing moon-related sadhna in future.
====================================

नवग्रह की साधना उपासना हमारी संस्कृति का एक अभिन्न अंग है, तथा सभी ग्रह का अपना एक अलग ही महत्त्व है. ज्योतिष गणना तथा तंत्रज्योतिष जैसी उच्चतम विद्याओ का आधार ग्रह ही तो है. हमारे जीवन की नित्य क्रिया कलापों का आधार भी इन ग्रहों की स्थिति ही है यह एक निर्विवादित सत्य है, सभी व्यक्तियो के जीवन क्रम का आधार इन ग्रहों की द्रष्टि एवं स्थान से प्रमाण से होता है यही ज्योतिष विज्ञान का भी सिद्धांत है. कई बार विविध कारणों से इन ग्रहों से सबंधित नकारात्मक उर्जा के कारण व्यक्ति के जीवन में सबंधित ग्रह जन्य कई प्रकार की समस्याओ का सामना भी करना पड़ सकता है यह तथ्य ज्यादातर व्यक्ति आज स्वीकार करने लगे है.
तांत्रिक वाग्मय में कई प्रकार के ऐसे दुर्लभ विधान है जिसके माध्यम से ग्रहों के कारण होने वाली समस्याओ का निराकरण किया जा सकता है तथा उससे भी आगे, इन ग्रहों तथा उनकी शक्तियों से सबंधित साधनाओ का सहारा ले कर उनकी कृपा प्राप्त कर विविध लाभ को प्राप्त किया जा सकता है. इस द्रष्टि से सूर्य तथा शनि ग्रह से सबंधित साधनाओ का बहोत ही प्रचार प्रसार रहा है. लेकिन इसका अर्थ यह नहीं है की दूसरे ग्रह तथा उनसे सबंधित विधान का प्रचलन में नहीं है, भले ही जनमानस के मध्य यह विधान प्रस्तुत न हो लेकिन तंत्र सिद्धो के मध्य इस प्रकार के दुर्लभ विधानों का प्रचलन ज़रूर रहा है. इसी क्रम में एक दुर्लभ क्रम है चन्द्रिणि साधना. पौराणिक द्रष्टि से चन्द्र की कई पत्नियों का विवरण प्राप्त होता है तथा उनकी विविध कला शक्तियों के बारे में भी ज्ञात होता है. चन्द्रिणि चन्द्र ग्रह की एक एसी ही कला शक्ति है जो की अपने आप में मनुष्य के जीवन को पूर्ण रूप से परावर्तित करने में समर्थ है. जल गमन जेसी दुर्लभतम साधना भी

देवी चन्द्रिणि के माध्यम से सम्प्पन की जाती है. कुछ विद्वान तान्त्रिको का यह मत है कीचन्द्रिणि देवी वस्तुतः भगवती काली की ही खंड अंश शक्ति है. इस द्रष्टि से उनको योगिनी स्वरुप में भी देखा जाता है तथा कई बार भगवती की सेवा में सतत रत देवी के स्वरुप में भी. पुरातन काल में देवी से सबंधित कई तीक्ष्ण प्रयोग जलगमन की सिद्धि प्राप्ति के लिए किये जाते थे, लेकिन प्रस्तुत प्रयोग राजसिक भाव से युक्त प्रयोग है जिसको सम्प्पन करने के बाद साधक कई लाभों की प्राप्ति कर सकता है. साधक अपने लिए या फिर दूसरे किसी व्यक्ति के लिए यह प्रयोग सम्प्पन कर सकता है.

जिन व्यक्तियो का चन्द्र कमजोर हो या यथायोग्य परिणाम न देता हो यह प्रयोग करने पर उनको अनुकूलता की प्राप्ति होती है.

जो भी व्यक्ति को मानसिक प्रताडना होती हो, मानसिक रोग है तथा हिन् भावना से ग्रस्त है, उनके लिए यह प्रयोग श्रेष्ठ है. अगर व्यक्ति चाहे तो संकल्प ले कर यह प्रयोग अपने किसी भी सुपरिचित व्यक्ति के लिए भी सम्प्पन कर सकता है.

मानसिक तुष्टि तथा पारिवारिक शांति के लिए यह प्रयोग उत्तम है. कल्पनायोग के अभ्यासी साधको के लिए यह एक अमूल्य प्रयोग है जिसे सम्प्पन करने के बाद योगाभ्यास में तीव्रता आती है.

भावनात्मक असंतुलन से बचने के लिए तथा क्रोध आदि ऋण भावो का नकारात्मक परिणाम से भविष्य को बचाने के लिए भी यह साधना अत्यंत उपयोगी है.

यह साधना साधक किसी भी पूर्णिमा को सम्प्पन करे अगर यह संभव न हो तो शुक्ल पक्ष के सोमवार से शुरू करे. समय सूर्यास्त के बाद का रहे.

इस साधना में साधक सफ़ेद वस्त्र तथा सफ़ेद आसन का प्रयोग करे.

साधक स्नान आदि से निवृत हो कर उत्तर की तरफ मुख कर बैठ जाए. इसके बाद साधक एक बड़ा सा तेल का दीपक स्थापित करे.

साधक गुरुपूजन, गणेश पूजन सम्प्पन कर सर्व प्रथम न्यास करे.

1 माला मूल चन्द्र मंत्र की करे. इस साधना के लिए साधक रुद्राक्ष, या स्फटिक की माला का प्रयोग करे.

करन्यास -

श्रां अङ्गुष्ठाभ्यां नमः

श्रीं तर्जनीभ्यां नमः

श्रूं मध्यमाभ्यां नमः

श्रैं अनामिकाभ्यां नमः

श्रौं कनिष्टकाभ्यां नमः

श्रः करतल करपृष्ठाभ्यां नमः

अंगन्यास -

श्रां हृदयाय नमः
श्रीं शिरसे स्वाहा
श्रृं शिखायै वषट्
श्रैं कवचाय हूम
श्रौं नेत्रत्रयाय वौषट्
श्रः अस्त्राय फट्

मन्त्र -

ॐ श्रां श्रीं श्रौं सः चन्द्राय नमः

(OM SHRAAM SHREEM SHRAUM SAH CHANDRAAY NAMAH)

इसके बाद साधक निम्न चंद्रिणि मन्त्र का 11 माला जाप करे.

ॐ श्रीं चन्द्रिणि चारुमुखि विद्यामालिनि ह्रीं ॐ

(OM SHREEM CHANDRINI CHAARUMUKHI VIDYAAMAALINI HREEM OM)

जाप पूर्ण होने पर साधक चन्द्र तथा देवी चंद्रिनी को श्रद्धा सह वंदन करे तथा सफलता की प्राप्ति के लिए प्रार्थना करे. साधक माला का विसर्जन न करे इसको भविष्य में भी चन्द्र सम्बंधित साधना के लिए प्रयोग में लाया जा सकता है.

****NPRU****

Posted by Nikhil at 1:56 AM No comments:
Labels: GRAH DOSH NIVARAK, VIGYAAN VA TANTRA BHED

FRIDAY, APRIL 27, 2012

बीजोक्त तन्त्रम्–विरूपाक्ष कल्प तंत्र उद्धृत त्रयी कल्प(आसन सिद्धि,अक्षत तंत्र,मेधातंत्र)२-आसन सिद्धि

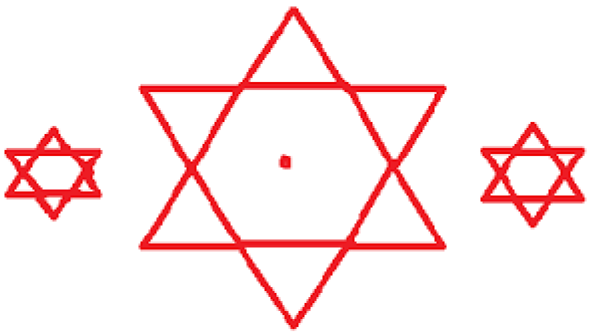

प्रद्युत्मान तन्नोपरि उद्धरित: नूतन सृजःउत्तपत्ति सहदिष्ठ:

ब्रह्मांडो सहपरि सहबीज: अक्षतान् |
मुमुक्षताम स्थिरताम वै: दिव्यः वपुः मेधा:
पूर्णम पूर्ण सपरिपूर्ण: आसन: दिव्यताम सिद्धि: ||

"विरूपाक्ष कल्प तंत्र" से उद्धृत त्रयी कल्प का प्रथम महत्वपूर्ण अंग है आसन सिद्धि | आसन शब्द का प्रयोग विविध अर्थों में किया जाता है यथा...बैठने की पद्धति,भूमि, तथा वह स्थान या माध्यम जिसके ऊपर बैठकर आध्यात्मिक या भौतिक कार्य संपन्न किये जाते हैं |

सिद्ध विरूपाक्ष ने इस शब्द को नवीन अर्थ प्रदान किया है...उन्होंने बताया की साधक को किस माध्यम का किस तरह प्रयोग करना चाहिए..इसका ज्ञान अनिवार्य है,इस पद्धति का पूर्ण ज्ञान ना होने पर वह माध्यम मात्र माध्यम ही रह जाता है,अब उसके प्रयोग से साधक को उसके तंत्रकार्य में अनुकूलता मिलेगी ही ऐसा कोई प्रावधान नहीं है |
"पूर्णम पूर्ण सपरिपूर्ण: आसन: दिव्यताम सिद्धि:" अर्थात आसन मात्र आसन न हो अपितु उसमे पूर्ण दिव्यता का संचार हो और वो दिव्यता से युक्त हो तभी उसके प्रयोग से साधक की देह दिव्य भाव युक्त होती है और तब यदि उसका भाव या साधना पक्ष उसे पूर्णत्व के मार्ग पर सहजता से गतिशील करा देता है और साधक को पूर्णता प्राप्त होती ही है | यहाँ **पूर्णम** का अर्थ भी यही है की माध्यम पूर्णत्व गुण युक्त हो तभी तो पूर्णत्व प्राप्त होगा |
तंत्र शास्त्र कहता है की दिव्यता ही दिव्यता को आकर्षित कर सकती है |यदि साधक दिव्य तत्वोव के सामीप्य का लाभ लेता है या संपर्क में रहता है तो उसकी देह में स्वतः दिव्यता आने लगती है,तब ऐसे में वातावरण में उपस्थित वे सभी नकारात्मक अपदेव शक्ति, अदृश्य यक्ष,प्रेत आदि आपके मंत्र जप को आकर्षित नहीं कर पाते हैं और आपकी क्रिया का पूर्ण फल आपको प्राप्त होता ही है | हममे से बहुतेरे साधक ये नहीं जानते हैं की जब भी वे किसी महत्वपूर्ण दिवस पर साधना का संकल्प लेते हैं और जैसे जैसे साधना का समय समीप आता है उनके मन में साधना और इष्ट के प्रति नकारात्मक विचार उत्पन्न होते जाते हैं | या यदि कडा मन करके वे साधना संपन्न करने हेतु बैठ भी गए तो कुछ समय बाद उन्हें ये लगने लगता है की बाहर मेरे मित्र अपने मनोरंजन में व्यस्त हैं और मैं मूर्ख यहाँ बैठा बैठा पता नहीं क्या कर रहा हूँ ?
क्या होगा ये सब करके ?
आज तक तो कुछ हुआ नहीं,अब क्या नया हो जाएगा ?
हमें ये ज्ञात नहीं है की आसन यदि पूर्ण प्रतिष्ठा से युक्त ना हो तो हम चाहे कितने भी गुदगुदे आसन पर या गद्दे पर बैठ जाएँ,हम हिलते डुलते रहेंगे और हमारे चित्त में बैचेनी की तीव्रता बनी रहेगी | और इसका कारण हमारे शरीर का मजबूत होना नहीं है अपितु भूमि के भीतर रहने वाली नकारात्मक

शक्तियां सुरक्षा आवरण विहीन हमारी इस भौतिक देह से सरलता से संपर्क कर लेती हैं और तब उनके दुष्प्रभाव से हमारा चित्त भी बैचेन हो जाता है और शरीर भी टूटने लगता है और वे सतत हमें साधना से विमुख होने के भाव से प्रभावित करते रहते हैं| और जब ऐसी स्थिति होगी,आप व्याकुल मन और अस्थिर शरीर से कैसे साधना करोगे और कैसे आपको सफलता मिलेगी | और यदि आप आसन से अलग हो जाते हो तो पुनःना सिर्फ आपका शरीर स्वस्थ हो जाता है बल्कि आपका चित्त भी प्रसन्न हो जाता है |

तभी **सदगुरुदेव** हमेशा कहते थे की इस धरा पर बहुत कम गिने चुने स्थान बचे हैं ,जहाँ पर बैठकर उच्च स्तरीय साधना की जा सकती है,ऐसी साधनाएं या तो सिद्धाश्रम की दिव्य भूमि पर संपन्न की जा सकती है या फिर शुन्यआसन का प्रयोग कर,बाकी ऐसी कोई जगह नहीं है जो दूषित ना हो | यहाँ तक की भी शमशान साधना में भी तब तक सफलता की प्राप्ति संभव नहीं हो सकती जब तक की उस साधक को **आसन खिलने** की पद्धति का भली भांति ज्ञान न हो | एक साधक के द्वारा प्रयुक्त सभी साधना सामग्री का विशिष्ट गुणों से युक्त होना अनिवार्य है अन्यथा सामान्य सामग्रियों में यदि वो विशिष्टता उत्पन्न ना कर दे तो उसके द्वारा संपन्न की गयी साधना क्रिया सामान्य ही रह जायेगी | यदि हम स्वगुरु या किन्ही सिद्ध विशेष का आवाहन करते हैं तो प्रत्यक्षतः उन्हें प्रदान किये गए आसन भी पूर्ण शुद्धता के साथ और दिव्यता से युक्त होने चाहिए |

इसके लिए आप एक नया रंगबिरंगा ऊनी कम्बल ले सकते हैं और इसे सिद्ध करने के पश्चात इसके ऊपर आप अपने वांछित रंग का रेशमी या ऊनी वस्त्र भी बिछा सकते हैं |

मंगलवार की प्रातः पूर्ण स्नान कर लाल वस्त्र धारण कर लाल आसन पर बैठकर भूमि पर तीन मैथुन चक्र का निर्माण क्रम से कुमकुम के द्वारा कर ले | १ और ३ चक्र छोटे होंगे और मध्य वाला आकार में थोडा बड़ा होगा | मध्य वाले चक्र के मध्य में बिंदु का अंकन किया जायेगा बाकी के दोनों चक्र में ये अंकन नहीं होगा | मध्य वाले चक्र में आप उस कम्बल को मोड़कर रख दे और अपने बाए तरफ वाले चक्र के मध्य में तिल के तेल का दीपक प्रज्वलित कर ले और दाहिने तरफ वाले चक्र में गौघृत का दीपक प्रज्वलित कर ले,और हाँ दोनों दीपक चार चार बत्तियों वाले होने चाहिए | अब गुरु पूजन और गणपति पूजन के पश्चात पंचोपचार विधि से उन दोनों दीपकों का भी पूजन करे,नैवेद्य की जगह कोई भी मौसमी फल अर्पित करे |

इसके बाद उस कम्बल का पंचोपचार पूजन करे | तत्पश्चात कुमकुम मिले १०८-१०८ अक्षत को निम्न मंत्र क्रम से बोलते हुए उस कम्बल पर डाले |

ऐं (AING) ज्ञान शक्ति स्थापयामि नमः

ह्रीं (HREENG) इच्छाशक्ति स्थापयामि नमः

क्लीं (KLEENG) क्रियाशक्ति स्थापयामि नमः

तत्पश्चात निम्न ध्यान मंत्र का ७ बार उच्चारण करे और ध्यान के बाद जल के छींटे उस वस्त्र पर छिडके –

ॐ पृथ्वी त्वया धृता लोका देवी त्वं विष्णुना धृता |
त्वं च धारय माम देवी: पवित्रं कुरु च आसनं ||
ॐ सिद्धासनाय नमः
ॐ कमलासनाय नमः
ॐ सिद्ध सिद्धासनाय नमः

इसके बाद निम्न मंत्र का उच्चारण करते हुए पुष्प मिश्रित अक्षत को उस कम्बल या वस्त्र पर ३२४ बार अर्पित करे |

ॐ ह्रीं क्लीं ऐं श्रीं सप्तलोकं धात्रि अमुकं आसने सिद्धिं भू: देव्यै नमः ||

OM HREENG KLEENG AING SHREEM SAPTLOKAM DHAATRI AMUKAM AASANE SIDDHIM BHUH DEVAYAI NAMAH ||

ये क्रम गुरूवार तक नित्य संपन्न करे | जहाँ पर अमुक लिखा हुआ है वहाँ **अपना नाम** उच्चारित करना है |अंतिम दिवस क्रिया पूर्ण होने के बाद किसी भी देवी के मंदिर में कुछ दक्षिणा और भोजन सामग्री अर्पित कर दे तथा कुछ धन राशि जो आपके सामर्थ्यानुसार हो अपने गुरु के चरणों में अर्पित कर दे या गुरु धाम में भेज दे तथा सदगुरुदेव से इस क्रिया में पूर्ण सफलता का आशीर्वाद ले | अद्भुत बात ये है की आप इस कम्बल को जब भी बिछाकर इस पर बैठेंगे तो ना सिर्फ सहजता का अनुभव करेंगे अपितु समय कैसे बीत जाएगा आपको ज्ञात भी नहीं होगा,दीर्घ कालीन साधना कही ज्यादा सरलता से ऐसे सिद्ध आसन पर संपन्न की जा सकती है और आप इसके तेज की जांच करवा कर देख सकते हैं की कितना अंतर है सामान्य आसन में और इस पद्धति से सिद्ध आसन में | आप ऐसे दो आसन सिद्ध कर लीजिए और एक आसन आप अपने गुरु के बैठने के निमित्त प्रयोग कर सकते हैं | आपको दो बातों का ध्यान रखना होगा |

१.इन आसनों को धोया नहीं जाता है |

२. इन पर हमारे अतिरिक्त कोई और नहीं बैठ सकता है,अन्यथा उसकी मानसिक स्थिति व्यथित हो सकती है | अतः यदि किसी और के निमित्त आसन तैयार करना हो तो अमुक की जगह उसका नाम

उच्चारित कर आसन सिद्ध करना होगा | स्वयं के अतिरिक्त जो हम गुरु सत्ता या सिद्धों के आवाहन हेतु जो आसन प्रयोग करेंगे उसे सिद्ध करने के लिए अमुक की जगह **ज्ञानशक्तिं** का उच्चारण होगा|

ये हमारा सौभाग्य है की हमें ये विधान उपलब्ध है,आवशयकता है इन सूत्रों का साधना में प्रयोग करने की और साधना की सफलता प्राप्ति के मार्ग में जो बाधाएं आ रही है,उन्हें समाप्त कर उन पर विजय प्राप्त करने की |

अगले लेख में अक्षत तंत्र की जानकारी आप भाई बहनों को मैं देने का प्रयास करुँगी,तब तक के लिए ...

=======================================

PradyutmaanTannopriUdhritahNuutanSrijah
UtatptatiSehdishtahBrahmaandoSehpriSehbeejahAkshtaan |
MumukshtaamSthirtaamvahidivyahvapuhmedhaah
Poornampoornespripoornahaasanhdivyataam siddhi ||

Aasan Siddhi is the first important part of the Trayi kalp excerpted from "Virupaaksh Kalp Tantra".The word aasan is used in various contexts like …..Sitting style, land or that place or medium on which spiritual and materialistic works are done.

The great Saint Virupaaksh has given a new meaning to this word….He told that sadhak should be fully aware of how medium is to be used .It's knowledge is must. Medium remains medium only in absence of complete knowledge of this padhati. Now using this medium will definitely favour sadhak in tantric process, there is no such provision.

"Poornampoornespripoornahaasanhdivyataam siddhi" meaning that aasan should not be merely a aasan rather whole divinity should be fully embedded in it and it should be combined with divinity, then only after using it , body of sadhak gets combined with Divya bhaav and then his sadhna element propels him easily on the way to completeness and sadhak definitelygets completeness. Here "Poornam" also means that medium should be complete, only then sadhak can attain completeness.
Tantra scripture says that only divinity can attract divinity. If sadhak takes the benefit from proximity to divine element or remains in contact with it, then divinity starts coming in his body. In such an environment all negative forces, invisible prets (ghosts) and yaksha etc. are not able to attract mantra jap and one gets the complete results from the process. Most of sadhaks among us do not know the fact that whenever they take resolution to do sadhna on any important day and as sadhna time approaches, negative thoughts about sadhna and Isht (deity) starts arising in his mind. And if somehow he sits to complete sadhna, then after some time he starts getting the feeling that outside my friends are busy in entertaining themselves and what I the fool am doing here?

What will I get after doing this?
If nothing has happened up till now, then what new will happen now?
We do not know that if aasan is not fully energised then whether we sit on very elastic aasan or mattress, we will always be moving here and there and the severe restlessness will remain in our mind. And the reason for it is not that our body is not strong rather all the negative forces present in the earth can easily come in touch with physical body, which is without the security cover and due to bad influence of them our mind gets restless and body ache starts creeping in and all these continuously start influencing us to move away from sadhna. Insuch an condition, how will you do sadhna by anxious mind and unstable body and how will you get success? And when you leave the aasan, then not only your body becomes healthy but also you start felling happy.
That’s why Sadgurudev used to say there are only very few places left on the earth where high-order sadhnas can be done. These sadhnas can be done only on the divine land of Siddhashram or by using Shunya Aasan (aasan in air), no other land is there which is not polluted (impure).In shamshaan sadhna also, getting success in not possible until and unless sadhak is not aware of padhati of aasan khilan.All the sadhna articles used by the sadhak should necessarily be combined with special qualities otherwise if sadhak is not possible to impart exceptional qualities in it, then the sadhna process done by him will only remain normal only. If we do the Aavahan of our guru or any special saint then the aasan provided to them directly should be fully pure and divine.
For this, you can take one new woollen blanket and after accomplishing it, you can lay your desired coloured silky or woollen cloth on it.
On Tuesday morning, after taking bath, wear red clothes and sit on red aasan and construct three maithun chakra in sequence(as given above in diagram) by kumkum. First and third chakra will be small in size and the middle one will be little larger in size. Bindu (point) will be written in the centre of middle chakra. It will not be written in rest of two chakras. Fold the blanket and keep it in the middle chakra and lighten the lamp of Til oil in the middle of the chakra present on your left hand side and lighten the lamp of cow ghee in the middle of chakra present on your right hand side. Both these lamps should have four battis (piece of cotton) each. Afterdoing Guru poojan and lord Ganpati poojan, do the poojan of both the lamps by panchopchar method. Offer any seasonal fruit as navidya.
After that do the panchopchar poojan of that blanket. Then offer 108-108 kumkum mixed rice on the blanket while chanting the mantras in the sequence given below.
AING GYAN SHAKTI STHAPYAAMI NAMAH
HREENG ICHHASHAKTI STHAPYAAMI NAMAH
KLEENG KRIYASHAKTI STHAPYAAMI NAMAH
Then, chant the below dhayan mantra 7 times and after meditation, sprinkle the water on that cloth.
Om PrithviTvayaDhritaLoka Devi TvamVishnunaDhrita |
Tvam Ch DharayMaamDevihPavitramKaru Ch Aasanam ||
Om SiddhaasanayNamah
Om KamlaasnaayNamah
Om Siddh SiddhaasanayNamah

After that, offer flower mixed rice on that blanket or cloth 324 times while chanting the following mantra.

OM HREENG KLEENG AING SHREEM SAPTLOKAM DHAATRI AMUKAM AASANE SIDDHIM BHUH DEVAYAI NAMAH ||

Do this process till Thursday.Where "Amuk " is written , you have to pronounce your name .On the last day, after completing the process offer some dakshina or food in any Devi temple and offer some money(as per your capacity) on the lotus feet of Guru or send it to Gurudham and pray to Sadgurudev for success in this process. Amazing thing is that whenever you will sit on this blanket, you will be at ease and how the time will pass by, you will never know. Any long-duration sadhna can be done on this accomplished aasan far more easily and you can test the aasan's intensity to see how much is the difference between normal aasan and the aasan accomplished by this process. Accomplish such two aasans and you can use one aasan for your guru to sit.
You have to keep two things in mind:

1) These aasans are never washed.
2) On them, except us, no one can sit otherwise his/her mental condition can deteriorate.

Therefore if we have to prepare the aasan for somebody else, then we have to accomplish the aasan by using his/her name in place ofAmuk. To accomplish the aasan for the purpose of Aavahan of Guru and saints, we have to use Gyanshaktim instead of Amuk.

We are fortunate enough to have such process.What is needed is to use such principles in our sadhna and to combat all the obstacles in our sadhna path and emerge as victorious.

In next article, I will try to give you information about Akshat Tantra, up till then…………

'निखिल प्रणाम'

MADAN VASHIKARAN PRAYOG

In field of Tantra, there is one important karma under Shatkarmas (six important Karmas of Tantra) called Vashikaran. Common people may see this karma with fearful point of view but nobody is unaware of its utility and its need in today's time. As compared to ancient time, infidelity/crime has spread all around in very large proportion and person is now compelled to live a life full of ever-persisting fear. Person in order to meet his selfish objective is not even thinking for a minute before causing harm to others. It is but natural to feel sense of consistent insecurity in this blind race. Therefore in today's time, person is totally deprived of pleasure. And person then finds himself helpless, confronted with various problems. Certainly this situation in unsuitable but we were the one who gave rise to sequence of the events which culminated into this situation. If there is a problem, it has a solution too. And that's why our ancient sages and saints resorted to Dev Shakti; wherever our power is limited, we can attain power and strength from them through worship of Dev Shakti and get rid of problems of our life. And this procedure is Tantra……Mahasiddhs have always agreed on the fact that Tantra is capable of getting rid of any problem of person. But due to our ignorance and due to many selfish people, this Vidya slowly and gradually became obsolete. But from time to time, Many Mahasiddhs took incarnation and tried to connect this Vidya with common masses. Shri Sadgurudev dedicated every second of his life for welfare of people. And from time to time, he put forward easy and exceptional procedures of Tantra in front of all so that common people can get rid of shortcomings of their life through this Vidya and attains joy and happiness in their lives. Sadgurudev provided so many prayogs related to Vashikaran through which person can do vashikaran of his enemy and secure himself. If any person starts causing harm, he can be stopped. If any family member or any acquaintance is doing wrong act, his

orientation can be changed or if anyone is suffering from bad company, he can be saved from it. In this manner, there is no wrong in doing Vashikaran in moral manner. And it is procedure to provide auspicious situation to sadhak. In this context, this prayog is presented which has also been called Madan Vashikaran Prayog. This prayog is related to Kaamdev, though Kaamdev can attract or do vashikaran of anyone any moment through arrow of flowers. This hidden prayog is important prayog for all of us in today's era.

Sadhak can start this prayog from any auspicious day.

It is better if sadhak does this prayog after 10:00 P.M in night.

Sadhak should take bath, water yellow dress and sit on yellow aasan facing north/east direction.

Sadhak should do Guru Poojan and Ganesh Poojan and chant Guru Mantra. After it, sadhak should establish any picture or yantra of Kaamdev and do its normal poojan. Sadhak should light oil-lamp and light incensed stick.

After it, sadhak should do Nyas.

KAR NYAAS

KLAAM ANGUSHTHAABHYAAM NAMAH
KLEEM TARJANIBHYAAM NAMAH
KLOOM SARVANANDMAYI MADHYMABHYAAM NAMAH
KLAIM ANAAMIKAABHYAAM NAMAH
KLAUM KANISHTKABHYAAM NAMAH
KLAH KARTAL KARPRISHTHAABHYAAM NAMAH

HRIDYAADI NYAAS

KLAAM HRIDYAAY NAMAH
KLEEM SHIRSE SWAHA
KLOOM SHIKHAYAI VASHAT
KLAIM KAVACHHAAY HUM
KLAUM NAITRTRYAAY VAUSHAT
KLAH ASTRAAY PHAT

After Nyas procedure, sadhak should chant 11 rounds of below mantra. Sadhak has to do chanting while looking on the flame of lamp. Sadhak can use crystal or Rudraksh rosary for chanting.

OM KLEEM MADMAD MAADAY MAADAY AMUKAM VASHY VASHY HREEM SWAHA

Sadhak should do this procedure for 5 days. In this manner, sadhna procedure is completed through which sadhak can take practical benefits many times. Whenever sadhak has to do vashikaran prayog, sadhak should keep any flower, water or any food item in front of him and chant 1 rounds of this mantra while looking at it. In mantra, use the name of person in the place of "AMUKAM". Sadhak should give

this consecrated article to that person. Whenever that person uses this article, sadhak's desire is fulfilled.

~~~~~~

तंत्र के क्षेत्र में षट्कर्म के अंतर्गत एक महत्वपूर्ण कर्म है वशीकरण. साधारण जन मानस भले ही इस कर्म को भय के नज़रिए से देखे लेकिन इसको उपयोगिता और आज के समय में इसकी अनिवार्यता से कोई अभी अनभिज्ञ नहीं है. क्यों की पुरातन काल की अपेक्षा, व्यभिचार आज चारों तरफ अधिक मात्र में प्रसारित हो चूका है तथा मनुष्य सदैव सतत भय से घिरा हुआ जीवन जीने के लिए बाध्य हो गया है. स्वार्थ परास्त के कारण व्यक्ति आज किसी का भी अहित करने से पहले एक क्षण रुक कर सोच नहीं रहा है. इसी अंधी दौडमें हमेशा ही असुरक्षा का अहेसास होना पूर्ण रूपेण स्वाभाविक मानस अवस्था है. आज के समय में इसी लिए व्यक्ति का चिंतन एक नीरस जीवन जीने की कल्पना से हमेशा ही सुख से अछूता ही रहता चला जाता है. और फिर विविध समस्याओ से घिरा हुआ व्यक्ति अपने आप को निसहाय सा अनुभव करने लगता है. निश्चय ही यह स्थिति अयोग्य है लेकिन इस स्थिति क्रम का प्रादुर्भाव वस्तुतः हमारे कारण ही तो हुआ है. अगर समस्या है तो निश्चय ही उसका समाधान भी है. और इसी लिए हमारे प्राचीन ऋषि मुनियों ने देव शक्ति को अपनाया था; जहां पर हमारी शक्ति सिमित है वहीँ हम देव शक्तियों की उपासना के माध्यम से उनसे शक्तिबल प्राप्त कर अपने जीवन की समस्याओ से मुक्ति पा सकते है. और यही प्रक्रिया तो तंत्र है...महासिद्धो ने हमेशा इस तथ्य पर सहमती ही व्यक्त की है की मनुष्य को किसी भी प्रकार की समस्या से मुक्ति दिलाने में तंत्र समर्थ है. लेकिन हमारी उपेक्षाओ के कारण तथा विविध ढोंग और स्वार्थ परस्तो के कारण यह विद्या धीरे धीरे लुप्त हो गई. परन्तु समय समय पर कई महासिद्ध वन्दनीय व्यक्तित्व ने अवतरण कर इस विद्या को पुनः जनमानस के साथ जोड़ने का प्रयत्न किया है. श्रीसदगुरुदेव ने भी इसी प्रयास में रत रहते हुवे अपना एक एक क्षण जनकल्याण के लिए समर्पित किया था. तथा समय समय पर उन्होंने तंत्र की सहज और विलक्षण प्रक्रियाओ को सब के मध्य रखा था जिससे की सभी सर्व साधारण जन इस विद्या के द्वारा अपने जीवन की न्यूनताओ को दूर कर सके तथा अपने जीवन में सुख तथा आनंद की प्राप्ति कर सके. वशीकरण सबंधित कई प्रयोग सदगुरुदेव ने प्रदान किये थे जिससे की व्यक्ति शत्रु का वशीकरण कर सुरक्षा प्राप्त कर सके. कोई व्यक्ति अनिष्ट करने पर उतर आये तो उसको रोका जा सके. घर परिवार का कोई व्यक्ति या परिचितजन अगर अयोग्य कार्य कर रहा है तो उसको वापस मोड़ा जाए. या फिर कोई अयोग्य संगत में है तो उसे मुक्त किया जाए. इस प्रकार नैतिक रूप से वशीकरण करने पर निश्चय ही किसी भी प्रकार का कोई दोष नहीं है. तथा यह तो साधक के लिए एक अत्यंत ही शुभ स्थिति प्रदान करने वाली क्रिया है. इसी क्रम में यह प्रयोग प्रस्तुत है जिसे मदन वशीकरण प्रयोग कहा गया है. यह प्रयोग कामदेव से सबंधित है, वैसे भी कामदेव तो अपने पुष्पबाण के माध्यम से किसी को भी क्षण में आकर्षित या वशीभूत कर सकते है. यह गुप्त प्रयोग आज के युग में सभी के लिए एक महत्वपूर्ण प्रयोग है.

किसी भी शुभ दिन से साधक इस प्रयोग को शुरू कर सकता है.

साधक इस प्रयोग को रात्रिकाल में १० बजे के बाद करे तो ज्यादा उत्तम रहता है.
~~~~~~

स्नान आदि से निवृत हो साधक पीले रंग के वस्त्र धारण करे तथा पीले रंग के आसान पर उत्तर या पूर्व दिशा की तरफ मुख कर बैठ जाये.

साधक गुरुपूजन तथा गणेश पूजन करे एवं गुरुमन्त्र का जाप करे. इसके बाद साधक अपने सामने कामदेव का कोई चित्र या पूजन यंत्र स्थापित करे. उसका सामान्य पूजन करे. साधक को तेल का दीपक तथा सुगन्धित अगरबत्ती को प्रज्वलित करना चाहिए .

साधक इसके बाद न्यास करे.

करन्यास

क्लां अङ्गुष्ठाभ्यां नमः

क्लीं तर्जनीभ्यां नमः

क्लूं सर्वानन्दमयि मध्यमाभ्यां नमः

क्लैं अनामिकाभ्यां नमः

क्लौं कनिष्ठकाभ्यां नमः

क्लः करतल करपृष्ठाभ्यां नमः

हृदयादिन्यास

क्लां हृदयाय नमः

क्लीं शिरसे स्वाहा

क्लूं शिखायै वषट्

क्लैं कवचाय हूं

क्लौं नेत्रत्रयाय वौषट्

क्लः अस्त्राय फट्

न्यास हो जाने पर साधक को निम्न मन्त्र की ११ माला जाप करनी है. यह जाप साधक को दीपक की लौ (ज्योत) को देखते हुवे करनी है. मन्त्र जाप के लिए साधक स्फटिक या रुद्राक्ष माला का प्रयोग कर सकता है.

ॐ क्लीं मद मद मादय मादय अमुकं वश्य वश्य ह्रीं स्वाहा

(OM KLEEM MAD MAD MAADAY MAADAY AMUKAM VASHY VASHY HREEM SWAHA)

साधक को यह क्रम ५ दिन तक करना है. इस प्रकार यह साधना प्रक्रिया पूर्ण होती है जिसके बाद साधक कई बार इसका प्रायोगिक लाभ उठा सकता है. साधक को जब भी वशीकरण प्रयोग करना हो तो अपने सामने कोई पुष्प, पानी या कोई भी अन्य खाध्य पदार्थ रख कर उसको देखते हुवे उसी माला से एक माला मन्त्र जाप करे. मन्त्र में ‘अमुकं’ की जगह उस व्यक्ति का नाम लें जिसका वशीकरण करना है. साधक को अभिमंत्रित पदार्थ उस व्यक्ति को दे देना चाहिए जब वह व्यक्ति उस पदार्थ का प्रयोग करता है तो साधक का मनोरथ पूर्ण होता है.

****NPRU****

Posted by Nikhil at 3:33 AM 1 comment:
Labels: VASHIKARAN PRAYOG

TUESDAY, OCTOBER 9, 2012

VYAKTI VISHESH KE LIYE VASHIKARAN PRAYOG

Shat Karma Prayogs have got their own utility and they are devised to make human life happy and progressive. Though the feeling and aim with which these prayogs are done, person has got its own thinking and reason. A Capable sadhak decides according to circumstances and uses these procedures when he considers himself appropriate. He neither does it upon instigation nor under the compulsion of emotion because effect is always there.

One of the prayogs among Shatkarma Prayog is Vashikaran.....It has been said also that Vashikaran is the process of avoiding bitterness in speech.But it is not possible everywhere in every circumstances.....Sometimes one face certain situations where such efforts of person does not yield any result, one has to take assistance of sadhna. And sadhna only means attaining all that which is not in our fate but it is in accordance with decorum and rules of society.

Vashikaran sadhnas are seen with inferior point of view. A reason is but obvious that these sadhnas have been used in wrong manner but by it, utility of sadhna does not end. It is responsibility of capable sadhak that whenever he gets time, he should keep on doing these sadhnas. Then only continuity in sadhna world can be established.

In today's time ….because this era is very much influenced by Venus planet. Therefore, person has become more inclined towards the things of enjoyment. Love and affection has got its own importance in life. But if by any reason, circumstances are not becoming favourable then these easy sadhnas have got their own utility in making these circumstances favourable which cannot under-estimated.

But using these sadhnas for destroying anyone's life or fulfilment of contemptible feelings is not at all right. Doing such things only causes a harm because today time is such that person does prayog on any girl passing by. Do not do like this otherwise person will himself be responsible for wrong doing to any other person.

Dress and Aasan will be yellow.
Day will be Friday.
It can be done in Morning or Night.
Yellow Hakik Rosary has to be used for chanting mantra.
Use name of desired person (which you want to make it favourable) in place of Amuk. It can be any female, male or officer.

Mantra:

Om Chiti Chiti Chaamundaa Kaali Kaali Mahaakaali Amukam Me Vashmaanay Swaha ||

You have to chant mantra 10000 times and after mantra Jap, offer 1000 oblations by this mantra. You can use hawan Samagri available in market. Numbers of days is not fixed but do it in 5 or 7 days because only 100 rounds of mantra have to be chanted.

After completion of prayog, you will feel yourself that how the environment has become favourable. But keep in mind that in such mantra your concentration, dedication and your faith in them plays very important role.

===

षट्कर्म प्रयोगों की अपनी ही एक उपयोगिता हैं और उनका निर्माण भी मानव जीवन को सुखमय और उन्नति युक्त बनाये रखने के लिए हुआ हैं, यह जरुर हैं की किस भावना और उदेश्य को लेकर इन प्रयोगों को किया जाए, उस पर व्यक्ति की अपनी ही एक सोच और कारण हो़ता हैं,एक योग्य साधक परिस्थति के अनुसार निर्णय कर अपने आप को जब उपयुक्त समझता हैं तब इन विधाओ का प्रयोग करता हैं न की किसी के उकसावे मे आकर या किसी भावना के वश मे होकर क्योंकि प्रभाव तो होता ही हैं .

इन षट्कर्म प्रयोग मे एक प्रयोग हैं वशीकरण ..यूँ तो कहा भी गया हैं वशीकरण एक मंत्र हैं तज दे वचन कठोर .पर हर जगह हर परिस्थितयों मे तो यह बात नही हो सकती हैं न ..कई की बार ऐसी परिस्थितयां बन् जाती हैं की व्यक्ति के हाथ मे प्रयास मात्र इतने से कुछ नही होता बल्कि उसे साधना का भी सहयोग लेना ही पड़ता हैं,और साधना का मतलब ही हैं की जो मर्यादानुकूल,सामाजिक नियमानुकुल हो उसे यदि वह भाग्य मे न हो तो भी उसे प्राप्त कर लेना.

वशीकरण साधनाओ को बहुत ही हेय दृष्टी से देखा जाता हैं कारण भी हैं क्योंकि अनेको ने इस साधनाओ का दुरुपयोग ही ज्यादा किया हैं.पर इससे इन साधनाओ की उपयोगिता तो समाप्त नही हो जाती हैं.एक सुयोग्य साधक का कर्तव्य हैं की जब भी समय मिले इन साधनाओ को सम्पन्न करता जाए तभी तो साधना जगत मे निरंतरता बनी रही सकती हैं,

आज के समय मे... क्योंकि यह युग शुक्र ग्रह से कहीं ज्यदा प्रभावित हैं तो जीवन मे सुख विलास की चीजों के प्रति व्यक्ति का रुझान कहीं ज्यादा होता गया हैं और जीवन मे प्रेम और स्नेह की अपनी ही एक महत्वता हैं पर जब किसी भी कारण से परिस्थितियाँ साथ न दे रही हो तब सारी परिस्थिति को अपने अनुकूल करने के लिए इन सरल साधनाओ की अपनी ही एक उपयोगिता हैं जिसे कमतर नही आँका जा सकता हैं .

पर इन साधनाओ का प्रयोग कर किसी का जीवन नष्ट करना या अपनी कुत्सिक भावनाओं की पूर्ति कतई उचित नही हैं ऐसा करने पर हानि ही ज्यादा होती हैं .क्योंकि आज समय ऐसा हैं कि लोग राह चलती लड़की पर प्रयोग कर दें.ऐसा कतई न करें अन्यथा कुछ भी किसी के साथ अशुभ किये जाने पर व्यक्ति उसका स्वयं ही जबाब देह होगा .

आसन और वस्त्र पीले रंग के हो .

दिन शुक्रवार का हो

समय प्रातः या रात्रि काल

पीले रंग की हकिक माला मंत्र जप केलिए उपयुक्त होगी.

अमुक की जगह इच्छित व्यक्ति का नाम ले जिसे आप अपने अनुकूल करना चाहते हैं वह स्त्री, पुरुष,अधिकारी कोई भी हो सकता हैं.

मंत्र:

ॐ चिटि चिटि चामुंडा काली काली महाकाली अमुकं मे वशमानय स्वाहा ||

आपको दस हजार मंत्र करना हैं और मंत्र जप पूरा होने के बाद एक हजार बार इसी मंत्र की आहुति देना हैं ,आहुति आप हवन सामग्री मार्केट मे मिलती हैं, वहां से ले आ सकते हैं .दिनों की सख्या निश्चित नही हैं पर आप पांच या सात दिन मे पूरा कर ले क्योंकि मात्र १०० माला मंत्र जप तो करना हैं .

प्रयोग सम्पन्न होने पर आप स्वयम ही पायेंगे की किस तरह आपके लिए अनुकूल वातावरण बन् गया हैं, पर ध्यान रहे इस प्रकार के मंत्र मे आपकी एकाग्रता और निष्ठा और इनके प्रति आपका विश्वास कहीं जयादा गहरी भूमिका निभाता हैं .

PARAM DURLABH SOUBHAGYA VAASTU KRITYA MAHAYANTRA SAADHNAA VIDHAAN

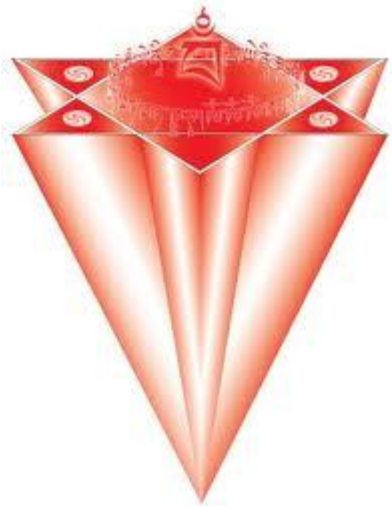

इस विधान को http://nikhil-alchemy2.blogspot.in/2013/02/param-durlabh-soubhagya-vaastu-kritya.html गुरु जन्म दिवस पर किसी भी समय किया जा सकता है और इसके अतिरिक्त अपने जन्मदिवस की जो तिथि हो उस तिथि को प्रातः इस कर्म को सम्पादित कर लेना चाहिए.यदि हम गुरु जन्मदिवस पर कर लें तो कई दृष्टि से ये बहुत ही अद्भुत विधान साबित होगा,दिशा पूर्व,वस्त्र व आसन श्वेत या रक्त होंगे – पूजन सामग्री में आप कुमकुम मिश्रित आधा किलो अक्षत की व्यवस्था कर लें और जो भी सामान्य पूजन सामग्री और पुष्प आदि हों,उनकी भली भाँती व्यवस्था कर लें.

पुष्प से जल छिड़कते हुए स्वस्तिवाचन करें-

ॐ स्वस्ति न इंद्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः ।
स्वस्ति नस्ताक्ष्र्यो अरिष्टनेमिः स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु ॥
द्यौः शांतिः अंतरिक्ष गुं शांतिः पृथिवी शांतिरापः
शांतिरोषधयः शांतिः। वनस्पतयः शांतिर्विश्वे देवाः
शांतिर्ब्रह्म शांतिः सर्वगुं शांतिः शांतिरेव शांति सा
मा शांतिरेधि। यतो यतः समिहसे ततो नो अभयं कुरु ।
शंन्नः कुरु प्राजाभ्यो अभयं नः पशुभ्यः। सुशांतिर्भवतु ॥
ॐ सिद्धि बुद्धि सहिताय श्री मन्ममहागणाधिपतये नमः

संकल्प-

ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णु:, ॐ अद्यब्रह्मणोऽह्नि द्वितीय परार्धे श्री श्वेतवाराहकल्पे वैवस्वतमन्वन्तरे, अष्टाविंशतितमे कलियुगे, कलिप्रथम चरणे जम्बूद्वीपे भरतखण्डे भारतवर्षे पुण्य(अपने नगर-गांव का नाम)क्षेत्रे बौद्धावतारे वीरविक्रमादित्यनृपते(वर्तमान संवत),तमेऽब्दे क्रोधी नाम संवत्सरे उत्तरायणे (वर्तमान) ऋतो महामंगल्यप्रदे मासानां मासोत्तमे(वर्तमान)मासे (वर्तमान)पक्षे (वर्तमान)तिथौ (वर्तमान)वासरे (गोत्र का नाम लें)गोत्रोत्पन्नोऽहं अमुकनामा (अपना नाम लें)सकलपापक्षयपूर्वकं सर्वारिष्ट शांतिनिमित्तं सर्वमंगलकामनया-श्रुतिस्मृत्योक्तफलप्राप्त्यर्थं मनेप्सित कार्य सिद्धयर्थं श्री महामृत्युंजय साहित्य सौभाग्य वास्तु कृत्या पूजनं च अहं करिष्ये। (यदि इतना ना बोलते बने तब भी मात्र हिंदी में अपना संकल्प बोलकर जल भूमि पर छोड़ दें)

निम्न मंत्र बोल कर लिखे गए अंग पर अपने दाहिने हाथ का स्पर्श करे

ह्रीं नं पादाभ्याम नमः (दोनों पाव पर),
ह्रीं मों जानुभ्याम नमः - (दोनों जंघा पर)
ह्रीं भं कटीभ्याम नमः - (दोनों कमर पर)
ह्रीं गं नाभ्ये नमः - (नाभि पर)
ह्रीं वं ह्रदयाय नमः - (ह्रदय पर)
ह्रीं ते बाहुभ्याम नमः - (दोनों कंधे पर)
ह्रीं वां कंठाय नमः - (गले पर)
ह्रीं सुं मुखाय नमः - (मुख पर)
ह्रीं दें नेत्राभ्याम नमः - (दोनों नेत्रों पर)
ह्रीं वां ललाटाय नमः - (ललाट पर)
ह्रीं यां मुध्ने नमः - (मस्तक पर)
ह्रीं नमो भगवते वासुदेवाय नमः - (पुरे शरीर पर)

नमस्कार मंत्र :

ह्रीं श्री गणेशाय नमः
ह्रीं इष्ट देवताभ्यो नमः -
ह्रीं कुल देवताभ्यो नमः -
ह्रीं ग्राम देवताभ्यो नमः -
ह्रीं स्थान देवताभ्यो नमः -
ह्रीं सर्वेभ्यो देवेभ्यो नमः -
ह्रीं गुरुवे नमः -
ह्रीं मातृ पितृ चरणकमलभ्यो नमः

अब सामने बाजोट पर जिस पर श्वेत या रक्त वस्त्र बिछा हुआ हो,उस पर ताम्बे की थाली स्थापित कर उस पर महायंत्र को स्थापित कर अग्रक्रिया करें-

गणपति पूजन

हाथ में पुष्प लेकर गणपति का आवाहन करें.

ॐ गं गणपतये इहागच्छ इह तिष्ठ : |

और अब हाथ में पुष्प लेकर निम्न मंत्र का उच्चारण करते हुए भगवान् गणपति के सामने छोड़ दें -

गजाननम्भूतगणादिसेवितं कपित्थ जम्बू फलचारुभक्षणम्।
उमासुतं शोक विनाशकारकं नमामि विघ्नेश्वरपादपंकजम्।

निम्न मंत्र का उच्चारण करते हुए थोड़े थोड़े अक्षत के दाने महायंत्र पर अर्पित करें-

नवग्रह आवाहन -

अस्मिन नवग्रहमंडले आवाहिताः सूर्यादिनवग्रहा
देवाः सुप्रतिष्ठिता वरदा भवन्तु ।

जपाकुसुम संकाशं काश्यपेयं महद्द्युतिम् ।
तमोरिंसर्वपापघ्नं प्रणतोSस्मि दिवाकरम् ॥

ॐ ह्सौ: श्रीं आं ग्रहाधिराजाय आदित्याय स्वाहा

दधिशंखतुषाराभं क्षीरोदार्णव संभवम् ।
नमामि शशिनं सोमं शंभोर्मुकुट भूषणम् ॥

ॐ श्रीं क्रीं ह्रां चं चन्द्राय नमः

धरणीगर्भ संभूतं विद्युत्कांति समप्रभम् ।
कुमारं शक्तिहस्तं तं मंगलं प्रणाम्यहम् ॥

ऐं ह्सौ: श्रीं द्रां कं ग्रहाधिपतये भौमाय स्वाहा

प्रियंगुकलिकाश्यामं रुपेणाप्रतिमं बुधम् ।
सौम्यं सौम्यगुणोपेतं तं बुधं प्रणमाम्यहम् ॥

ॐ ह्रां क्रीं टं ग्रहनाथाय बुधाय स्वाहा

देवानांच ऋषीनांच गुरुं कांचन सन्निभम् ।
बुद्धिभूतं त्रिलोकेशं तं नमामि बृहस्पतिम् ॥
ॐ ह्रीं श्रीं ख्रीं ऐं ग्लौं ग्रहाधिपतये बृहस्पतये ब्रींठ: ऐंठ: श्रींठ: स्वाहा

हिमकुंद मृणालाभं दैत्यानां परमं गुरुम् ।
सर्वशास्त्र प्रवक्तारं भार्गवं प्रणमाम्यहम् ॥
ॐ ऐं जं गं ग्रहेश्वराय शुक्राय नमः

नीलांजन समाभासं रविपुत्रं यमाग्रजम् ।
छायामार्तंड संभूतं तं नमामि शनैश्चरम् ॥
ॐ ह्रीं श्रीं ग्रहचक्रवर्तिने शनैश्चराय क्लीं ऐंस: स्वाहा

अर्धकायं महावीर्यं चंद्रादित्य विमर्दनम् ।
सिंहिकागर्भसंभूतं तं राहुं प्रणमाम्यहम् ॥
ॐ क्रीं क्रीं हूँ हूँ टं टंकधारिणे राहवे रं ह्रीं श्रीं भैं स्वाहा

पलाशपुष्पसंकाशं तारकाग्रह मस्तकम् ।
रौद्रंरौद्रात्मकं घोरं तं केतुं प्रणमाम्यहम् ॥
ॐ ह्रीं क्रूं क्रूररूपीणे केतवे ऐं सौ: स्वाहा
अब हाथ जोड़कर स्तुति करें.
ॐ ब्रह्मा मुरारिस्त्रिपुरान्तकारी भानुःशशि भूमिसतो बुधश्च गुरुश्च शुक्रः शनि राहुकेतवः
सर्वेग्रहाः मुन्था सहिताय शान्तिकरा भवन्तु ॥
निम्न मंत्र का उच्चारण करते हुए थोड़े थोड़े अक्षत के दाने महायंत्र पर अर्पित करें-
षोडशमातृका आवाहन -
ॐ गौरी पद्मा शचीमेधा सावित्री विजया जया |
देवसेना स्वधा स्वाहा मातरो लोकमातरः ||
हृटि पुष्टि तथा तुष्टिस्तथातुष्टिरात्मन: कुलदेवता : |
गणेशेनाधिका ह्यैता वृद्धौ पूज्याश्च तिष्ठतः ||
ॐ भूर्भुवः स्व: षोडशमातृकाभ्यो नमः ||

इहागच्छइह तिष्ठ ||

अब हाथ जोड़कर निम्न मंत्र का उच्चारण करते हुए यन्त्र पर कुमकुम मिश्रित अक्षत डालें-

ॐ जयंती मंगला काली भद्रकाली कपालिनी |
दुर्गा क्षमा शिवाधात्री स्वाहा स्वधा नमोSस्ते ||
अनया पूजया गौर्मादि षोडश मातः प्रीयन्तां न मम |

कलश पूजन-

हाथ में पुष्प लेकर वरुण का आवाहन करें.

अस्मिन कलशे वरुणं सांगं सपरिवारं सायुध सशक्तिकमावाहयामि,
ओ३म्भूर्भुव: स्व:भो वरुण इहागच्छ इहतिष्ठ। स्थापयामि पूजयामि॥

और अब कलश का पंचोपचार पूजन कर लें,तत्पश्चात घृत या तिल के तेल का दीपक प्रज्वलित कर लें और सुगन्धित अगरबत्ती भी,और इसके बाद हाथ में जल लेकर विनियोग करें.

ॐ अस्य श्रीप्राणप्रतिष्ठामंत्रस्य ब्रह्मा-विष्णु-रुद्रा ऋषयः ऋग्यजुर्सामानी छन्दांसी प्राणशक्तिर्देवता आं बीजं ह्रीं शक्तिः क्रों कीलकं अस्मिन यंत्रे श्री सौभाग्य वास्तु कृत्या यन्त्र प्राण प्रतिष्ठापने विनियोगः !

इसके बाद यंत्र को एक हाथ में लेकर तथा दुसरे हाथ से कुश,या अग्रभाग टूटी हुयी दूर्वा लेकर यंत्र पर स्पर्श करते जाएँ.

ॐ आं ह्रीं क्रों यं रं लं वं शं षं सं हों ॐ क्षं सं हं सः ह्रीं ॐ आं ह्रीं क्रों अस्य सौभाग्य वास्तु कृत्या यन्त्र प्राणा इह प्राणाः !
ॐ आं ह्रीं क्रों यं रं लं वं शं षं सं हों ॐ क्षं सं हं सः ह्रीं ॐ आं ह्रीं क्रों अस्य सौभाग्य वास्तु कृत्या यन्त्र जीव इह स्थितः !

ॐ आं ह्रीं क्रों यं रं लं वं शं षं सं हों ॐ क्षं सं हं सः ह्रीं ॐ आं ह्रीं क्रों अस्य सौभाग्य वास्तु कृत्या यन्त्र सर्वेंद्रियाणी वांड-मनस्त्वकचक्षु:श्रोत्रजिह्वा-घ्राण-प्राणा इहागत्य इहैव सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा !

ॐ मनो जूतिर्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमन्तनोत्वरिष्टम यज्ञं समिमं दधातु ! विश्वे देवास इह मादयन्ताम ॐ प्रतिष्ठ !!

एष वै प्रतिष्ठा नाम यज्ञो यत्र तेन यज्ञेन यजन्ते ! सर्वमेव प्रतिष्ठितं भवति!!

अस्मिन सौभाग्य वास्तु कृत्या यंत्रस्य सुप्रतिष्ठता वरदा भवन्तु !

फिर गंध , पुष्पादि से पंचोपचार (स्नान , चन्दन , पुष्प , धूप- दीप ,नैवेद्य एवं आरती) पूजन करें और यंत्र के षोडश संस्कारों की सिद्धि के लिए १६बार निम्न मन्त्र का उच्चारण करते हुए अक्षत डालते जाएँ

नमस्ते वास्तु पुरुषाय भूशय्या भिरत प्रभो | मद्गृहं धन धान्यादि समृद्धं कुरु सर्वदा ||

ॐ वास्तोष्पते प्रति जानीद्यस्मान स्वावेशो अनमी वो भवान यत्वे महे प्रतितन्नो जुषस्व शन्नो भव द्विपदे शं चतुष्पदे स्वाहा |

ॐ वास्तोष्पते प्रतरणो न एधि गयस्फानो गोभि रश्वे भिरिदो अजरासस्ते सख्ये स्याम पितेव पुत्रान्प्रतिन्नो जुषस्य शन्नो भव द्विपदे शं चतुष्पदे स्वाहा |

फिर हाथ में कुमकुम मिश्रित अक्षत लेकर उस यन्त्र पर निम्न मंत्र बोल कर अर्पित कर दें-

अस्य यंत्रस्य षोडश संस्काराः सम्पद्यन्ताम

निम्न मंत्र का ८ बार उच्चारण करते हुए यन्त्र पर कुमकुम मिश्रित अक्षत अर्पित करें.

चतुषष्टि योगिनी स्थापन-

ॐ आवाहयाम्बहं देवी योगिनी परमेश्वररीम् । योगाभ्यासेन सन्तुष्ट पराध्यान समन्बिताः ||

चतुषष्ठी: योगिनीभ्यो नमः

अब हाथ जोड़कर हाथ में पुष्प लेकर सौभाग्यलक्ष्मी ध्यान करें और ध्यान मंत्र के उच्चारण के बाद उस पुष्प को यन्त्र पर अर्पित कर दें -

ॐ या सा पद्मासनस्था, विपुल-कटि-तटी, पद्म-दलायताक्षी।

गम्भीरावर्त-नाभिः, स्तन-भर-नमिता, शुभ्र-वस्त्रोत्तरीया।।

लक्ष्मी दिव्यैर्गजेन्द्रैः। मणि-गज-खचितैः, स्नापिता हेम-कुम्भैः।
नित्यं सा पद्म-हस्ता, मम वसतु गृहे, सर्व सौभाग्य,सर्व-मांगल्य-युक्ता।।

इसके बाद यन्त्र में सौभाग्य लक्ष्मी की प्रतिष्ठा करें. हाथ में अक्षत लेकर निम्न मंत्र उच्चारित करें-

“ॐ भूर्भुवः स्वः सौभाग्यलक्ष्मी, इहागच्छ इह तिष्ठ,
एतानि पाद्याद्याचमनीय-स्नानीयं, पुनराचमनीयम्।”

आसन :
आसनानार्थेपुष्पाणिसमर्पयामि।
आसन के लिए फूल चढाएं

पाद्य :
ॐअश्वपूर्वोरथमध्यांहस्तिनादप्रबोधिनीम्।
श्रियंदेवीमुपह्वयेश्रीर्मादेवींजुषाताम्।।
पादयो:पाद्यंसमर्पयामि।
जल चढाएं
यन्त्र के सामने खीर का भोग अर्पित करें-
हाथ में अक्षत लेकर मंत्रोच्चारण करें :-
ॐ त्रयम्बकं यजामहे सुगन्धिंत पुष्टि वर्द्धनम् । उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्म्मुक्षीय मामृताम् ।। (इस मंत्र का ११ बार उच्चारण करें)
फिर निम्न मन्त्रों का मात्र १ बार ही उच्चारण करना है और यन्त्र पर अक्षत डालते जाना है-
ॐ त्रयम्बकायै नमः
ॐ आद्ये लक्ष्म्यै नम:
ॐ विद्यालक्ष्म्यै नम:
ॐ सौभाग्य लक्ष्म्यै नम:

ॐ अमृत लक्ष्म्यै नम:
ॐ लक्ष्म्यै नम:
ॐ सत्य लक्ष्म्यै नम:
ॐ भोगलक्ष्म्यै नम:
ॐ योग लक्ष्म्यै नम:
ॐ वसुन्धरायै नमः
ॐ उदाराङ्गायै नमः
ॐ हरिण्यै नमः
ॐ हेममालिन्यै नमः
ॐ धनधान्य कर्यै नमः
ॐ सिद्धये नमः
ॐ स्त्रैण सौम्यायै नमः
ॐ शुभप्रदायै नमः
ॐ नृपवेश्म गतानन्दायै नमः
ॐ वरलक्ष्म्यै नमः
ॐ वसुप्रदायै नमः
ॐ शुभायै नमः
ॐ हिरण्यप्राकारायै नमः
ॐ समुद्र तनयायै नमः
ॐ जयायै नमः
ॐ मङ्गलायै नमः
ॐ देव्यै नमः
ॐ विष्णु वक्षःस्थल स्थितायै नमः
ॐ विष्णुपत्न्यै नमः
ॐ प्रसन्नाक्ष्यै नमः
ॐ नारायण समाश्रितायै नमः
ॐ दारिद्र्य ध्वंसिन्यै नमः

ॐ सर्वोपद्रव वारिण्यै नमः
ॐ नवदुर्गायै नमः
ॐ महाकाल्यै नमः
ॐ ब्रह्म विष्णु शिवात्मिकायै नमः
ॐ त्रिकाल ज्ञान सम्पन्नायै नमः
ॐ भुवनेश्वर्यै नमः
ॐ प्रजापतये नमः
ॐ हिरण्यरेतसे नमः
ॐ दुर्धर्षाय नमः
ॐ गिरीशाय नमः
ॐ गिरिशाय नमः
ॐ अनघाय नमः
ॐ भुजङ्ग भूषणाय नमः
ॐ भर्गाय नमः
ॐ गिरिधन्वने नमः
ॐ गिरिप्रियाय नमः
ॐ कृत्तिवाससे नमः
ॐ पुरारातये नमः
ॐ भगवते नमः
ॐ प्रमधाधिपाय नमः
ॐ मृत्युञ्जयाय नमः
ॐ सूक्ष्मतनवे नमः
ॐ जगद्व्यापिने नमः
ॐ जगद्गुरवे नमः
ॐ व्योमकेशाय नमः
ॐ महासेन जनकाय नमः
ॐ चारुविक्रमाय नमः

ॐ रुद्राय नमः
ॐ भूतपतये नमः
ॐ स्थाणवे नमः
ॐ अहिर्भुथ्न्याय नमः
ॐ दिगम्बराय नमः
ॐ अष्टमूर्तये नमः
ॐ अनेकात्मने नमः
ॐ स्वात्त्विकाय नमः
ॐ शुद्धविग्रहाय नमः
ॐ शाश्वताय नमः
ॐ खण्डपरशवे नमः
ॐ अजाय नमः
ॐ पाशविमोचकाय नमः
ॐ मृडाय नमः
ॐ पशुपतये नमः
ॐ देवाय नमः
ॐ महादेवाय नमः

तत्पश्चात तुलसी और काले हकीक की माला छोड़कर अन्य किसी भी माला से मूल मंत्र के पहले और बाद में (**ह्रीं HREEM**) मंत्र की ३-३ माला करें और २१ माला निम्न मूल मंत्र की करें-

ॐ नमो भगवती वास्तु देवतायै नमः ||

यदि हो सके तो इसके पहले गुरु मंत्र की ४ या १ माला करें.

अब अपना मंत्र सदगुरुदेव के श्रीचरणों में अर्पित कर दें और हाथ जोड़कर आद्य शक्ति से क्षमा याचना करें.

न मंत्रं नोयंत्रं तदपिच नजाने स्तुतिमहो
न चाह्वानं ध्यानं तदपिच नजाने स्तुतिकथाः ।
नजाने मुद्रास्ते तदपिच नजाने विलपनं
परं जाने मातस्त्व दनुसरणं क्लेशहरणं

विधेरज्ञानेन द्रविणविरहेणालसतया
विधेयाशक्यत्वात्तव चरणयोर्याच्युतिरभूत् ।
तदेतत् क्षंतव्यं जननि सकलोद्धारिणि शिवे
कुपुत्रो जायेत क्वचिदपि कुमाता न भवति

पृथिव्यां पुत्रास्ते जननि बहवः संति सरलाः
परं तेषां मध्ये विरलतरलोहं तव सुतः ।
मदीयो7यंत्यागः समुचितमिदं नो तव शिवे
कुपुत्रो जायेत् क्वचिदपि कुमाता न भवति

जगन्मातर्मातस्तव चरणसेवा न रचिता
न वा दत्तं देवि द्रविणमपि भूयस्तव मया ।
तथापित्वं स्नेहं मयि निरुपमं यत्प्रकुरुषे
कुपुत्रो जायेत क्वचिदप कुमाता न भवति

परित्यक्तादेवा विविध सेवाकुलतया
मया पंचाशीतेरधिकमपनीते तु वयसि
इदानींचेन्मातः तव यदि कृपा
नापि भविता निरालंबो लंबोदर जननि कं यामि शरणं

श्वपाको जल्पाको भवति मधुपाकोपमगिरा
निरातंको रंको विहरति चिरं कोटिकनकैः
तवापर्णे कर्णे विशति मनुवर्णे फलमिदं

जनः को जानीते जननि जपनीयं जपविधौ

चिताभस्म लेपो गरलमशनं दिक्पटधरो
जटाधारी कंठे भुजगपतहारी पशुपतिः
कपाली भूतेशो भजति जगदीशैकपदवीं
भवानि त्वत्पाणिग्रहणपरिपाटीफलमिदं

न मोक्षस्याकांक्षा भवविभव वांछापिचनमे
न विज्ञानापेक्षा शशिमुखि सुखेच्छापि न पुनः
अतस्त्वां सुयाचे जननि जननं यातु मम वै
मृडाणी रुद्राणी शिवशिव भवानीति जपतः

नाराधितासि विधिना विविधोपचारैः
किं रूक्षचिंतन परैर्नकृतं वचोभिः
श्यामे त्वमेव यदि किंचन मय्यनाधे
धत्से कृपामुचितमंब परं तवैव

आपत्सु मग्नः स्मरणं त्वदीयं
करोमि दुर्गे करुणार्णवेशि
नैतच्छदत्वं मम भावयेथाः
क्षुधातृषार्ता जननीं स्मरंति

जगदंब विचित्रमत्र किं
परिपूर्ण करुणास्ति चिन्मयि
अपराधपरंपरावृतं नहि माता
समुपेक्षते सुतं

मत्समः पातकी नास्ति
पापघ्नी त्वत्समा नहि
एवं ज्ञात्वा महादेवि

यथायोग्यं तथा कुरु

इसके बाद सदगुरुदेव की आरती संपन्न करें और महायंत्र को पूजन स्थल में ही स्थापित कर दें और परिवार के साथ प्रसाद ग्रहण करें.ये महत्वपूर्ण विधान व यन्त्र आपके जीवन को उन्नति से युक्त और बाधाओं से विहीन करे,यही मैं माँ भगवती और सदगुरुदेव के श्री चरणों में प्रार्थना करता हूँ.

प्रश्नों के उत्तर जानने की सरल विधि:

-

८	१	६
३	५	७
४	९	२

प्रायः आप समस्याओं में फँस जाते हैं अथवा सोचने लग जाते हैं की अमुक काम होगा या नहीं..??

उत्तर जानने की सरल एवं सुविधाजनक विधि आपको १५ के यन्त्र से दी जा रही है.

यह यन्त्र व्यापार बढ़ाने वाला और सुख सुविधा देने वाला है.

इसका काफी प्रयोग किया गया है और उत्तर में जो आया वही फल प्राप्त हुआ है.

कर्म करना हमारा धर्म है और फल देना इश्वर का धर्म है.

अतः यदि फल के प्रति चिंता है तो इस यन्त्र से चिंता दूर कर सकते हैं.

उपरोक्त बने यन्त्र पर, अपने प्रश्न को सोचते हुए अपने आराध्य इष्ट का ध्यान करके ऊँगली या सलाई रखें, जो नंबर हो उससे उत्तर प्राप्त कर लें..

उत्तर निम्न है..

१- प्रश्न उत्तम है, कार्य की सफलता पूर्ण लाभ देगी, विजय मिलेगी, यश प्राप्त होगा, शत्रु पराजित होंगे.

२- आपका प्रश्न अशुभ है, सफलता नहीं मिलेगी, विवाह संभव है.

३- प्रयास करने और भटकने के बाद यदि हताश नहीं हुए तो कार्य हो सकता है, किन्तु प्रतिपल सावधान रहे.

४- यथाशीघ्र कार्य पूर्ण होने का योग है, सफलता मिलेगी, हो सकता है कोई अधिकारी या मित्र सहायता भी करे.

५- उत्तम है, धन मिलेगा, आर्थिक योजना सफल होगी, मन की चिंता दूर होगी, प्रियजनों से मिलन होगा.

६- उत्तर अशुभ है, कार्य में संदेह है, कोई अपना ही आपको छल सकता है, धोखा दे सकता है.

७- फल मिश्रित होगा, कुछ स्तर तक काम बनेगा, परन्तु पूर्ण होने में विलम्ब हो सकता है, शत्रु से सावधान रहे.

८- शत्रुओं से सावधान रहे, प्रश्न अनुचित है, कार्य सिद्धि में बाधा होगी, धन का दुरुपयोग होगा, विपत्ती आ सकती है.

९- कार्य की सफलता में संदेह न करें, प्रश्न उत्तम है, मदद करने वाले स्वयं आगे आयेंगे, आपका मार्ग उचित है. मन में बनी भावी योजनाएं भविष्य में फलित होगी...

****NPRU****

Posted by Nikhil at 6:00 AM No comments: Links to this post
Labels: TOTKE

MONDAY, MARCH 4, 2013

KUCHH AUR TOTKE AAPKE LIYE

1) While going outside home for any important work or going outside city for business purpose, take some Kidney beans (moong) in hands. These beans should be complete, they should not be broken. Stop near the gate of your house and while taking these beans in hand, recite the below mantra and blow on them.

OM SHREEM HREEM SARV VIGHNVINAASHAY SARV KARY SIDDHIM NAMAH

In this manner, recite this mantra 7 times and blow on them. After coming out of house, sadhak should throw those beans and then start the journey. By doing this, all obstacles coming in the way of sadhak are eradicated and work-related obstacles are eradicated.

२) Sadhak should get one feather of crow. Sadhak should write name of enemy on that feather with sindoor (vermillion) on Saturday and recite below mantra 108 times. There is no need of rosary for chanting. Sadhak should facing south direction. There are no rules for dress and aasan.

OM KREENG SHATRU UCCHAATAYUCCHAATAY PHAT

After it, sadhak should burn that feather in cremation ground or at boundary of cremation ground and take bath after coming to home. In this manner, sadhak's enemy gets paralyzed and does not harm him in future.

३) On Sunday, sadhak should take bath and wear white dress. After it, at the time of sunrise sadhak should chant**HREEM**108 times while looking at sun. There is no need of any rosary to be used by sadhak. If sadhak wants, he can use crystal or rudraksh rosary. Offer divine offering to sun. After it, sadhak should apply Tilak (sacred mark) on his forehead with white sandal while chanting beej mantra "HREEM". Sadhak can continue this procedure for future Sundays too. It is an amazing procedure as a result of which there is increase in respect and reputation of sadhak. Sadhak should keep one thing in mind that it is necessary to chant mantra while applying mark on forehead and it has to be applied in front of sun only.

४) There are various types of Totke known among siddhs related to circumambulation of Peepal tree. Sadhak should look for a peepal tree which is located near the river or at cremation ground boundary. On Sunday, sadhak should ignite one lamp near the tree at the time of sunset. Offer vermillion, turmeric and rice to tree. Offer Kheer as Bhog and take 11 circumambulations. These circumambulations should be taken in clockwise direction i.e. from left to right. After it, sadhak should pray for resolution of his troubles and go away. Sadhak should not look back. It is best to do this procedure at any uninhabited place. This procedure should be done only at the time of sunset. In this manner, sadhak's troubles get resolved. If he is facing obstacles in any particular work or if his work is struck somewhere, sadhak gets solution. Sadhak can do this prayog more than once too.

५) On Tuesday, sadhak should take at least half meter of red cloth and keep wheat in it. Sadhak can keep as much wheat as he can. Along with it, sadhak should keep some money and make a bundle of it. Sadhak should take that bundle to Hanuman temple after sunset and touch the bundle with idol. After it sadhak should offer that bundle to priest or any need person as Dakshina. In this manner, sadhak

gets relief from planetary obstacles. If sadhak is facing adversities in life due to adverse effect of planetary obstacles then sadhak gets relief.

==

१) किसी महत्वपूर्ण कार्य के लिए घर से बहार जाते वक्त या व्यापार हेतु शहर से बहार जाना पड़े उस वक्त घर से बहार जाते समय अपने हाथ में मुंग के कुछ दाने लें, यह दाने साबुत होने चाहिए टुटा हुआ दाना न लें. दरवाज़े के पास रुक कर उन दानो को हाथ में ले कर साधक निम्न मन्त्र को बोले और फूंक मारे.

ॐ श्रीं ह्रीं सर्वविघ्न विनाशाय सर्व कार्य सिद्धिं नमः

(OM SHREEM HREEM SARV VIGHN VINAASHAY SARV KARY SIDDHIM NAMAH)

इस प्रकार ७ बार मन्त्र बोले और फूंक मारे. इसके बाद साधक बहार निकले तथा उन मुंग के दानो को घर के बहार फेंक दें. और यात्रा का प्रारम्भ करे. इस प्रकार करने से, साधक के रस्ते में आने वाले सभी विघ्न समाप्त होते है तथा कार्य में होने वाली बाधा का निराकरण प्राप्त होता है.

२) साधक को कौए का एक पंख प्राप्त करना चाहिए. फिर साधक शनिवार की रात्री में उस पंख पर सिन्दूर से शत्रु का नाम लिखे तथा निम्न मन्त्र का १०८ बार पाठ करे. इसके लिए कोई भी माला की ज़रूरत नहीं है. साधक का मुख दक्षिण दिशा की तरफ होना चाहिए, वस्त्र आसन आदि का विधान नहीं है.

ॐ क्रीं शत्रु उच्चाटय उच्चाटय फट्

(OM KREENG SHATRU UCCHAATAY UCCHAATAY PHAT)

इसके बाद साधक उस पंख को ले जा कर स्मशान में जला दे. या स्मशान के किनारे जला दे तथा घर आ कर स्नान कर ले. इस प्रकार करने से साधक के शत्रु का स्तम्भन होता है तथा शत्रु भविष्य में उसे परेशान नहीं करता.

३) रविवार के दिन साधक स्नान आदि से निवृत हो कर साधक सफ़ेद वस्त्र को धारण करे. इसके बाद साधक सूर्योदय के समय सूर्य के सामने देखते हुवे बीज मन्त्र **'ह्रीं' (HREEM)** का १०८ बार जाप करे इसके लिए साधक को कोई भी माला की आवश्यकता नहीं है अगर साधक चाहे तो स्फटिक या रुद्राक्ष की माला का प्रयोग कर सकता है. सूर्य को अर्ध्य प्रदान करे. इसके बाद साधक बीज मन्त्र 'ह्रीं' का जाप करते हुवे ही सफ़ेद रंग के चन्दन से अपने मस्तक पर तिलक करे. इस प्रकार साधक यह क्रिया एक या कई रविवारों तक कर सकता है. यह अद्भुत प्रयोग है जिससे साधक के मान सन्मान में वृद्धि होती है. साधक को ध्यान रखना है की तिलक ऐसे ही नहीं लगाना है तिलक लगाते समय बीज मंत्र 'ह्रीं' का जाप होना इस प्रयोग में आवश्यक है तथा तिलक सूर्य देव के सामने ही लगाना है.

४) सिद्धो के मध्य पीपल की प्रदक्षिणा से सबंधित कई प्रकार के टोटके प्रचलित है. साधक को पीपल के ऐसे पेड को देखना चाहिए जो नदी के किनारे हो या स्मशान के किनारे हो. रविवार को सूर्यास्त के समय

साधक पेड के पास एक दीपक प्रज्वलित करे. पेड पर कुमकुम हल्दी तथा अक्षत समर्पित करे, भोग के लिए खीर रखे. तथा ११ प्रदक्षिणा करे. यह प्रदक्षिणा घडी की दिशा में अर्थात बाएँ से दाएँ तरफ होनी चाहिए . इसके बाद साधक अपने कष्टों के निवारण के लिए प्रार्थना करे तथा चला जाए. पीछे मुड़ कर ना देखे. सामान्यतः निर्जन स्थान में यह प्रयोग करना सर्वोत्तम है, यह प्रयोग मात्र सूर्यास्त के समय ही होना चाहिए. इस प्रकार करने से साधक के कष्टों का निवारण होता है, अगर कोई विशेष कार्य आदि में बार बार बाधा आ जाती है या कोई काम रुक गया है तब साधक को समाधान की प्राप्ति होती है. साधक यह प्रयोग एक से ज्यादाबार भी कर सकता है.

५) मंगलवार के दिन साधक कम से कम आधामीटर का एक लाल रंग का कपडा ले, उसी कपडे में साधक गेहूं रखे. साधक जितना चाहे उतना गेहूं रख सकता है, साथ ही साथ उसमे कुछ पैसे भी रख दे तथा पोटली बना ले. उस पोटली को सूर्यास्त के बाद किसी हनुमान मंदिर पे ले जाएँ, तथा मूर्ति को स्पर्श कराएं. उस पोटली को फिर ब्राह्मण को या किसी ज़रूरत मंद व्यक्ति को दक्षिणा रूप में अर्पित करे. इस प्रकार करने से साधक को ग्रह सबंधित पीड़ा से राहत मिलती है. अगर ग्रह दोष के विपरीत प्रभाव साधक के जीवन पर पड़ रहे है तो साधक को राहत मिलती है.

SHAMSHAANVAASINI SADHNA

यह अनंत ब्रह्माण्ड का एक अत्यंत ही सूक्ष्म भाग यह पृथ्वी है, और इस पृथ्वी पर हर एक व्यक्ति का स्वयं का अस्तित्व भी अत्यधिक सूक्ष्म से सूक्ष्मतम ही कहा जा सकता है, फिर भी हम अपने ज्ञान को अपनी सीमा बना कर उससे आगे न सोचने के लिए कटिबद्ध हो जाते है. आज के युग में भले ही मनुष्य के अलावा इतरयोनी पर विविध प्रकार के प्रश्न कई

कई लोग लगाते है लेकिन ऐसे अनगिनत सवाल है जिसका उत्तर अभी तक विज्ञान के द्वारा प्राप्त नहीं हुआ है. क्यों की आधुनिक विज्ञान की विचारधारा की एक सीमा है जिसके आगे सोचना संभव नहीं है. लेकिन आज के युग में भी तथा पुरातन काल में हज़ारो प्रकार के उदहारण देखने को मिलते है जो की इतरयोनी से सबंधित होते है.
यूँ कुछ भूत प्रेत या दूसरी इतरयोनी के जीव अत्यधिक संवेदनशील तथा शालीन और मर्यादापूर्ण भी हो सकते है लेकिन ज्यादातर इसके विपरीत ही देखा जाता है. समजने के लिए इसे कुछ इस प्रकार समजा जा सकता है की वस्तुतः मनुष्य के अपने पुरे जीवन काल में वासनात्मक रूप से अत्यधिक सक्रीय रहा है, तो मृत्यु परंत उसको सूक्ष्म शरीर की प्राप्ति न हो कर विविध वासना शरीर की प्राप्ति होती है. वासना का अर्थ यहाँ पर मात्र काम से नहीं है, मनुष्य के अंदर की सभी नकारात्मक और अनैतिक भावना जिसके माध्यम से किसी का भी अहित करने की विचार मस्तिष्क में जन्म ले उसे भी वासना ही कहा जा सकता है. यही विविध शरीर से भुत, प्रेत, ब्रह्मराक्षस आदि का अस्तित्व है. मृत्यु परंत भी इनकी मानसिक दशा-अवदशा से मुक्ति न होने के कारण यह अपने स्वभावगत कर्म ही करते है तथा दूसरों को हानि पहोचाने के कार्य में विशेष तृप्ति होती है और इसी कारण कई बार कई भूत प्रेत इत्यादि कोई जगह या किसी व्यक्ति के मानस पर अपना प्रभाव डालना शुरू कर देते है. व्यक्ति के आत्मिक बल की या शक्ति की कमी होने पर कई व्यक्तियो के शरीर में भी प्रवेश कर अपनी पैशाचिक इछाओ की पूर्ति कई

इतरयोनी करती है ऐसे कई किस्से सामने आते रहते है. लेकिन इस प्रकार की पीड़ा से मुक्ति के लिए व्यक्ति या साधक किस प्रकार कार्य कर सकता है.
प्रस्तुत प्रयोग भगवती महाकाली शमशानवासिनी के सबंध में है. इस प्रयोग के माध्यम से साधक एक और स्वयं तथा अपने परिवार की सुरक्षा कर सकता है, उसके साथ व्यक्ति अपने जीवन में एसी बाधाओ से ग्रस्त पीडितो की मदद भी कर सकता है. साधक के अंदर यह तीव्रता की प्राप्ति होती है जिसके कारण व्यक्ति इतरयोनी की बाधा को दूर कर सकता है तथा भगवती शमशानवासिनी की कृपा फल से कई लोगो की समस्या को दूर कर सकता है. यह प्रयोग तीव्र प्रयोग है लेकिन साधक का अहित होने की कोई चिंता नहीं है. अतः कोई भी साधक निश्चिंत हो कर यह प्रयोग सम्प्पन कर सकता है. इस प्रकार साधक एक प्रयोग कर के सेकडो लोगो की मदद कर सकता है. हाँ, साधक को अपनी शक्ति का दुरुपयोग नहीं करना चाहिए. हमेशा लोक हित तथा लोक कल्याण के कार्य में रत साधक को देवी किसी भी प्रकार की असुविधा नहीं होने देती.
साधक यह प्रयोग कृष्ण पक्ष की अष्टमी या किसी भी रविवार को शुरू करे. समय रात्रि में १० बजे के बाद का रहे.
साधक के लिए यह उत्तम है की वह शमशान में जा कर यह प्रयोग करे लेकिन अगर यह संभव न हो तो साधक इसे घर पर भी सम्प्पन कर सकता है. अगर शमशान में यह प्रयोग करना हो तो साधक को पूर्ण रक्षा

विधान आदि प्रक्रियाओ की पूर्ण समज ले कर ही यह प्रयोग शमशान में करना चाहिए.

साधक रात्रि में स्नान से निवृत हो कर, लाल वस्त्र धारण कर लाल आसन पर बैठ जाए. साधक का मुख उत्तर की तरफ ही होना चाहिए. इसके बाद साधक सदगुरुदेव, गणपति, भैरव पूजन सम्प्पन करे, तथा महाकाली का यन्त्र या विग्रह अपने सामने रखे. और पूजन करे. पूजन में जो दीपक रहे वह चार मुख वाला हो. यह दीपक आटे से भी बनाया जा सकता है.

साधक न्यास आदि प्रक्रिया को कर देवी शमशानकाली का ध्यान करे. तथा उसके बाद साधक मूल मन्त्र का जाप करे.

करन्यास

क्रां अङ्गुष्ठाभ्यां नमः
क्रीं तर्जनीभ्यां नमः
क्रूं मध्यमाभ्यां नमः
क्रैं अनामिकाभ्यां नमः
क्रौं कनिष्टकाभ्यां नमः
क्रः करतल करपृष्ठाभ्यां नमः

अङ्गन्यास

क्रां हृदयाय नमः
क्रीं शिरसे स्वाहा

क्रूं शिखायै वषट्

क्रैं कवचाय हूम

क्रौं नेत्रत्रयाय वौषट्

क्रः अस्त्राय फट्

साधक को निम्न मन्त्र की ५१ माला मंत्र जाप करना है. साधक २१ माला के बाद थोड़ी देर विश्राम ले सकता है. साधक को रुद्राक्ष माला का प्रयोग करना चाहिए. यह क्रम साधक को ३ दिन करना चाहिए. ३ दिन पूर्ण होने पर साधक माला को शमशान में फेंक दे.

मन्त्र :- ॐ क्रीं शमशानवासिने भूतादिपलायन कुरु कुरु नमः

(OM KREENG SHAMSHAANVAASINE BHUTAADIPALAAYAN KURU KURU NAMAH)

इसके बाद साधक को जब भी मन्त्र का प्रयोग करना हो तो भुत प्रेत ग्रस्त किसी भी जगह में या व्यक्ति के पास जा कर उपरोक्त मंत्र को ७ बार मन ही मन उच्चारण कर शमशान कालिका को प्रणाम कर, मन्त्र का मानसिक जाप करते हुवे उस जगह या सबंधित व्यक्ति पर पानी छिडके तो बाधा दूर होती है.

TEEVRA TRISHAKTI JAAGRAN SADHNA

क्रिया ज्ञान इच्छा स शक्तिः

इस ब्रह्माण्ड में आदि शक्ति के अनंत रूप अपने अपने सुनिश्चित कार्यों को गति प्रदान करने के लिए तथा ब्रह्माण्ड के योग्य संचालन के लिए अपने नियत क्रम के अनुसार वेगवान है. यही ब्रह्मांडीय शक्ति के मूल तिन

द्रश्यमान स्वरुप को हम महासरस्वती, महालक्ष्मी तथा महाकाली के रूप में देखते है. तांत्रिक द्रष्टि से यही तिन शक्तियां सर्जन, पालन तथा संहार क्रम की मूल शक्तियां है जो की त्रिदेव की सर्वकार्य क्षमता का आधार है. यही त्रिदेवी ब्रह्माण्ड की सभी क्रियाओ में सूक्ष्म या स्थूल रूप से अपना कार्य करती ही रहती है. तथा यही शक्ति मनुष्य के अंदर तथा बाह्य दोनों रूप में विद्यमान है. मनुष्य के जीवन में होने वाली सभी घटनाओ का मुख्य कारण इन्ही त्रिशक्ति के सूक्ष्म रूप है

ज्ञानशक्ति

इच्छाशक्ति

क्रियाशक्ति

ज्ञान, इच्छा तथा क्रिया के माध्यम से ही हमारा पूर्ण अस्तित्व बनता है, चाहे वह हमारे रोजिंदा जीवन की शुरूआत से ले कर अंत हो या फिर हमारे सूक्ष्म से सूक्ष्म या वृहद से वृहद क्रियाकलाप. हमारे जीवन के सभी क्षण इन्ही त्रिशक्ति के अनुरूप गतिशील रहते है.
वस्तुतः जेसा की शाश्त्रो में कहा गया है मनुष्य शरीर ब्रह्माण्ड की एक अत्यंत ही अद्भुत रचना है. लेकिन मनुष्य को अपनी शक्तियों का ज्ञान नहीं है, उसकी अनंत क्षमताएं सुप्त रूप में उसके भीतर ही विद्यमान होती है. इसी प्रकार यह त्रिशक्ति का नियंत्रण वस्तुतः हमारे हाथ में नहीं है और हमें इसका कोई ज्ञान भी नहीं होता है. लेकिन अगर हम सोच के देखे तो हमारा कोई भी सूक्ष्म से सूक्ष्म कार्य भी इन्ही तीनों शक्तियों में से कोई एक शक्ति के माध्यम से ही संपादित होता है. योगीजन इन्ही शक्तियों के विविध रूप को चेतन कर उनकी सहायता प्राप्त करते हुवे ब्रह्माण्ड के मूल रहस्यों को जानने का प्रयत्न करते रहते है.
न सिर्फ आध्यात्मिक जीवन में वरन हमारे भौतिक जीवन के लिए भी इन शक्तियों का हमारी तरफ अनुकूल होना कितना आवश्यक है यह सामन्य रूप से कोई भी व्यक्ति समज ही सकता है.
ज्ञान शक्ति एक तरफ आपको जीवन में किस प्रकार से आगे बढ़ कर उन्नति कर सकते है यह पक्ष की और विविध अनुकूलता दे सकती है
वहीँ दूसरी और जीवन में प्राप्त ज्ञान का योग्य संचार कर विविध अनुकूलता की प्राप्ति केसे करनी है तथा उनका उपभोग केसे करना है यह इच्छाशक्ति के माध्यम से समजा जा सकता है
क्रिया शक्ति हमें विविध पक्ष में गति देती है तथा किस प्रकार प्रस्तुत उपभोग को अपनी महत्तम सीमा तक हमें अनुकूलता तथा सुख प्रदान कर सकती है यह तथ्य समजा देती है.
प्रस्तुत साधना, इन्ही त्रिशक्ति को चेतन कर देती है जिससे साधक अपने जीवन के विविध पक्षों में स्वतः ही अनुकूलता प्राप्त करने लगता है, न ही सिर्फ भौतिक पक्ष में बल्कि आध्यात्मिक पक्ष में भी.
साधक के नूतन ज्ञान को प्राप्त करने तथा उसे समजने में अनुकूलता प्राप्त होने लगती है. किसी भी विषय को समजने में पहले से ज्यादा साधक अनुकूलता अनुभव करने लगता है. अपने अंदर की विविध क्षमता तथा

कलाओं के बारे में साधक को ज्ञान की प्राप्ति होती है, उसके लिए क्या योग्य और क्या अयोग्य हो सकता है इससे सबंध में भी साधक की समज बढ़ाने लगती है.
इच्छाशक्ति की वृद्धि के साथ साधक विविध प्रकार के उन्नति के सुअवसर प्राप्त होने लगते है तथा साधक को अपने ज्ञान का उपयोग किस प्रकार और केसे करना है यह समज में आने लगता है. उदहारण के लिए किसी व्यक्ति के पास व्यापार करने का ज्ञान है लेकिन उसके पास व्यापर करने की कोई क्षमता नहीं है या उस ज्ञान का व्यावहारिक प्रयोग हो नहीं पा रहा है तो इच्छाशक्ति के माध्यम से यह संभव हो जाता है.
क्रियाशक्ति के माध्यम से साधक अपनी इच्छाशक्ति में गति प्राप्त करता है. अर्थात किसी भी कार्य का ज्ञान है, उसको करने के लिए मौका भी है लेकिन अगर वह क्रिया ही न हो जो की परिणाम की प्राप्ति करवा सकती है तो सब बेकार हो जाता है. क्रिया शक्ति वाही परिणाम तक साधक को ले जाती है तथा एक स्थिरता प्रदान करती है.
त्रिशक्ति से सबंधित यह तीव्र प्रयोग निश्चय ही एक गुढ़ प्रक्रिया है. वास्तव में अत्यंत ही कम समय में साधक की तिन शक्तियां चैतन्य हो कर साधक के जीवन को अनुकूल बनाने की और प्रयासमय हो जाती है. इस प्रकार की साधना की अनिवार्यता को शब्दों के माध्यम से आँका नहीं जा सकता है वरन इसे तो मात्र अनुभव ही किया जा सकता है. साधना प्रयोग का विधान कुछ इस प्रकार है.
इस साधना को साधक किसी भी शुभदिन से शुरू कर सकता है, समय रात्रि में ९ बजे के बाद का रहे.
साधक सर्व प्रथम स्नान आदि से निवृत हो कर लाल वस्त्र को धारण कर लाल आसन पर बैठ जाए.
साधक का मुख उत्तर दिशा की और रहे.
अपने सामने बाजोट पर या किसी लकड़ी के पट्टे पर साधक को लाल वस्त्र बिछा कर उस पर एक भोजपत्र या सफ़ेद कागज़ पे एक अधः त्रिकोण कुमकुम से बनाना है. तथा उसके तीनों कोण में बीज को लिखना है. इस यंत्र निर्माण के लिए साधक चांदी की सलाका का प्रयोग करे तो उत्तम है. अगर यह संभव न हो तो साधक को अनार की कलम का प्रयोग करना चाहिए. साधक उस यंत्र का सामान्य पूजन करे. तथा दीपक प्रज्वलित करे. दीपक किसी भी तेल का हो सकता है.
साधक सर्व प्रथम गुरुपूजन गणेशपूजन तथा भैरवपूजन कर गुरु मन्त्र का जाप करे. उसके बाद साधक निम्न मन्त्र की २१ माला मंत्र जाप करे.
इस मंत्र जाप के लिए साधक मूंगा माला का प्रयोग करे.

ॐ ह्रीं श्रीं क्रीं फट्

(om hreeng shreeng kreeng phat)

साधक अगले दो दिन यह क्रम जारी रखे. अर्थात कुल ३ दिन तक यह प्रयोग करना है. प्रयोग पूर्ण होने के बाद साधक उस यन्त्र को पूजा स्थान में ही स्थापित कर दे. माला को प्रवाहित नहीं किया जाता है. साधक ऊस माला का प्रयोग वापस इस मंत्र की साधना के लिए कर सकता है तथा निर्मित किये गए यन्त्र के सामने

ही मंत्रजाप को किया जा सकता है. साधक को यथा संभव छोटी बालिकाओ को भोजन कराना चाहिए तथा वस्त्र दक्षिणा आदि दे कर संतुष्ट करना चाहिए.

SHATKARM TANTRA SEMINAAR

तथैवैते महायोगाः प्रयोज्यःक्षमकर्मणे सूर्य प्रपातयेद्धुमौ नेदंमिथ्या भविष्यति ||

उपरोक्त कथन श्री आदिनाथ भगवान शिव का है जिन्होंने सर्व तंत्र का उपदेश दिया है. श्री आदि शिव का यह उपदेश महानतम तंत्र ज्ञाता लंकापति रावण के लिए था जिसमे उन्होंने षटकर्म विषय के मंत्रो के सन्दर्भ में कहा है की इन मंत्रो के माध्यम से अर्थात षट्कर्म की मन्त्र क्रियाओ के माध्यम से दुस्कर कार्य भी शीघ्र एवं सहजता से हो जाते है. इन क्रिया मंत्रो को सामान्य समझने की भूल नहीं करनी चाहिए क्यों की यह सूर्य को पृथ्वी के ऊपर भी गिराने का सामर्थ्य रखते है. यह मेरा (शिव) वाक्य है जो की कभी मिथ्या हो ही नहीं सकता.

मित्रों

हम जिस युग में जिस समय में रह रहे है यह हमारा सौभाग्य है की हम एक एसी पीढ़ी में रह रहे है जिन्होंने अपने आस पास एक परिवर्तन की आस एक ललक है, परिश्रम की भावना है तथा बदलाव लाने के लिए कडा कदम उठाने की चाह है और यह परिवर्तन भले ही व्यक्तिगत हो लेकिन एक संकीर्णता से हम अपने आपको अलग कर रहे है, हम नए जीवन को अपनाने के लिए सदैव तैयार हो रहे है भौतिक एवं आध्यात्मिक दोनों ही पक्षों को पूर्णता से आत्मसार करने की आशा आज महत्तम व्यक्तियो के अंदर है. हमारा इससे भी बड़ा यह सौभाग्य रहा है की श्री सदगुरुदेव ने हमारे जीवन को तंत्र के माध्यम से अभिसिंचन किया, हमें जीवन को तंत्र के माध्यम से निखार कर एक नये ही जीवन सौंदर्य को देखने की द्रष्टि दी. इसके अलावा हमें महानतम तंत्र विद्या का मुक्त ह्रदय से ज्ञान दिया, न सिर्फ समझाया परन्तु उसे क्रियात्मक रूप से साधको को करवाके उनको सफलता तक हाथ पकड़ के खड़ा किया. इस कोशिश में उन्होंने न जाने हर क्षण कितना कष्ट एवं वेदना का सामना किया होगा, कितने ही न जाने घात प्रतिघात को सहन किया, सब पीड़ा को अंदर भरे हुवे वे सदैव मुस्कुराते रहे क्यों की उनका लक्ष्य था की उनके शिष्य इस महान विद्या को जाने सामने क्रियात्मक रूप से करे तथा समाज के साथ जोड़े, उन्होंने अपना हर क्षण इस एक कार्य में ही लगाया जिससे की भारतीय प्राच्य विद्याओ को वो जनसामान्य के साथ जोड़ सके, इन महान विद्याओ का ग्रास न हो जाए, काल के हाथो ये लुप्तता तक न पहोच जाए, वे अपने अंतिम क्षण तक यही स्वप्न अपनी आँखों में ले कर चले अंततः उन्होंने अपनी भौतिक देह का त्याग किया लेकिन क्या गुरु तत्व कभी मिट सकता है? नहीं. उनके सभी शिष्य एवं साधकगण उनकी सतत उपस्थिति के साक्षी रहे है क्यों की आज भी शिष्य कल्याण से ज्यादा उनके लिए कुछ महत्त्व नहीं रखता.

एक शिष्य के नाते हमारा कर्तव्य क्या है क्या नहीं यह व्यक्तिगत बात हो जाती है और सब की अपनी अपनी अलग धारणा है लेकिन एक बात निश्चित है, हमारा रास्ता ज्ञानपथ है और हर शिष्य का कर्तव्य होता है की वह ज्यादा से ज्यादा गुरु तत्व ज्ञान से परिपूर्ण हो कर गुरु के निकट हो जाए, और यह प्रक्रिया सतत रूप से चलती ही रहे. लेकिन क्या ऐसा होता है? हम अपने आपको गर्व से शिष्य कह ज़रूर सकते है लेकिन तब जब हम ज्ञान पथ पर बढे, **सदगुरुदेव ने जिस ज्ञान को असह्य कष्टों एवं वेदना को सह कर प्राप्त किया था उन्होंने उसी ज्ञान को मुक्त ह्रदय से अपने सभी शिष्यों के मध्य बांटा ताकि तंत्र को समाज के साथ जोड़ा जाए, साधको का निर्माण हो सके तथा तंत्र प्रणाली का जो भयावह स्वरुप है वह दूर हो सके लेकिन बदले में उनको शिष्यता के नाम पर धोका, छल, पीड़ा की ही प्राप्ति हुई लेकिन वे आजीवन सिर्फ इसी कार्य में लगे रहे सिर्फ इस एक आशा के साथ की कुछ शिष्य भी अगर मुझे मिल जाए तो भी मैं अपना कार्य सफल मानूंगा.**

हम सबमें से ज्यादातर लोग परिचित है की इस विद्या की गोपनीयता कितनी अधिक है तथा इस विषय को समजने के लिए साधको को कितने ही न पापड़ बेलने पड़ते है, साधू संन्यासियो की सालो तक सेवा चाकरी करने पर कभी कोई सिद्ध प्रसन्न मुद्रा में वे कुछ बता दे तो बता दे वर्ना वो भी नहीं. लेकिन सदगुरुदेव ने इन सारी चीजों को एक तरफ कर अपने शिष्यों का हाथ पकड़ पकड़ का समजाने की चेष्ठा की, हम सायद तब नहीं समज पाए की उनकी द्रष्टि में हम और हमारा जीवन तथा हमारा ज्ञानवान होना उनके लिए कितना महत्वपूर्ण है, शायद उनकी खुशी मात्र शिष्यों की प्रगति, शिष्यों की खुशी में ही थी. परन्तु उस ज्ञान को आत्मसार हमने कितना किया है और कितना नहीं यह हम सभी स्वयं का आकलन कर सकते है. प्रिय स्नेहीजनो एक सिद्ध का कथन मुझे याद है की पूरा जीवन दे कर भी अगर तंत्र विद्या से सबंधित कुछ ज्ञान की प्राप्ति होती है तो सौदा घाटे का नहीं है क्यों की वह ज्ञान इस लोक और परलोक दोनों में ही पूर्णता का बोध करा देगा.

कभी हम सदगुरुदेव एवं कई सिद्धो के इतने कष्ट, वेदना एवं पीड़ा का हमने मूल्यांकन करे जो उन्होंने सहन किया है ज्ञान प्राप्ति के लिए तथा उसी ज्ञान को समाज के साथ जोड़ने के लिए तब हमें शायद इस ज्ञान की कीमत समाजमे आती है. सदगुरुदेव के कुछ शब्द इस प्रकार से थे जब वो तंत्र के सबंध में कई साल पहले समजा रहे थे की हम जीवन में आए क्षण को तोलने में लग जाते है कभी पैसो से, कभी समय से, की पांच रूपया २ दिन नहीं जाऊंगा तो दो रुपये का नुसकान, बीवी का कहेगी, बच्चो का क्या करू, साधना करू? नही नहीं छोडो जाने दो... अगर इसी प्रकार तंत्र साधना होती तो गली गली में तांत्रिक होते. तंत्र नाम है हिम्मत का साहस का एक दृढ निश्चय का की करना है तो करना ही है भले ही फिर कुछ हो जाए| क्या हो जाएगा अगर एक बार जीवन में खुद के लिए कदम बढ़ा दिया तो. क्या हो जाएगा अगर थोडा समय खुद के लिए खर्च कर दिया अपने जीवन का, इतना कर दिया है तो थोडा और सही लेकिन गिडगिडाकर नहीं, साहस के साथ; क्षमता के साथ; पूर्णता के साथ की मुझे ये करना है बाकी मौका चला जाता है तो फिर कहा नहीं जा सकता की प्रकृति में वो संयोग वापस बनेगा या नहीं.

मित्रों, सदगुरुदेव के शब्द हमें आज तक साहस देते आये है और आगे भी देते रहेगे. हमने उन्ही के द्वारा प्रदत ज्ञान को वापस हमारे भाई बहेनो तक पहुचाने के लिए एवं उनके ही स्वप्न को एक सार्थक स्वरुप देने के लिए छोटे छोटे कदमो से कई साल पूर्व एक शुरुआत की थी और आप सब के सहयोग से आज हम उस स्वप्न की और पूर्ण रूप से गतिशील है. इसी क्रम में हमने वर्कशॉप तथा सेमीनार का आयोजन किया की इस ज्ञान का लोप न हो जाए तथा व्यवहारिक रूप से रहस्यों का पता चले उनके क्रियात्मक पक्ष के बारे में जान सके क्यों की जिसको तंत्र क्षेत्र में आगे बढ़ना है तो सदगुरुदेव प्रदत ज्ञान का सहारा प्राप्त करे, उस ज्ञान पर सभी का समान्तर रूप से हक है. इसी क्रम में इस बार का सेमीनार '**षट्कर्म एवं रस विज्ञान गूढ़ रहस्य**' पर आधारित है.

षटकर्म को हमने टोने टोटके मात्र समज लिया हो लेकिन वस्तुतः यह सत्य नहीं है. सदगुरुदेव कहते थे की मारण,वशीकरण या षट्कर्म का ज्ञान जिसको है वो व्यक्ति इस पृथ्वी पर अजेय है, उसको कोई हरा नहीं सकता. कितना अद्भुत सत्य है क्यों की यह त्रिगुण के ३ पुरुष एवं ३ स्त्री स्वरुप को ही अपने अंदर उतार देने की कला है.

शांति कर्म से व्यक्ति रोग शोक महामारी जीवन के कष्ट एवं अभावो को दूर कर सकता है अपने जीवन में भौतिक एवं आध्यात्मिक रूप से पूर्ण शांति को प्राप्त कर सकता है, जीवन के सभी दोष को समाप्त कर सकता है.

वशीकरण विद्या के सन्दर्भ में तो सब को ज्ञात है , इस विद्या से असंभव से असंभव कार्य किये जा सकते है किसी के विचारों पर अपना प्रभुत्व बना कर उसे बाध्य कर देना वो हर बात मानने के लिए जो हम चाहते है, ठीक वैसे ही जैसे हम चाहते है. भले ही वह एक व्यक्ति हो या समूह हो. इस विद्या के १२ भेद सदगुरुदेव ने बाताये है जो की अन्यतम है.

स्तम्भन – इस विद्या के बारे में बहुत कम जानकारी मिलती है, स्तमभन अर्थात रोक देना, चाहे वह व्यक्ति को रोकना हो, शत्रु को, किसी को बुद्धि को, किसी की प्रगति को, किसी की दुर्गति को, सभी प्रकार के स्तम्भन इस स्तम्भन विद्या के अंतर्गत आते है.

विद्वेषण – दो व्यक्ति या तत्वों के बीच के आकर्षण को खत्म कर देना या विकर्षण में बदल देना. यह विद्या के माध्यम से दो व्यक्तियो के बीच की संधि को तोडा जा सकता है. आकर्षण तत्व को मूल के साथ उखाड सकने की सामर्थ्य का नाम विद्वेषण विद्या है.

उच्चाटन – व्यक्ति का विच्छेद करना किसी स्थल से या दूसरे किसी व्यक्ति से. किसी शत्रु आदि को उच्चाटित कर उसे घर, नगर –शहर राज्य या देश से बहार निकलवा देना, धन का उच्चाटन कर उसके धन को नाश कर देना.

मारण – किसी भी व्यक्ति के प्राण को हर लेना उसे मृत्यु के मुख तक पंहुचा देना इस विद्या को मारण विद्या कहा जाता है.

यह षट्कर्म है, अब मित्रों कोई भी व्यक्ति इस तथ्य को समज सकता है की क्यों षट्कर्म जिसने जान लिए वह पृथ्वी में अजेय हो सकता है. क्यों की जीवन के सभी पक्षों से सबंधीत समस्याओ के समाधान इसमें है ही. इसके साथ ही साथ रसायन विद्या जिसके माध्यम से हलकी निम्न धातुओ को रजत एवं स्वर्ण जैसी मूल्यवान धातुओ में परावर्तित किया जाता है तथा पारद के संस्कार कर उससे दुर्लभ सिद्धियों एवं आरोग्य की प्राप्ति होती है इस विद्या से सबंधित भी कई कई गुढ़ रहस्य है.

फिर षट्कर्म के विषय में श्री भगवान शिव कहते है की सूर्य को पृथ्वी पर भी गिराया जा सकता है :) तो निश्चय ही इस विद्या की सामर्थ्यता एवं सम्पूर्णता का अर्थ है, सार्थकता है. निश्चय ही इन कर्मो से सबंधित कई प्रकार के गुढ़ रहस्य है चाहे वह प्रारम्भिक क्रियाएँ हो या मुद्रा आदि लकिन अप्रकट रूप से कई रहस्य होते है जो की जनमानस के मध्य नहीं आते है क्यों की तंत्र गुरुगम्य विद्या है पोथी गम्य नहीं, पोथी पढ़ पढ़ कोई कुछ भी दंभ मार सकता है लेकिन गुरु के माध्यम से जो सिखा गया होता है वही क्रियात्मक ज्ञान ही सफलता प्रदान कर सकता है. हमारे सदगुरुदेव ने इसी प्रणाली से षट्कर्म से सबंधित कई कई तथ्य १९८०-१९८५ तथा तंत्र विद्या शिविर एवं व्यक्तिगत रूप से सामने रखे थे. इसी माध्यम से उन्होंने कई प्रकार से प्रायोगिक रूप से सारी क्रियाओ को कर के सब के मध्य रखा था.

यही सारे तथ्यों एवं कई विशेष प्रक्रियाओ को हम अपने भाई बहेनो तक पंहुचा सके यही कोशिश हमने सदैव की है तथा करते आए है. इस गुढ़ विषय के सबंध में भी कई भ्रांतियां फेली हुई है तथा इस विषय को नकारा गया है, लेकिन सत्य यह है की निश्चय ही वह व्यक्ति अजेय हो जाता है जिसने षट्कर्म सिद्ध कर लिए. वह अपने जीवन के साथ साथ किसी के भी जीवन को उतनी ऊँचाई पर ले जा सकता है जहाँ तक वो ले जाना चाहता हो और चाहे तो दुष्टों को सबक सिखाने के लिए वह उतना ही निचे भी गिरा सकता है. इसी हेतु आज के युग में अनिवार्यता महेसुस कर हमने 'षट्कर्म एवं रसविज्ञान गुढ़ रहस्य' विषय पर सेमीनार का आयोजन किया है. आप सब के उत्साह को देख कर निश्चय ही खुशी होती है तथा हमें भी प्रेरणा मिलती है और भी तीव्र रूप से कार्य करने की. जैसे की आप सब लोग जानते है यह सेमीनार इसी महीने की २५ तारीख को है, अस्तु, जो भी भाई बहेन साधक इस सेमीनार में भाग लेने के इच्छुक हो वे nikhilalchemy2@yahoo.com पर संपर्क करे.

SADHNA VA POOJAN SE SAMBANDHIT KUCHH SMARNIY TATHYA

जय सदगुरुदेव,

ॐ गुरुत्व देवत्वं सह ज्ञानं |

दिव्यं दिवे च श्रियम मय ||

हे गुरुदेव ! आप हमारे लिए देवता स्वरुप हैं, आप ज्ञान पुंज हैं, दिव्य हैं, तेजश्वी हैं, आप अपने में सन्निहित कर एकाकार कर दें, हमें आप दिव्यता, श्रेष्ठता एवं पूर्णता प्रदान करें, यही श्री चरणों में विनती है ......

साधना, पूजा विधान सम्बन्धी कुछ महत्वपूर्ण तथ्य:

- भाइयो बहनों मैने जब से अपने आप को चेतनायुक्त पाया है, सारा समय अर्थात अधिकांश समय पूजा पाठ और साधनायुक्त जानकारी एकत्रित करने और उसे क्रियान्वित करने में ही लगाया है. अन्य लोगों कि तरह मेरा भी ये प्रिय कार्य है..... :)

मैं सभी तरह, सभी प्रकार के पूजा पाठ में भाग लेती रही हूं चाहे वो कोई यज्ञ हो किसी भी प्रकार का अर्चन हो भगवत गीता का पाठ हो या नवचंडी या सहस्त्र चंडी यज्ञ हो, बजरंग पाठ यज्ञ हो या रामायण पाठ..... या कोई तांत्रिक हवन पूजा या अन्य कोई भी..... और इतने समय लगाने के पश्चात मेरा विश्लेषण ये है कि......

अनेक पूजा पद्धतियाँ प्रचलित हैं......किन्तु जो मत प्रचलित हैं वे हैं शाक्तमत,शैवमत और वैष्णव मत.... और सारी पूजा पद्धतियाँ इन्हीं की शाखा मात्र हैं. खैर ये विषय कुछ अलग है, अभी हम बात साधना और पूजा पद्धति पर बात कर रहे हैं.

भाइयों मेरे पास कुछ प्रश्न आते हैं कि......

क्या होना चाहिए पूजा पद्धति ?

क्या प्रतिदिन पूरा पूजन करें, किन्तु इसमें तो बहुत समय लग जाता है

क्या हम प्रतिदिन ही न्यास करें या ना करें, या करें तो कैसे ? ?????

मेरे प्रिय स्नेही भाइयों बहनों सबसे पहले हमें ये समझना होगा कि हम करना क्या चाहते हैं.... क्योंकि भिन्न पूजा, भिन्न साधना का विधान भी भिन्न ही होगा ना, अतः ... पहले ये तय कर लें कि क्या है उनकी दिनचर्या ...

हम जिस पूजा पद्धति से जुड़े हैं वो है वैदिक परम्परा जो कि हम प्रति दिन हमारे आसपास देखते हैं, किन्तु यही पद्धति उत्तर पूर्व कि ओर चलें जाएँ तो तांत्रिक पूजा पद्धति में परिवर्तित हो जाती है.

जो कि थोड़ी अलग है और जिसे तंत्र कि भाषा में दिव्य भाव या वीर भाव कि पूजा कही गयी है.

ये विषय भी अलग है..... अब हम साधना पद्धति और पूजा प्रक्रिया पर बात करते हैं ....

भाइयों बहनों सबसे पहली और महत्वपूर्ण है कि हम अपने घर में पूजा स्थान को प्राथमिकता दें क्योंकि वर्तमान समय में अत्यंत भौतिकता वादी तथा स्थानाभाव के कारण पूजा स्थल को ही स्थान नहीं दे पाते या देते भी हैं तो सबसे ऊपर छत पर मंदिर बना दिया जाता है, उसमें साधना कक्ष कहाँ है ?

भाइयों मेरा मतलब हमरे घर एक स्थान तो कम से कम साधना हेतु होना चाहिए ना जहां कोई बाधा ना हो और हम निर्विघ्न बैठकर मन्त्र जप या पूजा कर सकें..... हैं ना :)

कुछ पूजा पद्धातियाँ ऐसी होती हैं जिसमें मन्त्र जप नहीं होते किन्तु पूजा प्रक्रिया ही विशेस और लंबी होती है कि उसे बिना किसी बाधा के ही पूर्ण करना होता है जैसे...... नवरात्री मे दुर्गा पूजन और श्रावणमास मे शिव पूजन , इन पूजन में मन्त्र जप का विधान तो बाद कि बात है किन्तु इनकी स्थापन में ही एक उर्जा एक संतुष्टि और एक दिव्य भाव विकास होने लगता है जो कि एक अच्छी बात है साधना के लिए...इससे आपकी साधना हेतु पूर्व तैयारी भी हो जाती है......

अब हमें इस बात का ध्यान रखना होता है कि हम प्रति दिन पूजा करते हैं या साधना . क्योंकि इन दोनों में भेद हैं,

पूजा में जहाँ आप सिर्फ पूजा करते हैं जिसमें कि आप पंचोपचार या षोड्सोपचार करते हैं जैसे भगवान को आवाहन, अर्ध्य, स्नान, वस्त्र, तिलक श्रृंगार भोग धूप-दीप आरती आदि करते हैं किन्तु साधना.... :)

भाइयों साधना में संक्षिप्त पूजन कर मन्त्र जप को प्राथमिकता दी जाती है .....

भाइयों बहनों पूजा विधि मे अनेक बातों ध्यान रखना भी आवश्यक है....

१- प्रतिदिन पूजा स्थल को साफ सुथरा कर भगवान को स्नान आदि करवा कर पूर्ण श्रृंगार करें भोग धूप-दीप से पूरा पूजन संपन्न करें ....

२- यदि आप पूजा के बाद मन्त्र जप भी करते हैं तो अति उत्तम, पर कम से कम यदि दीक्षित हैं तो अपने गुरुमंत्र की एक, चार, पांच या जितनी संभव हो माला अवश्य करें....

३- भाइयों बहनों! पूजा पद्धति पूर्ण रूप से प्रतीकात्मक होती है, अतः यदि आपके घर में जो भी विग्रह यंत्र आदि का स्थापन हो तो उन्हें स्नान आदि करवा दीजिए या फिर यदि उन्हें हिलाना संभव नहीं तो सामने एक कटोरी रख लें और पंचपात्र से ही प्रतीकात्मक पूजन करें यानि एक-एक आचमनी जल उतारें, छिडकें नहीं. भाइयों ! जल छिडकने का विधान है ही नहीं आप जल को उतारकर कटोरी मे डालें.....

४-जल का छिडकाव हम् अपने ऊपर पवित्रिकरण या दिशा बन्धन हेतु कर् सकते हैं,किन्तु देवो पर या किसी विगृह पर या यंत्रों पर जल छिडकाव का न कर सिर्फ पूरे सम्मान से आचमनी से जल उतारकर कटोरी मे या किसी भी पात्र मे ही डालें और बाद में उसे किसी पेड़ की जड़ मे डालें, उस पौधे या पेड़ को सिंचन भी मिलेगा और जल पैरों मे भी नहीं जायेगा ..... हैं ना :)

५- जब साधना करें तब -- मंत्र से सम्बन्धित सभी जानकारी प्राप्त कर लें, उससे सम्बंधित न्यास, विनियोग, ध्यान आदि प्राप्त कर ही साधना में प्रवृत्त हों .

एक प्रश्न है की क्या प्रत्येक साधना में न्यास आदि करना चाहिए ?

६- यथा संभव न्यास विधान का ज्ञान होना सफलता के सोपान को अधिक सरलता से पाने की क्रिया ही है और इसका ज्ञान साधक को होना चाहिए फिर भी कुछ मन्त्र ऐसे भी हैं कि जिनके न्यास ना भी करो तो भी पूर्ण सफलता मिलती ही है . जैसे गुरु मन्त्र जिसको हम सामान्यतः ऐसे ही कर लेते हैं, किन्तु इसका अर्थ ये नहीं कि गुरुमंत्र के न्यास या विनियोग नहीं है ये एक उदाहरण था कि ऐसा कर सकते हैं.

७- ये निर्भर करता है कि आप किस देव कि उपासना या साधना कर रहें हैं . आपको यदिउस मन्त्र के अधिष्ठाता देव, ऋषि, छंद और शक्ति, बीज आदि का ज्ञान है तो आप न्यास विनियोग कर सकते हैं .

वरना प्रिय भाइयों बहनों ! आप सिर्फ गुरुदेव कि साक्षी में सिर्फ संकल्प लेकर ध्यान करें और साधना प्रारंभ कर सकते हैं, और उससे भी पूर्ण सफलता मिलेगी, ये सदगुरुदे ने ही बताया है.

मन्त्र और गुरु पर श्रद्धा होने से ही आधा कार्य तो यूँ ही हो जाता है बाकी जप के बाद सफलता मिलनी ही है ... :)

भाइयों बहनों ! हम भिन्न मत और भिन्न देव से प्रेरित हैं और उसी के अनुसार साधना या पूजा भी करते हैं तो सब के लिए एक् से नियम नहीं हो सकते, क्योंकि सब की अपनी पूजा पद्धति है .

कोई शिव का उपासक है, कोई शक्ति का, कोई भैरव का, तो कोई गायत्रीका उपासक है तो कोई कृष्ण का. कोई राम मे विश्वास रखता है तो कोई राम भक्त बजरंगी में..... :)

किन्तु एक बात तो है जो हम सब को एक करती है और वो है गुरुदेव से जुडना . यहाँ पर सभी किसी ना किसी रूप मे गुरुवर से जुड़े हैं अतः उनकी यानि गुरु- साधना,पूजा या उपासना तो एक ही होगी ना .... :)

अतः गुरु साधना में रूचि रखने वालों साधकों हेतु कुछ तथ्य.....

१- प्रति दिन गुरु पूजन अवश्य करें पूरी श्रद्दा से, यदि समयाभाव हो तो चार माला गुरुमंत्र एक माला चेतना मन्त्र और एक माला गायत्री मन्त्र की अवश्य संपन्न करें.

२- यदि गुरु साधना कर रहें हैं या करने की सोच रहें है तो उससे पहले गुरु प्राणश्चेतना मन्त्र जितना संभव हो सके अवश्य करें. इसके साथ ही "ध्यान धारणा और समाधि" मे दिए हुए चेतना मन्त्र जो कल ही मैंने गर्भस्थ शिशु साधना में दिए हैं उन मन्त्रों को पांच बार पहले और पांच बार मन्त्र के आखिरी में अवश्य करें साधना सफलता के प्रतिशत बढ़ जायेंगे...... :)

भाइयों बहनों ! किसी भी साधना का आधार ही गुरु होते हैं अतः जीवन में गुरु साधना से वंचित ना रहें. सदगुरुदेव की चेतना उर्जा सदा आपको प्राप्त होती रहेगी,और आप प्रत्येक साधना को बड़ी आसानी से करते चले जाओगे और साधना की उच्चता तक दिव्यता तक पहुँचने से आपको कोई नहीं रोक सकता, क्योंकि आपके मार्गदर्शक गुरुदेव हैं जो निरंतर आपका हाथ पकड़कर उस दिव्य पथ पर चल रहें हैं .....

मुझे उम्मीद ही नहीं पूर्ण विश्वास है की आप सभी के लिए साधना मे उपयोगी सिद्ध होंगे..... तो तैयार हो जाइये साधना हेतु...... क्योंकि यही हमारा पथ भी है और शिष्य धर्म और कर्त्तव्य भी....... :)

निखिल प्रणाम

NOW TANTRA KAUMUDI IN PRINT MODE

साधो यही घडी यह बेला ....

आप सभी के लिए ...एक बहुत ही महत्वपूर्ण सुचना

स्नेही मित्रो,

समय की धारा अविचल और निरंतर गतिमान रहती हैं,और हमारा भी यही प्रयास रहता हैं की अपने कार्यों के प्रयासों को और भी तीव्रता दी जाए हमने आप के सामने अनेको बार जो कदम उठाये , जिनसे आप सभी भलीभांती परिचित हैं ही,उन सभी कार्यों का प्रारंभ करने की हमने जब भी बात की, हर बार जहाँ हमारे शुभचिंतको ने हमारा उत्साह बढ़ाया,वही आलोचकों और विपरीत,मानसिकता रखने वाले ने अपना कार्य हर बार की तरह छदम वेश धारण कर किये भी पर हर बार हमने जो कहा वह हमने किया ही हैं .और आज तक की यात्रा इस बात का स्वयम प्रमाण हैं.

कुछ बाते इस यात्रा की भी....आज समय हैं एक बार पुनः हम देखें ताकि हम समझ सकें की हमारा यह सारा कार्य अपने मुंह मियाँ मिठ्ठू बनना नहीं बल्कि समस्त बातें और तथ्य बाते जीवन की कठोर सत्य की परीक्षा का सामना करते हुए की हैं .

आज से सात आठ वर्ष पहले जब आरिफ भाई जी की पोस्ट उस समय के तत्कालीन ग्रुप में कुछ जातिगत या धर्मगत कारण ही शायद प्रमुख रहे होंगे,के कारण जान बुझ कर पोस्ट नहीं की जाती थी. तब उन्होंने ब्लॉग के माध्यम से एक नयी लीक पर चलना प्रारंभ किया हालकी उस समय ब्लॉग संस्कृति उतनी जयादा लोकप्रिय भी नहीं थी,न ही उन्हें प्रारंभ में साथ चलने वाले भाई बहिनों की संख्या लगभग न के बराबर ही रही पर धीरे धीरे समस्त प्रतिकूलताओ को सहन करते हुए,वह आगे बढ़ते ही गए,आज यह स्थिति हैं कि आजइस ब्लॉग को पढने वाले की संख्या १२ लाख से भी ज्यादा पार कर चुकी हैं और यह पाठक गण गिनने की संख्या मात्र कुछ वर्ष पहले ही ब्लॉग पर उपयोगित की गयी.और मोबाइल पर पढने वालों की संख्या इसमें सम्मलित नहीं हैं .

इसके बाद, जिस ज्ञान की बात बार बार लेखो में की जाती रही हैं, उनमे से एक सर्व प्रमुख विषय **"पारद विज्ञानं"** की रही हैं, जिस ज्ञान को सदगुरुदेव जी ने,जो मानो लुप्त हो ही चुका था.की पुनर्स्थापना की, वह उनकी भौतिक लीला के समापन के बाद,वह एक बार फिर से उपेक्षित होने लगा क्योंकि कुछ सम्मानितो का इस और कोई भी रुझान नहीं रहा, तो इस हेतु कार्यशालाओ का आयोजन हुआ, तो सारे विरोधी, विरोधिता सारा कटुआलोचना का एक दौर पुनः चल पड़ा, पर **हमने एक**

४० दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया, इसके बाद फिर से एक और कार्यशाला का आयोजन किया जहाँ हमने पारद के वही दुर्लभ संस्कार जिन्हें मात्र किताबों की शोभा बता दिया गया था वह हमने मात्र २० दिनों में संभव कर दिखाया .

यही हमने एक छोटा सा प्रयास शुरू करने की ठानी और एक बात हमें अपने ब्लॉग में रखी की अगर इस महीने तक ब्लॉग के रजिस्टर्ड सदस्य संख्या **१००** तक पहुच जाती हैं (हलाकि आज ब्लॉग के रजिस्टर्ड सदस्य संख्या **९०० +** तक पहुच गयी हैं) तो हम 40 /45पेज की पत्रिका जो एक इ पत्रिका होगी, वह भी फ्री, वह निकालेंगे .और जब लोगों का प्रबल उत्साह हमारे साथ हुआ तो हमने बात कही थी, मात्र 40 /45 पेज की पत्रिका की, पर हमने १०० पेज से अधिक का पहला अंक साधनात्मक चिंतन साधनाओ सहित हिंदी और अंग्रेजी भाषा में सामने रखा. कितना न विपरीतता इस कार्य में झेलना पड़ी उसका तो आप सभी स्वयं गवाह हो, **यहाँ तक की इस कार्य की गति को बनाये रखने के लिए, हम सब को अपने आप को गुरु द्रोही तक होने की घोषणा करनी पड़ी. दुखद पहलु यह भी था की इन कार्यो को पीछे से हवा करने में कुछ अत्यधिक सम्मानित का भी हाथ रहा.**

अब बात आई की कैसे यह लोग अन्य अंक निकाल पायेगे, एक तो निकाल लिया पर अगला अंक .....आज इस पत्रिका के जो **"तंत्र कौमुदी"** के नाम से हिंदी और अंग्रेजी दोनों भाषाओ में हैं, के **१४ अंक**निकल चुके हैं और यह हमेशा फ्री रहेगी और इसी तरह इसके अंक भी निकलते रहेंगे.और आलोचनाये तो क्या,अब तो आलोचक भी आलोचना करके थक चुके हैं क्योंकि हमने रुकना जानना ही नही .

इस क्रम **में पारद की तीसरी कार्यशाला का आयोजन भी हुआ जो की कामाख्या महापीठ में भी संपन्न हुयी .पर कतिपय लोगो की मानसिकता और लोगों का सफ़ेद पीली धातु की और रुझान देखने** और जिस तरह से विस्वास का खंड खंड किया गया और जो विस्वासघात किया गया उस को देखते हुए अभी कुछ समय से यह क्रम रुका हुआ हैं, अगर यह नहीं होता तो **सूर्य विज्ञानं, चन्द्र विज्ञानं,नक्षत्र विज्ञानं, जल विज्ञानं, वायु विज्ञानं,पारद के उच्चतर संस्कार,शमशान**

साधनाए आदि का क्रम निश्चित था पर अभी वरिष्ठ सन्यासी भाई बहिनों की आज्ञा न होने के कारण यह रोक दिया गया हैं.

इसी दौरान फेसबुक पर **निखिल अल्केमी ग्रुप** का निर्माण हुआ मात्र कुछ सदस्यों से चालू हुआ यह ग्रुप आज **२१००** से भी आधिक सदस्य संख्या वाला ग्रुप हैं, जहाँ हमने पूरी कोशिश की हैं, की एक श्रेष्ठ वातावरण सभी अपने स्नेही भाई बहिनों को मिले और एक परिवार की तरह शालीनता और सभ्यता का वातावरण चारों ओर हो.आज इस ग्रुप की भी लोक प्रियता बढती जा रही हैं.और अनेको बार बेहद उथल पुथल और अनर्गल आरोपों के मध्य भी आप सभी के स्नेह के कारण हमारी यात्रा प्रगति पथ पर हैं ही .क्योंकि हमने आलोचना नहीं बल्कि सकारात्मकता को ही अपना उदेश्य बनाया हैं,और व्यर्थ के वादविवाद को अपना लक्ष्य नहीं बल्कि हमारा लक्ष्य की दिशा एक श्रेष्ठ साधनात्मक ज्ञान और वही भी बिना किसी प्रलोभन के, न कोई झूठी आशा,न की कोई भय या न ही कोई भीतरघात या कोई.......... जबकि हमारे साथ तो यह हमेशा होता आया हैं और यह तो इस युग की रीत हैं की जब तक किसी भी व्यक्ति के अनुसार आप हाँ करते रहे और थोडा सा भी आप उसकी इच्छा पूरी न करो तो ततकाल वह सीधे या विपरीत रूप में आपके विरोध में होगा, आज अनेको ने अपने आचरण से अपने कथन से सीधे या अन्य तरीके से यह बात समझाई ही हैं.

अब बात आई की जब आधिकांश व्यक्तियों के पास समय की बहुत कमी हैं जिसके कारण, वह चाह कर भी लगातार किसी अन्य स्थान पर जाकर सीख नहीं सकते हैं, तब एक दिवसीय सेमीनार की श्रंखला प्रारंभ की गयी, और इस एक दिन के सेमीनार को शिविर बता कर एक बार फिर से आरोप प्रत्यारोप की श्रंखला चालू हुयी पर इन समस्त प्रतिकुलताओ को सहन करते हुए हमने एक दिवसीय सेमीनार का आयोजन किया और न केबल आयोजन बल्कि इस सेमीनार में, इस सेमीनार की मूल विषय वस्तु पर आधारित किताबे भी प्रकाशित की, जिसका आप सभी ने बेहद स्वागत किया. इन सेमीनार में प्रकाशित हुयी **“अप्सरा यक्षिणी रहस्य खंड”** और **“ इतर योनी साधना और कर्ण पिशाचिनी साधना रहस्य खंड”** नाम

की दो पुस्तक का प्रथम संस्करण समाप्त हो गया हैं और अब इनके परिवर्धित और कहीं ज्यादा जानकारी और साधनाओं के साथ बुक साइज में अगले संस्करण के प्रकाशन की तैयारियां चल रही हैं.

मित्रो तीसरे सेमीनार के आयोजन की भी जैसी ही अनुमति मिलती हैं उसकी घोषणा की जाएगी .

अब बात आई हैं साइबर क्षेत्र से बाहर भी जमीनी स्तर पर कार्य किया जाय और यह सब कार्य तो मात्र एक बृहद महान कार्य की शुरुआत के लिए आवश्यक अंग रहे क्योंकि आप सभी को हमारी सत्यता का भी तो अनुभव करना रहा, आप को भी यह विस्वास होना था की यह कोई भी झूठा प्रलोभन की एक दिन या दो दिन वाली यहाँ बात नहीं हैं और हमें ख़ुशी हैं की आप इन चीजो को समझते भी हैं . अन्यथा आज तो सिद्धो की मानो भीड़ लग जाती सिर्फ साधक तो कोई होता ही नहीं .

बिना कठोर श्रम और पूर्ण एकाग्र भाव से साधना और न केबल साधना बल्कि पूर्ण समर्पण युक्ता वह भी सर्वकाल के लिए होने पर ही सिद्धता के लिए रास्ता खुल सकता हैं अन्यथा इस माध्यम में तो हर कोई सिद्ध बना... आपके सामने प्रलोभन दे ही रहा हैं .वह भी साधना सफलता की मूल भावना की कठोर श्रम को एक तरफ रखकर .

मित्रो, हम सभी ने, आपके स्नेह और सदैव हम सभी का साथ देने की भावना के कारण, हमने उस महान स्वप्न को जो सदगुरुदेव जी ने हम सब के सामने रखा था उसको साकार करने की दिशा में अपना कदम बढ़ने की दिशा में कार्य करना चालू किया, हालाकि इस समय अवधि में हम सभी को सम्पूर्ण रूप से नष्ट करने के लिए कतिपय लोगों के सार्वजनिक रूप से हम सबको छह महीने की अवधि दी थी पर हम इस अवधि में भी चुप बैठे नहीं इन सब के बीच हमने एक विशाल भू खंड, जिसे अब “**निखिल कल्प कुटीर** “ के नाम से जाना जाता हैं. आपके सामने हमने पवित्र नर्मदा तट पर जबलपुर मध्य प्रदेश में, यह लगभग १५ एकड़ का बृहद भू खंड ले कर इस पर सदगुरुदेव के स्वप्न की साकार करने की दिशा में पहला कदम रख दिया, यह उन सभी आलोचकों के मुंह पर एक

थप्पड़ था, जो रोज रोज एक राग आलाप रहे थे, ये लोग गुरु बनना चाह रहे हैं और ये पैसे कमाने के लिए यह सारा कार्य कर रहे हैं.**आप में से अनेको ने भूमि पूजन समारोह में भाग लिया और कई आलोचकों ने भी मित्रता का आवरण ओढ़ कर भी यह सब देखा.**

मित्रो , हमने, यह ही नहीं बल्कि हमारी कोशिश तो यह रही की हर व्यक्ति साधना व्यक्ति से जुड़े और हर व्यक्ति साधना करने में, उसकी आर्थिक अवस्था किसी भी प्रकार से वाधा न बने, यह समझ कर हर महीने सात साधनाए की योजना प्रारंभ की, एक तरफ ख़ुशी रही की लोगों ने जी भर कर इस योजना का लाभ लिया पर यह भी एक पहलु था की किसी ने भी दुसरे माह की साधना के लिए कहा नही,अपनी प्रगति से अवगत कराने वाले लोग बहुत कम रहे .और यह सारे यन्त्र हमने निशुल्क उपलब्ध कराये. इसके बाद हमने सभी को**निशुल्क तिब्बती साबर महायन्त्र** जो लक्ष्मी साधनाओ का एक सिरमौर अति दुर्लभ साधना यन्त्र कहा जाता हैं. उसको तीन बार में लगभग हज़ार से जयादा यन्त्र हमने उपलब्ध कराये. और अब आपके सामने **सौभाग्य वास्तु कृत्या यन्त्र** जिसकी लागत मूल्य ही सदगुरुदेव जी के भौतिक लीला काल में **२१ हज़ार रूपये रही हैं आपके सामने निशुक्ल रूप में आने को हैं** .

मित्रो यह तो एक रूप रेखा रही ताकि नए भाई बहिन भी थोडा समझ सकें **पर आज का यह लेख कुछ और ही विशिष्ट बाते बताने के लिए हैं ..**वह यह की जिस काल में हमने **तंत्र कौमुदी** पत्रिका निकाली और जब इसको बंद करा देने के नाम पर जो घृणित खेल हुआ आप सभी परिचित हैं ही उस समय अनेको ने हमें कहा की आप इस पत्रिका को प्रिंट माध्यम में करें, हम सभी पुरे सहयोग के लिए तैयार हैं. और मित्रो हमने यह बात हमने अपने हृदय में रखी क्योंकि आप सभी की जो भी सकारात्मक सलाह होती हैं वह हमारे लिए बहुत ही अर्थ रखती हैं. हर व्यक्ति की इस परिवार में एक अर्थ हैं, एक भूमिका हैं,जब तक वह कोई भीतरघात या कोई अन्य तरह का छुपा हुआ अपना गोपनीय अजेंडा न ले कर चल रहा हो, इन दिनों ने हमें बहुत कुछ सीखाया हैं अतः हमें ध्यान हैं ही की हम किस जगह पर खड़े हैं, जमीनी सच्चाई से हमने कभी भी अपना मुंह नहीं मोड़ा हैं.हमने उचें सपन्न देखें हैं तो

उन्हें साकार करने के लिए अपना सारा तन, मन, धन सब कुछ दाव पर लगा दिया .

पर हमने यह निश्चित किया हैं की तंत्र कौमुदी जो एक फ्री इ पत्रिका हैं, वह हमेशा फ्री ही रहेगी और निर्बाध रूप से आप सभी को मिलती रहेगी .अब जब हमारेवरिष्ठ सन्यासी भाई बहिनों ने अपना आशीष और अनुमिति दी हैं तो आप सभी को बताते हुए यह बहुत प्रसन्नता का समय हैं की **अब यह पत्रिका प्रिंट मोड पर भी उपलब्ध होने जा रही हैं.**

पर एक प्रश्न उठता हैं की जब इ पत्रिका हैं तो इसको क्यों हम लें? .क्या विशेषता होगी इसकी ...?तो मित्रो कुछ बिंदु इस प्रकार हैं .

- यह किसी भी अर्थो में अर्थात जो प्रिंट मोड़ की पत्रिका होगी, वह तंत्र कौमुदी की कोई कोपी नहीं होगी बल्कि विषय वस्तु तथा उसके अन्दर जो भी सामग्री होगी वह इ पत्रिका से पूर्णतया अलग होगी .
- यह पत्रिका हर महीने एक निश्चित तारीख को प्रकाशित होगी.
- **यह पत्रिका वार्षिक शुक्ल पर ही उपलब्ध हो पायेगी, जिसकी जानकारी आने वाली अग्रिम पोस्ट पर की जाएगी** .
- इस तरह से आपको एक महीने में दो पत्रिका प्राप्त होगी एक पूर्णतया फ्री हैं जो केबल इन्टरनेट पर होगी और दूसरी जिसके लिए आपको वार्षिक शुल्क देय होगा, वह आपके सामने प्रिंट रूप में .
- साधनाओ की दृष्टी से और साधनात्मक चिंतन वाले लेखो की दृष्टी से, आप यह निश्चित माने जिस तरह हमने कभी भी आज तक भी तंत्र कौमुदी के स्तर के साथ जिस स्तर बनाया हैं यह भी उसी उच्च कोटि की होगी. इसका प्रत्येक अंक आने वाली पीढ़ियों के लिए सहेजने लायक होगा,गुणवत्ता और विषय वस्तु के आधार पर प्रत्येक अंक एक लघु किन्तु विषय से भरपूर ग्रन्थ जैसा हि होगा,विषय की रोचकता और गोपनीय रहस्यों से भरपूर.

- **अभी यह पत्रिका मात्र याहू ग्रुप, निखिल अल्केमी ब्लॉगऔर निखिल अल्केमी फेसबुक ग्रुप के सदस्यों के लिए उपलब्ध होगी अर्थात इन ग्रुप के सदस्यों में जो भी इसकी वार्षिक सदस्य बनने के लिए वार्षिक शुल्क के लिए सहमत होंगे.**ये मात्र सदस्यों के लिए ही होगी,ना की स्टॉल के लिए.
- **यह पत्रिका आपको या तो रजिस्टर्ड पोस्ट से या स्पीड पोस्ट से ही भेजी जाएगी ताकि सही समय पर और सुरक्षित रूप से आपको यह पत्रिका मिल सकें.**
- मित्रो , अब समय हैं अपने कार्य को सही अर्थो में और भी व्यबस्थित करने का अतः भले ही छोटे छोटे कदम लिए जा रहे है पर यह सारे कदम पूरी तरह से जांच परख कर सोच विचार कर , एक निश्चित रूप रेखा और एक निश्चित लक्ष्य को ध्यान में रख कर लिए जा रहे हैं.पर इससे यह न अर्थ लगाया जाए की **निखिल कल्प कुटीर** को साकार करने का यह अर्थ नहीं हैं की हम साधनात्मक क्षेत्र के प्रति कुछ कम ध्यान देंगे बल्कि यह कार्य भी हमारी टीम उतने ही मनो योग से बल्कि और भी तीव्रता से करेगी.
- हर अंक अपने आप में अद्भुतता लिए होगा, जो साधनाए जो ज्ञान होगा, वह आपको दाँतों तले अंगुली दवा लेने पर बाध्य कर देगा .वैसे तो आने वाले परम पवित्र दिवस पर अर्थात **२१ अप्रेल** को हम इस हेतु पूरी बात और भी ठोस रूप में करेंगे पर अभी आपको यह तो बात ही दूँ की इसका पहला अंक **“सदगुरुदेव सायुज्ज्य महाविद्या महाविशेषांक”** होगा . हैं न यह अद्भुत बात भला यह तो सभी ने जाना और माना हैं की सदगुरुदेव और महाविद्याओ में भेद कैसा पर .एक पूरा महा विशेषांक इस अद्भुत परम दुर्लभ साधनाओ पर ....तो क्या क्या रहस्य होंगे इस में यह तो जब अंक आपके हाथो में होगा तब ही आप इसका मूल्य समझ पायेंगे .
- एक बात पूरी स्पष्टता से सामने रखना चाहूंगा की यह पत्रिका कोई सिर्फ एक महीने के लिए नहीं बल्कि आपके सारे जीवन की धरोहर होगी, आपके जीवन का एक

सौदर्य होगी, एक एक अंक इसका संग्रहणीय होगा, हमारी टीम दिन रात इस अंक को सर्वश्रेष्ठ बनाने मे लगी हुयी हैं .हमें इस बात का पूरा अहसास हैं कि आपके द्वारा दिए गए एक एक पैसे का पूरा नहीं बल्कि कई कई गुना मूल्य आपको मिले ही .कोई प्रलोभन नहीं बल्कि ..आज तक का हम सभी का अर्थात ***NPRU*** का इतिहास आपके सामने हैं.अनेको आलोचक आये और जाते रहे, जो भी जितनी भी वाधाये आई, सब अर्थ हीन हुयी, और बेसिर पैर की बात करने वाले स्वयं अपना सा मुंह लेकर बैठ गए क्योंकि हम किसी साधना के निर्माण तो करते हैं नहीं क्योंकि वह तो सदगुरुदेव जी का अधिकार क्षेत्र हैं और साधनाए भी उनकी द्वारा ही दे हुयी हैं हम एक अर्थो में सिर्फ संकलन कर्ता हैं .और सदैव आपके भाई ही हैं . और कुछ भी नहीं.

- यह पत्रिका जिस महीने की होगी उसमे, अगले आने वाले महीने के लिए अनेको अद्भुत रहस्यों से परिपूर्ण और एक से एक योग्य और श्रेष्ठ प्रयोगों से युक्त होगी .
- साधनाओ से युक्त यह पत्रिका आपको साधना जगत की न केबल तीव्रता से परिचित कराएंगी बल्कि आपके सामने किस स्तर तक आपको उंचा उठाना है जिससे आप एक सफल साधक बन जाए उसका पथ भी प्रसस्त करेंगी. क्योंकि हम सभी को सदगुरुदेव ने जो सीखाया हैं उसमे सतत अभ्यास से हि तंत्र को आत्मसात करने वाली बात रही है.

मित्रो इसका वार्षिक शुल्क कितना होगा, कैसे आप इसको प्राप्त कर पाएंगे , इस बारे में आपको जानकरी प्रदान कर ही दे जाएगी. अभी के लिए हमारी यही योजना हैं की यह पत्रिका केबल साधक वर्ग के हाथो में ही उपलब्ध हो ..आगे अनुमति मिलने पर क्या और होने जा रहा हैं वह आपको अवगत कराया ही जायेगा, पर मित्रो यह निश्चित हैं की इस पत्रिका को प्राप्त करना निश्चय ही सौभाग्य की बात होगी .

हम इस बारे में और भी **आधिक जानकारी आप सभी के सामने...२१ अप्रेल की पोस्ट पर ..**

SHATKARM TANTRA SEMINAAR

TahaivaiteMahayogaahPrataujyahKshamkarmane Surya PrapaatyeddhumauNendmithyaBhavishyati ||

Above quote has been said by Shri Aadinath Lord Shiva who preached about Sarv Tantra. This teaching of Shri Aadi Shiva was for greatest connoisseur of Tantra Raavan in which he told about mantras regarding Shatkarmas. He told that through these mantras i.e. Shatkarma mantric procedures, even the most difficult tasks can be accomplished very easily. These procedures and mantra should not be considered ordinary since they have the capability to bring sun to earth. It is my sentence which can never be false i.e. it is infallible truth.

Friends

We are very fortunate to belong to such an era in which generation of today are eager to bring about change nearby them. They strive hard and want to take hard steps to bring about change. May be they are striving for personal change but at least they are isolating themselves from narrow-mindedness and are always getting prepared to adopt a new style of living. Most of the persons today have a hope to imbibe both materialistic and spiritual aspects completely into their lives. More than anything else, we are extremely fortunate that Shri Sadgurudev enriched and replenished our lives through Tantra and provided us the vision to beautify our lives through tantra. Besides this, he not only provided knowledge about greatest Tantra Vidya from open heart but also made sadhak do its practical and brought them to doorsteps of success. In his efforts, each and every moment he tolerated so much of problems, somuch blows. But he always kept on smiling hiding all his agonies inside because his aim was to make his disciples understand this great Vidya so that they can do it practically and connect it to society. He spent each and every moment of life towards this end so that Indian ancient sciences can be connected to common

masses, they do not become obsolete with time. At last he left his materialistic body with this very dream in his eyes. But can Guru element ever die?. No. His all disciples and sadhaks have been witness to his continuous presence because even today nothing more matters to him than welfare of disciples.
Everyone may have their own personal opinion regarding what is their responsibility as a disciple or not? But one thing is certain that our path is path of knowledge and it is duty of every disciple that he becomes full of Guru Element as much as possible and gets closer to Guru and this process keeps on happening continuously. But does it happen? We can call ourselves as disciple proudly but only when we progress ahead on this path of knowledge. **The knowledge which Sadgurudev has attained after tolerating a lot of unbearable pain and agony, he distributed the same knowledge to all his disciples with open heart so that tantra can be connected with society, sadhaks can be formed and terrible form of Tantra system is eradicated. But in return, he got fraud, deceit and agony in the name of disciple hood. But all throughout his life, he put on so many efforts in this direction with the hope that even if he finds some disciples, he will consider himself as successful.**
Most of us are aware of the fact that these Vidyas are so much secretive and to understand them, sadhak has to put in lot of efforts, render services to sages and saints for years. Even then it is up to them whether they want to tell or not. But Sadgurudev always kept all such things aside and tried to impart knowledge to his disciples by taking initiative himself. We probably were not able to understand that time that how much we and our life and our being knowledgeable was so important for him. His happiness lied in progress and happiness of disciples only. But how much knowledge we have imbibed it or how much not, we ourselves can analyse.
Dear friends, I remember quote of one accomplished sadhak that even after spending all your life, you get to know something about Tantra Vidya, it is not a loss for you since this knowledge will make you perceive completeness in both the worlds.
If we try to evaluate the problems and pain faced by Sadgurudev and other accomplished sadhak for attaining knowledge and connecting that knowledge with society, then only we will be able to understand the value of knowledge. Words of Sadgurudev were something like this when he was telling about Tantra few years back that we try to measure each and every moment of life, sometimes in terms of money, sometimes in terms of time that if I will not got for 2 days, iwill suffer this much and what will wife say, should I do sadhna? Leave it……..if Tantra sadhna would have been done in this manner, then all streets would have been full of tantriks. Tantra is synonymous to courage, valour, strong determination that if I have decided, I will do it at any cost. What would happen if we have taken some

step for ourself in life. What would happen if we spent some time of our life for ourselves. But whatever I will do now , I will do it with courage, with full competence, with capability. Otherwise opportunity will go unutilized and we can never say when such coincidence in nature will be created for us.

Friends, words of Sadgurudev have infused courage inside us even till today and will go on doing so in future too. In order to make knowledge given by him reach our brothers and sisters and to materialize his dream, we started few years back by taking small strides and today with the cooperation of you all, we are moving forward to fulfil the dream. In this context, we organized workshop and seminar so that this knowledge does not become obsolete and people can become aware of their practical aspects and those who want to move ahead in Tantra field, they get assistance of knowledge given by Sadgurudev. After all, all of us have equal right over his knowledge. In this series, seminar of this time is based on **"Shatkarmas and Secrets of Mercurial Science".**

We have merely considered Shatkarmas as Tone Totke but it is not true. Sadgruudev used to say that the one who has knowledge of Maaran, Vashikaran or shatkarmas is invincible on this earth. No one can beat him. It is the art of imbibing 3 male and 3 female forms of Triguna.

SHANTI KARMA : Through it, person can get rid of disease, epidemic and problems of life. He can attain complete peace in both materialistic and spiritual manner and can get rid of all faults of life.

VASHIKARAN VIDYA : Everyone is aware of it. Through it, even impossible tasks can be accomplished. It is establishing supremacy over other's thoughts and compelling him/her to accept all what we want. It may be one person or a group of persons. Sadgurudev has told 12 varieties of this Vidya which are unparalleled.

STAMBHAN- Very less information is available regarding this Vidya. Stambhan means to paralyse. It may be any person, any enemy, anybody's mind, anybody's progress, anybody's demise. All types of Stambhan come under this Vidya.

VIDVESHAN – It is destroying the attraction between two persons or elements or transforming it into repulsion. Through this Vidya, connectivity between two persons can be broken. Capability to uproot attraction element completely is Vidveshan Vidya.

UCCHAATAN - Separating a person from other place or other person. By doing it on enemies, one can make him quit a city, state or country. One can do ucchatan of money and deprive a person from it.

MAARAN- Vidya to deprive a person of his breath and taking him to verge of death is called Maaran Vidya.

These were shatkarmas. Now friends, any person can understand that why after knowing shatkarmas, person can become invincible. It contains the solution to all problems of life related to all the fields.

Along with it, there is Mercurial science through which lower degraded metals can be transmuted into valuable metals like silver and gold. Through samskars of Parad, rare accomplishments and health life can be attained. This seminar will also focus on abstruse secrets related to this Vidya too.
Talking about Shatkarmas, Lord Shiva says that even sun can be brought to earth through them. So definitely, this Vidya is completely and all capable. Definitely, there are different types of abstruse secrets related to these Karmas whether they are preliminary procedures or Mudra etc. But there are so many secrets which do not come in middle of common masses. Tantra is Vidya which is attained though Guru. It cannot be attained through books. Anyone can boost after reading the books but success is provided by the practical knowledge which has been learnt through Guru. Our Sadgurudev following the same tradition put forward many facts related to shatkarmas in 1980-1985 and in Tantra Vidya shivir and told them personally to sadhaks too. He also demonstrated these procedures practically in front of people too.
It has always been effort from our side that all these facts and special procedures can reach our brothers and sisters. Many misconceptions have been spread regarding this abstruse subject and this subject has been neglected. But truth is that the one who has accomplished the shatkarmas become invincible. He can take his own life and even life of others to supreme heights and he can teach lessons to wrong person by destroying them. For this purpose, considering the necessity of them in modern era, we have organized a seminar on subject "Shatkarma and Secrets of Mercurial Science". Your enthusiasm pleases us and motivates us to work more intensely. As you all know that seminar will be held on 25th of this month, so all the brothers and sisters who wants to participate in this seminar can contact on**nikhilalchemy2@yahoo.com.**
===

तथैवेते महायोगाः प्रयोज्यःक्षमकर्मणे सूर्य प्रपातयेद्भुमौ नेदंमिथ्या भविष्यति ||

उपरोक्त कथन श्री आदिनाथ भगवान शिव का है जिन्होंने सर्व तंत्र का उपदेश दिया है. श्री आदि शिव का यह उपदेश महानतम तंत्र ज्ञाता लंकापति रावण के लिए था जिसमे उन्होंने षटकर्म विषय के मंत्रो के सन्दर्भ में कहा है की इन मंत्रो के माध्यम से अर्थात षट्कर्म की मन्त्र क्रियाओ के माध्यम से दुस्कर कार्य भी शीघ्र एवं सहजता से हो जाते है. इन क्रिया मंत्रो को सामान्य समझने की भूल नहीं करनी चाहिए क्यों की यह सूर्य को पृथ्वी के ऊपर भी गिराने का सामर्थ्य रखते है. यह मेरा (शिव) वाक्य है जो की कभी मिथ्या हो ही नहीं सकता.

मित्रों

हम जिस युग में जिस समय में रह रहे है यह हमारा सौभाग्य है की हम एक एसी पीढ़ी में रह रहे है जिन्होंने अपने आस पास एक परिवर्तन की आस एक ललक है, परिश्रम की भावना है तथा बदलाव लाने के लिए कडा कदम उठाने की चाह है और यह परिवर्तन भले ही व्यक्तिगत हो लेकिन एक संकीर्णता से हम अपने आपको अलग कर रहे है, हम नए जीवन को अपनाने के लिए सदैव तैयार हो रहे है भौतिक एवं आध्यात्मिक दोनों ही पक्षों को पूर्णता से आत्मसार करने की आशा आज महत्तम व्यक्तियो के अंदर है. हमारा इससे भी बड़ा यह सौभाग्य रहा है की श्री सदगुरुदेव ने हमारे जीवन को तंत्र के माध्यम से अभिसिंचन किया, हमें जीवन को तंत्र के माध्यम से निखार कर एक नये ही जीवन सौंदर्य को देखने की द्रष्टि दी. इसके अलावा हमें महानतम तंत्र विद्या का मुक्त ह्रदय से ज्ञान दिया, न सिर्फ समझाया परन्तु उसे क्रियात्मक रूप से साधको को करवाके उनको सफलता तक हाथ पकड़ के खड़ा किया. इस कोशिश में उन्होंने न जाने हर क्षण कितना कष्ट एवं वेदना का सामना किया होगा, कितने ही न जाने घात प्रतिघात को सहन किया, सब पीड़ा को अंदर भरे हुवे वे सदैव मुस्कुराते रहे क्यों की उनका लक्ष्य था की उनके शिष्य इस महान विद्या को जाने सामने क्रियात्मक रूप से करे तथा समाज के साथ जोड़े, उन्होंने अपना हर क्षण इस एक कार्य में ही लगाया जिससे की भारतीय प्राच्य विद्याओ को वो जनसामान्य के साथ जोड़ सके, इन महान विद्याओ का ग्रास न हो जाए, काल के हाथो ये लुप्तता तक न पहोच जाए, वे अपने अंतिम क्षण तक यही स्वप्न अपनी आँखों में ले कर चले अंततः उन्होंने अपनी भौतिक देह का त्याग किया लेकिन क्या गुरु तत्व कभी मिट सकता है? नहीं. उनके सभी शिष्य एवं साधकगण उनकी सतत उपस्थिति के साक्षी रहे है क्यों की आज भी शिष्य कल्याण से ज्यादा उनके लिए कुछ महत्त्व नहीं रखता.

एक शिष्य के नाते हमारा कर्तव्य क्या है क्या नहीं यह व्यक्तिगत बात हो जाती है और सब की अपनी अपनी अलग धारणा है लेकिन एक बात निश्चित है, हमारा रास्ता ज्ञानपथ है और हर शिष्य का कर्तव्य होता है की वह ज्यादा से ज्यादा गुरु तत्व ज्ञान से परिपूर्ण हो कर गुरु के निकट हो जाए, और यह प्रक्रिया सतत रूप से चलती ही रहे. लेकिन क्या ऐसा होता है? हम अपने आपको गर्व से शिष्य कह ज़रूर सकते है लेकिन तब जब हम ज्ञान पथ पर बढे, **सदगुरुदेव ने जिस ज्ञान को असह्य कष्टों एवं वेदना को सह कर प्राप्त किया था उन्होंने उसी ज्ञान को मुक्त ह्रदय से अपने सभी शिष्यों के मध्य बांटा ताकि तंत्र को समाज के साथ जोड़ा जाए, साधको का निर्माण हो सके तथा तंत्र प्रणाली का जो भयावह स्वरुप है वह दूर हो सके लेकिन बदले में उनको शिष्यता के नाम पर धोका, छल, पीड़ा की ही प्राप्ति हुई लेकिन वे आजीवन सिर्फ इसी कार्य में लगे रहे सिर्फ इस एक आशा के साथ की कुछ शिष्य भी अगर मुझे मिल जाए तो भी मैं अपना कार्य सफल मानूंगा.**

हम सबमें से ज्यादातर लोग परिचित है की इस विद्या की गोपनीयता कितनी अधिक है तथा इस विषय को समजने के लिए साधको को कितने ही न पापड़ बेलने पड़ते है, साधू संन्यासियो की सालो तक सेवा चाकरी करने पर कभी कोई सिद्ध प्रसन्न मुद्रा में वे कुछ बता दे तो बता दे वर्ना वो भी नहीं. लेकिन सदगुरुदेव ने इन

सारी चीजों को एक तरफ कर अपने शिष्यों का हाथ पकड़ पकड़ का समजाने की चेष्ठा की, हम सायद तब नहीं समज पाए की उनकी द्रष्टि में हम और हमारा जीवन तथा हमारा ज्ञानवान होना उनके लिए कितना महत्वपूर्ण है, शायद उनकी खुशी मात्र शिष्यों की प्रगति, शिष्यों की खुशी में ही थी. परन्तु उस ज्ञान को आत्मसार हमने कितना किया है और कितना नहीं यह हम सभी स्वयं का आकलन कर सकते है. प्रिय स्नेहीजनो एक सिद्ध का कथन मुझे याद है की पूरा जीवन दे कर भी अगर तंत्र विद्या से सबंधित कुछ ज्ञान की प्राप्ति होती है तो सौदा घाटे का नहीं है क्यों की वह ज्ञान इस लोक और परलोक दोनों में ही पूर्णता का बोध करा देगा.

कभी हम सदगुरुदेव एवं कई सिद्धो के इतने कष्ट, वेदना एवं पीड़ा का हमने मूल्यांकन करे जो उन्होंने सहन किया है ज्ञान प्राप्ति के लिए तथा उसी ज्ञान को समाज के साथ जोड़ने के लिए तब हमें शायद इस ज्ञान की कीमत समाजमे आती है. सदगुरुदेव के कुछ शब्द इस प्रकार से थे जब वो तंत्र के सबंध में कई साल पहले समजा रहे थे की हम जीवन में आए क्षण को तोलने में लग जाते है कभी पैसो से, कभी समय से, की पांच रूपया २ दिन नहीं जाऊंगा तो दो रुपये का नुसकान, बीवी का कहेगी, बच्चो का क्या करू, साधना करू? नही नहीं छोडो जाने दो... अगर इसी प्रकार तंत्र साधना होती तो गली गली में तांत्रिक होते. तंत्र नाम है हिम्मत का साहस का एक दृढ निश्चय का की करना है तो करना ही है भले ही फिर कुछ हो जाए| क्या हो जाएगा अगर एक बार जीवन में खुद के लिए कदम बढ़ा दिया तो. क्या हो जाएगा अगर थोडा समय खुद के लिए खर्च कर दिया अपने जीवन का, इतना कर दिया है तो थोडा और सही लेकिन गिडगिडाकर नहीं, साहस के साथ; क्षमता के साथ; पूर्णता के साथ की मुझे ये करना है बाकी मौका चला जाता है तो फिर कहा नहीं जा सकता की प्रकृति में वो संयोग वापस बनेगा या नहीं.

मित्रों, सदगुरुदेव के शब्द हमें आज तक साहस देते आये है और आगे भी देते रहेगे. हमने उन्ही के द्वारा प्रदत ज्ञान को वापस हमारे भाई बहेनो तक पहुचाने के लिए एवं उनके ही स्वप्न को एक सार्थक स्वरुप देने के लिए छोटे छोटे कदमो से कई साल पूर्व एक शुरुआत की थी और आप सब के सहयोग से आज हम उस स्वप्न की और पूर्ण रूप से गतिशील है. इसी क्रम में हमने वर्कशॉप तथा सेमीनार का आयोजन किया की इस ज्ञान का लोप न हो जाए तथा व्यवहारिक रूप से रहस्यों का पता चले उनके क्रियात्मक पक्ष के बारे में जान सके क्यों की जिसको तंत्र क्षेत्र में आगे बढ़ना है तो सदगुरुदेव प्रदत ज्ञान का सहारा प्राप्त करे, उस ज्ञान पर सभी का समान्तर रूप से हक है. इसी क्रम में इस बार का सेमीनार '**षट्कर्म एवं रस विज्ञान गूढ़ रहस्य**' पर आधारित है.

षटकर्म को हमने टोने टोटके मात्र समज लिया हो लेकिन वस्तुत: यह सत्य नहीं है. सदगुरुदेव कहते थे की मारण,वशीकरण या षट्कर्म का ज्ञान जिसको है वो व्यक्ति इस पृथ्वी पर अजेय है, उसको कोई हरा नहीं सकता. कितना अद्भुत सत्य है क्यों की यह त्रिगुण के ३ पुरुष एवं ३ स्त्री स्वरुप को ही अपने अंदर उतार देने की कला है.

शांति कर्म से व्यक्ति रोग शोक महामारी जीवन के कष्ट एवं अभावो को दूर कर सकता है अपने जीवन में भौतिक एवं आध्यात्मिक रूप से पूर्ण शांति को प्राप्त कर सकता है, जीवन के सभी दोष को समाप्त कर सकता है.

वशीकरण विद्या के सन्दर्भ में तो सब को ज्ञात है , इस विद्या से असंभव से असंभव कार्य किये जा सकते है किसी के विचारों पर अपना प्रभुत्व बना कर उसे बाध्य कर देना वो हर बात मानने के लिए जो हम चाहते है, ठीक वैसे ही जैसे हम चाहते है. भले ही वह एक व्यक्ति हो या समूह हो. इस विद्या के १२ भेद सदगुरुदेव ने बाताये है जो की अन्यतम है.

स्तम्भन – इस विद्या के बारे में बहुत कम जानकारी मिलती है, स्तमभन अर्थात रोक देना, चाहे वह व्यक्ति को रोकना हो, शत्रु को, किसी को बुद्धि को, किसी की प्रगति को, किसी की दुर्गति को, सभी प्रकार के स्तम्भन इस स्तम्भन विद्या के अंतर्गत आते है.

विद्वेषण – दो व्यक्ति या तत्वों के बीच के आकर्षण को खत्म कर देना या विकर्षण में बदल देना. यह विद्या के माध्यम से दो व्यक्तियो के बीच की संधि को तोडा जा सकता है. आकर्षण तत्व को मूल के साथ उखाड सकने की सामर्थ्य का नाम विद्वेषण विद्या है.

उच्चाटन – व्यक्ति का विच्छेद करना किसी स्थल से या दूसरे किसी व्यक्ति से. किसी शत्रु आदि को उच्चाटित कर उसे घर, नगर –शहर राज्य या देश से बहार निकलवा देना, धन का उच्चाटन कर उसके धन को नाश कर देना.

मारण – किसी भी व्यक्ति के प्राण को हर लेना उसे मृत्यु के मुख तक पंहुचा देना इस विद्या को मारण विद्या कहा जाता है.

यह षट्कर्म है, अब मित्रों कोई भी व्यक्ति इस तथ्य को समज सकता है की क्यों षट्कर्म जिसने जान लिए वह पृथ्वी में अजेय हो सकता है. क्यों की जीवन के सभी पक्षों से सबंधीत समस्याओ के समाधान इसमें है ही.

इसके साथ ही साथ रसायन विद्या जिसके माध्यम से हलकी निम्न धातुओ को रजत एवं स्वर्ण जैसी मूल्यवान धातुओ में परावर्तित किया जाता है तथा पारद के संस्कार कर उससे दुर्लभ सिद्धियों एवं आरोग्य की प्राप्ति होती है इस विद्या से सबंधित भी कई कई गुढ़ रहस्य है.

फिर षट्कर्म के विषय में श्री भगवान शिव कहते है की सूर्य को पृथ्वी पर भी गिराया जा सकता है :) तो निश्चय ही इस विद्या की सामर्थ्यता एवं सम्पूर्णता का अर्थ है, सार्थकता है. निश्चय ही इन कर्मो से सबंधित कई प्रकार के गुढ़ रहस्य है चाहे वह प्रारम्भिक क्रियाएँ हो या मुद्रा आदि लकिन अप्रकट रूप से कई रहस्य होते है जो की जनमानस के मध्य नहीं आते है क्यों की तंत्र गुरुगम्य विद्या है पोथी गम्य नहीं, पोथी पढ़ पढ़ कोई कुछ भी दंभ मार सकता है लेकिन गुरु के माध्यम से जो सिखा गया होता है वही क्रियात्मक ज्ञान ही सफलता प्रदान कर सकता है. हमारे सदगुरुदेव ने इसी प्रणाली से षट्कर्म से सबंधित कई कई तथ्य १९८०-१९८५ तथा तंत्र विद्या शिविर एवं व्यक्तिगत रूप से सामने रखे थे. इसी माध्यम से उन्होंने कई प्रकार से प्रायोगिक रूप से सारी क्रियाओ को कर के सब के मध्य रखा था.

यही सारे तथ्यों एवं कई विशेष प्रक्रियाओ को हम अपने भाई बहेनो तक पंहुचा सके यही कोशिश हमने सदैव की है तथा करते आए है. इस गुढ़ विषय के सबंध में भी कई भ्रांतियां फेली हुई है तथा इस विषय को नकारा गया है, लेकिन सत्य यह है की निश्चय ही वह व्यक्ति अजेय हो जाता है जिसने षट्कर्म सिद्ध कर लिए. वह अपने जीवन के साथ साथ किसी के भी जीवन को उतनी ऊँचाई पर ले जा सकता है जहाँ तक वो ले जाना चाहता हो और चाहे तो दुष्टों को सबक सिखाने के लिए वह उतना ही निचे भी गिरा सकता है. इसी हेतु आज के युग में अनिवार्यता महेसुस कर हमने 'षट्कर्म एवं रसविज्ञान गुढ़ रहस्य' विषय पर सेमीनार का आयोजन किया है. आप सब के उत्साह को देख कर निश्चय ही ख़ुशी होती है तथा हमें भी प्रेरणा मिलती है और भी तीव्र रूप से कार्य करने की. जैसे की आप सब लोग जानते है यह सेमीनार इसी महीने की २५ तारीख को है, अस्तु, जो भी भाई बहेन साधक इस सेमीनार में भाग लेने के इच्छुक हो वे **nikhilalchemy2@yahoo.com** पर संपर्क करे.

SADHNA VA POOJAN SE SAMBANDHIT KUCHH SMARNIY TATHYA

जय सदगुरुदेव,

ॐ गुरुत्व देवत्वं सह ज्ञानं |
दिव्यं दिवे च श्रियम मय ||

हे गुरुदेव ! आप हमारे लिए देवता स्वरुप हैं, आप ज्ञान पुंज हैं, दिव्य हैं, तेजश्वी हैं, आप अपने में सन्निहित कर एकाकार कर दें, हमें आप दिव्यता, श्रेष्ठता एवं पूर्णता प्रदान करें, यही श्री चरणों में विनती है ......

साधना, पूजा विधान सम्बन्धी कुछ महत्वपूर्ण तथ्य:

भाइयो बहनों मैने जब से अपने आप को चेतनायुक्त पाया है, सारा समय अर्थात अधिकांश समय पूजा पाठ और साधनायुक्त जानकारी एकत्रित करने और उसे क्रियान्वित करने में ही लगाया है. अन्य लोगों कि तरह मेरा भी ये प्रिय कार्य है..... :)

मैं सभी तरह, सभी प्रकार के पूजा पाठ में भाग लेती रही हूं चाहे वो कोई यज्ञ हो किसी भी प्रकार का अर्चन हो भगवत गीता का पाठ हो या नवचंडी या सहस्त्र चंडी यज्ञ हो, बजरंग पाठ यज्ञ हो या रामायण पाठ..... या कोई तांत्रिक हवन पूजा या अन्य कोई भी..... और इतने समय लगाने के पश्चात मेरा विश्लेषण ये है कि......

अनेक पूजा पद्धतियाँ प्रचलित हैं......किन्तु जो मत प्रचलित हैं वे हैं शाक्तमत,शैवमत और वैष्णव मत....

और सारी पूजा पद्धतियाँ इन्हीं की शाखा मात्र हैं. खैर ये विषय कुछ अलग है, अभी हम बात साधना और पूजा पद्धति पर बात कर रहे हैं.

भाइयों मेरे पास कुछ प्रश्न आते हैं कि......

क्या होना चाहिए पूजा पद्धति ?

क्या प्रतिदिन पूरा पूजन करें, किन्तु इसमें तो बहुत समय लग जाता है

क्या हम प्रतिदिन ही न्यास करें या ना करें, या करें तो कैसे ? ?????

मेरे प्रिय स्नेही भाइयों बहनों सबसे पहले हमें ये समझना होगा कि हम करना क्या चाहते हैं.... क्योंकि भिन्न पूजा, भिन्न साधना का विधान भी भिन्न ही होगा ना, अतः ... पहले ये तय कर लें कि क्या है उनकी दिनचर्या ...

हम जिस पूजा पद्धति से जुड़े हैं वो है वैदिक परम्परा जो कि हम प्रति दिन हमारे आसपास देखते हैं, किन्तु यही पद्धति उत्तर पूर्व कि ओर चलें जाएँ तो तांत्रिक पूजा पद्धति में परिवर्तित हो जाती है.

जो कि थोड़ी अलग है और जिसे तंत्र कि भाषा में दिव्य भाव या वीर भाव कि पूजा कही गयी है.

ये विषय भी अलग है..... अब हम साधना पद्धति और पूजा प्रक्रिया पर बात करते हैं ....

भाइयों बहनों सबसे पहली और महत्वपूर्ण है कि हम अपने घर में पूजा स्थान को प्राथमिकता दें क्योंकि वर्तमान समय में अत्यंत भौतिकता वादी तथा स्थानाभाव के कारण पूजा स्थल को ही स्थान नहीं दे पाते या देते भी हैं तो सबसे ऊपर छत पर मंदिर बना दिया जाता है, उसमें साधना कक्ष कहाँ है ?

भाइयों मेरा मतलब हमरे घर एक स्थान तो कम से कम साधना हेतु होना चाहिए ना जहां कोई बाधा ना हो और हम निर्विघ्न बैठकर मन्त्र जप या पूजा कर सकें..... हैं ना :)

कुछ पूजा पद्धातियाँ ऐसी होती हैं जिसमें मन्त्र जप नहीं होते किन्तु पूजा प्रक्रिया ही विशेस और लंबी होती है कि उसे बिना किसी बाधा के ही पूर्ण करना होता है जैसे...... नवरात्री मे दुर्गा पूजन और श्रावणमास मे शिव पूजन , इन पूजन में मन्त्र जप का विधान तो बाद कि बात है किन्तु इनकी स्थापन में ही एक उर्जा एक संतुष्टि और एक दिव्य भाव विकास होने लगता है जो कि एक अच्छी बात है साधना के लिए...इससे आपकी साधना हेतु पूर्व तैयारी भी हो जाती है......

अब हमें इस बात का ध्यान रखना होता है कि हम प्रति दिन पूजा करते हैं या साधना . क्योंकि इन दोनों में भेद हैं,

पूजा में जहाँ आप सिर्फ पूजा करते हैं जिसमें कि आप पंचोपचार या षोड्सोपचार करते हैं जैसे भगवान को आवाहन, अर्ध्य, स्नान, वस्त्र, तिलक श्रृंगार भोग धूप-दीप आरती आदि करते हैं किन्तु साधना.... :)

भाइयों साधना में संक्षिप्त पूजन कर मन्त्र जप को प्राथमिकता दी जाती है .....

भाइयों बहनों पूजा विधि मे अनेक बातों ध्यान रखना भी आवश्यक है....

१- प्रतिदिन पूजा स्थल को साफ सुथरा कर भगवान को स्नान आदि करवा कर पूर्ण श्रंगार करें भोग धूप-दीप से पूरा पूजन संपन्न करें ....

२- यदि आप पूजा के बाद मन्त्र जप भी करते हैं तो अति उत्तम, पर कम से कम यदि दीक्षित हैं तो अपने गुरुमंत्र की एक, चार, पांच या जितनी संभव हो माला अवश्य करें....

३- भाइयों बहनों! पूजा पद्धति पूर्ण रूप से प्रतीकात्मक होती है, अतः यदि आपके घर में जो भी विग्रह यंत्र आदि का स्थापन हो तो उन्हें स्नान आदि करवा दीजिए या फिर यदि उन्हें हिलाना संभव नहीं तो सामने एक कटोरी रख लें और पंचपात्र से ही प्रतीकात्मक पूजन करें यानि एक-एक आचमनी जल उतारें, छिडकें नहीं. भाइयों ! जल छिडकने का विधान है ही नहीं आप जल को उतारकर कटोरी मे डालें.....

४-जल का छिडकाव हम् अपने ऊपर पवित्रिकरण या दिशा बन्धन हेतु कर् सकते हैं,किन्तु देवो पर या किसी विगृह पर या यंत्रों पर जल छिडकाव का न कर सिर्फ पूरे सम्मान से आचमनी से जल उतारकर कटोरी मे या किसी भी पात्र मे ही डालें और बाद में उसे किसी पेड़ की जड़ मे डालें, उस पौधे या पेड़ को सिंचन भी मिलेगा और जल पैरों मे भी नहीं जायेगा ..... हैं ना :)

५- जब साधना करें तब -- मंत्र से सम्बन्धित सभी जानकारी प्राप्त कर लें, उससे सम्बंधित न्यास, विनियोग, ध्यान आदि प्राप्त कर ही साधना में प्रवृत्त हों .

एक प्रश्न है की क्या प्रत्येक साधना में न्यास आदि करना चाहिए ?

६- यथा संभव न्यास विधान का ज्ञान होना सफलता के सोपान को अधिक सरलता से पाने की क्रिया ही है और इसका ज्ञान साधक को होना चाहिए फिर भी कुछ मन्त्र ऐसे भी हैं कि जिनके न्यास ना भी करो तो भी पूर्ण सफलता मिलती ही है . जैसे गुरु मन्त्र जिसको हम सामान्यतः ऐसे ही कर लेते हैं, किन्तु इसका अर्थ ये नहीं कि गुरुमंत्र के न्यास या विनियोग नहीं है ये एक उदाहरण था कि ऐसा कर सकते हैं.

७- ये निर्भर करता है कि आप किस देव कि उपासना या साधना कर रहें हैं . आपको यदिउस मन्त्र के अधिष्ठाता देव, ऋषि, छंद और शक्ति, बीज आदि का ज्ञान है तो आप न्यास विनियोग कर सकते हैं .

वरना प्रिय भाइयों बहनों ! आप सिर्फ गुरुदेव कि साक्षी में सिर्फ संकल्प लेकर ध्यान करें और साधना प्रारंभ कर सकते हैं, और उससे भी पूर्ण सफलता मिलेगी, ये सदगुरुदे ने ही बताया है.

मन्त्र और गुरु पर श्रद्धा होने से ही आधा कार्य तो यूँ ही हो जाता है बाकी जप के बाद सफलता मिलनी ही है ... :)

भाइयों बहनों ! हम भिन्न मत और भिन्न देव से प्रेरित हैं और उसी के अनुसार साधना या पूजा भी करते हैं तो सब के लिए एक् से नियम नहीं हो सकते, क्योंकि सब की अपनी पूजा पद्धति है .

कोई शिव का उपासक है, कोई शक्ति का, कोई भैरव का, तो कोई गायत्रीका उपासक है तो कोई कृष्ण का. कोई राम मे विश्वास रखता है तो कोई राम भक्त बजरंगी में..... :)

किन्तु एक बात तो है जो हम सब को एक करती है और वो है गुरुदेव से जुडना . यहाँ पर सभी किसी ना किसी रूप मे गुरुवर से जुड़े हैं अतः उनकी यानि गुरु- साधना,पूजा या उपासना तो एक ही होगी ना .... :)

अतः गुरु साधना में रूचि रखने वालों साधकों हेतु कुछ तथ्य.....

१- प्रति दिन गुरु पूजन अवश्य करें पूरी श्रद्दा से, यदि समयाभाव हो तो चार माला गुरुमंत्र एक माला चेतना मन्त्र और एक माला गायत्री मन्त्र की अवश्य संपन्न करें.

२- यदि गुरु साधना कर रहें हैं या करने की सोच रहें है तो उससे पहले गुरु प्राणश्चेतना मन्त्र जितना संभव हो सके अवश्य करें. इसके साथ ही "ध्यान धारणा और समाधि" मे दिए हुए चेतना मन्त्र जो कल ही मैंने गर्भस्थ शिशु साधना में दिए हैं उन मन्त्रों को पांच बार पहले और पांच बार मन्त्र के आखिरी में अवश्य करें साधना सफलता के प्रतिशत बढ़ जायेंगे...... :)

भाइयों बहनों ! किसी भी साधना का आधार ही गुरु होते हैं अतः जीवन में गुरु साधना से वंचित ना रहें. सदगुरुदेव की चेतना उर्जा सदा आपको प्राप्त होती रहेगी,और आप प्रत्येक साधना को बड़ी आसानी से करते चले जाओगे और साधना की उच्चता तक दिव्यता तक पहुँचने से आपको कोई नहीं रोक सकता, क्योंकि आपके मार्गदर्शक गुरुदेव हैं जो निरंतर आपका हाथ पकड़कर उस दिव्य पथ पर चल रहें हैं .....

मुझे उम्मीद ही नहीं पूर्ण विश्वास है की आप सभी के लिए साधना मे उपयोगी सिद्ध होंगे..... तो तैयार हो जाइये साधना हेतु...... क्योंकि यही हमारा पथ भी है और शिष्य धर्म और कर्त्तव्य भी....... :)

GRAHAN VIDHAAN - SADGURUDEV PRADATT TANTRA BADHA NIVARAN PRAYOG

OM AING HREENG MAM SAMAST TANTRA DOSH NIVRITTYE HREENG AING PHAT

जय सदगुरुदेव,

नित्यं शुद्धं निराभासं निराकारं निर्जनम् |

नित्यबोधं चिदानंदम गुरूम ब्रहम नमाम्यहम ||

स्नेही भाइयों-

बहनों गुरु का जीवन मे एक महत्वपूर्ण स्थान हैक्योंकि बिना गुरु के जीवन बिन मांझी के नाव बिना और बिन लगाम के घोड़ेबिना है . अर्थात फिर जीवन सिर्फ खींचने के अलावा और कुछ नहीं.

क्योंकि यदि जीवन है तो सुख भी और दुःख भी, साधारण जीवन जिन्हें कुछ नहीं पता कि आखिर ये दुःख क्यों अचानक हमारे जीवन में आ रहे हैं क्यों अचानक अच्छी सुखमय जिंदगी नर्क बनती चली जा रही है ?

भाइयो फिर ऐसे अनेक प्रश्न उभरते हैं दिमाग में, और हम उलझते जाते हैं ऐंसे अनेक झंझावातों में, क्योंकि गुरु नहीं है ना जीवन में जो उबार सके ऐंसे कष्टों से, बता सके कि तंत्र क्या होता ? और क्या होती है तंत्र बाधा ?

मैंने ऐंसे अनेक परिवार देखे हैं जो बेचारे तंत्रबाधा के चलते मिटते चले गए बर्बाद होते चले गए .

तंत्र बाधा अत्यंत ही दुखदायी है किसी के भी जीवन में क्योंकि उसके बाद की जिंदगी बड़ी कष्टदायी और नारकीय हो जाती है . जरा सोचिये की एक तंत्र प्रयोग के बाद का जीवन कैसा होता है .

जब अचानक गृह का मुखिया जिसके सहारे पूरा परिवार पल रहा हो,अचानक रोगग्रस्त होकर बिस्तर से लग जाये, घर में बेटी की शादी बार-बार टूट जाये, नौकरी योग्य पुत्र की योग्यता पर प्रश्नचिन्ह लग जाये, रूपये पैसे की आवक रुक जाये, सामाजिक प्रतिष्ठा दांव पर लगी हो तो ?

भाइयों बहनों तंत्र प्रयोग करना एक अत्यंत सरल प्रक्रिया है. किन्तु इसके बाद के जो परिणाम होते हैं वे अत्यंत भयानक होते हैं क्योंकि इससे गुजरने वाला व्यक्ति या परिवार का जीवन नर्क

की भांति होता है जो असहनीय होता है ....

कुछ ऐंसी स्तिथियाँ बन जाती हैं कभी-कभी -- जैसे अचानक घर मे भयावह वातावरण बन जाये, बच्चे अचानक डर कर बीमार रहने लगें, घर में कलह की स्तिथी रहने लगे . और एक अजीब सा डर रहने लगे , तब समझना चाहिए कि निश्चित ही तंत्र बाधा हुई है,

किन्तु क्या इसका कोई उपाय है ?

वैसे आप लोग अक्सर पड़ते भी हैं की तंत्र बाधा निवारण दीक्षा, तंत्र बाधा निवारण प्रयोग.... आदि

तांत्रिक प्रयोग कोई भी कर सकता है , परन्तु उसके परिणाम व्यक्ति को गहराई से और पीड़ादायक भोगने पड़ते हैं, एक प्रकार से देखा जाये तो पूरी जिंदगी अस्त-व्यस्त हो जाती है . हमला करने या तांत्रिक प्रयोग करने कि विद्या सीखने बहुत साधना या मेहनत नहीं करना पड़ता परन्तु तांत्रिक प्रयोग यदि हो गया तो उसे दूर करने के लिए कठिन साधना या सिद्ध और अनुभवी व्यक्ति की जरुरत पड़ती ही है...... :)

चूँकि अभी हमारे समक्ष अत्यंत विशिष्ट समय का आगमन हो रहा है जब की हम ऐंसी ही किसी भी समस्या से ना केवल मुक्ति पा सकते हैं, अपितु अपने जीवन को ऐसी आने वाली समस्या से सुरक्षित भी कर सकते हैं .

और भाइयो बहनों वह समय है सूर्य ग्रहण का ... हैं ना :)

सूर्य ग्रहण अर्थात जीवन से किसी भी ग्रहण को दूर कर प्रकाशित करने का समय . ग्रहण काल मे की गयी कोई भी साधना अत्यंत तीव्रता से फलित होती है .

तो भाइयों बहनों यदि ऐंसी स्थिति है तो भी और नहीं हैं तो भी ताकि भविष्य को भी सुरक्षित कर सकें, कि ऐसा प्रयोग हो न सके या ऐसी स्तिथी ही बन पाए तो भी हमें इस प्रयोग को करना ही चाहिए हैं ना ..... क्योंकि मौका भी है और हमारी परंपरा भी . क्योंकि निखिल परंपरा के अनुसार हम कोई भी साधनात्मक अवसर को छोड़ते ही नहीं हैं..... :)

साधना विधि :- भाइयो चूँकि ग्रहण कल में विशेष पूजा नहीं की जाती अतः ग्रहण काल में किसी भी विगृह, यंत्र या मूर्ति का हाथ से स्पर्श ना करें .

इसके आवश्यक सामग्री हैं एक नारियल, कुंकुम, काजल और काली हकीक माला या मूंगा माला और तीन दिए जो कि सरसों के तेल के हों तो अति उत्तम या किसी भी प्रकार का तेल हो सकता है.......

स्नान कर दक्षिण मुख होकर आसन पर बैठ जाएँ और मानसिक गुरु पूजन कर ४,११,या १६ माला गुरु मन्त्र की करें तथा गुरु मन्त्र समर्पित कर गुरुदेव से आशीर्वाद प्राप्त करें औए संकल्प लें ...

अब अपने सामने भूमि पर कुंकुम को जल से गीला कर अधोमुखी त्रिकोण का निर्माण करें.औरत्रिकोण के तीनो कोने पर सरसों तेल का दीपक प्रज्वलित कर लें.

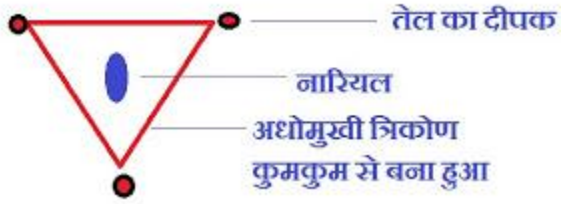

उसके बाद नारियल को उस पर ऐसे स्थापित करें कि उसके पूंछ ऊपर की ओर हो.

काजल से निम्न मन्त्र बोलते हुए सात बिंदियाँ नारियल पर लगावें......

मन्त्र:-

"ॐ ऐं ह्रीं मम समस्त तंत्र दोष निवृत्त्ये ह्रीं ऐं फट्"

OM AING HREENG MAM SAMAST TANTRA DOSH NIVRITTYE HREENG AING PHAT

अब काली हकीक माला अथवा रुद्राक्ष या मूंगे की माला से इस मन्त्र की ११ माला जप करें.

और इसके पश्चात गुरु मन्त्र कि चार माला जप कर गुरुदेव से प्रार्थना करें कि ये साधना सफल हो और हमारे जीवन से तंत्र बाधा दूर हो और हम सदैव सुरक्षित रहें......

साधना समाप्ति के बाद या दूसरे दिन नारियल को किसी सुनसान स्थान पर विसर्जित कर दें ..... :)

"निखिल प्रणाम"

SWARN RAHASYAM-RAS TANTRA AUR MAHASIDDH GUTIKA NIRMAN RAHASYA-स्वर्ण रहस्यम - रस तंत्र और महासिद्ध गुटिका निर्माण रहस्य

रस तंत्र के उत्थान के लिए जितना परिश्रम नाथ योगियों ने किया है,उतना किसी और ने नहीं किया,बल्कि ये कहा जाये की नाथ योगियों से ही इस विद्या के प्रादुर्भाव को सार्थकता मिली है.इन नाथ योगियों ने ही अपनी अथक तपस्या से सृष्टि के उन गोपनीय रहस्यों को आत्मसात किया और उन सूत्रों के सहयोग से विभिन्न क्रियाओं,प्रक्रियाओं ,तत्वों,पदार्थों,वनस्पति का योग पारद के साथ किया और उनके प्रभावों को लिपिबद्ध किया.उसी के परिणाम स्वरुप हमें इस विज्ञानं से सम्बंधित प्रचुर साहित्य प्राप्त हुआ है.रस रत्नाकर, रसार्णव आदि बहुत से ग्रन्थ आज भी प्राप्य हैं और बहुत से ऐसे ग्रन्थ हैं जो की या तो अप्राप्य है या फिर जिनके पास है वो कदापि इन्हें किसी को दिखाना या देना पसंद नहीं करते हैं.मुझे ज्ञात है की १९९४ में सदगुरुदेव ने **'पारद कंकण'** नामक ग्रन्थ की रचना की थी और उन्होंने उसे छपवाने के लिए जब प्रेस में कार्यरत गुरुभाई को बुलाया और कहा की वे इस किताब की ५० प्रतियां छपवाना चाहते हैं और वो भी कल सुबह तक.ये घटना रात्रि के ११ बजे की है. परन्तु उन गुरु भाई ने विनम्रता पूर्वक सदगुरुदेव को बताया की सदगुरुदेव इस साइज के पेपर उपलब्ध नहीं हैं और यदि दुसरे साइज के कागजो को उस नाप में काटा भी गया तो भी रात्रि भर में ये नहीं छप पायेगी. सदगुरुदेव ने उस किताब को हाथ में लेकर वही फाड दी. अब ना जाने कौन सा दुर्लभ ज्ञान हमारे समक्ष प्रकाशित होने वाला था,परन्तु हमारा दुर्भाग्य आड़े आ ही गया.

खैर प्रज्ञानंद जी ने मुझे कभी बताया था की सदगुरुदेव के वरिष्ठ सन्यासी शिष्यों ने उनके निर्देशन में ऐसे बहुत से ग्रंथों की रचना की थी जिसमे तंत्र के विविध गोपनीय रहस्यों का संकलन होता था. पर

उन्होंने उन्हें कई बार प्रकाशित भी नहीं करवाया.परन्तु ऐसी कई डायरियाँ उनके विविध शिष्यों के पास सुरक्षित रखी हुयी हैं धरोहर के रूप में. उन्ही में से एक ५०० पेज की डायरी मुझे दिखाई जिस पर हस्तलिखित अक्षरों में **"रसेद्र मणि प्रदीप"** लिखा हुआ था,जिसमे पारद के सहयोग से विविध अचरजकारी गुटिकाओं का निर्माण करना बताया गया था.उसी में एक प्रकरण विविध मन्त्रों और वनस्पतियों के सहयोग से साबर मन्त्रों के द्वारा खेचरी गुटिका,स्पर्श मणि,महासिद्ध साबर गुटिका आदि ५४ गुटिकाओं के निर्माण पर था.जिसे उच्च नाथ योगियों के आवाहन कर प्राप्त किया गया था.और आश्चर्य ये था की ये सब निर्माण कार्य साबर मन्त्रों के सहयोग से होता है, अद्भुत पद्धतियों का समावेश लिए हुए ये क्रियाएँ थी.सर्वप्रथम जिस गुटिका की निर्माण विधि इस प्रकरण में अंकित थी वो इसी **महासिद्ध साबर गुटिका** की विधि थी...... जिसके प्रयोग से उन महासिद्धों का न सिर्फ आवाहन होता था अपितु विविध मनोकामनाओं की पूर्ती हेतु जिन भी साबर मन्त्रों को सिद्ध करना होता था,वे सभी सहजता से सिद्ध हो जाते हैं.

इस गुटिका के निर्माण के लिए जिस **अष्ट संस्कारित पारद** का प्रयोग किया जाता है उसके सभी संस्कार **रसांकुश भैरव** और **भैरवी** के मन्त्रों से होता है परन्तु ये मंत्र जप दीपनी क्रम युक्त होना चाहिए,तभी इस पारद में वो प्रभाव आएगा जो इस मणि के निर्माण के लिए अपेक्षित है.तत्पश्चात इसे **स्वर्ण ग्रास** दिया जाये और इसे**मुक्ता पिष्टी** के साथ खरल किया जाये,जब पारद के साथ उस पिष्टी का पूर्ण योग हो जाये तब उसे,**काले विष, विशुद्ध ताम्र भस्म,बैंगनी धतूरे,सिंहिका,मतस्याक्षी,श्वेतार्क और ताम्बूल के स्वरस** के साथ १२० घंटों तक खरल किया जाये,और खरल करते समय-

ॐ सारा पारा,भेद उजारा, देत ज्ञान उजारा ,दूर अँधियारा,शिव की शक्ति उरती आये,भीतर समाये,करे दूर अँधियारा जो ना करे तो शंकर को त्रिशूल ताडे,शक्ति को खडग गिरे,छू .

उपरोक्त मंत्र का जप करते जाये,जब भी रस सूखने लगे तो नया रस डालते जाये ,जब समयावधि पूर्ण हो जाये तो उस पिष्टी को सुखाकर शराव सम्पुट कर २ पुट दे दे,और स्वांग शीतल होने के बाद उस पिष्टी के साथ पुनः **मनमालिनी मंत्र** का जप करते हुए उस पिष्टी का १० वा भाग पारद डालकर खरल करे और मूष में रख कर गरम करे और धीरे धीरे विल्वरस का चोया देते जाये,लगभग १० गुना रस धीरे धीरे चोया देते हुए शुष्क कर ले.अब आप इसे पिघलाकर गुटिका का आकार दे दे,इस क्रिया में पारद अग्निस्थायी हो जाता है और गुटिका हलके रक्तिम वर्ण की बनती है जो पूर्ण दैदीप्य मान होती है.यदि पारद अग्निसह्य नहीं हुआ तो क्रिया असफल समझो.इस गुटिका को सामने रख पुनः ३ घंटों तक **रसांकुश मन्त्रों** का **दीपनी क्रिया** के साथ जप करो और **गोरख मन मुद्रा** का प्रदर्शन करो.तथा इसके बाद**प्राण प्रतिष्ठा मन्त्रों** से इसे प्रतिष्ठित कर इसमें **६४ रस सिद्धों** का स्थापन कर दो,फिर षोडशोपचार पूजन कर उस पर आप मनोवांछित प्रयोग कर सकते हैं.इसे**कनकधारा मंत्र** से यदि २१ माला मंत्र कर

सिद्ध कर लिया जाये और पूजन स्थल पर स्थापित कर दिया जाये तो ये गुटिका लक्ष्मी को बाँध देती है जिससे व्यक्ति को प्रचुर ऐश्वर्य की प्राप्ति होती ही है.

====================================

अष्ट संस्कारित पारद को यदि स्वर्णग्रास देकर कांच की बोतल में गधे के ताजे मूत्र के साथ डालकर जमीन में गडा दिया जाये तो ६ मास के बाद पारद की स्वतः भस्म बन जाती है और ये भस्म ताम्बे को स्वर्ण में परिवर्तित करती है.

====================================

For the development of Rass Tantra the hard work and devotion performed by yogis nobody else could do the same that's why we can say that this science is presented in its present full fledge form just because of them. It was the same yogis who with their strong reverence explored the hidden aspect of nature and then successfully co-joined those natural powers with different elements, particles and flora and further joined these things with parad (mercury) and successfully recorded its results on the paper as well. And due to their written records we have great grand literature about this science. Rass Ratnaker, Rasarnav granths belongs to this category and there are many other granths too which are either not available or the people who has don't want to give them to anybody. I still remember in 1994 Sadgurudev compose and compile a granth named **PARAD KANKAN** and in order to get it printed he called a gurubhai who was working in a press but as soon as he said that to get this granth printed desired pages were not available and also there is no chance to create that type of pages through the cutting and re-setting of normal pages. As Sadgurudev heard it he immediately torn that hand written manuscript and we lost valuable knowledge without knowing its basics due to our bad luck. While leaving it behind I remembered once Pragyanand ji told me that under the supervision of Sadgurudev many of his pupils had written precious literature on the secrets and mysterious of tantra though they did not get them printed yet keep them carefully in the form of diaries. Out of those he showed me one diary having 500 pages with the title **RASENDRA MANI PRADEEP**, in which there were countless procedures were written through which amazing gutikas can be made with the help of parad. Out of these practices one was based on the fact that how with the trio combination of different mantras, flora and sabar mantras Khechri gutikas, Sparsh Mani, Mahasidhi Sabar gutika and 54 another gutikas like this can be made. The first procedure recorded in that was about the making process of this Mahasidhi Sabar gutika……with the help of not only Mahasidhs can be enchanted and called but also fulfilled every desire and also was helpful to sidh the tough sabar sadhnas.
For the making of this gutika Ashht Sanskarit Parad is used that too should be sanskarit with the mantra of RASANKUSH BHAIRAV and BHAIRAVIbut these mantra should be systematically organized as per JAPP DEEPNIsystem so that parad can get desired effect which is must for the creation of this Mani. Than one should offer Swarn grass and get it mixed with MUKTA PISHHTI. When it make proper good mixture then again this mixture should be blended with Black Venom (kala vish), **Pure Tamrr Bhasam, Purple tutia (dhatura),Sinhika, Mastyakshi,Shwetarak and Tambool** for 120 hours and at the time of mixing them one should enchant the mantra-

OM SARA PARAA,BHED UTARA,DET GYAN UJAARA,DOOR ANDHIYARA,SHIV KI SHAKTI URTI AAYE,BHEETAR SAMAAY,KARE DOOR ANDHIYAARAA JO NA KARE TO SHANKAR KO TRISHOOL TAADE,SHAKTI KO KHADAG GIRE,CHHOO

When it seems that mixture is getting dried then again put some more mixture in it and when 120 hours get passed then get that Pishti dried and make it shrav sambut by Putting it fire for decided time period. After that when this whole mixture cools down then again with that Pishti blend 1/10 part of parad by keep on enchanting Mammalini Mantra then slowly-slowly make it hot and offer VILVRAS's liquid to it. By offering near about 1/10 liquid make it complete dry. Now firstly melt it and then convert in the form of gutika. In this whole process parad make itself fire proof due to that gutika took light blood color which is fully authentic. But if parad remain fails to get the quality of fire proof then it is decided that whole procedure is failed. By putting this gutika in front of you continuously for 3 hours enchant RASANKUSH mantra with DEEPNI KRIYA while doing this one should display Gorakh Mann Mudra. Now with the help of pran pratishthit mantras get it pratishthit and then sthapan (make presented) **64 RASS SIDHS** in it. And then by making **SHHODASH UPCHAR** on it you can do desired practical. If this gutika can be get sidh by moving the beads of rosary for 21 times of**KANAK DHARA** mantra then this gutika can settle down Maa Laxmi in your desired place forever and ever which will bless your life with comforts and luxuries.

By offering Swarn grass to Ashht Sanskarit parad and then put it in glass bottle with the fresh urine of donkey and further then putting this bottle under the earth for 6 months then this parad converts itself in BHASAM which has the capacity to change copper into gold.

Posted by Nikhil at 10:29 PM 2 comments:

Labels: PAARAD, SWARNA RAHASYAM

WEDNESDAY, MAY 23, 2012

Swarna Rahasyam - rare but satik experniment form gold making - स्वर्ण रहस्यम- दुर्लभ परन्तु अचूक स्वर्ण निर्माण प्रयोग

तंत्र शास्त्र के रस तंत्र शाखा में **स्वर्ण लक्ष्मी** की साधना का अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान है और यदि इस मंत्र का पूर्ण विधान से निर्मित **विशुद्ध संस्कारित पारद शिवलिंग** के सामने २१ दिनों में ५४ हजार मन्त्र जप

कर लिया जाये तो स्वर्ण निर्माण की क्रिया में शीघ्र सफलता मिल जाती है, ऐसा मुझे सदगुरुदेव के सन्यासी शिष्य राघव दास बाबा जी ने बताया था.समृद्ध होना हमारा अधिकार है और रस शास्त्र के माध्यम से ऐश्वर्य प्राप्त किया जा सकता है.इसमें मन्त्र योग तथा क्रिया विशेष का योग करना पड़ता है. प्रत्येक क्रिया की सफलता के पीछे मन्त्र विशेष की शक्ति कार्य करती है. ऐसा नहीं है की किसी भी रसायन सिद्धि मन्त्र से कोई भी रस कार्य को सफल कर दिया जाये, हाँ ये अलग बात है की सद्गुरु प्रसन्न होकर मास्टर चाबी ही आपको दे दे, परन्तु वो उनकी प्रसन्नता का विषय है. नीचे जो २ प्रयोग दिए गए हैं वे स्वर्ण लक्ष्मी मन्त्र से सम्बंधित ही हैं, यदि इन कीमिया के प्रयोगों को न करे तब भी नित्य प्रति इस मन्त्र की एक माला आर्थिक अनुकूलता और धन की प्राप्ति साधक को करवाती ही है.
मन्त्र कमलगट्टे की माला या पारद माला से जप होना चाहिए.

मन्त्र-

ॐ ह्रीं महालक्ष्मी आबद्ध आबद्ध मम गृहे स्थापय स्थापय स्वर्ण सिद्धिम् देहि देहि नमः ||

मन्त्र जप के बाद साधक या रस शास्त्र के जिज्ञासुओं को निम्न प्रयोग करके अवश्य देखना चाहिए, इन प्रयोगों को मैंने राघवदास बाबा जी को सफलता पूर्वक करते देखा है, और एक बात मैंने ध्यान दी थी की वे ,पदार्थ का रूपांतरण करते समय इस मंत्र का स्फुट स्वर में उच्चारण किया करते थे और स्वच्छ वस्त्र धारण करके ही ये प्रयोग ,साफ़ जगह पर किये जाते हैं.

१. **२५ ग्राम शुद्ध नीले थोथे को श्वेत आक के आधा पाँव दूध से खरल करके उस कज्जली में शुद्ध सीसा १० ग्राम मिला कर सम्पुट बनाकर २० किलो कंडों की अग्नि देने से भस्म तैयार हो जाती है. १० ग्राम रजत को गलाकर उसमे १ रत्ती भस्म डालने पर स्वर्ण की प्राप्ति होती है. स्वर्ण लक्ष्मी मन्त्र के माध्यम से भस्म स्वर्ण बीज से यौगित हो कर चाँदी में स्वर्ण की उत्पत्ति कर देती है.**

२. **शुद्ध जस्ता का बुरादा और शुद्ध पारद १-१ तोले को लेकर मंत्र जप करते हुए जंगली गोभी के रस में २४ घंटे तक घोंटे,उसके बाद उसे सम्पुट बनाकर ८ तोले सूत से लपेटकर ३ किलो बकरी की मेंगनी में रखकर आग लगा दे .आग बंद वायु में लगाना है, ना की खुले स्थान पर, स्वांग शीतल होने पर जो भस्म मिलेगी , वो चांदी और शुद्ध ताम्बा , दोनों का रूपांतरण स्वर्ण में कर देती है.**

In Tantra Shastra, in the branch of Ras Shastra the **Swarna Lakshmi Sadhna** keeps unique significance in it. and if this mantra is done with whole procedure of before **Vishudhh Sanskarit Paaradh Shivling** in 21 days completes the 54 thousands mantra jap then you get success in gold making process very soon. As this was being told me by Sadgurudevji's sanyasi disciple Shree Raghav Das babaji. Becoming wealthy is our birth right.And by Ras Shastra we can achieve it. See, in this the balance of mantra yog and kriga yog is needed. At success of each level, a specific mantra works. It is not like that by any rasayan siddhi mantra u can accomplish any level. Oh yaa that totally different part if sadgurudev get happy and give u the main key. But thats the subject of his happiness. Isnt it!!.... well below give two experiments are

related with swarna lakshmi mantra. If you do not perform the whole procedure but only do the one mala on daily basis of the below mantra, you will get positivty in Financial matters and generates wealth for you.
Mantra should be done by Kamalgatta mala or Parad mala.

Mantra - Om hreem mahalakshmi Aabaddhh Aabaddhh mam gruhe sthapay sthapay swarna siddhim dehi dehi namah

After doing mantra jap sadhak or seeker of ras shastra should do this experiment necessarily. I have seen all these experiments performing raghav Das Babji successfully. And one thing which i noticed was while converting substance he chanted the mantra in bursting sound with clean cloths at clean place.

1. **25 gms blue copper sulphat should be mixed in 250ml White AAK milk and in that kajjali mix the pure lead 10gms and mixed it properly. after giving flames to 20 kg cow dung cakes converts into ashes. Now melt 10 gm silver and mix 1 ratti ash.you will get gold in result. Via Swarna Laksmi mantra and getting together with ashes the silver gets converts into gold.**

2. **take pure zink powder and pure mercury in 1-1 tola, while mantra chanting just grind it in wild califlower juice for 24 hours. then make a round ball of it and rapp up in 8 tala sut , 3 kg goat's mengni and then fire it. fire it closed air not it open space, after getting cold whatever ash will find would be pure silver or copper and coverts both into gold.**

****NPRU****

Posted by Nikhil at 12:58 AM 4 comments:
Labels: LAKSHMI SADHNA, PAARAD, SWARNA RAHASYAM

SUNDAY, APRIL 22, 2012

निश्चित यक्षिणी सायुज्य गुटिका निर्माण(NISHCHIT YAKSHINI SAYUJYA GUTIKA NIRMAAN)

पारद प्राणशक्ति को तीव्रता के साथ आकर्षित कर लेता है ,और इसकी चंचल प्रकृति को जब मंत्रो,वनस्पतियों और रत्नों तथा धातुओं के योग से बद्ध किया जाता है तब ये बद्ध स्वरुप में आपके किसी

भी अभीष्ट को पूर्ण करने की क्षमता रखता है. यक्षिणी साधना के लिए निश्चित यक्षिणी सायुज्य गुटिका एक अनिवार्य सामग्री है .ये गुटिका जिस किसी के भी पास होती है,यक्ष लोक से उसका संपर्क सरल हो जाता है.यदि साधक इसको सामने रख कर साधना करता है तो निश्चय ही उसे सफलता प्राप्त होती ही है.अभी तक इस गुटिका की निर्माण विधि को अत्यंत ही गुप्त रखा गया था परन्तु सदगुरुदेव ने अपने शिष्यों को हमेशा ही ज्ञान रुपी मशाल हाथ में थमाई है,अज्ञान के,भ्रम के अन्धकार को दूर करने के लिए. आज इन पन्नों पर मैं आपको वही कलेजे का टुकड़ा निकाल कर दे रहा हूँ ताकि मेरे गुरु भाई बहन उस सफलता को प्राप्त कर सके जो की उनका साधना के क्षेत्र में स्वप्न रही है.

१५ ग्राम अष्ट संस्कारित पारद लेकर उसमे १ रत्ती हीरक भस्म,२ ग्राम स्वर्ण का चूर्ण,३ ग्राम रजत चूर्ण दाल कर शिवलिंगी और पान के रस से खरल करे ,ये खरल की क्रिया अपने आसन पर बैठ कर की जानी चाहिए,खरल करने के साथ साथ रसायन सिद्धि मंत्र का भी जप किया जाना है.

ओम नमो नमो हरिहराय रसायन सिद्धिं कुरु कुरु स्वाहा

ऐसा ८ घंटे तक करने के बाद उस खरल पात्र में सेंधा नमक और गरम पानी डालकर खरल करे जिससे पानी काला होता जायेगा.तब उस पानी को बहार फेक दे,ध्यान रखना कही पारद बाहर न गिर जाये और ये नमक मिश्रित पानी डालकर तब तक खरल करे जब तक पानी काला आता रहे जब,पानी साफ़ आने लग जाये तब उस पारद को, जो की पिष्टी रूप में हो गया होगा को निकाल कर सूती कपडे से छान ले,कपडे में ठोस पारद बचा होगा जिसे निकाल कर गोली बना ले और ३ दिन के लिए शिवलिंगी के रस में रख दे ,जिससे वो कठोर हो जाये. तत्पश्चात इस गुटिका को शुक्रवार के दिन प्रातःकाल में श्वेत वस्त्र पर स्थापित कर ले और स्वयं भी श्वेत वस्त्र धारण कर पहले गुरु पूजन ,गणपति पूजन और दीपक पूजन करे,तथा गुरु मंत्र की २१ माला जप करे ,उस गुटिका के सामने घृत का दीपक स्थापित होना चाहिए. सबसे पहले गुटिका का पंचोपचार से पूजन करे तत्पश्चात यक्षिणी का आवाहन निम्न मंत्र और मुद्रा से उस गुटिका में करे,याद रखिये की जिस यक्षिणी का आप आवाहन कर रहे हो अमुक की जगह उसी का नाम लेना है –

ओम आं क्रौं ह्रीं नमः अस्तु भगवति अमुकं यक्षिणी एहि एहि संवोषट

इसके बाद यक्षिणी को उस गुटिका में आसन प्रदान करे,ये क्रिया अनामिका के द्वारा गुटिका को स्पर्श करते हुए करे ,इस मंत्र का ११ बार उच्चारण करना है.

ओम आं क्रौं ह्रीं नमः अस्तु भगवति अमुकं यक्षिणी तिष्ट ठ: ठ:

इसके बाद निम्न मंत्र का २१ बार उच्चारण करते हुए अक्षत को उस गुटिका पर डाले.

ओम आं क्रौं ह्रीं नमः अस्तु भगवति अमुकं यक्षिणी मम सन्निहिता भव भव वषट्

फिर निम्न मंत्र का उचाचरण करते हुए पंचोपचार से उस गुटिका का पूजन करे.

ओम आं क्रौं ह्रीं नमः अस्तु भगवति अमुकं यक्षिणी जल अक्षत पुष्पादिकान् गृण्ह गृण्ह नमः

इसके बाद निम्न मन्त्र की २१ माला मंत्र जप यक्षिणी माला से करें, ये सम्पूर्ण क्रिया ३ दिनों तक करनी है.

ओम ह्रीं श्रीं क्लीं ब्लूम् ऐं श्रीं पद्मावती देव्यै अत्र अवतर अवतर तिष्ठ तिष्ठ सर्व जीवानां रक्ष रक्ष हूं फट् स्वाहा

इसके बाद विसर्जनी मुद्रा से निम्न मंत्र का उच्चारण करते हुए यक्षिणी का विसर्जन करे.

ओम आं क्रौं ह्रीं नमः अस्तु भगवति अमुकं यक्षिणी स्वस्थानं गच्छ गच्छ जःजः

इस क्रम को पूर्ण करने पर एक तेजस्विता सी उस गुटिका में दृष्टिगोचर होती है और वो थोड़ी गर्म भी लगती है.इसका अर्थ ये है की अब उसमे यक्षिणी की प्रनाश्चेतना का सयुज्ज्यी करण हो गया है. इस गुटिका पर इसी पद्धति से किसी भी यक्षिणी की साधना की जा सकती है और यदि मात्र ये घर में भी रहे और नित्य इसके सामने पूजन हो तब भी ये आर्थिक अनुकूलता देती है और भविष्य की दुर्घटनाओं से बचाती है.

रजत कल्प –दो तोला श्वेत सोमल लेकर उस पर त्रिवर्णात्मक मंत्र का जप १००८ बार करे और ठीक इसी प्रकार काली गाय के दूध पर भी इतनी बार ही मंत्र का जप करे,बाद में दौला यन्त्र से इस सोमल को उस दूध में पचित करे.जब दूध समाप्त हो जाये तो,सोमल को निक्कल कर गंगा जल से धकर उसके सामने ११००० बार मंत्र जप करें. फिर १० ग्राम ताम्बे को अग्नि में गला कर उसमे इस सोमल की २ रत्ती मात्र को मोम में लपेट कर दाल दे और चर्ख दे.सारा ताम्बा चांदी में परिवर्तित हो जायेगा.ये क्रिया श्री कालीदत्त शर्मा जी की है,जो अनुभूत की हुयी है.

Mercury attracts the Pranashakti very soon and when its trembling nature is controlled via Mantra, Herbs and Stones and metals all togetherly when empower mercury then this parad becomes the ultimate source for u to accomplish ur wishes. For Yakshini sadhna the Nishchit Yakshini Sayujya Gutika is cumpulsory. Whomsoever will possess this gutika would definitely achieve the success. Till now the procedure of making this gutika has been kept very secretful. But Sadgurudev always given a torch in form of knowledge in their hands to remove the darkness and illusions from our lives. Today on these pages I m giving that beloved part of my heart so that my co guru brothers and sisters can achieve those steps of success which just a dream of them. Take 15 gms Ashta Sanskarit Parad, 1 ratti HIrak bhasma, 2 gms gold powder, 3 gms silver powder on shivlingi and grind it in pan juice, now take this grinded mixture(hey hey it should be done on asan only) and while grinding just chant the Rasayan Siddhi Mantra also.

OM NAMO NAMO HARIHARAAYA RASAAYANAY SIDDHIM KURU KURU SWAAHAA.

Do it continuously for 8 hours..after that put some white rock salt and warm water and again grind it so that the color becomes black. Then take out that black water and throw it.Be careful the mercury should not go away while throwing water.now now put this roch salt water and grind it again till the moment th balck water comes out. When the clean water comes out and becomes fine then take cotton thin cloth and filter it. The remaining alchemy in the cloth is solid

mercury. And make a tablet of it. And then keep it in shivlingi juice for 3 days. So that it will become more solid and dense. Then after on Friday morning take this gutika establish it on white cloth in worship area. U also wear a white clothes.Then start Guru pujan, Ganapati Pujan, Lamp Pujan then Guru mantra 21 malas, then enlight the lamp infront of that gutika. First of all the panchopchar pujan must be done. Then call Yakshini via following mantra and mudra on this gutika. Be careful whichever yakshini u are calling should pronounce her name instead of 'amuk'…okkk-

OM AAM KROUM HREEM NAMAH ASTU BHAGWATI AMUKAM YAKSHINI EHI EHI SANVOSHAT

Then after offer the asan in gutika to tha yakshini, this should be done by ring finger via touching the gutika, and chant mantra for 11 times.

OM AAM KROUM HREEM NAMAH ASTU BHAGWATI AMUKAM YAKSHINI TISHTH THAH THAH.

Then after chant above mantra for 21 times and offer akshat(rice) on gutika.

OM AAM KROUM HREEM NAMAH ASTU BHAGWATI AMIKAM YAKSHINI MAM SANNIHITAA BHAV BHAV VASHAT

Then after while chanting this above mantra do the panchopchar on gutika and do the worship.

OM AAM KROUM HREEM NAMAH ASTU BHAGWATI AMUKAM YAKSHINI JAL AKSHAT PUSHPADIKAAN GRUNH GRUNH NAMAH

Then after from above mantra chant for 21 malas by yakshini mala, this whole procedure should be done for 3 consecutive days.

OM HREEM SHREEM KLEEM BLUM EM SHREEM PADMAVATI DEVYE ATRA AVATAR AVATAR TISHTH TISHTH SARVA JEEVANAM RAKSHA RAKSHA HUM FAT SWAAHAA.

Then after in Visarjani Mudra chant this mantra and devote the yakshini.

OM AAM KROUM HREEM NAMAH ASTU BHAGWATI AMUKAM YAKSHINI SWASTHANAM GACH GACH JAH JAH.

Now after completing the series the gutika becomes glowy and it is reflects. And some what hot also.it also means that the pranashchetna of yakshini is established. Well on this gutik with same procedure many more yakshini sadhna can be performed. And if at all she just stay at home and daily worship rituals happenes then also financial condition would be always remain favourable and protects u from future accidents aslo.

Rajat kalpa

Take 2 tola or 10 gms swet somal and on it chant Trivarnatmak mantra for 1008 times and exactly in same was on black cow milk also. Then by Daula Yantra make somal drink such black cow milk. when milk gets over then take out somal from it and wash it from Ganga Jal.Then chant for 11000 times the mantra. Then melt the 10 gms copper in fire and take 2 ratti of somal and wrap up it in wax and rotate it with ful speed. The whole copper would be converted into silver. This process is given by Shree Kalidutt Sharmaji which have experienced personally..

******NPRU******

Posted by Nikhil at 11:00 AM No comments:

Labels: PAARAD, SWARNA RAHASYAM, YAKSHINI SADHNA

SATURDAY, APRIL 21, 2012

पारद स्वर्ण अणु सिद्धि गोलक-A Very Rare and Miraculous Parad swarn anu siddhi Golak

धर्मार्थ मुप्भोगानाम नष्ट राज्य विवार्धाये |

आयुर्योवंलाभार्थे मुक्तयेर्थ च मुमुक्षुणाम ||

यह विद्या (.******"पारद तंत्र विज्ञानं "***) जनता को धर्म , अर्थ, काम की प्राप्ति कराती , राजाओं को नष्ट राज्य की प्राप्ती और राज्य वृद्धि में सहायक और गृहस्थो को दीर्घायु , यौवन प्रदान करने वाली और मुमुक्षुओं को मुक्ति प्रदान करती हैं

पारद तंत्र के जानकार आज बहुत ही कम हैं और जो हैं भी तो उन दूर दराज पहाडो पर हैं जहाँ की जन सामान्य पहुँच पाना बिलकुल असंभव हैं . और जो हमारे बीच हैं उनके बारे में तो समझ पाना शायद और भी कठिन हैं .पर जो आज हमारे मध्य हैं वे यह तथ्य उद्घाटित करते हैं की .... रस ग्रन्थ लगभग 60 ,000 गुटिका या गोलक के बारे में बताते हैं और इन सभी के निर्माण की प्रक्रिया और लाभ पर सभी मौन ही हैं . एक से एक अद्भुत रहस्य से भरा यह क्षेत्र हैं .

रोगपंकाब्धिमग्नाना..पारदानाच्च पारदः ||

रोग रूपी सागर में डूबे हुए मानव को पार या मुक्त कर दे .यह पारद तंत्र विज्ञानं से ही संभव हैं किस रोग की बात यहाँ की गयी हैं??? वस्तुतः यहाँ पर आध्यात्मिक , देहिक ,मानसिक , भौतिक सभी रोग को शामिल किया गया.

"सकल पदारथ हैं जग माही ,भाग्यहीन नर कछु पावत नाही "

आखिर कब तक टूटे हुए .भाग्य या अजगर के सामान सोये भाग्य का रोना रोते रहा जाए ..आखिर कहीं तो ...अंत हो ....कम से कम तंत्र क्षेत्र के साधको और सदगुरुदेव के शिष्य होने के बाद तो यह हाथ पर हाथ धरे ...... शोभा ही नही देता हैं ...

तो कैसे सभव हो .जीवन की हर प्रतिकूलता में विजय श्री का वरण करना ...क्या यह संभव हैं .??

क्यों नही ...और यही बात आती हैं रस शास्त्र की ...उसकी उपयोगिता की ...

रस शास्त्र अपने आप मे अत्यंत ही उच्च कोटि के ज्ञान और विज्ञानं से आपूरित हैं .पर विगत कुछ कालों में इसको मानो भुला ही दिया गया .पर अब एक नयी प्रकाश किरणे पुनः अपनी उज्ज्वलता और अपने तेज से इस अत्यंत उच्च कोटि स्थ तंत्र विज्ञानं से हमारा परिचय करा रही हैं .

कोई भी विज्ञानं कितना उच्च कोटि का क्यों न हो अगर वह हमारे दिन प्रति दिन के जीवन में उपयोगी अगर ना हो सके तो उसका क्या अर्थ हैं .

पारद तंत्र विज्ञानं के साथ ऐसा नही हैं .

यह तो ....“भोगस्थ मोक्षस्थ करस्थ एव च “.

की धारणा को सामने प्रत्यक्ष रूप से रखता हैं .

इसी श्रंखला में ..

- जब जीवन पर संकट आन पड़ा हो तब किस गुटिका का सहारा ले .??
- जब अत्यधिक श्रमसाध्य और क्लिष्ट साधनाओ को कर पाने का मन नही हो पा रहा हो तब ...??
- जब परिवार में दिन रात कलह और दरिद्रता का साम्राज्य छाता ही जा रहा हो तब ..??
- क्या हर छोटी छोटी सी समस्या के लिए सदगुरुदेव का आवाहन किया जाए या उनके ऊपर सब छोड़ कर ......क्या यह मर्यादा की दृष्टी से उचित होगा ...??
- क्या हर समस्या के लिए परम महामंत्र गुरु मंत्र का ही सीधे उपयोग किया जाए ..क्या यह उचित होगा .??
- षट्कर्म की क्रियाये जैसे वशीकरण ,उच्चाटन,..जैसे का उपयोग न करके सिर्फ भय से इस ओर ....क्या यह उचित हैं..??

क्यों न सदगुरुदेव द्वारा हमारे सामने लाए गए ज्ञान को आधार बना कर .स्व निर्भर बने ...श्रेष्ठ साधक बने ..और शिष्यता के राजमार्ग पर कुछ ओर कदम बढ़ाये ..

- वैताल साधना , भगवान दत्तात्रेय प्रत्यक्ष साधना , धन आगमन साधना ..जैसी लगभग १००८ साधनाए जिस पर संभव की जा सकती हो ......उस गुटिका के बारे में जानकारी ..
- सूर्य विज्ञानं ...., पारद विज्ञानं.... ,काल विज्ञानं.... , और स्थान विज्ञानं.... ,वायु विज्ञानं.... , और अन्य विज्ञानं सीखने में एक अत्यंत आवश्यक गुटिका ...जिसकी महत्वता गिनाई ही नही जा सकती हैं ..

- शमशान साधना में न केबल स्व रक्षा हेतु वरन हर शमशान स्थ साधना पूर्ण सफलता हेतु भी ....
- जीवन को पूर्ण निरोगी बनाये रखने हेतु ..
- जो हर साधनाओ में सफलता दे सकने में समर्थ हैं .
- जो जीवन की असफलता को सफलता में बदल देने में समर्थ हैं ...
- जो जीवन को उच्चता ,श्रेष्ठता , लक्ष्य तक तीव्रता से आपको अग्रसर कर सकती हैं ....

जैसा की नाम ही बता रहा हैं कि "पारद स्वर्ण अणु सिद्धि गोलक" तो यह नाम ही क्यों दिया गया ..????

तंत्र विज्ञानं में हर नाम या शब्द का एक विशिष्ट अर्थ हैं ही ..... आखिर अणु से क्या तात्पर्य हैं.? पदार्थ की सबसे छोटी इकाई जिसके माध्यम से पदार्थ परिवर्तन किया जा सकता हैं पर यह पदार्थ परिवर्तन कैसे संभव हो ? तो इसके लिए महर्षि कणाद ने एक पूरा विशिष्ट ग्रन्थ ही रच दिया हैं .जो " कणादोपनिषद " के नाम से विख्यात रहा हैं ... इस अणु विज्ञानं के लिए एक ही नाम सबसे पहले सामने आता हैं वह हैं **सूर्य विज्ञानं ** और इस विज्ञानं में " सिद्धाश्रम सूर्य लेंस " ....इसकी प्राप्ति तो सभी का स्वप्न रहा हैं ..इसका सूर्य विज्ञानं में एक महत्वपूर्ण स्थान हैं आखिर यह हैं क्या ..?? एक अति विशिष्टतम लेंस जिसमे .विभिन्न कोणों से माध्यम से अणुओ का संलयन या विखंडन करके पदार्थो का रूपांतरण किया जाता हैं .क्या सिर्फ इतना ही ..बल्कि बल्कि नव जीवन और पुनर्जीवन तक देने में समर्थ हैं यह सूर्य विज्ञानं ..पर यह सिद्धाश्रम सूर्य लेंस प्राप्त करना तो बहुत ही दुष्कर हैं .

पारद में एक विशुद्ध धातु " स्वर्ण" का संयोग ..!!!! वहभी शास्त्रीय मर्यादानुसार ....यह तो सोने में सुहागा भी नही कहा जा सकता क्योंकि वहां तो सिर्फ धातु हैं ..और यहाँ पर ..समस्त संसार को पुनर जीवन देने में समर्थ तत्व की बात ...यह संयोग कर पाना तो इस मार्ग के सिद्धहस्त लोगों के लिए भी सपना सा हैं ..

और फिर "अणु सिद्धि "..यह तो स्वपन रहा हैं महा योगियों का भी..क्योंकि सारा विश्व हैं क्या ???..सिर्फ अणुओ का विभिन्न संयोजन .. और जब इसकी सिद्धिता प्राप्त हो जाए तो .. क्या अब शेष रहा ....!!!

इस गोलक के सामने एक विशिष्ट मंत्र का जप करने पर यह पारदर्शी हो जाता हैं ..पारद और पारदर्शी ..!!!!! यह तो संभव ही नही हैं ??.पर यह सच हैं . सदगुरुदेव ने यह बहुत पहले स्पस्ट किया था .और अनेको बार यह कहा की पारद के गुणों की तो कोई सीमा ही नही हैं .और जो इसका सहारा नही लेता वह व्यर्थ ही अपना समय और शक्ति नष्ट करता हैं हम इस को स्वयं करके देख सकते हैं .अगर हम में शिष्यता का गुण हो तो .सदगुरुदेव के शब्दों पर अगर विश्वास हो तो ......

शमशान साधना :::: तो व्यक्ति के जीवन का सौभाग्य हैं,पर यह क्या इतनी सरल हैं ??. यहाँ पर प्रक्रिया..सरल से दुष्कर दोनों हैं ,पर एक भी मामूली सी गलती क्षम्य नही हैं . थोड़ी सी गलती ..काफी महगी हो सकती हैं . पर एक विशिष्ट मंत्र का जप इस गुटिका पर किये जाने से न केबल .यह समस्त शमशानिक कार्यों में न केबल पूर्ण सुरक्षा देती हैं बल्कि ..इन क्रियायो में और उच्चतर साधनाओ में सफलता भी प्रदान कराती हैं .

बिंदु शोधन प्रक्रिया ::

पारद तो शिव बिंदु हैं ओर हमारा वीर्य हमारा बिंदु हैं , अब हमने शिव वीर्य तो शुद्ध कर लिया पर जब हमारा स्वयं का ही बिंदु अशुद्ध हैंतब क्या कहे, उच्चतर साधनाओ के अमृत को कैसे??? , कैसे कोई अशुद्ध पात्र में शुद्ध वस्तु डालने तैयार होगा , कैसे मानेगा कोई ..... की उसके बिंदु का अभी तक शोधन नहीं हुआ,पर जब तक आपका बिंदु शुद्ध न हो जाये उच्चतर क्रियाओ के लिए कैसे व्यक्ति को योग्य माना जाय .पर बिंदु शोधन की अद्भुत विधि तो शास्त्रों में भी वर्णित नहीं हैं ....पर यह भी संभव हो जाता हैं इस पारद गुटिका /गोलक के माध्यम से एक विशेष प्रयोग के द्वारा. यह प्रक्रिया इतनी सरल हैं की साधक विश्वास ही नही कर सकता .....पर जब बिंदु शोधित होता हैं तो व्यक्ति के चेहरे पर एक आभा ... एक प्रकाश ...एक ओज .....दिखाई देता हैं.

और जब बिंदु शुद्ध होने लगा ..तो शिवतत्व की ओर ...जो की वास्तव में सदगुरुदेव तत्व हैं .....एक कदम और बढ़ गया ...और जो भी कदम ..जो भी साधना ..सदगुरुदेव के श्री चरण कमलों में ले जाए ..क्या वह एक उच्च कोटि स्थ गुरु साधना न होगी ..???

षट्कर्म साधना में :: आज हर छोटी छोटी सी बात के लिए सदगुरुदेव पर आश्रित होना .उनपर सारा भार डाल देना ..यह एक शिष्य को शोभा नही देता हैं यह मर्यादानुकूल भी नही हैं ..अगर यही सब होना था .या सदगुरुदेव ऐसा चाहते तो एक लाख से ज्यदा साधनाए .मंत्र उन्होंने क्यों दी .धूमावती साधना में तो सदगुरुदेव ने स्पस्ट कह ही दिया की आखिर गुरु के पास भी क्यों जाना ..जब की स्वयम गुरु ने तुम्हे विधि दी हैं गुरु भी आखिर उसी देव शक्ति के पास जाकर वह कार्य करेगा ..तो तुम सीधे क्यों नही उसी देव शक्ति के पास जाते हो ...अब और क्या शेष रह गया ..

पति /पत्नी बात नही मानते ...समाज /ऑफिस में सम्मान नही ..बच्चो को सस्कार बिहीन होते बेबसी में देखना ....योग्य हो सकने वाले जीवन साथी को देख कर भी ..अपने भाग्य को कोसना ..यहाँ वहां के तान्त्रिको के पीछे भागते रहे की वह कर दे ......विभिन्न में रोग को लिए रहना ..हर पल जीवन से ..शत्रुओं से समझौता ...हर जगह जीवन में हारना ...योग्य होकर भी तिल तिल करके हाथ मलते रहना ...

क्यों नही इन षट्कर्म के माध्यम से ..इन इतनी सरल प्रक्रिया जो इस गोलक के माध्यम से संभव हैं हम अपने जीवन की दिशा जो अधोमुखी हैं .उसे उर्ध्वमुखी बना दे हम स्वयं ..

सदगुरुदेव ने व्यर्थ के अहंकार को गलत माना हैं पर स्वाभिमान की वे सदैव प्रशंशा करते रहे .

हम डरते हैं ..अपने ही पिता के द्वारा दिए गए ज्ञान को उपयोग करने में ...

तो भिखारी वत ..निरीह ..असहाय .. उन्होंने नही बनाया ..बल्कि हमने चुना हैं .

उन्होंने ऐश्वर्य का रास्ता दिखाया .हमने समझौता चुना ..

उन्होंने कहाँ की परिस्थितयों से समझौता नही बल्कि तुममे मेरा लहू वह रहा हैंउसे तो ध्यानमे रखो ..आगे बढ़ो ...विजय श्री मिलेगी ही तुमको ..

पर हम यह सोच कर अपने साधना रूपी अश्त्रो को एक तरफ रख कर..अब सौप दिया इस जीवन का भार ..गाने लगे ...

कैसे यह दुर्लभ गुटिका का निर्माण होता हैं ??

आप सभी कुछ प्रयोग इस गुटिका या गोलक से भली भांती परिचित हैं . और यह गुटिका /गोलक भी अष्ट संस्कार से आगे के अनेक संस्कार से युक्त रहती हैं .पर हर बार संस्कार ही क्यों ??..

क्योंकि रस तंत्र शास्त्र कहते हैं

"संस्कारो ही गुणान्तराधानाम"

संस्कारो के माध्यम से ही पारद में अनंत गुणों का प्रवर्धन किया जा ता हैं .

पर क्या शास्त्रीय नियम का पालन इतना आवश्यक हैं .??

.इस हेतु ..गोरक्ष संहिता स्पस्ट करती हैं और निर्देशित भी करती हैं

" न शास्त्र रहितं किंचित कर्म चास्तिति कुत्र चित ||

शास्त्रीय मार्ग के पालन के बिना कैसे सफलता मिलेगी .

फिर भी यह गोलक पारद के दिव्य संस्कारो से युक्त ही अपने आप में ही दिव्यतम हैं फिर यदि इसे इसे स्वर्ण ग्रास , रजत ग्रास के साथ कितनी ही दिव्य जड़ी बूटियों से सहयोग से इसका निर्माण किया गया , अब क्या शेष रह जाता हैं

, लगभग १६ दिन इस कार्य में प्रति दिन के ६ घंटे के हिसाब से लगते हैं ही . ४ घंटे दिन में तो दो घंटे रात में शास्त्रीय इस गोलक के निर्माण में ऐसा ही शास्त्रीय नियम हैं . फिर जिसके लिए भी इस

देव दुर्लभ गोलक का निर्माण किया जाए ..उस साधक के नाम से व्यक्तिगत रूप से इस की चैतन्य करण , अभिसिंचितिकरण , ओर विशिष्ट क्रियाओं को कर के इसका प्राथमिक चरण पूरा किया जाता हैं , पर अब आगे साधक को स्वयं इसमें सदगुरुदेव के पूर्ण पूजन , स्वर्णाकर्षण भैरव स्थापन जो की पारद साधना के पूर्ण आधार हैं , नाथ ही नहीं नव नाथ और भगवान् दत्तात्रेय का स्थापन प्रयोग इस गुटिका पर करना होगा ..क्योंकि नाथ संप्रदाय के आदि गुरु ने ही ही तो इस पारद संस्कार को प्रसारित किया फिर नव नाथ तो शिव पुत्र हैं पारद जो शिव वीर्य हैं तो शिव तत्व को कैसे भुला सकते हैं . जीवन में नव ग्रहों स्थापन के महत्त्व को कैसे टाल सकते हैं पर इनके साथ नवग्रहों की माता मुन्था का स्थापन को कैसे भूल सकते हैं , इन नव ग्रहों की की कृपा साधक को मिले ही पारद के माध्यम से.यह भी एक अनिवार्य अंग हैं .

न केबल अष्ट लक्ष्मी बल्कि इनमें से प्रत्येक लक्ष्मी के १०८ स्वरूपों का भी स्थापन इस गोलक में किया जाना चाहिये जिस से यह पारद गोलक वास्तव में ही साधक के लिए सौभाग्य के रास्ते खोल दे. वाराही देवी स्थापन का तो यह गोलक स्तम्भन के लिए भी साधक के लिय उपयोगित हो सके पर स्तम्भन का क्यों की साधक किसी भी प्रकार के तंत्र वाधा से मुक्त रह सके तब इसी महा शक्ति कीस्थापन अनिवार्य हैं ही .जब पारद व्यक्ति को कालातीत कर सकने की क्षमता देता हैं तब भगवान् महाकाल का स्थापन तो इस गोलक में ही होना ही हैं अन्यथा कैसे कुछ भी उपलब्धिया स्थायी रह पायेगी. महाकाल का स्थापन तो कर लिया पर काल की अधिस्ठार्थी माँ महाकाली, के दिव्यतम स्वरुप माँ दक्षिण काली , माँ काम कलाकाली , गुह्य काली , सिद्धिप्रदा काली के स्वरुप को तो भूला कैसे जा सकता हैं इन सभी माँ जगदम्बा के स्वरुप की स्थापन अगर ऐसे महा शक्ति पीठ जो साक्षात् माँ पराम्बा का स्थान हैं ,

पर यह सारी क्रियाए तो महा शक्ति पीठ कामाख्या पीठ पर ही हो सकती हैं . अब यह सारी क्रियाए साधक को *****स्वयं ****** ही करनी पड़ेगी .पर यह कैसे संभव हैं .?? क्योंकि इस का ज्ञान तो साधक को होगा कैसे ..??? फिर वहां स्थित हर पीठ पर जाकर स्वयं ***एक दस तत्व युक्त दशमहाविद्या मंत्र का जप .****अब यह तो लगभग असम्भाव्य सी स्थिती बन गयी हैं .

सदगुरुदेव जी के आत्म स्वरुप सन्याशी शिष्य और शिष्याओ ने हमारी इस दुविधा को दूर कर अब स्वयं यह प्रक्रिया हमारे लिए करके यह दिव्य गुटिका हमें उपलब्ध कराने तैयार हो गए हैं ....की कोई भी जिनके मन में था पर वह उस विशिष्ट पारद कामाख्या कार्यशाला में भाग नही ले पाए .पर अब जिसके भी मन में हो यह प्राप्त कर सकता हैं ...अब इससे बड़ा सौभाग्य और क्या .... और वह भी घर बैठे ...

जब बिंदु उद्भव रेतस गुटिका हैं तो अब हमें इस पारद अणु सिद्धि गोलक की आवश्यकता ही क्यों ??

हर गुटिका का अपना एक अर्थ हैं . बिंदु रेतस गुटिका ....एक सम्पूर्ण जीवन परिवर्तन के लिए हैं ....सम्पूर्ण चक्र जागरण के लिए हैं ....अन्तः स्थित .ब्रम्हांड तंत्र से सीधे साधक के बाह्य ब्रम्हांड तंत्र से संपर्क के लिए हैं ....अपने स्व तत्व को जानने के लिए ....आत्मसात करने के लिए हैं ..हर साधना में पूर्ण सफलता और ठोस सफलता प्राप्त हो उसके लिए एक ठोस आधार बनाने के लिए हैं ...और यह कोई चमत्कार वाली गुटिका नही हैं , यह पूरे जीवन भर चलने वाली.... बिंदु साधना के लिए हैं ..क्योंकि जो समग्र परिवर्तन कर दे ......वह एक दिन की प्रक्रिया तो होगी ही नही .

.बिंदु गुटिका से साधक षट्कर्म प्रयोग नही कर सकता हैं .बिंदु गुटिका शमशान साधना में काम नही आ सकती हैं . वैताल साधना ,भगवान दत्तात्रे य प्रत्यक्षीकरण साधना, लक्ष्मी के अनेको रूपों को अपने यहाँ स्थापन करने में काम नही आ सकती हैं . सूर्य विज्ञानं .क्षण विज्ञानं ..काल विज्ञानं ..और .अन्य विज्ञानों में इसका सीधा कोई हस्तक्षेप नही हैं ..
पर फिर अर्थ क्या हुआ ...??

कितनी भी बड़ी उपलब्धि प्राप्त हो .पर उसके लिए एक पात्रता .....एक योग्यता ..एक ठोस आधार .. समस्त अन्तः शरीर का शुद्धिकरण ..शरीरस्थ समस्त चक्रों का जागरण ... समस्त मानसिक..आध्यात्मिक शक्तियों का हममे उदय होना जरुरी हैं ..अन्यथा .इन उपलब्धियों को पाना ना केबल कठिन बल्कि बहुत ही श्रम साध्य हैं ..

पर जिन्हें जीवन हर पल अपनी ही शर्तों पर जीना हो ....उच्चता की ओर अग्रसर करना हो .. प्रतिकूल परिस्थतियों को भी अपने अनुकूल बना देना हो ...समाज और और राज्य में सम्मान पाना हो ..

और सबसे महत्वपूर्ण तथ्य ..अगर हम तंत्र साधक हैं तो न केबल हम गिडगिडाये .. बल्कि जहाँ भी कोई भी असहाय हो .. निर्बल हो ..असमर्थ हो . दुखी हो ....भग्न हृदय हो ..उसे अपने साधना बल से पुनः .जीवन युक्तकर दे ..

यही तो सदगुरुदेव का सपना रहा हैं . जो वैदिक ऋषियों का उद्घोष रहा हैं की "वसुधैव कुटुम्बकम " के आधार पर हम ठोस आधार बने अपने समाज का ..देश का और पुनः संस्कृति को ऊपर ले जाए ....

और अब अंत में इस पारद गुटिका के बारे में ..

की ..” हरि अनंत ..और हरि कथा अनंता ..”

और जिसके भाग्य हो जो यह गुटिका प्राप्त करे ..

उसके लिए ..

“साधो यही घडी यही बेला ....”

******NPRU*******

****

****

A Very Rare and Miraculous Parad Golak

धर्मार्थ मुप्भोगानाम नष्ट राज्य विवार्धाये |

आयुर्योवंलाभार्थे मुक्तयेर्थ च मुमुक्षुणाम ||

Dharmarth Mupbhoganam Nasht Rajya Vivadharye |

Aayuyaryovamlabharthe Muktyerth Ch Mumukshunaam ||

This Vidya (*****Parad Tantra Vigyanam****) helps public to attain Dharma, Arth and Kaam , kings to attain lost states and helps state to prosper, provides long life and youngness to householders and provides salvation to saints.

Those who know Parad Tantra are very few in number and if there are, they are in far off mountains where it is really impossible for common public to approach them and those who are among us, it is even more cumbersome to understand them .However, those who are among us , they always reveal the facts that……

Ras Scriptures mentions about nearly 60000 gutikas and golaks but they are silent on the process of making them and the benefits of them. This field is full of amazing secrets….

रोगपंकाब्धिमग्नाना पारदः नाच्चपारदा..||

RogPankabdhimgraana….paaradanaachh paradah ||

What can free human beings from sea of diseases; this is only possible by Parad Tantra Science. Which disease we are talking about? Actually, here all the diseases whether spiritual, physical, mental or materialistic are included.

सकल पदारथ हैं जग माही भाग्यहीन   नर कछु पावत नाही "

Sakal Padarthhain Jag Maahi ,Bhagyaheen Nar Kuchu Paavat Naahi

Up till what time, we can afford crying over our misfortune or the fate which has slept like python(a type of snake) . It has to end somewhere. Atleast after being Tantra sadhaks and disciples of Sadgurudev; it does not suit us sitting idle.

So how is it possible, to win over all the unfavourable circumstances in life……….is it possible?

Why not? And this is precisely where Ras Shastra comes into picture and also it's utility.

Ras Shastra is very higher order knowledge and science in itself .However, it was forgotten for quite some time in the past. But new rays of light and hope have emerged with full intensity and brightness and is introducing us to this high level Tantra Science.

Any science ,how higher-order it may be of , if it does not have any utility in our daily life then what is the meaning of it?

It does not apply to Parad Tantra Science.

Instead, it puts the idea conveyed by following sloka in front of us ….

"भोगस्थ मोक्षस्थ करस्थ एव च ".

"BhogasthMokshasthKarasthevch "

In this series:

- When problems are troubling us in our life, which gutika we should take help of?
- When we are unable to make up mind to start highly effort-consuming and difficult sadhnas then?
- When our family is facing the problem of poverty and conflicts each and every day?
- Should we do Aavahan of Sadgurudev for every minute problem and leave everything on him? ...Is it fair on our part to do so?
- Should we use directly the highly Divine Mahamantra GuruMantra for each and every problem? Will it be right?
- Rather than using Shatkarmas(6 procedures of tantra) like Vashikaran, Ucchatan, we develop a feeling of apprehension towards them…..is it correct?

Why should not we make knowledge of Sadgurudev as our base and become self-dependent and great sadhaks and put some strides forward on Rajmarg of Shishyta.

- Vaital Sadhna, Bhagwan Daitetrya Pratyaksh Sadhna,Dhan Aagman Sadhna …..and similar 1008 sadhnas can be done on it……….information about that gutika
- The Gutika which is highly essential for learning Surya Vigyanam….,Parad Vigyanam….,Kaal Vigyanam …….., Sthan Vigyanam………,Vayu Vigyanam……….,and other science. It is virtually impossible to highlight the Importance of such divine gutika.
- Not only for self-defence in Shamshaan sadhnas, but also for complete success in every shamshaan sadhna.
- To make our whole life disease-free
- Which is capable of providing success in every sadhna.
- Which is capable of transforming our failure into success
- This takes our life to higher pedestal, towards perfection and guides us to our aim very quickly.

As the name says "Parad Swarn Anu Siddh Golak", why only this name was given……

Every name or word carries a special meaning in Tantra Science…………. What does word Anu (Atom) signifies? The smallest unit of the material by which material transformation can be done but how material transformation is possible? For this, MaharishiKanaad has created a special scripture which is famous by the name "Kanadopnashid"……………..For this atomic science, one name that comes into our mind,that is **Surya Vigyanam**and in this science "Siddhashram Surya Lens"…………and getting this lens has been the dream of everyone……it has got an important place in Surya Vigyan. What is this lens all about? It is a very special lens whereby using various angles, atoms can be combined or splited and as a result, material transformation takes place. Only this……………..this Surya Vigyan is capable of giving a new life………However, it is very cumbersome to get this Siddhashram Surya Lens.

Adding pure metal Gold in Parad….!!! That too using Shastra principles……. This is not a big task because there , we are talking about only metal but here we are talking about element which is capable of giving rebirth to the whole world…….It is dream even for siddhs of this path to make this possible.

And then "Anu Siddhi"……..this has remained a dream even for Mahayogis because what is this entire world?.....Only the different combination of atoms….if one gets accomplishment in it……..then what is left…..!!!

Chanting special mantras in front of this Golak makes it transparent….Parad and transparent…!!!! This is not possible at all??..but this is true. Sadgurudev has explained this fact much earlier and has said multiple times that quality of Parad have no limits and the one who does not takes it's assistance, he /she is wasting both his/her time and power. We can see the results by doing it ourselves if we have the qualities of shishya and if we have trust in the words of Sadgurudev…………

Shamshaan Sadhna:::: is the the boon for a person's life, but is it that much easy???. Here the procedures are both easy and difficult but even any slightest of mistake is not forgiven. Even a minute mistake can prove to be disastrous. However Chanting one special mantra on this gutika not only provides complete security in shamshaan procedures but also provides success in these procedures and higher-order sadhnas.

Bindu Sodhan Procedure::

Parad is Shiva's bindu and our sperm is our bindu. Now we have purified the sperm of lord Shiva but when our sperm is impurethenhow can we do higher order sadhnas??It will be like pouring pure things in an impure container. Who will accept this fact that his bindu has not been purified yet. However, as long as one's bindu is not pure then how can he/she be considered competent enough for higher level procedures? But the amazing procedure for Bindu Sodhan (purifying the sperm) is not even mentioned in shastras……..But this is possible with the help of special process done on Parad Gutika/Golak. This process is so simple that Sadhak will find it hard to believe it……However when bindu is purified then face of that person glows, he develops an aura.

And when Bindu starts purifying…..then we move towards Shiva Element…….which is in reality Sadgurudev element …………….we are one more step closer….. And any step…any sadhna which takes us towards lotus feet of Sadgurudev……..will it not be higher order Guru Sadhna…???

In Shatkarma Sadhna::depending on Sadgurudev even for minute things…putting full burden on him……………this is not fair for any Shishya , nor it is in accordance with the moral principles. If Sadgurudev had wished like this, then why would he have givenmore than 1 lakh sadhnas and mantras? Sadgurudev has clearly said in Dhoomavati sadhna that Why to go to Guru…when Guru has given you the procedure. Guru will accomplish the workonly by going to particular deva then why don't you go to that deva directly……………..then what is left for us to say….

Husband/Wife does not listen to each other…….no respect in society/office………seeing with helplessness getting child deprived of moral values……..cursing your fate even after seeing a

capable life partner………..running after the tantriks for your tasks…………living with diseases……compromising with enemies and lifeat every moment… losing in life at every place……suffering despite of being capable….

Why not by help of shatkarmas…….a simple procedure which is possible through this golak can transform the direction of our life in higher direction.

Sadgurudev has always considered the unnecessary ego to be wrong but he has always praised the self-pride.

Why are we scared to utilize knowledge given by our father …

So beggar-like……powerless….helpless…..he has not made us like it ….we have chosen this path.

He has shown the path of prosperity .But we chose compromise…

He said that do not make compromise with circumstance. My blood is running in your veins, you should keep this thing in mind …….Move forward……You will be successful…

But we kept aside the weapon of sadhna and started singing ab soup diya is jeevan ka Bhaar…..

How this Rare Gutika is Created??

You all are aware of some process which can be done on this gutika or Golak and this Gutika/Golak is made from Parad of more than 8 sanskars.But why this sanskarsevery time??

Because Ras Tantra Shastra says

“संस्कारो ही गुणान्तराधानाम”

“Sanskaroo hi Gunantaradhanam”

Only with the help of sanskars, infinite qualities of Parad can be amplified.

But is it necessary to follow the rules of Shastras?

For this “GorakshSanhita” clarifies and directs also

“ न शास्त्र रहितं किंचित कर्म चास्तिति कुत्र चित ||

“Na Shastra Rahitam Kinchit Karm Chastiti Kutra Chit ||

How can we get success without following the rules given in Shastras

This Golak, combined with divine sanskars of Parad is divine in itself. If it is prepared after giving swarna graas and rajat graas and combining it with divine herbs then what really is left?

It takes 6 hours per day for 16 days for this process…..4 hours in the day and 2 hours in night for preparing this Golak, these are the rules of shastras. Then the person by whose name this rare golak is made ……energising it personally by name of that sadhak, it's abhisinchitikaran and doing special procedures on it finally completes the preliminary step. But after this, sadhak has to do Sadgurudev's complete poojan, Swarnakarshan Bhairav Sthapan (which is base for parad sadhna), not only the nath butNav Nath and lord Daitetrya sthapan process on its own on this gutika……Because Adi Guru of Nath School only popularised the parad sanskars. Then Nav nath are sons of lord Shiva and parad is the sperm of Lord Shiva so how we can forget Shivaelement. How can we ignore the importance of Nav Grah Sthapan? To add to that how we can forget the sthapan of mother of nine planets Muntha.Getting the blessing of these nine planets with the help of parad, is also an essential element. Not only Ashta Lakshmi (8 forms of Lakshmi) but sthapan of 1o8 forms of each Lakshmi should be done on this golak whereby this parad golak can open the doors of bright fortune for the sadhak.Vaarahi Devi Sthapan in golak is necessary so that sadhak can utilize it for stambhan purpose. But why stambhan only? Because to get rid of tantra badha,sthapan of this Maha Shakti is necessary. When parad can give person the ability to trespass time then sthapan of Lord Mahakaal is bound to happen in this golak otherwise how our achievements will remain stable. So we have done the sthapan of Lord Mahakaal, but how we can forget the divine form of supreme deity of time Maa Mahakaali, Maa Kaamkala Kali, Guhakali, and Siddhipradakali. Sthapan of all these forms of Maa Jagdamba should be done on Maha Shakti Peeth which is the place of Maa Paramba.

But all these procedures can be done only on Mahashakti peeth Kamakhya Peeth. Now all these procedures have to be done by sadhak himself. How is it possible.?? How sadhak will have knowledge about this…??? Then chanting *****ten elements combined Ten Mahvidya mantra**** on every peeth established there, now it has virtually become impossible.

Sanyasi disciples of Sadgurudevji have agreed to make us available this divine gutika by doing these processes for us and have put an end to our doubts. Those who were not able to participate in special parad Kamakhya workshop, but those who are willing to get it , they can get it…………what good fortune it can be……….that too while sitting at home.

When there is Bindu UddhavRetas Gutika, then why do we need Parad Anu siddhi Golak at all?

Every gutika has its own meaning. Bindu Retas Gutika…………….it is for complete life transformation………for complete chakra jagran………………for connecting inner universe of sadhak with the outer one……………for knowing self-element……….completely imbibing it………..for making the concrete base for getting success in each sadhna……and this is not a miracle-providing

gutika…Rather it is gutika for life-long Bindu Sadhna….. Because the process which transforms as a whole…………….will not be a one day process.

By this Bindu Gutika, Sadhak can't do Shatkarma process. It can't be used in Shamshaan sadhna. Vaital Sadhna, Lord Daitetrya Pratyakshikaran sadhna, Sthapan of various forms of Lakshmi can't be done by it.It does not have any direct intervention in Surya Vigyanam, Kaal Vigyanam, Kshan Vigyanam and other sciences ……….Then what does it mean?

How much higher might be the accomplishment, but for it suitability…..ability ….strong base…..purifying of entire inner body…….Jagran of entire chakras in body……awakening of entire mental and spiritual power is essential. Otherwise getting these accomplishments is not only difficult but also very effort-consuming…..

But those we want to live life on their own terms and conditions….. Who want to move towards higher plane……who want to make unfavourable situations favourable……..who wants to earn respect in society and state.

And the most important fact is that If we are tantra sadhak, then why should we bow down? Infact we should impart new life to those who are helpless…..powerless….incapable by our sadhna power.

This has only been the dream of Sadgurudev, which has been the voice of our Vedic saints that based on the feeling of "Vasudev Katumbakam" we become concrete base for our society, our country and bring our culture up again.

And in the last about this Parad Gutika

Ki "Hari anant aur Hari Katha Ananta"

And who are lucky, get this gutika…

For them…

This is the time…………

सप्त ऋषि पूंजीभूत तत्व शक्ति साधना

Human body, copy image of outer world is one universe and accordingly north and south poles are also present in human body which conducts positive and negative energy of electromagnetism. Brain has been considered as North Pole and Muladhaar has been considered

as South Pole. Between them there are Muladhaar, swadhisthan, Manipur, Anahat, Vishudha, aagya and Sahastrar chakra. In other words, if Muladhaar is situated on one end then sahastrar is situated on other end and exchange of that divine power takes place through Sushumana situated in spinal cord. Path of Sushumana after purifying these powers perform mutual exchange of Shakti at both ends. The seven chakras which we have mentioned, are actually representative of Sapt Rishis (Seven Great saints).In other words, in these chakras, elements of these rishis illuminates. Externally, they may be rishis, actually they are those seven powers and seven elements which provide capability to complete various activities in orderly way .These bhaav, these elements acquire the praan from sun only and then only life become available. Now it all depends on sadhak that how intensely he can utilize the above-mentioned seven powers (which get praan from sun and then provide brightness and vibrancy to sadhak). First of all, let's understand that who are these Sapt Rishi actually and which power they represent.
Vasisht - Fire element - Vivek Shakti (Power to apply brain and take correct decisions)
Vishwamitra – Sky Element – Ichha Shakti (Will power)
Bhardwaj – Conscious Element –Sankalp Shakti (Resolution Power)
Gautam –Vayu element –Vichaar Shakti (Thought power)
Jamdagni –Tej Element –Kriya Shakti (Power of doing)
Atri –Water element –Vaani Shakti (Power of speech)
Kashyap –Earth element – Uthaan Shakti (Power to progress)
In Reality these Sapt Rishis only are the seven bodies of human beings and those seven loks of universe which have been called Bhu, Bhvah, Swah, Manah, Janah, Tapah and Satya lok. These are those seven possibilities present in human body which if activated by anyone, then nothing will be unattainable for him. Actually, these are seven layers of consciousness present in human body which can make any impossible task possible. One more thing worth imbibing is that if taken help of tantra, attaining these seven levels of consciousness becomes simpler. Actually sadhaks of Surya Vigyan or those who are curious to know it have to complete one full sadhna cycle to imbibe this secret and attain proficiency in it.But by adopting normal process also, we can not only vibrate chakras of kundalini but also imbibe the vibration of consciousness of the Sapt Rishis in our life, can write our fate on our own and can remove misfortune completely and attain serenity and radiance.
You can start this sadhna on any Sunday and when after taking bath, you offer water to sun then before it pronounce below mentioned mantra 108 times while looking at water-container. Then only offer water to sun while chanting "**Om Tejsvitaay Namah**".
Basic Mantra:
Om Surya Suryaay Surya Saprishibhyo Sah Chaitanya Praptum Poorn Tejsvitaay Namah
Actually this mantra has been devised in such a way that if it is used according to rules mentioned above then definitely it can completely remove your misfortune.

==

बाह्य जगत की प्रतिकृति ये मानव शरीर भी एक ब्रम्हांड ही है और तदनुसार मानव शरीर में भी उत्तर और दक्षिण दो ध्रुव विराजमान हैं.जिनमे विद्युत चुम्बकत्व की धनात्मक और ऋणात्मक शक्ति प्रवाहित रहती है, मष्तिष्क को उत्तरी ध्रुव और मूलाधार को दक्षिण ध्रुव माना गया है.

इन्ही के मध्य मूलाधार, स्वाधिष्ठान, मणिपूर, अनाहत, विशुद्ध ,आज्ञा और सहस्रार चक्र हैं. अर्थात मूलाधार यदि एक छोर पर स्थित है तो सहस्रार दूसरे छोर पर स्थित है. और उस दिव्य शक्ति का आदान प्रदान मेरु दंड में स्थित सुषुम्ना सूत्र के द्वारा होता है.
सुषुम्ना पथ ही इन शक्तियों को परिष्कृत कर दोनों छोरो पर शक्ति का परस्पर आदान प्रदान करता है. जिन चक्रों की हमने बात की है .वे ७ चक्र वस्तुतः सप्त ऋषियों के प्रतिनिधि हैं. अर्थात इन चक्रों में इन ऋषियों का ही तव प्रकाशित होता है, बाह्य दृष्टि से जो ऋषि हैं, वास्तव में वो सात शक्तियां और सात तत्व भाव हैं, जो जीवन के विभिन्न क्रिया कलापों को सुचारू रूप से संपन्न करने की क्षमता प्रदान करते हैं. और ये भाव ,ये तत्व सूर्या से ही प्राण को ग्रहण करते हैं ,तभी उनमे जीवन की उपस्थिति हो पाती है. अब ये साधक के ऊपर निर्भर करता है की वो उपरोक्त सप्त शक्तियों का (जो की सूर्य से ही प्राणों का शोषण करते हैं और तदनुरूप साधक को दैदिप्यता और तेजस प्रदान करते) कितना तीव्र प्रयोग कर पाता है. सबसे पहले ये समझ लेते हैं की वास्तव में ये सप्तर्षि हैं कौन कौन से और ये किन शक्तियों का प्रतिनिधित्व करते हैं.

वशिष्ट - अग्नि तत्व – विवेक शक्ति

विश्वामित्र - आकाश तत्व – इच्छा शक्ति

भारद्वाज - चेतन तत्व – संकल्प शक्ति

गौतम - वायु तत्व – विचार शक्ति

जमदग्नि - तेज तत्व – क्रिया शक्ति

अत्री – जल तत्व – वाणी शक्ति

कश्यप - पृथ्वी तत्व – उत्थान शक्ति

वास्तव में ये सप्तर्षि ही मानव के वे सात शरीर या ब्रम्हांड के वे सात लोक हैं, जिन्हें भू,भुवः, स्वः मन:, जनः,तपः और सत्य लोक कहा गया है . ये मानव शरीर में उपस्थित वो सात सम्भावनाये हैं की यदि इन्हें कोई चैतन्य कर ले ,फिर उसके लिए कुछ भी अप्राप्य नहीं रह जाता है. वस्तुतः मानव शरीर में उपस्थित चेतना की ये सात परते ही हैं. जो किसी भी असाध्य को साध्य कर देती हैं. और एक बात हृदयंगम करने योग्य है की यदि तंत्र का आश्रय लिया जाये तो निश्चित ही ,चेतना के इन सातो स्तर की प्राप्ति सहज हो जाती है. वस्तुतः सूर्य विज्ञानं के जिज्ञासुओं को या साधकों को इस रहस्य को आत्मसात कर सिद्ध हस्त प्राप्त करने के लिए तो पूरा एक साधना क्रम ही संपन्न करना पड़ता है. परन्तु सामान्य क्रम अपनाकर भी हम कुंडलिनी के चक्रों को ना ही सिर्फ स्पंदित कर सकते हैं, अपितु सप्त ऋषियों की चेतना का ये स्पंदन आप

अपने जीवन में उतार कर अपना भाग्य स्वतः ही लिख सकते हैं, और दुर्भाग्य को पूरी तरह मिटाकर एक सौम्यता और तेजोमयता की प्राप्ति कर सकते हैं.

किसी भी रविवार से इस साधना को आप प्रारंभ कर सकते हैं और प्रातः काल स्नान कर सूर्य को जब जल समर्पित करे तो उसके पहले जल पात्र की और दृष्टि रख कर निम्न मंत्र का १०८ बार उच्चारण करे, इसके बाद ही सूर्य को "**ॐ तेजस्विताय नमः**" कहकर जल अर्पित करे या अर्घ्य चढ़ाये –

मूल मन्त्र-**ॐ सूर्य सूर्याय सूर्य सप्तर्षिभ्यो सह चैतन्य प्राप्तुम पूर्ण तेजस्विताय नमः ||**

वस्तुतः ये मन्त्र इस रूप में गुंथा हुआ है की यदि इसका उपरोक्त विधान से नित्य प्रति प्रयोग किया जाये तो निश्चित ही इसका प्रवाह आपके दुर्भाग्य को पूर्ण रूपेण दूर कर सकता है

****NPRU****

Posted by Nikhil at 1:50 AM 3 comments:

Labels: surya vigyan

WEDNESDAY, JUNE 6, 2012

SURYA VIGYAAN AND KAAL CHAKRA-सूर्य विज्ञानं और काल चक्र

त्रिनाभिमती पञ्चारे षण्नेमिन्यक्षयात्मके ।

संवत्सरमये कृत्स्नम् कालचक्रम् प्रतिष्ठितं ॥

तीन नाभियों से युक्त है सूर्य के रथ का चक्र,अर्थात भूत भविष्य और वर्तमान ये तीनो काल ही सूर्य रथ चक्र की तीन नाभि है,नाभि अर्थात जहाँ स्पंदन होता हो प्राणों का ।वेदों मे काल को प्राण ही तो कहा गया है । और सूर्य इन प्राणों का अधिपति है,अर्थात जहाँ कालमयी दृष्टि की बात आती हो या अपनी दृष्टि को काल के परे ले जाकर व्यापकता प्रदान करनी हो तो सूर्य की साधना करनी ही पड़ेगी और उनके रहस्यों को आत्मसात करना ही पड़ेगा । बहुधा साधकों के मन मे सूक्ष्म शरीर सिद्धि का सरलतम विधान जानने की बात आती है ,परन्तु शास्त्रों मे ऐसी कोई क्रिया स्पष्ट नहीं है ,जिसके माध्यम से सरलतापूर्वक स्थूल शरीर से सूक्ष्म शरीर को प्रथक कर उन गुह्य और अनबुझे स्थानों की यात्रा की जा सके,जहाँ आज भी प्राच्य आध्यात्मिक उर्जा बिखरी पड़ी है और जहाँ जन सामान्य के कदम पड ही नहीं

सकते,इसलिए ये स्थान अबूझ ही रह गए हैं और अबूझ रह गयी है यहाँ पर दिव्य उर्जाओं की उत्पत्ति का रहस्य भी ।जब सिद्ध मंडल से साधनात्मक ज्ञान प्राप्ति की बात आती है तो हमारे चेहरे मात्र लटक ही सकते हैं क्यूंकि हमने कभी सदगुरुदेव की व्यापकता को समझा ही नहीं,अन्यथा उनसे सूर्य विज्ञानं के ऐसे ऐसे रहस्य प्राप्त किये जा सकते थे जो की कल्पनातीत ही कहे जा सकते हैं।

हमने मात्र पदार्थ परिवर्तन को ही सूर विज्ञानं की प्रमुख उपलब्धि माना है और समझा है परन्तु हम ये नहीं जानते हैं की प्राण रहस्य को समझ लेने के बाद किसी भी लोक मे गमन,ग्रहों पर नियंत्रण और कुंडलिनी भेदन इत्यादि की प्राप्ति अत्यधिक सरल हो जाती है । सूर्य की सप्त किरणों और उनके रंगों मे कुंडलिनी जागरण, काल-दृष्टि की प्राप्ति और ब्रहमाण्ड के अबूझे रहस्य हस्तामलकवत दृष्टि गोचर होने लगते हैं । सप्त रंगों मे बिखरी सूर्य की किरणों का सम्मिलित रूप श्वेत है जो की व्यापकता का परिचायक है और परिचायक है पूर्णता का भी।

भला कैसे ???

क्या आप जानते हैं की सूर्य के सप्त रंगों से लोकानुलोक गमन का गहरा सम्बन्ध है, सविता मंत्र का मूल ध्वनि मे किया गया उच्चारण आपके शरीर को अणुओं के रूप मे विखंडित कर देता है और ये विखंडन मनोवांछित लोक मे पहुचकर वापिस अपना मूल स्वरुप पा लेता है, अक्सर ऐसे मे इन अणुओं के बिखर जाने का भय होता है परन्तु सूर्य विज्ञानं का अध्येता ये भलीभांति जानता है की सूर्य प्राणों का परिचायक है ,अर्थात प्राणशक्ति की सघनता और उससे प्राप्त बल,विखंडित अवस्था मे भी हमारे शरीर के अणुओं को बिखरने से बचाए रखती है ,और अणुओं के चारो और एक आवरण बना देती है जिसके कारण ब्रहमांडीय यात्रा के मध्य शरीर के अणु किसी भी बाह्य आघात से पूरी तरह सुरक्षित रहते हैं ,और उनकी मनोवांछित लोकों मे जाकर साकार होने की कामना मे कोई बाधा नहीं आती है ,और एक बार जब कोई मनोवांछित लोक मे पहुच जाता है तो वह देह वहाँ के वातावरण के अनुकूल बन जाती है और तब वहाँ के रहस्य और विज्ञानं को समझना सहज हो जाता है ।वस्तुतः सूर्य की किरणों के सात रंग यथा बैगनी,जामुनी,नीला,हरा ,पीला,नारंगी और लाल का सप्त लोको से गहरा सम्बन्ध है –
भू,भुवः ,स्वः ,मह :,जनः,तपः और सत्यम, और इस सम्बन्ध को ज्ञात करने के लिए हमें श्वेत की अर्थात आदित्य के रहस्य को समझना पड़ेगा , क्यूंकि ये सभी रंग सम्मिलित होकर श्वेत का ही विस्तार करते हैं ।तभी कालचक्र का सहयोग लेकर आप कालभेदी दृष्टि प्राप्त कर सकते हैं और ये कोई जटिल कार्य नहीं है ।यदि साधक **सूर्योदय के पहले पूर्व की तरफ मुख करके "ॐ" का गुंजरन ७ मिनट तक नित्य करे और फिर सूर्योदय के साथ ही ७० मिनट तक गायत्री मंत्र का जप और फिर पुनः ७ मिनट तक "ॐ" का गुंजरन**।

यदि इस क्रिया को ३ रविवार तक नित्य दोहराया जाये तो सूर्य के मध्य मे होने वाले विस्फोटों का मूल अंतर्गत कारण हम भली भांति समझ सकते हैं और उर्जा की उत्पत्ति का रहस्य भी ज्ञात हो

जायेगा,क्यूंकि ये "ॐ" की ही ध्वनि है जो की इस क्रम से प्रयोग करने पर बाह्य सूर्य का अन्तः सूर्य से तारतम्य बिठाकर रहस्यों के आदान-प्रदान की क्रिया सरल कर देती है ।और इस प्रकार सविता मन्त्र का सहयोग आपको कालचक्र की विविध शक्तियों का स्वामी बना देता है तब कालातीत दृष्टि पाना भला कहाँ असंभव रह जाता है।

==

Trinabhimati panchaare Shanneminyashayatmake!

Sanvatsarmaye Kritsram Kaalchakram Pratishthitam!!

In Vedas these kaals means three dimensions of time i.e. present, past and future are considered as the life energy and our navel is the central pivotal point where all the functions which are necessary for our existence is continuously going on but the most dynamic fact is that these three time dimensions or we can say navel portions are working as wheels for the chariot of rotating sun. Now the important thing which one should keep in his/her mind is that Sun is honored as the owner of this life energy so if one wants to have the capacity to see beyond the time or we can say across the time than it is important to have the blessings of Sun ….wait wait!! Not only blessings besides he should be one with all the secrets and mysteries related with it (Sun). Several saadhak wants to know the easiest way which can help them to transform their hard-core body (sathool shreer) into the transparent or micro one (suksham shreer) so that without wasting any more time they can visit all the secret places where even today spiritual energy is sprinkling its aura and these places are and will be remain unvisited by common people just because of these the secret that why these places are full of such spiritual energy is still remains unsolved. When questions are raised regarding to have the knowledge from Sidhmandal than without showing lifeless faces we have no second option to do as we didn't try ever to understand the extension of universal commanding power who is no-one but our revered Sadgurudev otherwise from him we can came to know unimaginable and unbelievable secrets from him about our issue i.e. Soot Rahasayam.

We are feeling our head in the air on our knowledge that we can transfer metals through it but just imagine how everything became so easy if we came to know that through sun the procedure of astral journey (Lok gaman), controlling power over planets and kundlini bhedan could become easy to easiest. Simultaneously such things as Kundlini Jaagran, the power of Kaal Drishti and all the unsolved ultimate mysteries related to our universe get starting resolved on their own with the colorful seven rays of sun. Don't forget that collectively all they seven different colorful rays of sun is of white in color which is the symbol of completeness as well as of expansion.

Now the most important question which says KNOCK! KNOCK!! To our mind is how it is possible!!!!

So let me solve this mystery for you……do you people don't know that there is a close relation between the seven colors of sun and astral journey or we can say move from one planet to another that too with your own body……Confuse!!! Let me more modify it if we enchant Savita manta with its proper intonation (mool dhvani) than this mantra have a capacity to

divide our body in its basic atoms and these atoms get their basic real body when it enters in its desired planet….one thing which always frighten us is that what happen if these atoms get spread or misplaced so the answer is that a person who has the knowledge of this science knows that sun is the source of life energy so this energy give the power of stability and unity to the atoms at the time of this diversion and this unity works as a protecting sheet of atoms from any type of destruction during astral journey and body gets its true form as soon as it enters into its desired planet and easily becomes habitual according to its new found land and also that person easily can learn or understand the science of that planet too. Basically there is a close relation between the seven colors of sun that are- purple, move, blue, yellow, orange and red and of seven lokas (sapt lok) that are **Bhu, Bhuvah, Swah, Maha, Janah, Tapah and Satyam**. So to understand the relation between them we should understand the secret of white which is unique in itself as these colors collectively create white one because if you understand this bonding then you can easily with the help of Kaal Chakra ,have the power to see beyond the time i.e. called Kaal Drishti but this will only happen **when a saadhak who wants to have this power stand on his legs facing east and enchant OM for seven minutes then Gayatri Mantra for next seventy minutes then again OM for next seven minutes daily.**
If sadhak repeats this procedure daily for consecutive three Sundays then easily he can come to know the secrets of give and take internal and external mysteries which always and continuously occur in the core of sun and he also come to know the fact that this is nothing but this OM sound which is responsible for the balancing and making easy this give and take process. So this Savita Mantra can make you the owner of all the different powers of Kaal Chakra then after that how can one even thinks that it is impossible to see beyond the time…..IS IT REALLY……I DON'T THINK SO.

******NPRU******

for our facebook group-http://www.facebook.com/groups/194963320549920/

PLZ CHECK **: -** **http://www.nikhil-alchemy2.com/**

Posted by Nikhil at 1:39 AM No comments:
Labels: surya vigyan

THURSDAY, MAY 31, 2012

Surya Tatva (Sun Element) - सूर्य तत्व

As per Sarv Swartmkan rules all the substances found in nature contains everything, it means if an iron is there it is not just the iron, it contains iron and glass but also the rose properties, but more of iron due to the preponderance of the iron element, we see it as an Iron…and if with the help of right practice, the expansion of the main element is being studied, the same element will start showing the other properties also whether it is a flower or some other mass whose properties have been expanded…But, this is not so much easy, because only having knowledge of the subject is not essential and perfection cannot be accomplished just by the knowledge but it can be accomplished only when the knowledge is being converted into the Science…

And the Tantra part only where (the intuitive science theory into action is observed experimentally), we can use the secrets that can explode like that are beyond normal human imagination.

In Vamaniki Shastra, there are many more holy books in which the conversion of the Knowledge into Science rule has been described…Which Means, by performing on the base element of Sun, one can easily gets full-fill his desires…Till the element conversion, all is Ok but, along with this one can perform “Vayu Gaman”, Jal Gaman”process also…One can acquire the most powerful and the vast form and can also make himself very heavy…

.

The general principles of these five elements create a substance always be so prevalent, which means earth, water, fire, air and sky and if only air element should be expanded and other elements to be invisible if it is possible to have extremely low. If the fire element, the element of air and space elements should be more detail and other elements can often be lost to So we can get those materials that are currently hidden in the womb of the future which is expressed before us. And if the fission and fusion power's out there then no process will be impossible for us to perform.But, this knowledge can be gained only through the Sun and that too with the help of devotion…

For us offerings to the Sun (Surya Ardhya) or Greeting the Sun (Surya Namaskar) is something very general, but we are unaware of the fact that these all these activities contains the base mantras (Beej Mantra) and when these base mantras are being used then all the processes gets full-filled in special body forms and conditions and performs a special process which results in the special powers and energy distribution and accomplishment in the different energy Chakras present in our body…. And if the

devotee along with this Surya Sadhna performs "Gupn Mantra" then he not only come to know the Hidden Secrets of the Sun Elements but he becomes expert in the practical performances also…He gets knowledge right from the beginning till all the hidden secrets of that element…

We all very know that we remains fit and fine by doing Surya Namaskar and by Offering Sun (Surya Ardhya) one gets healthy body and sharp eye visibility but still having all the facts, one because of his laziness, no one thinks on this point…Just give a thought that by performing all these activities what is the effect of the Sun on our body and we remains healthy and gets the enlightenment and that too when we are getting all these benefits without our knowledge, and once when gets aware with all the facts and performs the practice with full knowledge and determination and devotion, what next will be remain Impossible for us…

THINK….!!!!!

सर्व सर्वात्मकं के नियम अनुसार सृष्टि में पाए जाने वाले सभी पदार्थों में सब कुछ व्याप्त है,इसका अर्थ ये हुआ की लोहा लोहा मात्र नहीं है बल्कि उसमे कांच के भी गुण है और गुलाब के भी,परन्तु लोह तत्व की अधिक प्रधानता होने के कारण वो हमें लोह धातु के रूप में दृष्टिगोचर होता है.यदि किसी भी क्रिया का सहयोग लेकर उसके अन्य किसी तात्विक गुण का विस्तार किया जाये तो ऐसे में वो उस धातु,पुष्प या पदार्थ का ही रूप दिखाने लगेगा जिसके गुणों का विस्तार किया गया है. परन्तु ये इतना सहज नहीं है,क्यूंकि मात्र किसी विषय का ज्ञान होने से आप उसमे निपुणता नहीं पा सकते,बल्कि ज्ञान को विज्ञानं में परिवर्तित कर प्रयोग करने पर ही सफलता संभव है.

और तंत्र के इसी भाग का(जिसमे ज्ञान युक्त सिद्धांत को विज्ञानं रुपी प्रयोगात्मक क्रिया में परिवर्तित किया जाता है)प्रयोग करने से हम ऐसे ऐसे रहस्यों का विस्फोट कर सकते हैं जो सामान्य मानवीय कल्पनाओं से परे हैं.

वैमानिकी शास्त्र के रूप में सैकड़ों ग्रन्थ हैं जिनमे इस ज्ञान को विज्ञानं के रूप में परिवर्तित करने का विधान बताया गया है,अर्थात सूर्य के मूल तत्व को लेकर कैसे सरलता से अपने मनोरथ को साकार किया जा सकता है.पदार्थ परिवर्तन तो ठीक है उसके साथ ही वायुगमन किया जा सकता है,जल गमन किया जा सकता है, विराट अकार धारण किया जा सकता है अपने आपको बहुत भारी किया जा सकता है आदि आदि.... **इसका सामान्य सिद्धांता ये है की सृजित पदार्थों में हमेशा पञ्च तत्व तो व्याप्त होंगे ही,मतलब पृथ्वी,जल,अग्नि,वायु और आकाश. अब यदि किसी**

भी पदार्थ के भीतर अणुओं का परिवर्तन कर पृथ्वी और जल तत्व को विरल(कम) कर दिया जाये और आकाश तथा वायु तत्व को ज्यादा कर दिया जाये तो उस पदार्थ विशेष के सहयोग से सहजता से वायु गमन या शून्यता की प्राप्ति की जा सकती है.और यदि मात्र आकाश तत्व का विस्तार किया जाये तथा अन्य तत्वो को अत्यधिक न्यून कर दिया जाये तो अदृश्य होना संभव है.यदि अग्नि तत्व,वायु तत्व और आकाश तत्व को ज्यादा विस्तार दिया जाये और अन्य तत्वो का लुप्त प्रायः कर दिया जाये तो ऐसे में हम उन पदार्थों को भी प्राप्त कर सकते हैं जो भविष्य के गर्भ में छुपे हुए हैं और वर्तमान में जिसका प्राकट्य हमारे सामने नहीं है. आप खुद ही सोचिये की यदि सूर्य विज्ञानं का प्रामाणिक और प्रायोगिक ज्ञान हमें हो सके तो कोई भी क्रिया असम्भव नहीं रह जायेगी.परन्तु इस ज्ञान को सीधे सूर्य से ही प्राप्त किया जा सकता है वो भी साधना के द्वारा,हमारे लिए सूर्य को अर्घ्य देना या सूर्य नमस्कार करना सामान्य सी बात होगी परन्तु हमें ये तथ्य ज्ञात नहीं है की इन क्रियाओं के साथ साथ जिन बीज मन्त्रों और मन्त्रों का प्रयोग होता है वे उस विशेष शारीरिक मुद्रा और अवस्था के साथ एक विशेष क्रिया करते हैं जिसे शरीरस्थ चक्रों में विशेष उर्जा और शक्ति का विखंडन और संलयन होता ही है.और यदि साधक इसके साथ सूर्य साधना के गुप्न मंत्र का भी जप करे तो उसे सूर्य विज्ञानं के गूढ़ तत्वो का ना सिर्फ ज्ञान होता है अपितु वो इसमें प्रायोगिक कुशलता भी प्राप्त कर लेता है.उत्पत्ति से लेकर ले तक के सभी गूढ़ रहस्यों से उसका साक्षात् हो जाता है. ये हम सभी जानते हैं की सूर्य नमस्कार करने से शरीर स्वस्थ रहता है या सूर्य को अर्घ्य देने से निरोगी देह और तीव्र नेत्र ज्योति की प्राप्ति होती है,परन्तु फिर भी आलस्य और प्रमाद के कारण इसे करने में कोई ध्यान नहीं देता,अरे थोडा सोचो की इन क्रियाओं को करने से आखिर हमारे शरीर पर सूर्य का क्या प्रभाव पड़ता है जो हमें आरोग्य और प्रकाश की प्राप्ति होती है.और वो भी तब जब हम अज्ञानवश इन क्रियाओं को कर ये लाभ पा रहे हैं,यदि पूरी जानकारी और एकाग्रता के साथ इन क्रियाओं को पूरे विधान के साथ किया जाये,तब भला क्या असंभव रह जायेगा......... जरा सोचिये......

******NPRU******

Posted by Nikhil at 4:23 AM 4 comments:
Labels: surya vigyan

MONDAY, DECEMBER 13, 2010

Surya VigYan, Paarad Tantra and Vashikaran

पदार्थ परिवर्तन कितना अच्छा लगता है ना सुनकर, एक पदार्थ का दूसरे पदार्थ में रूपांतरण. सदियों से इस विषय को समझने की सीखने की पर,ये सिर्फ पढ़ने और सुनने में ही सहज लगता है ये विषय इतना सरल है नहीं और ना ही इस विषय के रहस्य ही इतने सहज प्राप्य है की जिनका ज्ञान पाकर हम इस दिव्य विषय में पारंगतता हासिल कर सके. एक बात मैं आपको बता दूँ सदगुरुदेव ने इस विषय को न सिर्फ जन सामान्य के लिए सरल रूप में प्रस्तुत किया अपितु विषय की गोपनीयता को भी सूत्रबद्ध रूप में सभी शिष्यों के समक्ष रख कर इस दुष्प्राप्य विषय को समझने और सीखने में सहज कर दिया.'सूत रहस्यम' एक ऐसा ही ग्रन्थ है जिसमे मैंने सूर्य विज्ञानं और पारद तंत्र के अत्यधिक गोपनीय रहस्यों को सदगुरुदेव के द्वारा प्राप्त कर लिखा है. उसी ग्रन्थ में से कुछ विधियों और रहस्यों को क्रमशः 'तंत्र-कौमुदी' के इन पन्नों पर प्रति अंक हम देते रहेंगे. इस बार का ये लेख उसी की कड़ी है.

१९७१ में विज्ञानं ने ९२ अणुओ की खोज की और बताया की ब्रह्माण्ड में इतने ही अणु हैं इससे ज्यादा नहीं, १९८७ में पुनः घोषणा की गयी की १०३ अणु होते हैं. मतलब समझे आप, अरे नहीं समझे , अरे विज्ञानं की गिनती बदलती रहती है समयानुसार क्यूंकि उसकी रहस्यों का खोज केंद्र बहिर्गत होता है और इसी कारण आज भी वो सम्पूर्ण १४७ अणुओं को नहीं खोज पाया पर अध्यात्म का खोज केंद्र होता है अन्तःगत. और सहस्त्राब्दियों पहले ही सिद्धाश्रम ने ये स्पष्ट कर दिया था की १४७ अणु होते है, और ये समस्त अणु उपस्थित होते हैं सूर्य की रश्मियों में. सूर्य की वे रश्मियाँ जिनका परोक्ष रूप से रंग श्वेत दृष्टिगोचर होता है वस्तुतः वे ७ अलग अलग रंगों से युक्त होती है तथा जिनका संयुक्त रूप सफ़ेद ही दिखाई देगा. बैंगनी, जामुनी,नीला,हरा, पीला,नारंगी और लाल ये सात रंग होते हैं इन किरणों के. वेदों में सूर्य को ७ अश्वो के रथ पर आरोहण करते हुए बताया है तो उसका बहुत ही गूढ़ अर्थ है. अर्थात सूर्य विज्ञानं को यदि समझना हो तो पहले उसकी ७ वर्णीय किरणों को समझना होगा. प्रत्येक किरण २१ अणुओं के गुणों से युक्त होती है, इस प्रकार ७X२१=१४७ हो गए ना. प्रत्येक अणु का अपना गुण होता है.

समग्र सृष्टि इन्ही १४७ अणुओं से निर्मित है , चाहे कम हो या ज्यादा पर है इसी से निर्मित, जैसे एक कागज २१ अणुओ से निर्मित है तो स्वर्ण ९७ अणुओ से निर्मित है, इस प्रकार अणुओं की संख्या प्रत्येक वस्तु या प्राणी में भिन्न भिन्न होगी. और सूर्य विज्ञानं का मूल ही ये है की यदि उन अणुओं को उनके गुणों को समझ लिया जाये तो पदार्थ का रूपांतरण सहज हो जायेगा. प्रत्येक अणु का अपना गुण है, अर्थात १४७ अणुओं के अपने अपने गुण हैं जिन्हें समझने के बाद निर्माण और रूपांतरण की क्रिया सहज हो जाती है क्यूंकि ये क्रिया ब्रह्म क्रिया है संजीवन क्रिया है,इसके लिए साधक को सद्गुरु प्रदत्त ब्रह्म मंत्र का अपने मुख से उच्चारण करने का अभ्यास करना पड़ता है उस क्रिया में सिद्ध होना पड़ता है, और मैं आपको बता दूँ की मुख का अर्थ जिव्हा, कंठ, दांत,श्वास या आहार नली नहीं होता मुख का अर्थ होता है नाभि, जब मंत्र स्वाधिष्ठान का अर्थ ही होता है स्वयं का अधिष्ठान , भवन या घर जहा से मंत्र नाभि तक पहुचता है और नाभि तक पहुच

कर समस्त वायु और उपस्थित अग्नि की ऊर्जा से तेजोमय होकर जीवन देता है पदार्थ या जीव को. और जिस भी साधक को ये मंत्र सिद्ध होता है वो नवीन सृष्टि का सृजन कर सकता है जीवन दान दे सकता है, भगवान कृष्ण ने अपने गुरु संदीपन ऋषि के पुत्र को, अभिमन्यू पुत्र परीक्षित को ऐसे ही तो जीवन दिया था और १९८४ की अमरनाथ यात्रा में सदगुरूदेव द्वारा सुमित्रा को पुनः जीवन देने की घटना कौन भूल सकता है, प्रत्येक किरण जिनका अपना वर्ण या रंग होता है उनका स्वामी एक ब्रह्मऋषि होता है और होता है उनका अपना एक मंत्र,याद रखिये ये मंत्र २१-२१ विशेष अणुओं के गुणों से युक्त होते हैं और इन मन्त्रों के बीजाक्षरों का परस्पर सम्पुट पदार्थों के गुणधर्म या संयोजन के अनुसार किया जाता है जिसका ज्ञान साधक को सद्गुरु प्रदान कर देते है, तब साधक यदि स्वयं के शास्त्र रूप्नो का निर्माण करता है तो विभक्त कर लेता है उसी अनुरूप अपनी आत्मा को भी(इस विषय की गूढता तो आगे आने वाले अंको में स्पष्ट की जायेगी, क्यूंकि इसी विषय पर १००० पन्ने लिखे जा सकते हैं) ,पदार्थ तो प्रकृति में सदैव ही उपस्थित रहते हैं ये अलग बात है की वो दिखाई ना दे पर जब किसी भी शक्ति या उपादान के माध्यम से उनके घटक अणुओं का परस्पर योग कर दिया जाये तो वे प्रकट अवस्था में दिखने लगते हैं. एक सूर्य विज्ञानी या रस शास्त्र का ज्ञाता ये भली भांति जानता है की उसे कब किस अणु को पकड़ना है और कब उसका किसी और अणु से योग या विखंडन करना है,महत्वपूर्ण यही है की कब उन अणुओं को किस तरीके से विभक्त किया जाये और कैसे उनका योग कर किसी नवीन पदार्थ की प्राप्ति की जाये. और ये भी अत्यंत दुष्कर कार्य है , याद रखिये पढ़ने में कितना आसान लगता है न अणुओं को विभक्त कर उनका योग करना, पर ऐसा है नहीं क्यूंकि यदि सही तरीके से विखंडन या संलयन की क्रिया न हो पाए तो जो ऊर्जा मुक्त होती है वो अत्यधिक विनाशकारी होती है और कई सदियों तक अपने विनाश से मानव संस्कृति और जीवन को प्रभावित कर देती है, मुझे पता है हिरोशिमा और नागासाकी को आप भूले नहीं होंगे. खैर मैं आपको इतना बता दूँ की इन किरणों का योग या विखंडन करते समय २ महत्वपूर्ण उपादान होते हैं जिनका प्रयोग करने से सफलता मिलती है १. १४७ फलको से युक्त लेंस जिसमे से भिन्न भिन्न अणुओं से युक्त किरण ही गुजर सकती है और जिसको गति देकर उससे मनोवांछित तत्वों के अणुओं का योग कराया जा सके और दूसरा “अणु सिद्धि मार्तंड गोलक” जिसको योगी अपने गले में धारण करते है और जिसके द्वारा बगैर लेंस के भी अणुओं को विभक्त या संलयित किया जा सकता है. इसका निर्माण ही अत्यंत दुष्कर है, और जिसे प्राप्त कर उन सप्त मन्त्रों को सहज ही सिद्ध किये जा सकते हैं जिन्हें सप्त ऋषि मंत्र कहा जाता है और जो की १४७ अणुओं को सिद्ध करने में प्रयोग किये जाते हैं. इस गुटिका और लेंस का निर्माण पारद के द्वारा ही होता है या ये कहना चाहिए की सूत के द्वारा होता है ऐसे सूत के द्वारा जिस पर २२ संस्कार हो चुके हो क्यूंकि १८ संस्कार के बाद पारद विपरीत गति करने लगता है अर्थात भस्म रूप से पुनः जीवित होता हुआ ठोस और द्रव्य की अवस्था में आने लगता है तथा २२वे में पूरी तरह पारदर्शी और सृजन क्षमता से युक्त हो जाता है , ऐसे पारद से ही अणु सिद्धि मार्तंड मंत्र का लोम विलोम प्रयोग कर इस प्रकार का गोलक और लेंस निर्मित किया जाता है. ये क्रिया अत्यंत दुष्कर और गोपनीय है.

सूर्य तंत्र के अंतर्गत असाध्य तांत्रिक क्रियाओं को भी सरलता से संपन्न किया जा सकता है जैसे लक्ष्मी प्राप्ति के लिए आर्क भुवनेश्वरी की साधना का विधान है तो वशीकरण के लिए पुंजीभूत सूर्य वशीकरण मंत्र की साधना का, यहाँ मैं उसी वशीकरण प्रयोग को उल्लेखित कर रहा हूँ. जिसके द्वारा सभी नवग्रहों की शक्ति को अपने अनुकूल बनाते हुए लक्ष्मी तक का वशीकरण किया जा सकता है सामान्य मनुष्य की तो बात ही छोडिये और जो मुझे सदगुरूदेव ने इस ग्रन्थ के लिए बताया था और जिसका प्रयोग कर मैंने लाभ भी लिया.

रविवार की प्रातः से इस मंत्र का प्रयोग किया जाता है. दिशा पूर्व रहेगी, वस्त्र वा आसन सफ़ेद होंगे. सूर्योदय के पूर्व स्नान कर सूर्य को कुमकुम मिले जल का अर्पण कर उनकी पूजा करे और उनसे तथा सदगुरूदेव से पूर्ण सफलता की प्रार्थना करे. बाद में आसन पर बैठकर दैनिक साधना विधि के अनुसार गुरु पूजन कर धूप, दीप, नैवेद्य अर्पित कर गुरु मंत्र की १६

माला करे रुद्राक्ष माला से निम्न मंत्र की ११ माला जप करें ये क्रिया अगले रविवार तक करनी है. इसके बाद जब भी इस मंत्र का प्रयोग करना हो तो अमुक की जगह साध्य पुरुष या स्त्री का नाम लेकर १०८ बार जप ३ दिनों तक करें. प्रभाव देखकर आप खुद आश्चर्य के सागर में डूब जायेंगे.

ॐ नमो भगवते श्री सूर्याय ह्रीं सहस्त्र किरणाय ऐं अतुलबल पराक्रमाय नवग्रहदशदिक्पाल लक्ष्मीदेवताय धर्मकर्मसहिताय अमुकनाम नाथय नाथय मोहय मोहय आकर्षय आकर्षय दासानुदासं कुरु कुरु वशं कुरु कुरु स्वाहा .

'सूत रहस्यम" के पन्नों में उद्धृत ऐसे कई रहस्य जो की लगातार प्रत्येक अंक में खुलने को बेक़रार हैं , तो प्रतीक्षा कीजिये अगले अंक का किसी नवीन रहस्य के उद्घाटन के लिए.

NO MATTER HOW GOOD IT FEELS TO HEAR CHANGES, CONVERSION OF A SUBSTANCE IN ANOTHER SUBSTANCE. SINCE CENTURIES HAD BEEN WENT ON THIS SUBJECT OF LEARNING TO UNDERSTAND, IT JUST FEELS COMFORTABLE IN READING AND HEARING THIS MATTER BUT IS NOT SO SIMPLE NOR THE SUBJECT OF THE MYSTERY IS ATTAINABLE SO COMFORTABLE THAT BY HAVING KNOWLEDGE ABOUT THIS AND WE WILL BECAME SCOLAR IN IT..IS IS THAT EASY? WHAT DOES U THINK? LET ME TELL YOU ONE THING, **SADGURUDEV** NOT ONLY PUBLICLY PRESENTED AS SIMPLE BUT ALSO FORMULATED THE PRIVACY OF THE SUBJECT AS BEFORE TO PUT ALL PUPILS UNDERSTAND THE RARE SUBJECT AND BE COMFORTABLE IN LEARNING. **'SOOT RAHASYAM'** IS ONE SUCH TEXT IN WHICH I HIGHLY CLASSIFIED THE SECRETS OF THE SUN SCIENCE AND ALCHEMY TANTRA WHICH I RECEIVED BY**SADGURUDEV**. SOME OF THE METHODS AND SECRETS TO THE SAME TEXTS RESPECTIVELY 'TANTRA-KAUMUDI' WE WILL KEEP THESE PAGES PER ISSUE. THIS ARTICLE IS ONE OF THE LINK OF THE SAME THIS TIME.

In 1971, the 92 molecules were discovered in science and reported a similar molecule in the universe are no more than that, in 1987, the 115 molecules were re-announced. Did u get the meaning or you understand, Ohhh didnt understand, varies over time because the number of science discovery center of his secrets is salient and hence still can not find that the entire 147 molecules is the spiritual center search. And millennia before it were made clear that the 147 Siddhashram molecules and all molecules that are present in the sun rays. Sun rays that their indirectly color white is visible fact they are equipped with 7 different colors and that joint will appear white. Purple, blue, green, yellow, violet, orange and red colors that are seven of these rays.7 Ashva chariot of the sun in the Vedas, the ascent is described then it is very esoteric meaning. If you understand the science that is before the sun rays to understand its 7 letter. Each beam 21 properties containing molecules, thus 7X21 = 147....Isnt it hnna? So each molecule has its own merits.

The whole universe is made up of 147 molecules, whether more or less based on this only, as if a paper is made from 21 molecules and gold by 97 molecules, thus the number of molecules will be different in each object or creature. If we understands the the Sun Science core, the molecules their properties will be easy and seamless conversion of the substance. Each molecule has its own merits, ie 147 molecules to understand their properties after the construction and conversion that is comfortable because every one have it's action animation divine action, for it provided Sadhguru seeker divine spells from your home have to practice to pronounce the mantra and has to be proven, and let me tell you the meaning of the mukh is Jiwha, throat, teeth, mouth breathing or does not feed tube,actually it means 'navel',the meaning of the mantra swadhishtana is of the self-installation, building or home is where the mantra and

reached to navel and through all the air and present glory of the energy of fire gives life's substance or organism and the mantra that the seeker has proven he can create new creation can donate life, Lord Krishna, the son of his master stimulus sage, Abhimanyu son was tested and so life like that of 1984 Amarnath Yatra Sadgurudeo in the event to life to Sumitra. Who can forget this hnnnna? That each beam color is your character or his owner is and is a Brahmrishi their own spells, this spell 21-21 Remember the special properties of molecules are equipped with these Mantras
Beejaksharoan feature or combination of substances according to the cross Sampaut and which is provided to sadhak by his Sadguru and turn that knowledge seeker, then you own scriptures Rupno seeker makes up the split takes the same suit your soul the upcoming points of the subject will be clear, because this subject can be written over 1000 pages), the nature of matter always present in the live show he's not giving it is different when any power or mutual aid through the sum of their component molecules must be delivered to start appearing in the condition they appear.A Sun scientist or a scholar of Ras shastra when he knows very well how these molecules and how to catch her yoga or some other molecule to fragmentation, when the key is that which way the molecules to be done and how to split Let them do yoga a new material receipt. And it is also extremely difficult task, think how easy it is to read Remember not to split the molecules to their totals, but it is not the right way because you can not fission or fusion of the action so extreme that the energy is free is disastrous for many centuries and their destruction does influence human culture and life, I know you would not ve forgotten the Hiroshima and Nagasaki case. Are you? Well I shall tell you the sum of these rays or fission while 2 are an important factor that brings success to us.1.Aflao containing 147 different molecules containing the beam from which the lens can pass and speed by which the sum of her wishful elements molecules can be made and another "Anu siddhi Maartnde golok" which Yogi wear around your neck and by which without lenses or Sanalyith the molecules can be separated. The building itself is extremely difficult, and find that the seven Mantras can be proven that the comfortable mantra is called Sapta Rishi to prove that the 147 molecules are used. The pill and manufacture of mercury by itself is Lens or should say this is by cotton yarn by such rites have been over 22 are the values after 18 because mercury that is consumed by contrary motion seems to live again have been solid and liquid curve seems to come and 22 they completely transparent and generating capacity that consists of is, like mercury the molecule accomplishment Maartnde spells hair inverted using this type of eyeball and lens made is. The action is extremely difficult and confidential.

Under the Surya Tantra unworkable Tantric actions also can be easily performed as to achieve Lakshmi the legislation of the process of Arc Bhubaneswari,for hypnotising the punjibhut sun to Vashikaran mantra sadhana, here I am specifying similar use.Through which the Nine planets power making their friendly for us and the Lakshmi vashikaran can also happen.leave the common man spell and what ever Sadgurudeo taught me from these texts and to which I use and got advantages.

So from Sunday morning the mantra chanting can be started.Direction should be towards east and shall be white clothing or asan posture. Take bath and Get read before sunrise and offer the water mixed with kumkum before sunrise to sun and should worship them and ask them to make offerings and pray for success from Sadgurudev. After sitting on the asana daily meditation and worship the Sadgurudev in accordance with law to worship the sun, offer the sweets i.e. navedya and guru mantra should be done by rudraksha rosary beads for 16(beads malas) chanting, then following mantra 11 malas to make it to till next Sunday's action. Then if you want to use this mantra whenever feasible instead of a certain man or woman by name 108 times chanting to 3 days. Hmmmm isn't it good! Now you will see urself immersed in an ocean of surprise effect.

Om namo bhagwate shri suryaay hreem sahastra kirnaaya aim atulbal parakramaaya navgrah dashdikpaal lakshmidevtaaya dharmakarmasahitaaya amuknaam naathay naathay mohay mohay aakarshay aakarshay daasanudaas kuru kuru vasham kuru kuru swaha.

"**Soot Rahasyam**"quoted in the pages of many secrets who constantly are impatient to open up in each issue infront u,so my dear reader just wait and watch the next issue for the opening of a new mystery.

FOR MORE UPDATES
OF
(Alchemical files and Mantras RELATED TO POST)
PLZ JOIN
YAHOOGROUPS **To visit NIKHIL ALCHEMY GROUP plz click here**

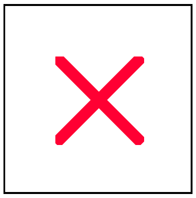

(For sanskar upto 1 to 12 TH) IS BEING ORAGNISED
For more information related to its schedules,fees, and other terms and condition **PLZ Click here to visit post "Important notice for Parad Sanskar Workshop –II "**

Free E-Magzine bi monthly (only for free registered follower of this blog and Group memember)
"Lakshmi and Vashikaran Visheshank" is going to be relesed
Soon on First week of Dec 2010.
(Containing, article on Ayurved,Tantra, yantra,Mantra, Surya vigyan,Astrology and Parad Tantra) **PLZ Click here to know the Details/List of articles coming in this issue**

if not,a registered follower(Registration is totally free) of this blog , then
PLZ sign in in follower section, appearing right hand upper or lower side of this page,

---

Strot sadhana : for removing problems in life(Gajendra moksh strot)

हमें अनेको गुरु भाई /.बहिनों के इ मेल मिलते ही रहते हैं जिसमे अपनी अपने कष्टों का उल्लेख छोटे या बड़े का उल्लेख रहता हैं , हम सभी साधनात्मक क्लिष्ट से बचना चाहते हैं और चाहते हैं की हमें १००% सफलता मिल जाये वह भी प्रथम बार में ,आप स्वयं ही सोचे की यही हर बार हो तो क्या जरुरत हैं बड़ी साधनाओ की, पर सबका एक अपना अर्थ हैं ही . समस्या तो तब बढ़ जाती हैं जब उन्होंने दीक्षा भी नहीं ली होती हैं, और किन्ही कारण वश वे यन्त्र माला भी नहीं ले पाते हो , आर्थिक कारण के अलावा यह कारण स्वयमं के घर वालों का असहयोगात्मक व्यवहार भी रहता हैं .

(हर असफलता आपके लिए मानता हूँकि स्वागत योग नहीं हैं पर जो इन सब का मूल समझते हैं वह जानते हैं की एक बडी सफलता के लिए रास्ता खोल रही हैं अन्यथा आप वही रह जाये .)

जो कहा गया हैं की सदगुरुदेव तपाते हैं हैं तो इसका अर्थ हैं की हमें , वे आग में डाल देंगे??? नहीं नहीं , बल्कि इन असफलताओ के माध्यम से वह देखते रहते हैंकितने अभी भी टिके हैं कितने चल दिए , कितनी गंदगी , कितना संशय अभी भी हमारे मन में हैं ,

एक बार उन्होंने ही कहा था, कौन अपने बगीचे में मौसमी पोधा लगाना चाहता हैं वह तो सदा ब हार ही पौधे ही लगाये गे जो एक दिन वृक्ष बन कर , जो झुलसी हुए मानवता पर उस पर मेघ बना कर अमृत वर्षा कर सके ,,

पर जब ये संशय नहीं निकल पा रहा हो या किसी कारण वश साधना मंत्रो की न की जा पा रही हो तब क्या कोई और रास्ता नहीं हैं .

क्या करें जिससे हम सभी अपनी समस्या से मुक्त हो पाए ,

सदगुरुदेव भगवान् ने पत्रिका में कई बार ऐसे प्रयोग दिए हैं , उनमे से एक ऐसा ही स्त्रोत संबंधित प्रयोग हैं वह हैं गजेन्द्र मोक्ष स्त्रोत

सदगुरुदेव भगवान् ने इस स्त्रोत सेसंबंधित अपने स्वयं के अनेको अनुभव बताये हुए हैं साथ ही देश के अनेक उच्चस्तरीय नेता और अधिकारी यो के अनुभव बताया हुए हैं , जब सदगुरुदेव जी ने कह दिया तो मन्त्र मूलं गुरु वाक्य के अनुसार अब और विस्वास के लिए क्या बाकी रह जाता हैं . जब स्वयं गरुडासीन श्रीनारायण ही अपने भक्त की रखार्थ दौड़े चलेआयेहों , तब कौन सी और कैसी परिस्थिति हो ,क्या अर्थ रखती हैं तब उस भाव को प्रदर्शित करने वाला यह स्त्रोत तो सचमुच में अद्भुत हैं ही , आप इसे करें औरस्वयं भी एक प्रत्यक्ष प्रमाण बन जायेंगे .

स्त्रोत वास्तव में अपने ह्रदय के उदगार हैं शब्दोंमे बंधी एक ऐसी रचना(जो किसी काल में किसी महायोगी ह्रदय को मंथन से उत्पन्न हुए हो जब उसने अपने इष्ट को अपने सामने देखा हो) जो आपके ह्रदय की भावना सीधे ही उस स्त्रोत के इष्ट के ह्रदय से संपर्क कर आपके लिए मनो बांछित परिणाम ला ही देती हैं चूँकि यह मंत्र नहीं हैं इसकार ण, इसका / इनका सही उच्चारण नहीं भी हो तो कोई समस्या नहीं हैं आपकी कितनी श्रद्धा और भावना युक्त आपका पाठ हैं उस पर ही सब निर्भर हैं ,

स्त्रोत पाठ के सामान्य नियम तो सभी जानते हैं ही , फिर भी कुछ नियम का पुनः उल्लेख करना बाकि रह जाता हैं ,

- स्नान करके साफ स्वच्छ वस्त्र धरण करके ही पाठ करे .
- कोशिश करे की प्रिंटेड स्त्रोत का पाठ करे या वह संभव नहीं हो तो अपने घर के या किसी और व्यक्ति से कहे ही वह उसे उतार कर आप को दे दे , क्योंकि स्वयं लिखा हुआ उच्चारण करना अच्छा नहीं माना जाता हैं ,(पर जब कोई ऐसे विशेष स्त्रोत हो की जिसका बारे में अन्य को न बताना हो तब परिस्थिति और कालानुसार आप स्वयं ही उसे उतार कर लिखे .
- सम्बंधित स्त्रोत के इष्ट का चित्र मिल जाये तो उपयोग करे
- पूजा स्थान में सदगुरुदेव और पूज्य माताजी का चित्र तो होगा ही
- धुप दीप , अगरबत्ती तो आपके ह्रदय की भावना को व्यक्त करने के एक प्रकार हैं उसे तो उपयोग करना ही चाहिएआखिर सदगुरुदेव और इष्ट के प्रति इतना हो हम बच्चो को करना ही चाहिए ही
- सबसे पहले जैसा की स्त्रोत में निर्देशित किया गया हो उतनी संख्या में उसका पाठ करके उसे सिद्ध करे , फिर आप उसका उपयोग कर सकते हैं
- या फिर अपनी समस्या को संकल्प में बता कर निश्चित संख्या में जैसा की निर्देशित किया हो , , पहले से ही आप द्वारा निश्चित दिन तक जप करे .
- एक निश्चित समय पर साधना में बैठना तो सफलता का मूल मन्त्र हैं ही .
- हर किसी को की आप क्या कर रहे हैं और क्यों कर रहे हैं बताना उचित ही नहीं बल्कि असफलता के द्वार पर आपको ला खड़ा कर देता हैं

· सबसे अंत में सबसे महत्वपूर्ण बात की हर दिन का पाठ का जप सदगुरुदेव भगवान के श्री चरणों में समर्पण करना न भूले , आखिर वे ही तो अनेक देव देवी के माध्यम से हमें परिणाम दे रहे हैं , हमारी आँखों में व ह निर्मलता नहीं आई हैं इस कारण वह ऐसे भी कार्य करते हैं ...

आप मेसे जो भी किसी भी समस्या से पीड़ित हो उसका कोई हल नहीं सूझ रहा हो ,समय न हो ,बड़ी साधना करने की तो एक बार इस स्त्रोत को पूरी गंभीरता से उपयोग करे ,यह स्त्रोत ,बाज़ार मेंआसानी से मिल जाता हैंबहुत ही अल्पमोलीय हैं पर इसका प्रभाव बहुत ही अद्भुत हैं ,

सदगुरुदेव के मूल स्वरुप भगवान् नारायण के पालन कर्ता और रक्षा कर्ता स्वरुप का यह स्त्रोत आपके लिए सौभाग्य के रास्ते खोल देगा और इसे जीवन की हर वह स्थिति जो की आपके लिए समस्या हो उसके लिए उपयोग किया जा सकता हैं .

आज के लिए बस इतना ही

****

We are continuously getting so many mails from our guru brother and sisters mentioning so many problem(every aspect of life) what they are facing. think about a minute, we all are trying to escape from the hard work/devotion/faith needed for success in sadhana, and still want to have 100% success in very first attempt!!!!, then think about yourself what is the value and usefulness of big sadhana?, if all the work can be easily completed by small sadhana. Each sadhana has its own value . problem could be worse, when sadhak has not taken guru Diksha, and due to any reason, they are not able to purchase yantra or mala and may be sometimes non corporation of member of their family.

(every failure not a welcome things, but those one ,who can understand the basic phenomena lies behind every failure, already knows that it just opening of a new horizon for success, other wise on getting success on that point ,may be you will not grow/interested to go ahead.)

It has been said that Sadgurudev always purify us through fire , that simply does not means that he would throw us in the midst of fire but created such a circumstance and condition ,where we can easily find out mistake weakness and other impurities of our life , and he also watches us in the midst of these failure how many of us will move other destination /other guru and how many still on the path, how we react s and how much doubt still lies in our heart and mind,

Once Sadgurudev ji wrote that who want to sow the seasonal plants in his garden ,every one preferred evergreen plants, so that he also plants such a evergreen plants who one day become the tree, that provide shelter to whole mankind in this time of highly testing.,

(some guru bhai and sister are in confusion regarding using of certain words in sabar mantra, like “shiv ko trishul pade” for them ,we just want to say that not to pay much attention on the literal meaning of the sabar mantra since mantra is a force that works on the vibration , so do not change the words, and also you will get no harm, and if any where any such a precaution is needed,we will already mentioned,)

But when this doubt is not loosing its ground from our heart, and we are not having time to go for big sadhana, is there any more way?.

So that we can set aside our problem.

Sadgurudev Bhagvaan provide so many prayog in our mag. And one of such a prayog is “gajendra moksha strot” Sadgurudev Bhagvaan wrote many experiences related to himself and from high ups and top political leaders, when Sadgurudev ji has said than according to “mantra moolam guru vakya” what more is needed to write. When bhagvaan Vishnu /narayan himself run to protect his bhakt ,than any worst condition can stand in front of him? this strot really provide amazing miraculous result. just go for that and you also become a witness of its effects.

What is the strot means , this is the combination of so many shlok composed by mahyogies/great one/masters, when their isht appeared before him , and that time their heart voice comes in the form of strot. And these words carries your heart feeling directly towards the your isht and proved the miraculous result., since this is not mantra so if any pronunciation problem occurs that not much matters since it depends upon your purity of heart and feelings,

As many of you already aware of general rules applicable in this strot sadhana, but here are some general and some special points.

- Have a bath and wear clean cloths,
- Try to have printed strot, if not possible than do try to get the strot written by some one else, since it s not recommended that person note down in his own handwriting the strot and than start path of that, but if sometimes such a circumstance occurs where you do not want to show other than you can d o that yourself.
- Try to have the photograph of that strot isht before you,
- In your pooja room Sadgurudev and param bandniya mataji's photo must be present.
- Try to light up the earthen lamp, and ddhoop agarvatti , theses are the instrument to show the proper respect and your feeling for towards your isht.
- Do try to chant the strota as the minimum number specified for that to have siddhita, and than you can use.
- Or take water in your hand say your problem and mentioned clearly how many day and how much number of path you are going to do.
- Always be very punctual regarding your sadhana starting time, it's a must factor for the sadhana success.
- Never publicize what you are doing and how you are doing , this many time bring you failure.
- And last but not the least point that always offer every days jap/path in the divine lotus feet of Sadgurudev ji, since through many dev /devta only he is giving us the fruits/result of that path to all of us . since still we have not get those purity in our eyes.

If any one of you having so much trouble some life and not getting any way to overcome that , have a try for this strot with full heart and devotion, and you will see the result yourself in some days. And this strot is very easily available in any market religious shop. Bhagvaan shri narayan is the real form of Sadgurudev ji's when he is caring all of us, this surely open doors of good luck, and this strot can be used in any type of problem in life you are facing.

This is enough for today.

MAARCH MAAH - SOUBHAGYA PRAAPTI SOUNDARYA LOOTIKA PRAYOG

Satyam Shivam Sundaram is one of the fundamental sentences of Indian culture but it is also true that if good-fortune gets connected to beauty, it will be like icing on the cake. And how can any situation of life be joyful without good luck? Actually, situations have been transformed in today's era such that real beauty has been lost somewhere. Definition of beauty which we have thought in our mind, it could not have been imagined by our sages because we have confined its definition to physical aspects only and made it one-dimensional. Entire world is filled up in definition of beauty element since the thing which is novel each moment can be contained in definition of beauty. The one which is melodious, which can imbibe life in true sense with novelty is beautiful. But how much it is possible in today's era? After striving hard the whole day, person finds that beauty element has gone missing from his life and when luck gets link to beauty element, then each moment and every day become cheerful and joyful. It has also been said that the thing which good time or luck can do for you, even combination of thousands of person cannot do it for you.

Following are the benefits of this sadhna

- This sadhna is capable of transforming ill-fortune of person into good-fortune.
- It gets rid of shortcomings like melancholy in life, persistence of negative thoughts, not able to concentrate in any work and make life cheerful.
- This sadhna is capable of adding flavor to stale life..
- This sadhna is helpful for progression in fortune.
- This sadhna is capable of providing job and promotion in job..
- This sadhna can make family life cheerful.
- Fate has an important role to play in success of sadhnas. This sadhna is capable of transforming the fate of sadhak for this purpose too.

Seen in this manner, in all the melodious and joy-providing aspects of life, beauty and good-fortune has got an important place which could not be considered inferior anytime.

22 March is not only tenth day of Shukl Paksha but along with being a Friday, it falls on Pushp Nakshatra and presents an amazing coincidence to provide beauty and strength to life. That too, in middle of Mahashivraatri and Holi, getting such a yog is like opening doors of luck in life for a sadhak.Now who would like to miss tehse divine moments?

Articles required in this sadhna are

- Soundarya Lootika Prabheda Mahayantra.
- Agate stone accomplished by accomplishment-providing Soundarya mantras.

Not only are we providing these two articles as gift rather we will also bear the expenses of sending them to you. Mantra which needs to be chanted with this sadhna will also be made available along with yantra.

When you will see the composition of this yantra, presence of 4 different beej mantra on its 4 corners is an amazing composition in itself. Filled with 8 petals of lotus, this divine yantra is capable of providing 8 accomplishments (capable son, capable wife, best home, fame, money, respect, complete life and capable body) of materialistic life. Having such divine yantra in sadhna room is like opening doors of good-fortune.

This easy sadhna is only of 3 days. After taking bath in night after 10:00 P.M, wear clean red dress, sit on red aasan and keep yantra and agate stone in front of you. Take the resolution and start the procedure. You just have to chant 5 rounds of mantra on each night. Every day's mantra jap has to be dedicated to lotus feet of Sadgurudev Ji and take his blessings for success in sadhna.

Moonga rosary has to be used for chanting.

After completion of sadhna, keep sadhna yantra in worship place. Just chant mantra few times daily so as to imbibe the energy produced by this procedure. When you are getting such rare sadhnas in month of March, will you still think? One has to make use of this opportunity of transforming fortune.

It is our endeavor and intention that all of you get joy, good-luck and wealth in life so that you can move ahead on sadhna path with heart, mind and soul. As per ideals of Sadgurudev, not only you become financially strong but strong in all the respects.

Those who want to do sadhna, they can contact onnikhilalchemy2@yahoo.com

Decision to do sadhna is all yours.

After all this precious life is all yours…..

~~~~~~

सत्यम शिवम् सुन्दरम तो भारतीय संस्कृति के आधारभूत वाक्यों में से एक हैं, पर यह भी सत्य हैं की सुन्दरता के साथ सौभाग्य भी जुड़ जाए तो सोने में सुगंध जैसी अकल्पनीय अवस्था मानो साकार सी हो जाए और बिना सौभाग्य के भला जीवन की कोई भी स्थिति सुखकर कैसे हो सकती हैं?,वास्तव में आज के जीवन में जिस तरह से परिस्थतियों का परिवर्तन हो रहा हैं उसमे वास्तविक सौन्दर्य तो कहीं खो सा गया हैं.आज सौन्दर्य की परिभाषा जो हम सबके मानस में हैं वह तो हमारे मनीषियों ने सोचा भी नहीं रहा होगा क्योंकि क्योंकि हमारी परिभाषा सिर्फ देहिक तक सीमित होकर एकांगी सी हो गयी है, जबकि इस सौन्दर्य तत्व की परिभाषा में तो सारा विश्व समाया हुआ हैं क्योंकि जो नित नूतन हैं वही ही सौन्दर्य की परिभाषा में सहज समा सकता हैं. जिसमे रस हैं, जिसमे नूतनता के साथ जीवन को सही अर्थो में आपने को आत्मसात करने की भावना हो, वही ही तो सौन्दर्य का एक अर्थ हो सकता हैं, पर आज की परिस्थति में यह संभव सा कहाँ हैं ? दिन प्रतिदिन की जी तोड़ मेहनत के बाद व्यक्ति पाता हैं की उसके जीवन से सौन्दर्य तत्व कहीं खो सा गया हैं और इसी सौन्दर्य तत्व के साथ जब सौभाग्य भी जुड़ जाता हैं. तब हर पल, हर दिन अपने आप में
~~~~~~

उल्लासित और उमंगमय हो जाता हैं क्योंकि यह कहा भी गया हैं की जो एक अच्छा समय या भाग्य आपके लिए कर सकता हैं वह हज़ार लोग मिलकर भी आपके लिए नहीं कर सकते हैं.

इस साधना के निम्नलिखित लाभ हैं.

- व्यक्ति के दुर्भाग्य को भी सौभाग्य में बदल सकने में समर्थ, यह साधना हैं.
- व्यक्ति के जीवन में से उदासी,ऋणात्मक विचारों का लगातारबने रहना,किसी भीकार्य में मन नहीं लगना,जैसी कमियों को दूर करके उसका जीवन प्रसन्नता युक्त बना सकने में समर्थ, यह साधना हैं.
- नीरस जीवन में भी रस युक्तता के अन्य आयाम खोल सकने में समर्थ, यह साधना हैं.
- भाग्य उन्नति में सहज सहायक हैं, यह साधना.
- नौकरी प्राप्ति और प्रमोशन प्राप्ति में भी अनुकूलता प्रदान कर सकने में समर्थ हैं, यह साधना.
- परिवारिक जीवन में आनंदमयता के नए द्वार खोल सकने में समर्थ यह साधना हैं.
- साधनाओ में भी सफलता प्राप्ति में भाग्य का एक अपना ही हाथ हैं और यह साधना साधक के भाग्य को इस हेतु भी अनुकूल कर सकने में समर्थ हैं.

इस तरह से देखा जाए तो जीवन की जितने भी माधुर्य और रस युक्त और आनंद प्रदायक पक्ष हैं उन सभी में सौभाग्य और सौन्दर्य का अपना ही एक अर्थ हैं जिसे कभी भी कम नहीं आंका जा सकता हैं.

मार्च महीने में २२ तारीख को शुक्लपक्ष की न केबल दसवीं तिथि हैं बल्कि शुक्रवार के साथ साथ पुष्य नक्षत्र का संयोग जीवन में पुष्टि प्रदाता होने के साथ साथ, जीवन में यदि सौन्दर्य और पुष्टि प्रदान करने का अद्भुत संयोग निर्माणित हुआ हैं.वह भी महाशिवरात्रि और होली के मध्य, एक ऐसा संयोग तो मिलना साधक के लिए सौभाग्य के द्वार ही खोल देने के लिए उपलब्ध हुआ हैं.अब भी क्या कोई एक ऐसे देव दुर्लभ क्षणों को खोना चाहेगा ?

इस साधना में जिन उपकरणों की आवश्यकता होती हैं
वह हैं

- सौन्दर्य लूतिका प्रभेदा महायंत्र
- सिद्धि प्रदायक सौन्दर्य मंत्रो से सिद्ध हकीक पत्थर

यह दोनों उपकरण हम आपको उपहार स्वरुप निशुक्ल प्रदान करने जा रहे हैं.बल्कि आपको भेजने में लगने वाला व्यय भी हम ही सहर्ष उठा रहे हैं.आपको इस साधना में जिस मन्त्र का जप करना हैं वह हम इस यन्त्र के साथ ही आपको उपलब्ध कर देंगे .

आप इस यन्त्र का जब विन्यास देखेंगे तो इसके चारों कोनो में, चार विभिन्न बीज मंत्रो का अंकन, अपने आप में ही एक अद्भुत विन्यास हैं और अष्ट कमल दल से युक्त यह दिव्य यन्त्र अपने आप में, जीवन की भौतिक अष्ट सिद्धि (योग्य पुत्र, योग्य पत्नी, श्रेष्ठ भवन, यश,धन,राज सम्मान,पूर्ण आयु और योग्य

शरीर) प्रदान करने में समर्थ हैं .एक ऐसा दिव्यतम यन्त्र आपके साधना कक्ष में होना ही एक सौभाग्य के द्वार खोलने जैसा हैं.

यह सरल साधना मात्र तीन दिन की हैं, और रात्री में १० बजे के बाद स्नान कर स्वच्छ लाल धोती धारण कर लाल रंग के आसन पर बैठ कर अपने सामने यह यन्त्र और हकिक पत्थर रखकर, संकल्प लेकर प्रक्रिया समपन्न करें.और आपको केबल पांच माला मंत्र जप हर रात्री में आपको करना हैं,हर दिन का मंत्र जप आपको सदगुरुदेव जी के श्री चरणों में समर्पण करना हैं और उनसे इस साधना में सफलता प्राप्ति का आशीर्वाद की आप कामना करें.

इस मन्त्र जप हेतु आपको मूंगा माला से करना हैं.

साधना पूर्ण करने के उपरान्त आपको इस साधना यन्त्र को अपने पूजा स्थान पर ही रहने देना हैं.और प्रतिदिन कुछ मंत्र जप करते रहने से इस प्रक्रिया से उत्पन्न उर्जा प्रवाह को आप में और भी आत्मसात करने में सहायक होगा.अब मार्च के इस महीने में जब ऐसी दुर्लभ साधनाए आपको उपलब्ध होने जा रही हैं तब आपको क्या अब भी कुछ सोचना हैं क्या? बल्कि भाग्य सवांरने के जो भी साधना प्रयोग अवसर मिल रहे हैं उनका तो लाभ आपको लेना ही चाहिए .

इस तरह से हमारा यह प्रयास और भावना यही हैं की आप सभी के जीवन में सुख सौभाग्य,धन संपत्ति का आगमन संभव हो,जिससे की आप और भी अधिक मन, प्राण से इस साधना क्षेत्र में गतिशील हो सकें.सदगुरुदेव जी के दिखाए गए आदर्श अनुरूप आप सभी न केबल आर्थिक बल्कि समस्त दृष्टी से सुखी संपन्न हो सकें.यही हमारी मूल भावना हैं.

जिन्हें साधना यह करनी हो वह nikhilalchemy2@yahoo.com पर संपर्क कर सकते हैं .

अब निर्णय साधना करने का आपका हैं.

आखिर यह बहुमूल्य जीवन भी तो आपका ही हैं ...

****NPRU****

Posted by Nikhil at 8:54 AM No comments:
Labels: SAUBHAGYA DAYAK SADHNA, SOUNDARYA

THURSDAY, JANUARY 31, 2013

IMPORTENT INFORMATION

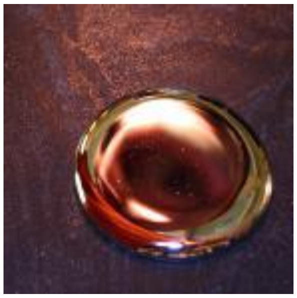

Friends, Sadgurudev has always said that battle in any particular era can be won by using weapons of that particular era only. In modern era, attaining success in sadhna is nothing less than any battle in which there is fight between various mental tendencies of sadhak. In Today's world neither environment conducive for sadhna is available nor our food-habits, mental thought process and physical purity is conducive for sadhna. Therefore, divine idols are needed much more than before. And whenever "Divine" word comes to our mind, we automatically get reminded of Parad. Sadgurudev put a lot of hard work and made these rare idols available for common public and introduce us to such rarest articles whose presence is sufficient to induce attitude/ emotional base needed for divinity and attaining spiritual heights which are even rare for high-level yogis in so many aspects. Some people may feel that Parad Sahatraanivata Deh Tara and other idols are brought in front of you all for business purpose but those who have participated in shivirs conducted by Sadgurudev in 1980s; they know that all these were brought to light by Sadgurudev only.

Parad Vigyan had become obsolete. If anything was left, it was its medicinal form….and that too with few selected ones…..What to talk about Parad and Tantra, people even did not know about it. But Sadgurudev revived and brought forward this science again in front of all and whatever he can do in capacity of Sadgurudev, he did it all and made sadhaks carry out construction work of these divine articles in various shivirs. Along with it, he revealed amazing secrets of Parad Tantra in every shivir. But it was our weakness that we could not understand his efforts in real sense. Now situation is that even new sadhak does not know that such things happened in past. It is highly unfortunate that instead of conserving such higher-order knowledge and encouraging it……all became silent.

The science about which Sadgurudev introduced us to its rare scripture and techniques;it is highly unfortunate that getting a high-order parad idol today, meeting prescribed standards, has become so much difficult.It is illogical to think that any Parad idol made in any manner can yield the same results as written by Sadgurudev regarding that Parad idol. Sadgurudev made amazing cassettes like Parad Vigyan, Parad Shivling Poojan and Raseshwari Diksha available upon hearing which one can understand that with how much importance and dignity, he put forward these subjects in front of us.How can a tantra Vigyan which is called highest and final tantra be possible by any adulterated Parad idol? Parad Tantra is highest-order tantra and it has been told by Sadgurudev so will we still doubt Parad idols which are formed in accordance with parameters of this Vigyan? Trust and Dedication are important but we cannot measure that dignity with blind-faith.

Sadgurudev has provided us vision and knowledge otherwise what would have been need that he introduced his disciples to even subtlest information about each idol. And if you see old editions of Mantra Tantra Yantra Vigyan then you will find that nearly every edition contained some information about Parad Vigyan.
Friends, today's situation has become so much ironical. Now we are able to comprehend that Sadgurudev Ji had seen present day situation in that time itself and thus gave the knowledge about construction of these parad idols because today we do not witness the physical, mental, moral and character strength as desired, then how will sadhna be possible? And that's why Sadgurudev put forward the amazing form of Parad Idol (part of Lord Shiva, Aadi Acharya of Tantra) in front of us all. Will we still remain entangled in our ego……Will we still not understand meaning of these divine articles, and the divine articles which are available today, it is not necessary that they will be available in future too. In the same series….
1. Param Divyatam Parad Sadgurudev Idol
Friends, Sadgurudev has told in Guru Pratyaksh Siddhi cassette that those who have accomplished Guru completely, they do not need to do any sadhna. But he has also said that
Why Guru should be manifested? When Guru is sitting in front of you, then what is need of Pratyaksh Siddhi (manifesting him in visible form)?
Sadgurudev himself has told the answer to this question in his divine voice that you all have considered only physical body as Guru. But Guru is not the name of any physical body rather he is embodiment of infinite knowledge of universe .You all have to imbibe the knowledge (Sadgurudev element) present inside this physical body. This knowledge is your Guru. If it takes you towards your aim, pave your way towards it then it is your Guru.
Friends, it is true that the physical body through which this enormous and divine treasure of knowledge has appeared in front of us all, it is highly revered by us. But if we confine ourselves only to physical body then…..who will introduce us to real Sadgurudev element? Because we have considered only physical body as Guru. Then what is need of any Pratyaksh Siddhi? Sadgurudev divine grace is so amazing that his spiritual ascetic disciples after thinking a lot have given the permission for construction of Parad idol of Sadgurudev Ji. And it is supreme fortune of all of us that such thing has become possible. What can be written about Parad idol of Sadgurudev, made in accordance with procedures laid down in shastras with eight sanskars done on it.
Sadgurudev has said himself that If Sadgurudev becomes established in anyone's heart in real sense then for him all sadhnas whether it is Shamshaan or Dev-related or Sabar or Intense or related to any tantra, becomes a child play. Then he does not need to chant 1 lakh or 1.25 lakh mantra jap because when Sadgurudev element is

present in sadhak in its complete form, then how can any sadhna remain unaccomplished. Then he will have knowledge of all subjects and why it would not be, when Sadgurudev, epitome of knowledge, is established inside him then it is but natural for divinity and knowledge to be exhibited by him. They themselves will be an example of purity. And every disciple has to be like this, but it all depends on our speed to travel on this path and capability to imbibe the knowledge.
But just by saying….by chanting slogans…or chanting some rounds of mantra Jap will not make it possible. Whereas what are our mental tendencies, it is known to all.
So there is always a need for such supreme and rare idol and when Sadgurudev will be present inside our sadhna room along with divinity of Parad then how will we not attain success? We can do any poojan from Panchoopchar poojan to mental poojan. When there is grace of Parad Dev on one hand and Sadgurudev on the other, how can obstacle remain on the path. It applies not only to sadhna but to all the aspects of life. Where there is Sadgurudev, there is perfection, there is success, there is dignity, there is divinity, and there is bliss. This opportunity does not come again and again. It should also not be linked with business rather one should make use of this golden and rare opportunity.
Those who want more information regarding this subject, they can contact us on nikhilalchemy2@yahoo.com

2.Tantrotsaundaryam Tribhuvanmohankarakah

Real definition of beauty can be told only by the person who has seen universal beauty not only in outer form but also in internal form, experienced it and by seeing it through his eyes has imbibed it inside him. The moment which is filled with complete pleasure, the pleasure which weakens all other feelings put sorrow, anxiety and worries in dormant state. There is no place of all these feelings in the moments when beauty is being experienced. At that time, there is only bliss element which is imbibed inside person through his eyes by nature. And this feeling is experienced by senses of karma and knowledge of fortunate sadhak. One which is present in basic form is beautiful. Where there is not present any type of deformity, which is completely capable, universal, present in that natural form in which universal basic power has imagined so, all these is beauty. And how one can define it when all definitions vanish.
It is beauty which gives birth to art. How can art be possible without beauty because art is medium to exhibit any beauty, express it? Terming Lord Shri Krishna as Jagat Guru (Guru of world), personality having competence in all arts is result of his inner and outer beauty. This situation is also referred to be complete in 16 arts.

Those who have attained beauty, there is no art whose knowledge they cannot possess. Certainly base of life is beauty only. That's why Saundarya sadhna have an important place in Tantra, may be they are pertaining to Yakshini, Apsara or Kinnari. Ancient tantra and proponents of tantra have unarguably accepted the significance of Saundarya sadhnas.

When momentary beauty can teach a person art of diving within it, can change vision/attitude of person, can introduce him to his inner self, can express his inner feelings outside, then one can imagine what will happen when person imbibes this beauty permanently. That's why there is no chance of sadhak to face any shortcoming after success in Apsara and Yakshini sadhna. Sadhak attains luxury, prosperity and fame through these sadhnas. Along with it, every moment of sadhak's life is filled with happiness and joy. Sadhak enjoy each moment of his life with supreme delight. These facts were put forward by Sadgurudev among sadhak many a times, got rid of misconceptions related to Saundarya sadhnas and compelled sadhaks to think about significance of these sadhnas. It is also a fact that there has always been a thrill among sadhak category regarding Apsara and Yakshini sadhnas. Many a times, sadhak has a desire in mind that they can manifest that beautiful princess, embodiment of beauty, attain her company and transform their from ill-fortune of life to good fortune.

For fulfilling such desires of sadhak, Sadgurudev from time to time put forward these prayogs in front of sadhak and made them do it too. Along with it, he provided abstruse and secretive facts many a time for benefits of all. In this context, he cited two herbs and told hidden points regarding it. In fact, in field of tantra there are many facts famous among sadhaks regarding herbs and miraculous results from their tantric prayogs. It has been the experience of sadhaks that if at a particular time, related procedure is done upon particular herb and it is made energized in various ways then chances of sadhak attaining success increases multiple times. And in some tantra sadhnas, there are present Vidhaans related to herbs without which attaining success is impossible. This fact pertains to accomplished herbs. But attaining Dev herbs is very rare. If they are searched without suitable sadhna or chanting of mantra, they are not visible or they do not exhibit their quality if no tantric procedure is done upon them. But if any person attains the complete procedure and do related Tantric procedure, then herb, like gods, is capable of fulfilling any desire of sadhak.

In this context he provided the description of two special herbs

Yauvanbhringa

Shrangaatika

Yauvanbhringa means capable of providing/activating youth. In accordance with its qualities, this rare herb is used in few selected Aushadhi Kalps capable of doing

Kayakalp. But from Tantra point of view, this herb is extremely important. If seen from tantric point of view, when juice of this herb is energized and cloth soaked with this juice is worn then it gives birth to intense beauty and attraction. As a result, Itar Yonis like Yakshini and Apsara starts roaming around sadhak invisibly. Due to connection of this herb with Dev category, sadhak can attain quick results. In context of apsara and yakshini sadhnas, Sadgurudev has said regarding this herb that if person does sadhna after wearing the dhoti soaked in juice of Yauvanbhringa then Apsara and Yakshini feel intense attraction and sadhak feels easiness in sadhna. Along with it, sadhak is saved from many obstacles which may arise during sadhna duration.

Second herb relating to Saundarya sadhna which Sadgurudev told wasShrangaatika. Qualities of this herb are in accordance with its name. Basic meaning of Shrangaatika is to amplify and expand beauty. This herb can also be called amazing in tantra world due to its miraculous qualities. There are many medicinal qualities of this herb too but from Tantra point of view, it is very important because through this herb, person establish a contact with particular Lok. There is strong connection of this herb with Yaksha or Dev Lok. Sadhak in order to accomplish his Isht or fulfill his desire has to pay special attention to consciousness in Mantra Jap and it is indisputable truth that More concentration sadhak puts in his reciting of mantras, more quickly he is able to connect internally with related Lok and get results. This connection sometimes is not established which can be due to many reasons. But this herb is called to be expanding because after doing tantric procedure on this herb, sadhak connecting cord is connected very quickly. Therefore sadhak keeps this herb as basic/underlying power. Sadgurudev has said regarding it that if Aasan having qualities of Shrangaatika herb is made and Apsara/ Yakshini or Saundarya sadhna is done while sitting on it, then sadhak moves one more step forward towards ascertained success since sadhak's inner connection is established directly with Dev Lok or Lok of related Itar Yoni.

In this manner

- **Yauvanbhringa Dhoti**
- **And Shrangaatika Aasan**

Can simplify success in Apsara, Yakshini or any Saundarya sadhnas and can ascertain complete success of sadhak. On one hand, this special aasan enables sadhak to contact Itar Yoni and on the other hand, due to special dhoti/cloth, Itar Yoni of Saundarya category i.e. Apsara, Yakshini or Kinnari etc. is attracted towards sadhak.

3.APSARA YAKSHINI SADHNA RAHASYA SOOTRA RAHASYA KHAND–Those brothers and sisters who wish to get book published in this seminar and “ **DURLABH POORN YAKSHINI APSARA SHASHT MANDAL YANTRA”,** they should also contact above-mentioned e-mail.
Now is the time to take decision. **It is request to you that if you are sending email for this purpose, please write subject clearly in SUBJECT of mail.** We will provide you the desired information.

~~~~~~

मित्रो, सदगुरुदेव ने हमेशा कहा हैं की जिस युग मे आप हो,उस युग के अस्त्रों से ही, उस युग के युद्ध को जीता जा सकता हैं,और आज के युग मे साधना मे सफलता पाना भी किसी युद्ध से कम नही हैं.जिसमे साधक की बिभिन्न मनोवृतियों का संग्राम जो होता हैं.आज जब साधना करने के लिए जैसा वातावरण चाहिये,वैसा उपलब्ध हो नही पाता हैं, न ही आज हमारा खानपान और अन्य मानसिक,शारीरिक चिंतन भी ऐसा हैं, तब दिव्य उपकरणों की आवश्यकता पहले से भी कहीं आधिक आज हैं.और जब भी दिव्य शब्द का उल्लेख आता हैं तो कहीं न कहीं पारद का उल्लेख या स्मरण भी हो जाता हैं.सदगुरुदेव ने अथक श्रम करके इन दुर्लभतम विधानयुक्त विग्रहों को जन सामान्य के लिए उपलब्ध कराया और एक से एक दिव्यतम वस्तुओ का परिचय कराया,जिनकी उपस्थिति मात्र से उन उच्चता और दिव्यता की भाव भूमि स्वत ही बनने लगती हैं. जो की कई कई अर्थो मे उच्च योगियों के लिए भी दुर्लभ हैं.आज भले ही हमें लगे की पारद सहत्रन्विता देह तारा और अन्य विग्रह शायद कहीं व्यवसायिकता के लिए ही.... आप सभी के सामने लाये गए हैं पर जिन्होंने भी ८० के दशक मे सदगुरुदेव द्वारा आयोजित शिविरों मे भाग लिया हैं, वह जानते हैं. यह सब सदगुरुदेव द्वारा ही पहले प्रकाश मे लाया गया हैं.
पारद विज्ञानं तो लुप्त प्राय ही हो गया था जो कुछ यदि शेष रहा तो उसका कुछ औषिधि स्वरुप बस.. वह भी गिने चुने कुछ के पास ..पर पारद और तंत्र की तो कोई बात करने तो बहुत दूर, यह तो लोगों को पता भी नही था पर सदगुरुदेव जी द्वारा इस विज्ञानं को पुनः सामने लाया गया और जो संस्कार और इन के माध्यम से जिन दिव्यतम वस्तुओ का निर्माण हो सकता हैं तो उन्होंने एक सदगुरुदेव तत्व की मर्यादानुसार अपने सामने इनका निर्माण कार्य अनेको शिविरों मे कराया.और हर शिविर मे वह पारद तंत्र के अद्भुत रहस्य उद्घाटित करते ही रहे.पर यह हमारी कमजोरी रही की हम उनके इस प्रयास को सही अर्थो मे समझ ही नही पाए,और समझना की बात भी हटा दी जाए अब तो नए साधको को यह भी नही मालूम की ऐसा भी कुछ होता रहा.यह भाग्य या समय या परिस्तिथियाँ कहें की उस उच्चतम ज्ञान का संरक्षण और उसका प्रोत्साहन देने के जगह .... सभी मौन हो गए ..
और यह बहुत ही दुर्भाग्यपूर्वक स्थिति हैं की जिस विज्ञानं को सदगुरुदेव जी ने अथक श्रम करके ,उसके कितने न दुर्लभ ग्रंथो और प्रविधियों का परिचय उन्होंने हम सभी को कराया. आज उसकी यह अवस्था की, एक उच्च कोटि का पारद विग्रह प्राप्त होना ..कितना कठिन हैं आप सभी जानते हैं.और यह तो एक बेकार का
~~~~~~

तर्क हैं की मानलो की कोई भी, किसी भी तरह का बना हुआ पारद विग्रह वहीँ परिणाम भी देगा, जो सदगुरुदेव ने उस पारद विग्रह के बारे मे लिखा हैं.सदगुरुदेव जी ने पारद विज्ञानं ,पारद शिवलिंग पूजन और रसेश्वरी दीक्षा जैसे अद्भुत केसेट्स का निर्माण कराया जिनमे आप स्वयम सुन सकते हैं की उन्होंने कितना महत्त्व और गरिमा के साथ इन विषयों को हम सबके सामने रखा और यह क्यों न हो क्या जो तंत्र विज्ञानं का सर्वोच्चतम अंतिम तंत्र कहा जाता हैं.वह क्या किसी भी तरह के मिलावट से बने पारद विग्रह से संभव हो जायेगा?और पारद तंत्र तो सर्वोच्चतम तंत्र हैं और यह तो सदगुरुदेव ने ही बताया हैं तब अब भी हमें इस विज्ञानं और इस विज्ञानं के पूर्ण मापदंडो पर निर्माणित पारद विग्रहों पर हमें संदेह हैं या होगा?. श्रद्धा विश्वास का अपना ही एक अर्थ हैं पर उसी गरिमा को अंधश्रद्धा से नही माप सकते हैं.सदगुरुदेवजी ने तो हमें आखें दी हैं और वह ज्ञान भी अन्यथा उन्हें क्या आवश्यकता रही की एक एक विग्रह के बारे मे उन्होंने सूक्ष्मता से अपने शिष्यों का परिचय कराया,और आप मंत्र तन्त्र यन्त्र विज्ञानं के पुराने अंक देखें तो पायेंगे की लगभग हर अंक मे पारद विज्ञानं का कुछ न कुछ परिचय सदगुरुदेव देते ही रहे .

मित्रो, आज स्थिति इस युग मे बहुत ही बिडम्बनाकारक हो गयी हैं.अब समझ मे आता हैं की सदगुरुदेव जी ने उस काल मे ही आने वाले, इस युग की अवस्था को देख लिया था और आज के युग के लिए ही उन्होंने इन पारद विग्रहों का निर्माण का ज्ञान दिया था क्योंकी आज न तो शारीरिक, न चारित्रिक, न मानसिक, न ही नैतिक बल की वह स्थिति हैं जो होना चाहिए,तब साधना कैसे संभव हो?और इसलिए सदगुरुदेव ने तंत्र के आदि आचार्य भगवान शिव के साथ अंश रूपी पारद विग्रह का यह अद्भुत विस्मयकारी अचरज से भरा स्वरुप हम सबके सामने रखा.क्या हम अब भी अपने अहम मे अटके रहेंगे ..क्या अभी भी हम इन दिव्यतम वस्तुओ का अर्थ नही समझेंगे ,और जो दिव्यतम वस्तुएं आज प्राप्त हो रही हैं वह कल भी हो ऐसा तो कुछ भी निश्चित नही हैं.आज इसी श्रंखला मे ...

1.परम दिव्यतम पारद सदगुरुदेव विग्रह

मित्रो ,सदगुरुदेव ने गुरू प्रत्यक्ष सिद्धि केसेट्स मे यह बताया हैं की जिन्हें गुरू पूर्णता के साथ सिद्ध हो गए हैं उन्हें कोई भी साधना करने की आवश्यकता नही हैं.पर यह भी उन्होंने कहा हैं की

गुरू प्रत्यक्ष क्यों ? जबकि गुरू तो सामने बैठे हैं,तब यह प्रत्यक्ष सिद्धि की क्या आवश्यकता ?

इस प्रश्न को स्वयम ही सदगुरुदेव अत्यंत मनोहारी स्वर मे समझाते हैं की तुम लोगों ने शरीर को गुरू माना हैं पर गुरू किसी शरीर का नाम नही बल्कि ज्ञान की अगाध ब्रम्हांडवत राशि का एक पुंजीभूत स्वरुप होता हैं .और तुम्हे इस शरीर के अंदर जो ज्ञान हैं जो सदगुरुदेव तत्व हैं उसे आत्मसात करना हैं.वह ज्ञान ही तुम्हारा गुरू हैं. अगर वह तुम्हे तुम्हारे लक्ष्य तक ले जाए ,गतिशील करें तो वही तुम्हारा गुरू हैं.

मित्रो,यह सत्य हैं की जिस शरीर का आधार लेकर यह विशाल दिव्यतम ज्ञान राशि हमारे सामने उपस्थित हुयी हैं वह भी हमारे लिए परम पूजनीय हैं पर अगर हम शरीर पर ही अटके रह गए तो ..वास्तविक सदगुरुदेव तत्व से कौन हमें परिचय कराएगा?.क्योंकी हम ने शरीर को ही गुरू मान लिया. तब अब कौन सी प्रत्यक्ष सिद्धि की आवश्यकता हैं?.

सदगुरुदेव की दिव्यतम लीला का यह अद्भुत रूप हैं की उनके आत्मवत सन्यासी शिष्य शिष्याओ ने बहुत सोच विचार कर सदगुरुदेव जी के पारद विग्रह निर्माण के लिए सहमति प्रदान कर दी हैं.और यह तो हम सभी का परम सौभाग्य हैं की ऐसा संभव हो पाया हैं,अष्ट संस्कार से युक्त पूर्णतः शास्त्रीय प्रक्रिया से निर्माणित सदगुरुदेव के पारद विग्रह के बारे मे क्या लिखा जाए .

सदगुरुदेव स्वयं कहते हैं की जिसके हृदय मे सदगुरुदेव अगर सत्य अर्थो मे स्थापित हो जाए तो उसके लिए तो सभी साधनाए फिर वह चाहे शमशान हो या दैविक या साबर हो या उग्र या किसी भी तंत्र से सबंधित हैं वह तो मात्र बच्चो का खेल ही हो जाती हैं.फिर उसे कोई लाख या सवा लाख मंत्र जप की आवश्यकता नही होती क्योंकी उस साधक एक अंदर जब पूर्णता के साथ सदगुरुदेव तत्व हैं तब कैसे न कोई भी साधना सिद्ध होगी,तब उसे हर विषय का ज्ञान होगा हैं.और क्यों न होगा सदगुरुदेव जब पूर्ण ज्ञान के स्वरुप हैं तो वह जिनके अंदर स्थापित होंगे उनमे उनकी उच्चता दिव्यता और ज्ञान की विशालता दिखाई देगी हैं,वह स्वत ही निर्मलत्व का एक उदाहरण होंगे.और ऐसा तो हर शिष्य और शिष्याओ को होना ही होगा, पर अब यह हम पर हैं की हम कितनी तीव्रता से इस पथ पर चले और ज्ञान को आत्मसात करें.

पर कहने मात्र से ..जयकारा लगाने मात्र से ..या कुछ माला मंत्र जप से तो यह संभव नही हैं ,जबकि आज हमारी मनोवृतियाँ कैसी हैं यह तो स्वयं ही ....

तब एक ऐसे परम दुर्लभ विग्रह की आवश्यकता तो हैं ही,और जब सदगुरुदेव स्वयं पारद की दिव्यता के साथ हमारे पूजन साधना कक्ष मे होंगे तो भला कैसे हमें सफलता नही मिलेगी,हम उनका पंचोपचार पूजन से लेकर अपने मनोभाव युक्त पूजन क्रम कर सकते हैं.एक तरफ पारद देव की कृपा और दूसरी ओर सदगुरुदेव.अब भला मार्ग मे कैसे बाधाएं रह पायेगी और यह केबल साधना मे ही नही बल्कि जीवन के समस्त पक्ष के लिए हैं.क्योंकी जहाँ सदगुरुदेव हैं, वही पूर्णता हैं, वहीँ सफलता हैं, वहीँ गरिमा हैं ,वही उच्चता हैं, वही आनंद तत्व हैं.यह अवसर बार बार नही आते हैं न ही इन्हें व्यवसायिकता से जोड़ना चाहिये,बल्कि इस दुर्लभ अवसर को पहचानना और उसके अनुरूप कार्य करना ही चाहिये.आप मे से जो भी इस विषय पर और भी जानकारी चाहते हैं वह nikhilalchemy2@yahoo.com पर संपर्क कर सकते हैं.

2.तन्त्रोत्सौन्दर्यं त्रिभुवन्मोहनकारक:

सौंदर्य की सही अर्थो में क्या परिभाषा हो सकती है यह तो वही व्यक्ति बता सकता है जिसने ब्रह्मांडीय सौंदर्य को न सिर्फ बाह्य रूप में वरन आतंरिक रूप से भी देखा हो, अनुभव किया हो तथा द्रश्य के रूप में आँखों से उतार कर हमेशा हमेशा के लिए अपने अंदर समाहित कर लिया हो वो क्षण जिसमे सिर्फ पूर्ण रूप से रस भरा हुआ है. वह रस, जो की सभी भाव भंगिमा को क्षीण कर देता है, गौण कर देता है चाहे वह दुःख हो, विषाद हो या चिंता हो. सौंदर्य की अनुभूति के क्षणों में इन सब भावो का स्थान ही कहाँ. वहाँ तो सिर्फ आनंद तत्व होता है जो की सिर्फ द्रष्टा की आँखों से उतरता है प्रकृति द्वारा. और उस अनुभव की अनुभूति करती है भाग्यवान साधक की ज्ञानेन्द्रियाँ और कर्मेन्द्रियाँ. जो कुछ मूल है, वही सौंदर्य है. जहां पर किसी भी प्रकार का

कोई विकार नहीं है, जो पूर्ण रूप से योग्य है, ब्रह्मांडीय है, उसके मूल रूप में है जिस रूप में कभी उसकी रचना के लिए ब्रह्मांडीय मूल शक्ति ने कल्पना की थी वही तो है सौंदर्य. और क्या परिभाषा भी हो सकती है जहां पर समस्त परिभाषाओ की ही समाप्ति कर देता है.

सौंदर्य ही तो जन्म देता है सभी कलाओं को. जहां सौंदर्य नहीं वहाँ पर कला कैसे संभव है. क्योंकि कला भी तो किसी न किसी सौंदर्य को ही प्रदर्शित करने का माध्यम है, अभिव्यक्ति का सिंचन है. फिर कैसे न याद आये कलाओ से परिपूर्ण व्यतित्व भी, श्रीकृष्ण को जगतगुरु की संज्ञा उनके आतंरिक और बाह्य सौंदर्य का परिणाम भी तो है. और इसी को तो कहा गया है १६ कलाओ से पूर्ण होना फिर सौंदर्य जिसने प्राप्त कर लिया क्या उसको जीवनमें कौन सी कला का ज्ञान नहीं हो सकता? निश्चय ही जीवन का आधार सौंदर्य ही तो है. और इसी लिए तंत्र में भी तो सौंदर्य साधनाओ का इतना महत्त्व है, चाहे वह यक्षिणी अप्सरा या किन्नरियो से सबंधित साधनाएं हो. आदि तन्त्रो तथा तंत्राचार्यों ने हमेशा ही सौंदर्य साधनाओ की महत्ता का निर्विवादित रूप से स्वीकार किया है.

जब क्षणिक सौंदर्य व्यक्ति को अपने अंदर डूब जाने की कला सिखा देता है, उसकी द्रष्टि को ही बदल सकता है, उसका स्व से परिचय करा सकता है उसके अंदर के भावो को बाहर ला सकता है तो फिर क्या असंभव होगा अगर स्थायी रूप से इस सौंदर्य को व्यक्ति आत्मसात कर ले. और इसी लिए तो अप्सरा और यक्षिणी साधनाओ में सफलता के बाद साधक के जीवन में अभाव रहना संभव कैसे. साधक को ऐश्वर्य, वैभव तथा यश की प्राप्ति इन साधनाओ के माध्यम से हो ही जाती है, साथ ही साथ साधक के जीवन में सुख तथा आनंद का अनुभव हर क्षण में बस जाता है. यूँ साधक अपने जीवन के हर एक क्षण को चरम आनंद के साथ जीता है. यही बात सदगुरुदेव ने कई कई बार साधको के मध्य रख कर सौंदर्य साधनाओ से सबंधित भ्रान्तियो को दूर किया था तथा इन साधनाओ की महत्ता के बारे में साधको के मानस को आड़ोलित किया था. यूँ भी, अप्सरा और यक्षिणी साधनाओ के सबंध में तो साधक वर्ग में हमेशा ही एक रोमांच रहा ही है. कई कई साधक अपने मन में यह अभिलाषा लिए हुये होते है की वह जीवन में एक बार इन पूर्ण सौंदर्य को धारण करने वाली सौंदर्य सम्राज्ञीओ को प्रत्यक्ष करे तथा उनका साहचर्य प्राप्त कर जीवन के दुर्भाग्य को सौभाग्य में परावर्तित कर सके.

साधको की इसी अभिलाषाओ की पूर्ति के लिए सदगुरुदेव ने समय समय पर इन प्रयोगों को साधको के मध्य रखा तथा सम्पन्न भी करवाए. साथ ही साथ, इन साधनाओ से सबंधित गुढ़ तथा रहस्यपूर्ण गुप्त सूत्रों को कई बार सदगुरुदेव ने सभी के लाभार्थ प्रदान किया है. इसी क्रम में कभी उन्होंने दो वनस्पति तंत्र से सबंधित विवरण भी कई बार दिया तथा उसके गोपनीय सूत्रों को बताया है. वस्तुतः,तंत्र के क्षेत्र में साधको के मध्य वनस्पति तथा उनके तांत्रिक प्रयोगों के चमत्कारी परिणाम के बारे में कई प्रचलित तथ्य है. साधको का अनुभव रहा है की विशेष वनस्पतियों को विशेष समय में उनसे सबंधित प्रक्रियाओ के द्वारा लिया जाए तथा उनमे विविध प्रकार से प्राणप्रतिष्ठा तथा चैतन्यीकरण कर दिया जाए तो साधक की सफलता प्राप्ति की संभावना कई कई गुना बढ़ जाती है. तथा कई तंत्र साधनाओ में तो वनस्पतियों का विधान होता ही है जिसके

बिना सफलता प्राप्त करना असंभव है. यह तथ्य तो सिद्ध वनस्पतियों के सबंध में है. लेकिन देव वनस्पतियों की प्राप्ति अति दुर्लभ है बिना योग्य साधना या मंत्रजप इनको खोजा जाए तो यह द्रश्यमान नहीं होती है या बिना पूर्ण तंत्रोक्त प्रक्रिया के इसे निकाला जाए तब ये अपना कोई भी गुण प्रदर्शित नहीं करती है. लेकिन अगर कोई व्यक्ति इसको पूर्ण प्रक्रिया के साथ प्राप्त कर उससे सबंधित तंत्रोक्त प्रयोग को कर ले तो यह निश्चय ही देवताओं की तरह ही साधक की कोई भी अभिलाषा को पूर्ण करने में समर्थ होती है.

इसी क्रम में उन्होंने दो विशेष वनस्पतियों के बारे में विवरण प्रदान किया था.

यौवनभृंगा

श्रंगाटिका

यौवनभृंगा का अर्थ है यौवन को प्रदान करने वाली या यौवन को जागृत करने वाली. अपने गुण के अनुसार यह दुर्लभ वनस्पति का प्रयोग कुछ चुनिन्दा सिद्ध कायाकल्प प्रदाता विशेष औषधि कल्पों में होता है. लेकिन तंत्र की द्रष्टि से यह वनस्पति अत्यधिक महत्वपूर्ण है. तांत्रिक द्रष्टि से देखा जाए तो इस वनस्पति के रस या स्वरस को अभिमंत्रित कर उस रस से आच्छादित वस्त्र को धारण करने से यह तीव्र सौंदर्य आकर्षक को जन्म देता है. फल स्वरुप यक्षिणी तथा अप्सरा जैसी इतरयोनी साधक के आस पास अप्रत्यक्ष रूप में विचरण करने लगती है. इस वनस्पति का सबंध देव वर्ग से होने के कारण निश्चय ही साधक इसका लाभ तीव्र रूप से प्राप्त करता है. अप्सरा तथा यक्षिणी साधनाओ के सन्दर्भ में सदगुरुदेव ने इस वनस्पति के बारे में कहा है की व्यक्ति अगर यौवनभृंगा के रस में भिगोई हुई या इसके रस से आच्छादित की हुई धोती को धारण कर साधना करे तो अप्सरा तथा यक्षिणियो का तीव्र आकर्षण होता है तथा साधक को साधना में सहजता की प्राप्ति होती है. साथ ही साथ साधक साधना में आने वाले कई विघ्नों से भी बच सकता है.

सौंदर्य साधनाओ के सन्दर्भ में जो द्वितीय वनस्पति के बारे में सदगुरुदेव ने बताया था वह है श्रंगाटिका. यह वनस्पति के गुण भी उसके नाम के अनुसार है. श्रंगाटिका का मूल अर्थ है श्रृंगार को बढ़ाना, विस्तार देना. अर्थात सौंदर्य का जितना भी संभव हो निखार करना. यह वनस्पति भी तंत्र जगत में उसके चमत्कारिक गुणों के कारण एक आश्चर्य ही कही जा सकती है. इस वनस्पति के भी कई चिकित्सक गुण भी है लेकिन तांत्रिक द्रष्टि से यह अधिक महत्वपूर्ण है क्यों की इस वनस्पति के माध्यम से व्यक्ति का संपर्क सूत्र विशेष लोक लोकांतर से जुड जाता है. यक्ष लोक या देव लोक से इस वनस्पति का घनिष्ठ जुड़ाव है. साधक को अपने इष्ट या मनोकामना की पूर्ति के लिए मन्त्र जप में चेतना का विशेष ध्यान रखना पड़ता है और यह एक निर्विवादित सत्य है की साधक जितना स्थिर चित्त एवं एकाग्र हो कर मन्त्र जाप करता है उतना ही तीव्र रूप से उसका सबंधित लोक लोकांतर से आतंरिक संपर्क सूत्र जुड़ पता है तथा उसको परिणाम की प्राप्ति होती है. यह संपर्क सूत्र कई बार बन नहीं पाता जिसके पीछे कई कारण होते है. परन्तु इस वनस्पति को विस्तार का नाम इस लिए भी दिया गया है क्यों की इस वनस्पति पर विशेष तांत्रिक प्रक्रिया करने पर साधक का संपर्क सूत्र अति तीव्र रूप से जुड जाता है. इस लिए इस वनस्पति को साधक अपने साथ ही आधार शक्ति पर रखता है. सदगुरुदेव ने इस सबंध में कहा है की श्रंगाटिका वनस्पति युक्त आसन का निर्माण अगर किया जाए और उस पर बैठ कर

अप्सरा, यक्षिणी या सौंदर्य साधनाओ को किया जाए तो साधक इस प्रक्रिया से अपनी सुनिश्चित सफलता की तरफ एक और कदम बढ़ा देता है क्यों की साधक का आतंरिक संपर्क सीधे देव लोक से तथा सबंधित इतरयोनी के लोक लोकांतर से हो जाता है.

- **इस प्रकार यौवनभृंगा के रस युक्त धोती**
- **तथा श्रंगाटिका युक्त आसन,**

अप्सरा यक्षिणी या किसी भी सौंदर्य साधनाओ में सफलता प्राप्ति को सहज कर सकते है तथा साधक का पूर्ण सफलता की तरफ कदम को और भी दृढ तथा सुनिश्चित कर सकते है. जहां यह विशेष आसन साधक का संपर्क इतरयोनी से करता है वहीँ विशेष वस्त्र या धोती के माध्यम से सौंदर्य श्रेणी की इतरयोनी अर्थात अपसरा यक्षिणी किन्नरी आदि का साधक के तरफ आकर्षण होता है.

3.**अप्सरा यक्षिणी साधना रहस्य सूत्र रहस्य खण्ड** –इस सेमीनार मे प्रकाशित किताब और **"दुर्लभ पूर्ण यक्षिणी अप्सरा षष्ठ मंडल यन्त्र"** को जो भी भाई बहिन अपने लिए पाना चाहते हैं. वह भी उपरोक्त इ मेल पर संपर्क कर लें.
अब समय हैं आपको निर्णय लेने का.**वहीँ आपसे अनुरोध हैं की इस हेतु जो भी इ मेल आप भेजेंगे उसके SUBJECT मे स्पस्ट रूप से आप लिख दें की आप विषय की जानकारी चाहते हैं**.हम आपको इच्छित जानकारी प्रदान कर देंगे.

******NPRU******

SARVDOSHNIVAARAK -ANUPARIVARTAN AADITYA BHADRAKAALI PRAYOG

SURYA AATMA JAGATAH TASTHUSHSCH||

सूर्य आत्मा जगतः तस्थुषश्च ||

जीवन की विसंगतियों में उलझ कर मानव अपने जीवन के मूल लक्ष्य से मानों भटक ही जाता है. और ऐसा ही हमारे परिवार के साथ होता चला गया.

भोपाल में आये हमें कई साल हो गए थे....योग्यता थी...परिस्थितियों को अनुकूल करने का ज्ञान भी सदगुरुदेव की कृपा से हमें मिला था...किन्तु जब भी उसका प्रयोग करने का प्रयास करते...मानों सम्पूर्ण प्रकृति ही हमारा विरोध करने लगती...स्थिति पल प्रतिपल विकट से भी विकटतर होते जा रही थी...

पहले जब भी मई से जुलाई का समय आता था,मात्र तब आर्थिक समस्याओं और मानसिक उलझनों का सामना करते थे किन्तु अब तो ये क्रम पूरे वर्ष भर का हो गया था... मैं जब भी अपने पति से कहती की आप हम दोनों की कुंडली का अध्यन करके देखिये ना...आखिर हम कब इस स्थिति को पार कर पायेंगे...क्या इससे जीतने का कोई उपाय नहीं है ??

मैंने हमारी कुंडली का अध्यन कई बार किया है...और सदगुरुदेव ने इस परिस्थिति को अपने अनुकूल कर लेने का विधान भी बताया है...किन्तु सबसे बड़ी दिक्कत ही यही है की जब भी मैं इस विधान को संपन्न करने की तैयारी करता हूँ..प्रकृति पूरी तरह से मुझे इस प्रयोग को ना संपन्न कर पाऊं ऐसा वातावरण बना देती है...मैं पिछले ६ साल से इसे करने का प्रयास कर रहा हूँ पर हर बार मैं इन तीन दिनों में अपने निवास पर रह ही नहीं पाया और उसका खामियाजा ये भुगतना पड़ा की..हमारे लिए जीवन जीना भी दूभर हो गया...ऋण,बेरोजगारी और अभाव प्रारब्ध कर्म परिणामवश हमारा भाग्य ही बन गए हैं...और मुझे ये विश्वास है की हमारे द्वारा संपन्न किये

वे सभी लक्ष्मी प्राप्ति प्रयोग तभी फलीभूत हो पायेंगे जब हम इस विधान को कर लेंगे – ये कहकर उन्होंने मेरे प्रश्न का उत्तर दिया.

तब क्या पूरे जीवन भर ऐसे ही भोगना पड़ेगा.....

नहीं ऐसा नहीं है....किन्तु मुझे इसके लिए इस वर्ष को ऐसे ही नहीं बीतने देना है...क्यूंकि बस **मकर संक्रांति** आने वाली ही है और उसके बाद के तीन गुरुवारों में से किसी भी एक गुरूवार को ये प्रयोग किया जा सकता है. और तुम जानती ही हो की जनवरी माह में मैं पिछले ६ वर्षों से गुरूवार को अपरिहार्य कारणों से घर पर नहीं रह पाया है...क्या तुमने कभी सोचा है की...क्यूँ ऐसा होता है...

क्यूँ भला ???

क्यूंकि मैं जनवरी आते ही सजग हो जाता हूँ की मुझे अब अपने जीवन को और साधनाओं को व्यर्थ नहीं करना है..हाँ कुछेक ऐसे भी निर्णय थे जिनकी वजह से विगत जीवन की साधना शक्ति पर प्रभाव पड़ा था और उन्ही गलतियों का परिणाम ये वर्तमान के अभाव हैं...किन्तु जब मैंने **सदगुरुदेव**से इसका निराकरण पूछा था तो उन्होंने बताया था की सूर्य आत्मा का प्रतीक है और प्रतीक है जीवन के सौभाग्य का किन्तु जब जब उसमें मलिनता आ जाती है तो भाग्य जो कल तक उन्नत था अचानक विपरीत व्यवहार करने लगता है और इसका निवारण तभी हो पाता है जब साधक भगवती आद्याशक्ति के सर्वाधिक सौम्य किन्तु प्रखर रूप भद्रकाली के साथ सूर्य का संयुक्त प्रयोग करता है. और ये प्रयोग कई मायनों में विशेषता से युक्त होता है...पहला तो ये की सूर्य जैसे ही उत्तरायण होता है...तब ये वही समय होता है जब साधक अपने भाग्य का लेखन कर सकता है...ये वो समय होता है जब सूर्य देवत्व की और साधक को अग्रसर करता है और ऐसे में साधना करना और उसमें सफलता प्राप्त करना कहीं ज्यादा सहज होता है....दक्षिणायण में सूर्य का प्रेत लोक से जो सम्बन्ध बना होता है वो समाप्त हो चूका होता है...और ये परिवर्तन मात्र बाह्यागत ब्रह्माण्ड में ही नहीं होता है अपितु ये परिवर्तन अर्थात प्रेतत्व से देवत्व की और,उच्चता की ओर गमन की क्रिया अणु अणु में होती है..रोम प्रतिरोम में इस क्रिया का संपादन होता है....और भगवती भद्रकाली इस क्रिया को स्थायित्व प्रदान कर देती हैं साथ ही गुरूवार का योग इस प्रयोग में गुरुतत्व का योग कर देता है,जिससे शुभ्रता और दिव्यता साधक को प्राप्त होती ही है...

तब आप इसे संपन्न क्यूँ नहीं कर रहे हैं...

क्या तुम्हे ऐसा लगता है की मैं जानबूझ कर ऐसा जीवन जीना चाहता हूँ...नहीं ऐसा नहीं है...अपितु मुझसे विगत जीवन में बहुत बड़ी साधनात्मक त्रुटी हुयी थी...किन्तु तब निरंतर गुरु आश्रय के कारण उसके प्रभाव से मैं बचा रहा..किन्तु उसका निराकरण तब नहीं किया और उसी का परिणाम है की मुझे इस जीवन में ये सब झेलना पड़ रहा है...और इन अभावों का सामना करना पड़ रहा है. मुझे लगा था की मैं सहजता से इस विधान को कर लूँगा या जिन लक्ष्मी साधनाओं को मैंने किया हुआ है...उनके कारण मुझे आर्थिक या भौतिक अभावों का सामना नहीं करना पड़ेगा....किन्तु ये मेरी मात्र भूल थी...अरे जब सूर्य ही मलिन हो जाए तब भला इन

साधनाओं का पूर्ण लाभ भला कैसे दृष्टिगोचर होगा.और नियति बारम्बार मुझे इस एक महीने के विशिष्ट गुरूवार को साधना स्थल से दूर ही कर देती है..

तब क्या हम दोनों मिलकर इस प्रयोग को नहीं कर सकते....

क्यूँ नहीं...बल्कि ये तो ज्यादा उचित होगा और यदि परिवार का प्रत्येक सदस्य इसे संपन्न कर सके तब वो अपने जीवन के अभावो को ठोकर मारकर दूर कर सकता है.. क्यूंकि प्रत्येक व्यक्ति स्वकर्मों के परिणाम को भोगता ही है. अतः स्वयं इस साधना को संपन्न करना विशेष महत्त्व रखता है और यदि सभी सदस्य ना हो तो सम्पूर्ण परिवार (इसमें मात्र स्वयं के भाई-बहन,माँ पिता,बच्चे,पत्नी ही सम्मिलित हैं) के नाम का संकल्प लेकर भी इस प्रयोग को किया जा सकता है.

उसके बाद बहुत कठिन प्रयास से ही सही किन्तु हमनें इस प्रयोग को किया और उसका प्रभाव भी हमें लगातार दीखता गया...अब तो ये प्रत्येक वर्ष किये जाने वाले विधान में शामिल है.

जब भाग्य प्रतिकूल हो...

साधनाओं का लाभ दिखाई ना दे रहा हो....

साधनाओं से मन उचाट हो रहा हो...

अचानक धन प्राप्ति की सभी संभावनाएं क्षीण हो गयी हो...

निर्णय स्वयं के लिए ही प्रतिकूल हो रहे हों...

सम्मान खतरे में हो....

मन की चंचलता अत्यधिक बढ़ गयी हो....

आदि कई स्थितियों में इस एक दिवसीय प्रयोग को करना पूर्ण लाभ देता है.

मकरसंक्रांति के अगले गुरूवार की प्रातः सूर्योदय के पूर्व ही स्नान कर सफ़ेद वस्त्र धारण करके सूर्य को जल से अर्घ्य प्रदान करें और निम्न मंत्र का हाथ जोड़कर सूर्य का ध्यान करते हुए १०८ बार उच्चारण करे -

हं खः खः खोल्काय नमः

(HAN KHAH KHAH KHOLKAAY NAMAH)

इसके बाद साधनाकक्ष में सफ़ेद आसन पर बैठ जाएँ तथा सदगुरुदेव और भगवान् गणपति का संक्षिप्त पूजन करें तथा गुरुमंत्र का ४ माला जप करें,इसके बाद साधक यदि अकेले जप कर रहा है तो स्वयं के नाम का संकल्प ले और दोष निवारण तथा मनोकामना पूर्ती का आशीर्वाद मांगे.और यदि पूरे परिवार के लिए ये विधान कर रहा हो तो सदस्यों का नाम सफ़ेद कागज में लिखकर और मोड़कर गुरु चित्र के सामने रख दें .इस प्रयोग की सबसे बड़ी विशेषता ये है की साधक इसमें **गुरु चित्र को ही भगवती भद्रकाली का स्वरुप मानकर पूजन** करता है.

चित्र के सामने तिल के तेल का दीपक प्रज्वलित करे और उस दीपक का संक्षिप्त पूजन करे.इसके बाद कुमकुम या केसर से एक एक मंत्र बोलते हुए गुरु चित्र और संभव हो तो उनके

श्री चरणों में बिंदी लगायें,यदि पादुका हो तो उस पर अन्यथा गुरु यन्त्र पर भी आप बिंदी लगा सकते हैं. अर्थात एक मंत्र बोले और एक बिंदी अनामिका ऊँगली से लगाये –

ॐ जयायै नमः

ॐ विजयायै नमः

ॐ अजितायै नमः

ॐ अपराजितायै नमः

ॐ नित्यायै नमः

ॐ विलासिन्यै नमः

ॐ दोग्ध्रयैनमः

ॐ अघोरायै नमः

ॐ मंगलायै नमः

इसके बाद केसर मिश्रित चावल की खीर नैवेद्य में अर्पित कर दें और आचमन करा दें.तत्पश्चात निम्न महामंत्र की ११ माला जप,गुरुमाला,शक्तिमाला,मूंगा माला,रुद्राक्ष माला,लाल हकीकमाला अथवा हल्दी माला से करें.

मंत्र -

ॐ रां हुं क्रीं भद्रायै भद्रकाली सर्व मनोरथान साधय क्रीं नमः ||

(OM RAAM HUM KREEM BHADRAYAI BHADRAKAALI SARVMANORATHAAN SADHAY KREEM NAMAH)

ये जपसंख्या स्वयं के लिए निर्धारित है,यदि आप अन्य सदस्यों के लिए भी कर रहे हैं तो सदस्य संख्य के अनुसार प्रत्येक सदस्य के लिए अपनी जपसंख्या के बाद २-२ माला जप प्रति सदस्य करना अनिवार्य है.

जप के बाद गुरुमंत्र से २४ आहुति घी के द्वारा डालें.और गुरु आरती संपन्न कर उस खीर को स्वयं या परिवार वालों के साथ ग्रहण करें. तथा उसी दिन किसी भी महाकाली या शक्ति मंदिर में कुछ दक्षिणा अर्पित कर दें और किसी भूखे व्यक्ति को भोजन करवा दें.

मैंने अपने जीवन में इस विधान के प्रभाव को देखा है और हमारा परिवार इसे प्रतिवर्ष संपन्न करता ही है.ये संक्रांति या उसके बाद के उसी माह के किसी भी तीन गुरूवार में से एक गुरूवार को किया जा सकता है. मैंने इसका लाभ उठाया है.और हमारे जीवन को उन्नति की और गतिशील होते देखा है.आप भाई बहन से भी मैं मात्र निवेदन ही कर सकती हूँ..... आगे निखिल इच्छा सर्वोपरि...

"निखिल प्रणाम"

AGNI SOORYA - PAARIVARIK SAMRIDDHI HETU

भगवान आदित्य सूर्य का महत्त्व समस्त जीव के लिए कितना और क्या है यह बात तो हर कोई व्यक्ति जानता ही है. समस्त जिव को प्राण उर्जा प्रदान करने वाले तथा पृथ्वी की सुनिश्चित गति के लिए भगवान सूर्य देव हमेशा ही कार्यरत रहते है.

भगवान सूर्य को आदि देव कहा गया है, वेदोक्त तथा तंत्रोक्त दोनों द्रष्टि से इनका उच्चतम महत्त्व विविध साधना पद्धति तथा आदि ग्रंथो के आधार पर प्राप्त होता है. सूर्य विज्ञान तथा सूर्य विज्ञान तंत्र जेसी गुढ़ और अत्यंत ही रहस्यमय विद्या भी तो इन्ही देव की कृपा द्रष्टि से सम्प्पन हो पाती है. समस्त जिव को आधार शक्ति, प्रकाश, प्राण ऊर्जा आदि प्रदान करते हुवे जिव मात्र को सहज रूप से अपना वर प्रदान करते ही रहते है. ज्योतिष के क्षेत्र में भी भगवान सूर्य का अमूल्य स्थान है, वहीँ दूसरी तरफ पारद विज्ञान में भी इनका सहयोग प्राप्त होना आवश्यक ही है.

भगवान सूर्य की तंत्रोक्त एवं वेदोक्त दोनों ही रूप से उपासना होती आई है. आदि देव सूर्य के कई स्वरुप साधको के मध्य प्रचलित है तथा उनके विशेष रूप तथा शक्तियों के आधार पर उनसे सबंधित कई कई साधना पद्धतियाँ प्रचलन में है. अग्नि तत्व की पूर्ण प्रधानता को अपने अंदर समेटे हुवे भगवान सूर्य का प्रतिक अग्नि को भी माना गया है.

सम्पूर्ण सृष्टि को अग्नि अर्थात ऊष्मा और प्राण उर्जा प्रदान करने वाले भगवान सूर्य के इस स्वरुप को अग्नि सूर्य कहा जाता है. भगवान सूर्य के इस स्वरुप की उपासना करने पर साधक के पाप कर्मो का नाश होता है, तथा कई कार्मिक दोषों की निवृति होती है. सूर्य ग्रह से सबंधित समस्याओ में राहत मिलती है. तथा घर परिवार में उन्नति प्राप्त होती है. आज हर एक व्यक्ति का स्वप्न होता है की उनके घर में परिवार में खुशहाली का वातावरण रहे तथा सभी सदस्य मिल जुल कर शान्ति पूर्वक तो रहे ही, इसके साथ ही साथ सभी अपने अपने कार्यों में उन्नति को प्राप्त करे, घर तथा परिवार का नाम रोशन करे. सभी को अपने जीवन में सफलता की प्राप्ति हो. प्रस्तुत प्रयोग भी भगवान श्री सूर्य देव से सबंधित एक ऐसा ही प्रयोग है जिसे सम्प्पन करने पर साधक के जीवन में तथा परिवारजनो के जीवन में उपरोक्त वर्णित लाभों की प्राप्ति होती है, वैसे तो यह प्रयोग एक दिवसीय प्रयोग है लेकिन साधक के लिए उत्तम रहता है की वो इस प्रयोग को समय तथा सुभीता के अनुसार करते रहे.

यह प्रयोग साधक किसी भी रविवार या कोई भी शुभदिन कर सकता है.

समय दिन का रहे. साधक सूर्योदय से ले कर दोपहर तक के समय के मध्य यह प्रयोग सम्प्पन करे तो उत्तम है.

साधक सर्व स्नान आदि से निवृत सफ़ेद वस्त्र धारण करे.

साधक सूर्य को अर्ध्य प्रदान करे तथा उसके बाद सफ़ेद आसन पर बैठ जाए. साधक का मुख पूर्व दिशा की तरफ होना चाहिए.

इसके बाद साधक गुरुपूजन तथा गुरु मन्त्र का जाप करे. इसके बाद साधक गायत्री मन्त्र का भी यथा संभव जाप करे.

इसके बाद साधक निम्न मन्त्र की ११ माला मन्त्र जाप करे. यह जाप स्फटिक माला से होना चाहिए.

इसके बाद साधक अपने सामने अग्नि को प्रज्वलित करे तथा शुद्ध घी से इस मन्त्र की १०८ आहुति अग्नि में समर्पित करे.

ॐ भूर्भुवः स्वः अग्नये जातवेद ईहावह सर्वकर्माणि साधय स्वाहा

(OM BHOORBHUVAH SVAH AGNAYE JAATAVED IHAAVAH SARVAKARMAANI SAADHAY SAADHAY SWAAHAA)

इस प्रकार यह प्रयोग पूर्ण होता है. साधक को माला का विसर्जन नहीं करना है यह माला आगे भी इस प्रयोग के लिए उपयोग में लायी जा सकती है.

SIDDHASHRAM DEV LAKSHMI MAHAYANTRA - MAANAV JEEVAN KA SOUBHAGYA

अरुण कमल संस्था तद्रजः पुंज वर्णा ,
कर कमल घ्रतेष्टा भितियुग्माम्बुजा च |
मणि मुकुट विचित्रSSलंकृताSकल्प जाती :,
सकलभुवनमाता संततं श्री श्रिये वः ||

हलके गुलाबी रंग के कमल पर विराजमान कमलपराग राशि के समान पीले वर्ण वाली चारो हाथों में क्रमश वर,अभय मुद्रा एवं दो हाथो में कमल पुष्प धारण किये हुए मणिमय मुकुट से विचित्र शोभा धारण करने वाली अलंकारों से युक्त समस्त लोकों की जननी श्री महालक्ष्मी जी हमें निरंतर "श्री" सम्पन्न करे.

तीन वर्ष पहले की बात हैं अचानक दीपावली से पहले पूना में एक भाई के यहाँ पारद गणपति और पारद लक्ष्मी का स्थापन कराने के लिए जाना हुआ ,अचानक जिस तरह से यह प्रोग्राम बना वह भी आश्चर्ययुक्त ही रहा , जिस समय भाई स्थापन प्रक्रिया करवा रहे थे उस समय अचानक एक शब्द पर मेरा ध्यान गया, मैं आश्चर्य से भर उठा की यह शब्द **"सिद्धाश्रम देव लक्ष्मी"**,यहाँ कैसे,और भाई जी

पूर्णतया मंत्रोच्चार में तल्लीन,जब सारी स्थापन प्रक्रिया संपन्न हो गयी तो मैंने उन से पूंछा की यह जो शब्द मैंने मंत्रोच्चार के मध्य सुना की यह .....तो उन्होंने कहा की हाँ यह पहली बार किसी भी गृहस्थ के यहाँ स्थापन की अनुमति मिली हैं और यह प्रयोग और स्थापन प्रक्रिया अत्यंत ही कठिन हैं लगभग दो घंटे की इस प्रक्रिया के मंत्र अपने आप में बेहद गूढता लिए हुए हैं जहाँ , एक और लक्ष्मी ही नहीं बल्कि सहस्त्राक्षी लक्ष्मी और अन्य सभी लक्ष्मी का स्थापन किया जाता हैं वही दूसरी और एक एक मातृका का आवाहन और उनका विधिवत स्थापन भी अनिवार्य क्रम हैं और इस सारे क्रम में कोई गलती न हो इस कारण न केबल **"निखिल आहूत मंत्र"** बल्कि **परम गुरुदेव के आहूत मंत्रो से युक्त** विधान भी अनिवार्य प्रक्रिया का एक अंग हैं और जहाँ यह सब हो रहा हो वहां पर नवग्रहों का स्थापन भी किया जायेगा और यह कोई वैदिक प्रक्रिया से नहीं बल्कि पूर्णत तांत्रोक्त प्रक्रिया से संभव होता हैं और इस प्रक्रिया का उपयोग तो सिर्फ सिद्धाश्रम में ही होता हैं, सदगुरुदेव जी ने इस पूरी प्रक्रिया को अपने उच्चस्थ सन्याशी शिष्यों को दिया हैं पर किसी भी गृहस्थ के घर के लिए अभी भी अनुमति नहीं मिली यह तो इस परिवार के पूर्व पुण्य हैं की इस तरह का उच्च प्रयोग वह भी पहली बार इनके यहाँ करने की अनुमति मिली हैं.

मैने कहा की लक्ष्मी तो लक्ष्मी ही हैं तो इस प्रक्रिया के सिद्धाश्रम के जुड़े होने और यहाँ होने से क्या अंतर आएगा.भाई जी ने मुस्कुराते हुए क्यों नहीं ..बल्कि बहुत बड़ा अंतर हैं वह यह की यहाँ इस धरा पर लक्ष्मी चंचला स्वरुप में हैं वहां सिद्धाश्रम में वह सम्पूर्ण वैभव के साथ सर्वदा सर्वदा के लिए पूर्णतया से स्थिर स्वरुप में अपने सम्पूर्ण जाग्रतता और चैतन्यता के साथ स्थापित हैं और क्यों न हो वहां सदगुरुदेव के श्री चरणों में जिस किसी देव को स्थान मिलता हैं वह भी अपने जीवन को सहारता ही हैं .और वहां सिद्धाश्रम में लक्ष्मी से जयादा "**श्री** " तत्व की बात हैं क्योंकि इस श्री तत्व ने ही सारे ब्रम्हांड को न केबल धारण किये हुए हैं बल्कि सारा पालन भी यही तत्व करता हैं .भगवान् नारायण श्री युक्त हो तो हैं.और यह तो आपको मालूम ही हैं की जैसा की दुर्गा सप्तसती आदि ग्रंथो में आया हैं की नित्य लीला विहारिणी भगवती जगदम्बा वास्तव में भगवती महालक्ष्मी ही हैं, उन्हीं ने अपने आप को त्रिभागों में विभक्त किया हैं अतःयह स्थापन प्रयोग अपने आप में परम दुर्लभ हैं .मित्रो आप समझ सकते हैं जिन भाई जी के यहाँ यह प्रयोग हुआ था उन्होंने कुछ क्षण के बाद आकर बताया की जिन क्षणों में भाई स्थापन कर रहे थे उनकी बाहयगत चेतना उन दिव्य मंत्रो के प्रभाव से खोती जा रही थी,अगर कुछ देर यह प्रक्रिया होती तो वह वहीँ पर चेतना शून्य ही हो जाते .

बाद में भाई ने मुझे बताया की **यह स्थापन संस्कार जब किसी का संकल्प ले कर किया जाता हैं तब उस व्यक्ति के सारे चक्र और उनके सारे दल उपदल इन तांत्रोक्त मंत्रो से इस तरह झंकृत होते हैं की सामान्य व्यक्ति उस तेज को झेल ही नहीं सकता**.

पर इससे लाभ क्या होता हैं .

- **मित्रो ,परिवार के वास्तु दोष दूर हो गए यह तो सौभाग्य की बात हैं पर लक्ष्मी का स्थापन वह भी अगर सिद्धाश्रम युक्त हो तब बात ही क्या हैं.**
- **किसी एक व्यक्ति के लिए नहीं बल्कि उस परिवार के सारे सदस्यों के जीवन में सुखद परिवर्तन की किरणे खिलने लगती हैं.**
- **परिवार में व्याप्त तनाव और रोग स्वयं ही न्यून होने लगते हैं वहीँ साधनात्मक भारतीय संस्कृत से युक्त वातावरण स्वयम ही बनने लगता हैं.**
- **केबल एक सदस्य ही नहीं बल्कि परिवार के हर योग्य सदस्य के माध्यम से धन वर्षा होने लगती हैं.**
- **और यह धन वर्षा के साथ चेतना और विवेकयुक्तता रहती हैं अर्थात धन का हमेशा सदुपयोग ही होगा.**
- **लक्ष्मी सदैव स्थित रूप में उसके घर में होगी यहाँ पर चंचला स्वरुप की कोई बात ही नहीं हैं .**
- **यह प्रयोग सिद्धाश्रम से युक्त हैं अतः सिद्धाश्रम एक योगियों के लिए भी आश्चर्य की बात होती हैं की ऐसा क्या हैं इस व्यक्ति में जो सदगुरुदेव के आशीर्वाद स्वरुप इसके यहाँ इस तरह के प्रयोग संपन्न हुआ .**
- **जीवन की भौतिक शारीरिक न्युन्ताये स्वयं ही समाप्त हो जाती हैं और व्यक्ति की जब न्युन्ताये समाप्त हो... उसके पाप ताप समाप्त होने लगते हैं तो उसे ऐसा अहसास होता हैं की उसके ऊपर से बहुत बड़ा बोझ हल्का होने लगता हैं.**
- **धन, धान्य,यश,मान, प्रतिष्ठा, वाहन आदि सुख स्वयम ही उसे प्राप्त होने लगते हैं. .**
- **भगवती महालक्ष्मी के इस सिद्धाश्रम स्वरुप का स्थापन जिनके यहाँ होता हैं उनके घर में तीनो महाशक्तियों का पूर्ण आशीर्वाद बना रहता हैं.**

मैंने भाई से कहा की क्या इस साधना या प्रयोग का कोई यन्त्र भी होता हैं तो उन्होंने कहा की सदगुरुदेव हमेशा कहते रहे हैं की यन्त्र, मंत्र और तंत्र यह सभी एक दुसरे पर ही तो आधारित हैं ,पर भैया इसके यन्त्र के लिए अनुमति नहीं मिली हैं और अभी यह सिद्धाश्रम के महांयोगियों के मध्य ही प्रचलित हैं बहुत ही कोई कृपा प्राप्त हो उसको भी इस यन्त्र को प्राप्त करना एक प्रकार से असंभव कार्य हैं .
क्योंकि जब तक सदगुरुदेव में पूर्ण श्रद्धा न हो तो कैसे इस विधान या इसके यन्त्र का दर्शन भी संभव होगा **क्योंकि सदगुरुदेव और सिद्धाश्रम भला अलग कहाँ .जहाँ सदगुरुदेव वही तो सिद्धाश्रम हैं तो इतना उच्च कोटि का विधान और यह परम दुर्लभ यन्त्र संभव ही नहीं .बिना परम योगियों की कृपा के यह संभव नहीं हैं.**और मुझे अभी सिर्फ यह विधान करके स्थापन करने की अनुमति मिली हैं इसका यन्त्र तो अभी भी गृहस्थों के सामने नहीं आया हैं .वह अपन आप में एक पूर्णता हैं जीवन

का एक सौन्दर्य हैं सदगुरुदेव की परम करूणा हैं क्योंकि सिद्धाश्रम में जिस प्रयोग को सर्वोपरि प्रयोगों में से एक माना जाता हो भला उसका यन्त्र का दर्शन भी कैसे आसानी से संभव होगा ??

मित्रो , पूज्यपाद सदगुरुदेव ने हम सभी एक सामने जो रास्ता साधना का प्रदर्शित किया हैं वह किसी भी अर्थो में पलायनवादी या भाग्यवादी नहीं हैं वरन जीवन की समस्त कठिनाईयों को अपने साधना बल से अपने गुरु के बल से उखाड़ फेंक कर न केबल अपना बल्कि अपने सदगुरुदेव के नाम को गौरव युक्त करना हैं बल्कि उनकी आज्ञानुसार इस समाज को एक श्रेष्ठ समाज में ही नहीं बल्कि सिद्धाश्रम को ही इस भौतिक धरा पर साकार करना हैं.उन्होंने एक ऐसे साधक की कल्पना की हैं जो जीवन के समर में हर दृष्टी से परिपूर्ण हो.जब साधक स्वयम परिपूर्ण होगा तभी तो वह कुछ समाज को दे पायेगा.

पर हम बार बार शिष्य बनने की बात करते रहे जबकि शिष्यता तो बहुत दूर की चीज हैं अगर हम साधक भी बन पाए तो यह जीवन का गौरव होगा .पर अभाव ग्रस्त साधक ? चिंता ग्रस्त साधक? जीवन की कठिनाईयों से भागने वाला साधक? क्या ऐसे साधक की कल्पना की जाती हैं शायद नहीं ...... पर आज के इस अर्थ में मानो यही वास्तविक कटु सत्य हैं .हम बातें भले ही बड़ी बड़ी कर लें पर अन्दर हृदय में हम सभी जानते हैं की हम अभी नहीं हैं, हम सभी किसी न किसी आशंका से भयभीत हैं ही.

पर क्यों जबकि सदगुरुदेव का वरद हस्त हमारे साथ हैं तब यह क्यों ? यह अवस्था तो किसी भी तरीके स्वीकार योग्य नहीं हैं.पर हमें किसी पर भी विस्वास नहीं हैं अगर हैं भी तो पूरा विस्वास तो मात्र कहानियो की चीज हो गया,जीवन में लग रही पल प्रतिपल की ठोकरें हमारा विस्वास मानो हिलाते जाती हैं.

और यह अवस्था हमने भले ही स्वीकार कर ली हो , अपन कर्मो का फल अपने जीवन के दोषों का फल मान कर मन मसोस कर बैठ गए हो पर यह हमारे वरिष्ठ सन्याशी भाई बहिनों को यह हम सब की न्यूनता स्वीकार नहीं **क्योंकि सदगुरुदेव बारम्बार कहते रहे हैं की अगर मैं इस ऐश्वर्य में रहता हूँ तो मेरे शिष्यों को भी उसी तरह ऐश्वर्य में रहना चाहिए पर निर्लिप्तता के साथ.पर हम चाह कर भी तो वैसा नहीं कर पाते.**

हमारी दिन प्रति दिन की विवशता को देख कर ही हमारे वरिस्ठ भाई बहिनों ने आप सभी के लिए एक से एक अद्भुत विधान सामने रखे हैं पर कभी हमारी शरीरिक न्यूनता तो कभी मानसिकता बल की कमी तो कभी हमारी साधना के प्रति अरुचि फिर से हमें वैसा का वैसा रख देती हैं.हमारी न्यूनता हो सकती हैं पर एक बार सदगुरुदेव ने एक शिष्य से कहा बता तेरी समस्या क्या हैं उन शिष्य ने कहा की सदगुरुदेव एक समस्या होतो तो कहूँ ..तब सदगुरुदेव मुस्कुराते हुए कह उठे की हमेशा ध्यान रखना की अगर तेरी हज़ारों भी समस्याए हैं तो तेरा गुरु उन सब को नष्ट करने में अनन्त गुना शक्तिशाली हैं .

वैताल साधना के गूढ़ रहस्य बताते हुए सदगुरुदेव अत्यंत करूणा से भर उठे,और उन्होंने कहा की एक भी मेरा शिष्य अगर भूखा भी सोता हैं तो भला मुझे कैसे नींद आ सकती हैं .

और सदगुरुदेव ने हम सभी के सामने एक से एक दिव्यतम साधना विधि, दिव्यतम यन्त्र उपहार में दिए , जिनकी कोई तुलना ही नहीं फिर वह चाहे "**अद्भुत स्वर्णावती लक्ष्मी साधना**" हो या "**शत अष्टोत्तरी लक्ष्मी महा यन्त्र**" तो कभी "**षोडशी कनक धारा कनकधारा महा यन्त्र**" हो इस सिर्फ इस कार्य हेतु की ....उनके शिष्यों का जीवन सर्व दृष्टी से परिपूर्ण हो. और अनेको ऐसे विविध यंत्रो से संयोग से निर्माणित यन्त्र जिनका आज कहीं पर कोई पता ही नहीं .और कहीं पर हैं भी तो मात्र केबल आकृति ही.उनको सही अर्थो में प्राण प्रतिष्ठित कर देना ही पर्याप्त नहीं हैं बल्कि अन्य सारी प्रक्रिया कही खो ही गयी हैं.

आज साधक वर्ग साधना की बात तो एक तरफ रख दें इन यंत्रो के दर्शन तक के लिए तरस गया हैं .

बिना उचित यंत्रो के कैसे संभव हो जीवन में साधनात्मक उन्नति,कैसे संभव हो अपने साध्कत्व की रक्षा , कैसे संभव हो अपने मान सम्मान और गौरव की रक्षा .

हमें आपके सामने अभी हाल में "वास्तु कृत्या यन्त्र " उपहार स्वरुप रखा, जिस पर निर्माण में सम्पूर्ण प्रक्रिया में ही व्यव आ जाता हैं कि सामान्य क्या उच्च स्तरीय व्यक्तित्व भी सोच में पड़ जाए और आप में से जिन्होंने भी इस यंत्र का स्थापन अपने घर पर किया वह अभिभूत हो गए और यह तो जीवन भर की बात हैं अभी इस यन्त्र का क्रमशः और भी अनुकूलता देखेंगे और अनुभव करते जायेंगे अगर वह सारी प्रक्रिया उन्होंने पुरे निर्देश अनुसार की हैं और वह श्रद्धा युक्त भी रहे हैं .

मानव जीवन में उत्थान हैं तो पतन भी हैं,सुख हैं तो दुःख भी हैं , और इसी के मध्य इन द्वेत भाव के मध्य ही जीवन मानो घिसट घिसट कर समाप्त हो जाता हैं और मन में यही इच्छा की काश अगर ऐसा होता तो ..

पर कभी सोचा हैं की ऐसा सिद्धाश्रम में क्यों नहीं हैं .

क्योंकि सिद्धाश्रम ही पूर्णता का दूसरा नाम हैं ,जीवन की सर्वोच्चतम उचाई पाना और अपने जीवन को सदगुरुदेव जी के श्री चरणों में पूर्णता से विलीन कर सब कुछ पा जाना ही सिद्धाश्रम पाना हैं . **जहाँ कोई न्यूनता नहीं, जहाँ कोई कमी नहीं, जहाँ कोई विषाद नहीं, जहाँ कोई कालिमा नहीं, जहाँ जीवन की विसंगतियां नहीं, जहाँ मृत्यु नहीं जहाँ किसी तरह का छल झूठ कपट नहीं .उस भूमि को सिद्धाश्रम कहते हैं .**

और मित्रो,आरिफ भाई जी की बार बार अनुरोध पर **हमारे अग्रज सन्यासी गुरु भाई बहिनो ने इस महायन्त्र को पहली बार गृहस्थ व्यक्तियों के लिए निर्माण करने की अनुमति दे दी हैं** .**यह अपने आप में परम सौभाग्य का प्रतीक हैं, इस महायंत्र का निर्माण बेहद व्ययशील हैं, एक तरह जहाँ एक एक मातृका स्थापन, तांत्रोक्त रूप से नव ग्रह स्थापन, भगवती लक्ष्मी के सिद्धाश्रम स्वरुप का स्थापन, वह भी सम्पूर्ण वरदायक स्वरुप में, वह भी सारे परिवार के एक एक सदस्य के लिए, वह भी सभी के लिए भाग्य उन्नति और समस्त प्रकार की उन्नति के द्वार खोलने में समर्थ, और इन सबके साथ**

सदगुरुदेव और परम गुरुदेव के आहूत मंत्रो से सिद्ध,प्राण सिंचितिकरण क्रिया ,प्राण प्रतिस्ठा विधान युक्त,यह यन्त्र अपने आप में परम दुर्लभ हैं और निर्माण के इन सारी प्रक्रिया के बाद,बिभिन्न प्रकार की जड़ी बूटियों के माध्यम से यज्ञ हवन आदि प्रक्रिया से सिद्धिता युक्त हो पाता हैं और व्यव की तो कोई सीमा नही हैं .पर अब यह यन्त्र हमारे अग्रज भाई बहिनों के निर्देशन में तैयार होने जा रहे हैं , और यह यन्त्र जिसे

"सिद्धाश्रम देव लक्ष्मी महा यन्त्र"

कहा जाता हैं इसको पाना ...तो जीवन का सर्वोच्च सौभाग्य ही हैं .

यह यन्त्र आप सभी को निशुल्क हैं,आपको उपहार स्वरुप हैं .

पर यह यन्त्र सिर्फ उन्ही को दिया जायेगा जिनकी इ मेल ३०मई के पहले nikhilalchemy2@yahoo.com पर इस विषय के साथ आएँगी .क्योंकि **लगातार १४ दिन की कठिन श्रम साध्य प्रक्रिया के बाद ही इसका निर्माण हो पाता हैं .**

यह हम सभी का सौभाग्य हैं की यह अत्यंत दुर्लभ यन्त्र अब सुलभ होने जा रहा हैं,और इस यंत्र अक वितरण जुलाई महीने में होगा जिससे **गुरु पूर्णिमा रूपी महापर्व पर इस अद्विय्तीय साधना का एक दिवसीय विधान किया जा सके** .पर इसके लिए आपकी इ मेल ३० मई के पहले पहले तक आ जाना अनिवार्य होगा, उसके बाद अनुरोध करने पर भी यह यन्त्र नहीं भेजा जायेगा क्योंकि इतन श्रम और व्यय वहन कारण बार बार संभव नहीं हो सकता हैं,

हमारे वरिस्थ सन्यासी भाई बहिनों की यह आशा हैं हम सभी से........... की सदगुरुदेव के स्वप्न को पूर्णतया: के साथ साकार किया जाए और सभी भाई बहिन सर्व दृष्टी से सुखी संपन्न, चिंता मुक्त होते हुए साधना रत हो.पर जब तक भगवती आदि शक्ति महालक्ष्मी की पूर्ण कृपा न होगी यह संभव नहीं हैं इसको संभव बनाने के लिए ही यह यन्त्र आप सभी के सामने आ रहा हैं .

आगे आपको निर्णय लेना हैं की

लोकातिता द्वेतातिता समस्त भुत्वेष्टिता |
विद्वजन कीर्तिता च प्रसन्न भव सुंदरी ||

हे भगवती आप लोकों से परे हो, आप ही द्वेत से परे और आप तुम ही समस्त भुत गणों से घिरी हुयी रहती हो, विद्वान् लोग सदा तुम्हारा गुण कीर्तन करते रहते हैं हे सुंदरी तुम मुझ पर प्रसन्न हो .

महेशे त्वं हैमवती कमला केशवेपि च |
ब्रह्मं: प्रेयसी त्वं ही प्रसन्ना भव सुंदरी ||

हे भगवती आप ही शुलपानी महादेव की प्रियतमा हैमवती,तुम्ही केशव की प्रियतमा कमला , और ब्रह्मा की प्रेयसी ब्रम्हाणी हो तुम हम पर प्रसन्न हो .

आप सभी समय रहते इस महा यन्त्र को पाकर अपने घर पर स्थापित करके जीवन को सर्व विध सुरक्षित और आनंदमय बनाए यही यहाँ **NPRU** परिवार की इच्छा हैं.

Siddhashram Darshan Prayog

सिद्धाश्रम, वह मधुर शब्द जिसे सुनते ही मन मे पवित्रता और श्रद्धा का बोध होने लगता है. अत्यधिक पावन स्थली जहा से निरंतर आध्यात्म का संचालन होता है, सुदूर हिमालय का वह गुप्त और अद्रश्य स्थल जिसकी प्राप्ति साधको के लिए एक दिवास्वप्न के सामान होती है. यह विशेष चेतना युक्त स्थल मे प्रवेश के लिए जहा एक और साधक को निरंतर साधनारत हो कर कड़ी से कड़ी परीक्षाओ से गुजरना पड़ता है वही दूसरी तरफ सतत गुरुकृपा भी आवश्यक है. सिद्धाश्रम मे प्रवेश के नियमानुसार साधक के एक निश्चित साधना स्तर के बाद उसे गुरुकृपा से सिद्धाश्रम मे प्रवेश मिलता है. सदगुरुदेव ने अपने दीर्घ प्रयत्नों से इस अद्वित्य स्थल से सबंधित दुर्लभ जानकारी पर प्रकाश डाला था. साथ ही साथ उन्होंने समय समय पर प्रयोग कर इस पावन स्थल से सबंधित कई प्रयोग भी करवाए थे, जिससे की साधक को सिद्धाश्रम की प्राप्ति हो सके. लेकिन आज के युग मे हर कोई व्यक्ति के लिए यह सहज संभव नहीं है की वह महाविद्याओ जेसी उच्चकोटि की साधनाओ को सम्प्पन करे तथा कड़े नियमों का पालन कर इस देवभूमि मे प्रवेश करे. इस चिंतन के साथ करुणावश उन्होंने अपने शिष्यों के मध्य कई ऐसे प्रयोग रखे जिनके माध्यम से सामन्य गृहस्थ साधक भी उस देवभूमि का दर्शन कर अपने जीवन को धन्य कर सके. उन्होंने कई ऐसे प्रयोग अपने शिष्यों को व्यक्तिगत रूप से भी बताये, जिसके माध्यम से कुछ ही दिनों मे व्यक्ति भावावस्था मे सिद्धाश्रम के दर्शन करने मे समर्थ होता है. एसी हीरकखंड के समान साधना को हर साधक को सम्प्पन करना ही चाहिए. ये महत्वपूर्ण प्रयोग है ***सिद्धाश्रम दर्शन प्रयोग***. जिसके माध्यम से साधक सिद्धाश्रम के दर्शन कर अपने जीवन को धन्य कर सकता है.

इस प्रयोग को कोई भी साधक ब्रम्हमुहूर्त या रात्रीकाल मे ९ बजे के बाद कर सकता है. नित्य समय एक ही रहे. इस प्रयोग को गुरुवार से शुरू करे. वस्त्र आसान सफ़ेद रहे, दिशा उत्तर. साधक इस प्रयोग मे स्फटिक या गुरु रहस्य माला का उपयोग करे. पूर्ण गुरु पूजन के बाद साधक को निम्न मंत्र की ५१ माला जाप करनी है

ॐ पूर्णत्व दर्शय पूर्ण गुरुवै नमः

साधक को यह क्रम अगले गुरुवार तक करना चाहिए. (कुल ८ दिन). साधक श्रद्धा और समर्पण से यह साधना करता है तो निश्चित रूप से साधना काल मे ही उसे सिद्धाश्रम के दर्शन हो जाते है.

==

Siddhashrama, the word which fills divinity and devotion in the mind at the moment we hear. Extremely holy place, from where the spiritualism is generated. Far in Himalayas; secret and invisible place; discovery of same is always a dream for sadhak. To enter in this energetic place one one hand sadhak needs to do various sadhana by passing through very tough tests where as on other hand requirement of continuous blessings of guru is also essential. According to entry rule of siddhashram, sadhak receives permission to enter in the place after specific sadhana level with blessings of Guru. With wide efforts of him, sadgurudev thrown light by providing rare information related to this incomparable place. With that, time to time sadgurudev had also introduced prayoga related to this holy place, with which siddhashram entry could be made. But in today's time, it is not easy for every person to accomplish higher sadhana like mahavidya and to follow the tough rules for to enter in this divine place. With such thoughts, being merciful to the disciples, he placed such prayog in front through the medium of which simple householders can even have glimpses of the divine place and can have bless for whole life. He had even told many such prayoga to disciples, personally with the medium of the same in few days person can have glimpses of siddhashram in Bhavavastha. Such sadhana are real gems and one should do it. This important prayog is "**Siddhashram Darshan Prayog**". With which sadhak can have glimpses of siddhashram and can make the life blessed.

This prayog could be done either in bramh-muhurta or night time after 9PM. Daily time should remain same. This prayog should be started from Thursday. Cloth and aasan should be white in colour. Direction should be north. Sadhak should use Sfatik or Guru Rahasya rosary. After complete guru poojan sadhak should chant 51 round of following mantra.

Om Purnatv Darshay Purn Guruvai Namah

Sadhak should continue the process daily till next Thursday (total 8 days). If sadhak does this sadhana with faith and devotion then will definitely have glimpses of siddhashrama in sadhana duration.

DEVKI PUTRA SADHNA

It is well known fact regarding Lord Shri Krishna that there has never been anyone on this earth who had unparalleled personality like him. He faced lots of difficulties in each and every field of life; he kept on fighting and never gave up. Rather what happened was that all those who came as obstacle in front of him, with passage of

time they all bowed down in his lotus feet when they came to know about complete personality of Krishna.
From Tantra Point of view, Shri Krishna is most important since blessings and grace of Lord Shri Krishna can be obtained by sadhak by doing tantric sadhna of his diverse forms and thereafter, sadhak secures victory in each and every aspect of life. There are many forms of Lord Shri Krishna. Sadhna of his diverse forms is done in various schools of tantra through various padhatis. However, it is very rare to find information about tantric sadhna of his 'DEVKI PUTRA FORM'

This is childhood form of Lord Shri Krishna. Various types of benefits are attained by doing sadhna of this form of Lord out of which major ones are given below. Speciality about this sadhna is that it gets rid of all the child-related problems of parents; it may be related to any aspect.

If any person's son or daughter remains continuously ill or suffer from any disease or the other very frequently, then doing this prayog provides good health to children.
If someone' children is not on right path and have come under influence of bad/anti-social company then in such circumstances this prayog resolves this type of children-related anxiety.
In many instances, children are weak in study due to various reasons, they do not get desired results even after hard-work; in such case this prayog provides suitable results.

If child has weak memory power or suffering from mental imbalance then if sadhak does this prayog, there is development in memory power of his child and child becomes mentally stable.

In situations where child is suffering from irritable behaviour, unsuitable nature/behaviour, this prayog should be done so that child can be made a great personality from social point of view. Every parent would like to resolve such type of problems. It is possible through the Devki Putra form of lord. By doing Tantra sadhna related to Shri Devki Putra, sadhak starts getting its related benefits. In this manner, this is highly useful prayog in modern era and it is easy too which can be done by any person.

Sadhak can start this sadhna from any auspicious day.
This sadhna can be done at any time in day or night.
Sadhak should take bath and wear white dress.
After it, sadhak should sit on white aasan facing north or east direction.

First of all sadhak should perform Guru Poojan and Ganesh Poojan. After it, sadhak should establish energised Krishna Yantra/picture in front of him. Sadhak can also use **‘Parad Soundarya Kankan’**.
Sadhak should first of all do Guru Poojan.

After it, sadhak should do poojan of established yantra or Soundarya Kankan and then carry out Nyaas procedure.

KAR NYAAS

KLAAM ANGUSHTHAABHYAAM NAMAH
KLEEM TARJANIBHYAAM NAMAH
KLOOM SARVANANDMAYI MADHYMABHYAAM NAMAH
KLAIM ANAAMIKAABHYAAM NAMAH
KLAUM KANISHTKABHYAAM NAMAH
KLAH KARTAL KARPRISHTHAABHYAAM NAMAH

HRIDYAADI NYAAS

KLAAM HRIDYAAY NAMAH
KLEEM SHIRSE SWAHA
KLOOM SHIKHAYAI VASHAT
KLAIM KAVACHHAAY HUM
KLAUM NAITRTRYAAY VAUSHAT
KLAH ASTRAAY PHAT

After Nyaas, sadhak should chant below mantra. Sadhak should chant 21 rounds of this mantra. Sadhak should use crystal or white agate rosary for chanting mantra. If it is not possible, sadhak can use rudraksh rosary.

Mantra

OM KLEEM DEVAKIPUTRAAY HOOMPHAT

After completion of chanting, sadhak should pray to Lord Krishna and seek his blessings. Sadhak should continue this procedure for 5 days. Rosary can be used by sadhak in future in sadhnas related to Krishna.

~~~~~~

भगवान श्री कृष्ण के परिपेक्ष्य में पुरे विश्व में यह तथ्य मशहूर है की उन जैसा एक अद्वितीय व्यक्तित्व पृथ्वी पर कभी नहीं हुआ. जीवन के सभी क्षेत्र में उन्होंने विविध कष्टों का सामना किया, सदैव संघर्ष से युक्त हो कर भी उन्होंने कभी भी हार नहीं मानी, वरन हुआ तो यह की उनके सामने जो भी बाधा बन कर आता था, वे सब समय के साथ निश्चय ही उनके चरणों में गिर पड़ते थे जब उनको कृष्ण के पूर्ण व्यक्तित्व का बोध होता था.
~~~~~~

तांत्रिक द्रष्टि से भी श्रीकृष्ण का अधिकतम महत्त्व है ही. क्यों की उनके विविध स्वरुप की तांत्रिक साधना के माध्यम से भगवान श्री कृष्ण की कृपा कटाक्ष की प्राप्ति कर सकता है साधक और फिर उसके जीवन में सर्वत्र विजय की प्राप्ति होती है. भगवान श्री कृष्ण के कई कई स्वरुप है. इन सब अलग अलग स्वरुप की साधना अलग अलग तांत्रिक मतों में विविध पद्धतियों के माध्यम से की जाती है. लेकिन उनके स्वरुप 'देवकीपुत्र' की तांत्रिक साधना के बारे में जानकारी कुछ कम ही प्राप्त होती है.

भगवान श्री कृष्ण का यह बाल स्वरुप है. भगवान के इस स्वरुप की साधना उपासना के माध्यम से कई प्रकार के लाभ की प्राप्ति होती है जिनमे निम्न मुख्य है. इस साधना का सब से महत्वपूर्ण तथ्य यह है की जो भी माता पिता को अपनी संतान से सबंधित समस्या रहती हो, वह चाहे किसी भी रूप में हो.

कोई व्यक्ति का पुत्र या पुत्री हमेशा बीमार रहते हो तथा थोड़े थोड़े समय में कुछ न कुछ बिमारी आ जाती हो, तो इस प्रयोग को करने पर संतान को आरोग्य की प्राप्ति होती है.

संतान योग्य मार्ग पर न हो तथा उसकी संगत असामाजिक हो गई हो ऐसे हालत में इस प्रयोग का आशरा लेने पर संतान से सबंधित चिंता का निराकरण होता है.

कई बार संतान विविध कारणों से पढ़ाई आदि में भी कमज़ोर होते है,परिश्रम करने के पश्चात भी उनको निर्धारित परिणाम की प्राप्ति नहीं होती;ऐसे हालत में यह प्रयोग करने पर योग्य परिणाम की प्राप्ति होती है.

स्मरणशक्ति का कमज़ोर होना या दिमाग में असहज असंतुलन आदि हो तो साधक को यह प्रयोग करने पर उसकी संतान की स्मरणशक्ति का विकास होता है तथा मानस संतुलित बनता है.

संतान में ज्यादा चिडचिडापन, अयोग्य व्यवहार या स्वभाव आदि असहज होने, एसी स्थिति में संतान के लिए यह प्रयोग करना चाहिए जिससे की संतान को सामाजिक रूप से भी एक उच्चतम व्यक्तित्व बनाया जा सके. इस प्रकार के विविध समस्याए है जिनका निराकारण कोई भी माता-पिता करना चाहेगा ही. भगवान के देवकी पुत्र स्वरुप के माध्यम से यह संभव हो पाता है. श्री देवकीपुत्र की तांत्रिक साधना करने पर साधक को इससे सबंधित लाभ की प्राप्ति होती है. इस प्रकार आज के युग में यह एक नितांत उपयोगी प्रयोग है और प्रयोग सहज भी है जिससे कोई भी व्यक्ति इसे सम्प्पन कर सकता है.

यह साधना साधक किसी भी शुभ दिन से शुरू कर सकता है.

यह साधना दिन या रात्रि के कोई भी समय में की जा सकती है.

साधक स्नान आदि से निवृत हो कर सफ़ेद वस्त्रों को धारण करना चाहिए

इसके बाद साधक को उत्तर या पूर्व दिशा की तरफ मुख कर सफ़ेद आसान पर बैठ जाना चाहिए

साधक सर्व प्रथम गुरुपूजन तथा गणेशपूजन को सम्पपन करे. इसके बाद साधक अपने सामने प्राण प्रतिष्ठित कृष्णयंत्र या चित्र स्थापित करे या साधक **‘ पारद सौंदर्य कंकण’**का प्रयोग भी कर सकता है.

साधक सर्व प्रथम गुरुपूजन करे,

इसके बाद साधक स्थापित यंत्र या सौंदर्य कंकण का भी पूजन सम्पपन कर न्यास करे.

करन्यास

क्लां अङ्गुष्ठाभ्यां नमः

क्लीं तर्जनीभ्यां नमः

क्लूं सर्वानन्दमयि मध्यमाभ्यां नमः

क्लैं अनामिकाभ्यां नमः

क्लौं कनिष्टकाभ्यां नमः

क्लः करतल करपृष्ठाभ्यां नमः

हृदयादिन्यास

क्लां हृदयाय नमः

क्लीं शिरसे स्वाहा

क्लूं शिखायै वषट्

क्लैं कवचाय हूं

क्लौं नेत्रत्रयाय वौषट्

क्लः अस्त्राय फट्

न्यास होने पर साधक निम्न मन्त्र का जाप करे. साधक को इस मन्त्र का २१ माला जाप करना चाहिए. मन्त्र जाप के लिए साधक स्फटिक माला का या सफ़ेद हकीक माला का प्रयोग कर सकता है. अगर यह भी संभव न हो तो साधक रुद्राक्ष माला से जाप कर सकता है.

मन्त्र - ॐ क्लीं देवकीपुत्राय हूं फट्

(OM KLEEM DEVAKIPUTRAAY HOOM PHAT)

जाप पूर्ण होने पर साधक भगवान कृष्ण को प्रणाम कर आशीर्वाद प्राप्त करे. इस प्रकार साधक को यह क्रम ५ दिन तक रखना चाहिए. माला को साधक भविष्य में कृष्ण से सबंधित साधनाओ में प्रयोग कर सकता है.

****NPRU****

Posted by Nikhil at 7:29 AM No comments:
Labels: SHRI KRISHNA SADHNA

FRIDAY, NOVEMBER 23, 2012

KRISHNA SAMMOHAN SADHNA

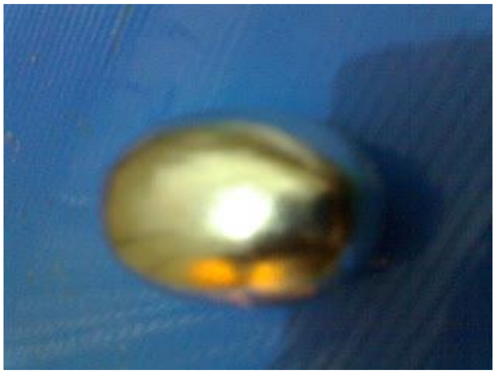

Krishnam vande jagatgurum

Whenever we think of Lord Krishna, one such image emerges in front of our eyes which brings smile on our face. From historical point of view or shastra point of view or in other view, personality of Krishna was amazing in itself and full of divinity. There is nothing which his journey from ordinary to extra-

ordinary does not teach us and it provides us the knowledge about beauty of life. If even siddhs call him as Jagat Guru (Guru of entire world) then what more can be said about him. What was that quality in Shyam or Murli Manohar that whenever one thinks of him, person is filled with sweetness. There was something beyond beauty and attraction in his personality that whosoever came in contact with him, May it is his friend or enemy, they were not able to get out of his charming spell. And when we talk about one such quality which binds person with attraction, one such quality that whosoever comes in contact with that person is filled with sweetness, something attaining which all sorrows disappear and at the time of separation it feels like death. If all this is given name of one quality, then is it not Sammohan? Definitely Krishna was person full of attraction and even much more than it, he was full of Sammohan. Today even after hundreds of years whenever we talk of Sammohan or attraction, his name is always taken.
If we split this word then it means full of Mohan. Mohan is one such quality which compels any other person to become favourable, filling our self with so much of divinity that when some other person comes in contact with that divinity, he is also filled with divinity and what is left is just sweetness where there is no anxiety or sorrow. But is it possible to have such Sammohan? If such Sammohan can be attained then what is left. May it be materialistic life or spiritual life, getting completeness

in both becomes so much easy. On one hand, person can gain prosperity and happiness in his daily life, his work field, business, and household life and enjoy his life and on the other hand he can activate his inner power at mental level and develop his spiritual consciousness to maximum. But how can it be possible?

There is nothing called impossible in field of Tantra. Parad tantra has been called last Tantra in itself where exceptional prayogs are carried out with the help of Parad and Tantra. In this context, there are many abstruse procedures in this field which are related to attraction and Sammohan. One such prayog is Krishna Sammohan Prayog by which person can create so much of Sammohan inside him which is capable of providing various types of favours on both materialistic and spiritual plane. This is because of the fact that while on one hand parad, present in each particle as life fluid in universe fills person with complete Sammohan and on the other hand this activity is accelerated by Tantra procedure with the help of Devi powers.

Sadhak should start this sadhna from any Sunday. It should be done at sunrise or after 9 in the night.

Sadhak should take bath, wear red dress and sit on red aasan.

Sadhak should face north direction.

Sadhak should establish Parad Saundarya Kankan in front of him. If it is not possible for sadhak then sadhak should establish any picture of Lord Krishna or Sammohan Yantra but after establishing Saundarya Kankan sadhak can get highest benefit

and attain complete success. After doing Guru Poojan and Ganesh poojan, do normal poojan of Lord Krishna picture or gutika. After this, sadhak should chant Guru Mantra and then chant 11 rounds of below mantra. Sadhak should use Rakt or Moonga rosary for chanting. If sadhak has Sammohan rosary then he can also use it for this sadhna.

KLEEM KRISHNAAY SAMMOHAN KURU KURU NAMAH

Sadhak should do this procedure for 3 days. After 3 days, sadhak should safely keep the rosary. This sadhna can be used for Sammohan sadhna in future. Establish Saundarya Kankan in worship room.

कृष्णंवन्देजगत्गुरुं

कृष्ण का नाम मानस में आते ही आँखों के समक्ष एक एसी मूर्ति साकार हो जाती है की अपने आप अधरों पर एक मुस्कान तैर जाए. ऐतेहासिक द्रष्टि से या शाश्त्रोक्त नज़रिए से, चाहे किसी भी रूप में देखा जाए, कृष्ण का व्यक्तित्व अपने आप में एक अनूठा तथा दिव्यता से परिपूर्ण व्यक्तित्व रहा है. एक सामान्य से असामान्य तक की उनकी जीवन यात्रा हमें क्या क्या नहीं सिखाती समाजाती और देती है वह ज्ञान की आखिर जीवन का सौंदर्य क्या है. अगर सिद्धो के द्वारा भी कृष्ण को जगत गुरु कहा गया है तो उसके आगे तो क्या कहा जा सकता है. श्याम और मुरली मनोहर में क्या ऐसा गुण था की आज भी किसी को जब उनके बारे में ध्यान आता है तो व्यक्ति अपने आप में ही मधुरता युक्त हो जाता है. सौंदर्य और आकर्षण से भी ऊपर उस व्यक्तित्व में ऐसा कुछ ज़रूर था की जो भी उनके समपर्क में आता था चाहे वह उनके मित्र हो या शत्रु, सब उनके मोह पाश से मुक्त नहीं हो पाते थे. और जब जब भी एक इसे गुण की बात कही भी आती है जो व्यक्ति को आकर्षण से बद्ध कर दे, एक ऐसा गुण की जो भी उस व्यक्ति के संपर्क में आये वह मधुरता से भर जाए, कुछ ऐसा की उससे मिलते ही सरे दुःख दर्द दूर हो जाए और वियोग के समय जेसे प्राण ही निकल जाए, अगर इन सब को एक गुण का नाम दिया जाए तो क्या वह सम्मोहन नहीं है? निश्चय ही कृष्ण आकर्षण और उससे भी बहोत आगे सम्मोहन से युक्त व्यक्तित्व थे आज भी सेकडो वर्षों के बाद भी जिनका नाम जहाँ पर भी सम्मोहन या आकर्षण की बात होती है, वहाँ आ ही जाता है.

अगर इस शब्द का संधि विच्छेद किया जाये तो इसका अर्थ होता है मोहन से परिपूर्ण. मोहन वह गुण जो की किसी भी व्यक्ति को बाध्य कर दे अनुकूल बनने के लिए, अपने आप को उस स्तर तक दिव्यता से भर देना की जहां दूसरे व्यक्ति भी उस दिव्यता के संपर्क में आते ही खुद दिव्यता से युक्त हो जाये. और पीछे रह जाये तो बस एक मधुरता जहां पर कोई चिंता या विषाद ही न हो. लेकिन क्या ऐसा सम्मोहन प्राप्त करना संभव है? और अगर ऐसा सम्मोहन प्राप्त हो जाए तो क्या फिर शेष ही क्या रह गया. चाहे वह भौतिक जीवन हो या अध्यात्मिक जीवन हो. निश्चय ही दोनों पक्षों में पूर्णता प्राप्त करना कितना सहज हो सकता है. एक तरफ व्यक्ति अपने रोजिंदा जीवन में अपने कार्य क्षेत्र, व्यापर, गृहस्थी में पूर्ण वैभव और सुखमय हो कर जीवन का आनंद ले सकता है वहीँ दूसरी तरफ अपनी आतंरिक शक्तियों का विविध मनः स्तर पर जागृत करता हुआ आध्यात्मिक चेतना का भी पूर्ण विकास कर सकता है. लेकिन यह सब कैसे हो सकता है?
तंत्र के क्षेत्र में असंभव जेसा तो कुछ है ही नहीं. पारद तंत्र तो अपने आप में अंतिम तंत्र कहा गया है जहां पर एक से एक विलक्षण प्रयोग पारद और तंत्र के माध्यम से सम्प्पन किये जाते है. इसी क्रम में सम्मोहन और आकर्षण से सबंधित भी कई गुढ़ प्रक्रियाएं इस क्षेत्र में निहित है ही. ऐसा ही एक प्रयोग है कृष्ण सम्मोहन प्रयोग. जिसके माध्यम से व्यक्ति अपने अंदर एक ऐसा सम्मोहन उत्पन्न कर सकता है जो की उसे भौतिक तथा अध्यात्मिक दोनों धरातल पर कई कई प्रकार की अनुकूलताएं प्रदान करने में सर्व समर्थ है. क्यों की जहां एक और पारद इस ब्रह्माण्ड में जिव द्रव्य के रूप में कण कण में उपस्थित हो कर पूर्ण सम्मोहन आकर्षण को मनुष्य के कण कण में भी सम्मोहन भर देता है वहीँ दूसरी तरफ इस कार्य को दैवीय शक्तियों के माध्यम से पूर्ण वेगवान बनाती है तंत्र प्रक्रिया.
यह साधना साधक किसी भी रविवार की रात्री में शुरू करे. समय सूर्योदय का हो या फिर रात्री में ९ बजे के बाद का.
साधक स्नान आदि से निवृत हो कर लाल वस्त्रों को धारण करे. तथा लाल आसान पर बैठ जाए. साधक का मुख उत्तर दिशा की तरफ रहे.

साधक अपने सामने पारद **सौंदर्य कंकण** स्थापित करे अगर साधक के लिए यह संभव न हो तो साधक अपने सामने भगवान कृष्ण का कोई चित्र या सम्मोहन यंत्र स्थापित कर ले लेकिन सौंदर्य कंकण स्थापित करने पर साधक महत्तम लाभ प्राप्ति तथा पूर्ण सफलता को अर्जित कर सकता है. गुरुपूजन, गणेशपूजन सम्प्पन कर साधक भगवान कृष्ण के चित्र या गुटिका का भी सामान्य पूजन सम्प्पन करे.
इसके बाद साधक गुरुमंत्र का जाप कर निम्न मंत्र की ११ माला जाप करे. यह जाप साधक को रक्त माला या मूंगा माला से करनी चाहिए. अगर साधक के पास कोई सम्मोहन माला है तो उसका प्रयोग भी इस साधना हेतु किया जा सकता है.

क्लीं कृष्णाय सम्मोहन कुरु कुरु नमः

(kleem krishnaay sammohan kuru kuru namah)

साधक यह क्रम ३ दिन तक करे. ३ दिन हो जाने पर साधक माला को सुरक्षित रखले. यह माला आगे भी सम्मोहन साधनाओ के लिए उपयोग की जा सकती है. सौंदर्य कंकण को पूजा स्थल में स्थापित कर दे.

HANUMAAN CHALISA KA EK VISHISHTH PRAYOG

"Sankat Kate Mite Sab Peera Jo Sumire Hanumant Balbeera"

Stotra holds an important place in both Indian Aagam and Nigam. Normally, description of Stotra is that Stotra is collection of special words through which prayer of Isht is done. Actually there are many types of Stotra but in Tantra, these Stotras are not taken lightly. Tantra is the field where at each and every step one comes across infinite secrets. May be it is Shiv Tandav Stotra or Siddh Kunjika, all of them contains many hidden procedures and sadhnas embedded in them. Many Stotra, Armour (Kavach), Sahastranaam (1000 names), Khadagmaal have been uttered by Aadi Shiv or Shakti which are self-accomplished and these Stotra are part and parcel of various Tantra. Besides this, Many Mahasiddhs also did sadhna of their Isht, manifested them and thereafter created Stotra and got blessings from their Isht so that Stotra can be used for welfare of common people. Such Stotra are certainly providers of all accomplishments. Above lines are of Hanuman Chalisa. In today's era, hardly you will find a person who is unaware of Hanuman Chalisa. Actually Hanuman Chalisa is one special sadhna

procedure in which power of many siddhs works, this Chalisa, group of various Sabar Mantra is full of infinite powers. Well , In today's era one can find Chalisa related to each god and goddess but if seen from Tantra point of view , they are nothing more than poetry since they have neither the consciousness not the power of Isht. Besides this, they do not bear imprints of any Mahasiddh too. There is no difference between such Chalisa and other works of poetry. Sadhak can himself decide what and how one can achieve anything by reading them. Certainly, reading any Chalisa other than Aadi Chalisa i.e. Hanuman Chalisa is incapable of providing accomplishments.

If it is read carefully and minutely then it is Sabar prayer of Aadinath form of Lord Shiva, basic form of Hanuman. If sadhak tries to understand the abstract meaning of phrase like Kaanan Kundal, Sankar Suvan, Tumharo Mantra, Aapan Tej, Gurudev Kee Nai, Asht Siddhi etc., many types of secrets can be unveiled.

Many years before, in the preliminary days of my entry into sadhna world, I met one sadhak named Jigyesh of Junagarh. He had keen interest in Yog and Tantric sadhna from childhood. He had special interest in discovering about siddhs of Girnar region. He possessed very good knowledge about vidyas like Sammohan and Vashikaran. His Isht was Hanuman. During discussion relating to Tantra, first of all he provided me the special information about Hanuman Chalisa. He told that

" Jo Sat Baat Paath Kare Koi , Chhothee Banee Mahasukh Hoi "

The person, who reads Hanuman Chalisa 100 times, gets freedom from bondage and he attains great pleasure. But it is not so much easy. Its meaning in materialistic terms may be anything but from spiritual point of view, bondage means both internal and physical bondage. And Great pleasure means attaining state of peaceful mind. But for attaining any state, it is necessary for sadhak to

do definite procedure because one definite procedure can make possible the attainment of definite result.

He told me one prayog related to Hanuman Chalisa, which is being mentioned here. But before it, some necessary facts relating to it are worth knowing.
This prayog of Hanuman Chalisa can be done in both the manner – Sakaam (for fulfilment of desire) and Nishkaam (without any desire). Therefore, before doing anushthan by sadhak, taking resolution of his wish is necessary. If the prayog is being done for fulfilment of special desire then sadhak should take Sankalp (resolution) that " I , sadhak named "your name" is doing this prayog for this ……..work , Lord Hanuman provide me Shakti and your blessing for success in it" . If sadhak is doing prayog in Nishkaam manner then it is not necessary to take Sankalp. If sadhak is doing sadhna in Sakaam manner then sadhak should establish picture of Lord Hanuman in Veer Bhaav in front of him i.e. in which he has picked up mountain or in which he is destroying asurs.But if one has to do Nishkaam sadhna then sadhak should establish picture of Hanuman in servant form in front of him i.e. in which he is in state of meditation or in which he is sitting near the feet of Lord Rama.

Sadhak should do this procedure all alone. If sadhak is doing this procedure in his room, then at the time of chanting no one should be present in room excluding him.

The fact that female sadhaks cannot do Hanuman Chalisa or sadhna is only a misconception. Any sadhika can do Hanuman sadhna or prayog.During menstrual cycle, this prayog or any sadhna cannot be done. Sadhak and sadhika should follow celibacy for total 3 days i.e. on the day of prayog, previous day and next day.

In Sakaam Upasana, dress will be red and in Nishkaam sadhna, saffron robe coloured dress will be used. Direction will be north in both the cases. Sadhak should offer Bhog of jaggary and boiled gram. Any fruit can be offered. Sadhak can light oil or ghee lamp. Sadhak should offer Aak (swallow-wart) flowers or red coloured flowers. Sadhak should do this prayog on any Tuesday night after 10:00 P.M. First of all, sadhak should take bath, wear dress and sit on red aasan. Sadhak should keep 100 flowers of Aak near himself. If it is not possible in any way then he should keep 100 flowers of red colour. Sadhak should then spread red cloth on Baajot in front of him and establish picture/yantra/idol of Hanuman Ji. After it, sadhak should light the lamp. Sadhak should do Guru Poojan, chant Guru Mantra and do normal Poojan of Hanuman Ji. After this, sadhak should recite "HAM" beej for some time and thereafter he should do Anulom, Vilom Pranayama. After Pranayama, sadhak should take water in his hand and take Sankalp and speak out his desire. After it sadhak should do Ram Raksha Stotra or chant "RAAM RAAMAAY NAMAH" as per his capacity. After Jap, sadhak should do dhayan of Hanuman Ji assuming him to be present in three nerves viz. Ida, Pingla and Sushumana and start recitation of Hanuman Chalisa. Sadhak should have to recite it 100 times in that night. After each recitation, offer one flower to yantra/picture /idol of Hanuman Ji. In this manner, sadhak should offer 100 flowers after 100 recitations. After 100 recitations sadhak should recite "HAM" beej for some time and offer mantra Jap in feet of Hanuman Ji.

In this manner, this prayog is completed. On the next day, sadhak should immerse the flowers. Besides this, sadhak also told me some important prayogs related to Hanuman Chalisa which has been experienced multiple times. Efforts will be made to put forward those prayogs so that entire sadhak community can benefit from it.

~~~~~~

“संकट कटे मिटे सब पीरा जो सुमिरे हनुमंत बलबीरा”

भारतीय आगम तथा निगम में स्तोत्र का एक महत्वपूर्ण स्थान है. सामान्य रूप से स्तोत्र की व्याख्या कुछ इस प्रकार की जा सकती है की स्तोत्र विशेष शब्दों का समूह है जिसके माध्यम से इष्ट की अभ्यर्थना की जाती है. वस्तुतः स्तोत्र के भी कई कई प्रकार है लेकिन तंत्र में इन स्तोत्र को सहजता से नहीं लिया जा सकता है, तंत्र वह क्षेत्र है जहां पर पग पग पर अनन्त रहस्य बिखरे पड़े है. चाहे वह शिवतांडव स्तोत्र हो या सिद्ध कुंजिका, सभी अपने आप में कई कई गोपनीय प्रक्रिया तथा साधनाओ को अपने आप में समाहित किये हुवे है. कई स्तोत्र, कवच, सहस्त्रनाम, खडगमाल आदि शिव या शक्ति से श्रीमुख से उच्चारित हुवे है जो की स्वयं सिद्ध है और यही स्तोत्र विभिन्न तंत्र के भाग है. इसके अलावा कई महासिद्धो ने भी अपने इष्ट की साधना कर उनको प्रत्यक्ष किया था तथा तदोपरांत स्तोत्र की रचना कर उन स्तोत्र की जनमानस के कल्याण सिद्धि हेतु अपने इष्ट से वरदान प्राप्त किया था. ऐसे स्तोत्र निश्चय ही सर्व सिद्धि प्रदाता होते है. उपरोक्त पंक्तियाँ हनुमान चालीसा की है. हनुमान चालीसा के बारे में आज के युग में कोन व्यक्ति अनजान है. वस्तुतः हनुमान चालीसा एक विलक्षण साधना क्रम है जिसमे कई सिद्धो की शक्ति कार्य करती है, विविध साबर मंत्रो के समूह सम यह चालीसा अनंत शक्तियों से सम्प्पन है. खेर, देखा देखि में आज के युग में हर देवी देवता से सबंधित चालीसा प्राप्त हो जाती है लेकिन तंत्र की द्रष्टि से देखे तो वह मात्र काव्य से ज्यादा कुछ नहीं कहा जा सकता है क्यों की न ही उसमे कोई स्वयं चेतना है और ना ही इष्ट शक्ति. इसके अलावा उसमे कोई महासिद्ध का कोई प्रभाव आदि भी नहीं है. एसी चालीसा और दूसरे काव्यों में कोई अन्तर नहीं है उसका पठन करने पर साधक को क्या और केसे कोई उपलब्धि हो सकती है इसका निर्णय साधक खुद ही कर सकता है. निश्चय ही आदी चालीसा अर्थात हनुमान चालीसा के अलावा कोई भी चालीसा का पठन सिद्धि प्रदान करने में असमर्थ है.

अगर सूक्ष्म रूप से अध्ययन किया जाए तो हनुमान जी के मूल शिव स्वरुप के आदिनाथ स्वरुप की ही साबर अभ्यर्थना है, कानन कुंडल, संकर सुवन, तुम्हारो मन्त्र, आपन तेज, गुरुदेव की नाइ, अष्ट सिद्धि आदि विविध शब्द के बारे में साधक खुद ही अध्ययन कर विविध पदों के गूढार्थ समजने की कोशिश करे तो कई प्रकार के रहस्य साधक के सामने उजागर हो सकते है.
~~~~~~

कई वर्षों पूर्व साधना जगत में प्रवेश के प्रारंभिक दिनों में ही जूनागढ़ के एक साधक से मुलाकात हुई, जिनका नाम जिज्ञेश था. योग और तांत्रिक साधना में बचपन से ही काफी रुजान था उनका. गिरनार क्षेत्र के सिद्धो के सबंध में खोज में उनकी विशेष रूचि थी. सम्मोहन तथा वशीकरण आदि विद्याओ के बारे में काफी अच्छा ज्ञान रखते थे. उनके इष्ट हनुमान थे. तंत्र सबंधित चर्चा में सर्व प्रथम उन्होंने हनुमान चालीसा के बारे में विशेष जानकारी प्रदान की थी. उन्होंने बताया की

"जो सत् बार पाठ करे कोई, छूटही बंदी महासुख होई"

जो हनुमान चालीसा का 100 बार पाठ कर लेता है तो बंधन से मुक्त होता है तथा महासुख को प्राप्त होता है. लेकिन यह सहज ही संभव नहीं होता है, भौतिक अर्थ इसका भले ही कुछ और हो लेकिन आध्यात्मिक रूप से यहाँ पर बंधन का अर्थ आतंरिक तथा शारीरिक दोनों बंधन से है. तथा महासुख अर्थात शांत चित की प्राप्ति होना है. लेकिन कोई भी स्थिति की प्राप्ति के लिए साधक को एक निश्चित प्रक्रिया को करना अनिवार्य है क्यों की एक निश्चित प्रक्रिया ही एक निश्चित परिणाम की प्राप्ति को संभव बना सकती है.

हनुमान चालीसा से सबंधित एक प्रयोग उन्होंने ही मुझे बताया था, उसका उल्लेख यहाँ पर किया जा रहा है. लेकिन उससे पहले इससे सबंधित कुछ अनिवार्य तथ्य भी जानने योग्य है.
हनुमान चालीसा का यह प्रयोग सकाम प्रयोग तथा निष्काम प्रकार दोनों रूप में होता है. इस लिए साधक को अनुष्ठान करने से पूर्व अपनी कामना का संकल्प लेना आवश्यक है. अगर कोई विशेष इच्छा के लिए प्रयोग किया जा रहा हो तो साधक को संकल्प लेना चाहिए की " में अमुक नाम का साधक यह प्रयोग _____कार्य के लिए कर रहा हू, भगवान हनुमान मुझे इस हेतु सफलता के लिए शक्ति तथा आशीर्वाद प्रदान करे. " अगर साधक निष्काम भाव से यह प्रयोग कर रहा है तो संकल्प लेना आवश्यक नहीं है.
साधक अगर सकाम रूप से साधना कर रहा है तो साधक को अपने सामने भगवान हनुमान का वीर भाव से युक्त चित्र स्थापित करना चाहिए. अर्थात जिसमे वह पहाड़ को उठा कर ले जा रहे हो या असुरों का नाश कर रहे हो. लेकिन अगर निष्काम साधना करनी हो तो साधक को अपने सामने दास भाव युक्त हनुमान का चित्र स्थापित करना चाहिए अर्थात जिसमे वह ध्यान मग्न हो या फिर श्रीराम के चरणों में बैठे हुवे हो.

साधक को यह क्रम एकांत में करना चाहिए, अगर साधक अपने कमरे में यह क्रम कर रहा हो तो जाप के समय उसके साथ कोई और दूसरा व्यक्ति नहीं होना चाहिए.

स्त्री साधिका हनुमान चालीसा या साधना नहीं कर सकती यह मात्र मिथ्या धारणा है. कोई भी साधिका हनुमान साधना या प्रयोग सम्प्पन कर सकती है. रजस्वला समय में यह प्रयोग या कोई साधना नहीं की जा सकती है. साधक साधिकाओ को यह प्रयोग करने से एक दिन पूर्व, प्रयोग के दिन तथा प्रयोग के दूसरे दिन अर्थात कुल 3 दिन ब्रहमचर्य पालन करना चाहिए.

सकाम उपासना में वस्त्र लाल रहे निष्काम में भगवे रंग के वस्त्रों का प्रयोग होता है. दोनों ही कार्य में दिशा उत्तर रहे. साधक को भोग में गुड तथा उबले हुवे चने अर्पित करने चाहिए. कोई भी फल अर्पित किया जा सकता है. साधक दीपक तेल या घी का लगा सकता है. साधक को आक के पुष्प या लाल रंग के पुष्प समर्पित करने चाहिए.
यह प्रयोग साधक किसी भी मंगलवार की रात्रि को करे तथा समय १० बजे के बाद का रहे. सर्व प्रथम साधक स्नान आदि से निवृत हो कर वस्त्र धारण कर के लाल आसान पर बैठ जाये. साधक अपने पास ही आक के १०० पुष्प रखले. अगर किसी भी तरह से यह संभव न हो तो साधक कोई भी लाल रंग के १०० पुष्प अपने पास रख ले. अपने सामने किसी बाजोट पर या पूजा स्थान में लाल वस्त्र बिछा कर उस पर हनुमानजी का चित्र या यन्त्र या विग्रह को स्थापित करे. उसके बाद दीपक जलाये. साधक गुरु पूजन गुरु मंत्र का जाप कर हनुमानजी का सामान्य पूजन करे. इस क्रिया के बाद साधक 'हं' बीज का उच्चारण कुछ देर करे तथा उसके बाद अनुलोम विलोम प्राणायाम करे. प्राणायाम के बाद साधक हाथ में जल ले कर संकल्प करे तथा अपनी मनोकामना बोले. इसके बाद साधक राम रक्षा स्तोत्र या 'रां रामाय नमः' का यथा संभव जाप करे. जाप के बाद साधक अपनी तीनों नाडी अर्थात इडा पिंगला तथा सुषुम्ना में श्री हनुमानजी को स्थापित मान कर उनका ध्यान करे. तथा हनुमान चालीसा का जाप शुरू कर दे. साधक को उसी रात्रि में १०० बार पाठ करना है. हर एक बार पाठ पूर्ण होने पर एक पुष्प हनुमानजी के यंत्र/चित्र/विग्रह को समर्पित करे. इस प्रकार १०० बार पाठ करने पर १०० पुष्प समर्पित करने चाहिए. १०० पाठ पुरे होने पर साधक वापस 'हं' बीज का थोड़ी देर उच्चारण करे तथा जाप को हनुमानजी के चरणों में समर्पित कर दे.
इस प्रकार यह प्रयोग पूर्ण होता है. साधक दूसरे दिन पुष्प का विसर्जन कर दे. इसके अलावा भी हनुमान चालीसा से सबंधित कई महत्वपूर्ण प्रयोग मुझे उस साधक ने बताये थे जो की कई बार

अनुभूत है, वो प्रयोग भी समय समय पर आप के मध्य रखने का प्रयास रहेगा जिससे की समस्त साधकगण लाभान्वित हो सके.

****NPRU****

Posted by Nikhil at 10:07 PM 6 comments:
Labels: SHRI HANUMANT EVAM SHRI RAAM SADHNA, SHRI HANUMANT SADHNA

MONDAY, AUGUST 29, 2011

Bhagvaan Aanjaney Sarv Raksha vidhan

"अष्ट सिद्धि नव निधिं के दाता

अस आशीष दीन्हे जानकी माता "

भगवान् भोले शंकर की उदारता के कारण कौन नहीं होगा जो उनके आराधना नहि करना चाहता होगा, देव दानव, गन्धर्व, मानव, सभी तो भगवान् आशुतोष की कृपा के आकांक्षी हैं .उन्ही भगवान के रूद्र स्वरुप की तेजस्विता से तो पूरा विश्व गति मान हैं ही, साधारणतः इन रूद्र के सम्बंधित साधना ज्यादा प्रकाश में नहीं आई हैं , पर एकादश रूद्र की बात ही अनोखी हैं, उनके उपासक ,आराधक तो कहाँ कहाँ नहीं हैं , हर स्थान पर उनका का मंदिर या आराधक मिल ही जातेहैं , जिनका नाम की कष्टों से निवृति दिलाने वाला हैं.

यहाँ तक सुना जाता हैं की विश्व में सर्वोपरि साधना तो अघोर साधना विधान हैं और विश्व की हर शक्ति इस विधान के सामने नत मस्तक हैं , पर केबल मात्र एक ही देव हैं जिनके पञ्च मुखी स्वरुप की करोंड़ों सूर्य वत तेजस्विता के सामने यह अघोर विधान भी इनको प्रणम्य करता ही हैं .(वास्तव में सूक्षमता से देखें तो अघोर विधान भगवान शंकर के दिव्यतम स्वरूप से सम्बंधित हैं और भगवान महावीर भी तो उन्ही भगवान् शंकर के स्वरुप ही हैं)

हनुमान साधनाके अनेकों आयाम हमारे सामने हैं कुछ तो सामान्य हैं कुछ तो अति दिव्यतम हैं इस सन्दर्भ में सदगुरुदेव भगवान "हनुमान साधना " एक पूरी पुस्तक और "हनुमान साधना " नाम की cd भी उपलब्ध करायी हैं ,जिसमे सदगुरुदेव भगवान ने भगवान् बजरंग व् ली के उस दिव्यतम बीज मंत्र की वेवेचना की हैं जिसके माध्यम से आप उस प्रक्रिया को कर के पूरे दिन स्वयं ही भगवान् मारुती की दिव्य उर्जा से ओत प्रोत रह सकते हैं , वह पूरा अत्यधिक सरल विधान जिसे सिद्ध करना भी जरुरी भी नहीं हैं आप स्वयं सदगुरुदेव भगवान् के श्री मुख से सुने और लाभान्वित हो ,

सदगुरुदेव भगवान् ने यदि आप मंत्र तंत्र यंत्र विज्ञानं पत्रिका में देखें तो एक ऐसा विधान दिया हैं और एक ऐसे साधक का परिचय दिया हैं जो उस समय ८०/८५ वर्ष के थे और क्रोध आने पर एक पूरा वृक्ष भी जड़ से उखाड फेंकते थे .

(सच में सदगुरुदेव भगवान् ने क्या क्या विधान नहीं दिए हैं अपने सभी आत्मंशो के लिए , अब ये तो हम पर हैं की हम किस दिशा में चले .. इन साधनाओ को आलोचना की दृष्टी से देखे या फिर शिष्यता तो बहुत दूर की बात हैं , अच्छे से जिज्ञासु ही बने तो कम से कम एक सीधी तो उप र बढे या सीधे ही अपने आप को शिष्य मान ले ,क्योंकि यह तो बेहद सरल सा हैं , पर ध्यान भी रखे , उन परम हंस स्वामी निखिलेश्वरानंद जीकी शिष्यता के लिए महा योगी भी अनेको वर्ष तपस्या करते रहते हैं क्या वह इतनी सामान्य सी वस्तु हो गयी ......

"को नहीं जानत संकट मोचन नाम तिहारो " इस जीवन में मानो संकट और संकट ही हमारी संपत्ति बन गए हैं , या ऐसे कहे ही की विपत्ति ही हमारी संपत्ति बन गयी हैं .

अब किस किस समस्या का सामना करे कोई एक हो तो या दुसरे ढंग से कहूं तो की आज तक तो ठीक चल रहा हैं कहीं कोई समस्या न आ जाये , अब इस आकांशा को कैसे सामना करे .

भगवान् आंजनेय से सम्बंधित या प्रयोग इन समस्त विपदा से आपकी रक्षा करता हैं ही

मंत्र :

हनुमान पहलवान , बारह वरस का जवान |मुख में वीरा हाँथ में कमान |लोहे की लाठ वज्र का कीला|जहँ बैठे हनुमान हठीला |बाल रे बाल राखो|सीस रे सीस रखो| आगे जोगिनी राखो| पाछे नरसिंह राखो | इनके पाछे मुह्म्मुदा वीर छल करे , कपट करे ,तिनकी कलक ,बहन बेटी पर परे | दोहाई महावीर स्वामी की |

सामान्य नियम :

- वस्त्र आसन दिशा का कोई प्रतिबंध तो नहीं हैं पर आप चाहे तो लाल रंग के उपयोग कर सकते हैं .

- इस मंत्र से जप आप सुबह करे तो अच्छा हैं ,
- रुद्राक्ष माला का उपयोग आप जप कार्य के लिए कर सकते हैं .
- जप संख्या केबल १०८ बार हैं ही , और इसके बाद आप जितनी आहुति हो इस मंत्र से हो सके करे .यदि गुगुल का प्रयोग करे तो उत्तम होगा .
- सदगुरुदेव भगवान् से प्रार्थना करे की भगवान् आंजनेय कृपा से आपके उपर से विपत्ति या दूर हो

आज के लिए बस इतना ही

****

"Asth sidhhi nav nidhi ke data
As aashish dinhe janaki mata "

Who do not want to worship Bhagvaan bhole shaker , whether they are dev or danav or manav every one because generosity of him , everybody want to gain the blessing of Bhagvaan Ashutosh , and whole world is moving through tejaswita of rudra swarup of Bhagvaan Ashutosh . in general, very less sadhana are available for theses rudra swarup, but the ekadash rudra means the11 th rudra has a very unique place. Every where we can find the devotee of him, in every place , you can have his temple. Even his name is problem remover,

We have listen that aghor sadhana is having a very high place in sadhana jagat , and every sect and every one salute to the tejaswita of this aghor sadhana but in front of Bhagvaan Aanjney's panch mukhi swarup (means Bhagvaan hanuman with five head) even the aghor sadhana salute to him, such is the radiance of Bhagvaan this forms .(if we see little deeper ,we find that aghor sadhana is nothing but the most divine form of Bhagvaan shiva and Bhagvaan Aanjney is also the form of him).

There are many dimension of hanuman sadhana, some of very simple but many of the highly divine one. In this relation Sadgurudev Bhagvaan has written a book named "Hanuman sadhana" and a special cd has been made with the same name , in that , he has given one such powerful procedure through that you can energies your whole day , and you do not need to siddh that process ,only simple 4/5 minute of that gives you so much energy. You can listen Sadgurudev Bhagvaan divine voice and get benefitted by that.

Sadgurudev ji has given one such a very powerful vidhan in mantra tantra yantra vigyan old issues , and also introduce a sadhak , who even at that

time 80/85 years old but when he got angry , he could uprooted whole tree from the roots.(to be true, Sadgurudev Bhagvaan has given so many divytam sadhana process for all his aatamaansh , now it rests totally upon us , that in which direction ,we will move, take all these process as the view of criticizer or became a shishy but keep in mind , to became a shishy , one must first tread on the step of jigyasu (means real truth seeker), and became true seeker , since shishyata is very far away, or without going through this steps , we simply assume that we are his shishy , that so easy, but think about a minute , to get shishyta of such a param yogi paramhans swami nikhileshwaranand ji, even maha yogies do tapsaya so many births, than such a blessing comes. Is shishyta of Sadgurudev Bhagvaan is so simple and easy…..

"who do not know the name of o lord hanuman, problem remover Is thy name " it seems that in our life problem become the real wealth of us, how to face the problems , when it has so many faces, and what will a person do , if he worries about coming problem. Than..

This simple prayog of Bhagvaan Aanjney protects you.

Mantra :

Hanuman pahalvaan, barah varas ka jawan | mukh me beera haanth me Kaman | lohe ki lathh vajra ka keela | jahn baithhe hanuman hathhila | baal re baal raakho | sis re sis rakho | aage jogini raakho | paachhe narsinh raakho | in ke paachhe muhmuda veer chhal kare , kapat kare , tinki kalak ,bahin beti par pare | dohae mahaver swami ki |

General rules:

- No restriction regarding clothes and aasan and direction but red color cloths would be fine .
- Mantra jap time ,if in the morning than its much better.
- Can use rudraksh mala,
- Have to chant only 108 times, and offer aahuti means havan with guggul than it would be fine.
- Pray to Sadgurudev Bhagvaan than through the blessing of Bhagvaan Aanjney all our problems gets removed,

This is enough for today

****NPRU****

Posted by Nikhil at 11:22 AM 2 comments:

Labels: RAKSHA VIDHAN SADHNA, SHRI HANUMANT SADHNA

TUESDAY, JULY 5, 2011

VYAPAR VRIDDHI HANUMAN PRAYOG

उन्नति करना और आगे बढ़ते रहना जीवन का एक महत्वपूर्ण अंग है. हम धनवान बने ऐश्वर्यवान बने कीर्ति को प्राप्त करे और करते रहे यह हर मनुष्य का उद्देश्य होता है. जब तक हम भौतिकता से सम्प्पन नहीं हो, हम आध्यात्मिकता मे सम्प्पन होने की कल्पना नही कर सकते. लेकिन इसके साथ ही साथ यह भी ज़रूरी है की हमारी आय का स्त्रोत क्या है, और इससे भी ज्यादा महत्वपूर्ण यह है की वह स्त्रोत कितना कायम है.

हमारे पास एक ऐसा स्त्रोत हो जिससे की हम अपने परिवार को सुखी समृद्ध देख सके, लेकिन क्या ऐसा होता है. कई बार ऐसा देखा गया है की व्यक्ति व्यापार मे अपना सारा धन लगा देता है लेकिन किस्मत उसके इस साहस को स्वीकार नहीं करती. या फिर अडचने खतम होने का नाम ही नहीं लेती. अक्सर ये भी देखा गया है की कई बार व्यापर मे जितना अधिक और योग्य वेतन मिलना चाहिए उतना नही मिल पाता. यही पे समस्याए खतम नहीं होती, होता यु भी है की अगर कुछ समय तक योग्य रूप से व्यापर चले तो फिर थोड़े समय मे ही न जाने कहा से नयी समस्याए सामने आ जाती है

इस प्रकार की सभी समस्याओ के निराकरण के लिए एक अद्भुत साधना दी जा रही है, यह साधना से अत्यधिक कम समय मे योग्य परिणाम को प्राप्त किया जा सकता है, व्यापर सबंधित सभी प्रकार की समस्याओ से इस साधनाके द्वारा लात मार के भगाया जा सकता है बस जरुरत है श्रद्धा की, विश्वास की.

इस प्रयोग को ज्यादा बहेतर यही रहेगा की आप अपने व्यापारिक स्थान पर करे लेकिन अगर यह संभव न हो तो घर पर भी यह प्रयोग किया जा सकता है

इस के लिए आपको साबुत उडद के दानो की ज़रूरत पड़ती है

यह प्रयोग रात्री काल मे १० बजे के बाद किया जाता है

शनिवार की रात्रि को या मंगलवार की रात्रि को इसका प्रारंभ करे

रात्रि मे अपने सामने हनुमान का चित्र स्थापित करे

सिन्दूर से तिलक करे व् तेल का दीपक लगाये तथा अपने सामने साबुत उडद के के ११ दाने रखदे

उसके बाद निम्न मंत्र की मूंगा माला से ११ माला जाप करे

ओम हनुमंते व्यापार वृद्धिम बरकत कुरु मे स्वाहा

मंत्र जाप पूरा होने के बाद भगवान हनुमान व्यापर मे वृद्धि व् बाधाओ के शमन के लिए प्रार्थना करे

साबुत उडद के दानो को व्यापर स्थान मे पूजास्थल पर स्थापित कर दे

यह क्रम ११ दिनों तक रखे

११ दिनों के बाद साबुत उडद के दाने को इकठ्ठा कर नदी मे प्रवाहित कर दे

To progress and to be ahead is one of the very primary aspects of the life. It is motto of humans that we do become rich and prosperous and keeps on getting it. Till the time we are not complete in material life, we cannot imagine our self being spiritually complete. But with this, one thing is eventually important that what our income source it, and more important is the continuity of the same.

We should have a source of income which let us see happy prosperous family, but does it happens? Sometime it has been seen that person lay down all his wealth in business and fortune do not accept his courage. Or else barriers keep on banging. Many times it also has been observed that the return on the investment is not on expected line in business. This is not the end of the troubles; it also happens that if business is running properly in-between the fluent way many troubles start cutting the way.

To overcome such problems one highly affecting sadhana is given. With this sadhana in very short span of time, appropriate results could be gain. Every business related troubles could be vanish through this sadhana what we requires is to have faith and trust.

It is better to do this sadhana at business place but if it is not possible then this sadhana can even be done at home.

For this you require to have beans of black lentil

This ritual should be performed after 10 pm in night.

Saturday night or Tuesday night should be starting day.

Establish picture of Hanumaan infront of you on sadhana night.

Do tilak of vermillion on the forehead, light a lamp of oil and place 11 saabut udad in front of you.

After that chant 11 rosary of the following mantra.

Om Hanumante Vyaapaar Vruddhim Barkat kuru me swaha

After mantra chanting is over, pray lord hanuman to vanish troubles and for the growth in business.

Black saabut udad should be placed in worship place of business place.

Continue for 11 days

After 11 days, collect all saabut udad and drop in river.

HANUMAAN CHALISA KA EK VISHISHTH PRAYOG

"Sankat Kate Mite Sab Peera Jo Sumire Hanumant Balbeera"

Stotra holds an important place in both Indian Aagam and Nigam. Normally, description of Stotra is that Stotra is collection of special words through which prayer of Isht is done. Actually there are many types of Stotra but in Tantra, these Stotras are not taken lightly. Tantra is the field where at each and every step one comes across infinite secrets. May be it is Shiv Tandav Stotra or Siddh Kunjika, all of them contains many hidden procedures and sadhnas embedded in them. Many Stotra, Armour (Kavach), Sahastranaam (1000 names), Khadagmaal have been uttered by Aadi Shiv or Shakti which are self-accomplished and these Stotra are part and parcel of various Tantra. Besides this, Many Mahasiddhs also did sadhna of their Isht, manifested them and thereafter created Stotra and got blessings from their Isht so that Stotra can be used for welfare of common people. Such Stotra are certainly providers of all accomplishments. Above lines are of Hanuman Chalisa. In today's era, hardly you will find a person who is

unaware of Hanuman Chalisa. Actually Hanuman Chalisa is one special sadhna procedure in which power of many siddhs works, this Chalisa, group of various Sabar Mantra is full of infinite powers. Well , In today's era one can find Chalisa related to each god and goddess but if seen from Tantra point of view , they are nothing more than poetry since they have neither the consciousness not the power of Isht. Besides this, they do not bear imprints of any Mahasiddh too. There is no difference between such Chalisa and other works of poetry. Sadhak can himself decide what and how one can achieve anything by reading them. Certainly, reading any Chalisa other than Aadi Chalisa i.e. Hanuman Chalisa is incapable of providing accomplishments.

If it is read carefully and minutely then it is Sabar prayer of Aadinath form of Lord Shiva, basic form of Hanuman. If sadhak tries to understand the abstract meaning of phrase like Kaanan Kundal, Sankar Suvan, Tumharo Mantra, Aapan Tej, Gurudev Kee Nai, Asht Siddhi etc., many types of secrets can be unveiled.

Many years before, in the preliminary days of my entry into sadhna world, I met one sadhak named Jigyesh of Junagarh. He had keen interest in Yog and Tantric sadhna from childhood. He had special interest in discovering about siddhs of Girnar region. He possessed very good knowledge about vidyas like Sammohan and Vashikaran. His Isht was Hanuman. During discussion relating to Tantra, first of all he provided me the special information about Hanuman Chalisa. He told that

" Jo Sat Baat Paath Kare Koi , Chhothee Banee Mahasukh Hoi "

The person, who reads Hanuman Chalisa 100 times, gets freedom from bondage and he attains great pleasure. But it is not so much easy. Its meaning in materialistic terms may be anything but from spiritual point of view, bondage means both internal and physical bondage. And Great pleasure means attaining

state of peaceful mind. But for attaining any state, it is necessary for sadhak to do definite procedure because one definite procedure can make possible the attainment of definite result.

He told me one prayog related to Hanuman Chalisa, which is being mentioned here. But before it, some necessary facts relating to it are worth knowing.
This prayog of Hanuman Chalisa can be done in both the manner – Sakaam (for fulfilment of desire) and Nishkaam (without any desire). Therefore, before doing anushthan by sadhak, taking resolution of his wish is necessary. If the prayog is being done for fulfilment of special desire then sadhak should take Sankalp (resolution) that " I , sadhak named "your name" is doing this prayog for this ……..work , Lord Hanuman provide me Shakti and your blessing for success in it" . If sadhak is doing prayog in Nishkaam manner then it is not necessary to take Sankalp. If sadhak is doing sadhna in Sakaam manner then sadhak should establish picture of Lord Hanuman in Veer Bhaav in front of him i.e. in which he has picked up mountain or in which he is destroying asurs.But if one has to do Nishkaam sadhna then sadhak should establish picture of Hanuman in servant form in front of him i.e. in which he is in state of meditation or in which he is sitting near the feet of Lord Rama.

Sadhak should do this procedure all alone. If sadhak is doing this procedure in his room, then at the time of chanting no one should be present in room excluding him.

The fact that female sadhaks cannot do Hanuman Chalisa or sadhna is only a misconception. Any sadhika can do Hanuman sadhna or prayog.During menstrual cycle, this prayog or any sadhna cannot be done. Sadhak and sadhika should follow celibacy for total 3 days i.e. on the day of prayog, previous day and next day.

In Sakaam Upasana, dress will be red and in Nishkaam sadhna, saffron robe coloured dress will be used. Direction will be north in both the cases. Sadhak should offer Bhog of jaggary and boiled gram. Any fruit can be offered. Sadhak can light oil or ghee lamp. Sadhak should offer Aak (swallow-wart) flowers or red coloured flowers. Sadhak should do this prayog on any Tuesday night after 10:00 P.M. First of all, sadhak should take bath, wear dress and sit on red aasan. Sadhak should keep 100 flowers of Aak near himself. If it is not possible in any way then he should keep 100 flowers of red colour. Sadhak should then spread red cloth on Baajot in front of him and establish picture/yantra/idol of Hanuman Ji. After it, sadhak should light the lamp. Sadhak should do Guru Poojan, chant Guru Mantra and do normal Poojan of Hanuman Ji. After this, sadhak should recite “HAM” beej for some time and thereafter he should do Anulom, Vilom Pranayama. After Pranayama, sadhak should take water in his hand and take Sankalp and speak out his desire. After it sadhak should do Ram Raksha Stotra or chant “RAAM RAAMAAY NAMAH” as per his capacity. After Jap, sadhak should do dhayan of Hanuman Ji assuming him to be present in three nerves viz. Ida, Pingla and Sushumana and start recitation of Hanuman Chalisa. Sadhak should have to recite it 100 times in that night. After each recitation, offer one flower to yantra/picture /idol of Hanuman Ji. In this manner, sadhak should offer 100 flowers after 100 recitations. After 100 recitations sadhak should recite “HAM” beej for some time and offer mantra Jap in feet of Hanuman Ji.

In this manner, this prayog is completed. On the next day, sadhak should immerse the flowers. Besides this, sadhak also told me some important prayogs related to Hanuman Chalisa which has been experienced multiple times. Efforts will be made to put forward those prayogs so that entire sadhak community can benefit from it.

~~~~~~

“संकट कटे मिटे सब पीरा जो सुमिरे हनुमंत बलबीरा”

भारतीय आगम तथा निगम में स्तोत्र का एक महत्वपूर्ण स्थान है. सामान्य रूप से स्तोत्र की व्याख्या कुछ इस प्रकार की जा सकती है की स्तोत्र विशेष शब्दों का समूह है जिसके माध्यम से इष्ट की अभ्यर्थना की जाती है. वस्तुतः स्तोत्र के भी कई कई प्रकार है लेकिन तंत्र में इन स्तोत्र को सहजता से नहीं लिया जा सकता है, तंत्र वह क्षेत्र है जहां पर पग पग पर अनन्त रहस्य बिखरे पड़े है. चाहे वह शिवतांडव स्तोत्र हो या सिद्ध कुंजिका, सभी अपने आप में कई कई गोपनीय प्रक्रिया तथा साधनाओ को अपने आप में समाहित किये हुवे है. कई स्तोत्र, कवच, सहस्त्रनाम, खडगमाल आदि शिव या शक्ति से श्रीमुख से उच्चारित हुवे है जो की स्वयं सिद्ध है और यही स्तोत्र विभिन्न तंत्र के भाग है. इसके अलावा कई महासिद्धो ने भी अपने इष्ट की साधना कर उनको प्रत्यक्ष किया था तथा तदोपरांत स्तोत्र की रचना कर उन स्तोत्र की जनमानस के कल्याण सिद्धि हेतु अपने इष्ट से वरदान प्राप्त किया था. ऐसे स्तोत्र निश्चय ही सर्व सिद्धि प्रदाता होते है. उपरोक्त पंक्तियाँ हनुमान चालीसा की है. हनुमान चालीसा के बारे में आज के युग में कोन व्यक्ति अनजान है. वस्तुतः हनुमान चालीसा एक विलक्षण साधना क्रम है जिसमे कई सिद्धो की शक्ति कार्य करती है, विविध साबर मंत्रो के समूह सम यह चालीसा अनंत शक्तियों से सम्प्पन है. खेर, देखा देखि में आज के युग में हर देवी देवता से सबंधित चालीसा प्राप्त हो जाती है लेकिन तंत्र की द्रष्टि से देखे तो वह मात्र काव्य से ज्यादा कुछ नहीं कहा जा सकता है क्यों की न ही उसमे कोई स्वयं चेतना है और ना ही इष्ट शक्ति. इसके अलावा उसमे कोई महासिद्ध का कोई प्रभाव आदि भी नहीं है. एसी चालीसा और दूसरे काव्यों में कोई अन्तर नहीं है उसका पठन करने पर साधक को क्या और केसे कोई उपलब्धि हो सकती है इसका निर्णय साधक खुद ही कर सकता है. निश्चय ही आदी चालीसा अर्थात हनुमान चालीसा के अलावा कोई भी चालीसा का पठन सिद्धि प्रदान करने में असमर्थ है.

अगर सूक्ष्म रूप से अध्ययन किया जाए तो हनुमान जी के मूल शिव स्वरुप के आदिनाथ स्वरुप की ही साबर अभ्यर्थना है, कानन कुंडल, संकर सुवन, तुम्हारो मन्त्र, आपन तेज, गुरुदेव की नाइ, अष्ट सिद्धि आदि विविध शब्द के बारे में साधक खुद ही अध्ययन कर विविध पदों के गूढार्थ समजने की कोशिश करे तो कई प्रकार के रहस्य साधक के सामने उजागर हो सकते है.
~~~~~~

कई वर्षों पूर्व साधना जगत में प्रवेश के प्रारंभिक दिनों में ही जूनागढ़ के एक साधक से मुलाकात हुई, जिनका नाम जिज्ञेश था. योग और तांत्रिक साधना में बचपन से ही काफी रुजान था उनका. गिरनार क्षेत्र के सिद्धो के सबंध में खोज में उनकी विशेष रूचि थी. सम्मोहन तथा वशीकरण आदि विद्याओ के बारे में काफी अच्छा ज्ञान रखते थे. उनके इष्ट हनुमान थे. तंत्र सबंधित चर्चा में सर्व प्रथम उन्होंने हनुमान चालीसा के बारे में विशेष जानकारी प्रदान की थी. उन्होंने बताया की

“जो सत् बार पाठ करे कोई, छूटही बंदी महासुख होई”

जो हनुमान चालीसा का 100 बार पाठ कर लेता है तो बंधन से मुक्त होता है तथा महासुख को प्राप्त होता है. लेकिन यह सहज ही संभव नहीं होता है, भौतिक अर्थ इसका भले ही कुछ और हो लेकिन आध्यात्मिक रूप से यहाँ पर बंधन का अर्थ आतंरिक तथा शारीरिक दोनों बंधन से है. तथा महासुख अर्थात शांत चित की प्राप्ति होना है. लेकिन कोई भी स्थिति की प्राप्ति के लिए साधक को एक निश्चित प्रक्रिया को करना अनिवार्य है क्यों की एक निश्चित प्रक्रिया ही एक निश्चित परिणाम की प्राप्ति को संभव बना सकती है.

हनुमान चालीसा से सबंधित एक प्रयोग उन्होंने ही मुझे बताया था, उसका उल्लेख यहाँ पर किया जा रहा है. लेकिन उससे पहले इससे सबंधित कुछ अनिवार्य तथ्य भी जानने योग्य है.
हनुमान चालीसा का यह प्रयोग सकाम प्रयोग तथा निष्काम प्रकार दोनों रूप में होता है. इस लिए साधक को अनुष्ठान करने से पूर्व अपनी कामना का संकल्प लेना आवश्यक है. अगर कोई विशेष इच्छा के लिए प्रयोग किया जा रहा हो तो साधक को संकल्प लेना चाहिए की “ में अमुक नाम का साधक यह प्रयोग _____कार्य के लिए कर रहा हू, भगवान हनुमान मुझे इस हेतु सफलता के लिए शक्ति तथा आशीर्वाद प्रदान करे. ” अगर साधक निष्काम भाव से यह प्रयोग कर रहा है तो संकल्प लेना आवश्यक नहीं है.
साधक अगर सकाम रूप से साधना कर रहा है तो साधक को अपने सामने भगवान हनुमान का वीर भाव से युक्त चित्र स्थापित करना चाहिए. अर्थात जिसमे वह पहाड़ को उठा कर ले जा रहे हो या असुरों का नाश कर रहे हो. लेकिन अगर निष्काम साधना करनी हो तो साधक को अपने सामने दास भाव युक्त हनुमान का चित्र स्थापित करना चाहिए अर्थात जिसमे वह ध्यान मग्न हो या फिर श्रीराम के चरणों में बैठे हुवे हो.

साधक को यह क्रम एकांत में करना चाहिए, अगर साधक अपने कमरे में यह क्रम कर रहा हो तो जाप के समय उसके साथ कोई और दूसरा व्यक्ति नहीं होना चाहिए.

स्त्री साधिका हनुमान चालीसा या साधना नहीं कर सकती यह मात्र मिथ्या धारणा है. कोई भी साधिका हनुमान साधना या प्रयोग सम्प्पन कर सकती है. रजस्वला समय में यह प्रयोग या कोई साधना नहीं की जा सकती है. साधक साधिकाओ को यह प्रयोग करने से एक दिन पूर्व, प्रयोग के दिन तथा प्रयोग के दूसरे दिन अर्थात कुल 3 दिन ब्रहमचर्य पालन करना चाहिए.

सकाम उपासना में वस्त्र लाल रहे निष्काम में भगवे रंग के वस्त्रों का प्रयोग होता है. दोनों ही कार्य में दिशा उत्तर रहे. साधक को भोग में गुड तथा उबले हुवे चने अर्पित करने चाहिए. कोई भी फल अर्पित किया जा सकता है. साधक दीपक तेल या घी का लगा सकता है. साधक को आक के पुष्प या लाल रंग के पुष्प समर्पित करने चाहिए.
यह प्रयोग साधक किसी भी मंगलवार की रात्रि को करे तथा समय १० बजे के बाद का रहे. सर्व प्रथम साधक स्नान आदि से निवृत हो कर वस्त्र धारण कर के लाल आसान पर बैठ जाये. साधक अपने पास ही आक के १०० पुष्प रखले. अगर किसी भी तरह से यह संभव न हो तो साधक कोई भी लाल रंग के १०० पुष्प अपने पास रख ले. अपने सामने किसी बाजोट पर या पूजा स्थान में लाल वस्त्र बिछा कर उस पर हनुमानजी का चित्र या यन्त्र या विग्रह को स्थापित करे. उसके बाद दीपक जलाये. साधक गुरु पूजन गुरु मंत्र का जाप कर हनुमानजी का सामान्य पूजन करे. इस क्रिया के बाद साधक 'हं' बीज का उच्चारण कुछ देर करे तथा उसके बाद अनुलोम विलोम प्राणायाम करे. प्राणायाम के बाद साधक हाथ में जल ले कर संकल्प करे तथा अपनी मनोकामना बोले. इसके बाद साधक राम रक्षा स्तोत्र या 'रां रामाय नमः' का यथा संभव जाप करे. जाप के बाद साधक अपनी तीनों नाडी अर्थात इडा पिंगला तथा सुषुम्ना में श्री हनुमानजी को स्थापित मान कर उनका ध्यान करे. तथा हनुमान चालीसा का जाप शुरू कर दे. साधक को उसी रात्रि में १०० बार पाठ करना है. हर एक बार पाठ पूर्ण होने पर एक पुष्प हनुमानजी के यंत्र/चित्र/विग्रह को समर्पित करे. इस प्रकार १०० बार पाठ करने पर १०० पुष्प समर्पित करने चाहिए. १०० पाठ पुरे होने पर साधक वापस 'हं' बीज का थोड़ी देर उच्चारण करे तथा जाप को हनुमानजी के चरणों में समर्पित कर दे.
इस प्रकार यह प्रयोग पूर्ण होता है. साधक दूसरे दिन पुष्प का विसर्जन कर दे. इसके अलावा भी हनुमान चालीसा से सबंधित कई महत्वपूर्ण प्रयोग मुझे उस साधक ने बताये थे जो की कई बार

अनुभूत है, वो प्रयोग भी समय समय पर आप के मध्य रखने का प्रयास रहेगा जिससे की समस्त साधकगण लाभान्वित हो सके.

****NPRU****

Posted by Nikhil at 10:07 PM 6 comments:
Labels: SHRI HANUMANT EVAM SHRI RAAM SADHNA, SHRI HANUMANT SADHNA

TUESDAY, JANUARY 31, 2012

भगवान राम बिम्बात्मक दर्शन और एकीकरण साधना(BHAGWAN RAAM BIMBATMAK DARSHAN AUR EKIKARAN SADHNA)

रामादली सम्प्रदाय के बारे मे पहले ही साधूसाही के अंतर्गत परिचय दे दिया गया है. इस सम्प्रदाय की साधना गुप्त रूप से चलती है तथा विधान को गुप्त रखा गया है. भगवान राम से सबंधित साधनाए इसी लिए ज्यादातर उपलब्ध नहीं हो पाती है. इन साधनाओ मे श्रद्धा की खास आवश्यता होती है. साधक के लिए इसमें इष्ट से एकीकरण की भावना विशेष रूप से होनी चाहिए. भगवान राम की साधना भी अपने आप मे उच्चकोटि की है. वस्तुतः यह भगवान विष्णु के अवतार रहे है. हनुमान उपासको के लिए तो यह साधना वरदान स्वरुप ही है. क्यों की हनुमान साधना से पहले श्री राम सबंधित साधना करने पर भगवान हनुमान साधक पर प्रस्सन होते है. इस प्रकार कई द्रष्टिओ मे यह साधना उपयोगी है. जीवन मे आध्यात्मिक वृति लेन के लिए भी यह साधना सम्प्पन करनी चाहिए.

जिनके इष्ट राम है उनके लिए एक ऐसा ही विधान यहाँ पर दिया जा रहा है. यह पूर्ण रूप से सात्विक विधान है.

इसमें साधक को निम्न मंत्र की ५१ माला ११ दीन तक करनी चाहिए.

यह जाप तुलसी की माला से हो.

दिशा उत्तर या पूर्व हो

साधक सफ़ेद सूती वस्त्र तथा आसान का प्रयोग करे

साधक को यह साधना एसी जगह पर करनी चाहिए जहा पर साधना काल मे कोई और व्यक्ति प्रवेश न करे.

इस प्रयोग के साथ ही साथ साधक हनुमान का भी यथा योग्य ध्यान जाप पूजा करे तो उत्तम है.

इस साधना मे साधक को भूमिशयन, ब्रम्हचर्य का पालन, संभव हो उतना मौन तथा एक समय सात्विक भोजन का पालन करना चाहिए. इस साधना को किसी भी शुभ दिन से शुरू की जा सकती है. समय रात्रि मे १० बजे के बाद का रहे तथा साधक राम चिंतन मे ही लिन रहे. श्रद्धा और विश्वास के साथ की गई साधना मे साधक को अंतिम दिन भगवान श्री राम के बिम्बात्मक दर्शन होते है तथा मनोकामना पूर्ण होती है.

रां रामाय दर्शयामि नमः

POORN NIKHIL TATV YUKT SADASHIV TRIPURAARI SADHNA

जय सदगुरुदेव,

गुरुर्ब्रह्मा-गुरुर्विष्णु-गुरुर्देवो महेश्वरा-----

गुरुर्देवोमहेश्वर : .... अर्थात चाहे ब्रह्मा स्वरुप हों या विष्णु स्वरुप हों या महेश यानी महादेव के रूप में हों, गुरु को पर ब्रह्म माना गया है, वेद पुराणों, उपनिषद और प्रत्येक महान सदगुरुओं ने गुरु को आधार

माना है और सदैव उनका चिंतन केवल सामाजिक चेतना को जागृत कर पूरे समाज के स्तर को सुधारना ही है.
भाइयों बहनों गुरुदेव की संज्ञा शिव मानी गई है और शिव को ही सारी सृष्टि के, अर्थात आदि गुरु कहा है इसमें कोई दो मत नहीं की भगवान शिव ही सम्पूर्ण प्रकृति में गुरु रूप में विस्तारित हैं यही कारण है कि हमें गुरुदेव के भौतिक शरीर को त्यागने के बाद भी उनकी कमी महसूस नहीं होती विशेषकर उन शिष्यों को जिनने गुरुतत्व को समझा, जाना और उस तत्व को अपने भीतर समाहित किया है.
गुरु प्रत्येक पल अपने शिष्यों का ध्यान, उनका अध्यात्मिक पालन-पोषण करते रहते हैं बिना किसी अपेक्षा के. उन्हें तो बस किसी भी तरह अपने शिष्यों को उन्नति के शिखर तक पहुँचाना होता है, ठीक उसी तरह जिस तरह शिव प्रकृति में समस्त जीवों का पालन पोषण और संहार करते हैं.
भाइयों-बहनों मुझे बचपन से शिवजी अत्यंत प्रिय रहे हैं. उनकी उपासना करना, पूजन करना यहाँ तक कि उनकी हर तरह की छवि को निहारना मेरा मेरा अत्यंत प्रिय कार्य था, जब मुझे गुरु के सम्बन्ध में कुछ भी ज्ञान नहीं था और जब कोई मुझे कहता कि गुरु दीक्षा ले लो तो मेरा उत्तर होता था कि जब शिव ही पूरे संसार के गुरु हैं तो मै दीक्षा क्यों लूं ?
मै तो सदा से ही शिव जी की शिष्य और भक्त या पुत्री हूं...
है ना आश्चर्य...... कि हम कभी अचानक ही उस गूढ़ रहस्य को सहजता से कह जाते हैं जिसे समझने में अनेक संत ऋषि जन अपना पूरा जीवन लगा देते हैं. और यही तो है वो गुरु ज्ञान, गुरु तत्व जिसे गुरु कि ही कृपा से किसी भाग्यशाली को प्राप्त होता है.......
यहाँ मै अपने बारे में कोई रहस्योदघाटन नहीं कर रही हूँ बल्कि शिव और गुरु कि समानता के बारे में चर्चा कर रही थी.
भाइयों-बहनों आप कही से भी किसी भी द्रष्टिकोण से देखें तो गुरु को शिव के समरूप ही पाओगे...... और कहा भी जाता है कि शिव और गुरु में भेद करने वाला अति अधम होता है.......
क्योंकि महादेव के भी रूठने पर गुरु आपको बचा सकते हैं, ईश्वर और आप के बीच आ जायेंगे किन्तु गुरु रूठे त्रैलोक भी भी आपका ठौर नहीं है, ये ब्रह्मसत्य है........
आप स्वयं ही विश्लेषण करिये ना कि गुरु कि यानी जो सच में गुरु हैं ...... सॉरी ......
कहने का तात्पर्य ये है कि यदि गुरु तत्व को हम समझे तो हम पाएंगे कि भगवान शिव के ही तत्व गुरु में समाहित हैं, अर्थात चूँकि शिव सदैव अपने मूल स्वरुप में जन सामान्य के बीच नहीं रह सकते इसलिए उनहोंने गुरु सत्ता को जन्म दिया ताकि वे ही गुरु रूप में रहकर समाज को मार्गदर्शन दे सकें और समाज को व्यवस्थितरूप से संचालित कर सकें.......
भाइयों-बहनों मैंने अपने जीवन काल में अनेकों बार भगवान शिव कि कृपा प्राप्त कि है...... अरे भाई मतलब साधना कर सफलता पाई है.......
सन २००१ में मैंने रूद्र साधना संपन्न कर एक विशेस गुटिका तैयार की थी, सदगुरुदेव के के आदेशानुसार...... चूँकि मैंने आपको मैंने पहले भी बताया है की मेरे जीवन आधार, मेरे गुरुवर ही हैं और वे

जानते थे आने वाले समय में इस गुटिका की आवश्यकता इन लोगों को पड़ेगी......... किन्तु सच तो ये है की शिव् साधना करते-करते कुछ अंश शिव गुणों का आ ही जाता है और वही हुआ भी,उस गुटिका का निर्माण मैंने बहुत परिश्रम से अपने पति के आरोग्य और अकाल दुर्घटना को रोकने हेतु किया था किन्तु....

मेरे पति के एक मित्र की बहन अचानक तंत्र प्रयोग से पीड़ित हुई और मामला इतना बिगड गया की उनकी जान पर बन आई, उसी मित्र का एक मित्र भोपाल में ही रहता था,उन्हीं के द्वारा खबर आई की स्तिथि बहुत बिगड गयी है भैया अब आप ही कुछ कर सकते हैं, अब मेरे पतिदेव ने सोचा की अब सदगुरुदेव ही कुछ उपाय बता सकते हैं, एक अच्छी बात ये थी की सचिन भाई यानि वो मित्र भी गुरुदेवजी से ही दीक्षित हैं, अतः बार-बार इनसे प्रार्थना करने लगे की भैया आप ही कुछ कर सकते हैं.
और तब मैंने इनके कहने पर वही गुटिका उठा कर उन भाईजी को देकर कहा की ये गुरुदेव और भोलेनाथ की कृपा स्वरुप है अतः बस उन पर ही विश्वास करके पहना दीजे, आगे निखिल-इच्छा..... और भाइयों आप में से कोई भी कभी भी इस बात का प्रमाण ले सकता है, उस गुटिका के चमत्कार.......
जी हाँ वो चमत्कार ही था की गुरुशिव सायुज्यगुटिका ने ना उन बहन को तंत्र बाधा से मुक्त कियाअपितु पूर्ण आरोग्य भी प्रदान किया, मै अपनी उस सफलता पर भगवान भोलेनाथ और सदगुरुदेव की ऋणी हूं की उससे किसी के प्राण बच पाए.......
हालाँकि उस गुटिका के अभाव में मुझे और मेरे परिवार को काफी तकलीफ उठानी पड़ी किन्तु मुझे खुशी है, की इससे किसी को नया जीवन मिला.........
मेरे स्नेही स्वजन इस घटना को बताने से तात्पर्य ये है कि हमारा मन्त्र जप हमारी साधना कभी भी विफल नहीं जाती, चाहे अनुभव हों या ना हों, हमें कोई सफलता के प्रमाण मिले या ना मिलें........
हम इस बात पर थे कि गुरु और शिव एक ही स्वरुप होते हैं........ अब कुछ विशेषताओं पर चर्चा करते हैं.......
जैसे कि ----- शिव सदैव जीव मात्र के कल्याण में निमग्न रहते हैं, गुरुदेव भी सदैव अपने शिष्यों के के उत्थान में ही विचारमग्न रहते हैं............
शिव अत्यंत भोले और अति सहज भव से प्रसन्न होने वाले हैं और गुरुदेव भी....
शिव का प्रयास होता है कि व्यक्ति यानि साधक मृत्यु से अमरत्व कि ओर गमन करे..........और गुरु भी शिष्य को अँधेरे से प्रकाश की ओर ले जाने में प्रयासरत रहते हैं .....
भोलेनाथ इतने भोले हैं सरल और सहज विधि से यानि ह्रदय से ही व्यक्ति की पूजा से प्रसन्न होकर वरदान पे वरदान दे डालते हैं....... और गुरुदेव भी शिष्य की मनोकामना समझ कर तथास्तु कह देते हैं कभी प्रत्यक्ष और कभी अप्रत्यक्ष रूप से शिष्यों की प्रत्येक कामना को पूर्ण करते ही हैं..... ये मेरा अनुभव सदैव रहा हैं.......**पूर्णता,कलाओं की प्राप्ति,जीवन में प्रखरता,लक्ष्य की सहज प्राप्ति,तंत्र कवच का निर्माण,मनोकामना सिद्धि,अघोर साधनाओं में सफलता,तंत्र साधनाओं के रहस्यों का उदघाटन** आदि सहज ही हो जाता है इस साधना से.वो भी तब जब महाशिवरात्रि जैसे महा पर्व पर मुहूर्तों के सिरमौर इस

दिवस साधनाओं को संपन्न कर लिया जाये.

भाइयों-बहनों बस एक बात है की गुरु और शिव दोनों एक ही संज्ञा है दोनों का एक ही स्वरुप है, भगवान शिव से ही तंत्र का प्रदुर्भाव हुआ है..... यदि तंत्र में पूर्णता पानी है तो शिव साधना अति आवश्यक है ही....... किन्तु यदि गुरुदेव के निखिल स्वरुप को शिव् के साथ सम्मलित कर साधना की जाये तो......तंत्र के विशेष आयामों को छू सकते हैं, और अपनी मनोकामनाओं को ना केवल एक आधार दे सकते हैं अपितु उन्हें पूर्ण करने में सफल भी हो सकते हैं........

तो भाइयों बहनों निखिल तत्व को अपने में पूर्ण समाहित किये **निखिल शिव सायुज्य साधना** सदगुरुदेव का एक वरदान है हम सबके लिए...... मै स्वयं प्रत्येक वर्ष इस साधना को करती रही हूँ अपने परिवार के साथ जिसकी अनुकूलता पूरे वर्ष भर मुझे प्राप्त होती रहती है.......

हाँ तो आप सब भी तैयार हो जाइये इस साधना को करने के लिए........ और अपने जीवन और भाग्य को अपने अनुकूल बनाने हेतु, अपने सपनों को साकार करने के साथ ही साधना के विभिन्न आयामों को पाने के लिए...... और यही हमारा उद्देश्य भी है कर्म भी ....है ना .....

महा शिव रात्रि वर्ष की महा निशा में गिनी जाती है, और ऐसा संभव ही नहीं की इस दिन साधना की जाये और अनुकूलता प्राप्त ना हो और वो भी तब जब तत्वमसि क्रिया का योग हो इस साधना में...... सदगुरुदेव ने शिव साधना हेतु हम लोगो को तत्वमसि क्रिया के साथ शिव पूजन और आराधना भी करवाई है और ये एक क्रिया है, और तंत्र भी एक क्रिया ही है, इस क्रिया से ही संपन्न ये प्रयोग है.......

विशिष्ठ मन्त्रों से युक्त ये विधान अद्भुत भूमिका का निर्वाह करता है साधक के जीवन मे सुख,सौभाग्य और सफलता प्राप्ति हेतु. आप इस विधान को महाशिवरात्रि की प्रातः और रात्री दोनों ही समय कर सकते हैं या फिर मात्र प्रातः ही करे या मध्य रात्रि मे. सामग्री के लिए शिव पूजन मे प्रयुक्त सामग्री की व्यवस्था कर लें और वस्त्र तथा आसन श्वेत या पीत होने चाहिए.दिशा उत्तर होगी.दीपक तिल के तेल या घृत का प्रज्वलित होगा.नैवेद्य मे खीर का भोग ज्यादा उचित रहता है. एक मुट्ठी काले तिल को पहले से मिटटी के एक पात्र मे रख दें. पूजन के लिए तालाब या बगीचे की मिटटी से बना हुआ शिवलिंग या पारद शिवलिंग लें. अब तक हम ये तो समझ ही गए हैं की प्रत्येक साधना के पूर्व,गुरु पूजन,गणपति,भैरव पूजन और गुरु मंत्र का जप अनिवार्य है. अतः इस बात का ध्यान अवश्य रखें की मूल साधना क्रम के पहले उपरोक्त क्रियाएँ अवश्य संपन्न कर लेनी चाहिए और सदगुरुदेव के श्री चरणों मे सफलता प्राप्ति की कामना और साधना संपन्न करने की अनुमति की प्रार्थना करनी चाहिए.

महाशिवरात्रि को अपने द्वारा चयनित समय मे उपरोक्त क्रम कर सामने एक ताम्र पात्र मे कुमकुम से स्वास्तिक का निर्माण कर शिवलिंग का स्थापन कर देना चाहिए. ये पात्र बाजोट पर बिछे हुए सफ़ेद वस्त्र पर स्थापित किया जायेगा. अब दाहिने हाथ मे जल और अक्षत के २-४ दाने लेकर संकल्प का उच्चारण करें.

मम (स्वयं का नाम लें) समस्त दुरित क्षयद्वार श्री परमेश्वर प्रीत्यर्त्तम्शुभे शोभने मुहूर्ते आद्यब्रह्मणः द्वितीयपरार्धेश्वेत वराहकल्पे वैवस्वत मन्वँतरे कलियुगे प्रथमपादे जंबू द्वीपे भारतवर्षे भरतखण्डे अस्मिन् वर्तमाने व्यवहारिक - नामेन संवत्सरे उत्तरायने शिशिर ऋतौ फाल्गुन मासे कृष्ण पक्षे चतुर्धश्याम् सुभतितौ - वासर युक्तायाम् शुभनक्षत्र शुभयोग शुभकरण एवं गुण विशेषण विशिष्टायां शुभतिथौ शिवरात्रि पुण्यकाले श्री परमेश्वर प्रीत्यर्थं मम क्षेमस्थैर्य विजयायुरारोग्यैश्वर्यापि वृद्ध्यर्थं धर्मार्थ काममोक्ष चतुर्विध फलपुरुषार्थ सिद्ध्यर्थं इष्ट काम्यार्थ सिद्ध्यर्थं मम समस्त दुर्भाग्य शान्त्यर्थं समस्त शुभ सौभाग्य प्राप्त्यर्थं श्री साम्ब सदाशिव प्रसादेन सकुटुम्बस्य घ्यान वैराग्य मोक्ष प्राप्त्यर्त्तम् वर्षे वर्षे प्रयुक्त महाशिवरात्रि पुण्यकाले सदगुरुदेव तत्व सहिताय पूर्ण तत्वमसि क्रिया युक्तेन साम्ब सदाशिवाय पूजाम् करिष्ये॥

जल को अपने सामने रखे किसी अलग पात्र मे डाल दें.

हाथ मे पुष्प लेकर भगवान सदाशिव का ध्यान करें.

आपातालनभःस्थलान्तभुवनब्रह्माण्डमाविस्फुर-
ज्ज्योतिः स्फाटिकलिङ्गमौलिविलसत् पूर्णेन्दुवान्तामृतैः ।
अस्तोकाप्लुतमेकमीशमनिशं रुद्रानुवाकाञ्जपन्
ध्यायेदीप्सित सिद्धयेऽद्रुतपदं विप्रोऽभिषिञ्चेच्छिवम् ॥

मंत्र का उच्चारण करते हुए पुष्प को शिवलिंग पर छोड़ दें. इसके बाद पुनः हाथ मे पुष्प लेकर अवाहानी मुद्रा से उनका आवाहन करते हुए निम्न मन्त्रों का उच्चारण करें.

चन्द्र कोठि प्रतीकाशं त्रिनेत्रं चन्द्र भूषणम् ।
आपिङ्गळ जटजूटं रत्न मौळि विराजितम् ॥
नीलग्रीवं उताराङ्गं तारहारोप शोभितम् ।
वरदाभय हस्तञ्च हरिणञ्च परश्वतम् ॥
ततानं नाग वलयं केयूराङ्गत मुद्रकम् ।
व्याघ्र चर्म परीतानं रत्न सिंहासन स्थितम् ॥
आगच्छ देवदेवेश मर्त्यलोक हितेच्चया ।
पूजयामि विदानेन प्रसन्नः सुमुखो भव ॥

भगवती आद्य शक्ति सहिताय सर्व तत्व मूल श्री मन्न्गुरु सदाशिव आवाहयामि ॥

पुष्प को पुनः शिवलिंग पर छोड़ दें. अब एक पूर्ण पुष्प लेकर भगवान को आसन प्रदान करें और पुष्प को शिवलिंग पर रख दें.

पादासनं कुरु प्राघ्य निर्मलं स्वर्ण निर्मितम् ।
भूषितं विवितैः रत्नैः कुरु त्वं पादुकासनम् ॥

सर्व तत्व मूल श्री गुरु तत्व युक्त आद्य शक्ति उमा महेश्वराभ्याम नमः । रत्नासनं समर्पयामि ॥

गङ्गादि सर्व तीर्थेभ्यः मया प्रार्त्तनयाहृतम्. ।
तोयम् ऐतत् सुकस्पर्शम् पाद्यार्थम् प्रदिगृह्यताम् ॥

सर्व तत्व मूल श्री गुरु तत्व युक्त साम्ब सदाशिवाय नमः | पाद्यं समर्पयामि ॥
आचमनी के द्वारा शिवलिंग पर जल उतार कर सामने रखे पात्र मे डाल दें.

गन्धोदकेन पुष्पेण चन्दनेन सुगन्धिना ।
अर्घ्यं कृहाण देवेश भक्तिं मे ह्यचलां कुरु ॥
सर्व तत्व मूल श्री गुरु तत्व युक्त साम्ब सदाशिवाय नमः | अर्घ्यं समर्पयामि ॥
अब पुनः हाथ मे चन्दन मिश्रित जल लेकर पात्र मे जल समर्पित करें.

कर्पूरोशीर सुरभि शीतळं विमलं जलम् ।
गङ्गायास्तु समानीतं गृहाणाचमणीयकम् ॥
सर्व तत्व मूल श्री गुरु तत्व युक्त साम्ब सदाशिवाय नमः | आचमनीयं समर्पयामि ॥
पुनः तीन आचमनी जल लेकर पात्र मे समर्पित करे.

रसोसि रस्य वर्गेषु सुक रूपोसि शङ्कर ।
मधुपर्कं जगन्नाथ दास्ये तुभ्यं महेश्वर ॥
सर्व तत्व मूल श्री गुरु तत्व युक्त साम्ब सदाशिवाय नमः | मधुपर्कं समर्पयामि ॥
अब शिवलिंग पर मधुपर्क समर्पित करें.

पयोदधि कृतञ्चैव मधुशर्करया समम् ।
पञ्चामृतेन स्नपनं कारये त्वां जगत्पते ॥
सर्व तत्व मूल श्री गुरु तत्व युक्त साम्ब सदाशिवाय नमः | पञ्चामृत स्नानं समर्पयामि ॥
पंचामृत अर्पित करें.

मन्धाकिनियाः समानीतं हेमांबोरुह वासितम् ।
स्नानाय ते मया भक्त्या नीरं स्वीकृयतां विभो ॥
सर्व तत्व मूल श्री गुरु तत्व युक्त साम्ब सदाशिवाय नमः | शुद्दोदक स्नानम् समर्पयामि ।
स्नानानन्तरं आचमनीयं समर्पयामि ॥
शुद्ध जल से धीरे धीरे स्नान करवाएं और पुनःआचमन हेतु जल दें. इसके बाद शिवलिंग को बाजोट पर किसी अन्य ताम्र पात्र मे **मैथुन चक्र** बनाकर पूर्ण श्रद्धाभाव के साथ स्थापित करें.

वस्त्रं सूक्ष्मं तुकूलेच देवानामपि दुर्लभम् ।
गृहाण त्वम् उमाकान्त प्रसन्नो भव सर्वता ॥
सर्व तत्व मूल श्री गुरु तत्व युक्त साम्ब सदाशिवाय नमः | वस्त्रं समर्पयामि ॥
मंत्र का उच्चारण करते हुए वस्त्र अर्पित करें.

यज्ञोपवीतं सहजं ब्रह्मणा निर्मितं पुरा ।
आयुष्यं भव वर्चस्यं उपवीतं गृहाण भो ॥
सर्व तत्व मूल श्री गुरु तत्व युक्त साम्ब सदाशिवाय नमः | यज्ञोपवीतं समर्पयामि ॥
यज्ञोपवीत अर्पित करें.

श्रीकण्ठं चन्दनं दिव्यं गन्धाढ्यं सुमनोहरम् ।
विलेपनं सुरश्रेष्ट मत्दत्तम् प्रति गृह्यताम् ॥
सर्व तत्व मूल श्री गुरु तत्व युक्त साम्ब सदाशिवाय नमः | गन्धं समर्पयामि ॥
चन्दन का लेप लगाएं.

अक्षदान् चन्द्र वर्णापान् शालेयान् सदिलान् शुभान् ।
अलञ्कारार्थमानीदान् धारयस्य महाप्रभो ॥
सर्व तत्व मूल श्री गुरु तत्व युक्त साम्ब सदाशिवाय नमः । अक्षतान् समर्पयामि ॥
अक्षत अर्पित करें.

माल्यातीनि सुगन्धीनि मलद्यातीनि वै प्रभो ।
मयाहृदानि पुष्पाणि पूजार्थं तव शञ्कर ॥
सर्व तत्व मूल श्री गुरु तत्व युक्त साम्ब सदाशिवाय नमः । पुष्पमालां समर्पयामि ॥
पुष्पमाला अर्पित करें. इसके बाद चन्दन मिश्रित अक्षत और पुष्प अर्पित करते हुए भगवान का अंग्पूजन करें.मंत्र बोलते जाएँ और सामग्री अर्पित करते जाएँ शिवलिंग पर.

॥ अङ्ग पूजन ॥

शिवाय नमः । पादौ पूजयामि ।
शर्वाय नमः । कुल्पौ पूजयामि ।
रुद्राय नमः । जानुनी पूजयामि ।
ईशानाय नमः । जङ्घे पूजयामि ।
परमात्मने नमः । ऊरू पूजयामि ।
हराय नमः । जघनं पूजयामि ।
ईश्वराय नमः । गुह्यं पूजयामि ।

स्वर्ण रेतसे नमः । कटिं पूजयामि ।
महेश्वराय नमः । नाभिं पूजयामि ।
परमेश्वराय नमः । उदरं पूजयामि ।
स्फटिकाभरणाय नमः । वक्षस्थलं पूजयामि ।
त्रिपुरहन्त्रे नमः । भाहून् पूजयामि ।
सर्वास्त्र धारिणे नमः । हस्तान् पूजयामि ।
नीलकण्ठाय नमः । कण्ठं पूजयामि ।
वाचस्पतये नमः । मुखं पूजयामि ।
त्र्यम्बकाय नमः । नेत्राणि पूजयामि ।
फाल चन्द्राय नमः । ललाटं पूजयामि ।
गङ्गाधराय नमः । जटामण्डलं पूजयामि ।
सदाशिवाय नमः । शिरः पूजयामि ।
सर्वेश्वराय नमः । सर्वाण्यङ्गानि पूजयामि ।

इसके बाद पुनः अक्षत और पुष्प अर्पित करते हुए निम्न रूपों की अभ्यर्थना करें.

ॐ निखिलेश्वरानन्दाय नमः
ॐ वृद्धाय नमः
ॐ संवृद्ध्वने नमः
ॐ अग्रियाय नमः
ॐ सिद्धाश्रम प्रमुखाय नमः
ॐ प्रथमाय नमः
ॐ मन्त्र मर्म ज्ञाताय नमः
ॐ आशवे नमः
ॐ सर्व तत्व व्यपिने नमः
ॐ अजिराय नमः
ॐ तपस्विन्यै नमः
ॐ शीघ्रियाय नमः
ॐ सिद्धि प्रदायै नमः
ॐ शीभ्याय नमः
ॐ पंचभूत वशंकराय नमः
ॐ ऊर्म्याय नमः
ॐ अवस्वन्याय नमः
ॐ स्रोतस्याय नमः

ॐ द्वीप्याय नमः ॥
ॐ ज्येष्ठाय नमः
ॐ कनिष्ठाय नमः
ॐ पूर्वजाय नमः
ॐ अपरजाय नमः
ॐ मध्यमाय नमः
ॐ अपगल्भाय नमः
ॐ जघन्याय नमः
ॐ बुध्नियाय नमः
ॐ सोभ्याय नमः
ॐ प्रतिसर्याय नमः
ॐ याम्याय नम:
ॐ क्षेम्याय नमः
ॐ उर्वर्याय नमः
ॐ खल्याय नमः
ॐ श्लोक्याय नमः
ॐ सर्व मंत्र तंत्र यन्त्र सिद्ध कराय नमः

इसके बाद पुनः पूजन करें.

वनस्पतिरसोद्भूतः गन्धाढ्यश्च मनोहरः ।
आग्रेयः सर्वदेवानां धूपोयं प्रतिगृह्यताम् ॥
सर्व तत्व मूल श्री गुरु तत्व युक्त साम्ब सदाशिवाय नमः | धूपं आघ्रापयामि ॥

धूप दिखाएँ.

साज्यं त्रिवर्त्ति सम्युक्तं वह्निना योजितं मया ।
दीपं गृहाण देवेश त्रैलोक्य तिमिरापहम् ॥
सर्व तत्व मूल श्री गुरु तत्व युक्त साम्ब सदाशिवाय नमः | दीपं दर्शयामि ॥

दीप प्रज्वलित करें.

नैवेद्यं गृह्यतां देव भक्तिं मे ह्यचलां कुरु ।
शिवेप्सितं वरं देहि परत्र च परां गतिम्.ह् ॥
सर्व तत्व मूल श्री गुरु तत्व युक्त साम्ब सदाशिवाय नमः | महानैवेद्यं समर्पयामि ॥

नैवेद्य अर्पित करें. नैवेद्य अर्पित करने के बाद निम्न मन्त्रों का उच्चारण करते हुए पांच आचमनी जल आचमन हेतु शिवलिंग पर से उतार कर सामने रखे पात्र मे डाल दें.

ॐ भूर्भुवस्सवः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य
धीमहि दियो यो नः प्रचोदयात्.ह् ।
ॐ देव सवितः प्रसूव सत्यं त्वर्थेन परिशिञ्चामि ।
अमृतोपस्तरणमसि ।
ॐ प्राणाय स्वाहा । ॐ अपानायस्वाहा । ॐ व्यानाय स्वाहा ।
ॐ उदानाय स्वाहा । ॐ समानाय स्वाहा ।
ॐ ब्रह्मणे स्वाहा । ब्रह्मणि म आत्मा अमृतत्वाय ।
अमृताभितानमसि ॥
नैवेद्यानन्तरं आचमनीयं समर्पयामि ।

आचमन के बाद पान अर्पित करें.

पूगीफल समायुक्तं नागवल्ली दळैर् युतम् ।
कर्पूर चूर्ण संयुक्तं तांबूलं प्रतिगृह्यताम् ॥
सर्व तत्व मूल श्री गुरु तत्व युक्त साम्ब सदाशिवाय नमः | कर्पूर तांबूलं समर्पयामि ॥

इसके बाद जिस पात्र मे काले तिल रखे हैं उसे अपने सामने भूमि पर एक मैथुन चक्र का कुमकुम से निर्माण कर उस चक्र पर स्थापित कर दें और रुद्राक्ष,हकीक या मूंगा माला से ११ माला निम्न मन्त्र की संपन्न करें.

ॐ हौं गुं शं निं शिवाय शिवतत्वाय निं शं गुं हौं फट् ॥

(**OM HOUM GUM SHAM NIM SHIVAAY SHIVTATVAAY NIM SHAM GUM HOUM PHAT**)

इसके बाद नीरांजन करें.

चक्षुर्तं सर्वलोकानां तिमिरस्य निवारणम् ।
आर्दिग्यं कल्पितं भक्त्या गृहाण परमेश्वर ॥
सर्व तत्व मूल श्री गुरु तत्व युक्त साम्ब सदाशिवाय नमः | कर्पूर नीराञ्जनं समर्पयामि ।
आचमनीयं समर्पयामि ॥

इसके बाद निम्न मन्त्र का उच्चारण करते हुए अपने स्थान पर खड़े खड़े आधी प्रदक्षिणा करें.

यानिकानि च पापानि जन्मान्तर कृतानि च ।
तानि तानि विनश्यन्ति प्रदक्षिण पते पते ॥
सर्व तत्व मूल श्री गुरु तत्व युक्त साम्ब सदाशिवाय नमः | प्रदक्षिणं समर्पयामि ॥

पुष्पाञ्जलिं प्रदास्यामि गृहाण करुणानिधे ।
नीलकण्ठ विरूपाक्ष वामार्द गिरिज प्रभो ॥
सर्व तत्व मूल श्री गुरु तत्व युक्त साम्ब सदाशिवाय नमः | पुष्पाञ्जलिं समर्पयामि ।

मन्त्रपुष्पं स्वर्णपुष्पं समर्पयामि ॥

मंत्र का उच्चारण करते हुए पुष्पांजलि अर्पित करें.याद रखिये आप इस सम्पूर्ण क्रम को भगवान शिव का सदगुरुदेव या स्वयं के गुरु रूप में ध्यान करते हुए करें. तभी आपको विलक्षणकारी अनुभूतियाँ होंगी.

मन्त्रहीनं क्रियाहीनं भक्तिहीनं सुरेश्वर।
यत्पूजितं मया देव परिपूर्णम् ततस्तु ते ॥

दोषों और त्रुटियों के लिए क्षमा प्रार्थना करें. इसके बाद निम्न मन्त्रों से प्रणाम करें.

वन्दे शम्भुमुमापतिं सुरगुरुं वन्दे जगत्कारणम्. वन्दे पन्नगभूषणं मृगधरं वन्दे पशूणाम् पतिम्।
वन्दे सूर्य शशांकवह्नि नयनं वन्दे मुकुन्द प्रियम् वन्दे भक्त जनाश्रयञ्च वरदं वन्दे शिवं शङ्करम् ॥
नमःशिवाभ्यां नव यौवनाभ्यां परस्पराश्लिष्ट वपुर् धराभ्याम्।
नगेन्द्र कन्या वृष केतनाभ्यां नमो नमःशङ्कर पार्वतीभ्याम् ॥

तत्पश्चात निम्न मन्त्रों का उच्चारण करते हुए अर्घ्यपात्र में अर्घ्य अर्पित करते जाएँ.

॥ अर्घ्य ॥

शुक्लाम्बरधरं विष्णुं शशिवर्णं चतुर्भुजं।
प्रसन्न वदनं ध्यायेत् सर्वविघ्नोपशान्तये ॥

ममोपात्त समस्त दुरित क्षयद्वार श्री परमेश्वर
प्रीत्यर्त्थं।
मया चरित शिवरात्रि व्रदपूजान्ते क्षीरार्घ्य प्रदानं
उपायदानञ्च करिष्ये ॥

नमो विश्वस्वरूपाय विश्वसृष्ट्यादि कारक।
गङ्गाधर नमस्तुभ्यं गृहाणार्घ्यं मयार्पितम् ॥
सर्व तत्व मूल श्री गुरु तत्व युक्त साम्ब सदाशिवाय नमः | इदमर्घ्यं इदमर्घ्यं इदमर्घ्यं ॥

नमःशिवाय शान्ताय सर्वपापहरायच।
शिवरात्रौ मया दत्तम् गृहाणार्घ्यं प्रसीत मे ॥
सर्व तत्व मूल श्री गुरु तत्व युक्त साम्ब सदाशिवाय नमः | इदमर्घ्यं इदमर्घ्यं इदमर्घ्यं ॥

दुःख दारिद्र्य पापैश्च दग्तोहं पार्वतीपते।
मां त्वं पाहि ,अहाभाहो गृहणार्घ्यं नमोस्तु ते ॥
सर्व तत्व मूल श्री गुरु तत्व युक्त साम्ब सदाशिवाय नमः | इदमर्घ्यं इदमर्घ्यं इदमर्घ्यं ॥

शिवाय शिवरूपाय भक्तानां शिवदायक ।
इदमर्घ्यं प्रदास्यामि प्रसन्नो भव सर्वता ॥
सर्व तत्व मूल श्री गुरु तत्व युक्त साम्ब सदाशिवाय नमः | इदमर्घ्यं इदमर्घ्यं इदमर्घ्यं ॥

अंबिकायै नमस्तुभ्यं नमस्ते देवि पार्वति ।
अम्बिके वरदे देवि गृह्णीदार्घ्यं प्रसीद मे ॥पार्वत्यै नमः । इदमर्घ्यं इदमर्घ्यं इदमर्घ्यं ॥

सुब्रःमण्य महाभग कार्तिकेय सुरेश्वर ।
इदमर्घ्यं प्रदास्यामि सुप्रीतो वरदो भव ॥सुब्रह्मण्याय नमः । इदमर्घ्यं इदमर्घ्यं इदमर्घ्यं ॥

चण्डिकेशाय नमः । इदमर्घ्यं इदमर्घ्यं इदमर्घ्यं ॥
अनेन अर्घ्य प्रदानेन भगवान् सर्वदेवात्मकः सपरिवार
संब परमेश्वरः प्रीयताम् ॥

इसके बाद ताम्बूल में रख कर कुछ दक्षिणा सद्गुरुदेव के चित्र अथवा पादुका या फिर शिवलिंग के सम्मुख ही अर्पित करें.

हिरण्यगर्भ गर्भस्तं हेमबीजं विभावसोः ।अनन्तपुण्य फलतं अतः शान्तिं प्रयच्च मे ॥
इदमुपायनं सदक्षिणाकं सतांबूलं सांबशिवप्रीतिं काममानः तुभ्यमहं सम्प्रतते न मम ॥
अब शान्ति पाठ कर सदगुरुदेव और सदाशिव के श्री चरणों में अपनी मनोकामना पूर्ती की प्रार्थना कर आसन को प्रणाम कर उठ जाएँ और खीर को ग्रहण करें.दूसरे दिन सुबह उस तिल युक्त पात्र तथा अन्य निर्माल्य को काले वस्त्र में बाँध कर किसी सुनसान स्थान पर रख कर आ जाएँ और आकर स्नान कर वस्त्रादि बदल लें. जीवन के विविध पक्षों को पूर्णता देने वाली ये साधना है जो पढ़ कर नहीं अपितु प्रायोगिक रूप से कर कर ही समझी जा सकती है.

SAABAR SHATRU STAMBHAN KAALRAATRI PRAYOG

Today time is such that person under influence of his selfishness becomes ready to cause harm to anyone. It has been seen sometimes that close relatives of family become enemy in order to meet their selfish ends. Besides this, good friends also become enemies when time comes and resort to bad activities in order to cause harm to person in variety of ways. Sometimes due to disputes in field of business or due to some particular resentment in work-field or when some person leads a dignified life following all conduct and adhere to principles then also some person having inhuman tendencies become his enemies. This is a very critical situation. If seen from one point of view, it can be resolved in one way or the other but one point that needs to be paid attention is that it is possible only when one knows who the enemy is. But what can be done if we do not know who the enemy is. Unknown enemies have got the hatred feeling hidden inside them and once they get the opportunity, they become operational to destroy the life. In such circumstances it is natural for person to get anxious. In such moment of conflicts when person even do not know who the enemy is, then it becomes necessary for person to take assistance of sadhna. If we rely on Tantra for securing ourselves and our family then nobody has ability to cause harm to us. How much stronger may be the enemy but in front of goddess's powers he is like a minute particle.

Among the Shatru Stambhan prayogs of Tantra, Sabar Prayogs are most important. These mantras seem very simple and procedures and Vidhaan of them are also very simple. Form of Bhagwati Kaalraatri is amazing, highly fearsome and dreadful, but it is not for sadhak rather it is for sadhak's enemies. For sadhak she is just like her mother. On one hand she provides progress and pleasure in life of sadhak along with motherly blessings and on the other hand, in her Durga form she paralyses all known and unknown enemies of sadhak and makes all those persons indifferent who want to cause harm to sadhak. There are many type of prayogs related to Bhagwati out of which most of them are very intense and Shamshaanik(to be carried out in cremation ground) which are not easy to be carried out but prayog presented here is very simple which can be done by any person. Sadhak can do this prayog in one night and upon

doing it, he definitely attains the blessings of Bhagwati and is secured from his enemies.Besides it, he attains progress in all aspects of life. Sadhak should do this prayog on seventh day of Krishn Paksha of any month. It should be done after 10 in the night.
Sadhak should take bath, wear red dress and sit on red aasan facing north direction.

Sadhak should establish picture of Bhagwati Kaalraatri on Baajot and should do Guru Poojan. Lord Ganpati Poojan, Bhairav Poojan and poojan of Goddess Kaalraatri. After it, sadhak should read Nikhil Kavach (Armour) or any other Raksha Kavach and chant Guru Mantra. Sadhak should light oil lamp only. It should be made sure that lamp should keep on lighting until chanting is over. Sadhak should make such arrangements in advance. If lamp extinguishes at the time of mantra chanting, sadhna ends there. Sadhak can offer any fruit as Bhog but sour fruits should not be used. After it, sadhak should chant 21 rounds of below sabar mantra. Chanting should be done by Rudraksh or Moonga rosary.

om namo kaalaraatri shatrustambhini trishula dhaarini namah

After completion of Jap, sadhak should pray to Devi with reverence and pray for getting riddance from enemies and own security. Sadhak should offer food to any small girl on next day or offer clothes and appropriate Dakshina, Rosary should not be immersed. It can be used in future for this prayog again.

****

प्रस्तुत समय एक ऐसा समय है जहां पर व्यक्ति स्वार्थ के वशीभूत हो कर किसी के लिए भी अहित करने के लिए तैयार हो जाते है. कई बार यह देखने में आया है की परिवार के निकट का सबंधी व्यक्ति या रिश्तेदार ही अपने स्वार्थ के लिए एक क्षण में ही शत्रुता को ही अपना आधार बना लेते है. इसके अलावा अच्छे मित्र भी समय आने पर मुह मोड कर शत्रु बन जाते है तथा विविध कारणों से व्यक्ति का अहित करने के लिए नाना प्रकार के हिन्

कार्यों को अंजाम देते है. कई बार व्यापर के क्षेत्र में अनबन के कारण या फिर अपने कार्य क्षेत्र में भी किसी विशेष द्वेष आदि के कारण या समाज में भी अगर आदर्श आचरण और सिद्धांत की महत्वपूर्णता को संजोये हुवे कोई निति पूर्वक जीवन व्यतीत करता है तो भी उसके कई प्रकार के अमानवीय प्रवृति वाले व्यक्ति शत्रु बन जाते है. यह एक बहोत ही पेचीदा स्थिति है. एक नज़रिए से देखा जाए तो हम इसका निराकरण किसी न किसी प्रकार से कर ही सकते है लेकिन यहाँ पर यह तथ्य ध्यान देने योग्य है की यह तभी संभव हो सकता है जब हमें ज्ञात हो की शत्रु कौन है. लेकिन तब क्या किया जा सकता है जब हमें पता ही नहीं हो की शत्रु कौन है. अज्ञात शत्रु द्वेष भाव को अपने अंदर संजोये हुवे होते है और मौका देखते ही व्यक्ति के जीवन को छिन्नभिन्न करने के लिए कार्यरत हो जाते है. एसी स्थिति में व्यक्ति का व्यथित होना स्वाभाविक है, हर तरफ से घात के क्षणों में जब यह भी ज्ञात न हो की शत्रु कौन है तब व्यक्ति को साधना का सहारा लेना अनिवार्य ही है. स्वयं की रक्षा हेतु तथा परिवारजानो की सुरक्षा हेतु अगर तंत्र का सहारा लिया जाए तो निश्चय ही साधक का अहित करने की क्षमता किसमे है, शत्रु चाहे कितना भी बलवान हो लेकिन दैवीय शक्तियों के सामने वह एक तिनके सामान भी कहाँ है.

तंत्र के शत्रु स्तम्भन प्रयोगों में शाबर प्रयोगों का महत्त्व अपने आप में ही अत्यधिक है. यह मंत्र अत्यधिक सरल से प्रतीत होते है तथा इसमें विधि विधान आदि बहोत सहज होते है. भगवती कालरात्रि का तो स्वरुप ही निराला है, अत्यधिक भयावह और डरावना उनका स्वरुप वस्तुतः साधक के लिए नहीं वरन उसके शत्रुओ के लिए है. साधक के लिए तो वह मातृतुल्य है. जहां एक तरफ वात्सल्य आशीर्वाद के साथ वह साधक के जीवन में उन्नति तथा सुख भोग प्रदान करती है वहीँ दूसरी तरफ वह साक्षात् दुर्गा स्वरुप में अपने साधक के सभी ज्ञात और अज्ञात शत्रुओ की गति मति का स्तम्भन कर साधक के अहित करने वाले सभी व्यक्तियो का उच्चाटन करती है. भगवती से सबंधित कई प्रकार के प्रयोग है जिसमे ज्यादातर उग्र और स्मशानिक विद्धान है जिसे करना सरल नहीं है लेकिन प्रस्तुत प्रयोग सहज प्रयोग है जिसे कोई भी व्यक्ति सम्प्पन कर सकता है. एक ही रात्री में साधक यह प्रयोग पूर्ण कर लेने पर उसको भगवती का आशीर्वाद प्राप्त होता है तथा उसके शत्रुओ से सुरक्षा प्राप्त होती है. साथ ही साथ जीवन के सभी पक्षों में उसे उन्नति प्राप्त होती है.

यह प्रयोग साधक कृष्ण पक्ष की सप्तमी को करे. समय रात्री में १० बजे के बाद का रहे. साधक को स्नान आदि से निवृत हो कर लाल वस्त्र को धारण करना चाहिए तथा लाल आसान पर उत्तर दिश की तरफ मुख कर बैठना चाहिए.
अपने सामने बाजोट पर साधक भगवती कालरात्रि का चित्र स्थापित करे. तथा गुरुपूजन, गणेशपूजन, भैरवपूजन और देवी कालरात्रि का पूजन सम्प्पन करे. इसके बाद निखिलकवच या अपनी श्रद्धानुसार कोई भी रक्षाकवच का पाठ कर गुरु मंत्र का जाप करे. साधक इस प्रयोग में तेल का दीपक ही लगाए. जब तक मंत्रजाप हो रहा है तब तक दीपक जलते रहना चाहिए, इस हेतु साधक को ध्यान रखना चाहिए तथा इस प्रकार की व्यवस्था साधक पहले से ही कर ले. अगर दीपक मन्त्रजाप के समय बुज जाए तो साधना खंडित मानी जाती है. साधक भोग के लिए किसी फल को अर्पण करे लेकिन खट्टे फल का उपयोग न करे. उसके बाद साधक निम्न शाबर मन्त्र का २१ माला मंत्र जाप पूर्ण करे. यह जाप साधक को रुद्राक्ष की माला या मूंगा माला से करना चाहिए.

ॐ नमो कालरात्रि शत्रुस्तम्भिनि त्रिशूलधारिणी नमः

(OM NAMO KAALARAATRI SHATRUSTAMBHINI TRISHULADHAARINI NAMAH)

जाप पूर्ण हो जाने पर साधक देवी को श्रद्धाभाव से प्रणाम करे तथा शत्रुओ से मुक्ति के लिए तथा स्वयं की रक्षा हेतु प्रार्थना करे. साधक को दूसरे दिन किसी छोटी कन्या को भोज कराना चाहिए या वस्त्र दक्षिणा समर्पित करना चाहिए. माला का विसर्जन नहीं करना है, साधक भविष्य में भी इस माला का प्रयोग इस मन्त्र जाप हेतु कर सकता है.

******NPRU******

Posted by Nikhil at 10:27 PM No comments:
Labels: KAARYA SIDDHI SADHNA, SHATRU PAR VIJAY SADHNA

MONDAY, JULY 23, 2012

ShatruUcchaatan Durga Prayog(शत्रु उच्चाटन दुर्गा प्रयोग)

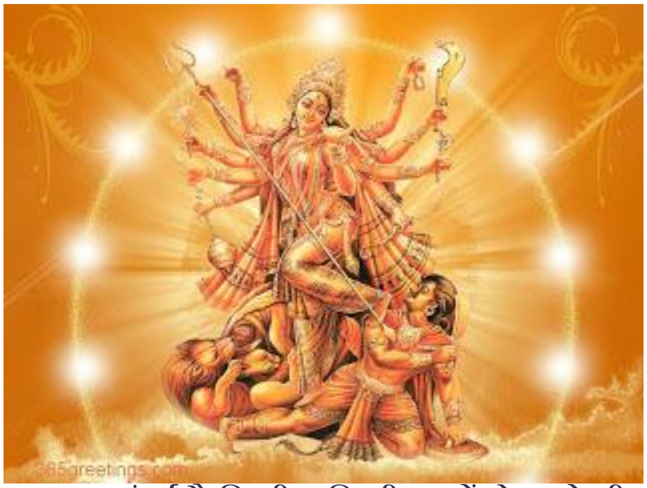

व्यक्ति का जीवन सही अर्थो में हर क्षण एक संघर्ष है. किसी न किसी रूप में वो अपने जीवन को संवारने के लिए संघर्शील रहता ही है, कभी आतंरिक रूप से तो कभी बाह्य रूप से. कभी खुद के साथ तो कभी बहार की दुनिया के साथ, यह संघर्ष हमेशा चलता ही रहता है. जो व्यक्ति परिस्थितिके वशीभूत हो कर अपना संघर्ष समाप्त कर देता है उसका जीवन आगे संवरता नहीं है, जीवन का विकास अटक जाता है. इसी लिए जो व्यक्ति अपने जीवन में सदैव संघर्षमय रहता है उसका जीवन निश्चित रूप से उसके लक्ष्य की और गतिशील होता रहता है. लेकिन अगर संघर्षो का परिणाम प्राप्त न हो तो व्यक्ति का मनोबल का कम होना स्वाभाविक है.कई बार व्यक्ति अपने प्रयासों का परिणाम न देख कर निराशागर्त हो जाता है और धीरे धीरे मानसिक दुर्बलता उसमे प्रवेश करने लगती है. और एसी स्थिति में व्यक्ति की सारी कोशिशे बेकार होती हुई नज़र आने लगती है. एक प्रकार से यह व्यक्ति तथा उससे सबंधित सभी लोगो के लिए दुःखदाई तथा तनाव की स्थिति बन जाती है. एस समय पर कई व्यक्ति तुरंत से विरुद्ध में खड़े हो जाते है और अपने अपने फायदे के लिए हिन् तथा नीच प्रवृतियों का सहारा लेते है. मानवीयगुणों से परे हट वह बेवजह शत्रुता का परिचय देते है. और एसी स्थिति में कुछ भी समाज में नहीं आता है की क्या किया जाए. वस्तुतः एसी स्थिति में अगर देव शक्तिओ का आशारा लिया जाए तो किसी भी रूप में अयोग्य नहीं है. क्यों की अगर परिस्थिति मात्र हमारे भौतिक प्रयास मात्र से अनुकूल हो जाती तो फिर निश्चित रूप से दुनिया के सभी व्यक्तियो का जीवन सुखमय होता. अगर प्रयास ही किया जाना है तो फिर साधनाओ का सहारा ले कर किया जाए इसमें क्या दोष है. प्रस्तुत प्रयोग एस गुप्त प्रयोगों में से एक है जिनके द्वारा मनुष्य अपने शत्रु से सबंधित समस्याओ से मुक्ति प्राप्त कर सकता है. अगर कोई व्यक्ति अकारण ही परेशान कर रहा हो या किसी भी प्रकार से पीड़ा पहोचने की कोशिश करता रहता हो या घर परिवार के किसी भी सदस्य को हमेशा किसी न किसी वजह से भय में रखने की कोशिश कर रहा हो तो एस व्यक्ति पर इस प्रकार का प्रयोग किया जा सकता है.

साधक यह प्रयोग किसी भी महीने की कृष्णपक्ष की अष्टमी को शुरू करे, अगर यह संभव न हो तो किसी भी शनिवार को यह प्रयोग शुरू करे. समय रात्री में ११ बजे के बाद का रहे.

साधक को स्नान आदि से निवृत हो कर लाल वस्त्र धारण कर लाल आसान पर दक्षिण दिशा की तरफ मुख कर के बैठे. अपने सामने दुर्गा यन्त्र स्थापित करे अगर यन्त्र की अनुपलब्धि में दुर्गा देवी के चित्र को स्थापित कर पूजन करे. इसके बाद साधक हाथो में जल ले कर के संकल्प करे की “में अमुक(अपना नाम) नाम का साधक अमुक(शत्रु का नाम) के उच्चाटन के लिए यह प्रयोग कर रहा हू जिससे की वह भविष्य में मुझे और मेरे परिवार को किसी भी प्रकार से कोई कष्ट न पहोचाये और वह हमारे आस पास भी न रहे. देवी दुर्गा अपना आशीर्वाद प्रदान करे.” इसके बाद जल भूमि पर छोड़ दे. अगर संभव हो तो अपने सामने शत्रु की कोई तस्वीर रख दे. साधक इसके बाद निम्न मन्त्र की ५१ माला मंत्र जाप करे. मंत्र जाप के लिए मूंगा माला का प्रयोग करे. मंत्र में अमुक की जगह शत्रु के नाम का उच्चारण करना चाहिए.

ॐ दुँ दुर्गायै अमुकं उच्चाटय उच्चाटय शीघ्रं सर्व शत्रु बाधा नाशय नाशय फट

(Om Dum Durgaayai Amukam Ucchaatay Ucchaatay Shighram sarv shatru baadhaa naashay naashay phat)

यह प्रयोग ३ दिन करे. इसके बाद साधक यन्त्र/चित्र को पूजा स्थान में स्थापित कर दे. माला और तस्वीर को किसी निर्जन स्थान में खड्डा खोद कर गाद दे. तो साधक को तुरंत ही इस प्रयोग का असर दिखने लग जाता है. इस प्रयोग की यह भी विशेषता है की शत्रु साधक से दूर चला जाता है और भविष्य में कभी उसे परेशान करने की सोचता भी नहीं.

Life of a person in real sense is a struggle every moment. In one manner or the other, he strives hard to put his life in a proper order, sometimes internally and sometimes externally. This struggle always goes on, whether it is with one's own self or with outside world. The person who succumbs to the circumstances and stops fighting , his life stops improving further and development of his life gets stucked.Therefore the person who fights throughout his life ,he definitely move towards his aim,But if person does not receive the fruits of struggle, then it is quite natural for his morale to go down. Sometimes, after seeing the fruitlessness of his efforts, person becomes pessimistic and gradually mental weakness builds inside him and in such a condition, all attempts of the person seems futile. At one time, many persons all of sudden stands against us and take the assistance of mean and low tendencies for their own advantage, instead of showing humanistic qualities they show animosity without any reason and in such a situation, nothing comes in our mind how to tackle it.Actually, in such a condition, if we take the assistance of god powers then it is not wrong in any manner. Because if situation had become favorable with our materialistic efforts then definitely life of every person on the earth would have been delightful. If effort has to be done, why should not we take help of sadhnas? What is wrong in it.Prayog given here is one among the hidden prayogs by which person can get rid of enemy-related problems. If any person without any reason is troubling you or in some manner or the other is trying to cause harm or by any means trying to instill fear in minds of any member of the family, then one can make use of this prayog on that person.

Sadhak can start this prayog from eighth day of Krishna Paksha of any month. If it is not possible thenhe can start from any Saturday. Time would be after 11:00 P.M.

Sadhak should take bath, wear red dress, and sit on red aasan facing south. Establish Durga Yantra in front of him. In the absence of yantra, one should establish Durga picture and worship it.After that sadhak should take water in his palm and take a Sankalp (resolution) that "I Amuk (your name)am doing this prayog for the ucchatan of Amuk (enemy's name) so that he in future is not able to cause any harm to me or my family and he should not stay anywhere near us. Goddess Durga, please provide me your blessings". After that, drop the water on the

floor. If possible, then put the photo of your enemy in front of you. After that sadhak should chant 51 rounds of the below mantra. Use Munga rosary for chanting mantra. Use the enemy's name in place of Amuk in mantra.

Mantra:

Om Dum Durgaayai Amukam Ucchaatay Ucchaatay Shighram sarvshatru baadhaa naashay naashay phat

Do this prayog for 3 days. After that, sadhak should establish the yantra/picture in the worship place and dig the rosary and enemy's picture at place where no one comes. The specialty of this prayog is that enemy goes far away from sadhak and not even thinks of troubling him in future.

****NPRU****

Posted by Nikhil at 12:07 AM No comments:
Labels: SHAKTI SADHNA, SHATRU PAR VIJAY SADHNA

WEDNESDAY, JUNE 27, 2012

TEEVRA SHATRU UCHCHATAN PRAYOG

एक व्यक्ति के जीवन की गतिशीलता में उसके सामने नित नविन पक्ष हर रोज आते ही रहते है. और जीवन की इसी दौड में मनुष्य अपने क्रिया कलापों से और कार्यों से नित्य अपने जीवन को आगे बढ़ाने के लिए गतिशील रहता है. आज के युग में भौतिक जीवन में कई प्रकार की समस्याओ से मनुष्य घिरा रहता है. कोई प्रगति करना चाहता भी हो तो कई व्यक्ति अकारण ही उस पर बाधक बनते है. या फिर अगर प्रगति कर भी ली हो तो इर्षा वश या अन्य कारणों से भी दूसरे व्यक्ति अकारण ही जीवन को त्रस्त बनाने की कोशिश में लगे रहते है. कई बार इस प्रकार के शत्रु हिन् कार्य कर के सबंधित व्यक्ति तथा उनके परिवार के जीवन को भी येनकेन कई प्रकार समस्या से ग्रस्त रखने के लिए कार्यशील रहते है. एसी स्थिति में एक साधारण मनुष्य स्व तथा अपने परिवार को एसी बाधाओ से बचाने के लिए हर संभव कोशिश करता है लेकिन कई बार शत्रु का भय और प्रभाव इतना व्याप्त हो जाता है की व्यक्ति अपने जीवन में सिर्फ समस्या की प्राप्ति ही करता है. ऐसे हिन् मनोवृति वाले शत्रु किसी भी हद तक जाने के लिए नहीं चुकते है और सामने वाले व्यक्ति को किसी न किसी प्रकार से परेशान करने के लिए उद्ध्वत ही रहते है. शत्रु समस्या आज के युग में एक विकट समस्या बन गई है. कई बार अपने साथ वाले व्यक्ति ही मौका मिलने पर धोका दे कर अपने शत्रुता का बोध करा देते है या फिर निकट के मित्र भी

अचानक तक मिलने पर शत्रुवत व्यवहार करने लगते है. स्वार्थवश कई बार अपने सुपरिचित भी समय आने पर तुरंत शत्रु बन कर सामने खड़े हो जाते है. ऐसे जीवन में व्यक्ति हर समय एक असुरक्षा का बोध ले कर जीता है तथा उसके परिवार को भी यही भाव में जीवन को निकालना पड़ता है. एसी संकटपूर्ण स्थिति में व्यक्ति तंत्र का सहारा ले कर अपनी समस्या का समाधान कर सकता है. यहाँ पर किसी को त्रस्त करने की भावना नहीं है बल्कि स्वकल्याण तथा अपने परिवार की सुरक्षा की भावना है. अगर कोई व्यक्ति अकारण ही परेशान करता हो, स्वार्थवश अहित करता हो या किसी भी प्रकार से उसके मन में सिर्फ पीड़ा पहोचाने की ही भावना हो तब व्यक्ति इस प्रयोग को कर अपने शत्रु से मुक्ति पा सकता है तथा खुद तथा परिवार कल्याण के लिए एक सुरक्षा चक्र तैयार कर सकता है. अपने जीवन को वापस से प्रवाहमान बना कर पूर्ण रूप से जीवन को जी सकता है.

यूँ तो शत्रु उच्चाटन से सबंधित कई प्रक्रिया पहले ही दी जा चुकी है, लेकिन यह प्रयोग अत्यधिक तीव्र है और तुरंत ही अपना अशर दिखाना शुरू कर देता है. इसके अलावा यह एक दिवसीय प्रयोग है जिससे की साधक इसे तुरंत सम्प्पन कर सकता है. इस साधना में व्यक्ति को ११ माला मंत्र जाप करना रहता है इस कारण जिन व्यक्तिओ को साधना का ज्यादा अनुभव नहीं है तथा जो ज्यादा समय तक आसान पर बैठ नहीं सकते वैसे व्यक्ति भी इस प्रयोग को बहोत ही सहजता से कर सकते है.

साधक कही से भी उल्लू का एक पंख प्राप्त करे. फिर किसी भी महीने की कृष्णपक्ष की अष्टमी को रात्री काल में ११ बजे के बाद दक्षिण दिशा की तरफ मुख कर साधक बैठ जाए. इस प्रयोग में साधक के वस्त्र तथा आसान काले रंग के हो. उस पंख पर शत्रु का नाम काजल से से किसी भी कलम से लिखे या स्मशान के कोयले से लिखे. इसके बाद उसे अपने सामने काले वस्त्र पर रख कर काली हकीक माला से निम्न मंत्र का जाप ११ माला करे

ॐ खँ उच्चाटय उच्चाटय हूं फट

मंत्र जाप सम्पपन होने के बाद व्यक्ति जो काले वस्त्र का उपयोग पंख रखने के लिए उपयोग हुआ है उसी में पंख, माला तथा वो कलम जिससे नाम लिखा गया है या फिर कोयला जिसे उपयोग किया गया है उसे बाँध कर स्मशान में उसी रात फेंक दे यह कार्य उसी रात्री में हो जाना चाहिए. साधक घर आ कर स्नान कर ले और सो जाए. इस प्रकार यह प्रयोग सम्प्पन हो जाता है. इस प्रयोग से शत्रु का उच्चाटन हो जाता है और वो भविष्य में कभी साधक को परेशान नहीं करता है.

In the continuity of life of the human being one may have various new aspects of the life daily. And in the race of the life one always tries to develop the life by day to day activities and works. In today’s time, person may remain trapped in various troubles of the material life. If one may want to progress, then too, other people with no reason starts becoming obstacles. Or if the progress has already been made, then too, being jealous or with other reasons people may keep on trying to create troubles in the life of the person. Many times such enemies do very cheap activities and remain active with a goal to make troubles to the person and family of that person. In such situation, normal human being tries every possible thing to save one self and family from every possible dangers but many time fear and effect of the enemies goes pervade so badly that person receives troubles only. Such cheap mentality holders enemies may go to any extend and to ruin life of the person they remain always active. A trouble of the enemies is vital trouble now days. Sometimes close person also introduce their self as enemies by cheating or when they have chance very close friend also starts acting as enemies suddenly. Being selfish many time our very well known people too come in front as enemies on the specific time. Such life always gives sense of insecurity at every moment and family also suffers from the same. In such critical situation, person may take help of the tantra to have freedom from trouble. In this situation, one does not have any intention of making some one troubled or suffered but for betterment of the self and family and security of them is the basic motto. If someone is troubling with no reason, keeps on trying to harm being selfish and only thought is to provide pain then one may have freedom from these problems with this prayog and one may create

secured atmosphere for self and family. By making the life on its natural form, one may starts living it completely again.
Many processes have already been given related to shatru uchchatan or enemy deflexion, but this process is very intense process and it shows the effect very quickly. Apart from that, this process is only one day process so sadhak can do it very quickly. In this sadhana one needs to do only 11 rosaries of the mantra; this way person who is not much experienced in the sadhana and those who are not comfortable to sit for the long time may also do this process very comfortably.
Sadhak should obtain feather of the owl from anywhere. Then on the eight night of dark moon after 11 PM one should sit facing south direction. In this process cloths and sitting mat of the sadhaka should be black in color. Sadhak should write name of the enemy on the feather with soot (lamp black) with pen of anything or one may write the name with coal of seminary. After that sadhak should place that feather on black cloth in front and one should chant 11 rosaries of the following mantra with Black Hakeek rosary.

Om Kham Uchchatay Uchchatay Hoom Phat

After mantra chanting is done one should tie that feather, rosary, and the pen with which name was written or the coal in the same black cloth which was used to place feather on it and then this tied material should be thrown to Smashana or seminary; this task should be completed on same night. Sadhak should bathe after coming back to home and should go for sleep. This way this process is completed. With this process deflexion of the enemy is done and in future that enemy never creates any troubles.

******NPRU******

Posted by Nikhil at 2:14 AM 1 comment:
Labels: SHATRU PAR VIJAY SADHNA

MONDAY, JUNE 25, 2012

YANTRA PRAYOG TO WIN COURT CASE (मुकदमे मे विजय प्राप्ति यन्त्र प्रयोग)

In This era of hidden animosity, it can’t be said which enemy can inflict blows-counterblows .Front-on attack can be faced but what can be said about attack done in hidden manner or done as part of conspiracy…….These all are the part and parcel of today’s era. Out of this, one way which is used most is to involve the person in false court cases. Now the person can be innocent, but getting rid of it results into waste of time, energy and money. Mental harassment which one has to bear, that is entirely different.
Name of Balgamukhi and other Mahavidyas comes to our mind when we talk of failing these hidden enemies or the whole type of conspiracies. But these sadhnas are not that simple. Prayogs related to them can definitely be done but the person remains in state of confusion that somewhere nothing wrong is done or he is not

aware of the complete Vidhaan. At such times, easiest ways in yantra Vigyan, which are very hard to believe, have proved to be very beneficial. Also whenever this court fight begins, person do not have any relation with court proceedings and therefore he gets anxious and wants to win court case at any cost so that he can again live that comfortable life.

It has also been said that weakness is evil and being strong is blessing. Life can't be lived weeping each moment. You all know this fact that getting no time in today's era is very big problem. However Sadgurudev has also said if we analyze it carefully, we will know automatically how much time is spent in unnecessary activities .If this time can be properly utilized then…..

If one has to achieve heights in materialistic life, then also attain achievements in Tantra world. This is height of life. So for this you have to take out your time. In the same way, if your problem is not that much critical, then do this prayog and upon doing it with dedication, you will definitely get success provided you are right. This much of neutral analysis should be done by the person himself.

This is very easy prayog of Yantra Vigyan and has been appreciated by others also.

You all know the general rules of yantra Vidhaan. They have been written many times. It is not appropriate to write them again and again. Make this yantra on Bhoj Patra by kumkum. The person against whom you are fighting the case, do not forget to write his name in the middle of yantra. Do the yantra poojan and other normal Vidhaans which are given in previous yantra related posts. The day you have to go to court for your court case, you put this yantra in amulet made up of three metals and pour it in milk ….Only this is the rule.

===

इस गुप्त शत्रुता वाले युग मे कौन सा शत्रु कब घात प्रतिघात कर दे कहा नही जा सकता हैं एक बार सामने के आघात तो सहन किये जा सकते हैं पर छुप कर या विभिन्न षडयंत्र बनाकर किये गए आघात के बारे मे क्या कहा जाए ... यह सब तो आज के युग की निशानी हैं इन्ही मे एक तरीका जो सर्वाधिक उपयोग होता हैं वह हैं सामने वाले को किसी भीझूठे मुकदमो मे फसवा दो , अब व्यक्ति कितना भी निर्दोष हो इस चक्कर से निकलते निकलते उसका बहुत संमय उर्जा और धन नष्ट हो जाता हैं मानसिक प्रताडना जो झेलनी पड़ती हैं वह तो बिलकुल ही अलग होती हैं.

यूँ तो गुप्तशत्रुओं और समस्त प्रकार के षड्यंत्रो को निष्फल करने मे भगवती बल्गामुखी और अन्य महाविद्याओ का नाम आता हैं पर इनकी साधनाए इतनी सरल भी तो नही हैं , इनसे सबंधित प्रयोग अवश्य किये जा सकते हैं पर व्यक्ति भी कुछ संशय की अवस्था मे रहता हैं की कहीं कुछ गलत न हो जाए या उसे पूरा विधान ठीक से मालुम भी नही होता , इस समय यंत्र विज्ञान के सरलतम तरीके जिन पर भले ही एक पल विस्वास न हो पर बहुत लाभदायक सिद्ध हुये हैं .

वेसे भी कानूनी जब लड़ाई प्रारंभ होती हैं तो एक व्यक्ति ,कानूनी दाव पेंच से उसका कोई वास्ता नही होता और वह परेशां होता जाता हैं और किसी तरह मुकदमो मे विजय भी चाहता हैं की फिर से व ह आरामदायक जीवन व्यतीत कर सके .

यह कहा भी गया हैं की कमजोरी ही पाप हैं और बलयुक्त होना ही पुण्य हैं और जीवन ऐसे रो रो कर घिसट घिसट कर तो काटा नही जा सकता हैं यह तो आप हम सभी जानते हैं की आज के युग मेसाधना के लिए समय न मिल पाना एक बहुत बड़ी समस्या हैं ,हलाकि सदगुरुदेव जी ने यह भी कहा हैं की अगर ध्यान से देखें तो स्वयं ही पता चल जाएगा की दिन का कितना समय यूँ ही बेकार के कामो मे जा ता हैं अगर वहां समय बचाया जा सके तो.

अगर भौतिक जीवन मे उच्चता प्राप्त कर ली हैं तो इस तंत्र जगत मे भी कुछ उपलब्धिया भी प्राप्त करें यही तो जीवन की उच्चता हैं .तो इसके लिए समय निकालना ही पड़ेगा .ठीक इसी तरह अगर समस्या बहुत गंभीर न हुयी हो तो आप इस प्रयोग को करें और पुरे मनो योग से करने मे सफलता आपको प्राप्त होगी बशर्ते आपका पक्ष सही होना चहिये .इतना तो व्यक्ति का स्वयं के लिए निष्पक्ष आकलन होना ही चाहिये.

यन्त्र विज्ञानं का यह बहुत ही सरल सा प्रयोग हैं अनेको द्वारा प्रशंशित भी हैं .

आप सभी को यंत्र विधान के सामन्य नियम ज्ञात हैं ही , अनेको बार लिखे जा चुके हैं तो बार बार उन्ही का उल्लेख उचित नही हैं , इस यंत्र को भोजपत्र पर कुकुम से बना ले . जिस व्यक्ति के विरुद्ध आपका मुकदमा हो उसका नाम यंत्र के मध्य मे पहले से लिखना न भूले ,यंत्र का पूजन और अन्य सामान्य विधान जो की यन्त्र सबंधित विगत कई पोस्ट मे दिए जा चुके हैं आप उन्हें करे और जिस दिन आपका मुकदमा हो कोर्ट मे जाना हो इस यन्त्र को त्रिलोह धातु के तावीज़ मे बंद करके दूध मे डा ल दे .. बस इतना विधान हैं .

****NPRU****

Posted by Nikhil at 5:51 AM 4 comments:
Labels: SHATRU PAR VIJAY SADHNA, YANTRA RAHASYA

SATURDAY, DECEMBER 10, 2011

Jwala shatru stambhan prayog

जीवन मे निरंतर पग पग पर समस्या तथा बाधाए आना स्वाभाविक है. आज के युग मे जब चारो तरफ अविश्वास और ढोंग का माहोल छाया हुआ है तब ज्यादातर व्यक्तियो का समस्या से ग्रस्त रहना स्वाभाविक है. और व्यक्ति कई प्रकार के षड्यंत्रो का भोग बनता है. यु एक हस्ते खेलते परिवार का जीवन अत्यधिक दुखी हो जाता है. कई बार व्यक्ति के परिचित ही उसके सबसे बड़े शत्रु बन जाते है और यही कोशिश मे रहते है की किसी न किसी रूप मे इस व्यक्ति का जीवन बर्बाद करना ही है. चाहे इसके लिए स्वयं का भी नुक्सान कितना भी हो जाए. आज के इस अंधे युग मे मानवता जैसे शब्दों को माना नहीं जाता है. और व्यक्ति इसे अपना भाग्य मान कर चुप हो जाता है. अपने सामने ही खुद की तथा परिवार की बर्बादी को देखता ही रहता है और आखिर मे अत्यधिक दारुण परिणाम सामने आते है जो की किसी के भी जीवन को हिलाकर रख देते है. एसी परिस्थिति मे गिडगिडाने के अलावा और कोई उपाय व्यक्ति के पास नहीं रह जाता है. लेकिन हमारे ग्रंथो मे जहा एक और नम्रता को महत्व दिया है तो दूसरी और व्यक्ति की कायरता को बहोत बड़ा बाधक भी माना है. एसी परिस्थितियो मे शत्रु को सबक सिखाना कोई मर्यादाविरुद्ध नहीं है. यह ठीक उसी प्रकार है जिस प्रकार व्यक्ति अपनी और परिवार की आत्मरक्षा के लिए हमलावर को हावी ना होने दे और उस पर खुद ही हावी हो जाए. हमारे तंत्र ग्रंथो मे इस प्रकार के कई महत्वपूर्ण प्रयोग

है जिसे योग्य समय पर उपयोग करना हितकारी है. लेकिन मजाक मस्ती मे या फिर किसी को गलत इरादे से व्यर्थ ही परेशान करने के लिए इस प्रकार की साधनाओ का प्रयोग नहीं किया जाना चाहिए वरना इसका भयंकर विपरीत परिणाम भी आ सकता है. शत्रुओ के द्वारा निर्मित षड्यंत्रो का किसीभी प्रकार से कोई असर हम पर ना हो और भविष्य मे वह हमारे विरुद्ध परेशान या नुकसान के इरादे से कोई भी योजना ना बना पाए इस प्रकार से साधक का चिंतन हो तो वह यथायोग्य है. तन्त्र के कई रहस्यपूर्ण और गुप्त विधानों मे से एक विधान है " ज्वाला शत्रु स्तम्भन ". यह अत्यधिक महत्वपूर्ण विधान है जिसे पूर्ण सात्विक तरीके से सम्प्पन किया जाता है लेकिन इसका प्रभाव अत्यधिक तीक्ष्ण है. देवी ज्वाला अपने आप मे पूर्ण अग्नि रूप है, और शत्रुओ की गति मति स्तंभित कर के साधक का कल्याण करती है. साधक को इस प्रयोग के लिए कोई विशेष सामग्री की ज़रूरत नहीं है.
इस विधान को साधक किसी भी दिन से शुरू कर सकता है तथा इसे ८ दिन तक करना है, इन ८ दिनों मे साधक को शुद्ध सात्विक भोजन ही करना चाहिए, लहसुन तथा प्याज भी नहीं खाना चाहिए. यह जैन तंत्र साधना है इस लिए इन बातो का ध्यान रखा जाए. इस प्रयोग मे वस्त्र तथा आसान सफ़ेद रहे. दिशा उत्तर रहे. साधक रात्री काल मे १० बजे के देवी ज्वाला को मन ही मन शत्रुओ से मुक्ति के लिए प्रार्थना करे. इसके बाद निम्न मंत्र की १००८ आहुतिय शुद्ध घी से अग्नि मे प्रदान करे.
औम झाम् ज्वालामालिनि शत्रु स्तम्भय उच्चाटय फट्
आहुति के बाद साधक फिर से देवी को प्रार्थना करे तथा भूमि पर सो जाए. इस प्रकार ८ दिन नियमित रूप से करने पर साधक के समस्त शत्रु स्तंभित हो जाते है और साधक को किसी भी प्रकार की कोई भी परेशानी नहीं होती. शत्रु के समस्त षडयंत्र उन पर ही भारी पड जाते है.

It is natural to have obstacles and problems in steps of life. In today's time when everywhere is mistrust and hypocrisy thus it is obvious to have troubling life for majority of the people. And a person gets trapped in many Conspiracies. This way, happy family turns in sorrowful family. Sometimes familiar people of the person turn in enemy all of a sudden and they remain in try to ruin the life of the person in some or other way, whatever it may result in for them too. In today's era in such situation there remains no meaning in mind of humanism. And person maintains silence calling this fortune. He watches his self and family's ruination and in last the heinous results appears which lay the life completely disturbed forever. In such situation there remain no options. But in our scriptures where there is big importance has allotted to sincerity, on other side timidity has been counted as big obstacle in one's life. In such situation, to teach lessons to enemies in not against dignity. It is something similar when one does stop some attacker on family for protection and one attack on the attacker. In our tantra scriptures there are several such important rituals which are better to be done at right time. But one should not apply it in just kidding or in a way to just trouble any one with no reason other else opposite results may also be faced. There remains no effect of any trap made by enemies and in future too there should be no such planning of enemies to hurt or damage us the same thinking should be there in sadhak's mind. Among such secret and mysterious processes of tantra one is "jwala shatru stambhan". This is very important process as it is done in Satvik method but its effect is very sharp. Goddess Jwala is in the form of fire herself, and by stopping enemy's thinking and development it blesses sadhak. Sadhak need not special materials for this prayog.
This process could be start on any day and this should be done for 8 days, in these 8 days sadhak should take saatvik food, onion and garlic also be avoided. This is jain tantra sadhana so these things should strictly be followed. In this prayog cloths and aasan should remain white. Direction should be north. After 10 in the night sadhak should pray goddess jwala for the protection from enemies. After that one should do 1008 aahutis with pure ghee in fir with following mantra.
Om zhraam jwaalaamaalini shatru stambhay uchchatay phat
After aahuti (fire offerings) gets over one should sleep on the floor. This way if the process is done for 8 days every enemies of sadhak gets paralyzed in planning any harm and sadhak will not face any further problem. Every Conspiracy prepares by enemies to harm sadhak will reversed to them self.

****NPRU****
for our facebook group-http://www.facebook.com/groups/194963320549920/

PLZ CHECK : - http://www.nikhil-alchemy2.com/

Posted by Nikhil at 11:35 PM 1 comment: Links to this post
Labels: SHATRU PAR VIJAY SADHNA

SUNDAY, NOVEMBER 13, 2011

SABAR VIDWESHAN PRAYOG

तंत्र पथ के षट्कर्म मे विद्वेषण प्रयोग भी एक अजूबा है. इस क्रम के अंतर्गत सबंधविच्छेद की उद्देश्य पूर्ति हेतु कई प्रकार के प्रयोग है. आज के युग मे सभी व्यक्तियो को विद्वेषण प्रयोग की नितांत आवश्यकता होती ही है लेकिन कई बार कौनसे प्रयोग को अमल मे लाया जाए ये उल्जन हो जाती है. इसके पीछे का कारण ये है की हमने हमारी संकृति मे निहित महानतम तंत्र पक्ष का अभ्यास नहीं किया है. विद्वेषण का प्रयोग पुरातन काल मे राजघरानों मे होता आया है, यहाँ तक की कई राजा अपने शत्रुओ के बिच मे लड़ाई करवाने के लिए अपने राज तान्त्रिको से अनुष्ठान करवाते थे. इस विद्या के भी कई पक्ष है जिसमे अनेको प्रकार के विद्वेषण सामिल है. लेकिन यहाँ आज के युग मे जो नितांत उपयोगी विद्वेषण है उसकी चर्चा करेंगे. कई बार देखने मे यु आया है की व्यक्ति किन्ही परिस्थितियो के वश बुरी संगत मे उलजता है और अपना जीवन बर्बादी की और अग्रसर कर देता है. इस स्थिति मे घर परिवार के लोग व्यक्ति को समजाने की कोशिश मे लगे रहते है लेकिन कई बार यह समजाना फलीभूत नहीं होता और फिर बाद मे भयंकर परिणाम सामने आते है. इसके अलावा इस नूतन युग मे युवतियों को बहला फुसला कर कई व्यक्ति उनकी जिंदगी से खिलवाड़ करने से भी नहीं चुकते. कई बार यु भी देखा गया है की पति या पत्नी के लग्न्नोतर सबंध मे कोई परपुरुष/स्त्री का ग्रहण लगता है तब पुरे परिवार का जीवन दुखमय बन जाता है.

विद्वेषण के इस क्रम का अर्थ है की व्यक्ति को दूसरे व्यक्ति से सबंध विच्छेद कर देना. यु प्रयोग करने पर दोनों व्यक्ति मे एसी परिस्थिति का निर्माण हो जाता है की उन दोनों का सबंध टूट जाता है. इस प्रयोग के सहारे कई घर उजडने से बचाए जा सकते है. सदगुरुदेव ने कई बार इन प्रयोगों को विविध व्यक्तियो से सम्प्पन करवाया है और हाथो हाथ परिणाम स्वरुप उन सभी व्यक्तियो को अपनी खुशहाल जींदगी वापिस मिली है. इस क्रम मे ध्यान

देने योग्य बात ये है की जिन दोनों व्यक्तियो पर भी प्रयोग किया जाए उन्हें प्रयोग के बारे मे पता नही चलना चाहये. ना ही एसी कोई सूचना उनतक पहोचे की उन पर ऐसा प्रयोग हो रहा है या किया जा रहा है.

व्यक्ति के पास अगर दोनों व्यक्ति के फोटो हो तो ज्यादा अच्छा है, अगर यह संभव न हो तो दोनों के पहेने हुए वस्त्र के टुकड़े भी लिए जा सकते है. उन को अपने सामने बुधवार की रात्रि मे किसी पात्र मे ले और उन पर व्यक्तियो के नाम काजल से लिखे. फोटो या वस्त्र अगर उपलब्ध ना हो तो दो छोटे पत्थर ले और उन पर दोनों के नाम लिखे. उसके बाद निम्न शाबर मन्त्र की वहा पर बैठे बैठे २१ माला मंत्र जाप करे. इसमें गधे के दांतों की माला का प्रयोग होता है जो की सामान्यतः इस युग मे अत्यधिक कठिन है इस लिए काले हकीक की माला का प्रयोग किया जा सकता है. क्रम की दिशा दक्षिण रहे तथा वस्त्र आसान यथा संभव काले रंग के हो. यह क्रम तिन दिन तक करे.

ओम खं फलाने को फलाने से विद्वेषय विद्वेषय मारजटा आदिपुरुषाय हूं

इस मंत्र मे दोनों जगह जहा फलाने है वहाँ इच्छित व्यक्तियो का नाम लेना चाहिए. याद रखे की पहला नाम वो रहे जिसके लिए प्रयोग किया जा रहा है और दूसरा नाम उस व्यक्ति का हो जिससे सबंध अयोग्य है और नुकशानदायक.

3 दिन पुरे होने पर चौथे दिन फोटो, वस्त्र या पत्थर को पानी मे विसर्जित करने के लिए ले जाए और दोनों चीजों को एक दूसरे की विपरीत दिशा मे विसर्जित करे. साथ ही साथ माला भी विसर्जित कर दे.

SARV BADHA NIVARAK BHAGVATI CHAMUNDA PRAYOG

Jai Sadgurudev,

Om Satyam Ch ShriyeShradheJanmaniVrateKaaryKaaryateePravradhe Hah | Tasmai Shri Guruvai Namah, Tasmai Shri Guruvai Namah ||

“The lord who has taken birth as human and has tolerated all blows and explained that human life blossoms in struggle , He Gurudev, please provide me the strength and power to win over these struggles”

Brothers and sisters, life is not that much simple as understood by us. In fact, whatever we desire, nature does not let it get materialized, it happens exactly

opposite of it, why? Why we cannot live life with simplicity and ease? Sometime we have the money but bereft of health, sometimes we possess health and wealth but do not child. If there is child, then he/she is not healthy or possesses negative qualities. Why?

Actually nature reminds us of our evil karmas committed earlier in this life or past lives, which we cannot understand and we keep on blaming fate or something else for other….

Brother and sister who is nature? It is none but mother Aadi Shakti…. So what is the need to worry when she is our mother….

And it is easy to appease mother. Isn't! If we remember mother with pure heart and complete dedication then it is not possible that she does not become happy and is not compelled to provide boon….

Brothers and sisters, before Navraatri, Amavasya comes and if we try to get rid of ill-fortune on Amavasya and then do sadhna of symbol of power/accomplishment in these 9 days and achieve accomplishment too so that mother's blessings are always with us and we can be the best in every field of our life…..so

Get prepared for this sadhna, because------

It is rare and amazing sadhna to get rid of planetary and tantric obstacles, obstacles coming in way of our work, sadhna related obstacles. It is very easy too…

On any Amavasya night, take bath after 10:00 P.M and sit on aasan facing north direction. Establish picture/yantra/idol of Mother Durga in front of you. Along with it, Guru Picture is necessary which is known to all of you.

Yellow aasan, yellow dhoti will be required. Ghee lamp is also required and it should be ignited during entire sadhna duration. First of all, do brief poojan of Guru, Lord Ganpati and Lord Bhairav. Then chant one round of Ganpati Mantra **(OM GLOUM GAM GANPATYE NAMAH),** Guru Mantra and Gayatri Mantra which is for getting rid of curse….

Now after it, write your desire on a piece of paper and keep paper in front of you. Take Sankalp and chant one round of Guru Mantra. After it chant 5 rounds of below mantra by Rudraksh or Moonga rosary.

OM AING HREENG KLEENG CHAAMUNDAAYAI VICHHE |OM GLOUM GLOUM HOOM HOOM KLEEM KLEEM JOOM JOOM SAH SAH JWAALAY JWAALAY JWAL JWAL PRAJWAL PRAJWAL AING HREENG KLEENG CHAAMUNDAAYAI VICHHE |

Now again chant 1 round of Guru Mantra and again perform Guru, Ganpati and Bhairav poojan. Apologise for your faults and offer mantra to Gurudev….

Brothers and sisters, this sadhna may take 4-5 hours, but it is sadhna to get rid of ill-fortune and obstacles completely and it shows complete effect in first instance itself…….so do this sadhna and experience it yourself and see the results…
"Nikhil Pranaam"

जय सदगुरुदेव,

ॐ सत्यं च श्रिये श्रद्धे जन्मनि व्रते कार्य कार्याती प्रवर्द्धे हः|

तस्मै श्री गुरुवै नमः, तस्मै श्री गुरुवै नमः ||

"जो ईश्वर मानव गर्भ से जन्म लेकर नर रूप धारण कर सभी प्रकार के घात-प्रतिघातों को सहन करते हुए यह स्पष्ट करते हैं कि मनुष्य जीवन संघर्षों में ही खिलता है, हे गुरुदेव मुझे इन संघर्षों पर विजय प्राप्त करने की शक्ति प्रदान करें ."

भाइयो बहनों जीवन उतना सरल नहीं है जितना हम सोचते हैं. दरअसल हम जैसा चाहते हैं प्रकृति वैसा होने नहीं देती, उसका विपरीत होता है. क्यों ? क्यों हम जीवन को सहज और सरलता से जी नहीं पाते? कभी धन है तो स्वास्थ्य नहीं और स्वास्थ्य और धन है तो संतान नहीं . संतान है तो वह स्वास्थ्य नहीं या दुर्गुणी है.क्यों ?

दरअसल प्रकृति हमें हमारे पूर्व जीवन कृत इह जीवन कृत पाप दोष का आभास कराती है , जो कि हम समझ ही नहीं पाते और कभी किस्मत को या कभी किसी को दोष देते रहते हैं ....

भाइयो बहनों प्रकृति कौन ? अरे भाई प्रकृति यानि मा आदि शक्ति ही न.... तो फिर कैसी चिंता जब माँ है तो ....

और माँ को मनाना सबसे सरल है न! यदि सच में बिलकुल निश्छलता औए पूर्ण समर्पण के साथ माँ को याद भी करले तो ऐसा हो ही नहीं सकता की वो प्रसन्न होकर वरदान देने के लिए बाध्य न हो......

भाइयो बहनों नवरात्रि के पहले अमावस्य आती है और यदि इस अमावस्या को ही हम अपने दुर्भाग्य को दूर करने का प्रयास करें, और फिर निश्चिन्त होकर माँ आदि शक्ति के इन नव दिनों में जो शक्ति के प्रतिक माने गए हैं सिद्धि के प्रतीक माने गए हैं, हर्षित मन से

न केवल साधना की जाये अपितु सिद्धि भी हासिल की जाये जिससे माँ का वरद हस्त सदैव आपके शीश पर हो और आप जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में पूर्ण सफलता के साथ सर्वोपरि रह सको ..... तो

इस साधना के लिए तैयार हो जाओ, क्योंकि इससे यदि -----

ग्रह बाधा, तांत्रिक बाधा, किसी कारणवश हरेक कार्य में बाधा आ रही हो, साधना में बाधा आ रही हो, समस्त बाधाओं को मिटा कर पूर्ण अनुकूलता देने वाली दुर्लभ साधना है और अत्यंत सहज भी.......

किसी भी अमावश को रात्रि में १० बजे के बाद स्नान कर उत्तर दिशा की और मुह कर बैठ जाएँ और सामने ही माँ दुर्गा का सुन्दर चित्र हो या दुर्गा यंत्र हो या विग्रह हो, साथ ही गुरु चित्र भी आवश्यक है ही, जो की आप जानते ही हैं

पीला आसन, पीली धोती और घी का दीपक जो साधना काल में जलना चाहिए, सबसे पहले गुरु, गणपति और भगवन भैरव का संक्षिप्त पूजन करें फिर एक माला गणपति मन्त्र **(ॐ ग्लौं गं गणपतये नमः)** की एक माला गुरु मन्त्र की और एक गायत्री मन्त्र की जपना चाहिए जो शाप विमोचन हेतु है....

अब इसके पश्चात् एक कागज पर अपनी मनोकामना लिख कर सामने रख लें और संकल्प लेकर फिर एक माला गुरुमंत्र की संपन्न करे, तथा उसके पश्चात् रुद्राक्ष या मूंगा माला से पांच माला निम्न मन्त्र की करें,

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुंडाये विच्चे | ॐ ग्लौं ग्लौं हूँ हूँ क्लीं क्लीं जूं जूं सः सः ज्वालय ज्वालय ज्वल ज्वल प्रज्वल प्रज्वल ऐं ह्रीं क्लीं चामुंडाये विच्चे |

अब इसके बाद फिर एक माला गुरु मन्त्र की संपन्न कर दुबारा गुरु,गणपति और भैरव का पूजन संपन्न कर क्षमा याचना कर गुरुदेव को मन्त्र समर्पित करे .....

भाइयों बहनों उक्त साधना में चार से पांच घंटे लग सकते हैं किन्तु दुर्भाग्य और बाधाओं को पूर्ण रूप से मिटाने वाली साधना है जो की पहली बार में ही अपना पूर्ण प्रभाव दिखाती है .... तो कीजिये इस साधना को और रही बात अनुभव की तो वो स्वयं करिए

और देखिये ....

"निखिल प्रणाम"

****RAJNI NIKHIL****

****NPRU****

Posted by Nikhil at 1:04 AM No comments: Links to this post
Labels: GRAH DOSH NIVARAK, SHAP DOSH NIVARAK

SATURDAY, MARCH 30, 2013

TRIPUR SHAPODDHAR SADHNA PRAYOG

Human life is not merely a coincidence; rather it is result of karmas done in previous lives. We accept it or not but previous life karmas do affect our present life. Comprehending the fruits of these karmas is not that much easy. Shastras explains that "Karmo Gahno Gati". Similarly Lord Shri Krishna says that there is no such karma which will not do anything bad along with doing good. Then even small-2 karma will have an impact. But how can we reduce the impact of these fruits of karma so as to live a happy and prosperous life and attain higher dimensions in life. For this purpose, this is one higher-order sadhna related to Mahavidya category which is capable of getting rid of all those inconsistencies which we are not able to understand in normal manner and which can be result of any curse in the past.

Sadhak can start this sadhna from any auspicious day. Sadhak should do this sadhna in night after 10:00 P.M.

Sadhak should take bath, wear red dress and sit on red aasan facing north direction. Sadhak should establish yantra/picture of goddess Tripur Bhairavi in front of him. Sadhak should perform Guru Poojan, Bhairav and Ganesh Poojan and thereafter do the poojan of picture/yantra of goddess Bhairavi. Sadhak should then chant Guru Mantra. After it, sadhak should do Nyas procedure.

KAR NYAS

AENG KLEEM SAUH ANGUSHTHAABHYAAM NAMAH
AENG KLEEM SAUH TARJANIBHYAAM NAMAH
AENG KLEEM SAUH MADHYMABHYAAM NAMAH
AENG KLEEM SAUH ANAAMIKAABHYAAM NAMAH
AENG KLEEM SAUH KANISHTKABHYAAM NAMAH
AENG KLEEM SAUH KARTAL KARPRISHTHAABHYAAM NAMAH

HRIDYAADI NYAS

AENG KLEEM SAUH HRIDYAAY NAMAH
AENG KLEEM SAUH SHIRSE SWAHA
AENG KLEEM SAUH SHIKHAYAI VASHAT
AENG KLEEM SAUH KAVACHHAAY HUM
AENG KLEEM SAUH NAITRTRYAAY VAUSHAT
AENG KLEEM SAUH ASTRAAY PHAT

After nyas, sadhak should chant 21 rounds of below mantra while doing meditation of goddess Tripur Bhairavi. Sadhak should use Rudraksh rosary for chanting.

OM AING SAUH KLEEM SAUH AENG NAMAH

After completion of chanting, sadhak should offer the mantra jap to goddess by showing Yoni Mudra and pray to her for getting rid of all faults, sins and curses. In this manner, sadhak should perform this procedure for 3 days. After 3 days, Sadhak should immerse the rosary.

After completion of sadhna, sadhak gets riddance from Karma's faults and sins and his luck rises due to which sadhak moves forward to attain success in all the fields.

मानव जीवन केबल मात्र एक संयोग नहीं हैं बल्कि अनेको विगत जीवन के कर्म फलो का परिणाम हैं,विगत में हुए कर्म फल का असर इस जीवन में पड़ता ही हैं, चाहे हम माने या न माने और इन कर्म फलो को समझना इतना आसान नहीं हैं,शास्त्र स्पस्ट करते हैं की “कर्मो गहनों गति “.वही भगवान् श्री कृष्ण कहते हैं की कोई भी कर्म ऐसा नहीं हैं जिसमे कुछ अच्छा के साथ साथ कुछ बुरा ना हो .तब छोटे छोटे से कर्म फल

का असर तो होगा ही,पर इन कर्म फलो को कैसे इनका सर कम से कम किया जा सकें,जिससे एक सुखी संपन्न जीवन जिया जा सकें और जीवन में कुछ उच्चता के आयाम को हस्तगत किया जा सकें, इस हेतु महाविद्या वर्ग से सबंधित एक उच्च साधना जो जीवन में उन विसंगतियों को दूर करने में समर्थ हैं जिसे हम साधारण तौर पर समझ नहीं पाते और जो अतीत में किसी शाप का फल हो .

यह साधना साधक किसी भी शुभदिन शुरू कर सकता है. साधक को यह साधना रात्रीकाल में करनी चाहिए. समय १० बजे के बाद का रहे.

साधक को स्नान कर लाल वस्त्र को धारण करना चाहिए तथा लाल आसन पर उत्तर की तरफ मुख कर बैठना चाहिए.

साधक को अपने सामने देवी त्रिपुर भैरवी का यंत्र या चित्र को स्थापित करना चाहिए. साधक गुरुपूजन भैरव एवं गणेश पूजन सम्प्पन करे तथा देवी भैरवी के यंत्र या चित्र का भी पूजन करे. साधक को गुरु मन्त्र का जाप करना चाहिए.

इसके बाद साधक न्यास करे.

करन्यास

ऐं क्लीं सौः अङ्गुष्ठाभ्यां नमः

ऐं क्लीं सौः तर्जनीभ्यां नमः

ऐं क्लीं सौः मध्यमाभ्यां नमः

ऐं क्लीं सौः अनामिकाभ्यां नमः

ऐं क्लीं सौः कनिष्टकाभ्यां नमः

ऐं क्लीं सौः करतल करपृष्ठाभ्यां नमः

हृदयादिन्यास

ऐं क्लीं सौः हृदयाय नमः

ऐं क्लीं सौः शिरसे स्वाहा

ऐं क्लीं सौः शिखायै वषट्

ऐं क्लीं सौः कवचाय हूं

ऐं क्लीं सौः नेत्रत्रयाय वौषट्

ऐं क्लीं सौः अस्त्राय फट्

न्यास के बाद साधक को देवी त्रिपुर भैरवी का ध्यान करते हुवे निम्न मन्त्र का जाप करना चाहिए. साधक को २१ माला मन्त्र का जाप करना है. यह जाप साधक को रुद्राक्ष की माला से करना चाहिए.

ॐ ऐं सौः क्लीं सौः ऐं नमः

(OM AING SAUH KLEEM SAUH AING NAMAH)

मंत्र जाप पूर्ण होने पर साधक को योनी मुद्रा से देवी को जाप समर्पित करना चाहिए तथा देवी को समस्त दोष पाप एवं शाप की निवृति के लिए प्रार्थना करनी चाहिए. इस प्रकार साधक को यह क्रम ३ दिन करना चाहिए. ३ दिन बाद साधक को माला को प्रवाहित करना चाहिए. साधना सम्प्पन होने पर साधक के कार्मिक दोष तथा पापों की निवृति होती है तथा भाग्य का उदय होता है जिससे साधक सभी क्षेत्रो में सफलता की ओर कदम बढाता है.

Shamshan sadhana workshop (A great way to overcome fear /one of among eight pash from life).

प्रिय मित्र ,

हम में से कोन ऐसा होगा जो साहस के साथ अपने ह्रदय पर हाथ रख के सत्य कह सके की उसे किसी भी प्रकार का ज्ञात /अज्ञात भय नहीं हैं , थोडा या अधिक ये महत्व की बात नहीं हैं ,भय अष्ट पाशों में से एक हैं जो मानव को को उसके स्वयं के स्वरुप से परिचय नहीं होने देता . कोन नहीं होगा जो निर्भय होना नहीं चाहेगा वह भी माँ महाकाली के अभय से ..

"मा भे " मैं अभय देती हूँ .. माँ तो यही कह रही हैं .

पर हम कहा उनके आशीर्वाद को प्राप्त कर सकते हैं भला उनके निवास से ज्यादा अच्छी जगह कहाँ होगी.शमशान , पवित्र सिद्धाश्रम के बाद इस धरती पर सबसे पवित्र जगह हैं . जहाँ भगवान् महाकाल , माँ के साथ विचरण करते रहते हैं , जहाँ इस जीवन से सरे स्वार्थमय रिश्ते अंत को प्राप्त होते रहते हैं , चरों और एक नीरवता का वातावरण हमेशा छाया रहता हैं.

ये स्थान डरने/भय की नहीं बल्कि अपने अस्तित्व को जानने या पहचानने की जगह हैं तामसिक ही नहीं बल्कि सात्विक साधना भी यहाँ पर संपन्न की जा सकती हैं .,अधिकांश महायोगी चाहे वे वामक्षेपा

हो या, परमहंस निगमानंद जी , या परमहंस विशुद्धानंद जी हो , औघड़ भगवान् राम हो सभी ने कभ न कभी इस पवित्र भूमि पर साधन की ही हैं . तो कुछ तो निश्चय ही विशेषता होगी ही .

चिंतित न हो ,ये कार्यशाला उनके लिए ही केबल नहीं हैं जो भयमुक्त हैं बल्कि जो भी अपने भय रूपी पाश से मुक्त होना चाहता हैं उनका भी स्वागत हैं .इस स्थान पर पञ्च महाभूत पुनः अपने मूल स्वरुप मैं आ ही जाते हैं .इस स्थान पर प्राण उर्जा इतनी अधिक होती हैं इसी कारण , घर पर की गयी साधना की अपेक्षा , हमें साधना में जल्दी सफलता मिल जाती हैं.

पर क्या यह इतना आसान होगा इसका उत्तर हाँ ओर न , या दोनों में होगा .

यदि यह साधना पूर्ण की जाये किसी कुशल मार्गदर्शन में /या निर्देशन में तो सफलता का प्रतिशत कई गुना ज्यादा होगा. इस तथ्य को ध्यान में रख कर ही इस कार्यशाला का आयोजन करने की योजना बनाये जा रही हैं

1. कैसे पूर्ण अघोरेश्वर शिव पूजन होता हैं ?सदगुरुदेव पूर्ण पूजन और शमशान में कैसे उनका आवाहन किया जाता हैं ?,
2. अष्ट भैरव में से हर दिन कोन से भैरव आज जाग्रत होते हैं उन्हें पहचानना कैसे हो , और कैसे हो उनका आवाहन और पूजन ?,
3. किस प्रकार की सावधानी अनिवार्य हैं और कौन कौन सी आवश्यक बस्तु आपके पास हो ?
4. हम अपने आप को कैसे सुरक्षित करे ? दिग्बन्धन, आसन कीलन, आसनखिलना क्या हैं और क्यों इनकी अनिवार्यता हैं ?
5. शमशान जागरण तो सीख कर कर लिया पर शांत करना न आया तो ? उसे शांत कैसे करे,शमशान को सुसुप्त कैसे करे?
6. क्या वहां पर कोई लक्ष्मी का स्वरुप भी होता हैं .
7. कैसे हम शम्शानाधिपति धूर्मलोचन /मरघटेश्वर को कैसे पहचाने?
8. मानसिक गुरु पूजन जो की सूक्ष्म शव साधन का ही एक प्रकार हैं कैसे करे संपन्न ?

इस तरह के अनेकों प्रश्न के उत्तर /रहशय पहली बार आपके सम्मुख होंगे ..

हम इस कार्यशाला के लिए गुरुदेव जी से अनुमति प्राप्त करने की कोशिश में हैं, अभी तो यही योजना हैं कि ये कार्यशाला 1.5 महीने के अन्दर ही हो, ओर इस कार्यशाला की अवधि लगभग ७ से १० दिन ही होगी .

हर कोई इसकी प्रतिशा कर रहा हैं पर केबल कुछ ही साधक को चुना जायेगा ,उनके चुने जाने कि अनिवार्य शर्तों मेंसे एक उनकी कुडली भी एक आधार होगी .विगत पारद कार्यशाला कि तरह इसके पुनः होने ही सम्भावना न के बराबर हैं नहीं ये बार बार ही सकती हैं . क्या क्या मुझे लिखना चाहिए कि यह एक स्वर्णिम अवसर होगा जिसको खोना नहीं चाहिए , ओर मुझे क्या इसकी महत्वता और लिखनी चाहिए ? ...बस आपके कदम रुके नहीं ....

पारद संस्कार कार्यशाला

(केबल मात्र 13, 14 , 15 वे संस्कार के लिए):

विगत दो पारद संस्कार कार्यशाला में हमने १ से लेकर १२ तक के संस्कार को समझा ओर सीखा पर इससे भी आगे हम बढ़ कर आपको अग्रिम संस्कार से भी परिचय कराने के लिए प्रयत्नशील हैं हमने आपके यह वायदा किया था .तो इस संदर्भ में भी एक कार्यशाला करने कि योजना बनाये जा रही हैं .

पहले दो पारद संस्कार कार्यशाला में भाग लिए जाने वाले भाग्यशालियों के लिए एक स्वर्णिम अवसर, जिसे कोई भी खोना नहीं चाहेगा .एक ऐसा अवसर जो आपके ओर रस सिद्धता को प्राप्त करने कि दिशा में एक और कदम होगा .इससे अधिक भाग्य भी क्या कर सकता हैं . कहाँ होगी ,कब होगी आप को सूचना दी जाएगी ,अब आगे आप ओर आपका भाग्य , जो भी इसमें भाग लेने के लिए चुने जायेगे....

अभी इस कार्यशाला की योजना फरवरी   मार्च   २०११ में हैं

****

सूर्य सिद्धान्त कार्यशाला :

हमारा जीवन ही नहीं बल्कि सारा हमारा सौर्य चक्र भी पुर्णतः सूर्य पर ही निर्भर हैं .इस विज्ञानं के माध्यम से धातुविक   परिवर्तन से लेकर जो भी आप सोच सकते हैं क्या नहीं संभव हैं   .जिन्होंने भी परमहंस विशुद्धानंद जी कि जीवनी पढ़ी हो वे ही इसकी अति महत्त्व पूर्णता को समझ सकते हैं.

पारद संस्कार ही नहीं बल्कि नव जीवन   निर्माण से लेकर हर प्रकार कि सिद्धि संभव हो सकती हैं .लगभग १० दिवसीय इस कार्यशाला में हमारा उदेश्य आपको इस विज्ञानं के गोपनीय पहलु से भी /रह्शयों से भी परिचित कराते हुए अग्रसर करे , हम ये दावा तो नहीं करते कि आप आप   इस विज्ञानं विशेषज्ञ बन जायेंगे पर प्रायोगिक रूप से इस विज्ञानं को सीख और समझ सकते हैं .कहाँ पर ? कब ? होगी आपको सूचित कर दिया जायेगा , इस में चुने जाने वाले व्यक्तियों के चुनाव का एक आधार कुडली भी होगी , हम एस हेतु गुरुदेव से आज्ञा प्राप्त करने कि कोशिश में हैं ,जैसे ही उनकी अनुमति मिलेगी , अप्पको हम सूचित करेंगे ....

अभी इस कार्यशाला की योजना मार्च अप्रैल २०११ में हैं .

अब आप ओर आपका भाग्य ..... हम तो प्रतीक्षा करेंगे ही आपके लिए ....

****

Dear friends,

who has courage to put his hand on his heart and say that   he is not afraid of any unknown/known fear though its degree may vary. Fear is the one of the eight pash which obstructs

us to become the real self of us. Who do not want to overcome and become Nirbhay (Fearless) through ma mahakali abhyam.

"Maa bhe" I give you abhay says divine mother mahakali……

But for that we has to ask mother blessing to her home(off course) ,shamshan is the holiest place after the siddhashram on this earth, where mahakaal walks along with mother divine, all the so called worldly selfish relation comes to end and a piece prevails all along.

Its not the place to afraid but to relies self. not only tamsic sadhane but satvik sadhane also can be done here . Almost every great yogi like vama kshepa, paramhansa swami Nigmananda ji, paramhansa vishuddhaanandji,aughad bhagvaan Ram , did their sadhana in shamshan than something important will be there.

Do not worry about that this workshop not only for those who fear not but specially for those having fear but who want to conquer that. its the place where all the Panch bhoota again left to their original form, since prana urja highly available in that place so getting success in that area is much much higherand easier compare to sadhana completed in home,

but it is so easy…. Answer is yes or no or both,

if sadhana completed /practiced in proper guidance and under the supervision of expert than success will be much much higher, this workshop is planning keeping in mind that.

1. How the Purn Aghoreshar poojan, Sadgurudev poojan and aawahan happened there?
2. how to recognize which of the asth(eight) bhairav awaken that dayand thier poojan and awahan ?.
3. what precaution is must and followand othe necessary article have there ?.
4. Process like How to protect himself ? ,
5. what are the Digbandhan and Asan keelan?, Asan khilna process what are they necessary ?
6. what is shamshan jagran?, if you did that and know not the way to shanshan shant prayog than...., so lear n shanshan shant porocess too?
7. is there any lakshmi related to that? Yes
8. how to recognize shamshan lord dhoormlochan, or marghetshwer? Awaken them ?.
9. Mansik guru poojan is consider as a sookshm shav sadhana.

and many many such a mystery reveled to you,

We are trying to get permission for Gurudev and if we successfully get that ,this workshop will be organized within 1and half month period and its duration will be of 7 to 10 days maximum.

everybody is eagerly waiting for that but few get selected for that considering their horoscope first. Like previous workshop this will be one of its kind and not to be repeated again and again.. may I wrote here is this golden opportunity, never missed one, need to write for its importance more , so still wait for who can say………..

****

****

****

Next level Parad Sanskar workshop

(only for Sanskar 13 , 14, 15);

we just complete upto 12 th Sanskar in previous workshop ,, and as we already promised that we will go for next level of sanskar so here are the opportunity. we are planning to organize workshop for parad above mentioned Sanskars.

for that people of prev. two workshop of parad can be selected.. A never miss opportunity, a golden chance to take one more step to become Ras siddh. What more fate is needed

after that…… when and where what will be the fees will be intimated you , its up to you and your fate to get selected.

now we are palanning this workshop ,will be organised feb-march 2011.

****

****

Surya siddhanta workshop

not only whole life of us but also our solor system is totally and only depend upon the sun, through this science what cannot be achieved, from metal transformation to everything, what even you cannot imagined, those who read swami vishhudanandji life story they already knew that hightest and valuable of this science.

not only parad Sanskar but everything means everything can be possible for that from new life creation to every siddhi imagined. This approx 10 days workshop will introduce you some of the hidden secret and fact of this science and move one concrete step to understand that, we not claimed that you will become master but able to practically learn that science.. when and where will be announced separately, and on the bases of horoscope people will be selected, we are trying to get permission from Gurudev , once we got, we will inform you….

now we are palanning this workshop ,will be organised march- April 2011.

FOR MORE UPDATES
OF
(Alchemical files and Mantras RELATED TO POST)
PLZ JOIN
YAHOOGROUPS To visit NIKHIL ALCHEMY GROUP plz click here

Free E-Magzine monthly (only for free registered follower of this blog and Group memember)

"Kaal Gyan Siddhi Maha Visheshank" is going to be relesed
Soon on First week of February 2011.
(Containing, article on Ayurved,Tantra, yantra,Mantra, Surya vigyan,Astrology and Parad Tantra) PLZ Click here to know the Details/List of articles coming in this issue

if not,a registered follower(Registration is totally free) of this blog , then
PLZ sign in in follower section, appearing right hand upper or lower side of this page,

*******ARIF KHAN,ANURAG SINGH,RAGHUNATH NIKHIL*******

Posted by Nikhil at 2:39 AM 1 comment:
Labels: SHAMSHAN, workshop

SUNDAY, NOVEMBER 14, 2010

Shamshan sadhana :Deepest hidden truth unrevealed yet

My Dearest friend,

lets begun the journey with me for the unlocking the closed door of this great section of Shamshan sadhana..when I listened it first time.. my heart full of love and gratitude towards Sadgurudevji, though I am not eligible for this knowledge , but his love knows no boundary…

I was sitting back seat of car (usually I have to sit there) ,Arif ji and shri Patel bhaiyya ji in front seat. In month of sept 2010, we were moving from Ahmadabad to Pali (Rajasthan) .Talk moving towards shamshan sadhana….usually Arifji have awake me , since I usually absorbed /felt in grip of mine thought. I tried to controlled it ,but it happens.

Am I not interested in shamshan sadhana, and wanted to do that…… he asked me,

yes I am …. I answered.

now my friends, in his words in coming lines, I am reproducing it (just for you)…

Small graveyard known as marghat and bigger one is as shamshan, the lord of marght is called as margheteshwer and for shamshan ..shamshan bhairav.., and one more power is there Dhoomralochan.. the sadhana and completed knowledge is must about them…

Why..? I asked.

Its must , unless ,I understand the difference between the doing sadhana in shamshan and doing sadhana in complete awake shamshan, till then no use. like doing some ritual in shamshan is ok, but doing sadhana in awake shamshan

sadhana is very ,very difficult procedure , and should not be attempted in any circumstances, this is not the place for just tamasha. Who says if effect not happened than side effect would not be the result. if you are rubbing figure over a sharp knife, what will be the out come..

Ok ,

These marghatshwar.. some are with no hand , some totally blind, some deaf, some have no feet, the deaf one is most dangerous, since digbandhan will not get effected by him, you will be killed as he did not listen your mantra..but how do I know that who is.. blind who is not…

Have patience now.. he smiled.

Like the same name "Marghateshwar" sadhana is also famous (do not get confused by that) successfully completed by any one ,has such an enormous power, lifting biggest rock is, just a play for him, but restriction is that he has to follow complete 1 month bramhacharya. And allowed to have physical relation with his own wife only two times in a month. But here, we are discussing Margheteshwer… those who attempted without his guru permission often get mad or died. So it's the field gurugamya. Do I know is there sadhana named like rakkshas, Daitya sadhana, Pishach sadhana, Lankadhipati sadhana.

I kept silence..

Till I know fully sadhana of "aasan khilne ki", complete digbandhan… I(Anu) should be keep a distance of that.

I knew digbandhan and suraksha chakra. And how to create it, I told him.

my dear brother is not so easy as it seems, suppose you circled the surakha chakra, and start the process, the dark forces out side that will not harm you its true, but what about the field inside the circle, definitely the forces already exists in that area will awake and what you would do..

I stunned.. is it true.?.

Why I should tell lie to you.

Have you know, there is kapaal sadhana, in that human head skull is fixed below the sadhak aasan, but its not true, not one but five such a kapaal is needed, and at the completion of that sadhana they would start talking.. one by one, any one who successfully complete the sadhana , will rule the world, but where are such a

sadhak.

Similar case with pisach Siddhi and maili vidya Siddhi, you have to do lower type of bad karama, if you want to keep the power with you, what type of that karma.. I asked. like gambling and sexual impurity..but people who practiced the sadhana and use for the harming other often get punished highly, not only they, but their children also get affected,

But why ,any one practiced that.. I questioned.

Just to check sadhak courage.. not any other cause…

But sadgurudevji, also published a sadhana named Pisach sadhana.. I told, that will not be the case he mentioned, the sadhana coming from Sadgurudev not having any such negativity ,if he clearly instructed. He assured me.

Fot Daitya sadhana, one should be the devotee of shiva, since understand the difference between that Daitya and rakkshas are two different category.

But you yourself completed the Dhoomavati sadhana but you did not mentioned any such things. I asked, Anu bhaiyya.. that sadhana of mahavidya stage and completed under Sadgurudev direction, and in front of ma Dhoomavati where even the bhramharakkshasa stands.

Oops now I knew.. but Why all such dangerous sadhana needed.?

Plz go through the old issue of mantra tantra yantra, in that Sadgurudev himself instructed An Guru brother(a shishya of sadgurudevji) to go for that, whole one complete article published , sadgurudevji mentioned in length ,why such sadhana is needed.

Yes I read that article .i remembered that such one experience of our gurubhai regarding shamshan sadhana appeared in "sadhak sakkshi hain" column.

I read the article but could not get pre information of such things happened . I sadly said.

Not one ,but many such sadhana organized by sadgurudevji. He told me, Anu bhaiyya.. this is not the things for that people are being called opening, kindly understand. Was it not sadgurudevji mentioned many times , comes to have direct contact with him, and in person contact with him leads to such a direct interaction with his wisdom.

Now I can understand what I(Anu) lost.. its true that now ,when I knew that what the activity happened under his divine blessing, where I just fulfill mine duty, that today 4 round of rosary completed, mine task completed… I sadly told.

To get diksha is very easy but to become his shishya.. is like walking on a sharp knife… you have to be the shishyas of great Paramhansa Swami Nikheleshwaraanand ji is not so easy, you have to devote whole life……

So I request you all without having proper diksha and completed knowledge of this sadhana and under the guidance of Sadgurudev or expert please do not tried for this. This could be deadly.

I (Anu) am remembering one incident one of our senior gurubhai told me in person , sharing with you that

Now in his own words……..

Once, some one told him to do shamshan sadhana, he refused it but later he became ready. Just for providing assistance to his friend, who ,no not , where he get the mantra. he was standing near his friend in shamshan in dark night ,within 15 minutes , whole shamshan was having great wind flown ,every where, shouting sound came, remember they even not made any circled ghera (surakksha chakra or performed any other ritual).

He told me. Anu bhaiyya, it seems like 20/30 people standing near to us but not visible to us, my friend is in grip of his fear , his teeth get sounds, and it seems like anu max happened to him, even I, knew not any procedure to save him .in mid of puzzle, I cried with folded hand to sadgurudevji, hame bachao.. (pls protect us). Suddenly the big blast happened like thousand sun rays appeared. And within in minutes, everything again calm like nothing happened. I personally sent my un cautious friend to his home, next three years he did not comes out from his home, on seeing me, he always cried bhaiya roco roco,(brother please stop, stop). People of mine village understood that I did the things to mine friend.

When he (guru bhai) personally meet sadgurudevji, narrated whole story to him, sadgurudevji was very angry asked him… why he was there in shamshan.. he replied , just with the friend. Sadgurudev ji (very angry)slept him. Tu tamasha dekhne ke liye gaya tha. Kya wo tamasha ki jagah hain.(you went there for any show, is that is place for that). Now you saved because of mine diksha , but your friends ….

With 3 years his friend died.”

Anu bhaiyya kahan ho.. aarif bhai asking me.

I do not know… I smiled. i opened the door of car. We both stand taking each other hands. he smiled.

I am really lucky to have friend like you……..

Smile

Important information :(Regarding free e magazine)

now the number of follower of our blog , just reaching our first magic figure 100. or till this post publish, more than that. on this happiest moment , i inform you that Arif ji planning a Free e magazine for all the follower register (off course that is free too) in this blog. this 20 to 30 pages mag will cover astrology, tantra, mantra, yantra and sun science, ayurved and off course parad science. and this will not be a magazine for discussing the topic but will contain the sadhana what he get directly from sadgurudev ji and our sansayasi guru brothers. Not only this but, as the follower number increases , the free e magazine pages will be increases , like on reaching next 25 follower , 4 page will be added .. this will be the rule. again i would like to make it very clear to all of you mine fellow guru brother and sister is that, we are just your guru brother nothing more than that and we all ,always be the shishya. What more luck and blessing can be of us .what we got with the blessing of sadgurudevji and his sanyasi shishyas and our own little experience in this great divine field, just providing in your kind heart and hand, keeping in mind that sadgurudevji divine knowledge is not just our property, sadgurudevji is for every one,

and if you find it a single percent benefit for your life. this will be our offering to the divine holy feet of our sadgurudevji. depending on your response, that e magazine will be bi monthly or quarterly be decided .

Safety in Alchemy

प्रिय मित्रों ,

इतना कुछ alchemy science के बारे में लिखा जा रहा हैं इस ब्लॉग के माध्यम से, परहमेशा की तरह किसी भी विज्ञानं के आधार भूत सावधानिया नहीं भूलना चाहिए , इसलिए इस पोस्ट को हिंदी में अनुवादित कर

के आपके समक्ष पुनः यह रखा जा रहा हैं.

1. ये विज्ञानं या इसकी क्रियाये हमेशा किसी भी कुशल मार्ग दर्शक /विशेषज्ञ के निर्देशन में ही की जाना चाहिए , अन्यथा थोड़ीसी असावधानी आपके जीवन के लिए खतरा भी हो सकती हैं .
2. किसी भी तरह से पारे या पारा का भक्क्ष्ण नहीं करे क्योंकि ये बेहदधातक जहरीला पदार्थ हैं ,सबसे पहले पारे को संस्कारित करके एक स्टारतक लाना पड़ता हैं जिसे पारद कहते हैं ,और फिर उसे बीज जारित पारदभस्म को केबल पाने गुरु के मार्ग निर्देशन में कब और कितन ओर कैसेखाना हैं . करना चाहिए, किसी भी हालत में आप ये कोशिश स्वयं न करे,इसे हमेशा ध्यान रखे ही.
3. यहाँ इस ग्रुप /ब्लॉग तो इस दिव्य विज्ञानं के बारे में अवगत ओरपरिचित करा रहा हैं .बिना किसी भी कुशल निर्देशन के इसकोकरना धातक हो सकता हैं .
4. सिद्ध पारद का मतलब , वह पारा जो की शुद्ध हो ,अर्थात पुर्णतः अशुद्धियाँ रहित हो, और आप निम्लिखित सावधानी तो हमेशापालन करे ही.
.

कृपया बारम्बार ये ध्यान रखे की mercury या पारा के शुद्धिकरण से सम्बंधित कोई भीप्रक्रिया में ,जब तक आपको इस बारे में अत्याधिक अनुभव न हो गया हो ओर सम्बंधितसारे उपकरण न हो , आपको आगे नहीं बढ़ना चाहिए .पारा कोई रसोई घर में काम आनेवाली वस्तु नहीं हैं . खुले हांथो से मतलब सीधे ,बिना दस्ताने पहने इसे स्पर्श न करें ,आपको ये मजाक में लगेगा परन्तु धीरे धीरे ये इकठ्ठा हो कर एक हानिकारक स्तर तकपहुच जायेगा .यदि ये कहीं गिर गया हैं तो इसे तत्काल इकठ्ठा कर ले यदि इसकी थोड़ी सीमात्रा गिरी हैं तो इसे स्पंज के माध्यम से इकठ्ठा कर सकते हैं.
किसी भी जल से भरे जार में ,ऐसा पारा को इकठ्ठा करके जो की उपयोगमेंनहीं हो सकता हैं ,इकठ्ठा कर ले ,अच्छे से जार को बंद करके एक तरफ रख लेऔर इसे सिंक में फेकने की अपेक्षा किसी भी स्क्रैप व्यापारी को बेच सकते हैं.इसी तरह की प्रक्रिया किसी भी टूटे हूए थर्मामीटर के पारे ओर कांच के बारेमें भी कर सकते हैं.ध्यान रहे इसकी आंशिक ठोस जैसा दिखने के बाद भी ये विस्फोटक और इसकी अद्रश्य धूम्र बेहद हानि कारक होती हैं .

अब असिड (ACID) या अम्ल के बारे में बात करते हैं .
हमेशा अम्ल को पानी /जल में मिलाना चाहिए , कभी भी इसका उलटा यानि जल को अम्ल में न मिलाये .
ऐसा क्यों ..
ऐसा इसलिए हैं की पानी/जल किसी भी तेज अम्ल के संपर्क में आकर बहूतकी जल्दी से गरम हो कर चारो तरफ उच्च्लने लगता हैं ,जिससे की किचेन मेंउपस्थित आप को नुक्सान हो सकते हैं .

तो इसलिए अम्ल /असिड को बहुत ही सावधानी से धीरे धीरे जल में मिलानाचाहिए.

यदि अम्ल /असिड के बिना काम नहीं चल सकता हैं तो अम्ल को पूर्णसावधानी से इस्तेमाल करे . अपने लिए face visior (कारखाने में उपयोगकिये जाते ,चेहरा को बचने वाला उपकरण) ,रबर के दस्ताने , प्लास्टिक यारबर के apron का उपयोग करें ही , आप को ये सब अजूबा लगेगा पर उससेतो अच्छा होगा यदि असावधानी से आपके चेहरा जल जाये.

यदि आप hydrofluoric acid /अम्ल प्रयोग में लाते हैं तो आपको अत्याधिक सावधानीका पालन करना चाहिए ही. यदि यह आपकी त्वचा पर गिर जाये तोबहुत ही मुस्किल होगा इसका प्रभाव ख़त्म करना . और बेहद जव्लन युक्त होगा .

इसी तरह से Glacial acetic acid's इसकी धूम्र /धुआं फेफड़ों के अंदर के tissue cell जला देता हैं , आप खुद ही सोच सकते हैं की इसकी धूमका क्या परिणाम होगा.

ये केबल एक्स्ट्रा स्ट्रोंग वेनेगर ही नहीं होगा , किसीभीअसावधानी वश साधारण से असिड आपकी त्वचा पर कभी गिर जाये तो घबरायेनहीं तल्कल उस पर जहाँ ये गिरा हैं ठंडा पानी लगातार डाले .

यदि आप कोई आधुनिक रसायन शास्त्र से सम्बंधित हैं तो कोई भी neutralising agent. बनाने के बारे भी न सोचे .सन ४० के दशक मैं एडिन्बर्घ विश्वविद्यालय के ORGANIC CHEMEISTRY के प्राध्यापकमहोदय की आंखोंमें सल्फुरिक अम्ल गिर गया.केबल अपने छात्रों को बताने के लिए कितना neutralising agent जरुरी होगा इसका असर समाप्त करने की लिए ,उन्होंने अम्ल का प्रभाव तो असरहीन कर दिया पर उन्हें अपनी आखं भी खोनी पड़ी . ठन्डे जल का अपना ही असर ही होता हैं .
यदि फिर से अम्ल गिर गया हैं तो परेशान न हो अपने पास एक विशेष प्रकार की मिटटी बिना उपयोगी की हूए मिटटी जिसे kitti litter कहा जाता हैं रखे ,यदि आपकेपास neutralising agent हैं जैसे bicarbonate of soda, या चाक इसे आराम से गिरे हूएफर्श पर डाल दे . इसके बाद आप इसपर kitti litter डाल दे . जबताके ये पूरी तरह सेअवशोषित न कर ले . रबर के दस्ताने पहिन कर , इसे अच्छे से साफ कर के प्लास्टिकdust bin में डाल दे. इस पुरे मत्रिअल को प्लास्टिक के बैग में डाल कर कहीं जमीं में दवादे . फिर उस फर्श की जगह को अच्छी तरह से पानी डाल डाल कर गीले कपडे / mop सेसाफकर ले आसाह हैं की कोई भी ये ध्यान न रखेगा की क्या अभी थोड़ी देर पहले हूआ था .
यदि आपको कभी असिड को मिलाना पड़े ही तो , असिड को हमेशा पानी में हीमिलाना चाहिए के नियम का उल्लघन किया जा सकता हैं . चेहरा को बचाने वाला औरदस्ताने , उपकरण धारण करे. ठन्डे पानी का नल को

इतना तेज से खोल दे कीपानी उछले नहीं . धीरे धीरे बहुत कम मात्रा अम्ल की पानी में मिलाये ., बहुत ही धीरे से. सावधानी से , आप सुरक्षित रहेंगे ही .
अब में सोचता हूँ की आप ये सावधानी रखेंगे तो आप सुरक्षित अपने प्रक्रिया के दौरान रहेंगे ही
****

Dear brother,
Before replying to your question, first I want to make it clear on, certain points
1. *Alchemy Science or Alchemical process and should be learned under the guidance and close supervision of an expert of this science otherwise it would become very danger for life.*
2. One should not consumes/eat parad (parad ka bhakshan) since it's a very toxic element .at first parad should be converted to samsakarit stage up to a level and be converted to Ash (beej jarit parad ki bhasm) as per guru supervision . Only then, when and how much quantity is to be consumes is only prescribed by guru (A master).
3. The aim and objective of this Nikhil_Alchemy group`/blog is only to aware and introduction of this divine science .without proper supervision and carefulness all the process described in this book, here could turn to very harmful.
4. Siddh parad simply means that is not impure and should not be proved harmful /dengor to ones body.
Be carefull my dear brother.

plz point out and **AGAIN and AGAIN** read this massages. .... ok
MERCURY. Beware of any process involving distillation of mercury unless you have had extensive training in such techniques and possess a fume hood and relevant equipment.
Mercury is no substance for the kitchen table chemist! Never handle it with bare hands. It may be fun but you'll absorb small amounts which accumulate until they reach harmful levels. Should you spill any, collect it immediately,you can absorb it in small quantities using a sponge. Squeeze the metal from the sponge into a jar
containing some water, cover, and set aside. Do not dispose off down the sink, try selling to a scrap dealer instead. Same applies with broken thermometers, sponge up any spillage and put the lot, along
with broken thermometer bits, into your water jar. Remember that despite its apparent solidity mercury is highly volatile and you can easily inhale the toxic fumes.
...........oh... ACIDS.
Never forget the old dictum inscribed on Enoch's
pillars (maybe) and in every sane textbook.
ADD ACID TO WATER...NEVER WATER TO ACID!

Why? The water will heat up rapidly in contact with the denser acid and things will start spurting around your wife/mother's kitchen and all over YOU. And do add that acid very slowly to the water with full precautions.
Can't do without acids but handle them with care. Wear a full
face visor, (you can buy those as industrial face protectors), rubber gloves, and a plastic or rubber apron. You'll look odd but not half as much as you would with half your face burned off! If you must use
hydrofluoric acid be especially careful, this stuff can eat through glass. If it gets on your skin it is very difficult to remove completely and can cause severe ulceration. Glacial acetic acid's fumes are enough to spot preserve living tissue cells, imagine what it will do to the inner lining of your lungs if you inhale it.

It's not just extra strong vinegar. Should you accidentally splash any
acid on your bare skin don't panic, wash it away immediately with lots of cold running water. If you're a chem freak don't even think about preparing a neutralizing agent. The professor of inorganic chem. Is tryat the University of Edinburgh in the late 40's had a drop of sulphuric acid spurt into his eye. To show off to his students he calculated the relevant amount of neutralising agent required and washed the acid out.
He neutralised the acid O.K. but lost his bloody eye! Cold water, running fast O.K.?
If you spill the stuff once again don't panic. Keep a bag of kitty litter
around, unused naturally. If you've a neutralizing agent handy such as bicarbonate of soda, or even
ground chalk, scatter this liberally over the acid. No matter what you do you've ruined the floor already .Scatter kitty litter very liberally over the neutralized acid until it's all absorbed. Put on those rubber
gloves and carefully sweep the lot into a plastic dust pan. Pour into a plastic bag, and dump. Wash what's left off the floor area very thoroughly with a squeeze mop and lashings of water and hope nobody notices the mess that's left. Blame it on the cat. If you must dispose of acid the acid to water rule can be suspended. Put on that visor and the gloves and get your cold water tap running fast, but not spraying around. Very carefully and slowly trickle small quantities of your acid into the water, be very .very slow and careful with this process and you'll be all right.
i know if u use this all tips so u safe dear in ur procedure. ......ok

NAVRATRI SADHNA- BHAGVATI DURGA KAALI KALP SADHNA

जय सदगुरुदेव ,

या देवी सर्व भूतेषु शक्ति रूपेण संस्तिथा
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ....

भाइयो बहनों आप सभी को गुडी पड़वा एवं नववर्ष की शुभकामनायें........
हिंदी पंचांग के अनुसार चैत्र के प्रथम दिवस से ही नया वर्ष माना गया है. वैसे हम सब के लिए ये दिवस अति महत्वपूर्ण हैं क्योंकि आदिशक्ति के सिद्धि दिवस मानव जीवन को पूर्णता प्रदान करने हेतु ही हैं . माँ की आराधना, उपासना, साधना ही नव रात्रि को पूर्णता देता है इस सम्पूर्ण प्रकृति उल्लासित और हर्षित दिखाई देती ऐसा प्रतीत होता है जैसे कि सारी प्रकृति ही प्रकृति माँ आदि शक्ति मूर्तरूप के स्वागत हेतु चैतन्य होकर भक्तिभाव और पूर्ण श्रद्धा से, अपना पूर्ण श्रृंगार कर खड़ी है
इस समय का इंतजार हम तो क्या देवता भी बड़ी बेसब्री से करते हैं. इन दिनों माँ आदि शक्ति का पूर्ण चैतन्य होकर सम्पूर्ण प्रकृति पर विस्तार होता है.
भाइयो बहनों वैसे तो माँ अनेक नामों से स्तुत्य है किन्तु उनके सोलह नाम विशेस हैं जो नाम के अनुरूप अर्थ और विशेषता को उजागर करते हैं-----
दुर्गा, नारायणी, ईशाना, विष्णुमाया,शिवा, सती, नित्या, सत्या,भगवती, शर्वाणी, सर्वमंगला, अम्बिका, वैष्णवी, गौरी, पार्वती, और सनातनी.
अब मैं आप सब को इन नामों का परिचय और अपनी बुद्धि और ज्ञान के आधार पर बता रही हूँ ....

दुर्गा—अर्थात 'दुर्ग' शब्द दैत्य, सांसारिक बंधन, कर्म, शोक,महाविघ्न,दुःख, नरक ,जन्म यमदंड , महारोग और महाभय वाचक है और 'आ' शब्द हन्तात्मक . अतः इन सबका हनन करने वाली या नाश करने वाली ....

नारायणी- शक्ति यानि दुर्गा नारायणी जो यश,तेज, गुण,रूप आदि में नर के समान व्यापनशील होने के कारन ही वे नारायणी हैं ....

ईशाना- सर्वसिद्धि का वाचक ईशान तथा दात्रवाचक आ से बना ईशाना यानि दुर्गा ही सर्वसिद्धिदात्री हैं ....

पूर्वकाल में विष्णु ने माया का सृजन किया जिससे सारा विश्व विमोहित हो गया अतः उस शक्ति की अधिष्ठात्री विष्णुमाया के नाम से विख्यात हैं ...

शिवा—शिव की प्रिया जो शिव में ही कल्याणप्रदा शिवदा हैं वही शिवा हैं क्योंकि आ वाचक शब्द दात्री होने के साथ ही प्रिय को भी दर्शाता है .....

सती—प्रत्येक युग में जो सद्बुद्धि की अधिष्ठात्री के रूप में शतवर्त्तमान है वही सती है....

नित्या—नित्य भगवान् के समान ही वे भी नित्या हैं, शाश्वत हैं. प्राकृत और प्रलय के समय भी उनका अंत नहीं होता अपितु वे स्वयं की माया के द्वारा ही ईश्वर में विलय हो जाती हैं ....

भगवती—भग ऐश्वर्य अदि से समृद्ध देवी भगवती हैं ...

शर्वाणी—जन्म, मृत्यु, जरा देने वाली होकर भी वे मोक्षप्रदायनी है यानी शर्वाणी हैं ...

सर्वमंगला—मंगल मोक्ष्वाचक है तथा आ दात्री वाचक होने के कारन सभी के लिए मोक्षदा दुर्गा सर्व मंगला कहलाती हैं ...

अम्बिका—अम्ब मातृ, पूजा, वंदन आदि का सूचक है अतः माँ का एक नाम अम्बिका भी विख्यात है ..

वैष्णवी--- विष्णु की शक्ति, विष्णु द्वारा सृजित देवी हि वैष्णवी हैं.

गौरी--- यानि निर्मल, निर्लिप्त,परब्रह्म तथा पीत का वाचक गौर है तथा सभी के गुरु यानि जगत गुरु की,शिव की प्रिया हि गौरी हैं ....

पार्वती--- पर्वत पर आविर्भूत होने के कारण वे पार्वती हैं तो, पर्वभेद,तिथिभेद, कल्पभेद होने के कारन या पर्वन यानि महोत्सव की अधिष्ठात्री होने के कारण भी वे पार्वती हैं...

इस प्रकार माँ के सोलह नाम सार्थक तथा सटीक हैं जो देवी के महात्म को प्रतिपादित करते हैं .

माँ दुर्गा की पूजा का उल्लेख तो कृष्ण द्वार की गयी पूजा से ही मिलता है जो कि कृष्ण ने गोलोक में, और वृन्दावन के महारास में की थी. इसके बाद मधुकैटभ के भय से पीड़ित ब्रहमा ने, त्रिपुर से प्रेरित त्रिपुरारी शिव ने और दुर्वासा के शाप से भ्रष्ट इंद्र ने दुर्गा पूजा संपन्न की थी . और इसके पश्चात् ही ऋषियों, मुनियों, देवों, गणों, तथा मनुष्यों के द्वारा माँ दुर्गा की पूजा की जाने लगी....

भाइयो बहनों माँ दुर्गा ही समस्त अभीष्ट को पूरा करने वाली और समस्त दुखों का नाश करने वाली है ... यही कारण है की नव रात्रि के दिनों में माँ के जिस रूप की भी आराधना करो प्रतिफल तो मिलता ही है ......

जन सामान्य भक्ति को प्रमुखता देते हैं किन्तु एक साधक भक्ति के साथ पूर्ण दृणता, और अपने अभुदय को पा लेने की जिद के साथ साधना संपन्न करता है , और वही तो है साधक, यही तो तंत्र है , यदि जिद नहीं तो तंत्र नहीं..... और बिना तंत्र के जीवन चल ही नहीं सकता....अतः पूर्ण तांत्रिक विधि विधान से ही साधना में पूर्णता प्राप्त हो सकती है ..... है न

जीवन के विविध मनोरथ और उनसे जुडी प्रथक प्रथक साधनाएं कहीं नौकरी प्राप्ति की मनोकामना है,कहीं व्यापार को चरम शिखर पर ले जाने की चाह,कहीं प्रेम में विश्वासघात हुआ है तो कही प्रेम के अधूरेपन को पूर्ण करने की प्रबल कामना,कही मनोवांछित विवाह की अभिलाषा है तो कही पर आर्थिक उन्नति की कामना,कहीं रोगों से मुक्ति चाहिए तो कही अकाल मृत्यु के भय का नाश,कही अष्टादश सिद्धि के रहस्यों के प्राप्ति का कौतुहल मष्तिष्क में है तो कही भगवती की कृपा प्राप्ति का परम लक्ष्य,कही सम्मोहन पर नियंत्रण चाहिए तो कही मनोवांछित साधना में सफलता,तब ऐसे में प्रथक प्रथक साधना क्यूँ करना. मात्र इसी **भगवती दुर्गा काली कल्प साधना** जो की सभी रूपों का समन्वित स्वरुप है. को संकल्प लेकर और अपनी मनोकामना की पूर्ती की प्रार्थना कर साधना करने पर साधक को अभीष्ट प्राप्त होता ही है.

तो हो जाओ तैयार इस नवरात्री में साधना हेतु.....

पूजा हेतु सामग्री---- माँ दुर्गा का सुन्दर चित्र , या विग्रह या यंत्र, बजोट,लाल कपडा बिछाने हेतु , दीपक तेल या घी का जो साधनाकाल में प्रज्वलित रहे , आप चाहें तो अखंडदीप भी लगा सकते हैं .. ये आपकी स्वेच्छा है .

माँ की पूजा या साधना में घट यानि कलश का विधान होता है अतः कलश स्थापन हेतु ... एक ताम्बे या कांसे या स्टील का लोटा , एक सुपारी एक सिक्का और चावल फूल लोटे में डालें और जल में थोडा गंगाजल मिला कर कलश आधा भरें फिर आम के पांच, सात या नौ पत्ते कलश में डालकर नारियल में लाल कपडा लपेटकर कलश पर स्थापित करें.... **शेष गुरुदेव की किताब दैनिक साधना विधि से स्थापन कर लें**. लाल आसन, लाल धोती, महिलाएं साड़ी या लाल सूट पहन सकती हैं ,उत्तर या पूर्व दिशा

भाइयो बहनों वैसे तो सभी को दुर्गा पूजा के विधान पता है जिसके द्वारा प्रायः हम सभी अपने अपने घरों में भगवती का पूजन करते हैं और ये ज्यादा श्रम साध्य भी नहीं हैं,यन्त्र या चित्र का स्थापन कर भगवती के मनोहारी स्वरुप का **ध्यान** करें **-**

नमामि भक्त वत्सला दश वक्त्र गीताम्

का **११ बार** उच्चारण करें और उन्हें आवाहित करे तत्पश्चात कर उन्हेंअक्षत,हल्दी, कुमकुम, सिंदूर, अबीर गुलाल, चन्दन, गंगाजल,इत्र,धूप,दीप, फूल, पान, सुपारी, लौंग इलाइची, नारियल, कपूर, और खीर का नैवेद्य समर्पित करना है, और इस हेतु आप निम्न मंत्र के मध्य में दिए खाली स्थान में सामग्री का नाम लेते हुए पदार्थ अर्पित कर सकते हैं.

ॐ भगवती जगदम्बिकायै चरणकमले ....समर्पयामि
पदार्थ समर्पण के बाद निम्न मन्त्रों से न्यास करें.

करन्यास

क्लीं अङ्गुष्ठाभ्यां नमः

क्लीं तर्जनीभ्यां नमः
क्लीं मध्यमाभ्यां नमः
क्लीं अनामिकाभ्यां नमः
क्लीं कनिष्टकाभ्यां नमः
क्लीं करतल करपृष्ठाभ्यां नमः

हृदयादिन्यास

क्लीं हृदयाय नमः
क्लीं शिरसे स्वाहा
क्लीं शिखायै वषट्
क्लीं कवचाय हूं
क्लीं नेत्रत्रयाय वौषट्
क्लीं अस्त्राय फट्

फिर निम्न मंत्र का ९ माला जप शक्ति माला,हकीक माला,रुद्राक्ष माला,कमलगट्टे की माला या मूंगा माला से करना है.

ॐ दुर्गायै क्लीं श्रियै क्रीं सिद्धिं देहि देहि फट्.

OM DURGAAYAI KLEEM SHRIYAI KREEM SIDDHIM DEHI DEHI PHAT.

जप के पश्चात मंत्र माँ भगवती के श्री चरणों में अर्पित कर उनसे मनोकामना पूरी होने की प्रार्थना कर उठ जाए और उठते हुए १ आचमनी जल अपने आसन के नीचे डाल कर आसन को प्रणाम कर उठ जाएँ.ये क्रम पूरी नवरात्रि भर रखना है. हाँ एक महत्वपूर्ण तथ्य अवश्य ध्यान रखे की **इस साधना में मंत्र जप के पूर्व और बाद में कुंजिका स्तोत्र का १-१ बार अवश्य पाठ कर लें.**ताकि पूर्ण सफलता असंदिग्ध हो.

सिद्ध कुंजिका स्तोत्र –

कुन्जिका स्तोत्रं

शिव उवाच

श्रुणु देवि प्रवक्ष्यामि कुंजिकास्तोत्रमुत्तमम्।
येन मन्त्रप्रभावेण चण्डीजापः भवेत्॥1॥
न कवचं नार्गलास्तोत्रं कीलकं न रहस्यकम्।
न सूक्तं नापि ध्यानं च न न्यासो न च वार्चनम्॥2॥
कुंजिकापाठमात्रेण दुर्गापाठफलं लभेत्।
अति गुह्यतरं देवि देवानामपि दुर्लभम्॥ 3॥
गोपनीयं प्रयत्नेन स्वयोनिरिव पार्वति।
मारणं मोहनं वश्यं स्तम्भनोच्चाटनादिकम्।
पाठमात्रेण संसिद्ध्येत् कुंजिकास्तोत्रमुत्तमम् ॥4॥

अथ मंत्र

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे। ॐ ग्लौ हुं क्लीं जूं सः
ज्वालय ज्वालय ज्वल ज्वल प्रज्वल प्रज्वल
ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे ज्वल हं सं लं क्षं फट् स्वाहा

॥ इति मंत्रः॥

नमस्ते रुद्ररूपिण्यै नमस्ते मधुमर्दिनि।
नमः कैटभहारिण्यै नमस्ते महिषार्दिन ॥1॥
नमस्ते शुम्भहन्त्र्यै च निशुम्भासुरघातिन ॥2॥
जाग्रतं हि महादेवि जपं सिद्धं कुरुष्व मे।
ऐंकारी सृष्टिरूपायै ह्रींकारी प्रतिपालिका॥3॥
क्लींकारी कामरूपिण्यै बीजरूपे नमोऽस्तु ते।
चामुण्डा चण्डघाती च यैकारी वरदायिनी॥ 4॥
विच्चे चाभयदा नित्यं नमस्ते मंत्ररूपिण ॥5॥
धां धीं धू धूर्जटेः पत्नी वां वीं वूं वागधीश्वरी।

क्रां क्रीं क्रूं कालिका देविशां शीं शूं मे शुभं कुरु॥6॥
हुं हु हुंकाररूपिण्यै जं जं जं जम्भनादिनी।
भ्रां भ्रीं भ्रूं भैरवी भद्रे भवान्यै ते नमो नमः॥7॥
अं कं चं टं तं पं यं शं वीं दुं ऐं वीं हं क्षं
धिजाग्रं धिजाग्रं त्रोटय त्रोटय दीप्तं कुरु कुरु स्वाहा॥
पां पीं पूं पार्वती पूर्णा खां खीं खूं खेचरी तथा॥ 8॥
सां सीं सूं सप्तशती देव्या मंत्रसिद्धिंकुरुष्व मे॥
इदंतु कुंजिकास्तोत्रं मंत्रजागर्तिहेतवे।
अभक्ते नैव दातव्यं गोपितं रक्ष पार्वति॥
यस्तु कुंजिकया देविहीनां सप्तशतीं पठेत्।
न तस्य जायते सिद्धिररण्ये रोदनं यथा॥

**। इतिश्रीरुद्रयामले गौरीतंत्रे शिवपार्वती
संवादे कुंजिकास्तोत्रं संपूर्णम् ।**

अब रही बात समय की तो ये चूँकि नवरात्री है तो आप ये न सोचें की सिर्फ रात्रि में ही करना है, इन दिनों को चौबीस घंटों को ही गिना जाता है अतः अपनी सुविधा के अनुसार साधना करें....किन्तु साधना अवश्य करें...

प्रति दिन गुरु,गणेश और भैरव पूजन करना अत्यंत अनिवार्य है . सुबह या शाम किसी भी एक समय **नवार्ण मन्त्र** और उपरोक्त मंत्र की११-११,२१-२१ या ५१-५१
आहुति किसी पात्र में आम की लकड़ी जला कर, घी और हवन सामग्री से अवश्य दें हो सके तो उसमें काले तिल राल गूगल आदि भी मिला लें ....

अष्टमी को पूर्ण आहुति कर खीर पुडी का भोग बना कर किसी कन्या का पूजन अवश्य करें और उसे उचित दक्षिणा भेंट देकर प्रसन्नता से विदा करें.....

“निखिल प्रणाम”

TANTRA DARSHAN - SIDDH KUNJIKA STOTRA KE GUPT RAHASYA(PAARAD TANTRA AUR DURGA SAPTSHATI)

मित्रों, इस अद्भुत स्तोत्र के रहस्य कों उजागर करने के पूर्व, मै आप लोगो से कुछ तथ्य बांटना चाहता हू जो मेरे अपने अनुभवों में से है, कैसे मुझे ज्ञात हुए ये पूज्यपाद सदगुरुदेव जी का आशीर्वाद तो सदा से मुझ पर रहा है इसमें कोई नयी बात नहीं, और ना केवल मुझ पर अपितु हम सभी इस बात का अनुमोदन करेंगे की उनका आशीर्वाद सदेव हम सभी पर है ही. सदगुरुदेव जी ने दुर्गा सप्तशती की महत्ता के बारे में कई बार मंत्र तंत्र यन्त्र विज्ञान पत्रिका में उल्लेख किया है. (वैसे ये एकमात्र उन तांत्रिक ग्रंथो में से है जो मूलरूप में आज भी हमारे समक्ष है) परन्तु मैने उन पूर्व अंको की तरफ कभी खास ध्यान ही नहीं दिया. सिर्फ पढ़ लिया करता था. असल में तो मै उसे हलके में ले लिया करता था. मै उनके दिव्य शब्दों की महत्ता कों नहीं समझता था, नहीं समझ पाया था उन बोलो कों जिस पर वे हमेशा जोर दिया करते थे. मैंने इस दिव्य ग्रन्थ कों मात्र माँ दुर्गा की स्तुति और एक कहानी जिसमे माँ भगवती असुरों से युद्ध करती है और जो संस्कृत में प्रकाशित है. बस, इससे ज्यादा और कुछ नहीं... मरे कई गुरु भाइयो ने मुझे बताने की कोशिश की इस ग्रन्थ के बारे में, परन्तु में स्तोत्र वोत्र में इच्छुक नहीं था कभी. मंत्र और साधना में ही मेरी रूचि थी. कभी इस पर ध्यान ही केंद्रित करने का नहीं सुझा.

पर वो जो सदगुरुदेव पर निर्भर है, फिर कैसे भला वे छोड़ देते अपने बच्चे कों इस भटकन भरी जिंदगी में, भले ही बात छोटी हो या बड़ी.. और फिर वो दिन आया जब मै पहली बार **आरिफ जी** से मिला (वह कहानी कभी और बताऊंगा शायद आगे आने वाले समय में) उन्होंने मुझे एक महान तत्र मंत्र के साधक के बारे में बताया जो अब तक जीवित अवस्था में वाराणसी में रहते है. वे अब तक अपनी वही तरुणावस्था की ऊर्जा कों बरकरार रखे हुए है अपनी ९० साल की आयु में भि.. मै यकीन ही नहीं कर पाया की वे सच कह रहे है. उन्होंने मुझे कई बार उनसे मिलने के लिए कहा परन्तु समय निकलता गया और ऐसे करते करते ४ महीने बीत गए. सच कहू तो मै उनके आग्रह के पीछे की भाव भूमि कों समझ ही नहीं पा रहा था. उनसे मिलने की बात कों हलके में ले रहा था.

जेसा की मैंने ऊपर बताया की मेरे अपने संकोच के कारण मै यही सोचता था की जब सदगुरुदेव जी है तो किसी और की क्या आवश्यकता. कही और क्यों जाना... पर उन्होंने कहा की सदगुरुदेव जी ने हमें कभी नहीं कहा या रोका कही और से ज्ञान बटोरने के लिए अगर वे प्रामाणिक सिद्ध साधको की श्रेणी में आते है तो, उन्होंने हमें कभी बाँध के नहीं रखा अपितु उन्होंने हमें हमेशा स्वछन्द श्वास लेने के लिए कहा. सो एक दिन मै बनारस चला गया, वैसे तो मै बहुत ही बेचैन था क्युकी आरिफ जी ने मुझे पहले से ही कहा था की भैया वे तो ऐसे व्यक्ति है जो कुछ मिनटों में तोल लेते है की कोन कितने पानी में है. मुझे लगा की तो हो सकता हे की मै भीकुछ मिनटों में बाहर आ जाऊ.. इसीलिए पुरे प्रवास में सतत सदगुरुदेव जी से प्रर्थना करते हुए आ रहा था की इस् उद्देश्य से यह मेरा पहला प्रवास है तो आप मुझे इसमें सहायता कीजिए. यहाँ तक की वह पहुचने पर उन मंदिरों शिवालयों में दर्शन करने पर भी मै यही प्रार्थना में लगा रहा की मुझे सफलता प्रदान करे.

उस साधक ने मेरा स्वागत किया. उनके मुखमंडल का तेज और तरुणाई की उर्जा अब तक झलक रही थी. परन्तु मै तो नर्वस था ही इसीलिए कुछ बोल ही नहीं पाया. मैंने देखा कुछ ही मिनटों में वे मुझ से खुल कर बातचीत करने लगे. उसके बाद तो उन्होंने मेरे कई सवालों के जवाब दिए. (उसमे कई मूर्खतापूर्ण भी थे) पहली ही मुलाकात में हमने अनेक विषयो पर जेसे साधना, तंत्र, मंत्र और निश्चित ही दुर्गासप्तशती पर भी बातचीत करी. बातों बातों में पाता ही नहीं चला की कब ६ घंटे बीत गए. उन्होंने इस् दिव्य ग्रन्थ के बारे में मेरी धरणा कों बहुत हद तक दूर करी. साथ ही साथ नवीन रहस्यों कों भी उजागर किया मेरे सामने.. वह से लौटते हुए मै इस दिव्य ग्रन्थ कों खरीद लाया. और बाद में मैंने सदगुरुदेव और माँ दुर्गा से क्षमा याचना की अपनी अब तक की इस गलत धरणा के लिए और उपेक्षा भव रखने के लिए.. खैर देखा जाए तो ये एक और लीला ही थी सदगुरुदेव जी की मेरे प्रति की मै फिर सही ट्रेक पर चलने लगु.
आगे आने वाले लेखो में कुछ और रहस्यों कों उजागर करूँगा जो मुझे उनसे प्राप्त हुए. लगता हे मै कुछ ज्यादा ही बोल रहा हू तो चलिए मुद्दे पर पुनः लौटते है..

सिद्ध कुंजिका स्तोत्रं

फिर एक दिन मैंने उन्हें फोन किया (बनारस के उन महान साधक कों) और पुछा- की क्या कोई गुप्त सिद्ध कुंजिका स्तोत्रं भी है, जिस पर मै आपसे चर्चा करना भूल गया हू, फिर बड़ी ही सरलता से उन्होंने कहा की इन सब बातो पर समय और उर्जा मत गवाओ, और मेरा ध्यान दूसरी ओर केंद्रित करते हुए बोले की जो मैंने पहले बताया था उसे याद रखो. फिर मुझे लगा की उस स्तोत्र का कोई खास महत्त्व नहीं जब की इस दिव्य ग्रन्थ में तो इसके बारे में बहुत ही उल्लेख मिला.. फिर एक दिन मै और आरिफ जी एक विशेष चर्चा में गुम थे तो बात करते हुए मैंने उन्हें पूरा वृतांत सुना दिया. जब मैंने स्तोत्र सम्बन्धी बाते बताई तो सुनने पर वे सिर्फ हलके से मुस्कराए.. मैंने समझा की वे भी मेरे इस बात का समर्थन कर रहे हे. सदगुरुदेव के आशीर्वाद से हम दिव्य माँ शक्ति रूपा के पावन मंदिर में बैठे कुछ महत्वपूर्ण चर्चा में रत थे. हमारी चर्चा पारद विज्ञान के अमूल्य सूत्रों पर हो रही थी. मै भी सुन रहा मेरे कुछ गुरु भाईयो के साथ. और फिर अचानक उन्होंने "सिद्ध कुंजिका

स्तोत्र” के बारे में बोलना शुरू किया.. मै हतप्रभ रह गया की उस समय उन्होंने इस पर कुछ भी नहीं कहा और आज अचानक (मतलब, क्या मैने उस मुस्कान कों गलत समझ लीया था) सदगुरुदेव जी ने उन्हें इस् स्तोत्र की गुप्त कुंजी दि थी. तो कुछ पंक्तिय इसी संबंध में जो सदगुरुदेव जी के ज्ञान गंगा से उद्दृत हुई है आरिफ जी के मुख से –

“बहुत लोग हमारे प्राचीन शास्त्रों और ऋषि मुनियों के ज्ञान कों बहुत ही हलके में लेते है. वे जानते नहीं की प्रत्येक स्तोत्र अपने आप में गुढ अर्थ निहित है. और अगर उसे समझ लिया जाए तो फिर क्या असंभव है. अगर आप लोगो कों दयां हो तो सदगुरुदेव ने एक बार श्री सूक्त के अंतर्गत स्वर्ण निर्माण करने की विधि का उल्लेख किया था, हना ये उसका शाब्दिक अर्थ तो नहीं पर हे संकेत लिपि में बद्ध.(इसका भाषांतर अभी भी“स्वर्णसिद्धि” पुस्तक में लिखित है)”

“ऐंकारी सृष्टि रूपायै” अर्थात ऐंग बीज मंत्र की सहायता से कुछ भीनिर्माण किया जा सकता है, और जब मै कहता हू की कुछ भीमतलब कुछ भीही है... इसलिए जब खरल क्रिया करते हुए इस मंत्र का जाप किया जाय तो पारद में सृजन की शक्ति निर्मित हो जाती है (सदगुरुदेव जी ने भीइस बीज मन्त्र के बारे में बहुत वर्णन किया है) इस ऐंग मंत्र के द्वारा बिना गर्भ के बालक कों जन्म दिया जा सकता है. इस् क्रिया कों महर्षि वाल्मीकि ने त्रेता युग में सफलतापूर्वक प्रदार्शित किया था जब कुश(भगवन राम के पुत्र) का जन्म हुआ था. मै यहाँ प्रक्रिया तो नहीं परंतु पारद से इसका क्या संबंध है ये बताने का प्रयास कर रहा हू.

“ह्रींकारी प्रतिपालिका” अर्थात माया बीज, इस् भोतिक जगत में किसी भीधातु का रूपांतरण कर समस्त भौतिक सुखो का उपभोग किया जा सकता है. जब ह्रींग मंत्र का जाप रूपांतरण क्रिया के दौरान किया जाए तो सफल रूपान्तर संभव है. और इससे सफलता के प्रतिशत द्विगुणित भी हो जाते है.

“क्लींकारी काम रूपिणयै” अर्थात क्लीं बीज मंत्र आकर्षण के लिए होता है जससे बंधन क्रिया कों सफलता पूर्वक संपन्न किया जा सकता है. यह बीज साधक की देह कों दिव्य कर विशुद्द पारद सामान कर देता है. यह काम बीज आतंरिक अल्केमी में उपयोग होता है.. इस संबंधित कई साधनाए सदगुरुदेव ने दि है.

“बीजरूपे नमोस्तु ते” अर्थात यहाँ कहा गया है की मै नमन कर्ता हू इन बीज रूपी शक्तियों कों. हे पारद मै बीज स्वरूप में आपकी पूजा करता हू. ये इस् बात का भी प्रतीक है की मै ऐसा करके पारद कों बीज स्वरूप में पूज कर सिद्ध सूत का भी निर्माण करता हू. जिस से समस्त संसार की दरिद्रता का नाश हो सकता है. जो प्रत्येक रसायनशास्त्री का ध्येय हो सकता है.

“चामुंडा चंडघाती” अर्थात मृत्यु कों भी परास्त कर, अगर प्रत्येक संसकार कों सफलता पूर्वक संपन्न किया जाए तो इस से रोग रूपी मृत्यु पर भी विजय प्राप्त की जा सकती है, चंड यहाँ दानव का घोतक है. यहाँ “च”

शब्द नाश/मृत्यु हे जिसे पारद में प्रेरित कर ऐसा पारद निर्माण किया जा सकता हे जिससे अकाल मृत्यु, इच्छा मृत्यु प्राप्त की जा सकती है.

"च यैकारी वरदायिनी" अर्थात समस्त प्रकार के वरदान देने वाले पारद जो इस् सम्पूर्ण क्रिया का फल है.

"विच्चै चाभयदा नित्यम नमस्ते मंत्ररुपिणी " अर्थात समस्त प्रकार के आरक्षण इस पारद तंत्र विज्ञान में है इस विच्चै बीज में. इस से सभी प्रकार की विनाशकारी शक्तियों से आरक्षण प्राप्त किया जा सकता हे, अभयम अर्थात एक दिव्यता जहा भय वास ही नहीं करता और जो केवल इसी से संभव है.

"धां धीं धूं धूर्जटे" अर्थात समस्त प्रकार के प्रलयकारी शक्तियो कों इस से वश में किया जा सकता है. धुर्जटा शक्ति (जो शिव का ही एक रूप है) अर्थात ऐसे सम्पुटित पारद से हमारे समस्त दोष जो शत्रुवत है उनसे भी मुक्ति का मार्ग प्रशस्त हो सकता है.

"वां वीं वूं वागधीश्वरी" अर्थात जो माँ सरस्वती से संबंधित है. (ज्ञान की देवी) मैंने वही रोक के पूछा क्यों - यहाँ माँ सरस्वती पारद से कैसे संबंधित है ? आरिफ जी बोले, भैया क्या आपने कभी ध्यान दिया सा + रस + वती . यहाँ पारद कों रस कहा है (अब मुझे समझ आया की प्रत्येक देवी के नाम में एक गुप्त अर्थ छुपा है)

"क्रां क्रीं क्रूं कलिका देवी" अर्थात बिना माँ काली के, जो काल की देवी है, और निश्चित काल के बिना केसे हम पारद संस्कार कर सकते हे अपितु हम तो सभी काल के बंधन में है. इसीलिए उनकी कृपा से ही पारद के द्वारा काल पर विजय प्राप्त की जा सकती है. इसीलिए इस् बीज मंत्र द्वारा असंभव कों भी सम्भव किया जा सकता है. इसी सन्दर्भ में कृपया आरिफ जी महाकाली साधना पर आधारित लेख कों पढ़े जिसमे उन्होंने इस् बीज मंत्र का विश्लेषण किया है.

"शां शीं शूं में शुंभ कुरु" अर्थात इस संसार की सभी अचूक एवं धनात्मक शक्तिया सफलता प्राप्ति हेतु हमें सहायता करे. और इस् बीज मंत्र द्वारा ये सभी पारद में समाहित हो जाये.

"हुं हुं हुंकार रूपिणयै" यह बीज मंत्र आधारित हे नियंत्रण शक्ति पर. पारद अग्नि स्थायी क्रिया इसी पर आधारित है. 'सदगुरुदेव लिखित – हिमालय के योगी की गुप्त शक्तियां' में सदगुरुदेव जी ने एक एसी क्रिया का उल्लेख किया है जिस में उन्होंने केवल श्वास द्वारा पारद शिवलिंग का निर्माण किया है. केवल 'हुं' बीज मंत्र जो किसी भी वस्तु कों आकार देने में संभव है और ये केवल इसी बीज मंत्र द्वारा ही यह संभव हो सकता है. ठीक जेसे स्तम्भन क्रिया में होता है. और बहुत से रसायन शास्त्रियों के लिए अग्निस्थायी पारद बनाना उनका स्वप्न रहता है. जो केवल इस बीज मंत्र द्वारा ही संभव है.

"जं जं जं जम्भनादिनी" अर्थात सभी प्रकार की ज्रभंकारी शक्तियों जो मुक्ति हेतु उपस्थित होती है.

"भ्रां भ्रीं भ्रूं भैरवी...." अर्थात माँ भैरवी (भगवती पार्वती) के आशीर्वाद के बिना कैसे हमें पारद के लाभ मिल सकते है. हे माँ मै आपका नमन करता हू की आपकी कृपा के बिना इस बीज मंत्र से संसकारित पारद का लाभ समस्त संसार कों मिल ही नहीं सकता.

“अं कं चं.....स्वाहा ” ये सभी बीज मंत्र पारद की प्राण प्रतिष्ठा के लिए उपयोग होते है. प्राण प्रतिष्ठा के बाद ही इस में प्राणों का संचार होता है और तभी ये पारस पत्थर में परावर्तित होता है साधक के लिए. इस् क्रिया कों करने का संकेत ये बीज मंत्र ही दर्शाते है. और इन्ही के कारण ये क्रिया संपन्न होती है.
“पां पीं पूं पार्वती पूर्णा” जेसा की आप सभी जानते है की गंधक अर्थात पार्वती बीज हे रसायन तंत्र की भाषा में, और बिना इस् बीज के कैसे भला पारद(शिव बीज अर्थात वीर्य) का बंधन संभव है.. इसीलिए इन तीन बीज मंत्रो से ही पारद बंधन क्रिया संपन्न होती है.
“खां खीं खूं खेचरी तथा” इसका अर्थ है कैसे खेचरत्वता अर्थात आकाश गमन क्षमता कों पारद में संस्कारित कर इन तीन बीज मंत्रो से इस् क्रिया कों संपन्न कीया जा सकता है. हमने बहुत से लेखो में खेचरी गुटिका के बारे में पढ़ा है परन्तु इसका निर्माण केसे होता है ? परन्तु इस् बिंदु पर सभी मौन हो जाते है.. अगर वर्ण माला में अ से ज्ञ तक (हिंदी शब्दमाला ५२ अक्षरों की होती है) परन्तु इसमें किस अक्षर का उपयोग होता है खेचरी गुटिका के निर्माण में ये एक अद्बुत रहस्य है. उपरोक्त पंक्तिय वही रहस्य उद्घाटित करती है. ये हमारा सौभाग्य ही होगा अगर हम सदगुरुदेव के श्री चरणों में इस् उपलक्ष साधना एवं वही रहस्य का प्रकटीकरण की प्र्थना करे और हमें वे प्रदान करे.
“सां सीं सूं सप्तशती देव्या मंत्रसिद्धिं”–अर्थात ये तीन बीज है जो हमें सिद्धि प्रदान करने में सहायक होते है साथ ही साथ पारद विज्ञान में भि, क्युकी अगर सिर्फ रसायन क्रिया कर के ही सब हासिल होना होता तो अब तक वैज्ञानिको ने सभी सिद्धियाँ प्राप्त कर ली होती. जब की उनके पास तो सभी सुविधाए उपलब्ध होती है. इसीलिए यह स्पष्ट है की मंत्र सिद्धि इस् विज्ञान का अभिन्न अंग है सफलता प्राप्ति हेतु.

“अभक्ते नैव दातव्यं गोपितं रक्ष पार्वती” भगवान शिव कहते है हे पार्वती जी से की इस रहस्य कों कभी भी ऐसे स्थान पर उजागर नहीं करना चाहिए जहा साधक सदगुरू और पारद के प्रति समर्पित ना हो.
“न तस्य जायते सिद्धिररणये रोदनं यथा” अर्थात जिस किसी कों अगर इन सूत्रों का ज्ञान नहीं होगा तो वह कदापि पारद विज्ञान में सफलता प्राप्त नहीं कर सकता.. उसके सभी किये प्रयास व्यर्थ हो जायेंगे इन सूत्रों के बिना इसीलिए ये तो वही बात हुई की अरण्य में अकेले विलाप करना वो भी बिना किसी उद्देश्य के.
आरिफ जी मुझे देख कर मुस्कुराए, और कहा की भैया अब शायद आप समझ गए होंगे की क्यों उन बनारस के साधक ने आपका ध्यान कही और केंद्रित करना चाहा. वास्तव में इस् स्तोत्र के कई गुढ़ अर्थ है. और यही कारण रहा की सिद्ध साधक सावंत जन भी इन सूत्रों कों उजागर करने से कतराते है.. क्युकी बहुत ही कम लोग इसका मर्म समझ पाते है और इस मार्ग पर आगे बढते है और मै इस् बात पर पूर्णतः सहमत हुआ.. और हम दोनो एक साथ मुस्कुराए..

अब जाके मुझे समझ आया की स्तोत्र का उच्चारण आपका मार्ग प्रशस्त कर सकता है परन्तु इसके गुढ़ रहस्य और सटीक मर्म कों जान लेना असली सफलता है. सिर्फ इसी विधा में ये तथ्य लागू नहीं होता अपितु तंत्र की

प्रत्येक विधा में यह नियम लागू होता है. उन्होंने इस पुरे वृतांत कों क्रमबद्ध करने की लिए मुझे कहा था. ताकि हमारे सभी अन्य गुरु भाई बहन और नए जिज्ञासु भी इस विज्ञान के इस पृष्ठ से लाभ उठा सके जो सदगुरुदेव प्रणीत है.
सो मेरे प्रिय भाई मैंने अपनी तरफ से एक कोशिश की है.. पिछले ४ घंटो से मै इसी में व्यस्त रहा की कैसे उस पुरे ज्ञान संभाषण कों लिपिबद्ध करू.. क्युकी मै ऐसे घटनाओं का विवरण देने में कुछ खास निपुण नहीं.. ;-) और ये मेरा पहला प्रयास है.. इसीलिए धन्यवाद देता हू.
अरे मुझे नर्मदा नदी के किनारे भी जाना था अपने मित्रों के साथ और यहाँ बहुत ही ठण्ड हे भाई...सो चलिए अब मै विदा लेता हू, अगर आपको पसंद आया हो तो इसे जरुर सभी भाई बहनों के मध्य पोस्ट करना... सदगुरुदेव का स्नेहाशिर्वाद मेरे साथ सभी पर बना रहे इसी कामना के साथ... smile…

KUCHH BAATEN MERI AUR AAPKI

My Dear Brothers and Sisters,
If we are disciples of "Paramhans Swami Nikhileshwaranand" then we can't ignore the importance of Tantra in our life, because Sadgurudev dedicated all his life for Tantra……whenever shivirs were organized by him, disciples from all across the world used to attend them…..his time was golden time for Tantra……..which probably will never come again…….but knowledge given by him is still secured in the hands of senior ascetic brothers and sisters …..Which include accomplished ascetic of Siddh Mandals or our senior householder brother and sisters….You all with agree with this fact….isn't
……….Now the point worth pondering over is that if we consider that asset of Sadgurudev's knowledge is secured in the hands of our senior brothers and sisters whether they are ascetic or householder…..then can we make mistake of considering that knowledge as supreme of inferior….After all knowledge is knowledge and if it is authentic then we should not let go the opportunity to attain it and such seminar is going to be conducted on**25th May** in Jabalpur whose subject is **Shatkarma and Mercurial Science**…..

Let me tell you that there is reason behind writing this post. I got so many messages from some of brothers and sisters in my personal message box and the queries asked were so strange that compelled me to write this post……because the first thought which came to my mind after reading those question was that these are only few persons who have shared their thoughts but there will be so many brothers and sisters who will be thinking on these lines…
1) Sister, Shatkarma does not seem an important subject……such small tasks can be accomplished by giving money to priest or tantrik???

2) Sister, Whatever we do, how much hard-work we put, wedon't know why we do not get success in sadhna??
3) Sister, during sadhna time, we feel lot of tiredness, pain and lust in my body??
4) Sister, sadhna was going very well but suddenly in night one thought came to my mind and all my efforts went into vain??

I laughed at such questions of some brothers and sisters (although I know that these are only few persons who have accepted their shortcomings but truth is that all of us face these problems but we are not ready to accept it) because we are not trying to understand the real meaning of shatkarmas……. I have told one fact, told by Master so many times that Tantra does not run on the expectations of fools….the work which we consider very small and ordinary and ask priest to do it and they assure us of its success too but just tell me is there anyone among you who have spent the money and attained desired results….No, we will not find a single person. How can we judge other's competence in a subject about which our knowledge is negligible….
…..Now let us come to the point that whether these procedures are important or not. Let me tell you one thing that "If sadhak does not have knowledge about Shatkarmas in tantra, there is so many sadhnas in which he is not able to taste success…..But why????....There is one series going on blog regarding activation of six chakra using Shri yantra and it is being told there that…

" You have to keep eyes stable on yantra and concentrate your inner consciousness on Sahastrar. Just tell me honestly how many among you were able to carry out this procedure successfully?? Not only this, if we talk about Apsara Yakshini Seminar or seminar related to Itar Yoni then how many among you did sadhna successfully….???"
" Probably the answer will be no one……someone would have been not able to form rosary, few would have failed to complete chanting….some sadhaks loses to the body-pain during sadhna, some are unable to concentrate their mental thoughts and some fail to conquer the lustful tendencies in body arising during sadhna duration……And some of my brothers are such that who completes the process of 3-4 days successfully but when they are at doorsteps of success, natures plays its own game and all efforts of 5 days goes into vain…."
Now question arise that what shatkarmas has to do with all this……answer to is that if you are able to understand the significance of 6 shatkarmas Shanti Karm, Vashikaran, Stambhan, Ucchatan and Maaran in your spiritual life along with materialistic life then you would never have to face failure in sadhna….
Now talking about Vashikaran, when we can control any male or female and make him/her agree to our point then do it seems that this procedure does not have impact

on Apsara, Yakshinis or Itar Yonis?..... Definitely it works, but you will be able to do vashikaran of them only when they are attracted towards you. It is here the Sammohan procedure will come into play.
Now let us talk about the fact that why they will be hypnotized in favour of us? We are unable to do procedure and chant mantra in proper manner, we are unable to concentrate. But here we are forgetting the fact that Sammohan is not limited to others…..Before sitting for sadhna, we can do self-hypnotism by which our mind, our thoughts and our body will be under our control till the time we desire….we can do it for 1 day, 1 month or even up to 1 year…..no difference will come in our daily activities…neither you will start considering your wife as your mother and nor your mother as your sister….everything will remain normal , just that you will be able to control those thoughts which can make your sadhna fruitless…..it may be your body-pain or following celibacy during sadhna…

After doing these shatkarmas with yourself, you can accomplish Pari, Apsara, Yakshini as your wife, lover or friend………or can invoke Bhootini to accomplish your work…………..All of these will come and when we talk about importance of shatkarmas in daily life, then if they can help you accomplish Bhoot, Pishaach, can they not get you married to your lover or help you get promotion in job or maintain peace in home….You can do all the things with shatkarmas, just you need to know correct procedure and yantra….And most importantly, the procedures to accomplish these karmas are not length and mantra too are small…these small-2 procedures can yield huge benefits. Then you do not have to butter anyone for any work and do not need reference for your work, whether it is financial matter or business matter. Most of you ask us to provide Lakshmi prayog but Lakshmi is in your hands…..Why can't you talk to boss for promotion after doing vashikaran on him or why can't you do Vidveshan procedure on two persons to separate them who are obstructing your happiness…..Do all these tasks yourself and enjoy the happiness of results because chances of failure are not even negligible…

I hope that you will not consider these procedures as small-2 GOOD FOR NOTHING procedures and will re-consider your decision…And I have not written this post because I want to get LIKE OR COMMENT in praise of me rather it has been written so that you read it, understand it and discuss the queries arising in your mind and take a final decision that what we have to do…

==

मेरे प्रिय भाइयों और बहनों

यदि हम " परमहंस स्वामी निखिलेश्वरानंन्द जी " के शिष्य हैं तो हम अपने जीवन में तंत्र के महत्व को नकार नहीं सकते, क्योंकि सदगुरुदेव ने तो अपना पूरा जीवन ही तंत्र को समर्पित कर दिया था...जब भी उनके शिविर आयोजित होते थे तो देश, विदेश के किस – किस कोने से शिष्य आते थे इसका कोई अंदाजा भी नहीं लगा सकता.....उनका समय तंत्र का स्वर्णिम काल था....जो शायद कभी लौट कर नहीं आयेगा.....पर उनके द्वारा दिया गया ज्ञान आज भी हमारे वरिष्ठ सन्यासी भाई- बहनों के पास सुरक्षित है....जिनमें फिर चाहे हमारे सिद्ध मंडल के सिद्ध सन्यासी हों या फिर हमारे वरिष्ठ ग्रहस्थ भाई बहिन....इस तथ्य से आप सब सहमत होंगे....है ना

.......अब सोचने वाली बात ये है की यदि हम यह मानते हैं की हमारे वरिष्ठ भाई – बहिन फिर चाहे वो सन्यासी हों या ग्रहस्थ उनके पास सदगुरुदेव के ज्ञान की धरोहर सुरक्षित है.....तो फिर क्यों हम उस ज्ञान को कम या बड़ा आंकने की गलती कर सकते हैं....ज्ञान तो ज्ञान होता है और अगर वो प्रमाणित हो तो उसे प्राप्त करने से चूकना नहीं चाहिए और ऐसे ही एक ज्ञान संबंधी गोष्टी **२५ मई**को जबलपुर में आयोजित होने जा रही है जिसका विषय है षट्कर्म और रस विज्ञान....

मैं आपको बता दूँ की इस पोस्ट को लिखने के पीछे का कारण है आप में से कुछ भाई बहनों के वो messages जो मेरे personal message box में आये और वो प्रश्न इतने अटपटे और अजीब थे की मुझे ये पोस्ट लिखनी पड़ी....क्योंकि उन प्रश्नों की पढ़ कर जो मन में पहला भाव आया वो ये था की ये तो कुछ वो लोग हैं जिन्होंने अपनी सोच मेरे साथ बांटी पर अभी पता नहीं ऐसे कितने मेरे भाई बहन ओर होंगे जो ऐसे ही सोच रहे होंगे.....

१) दीदी षट्कर्म तो कुछ खास महत्वपूर्ण विषय नहीं लगता.....ऐसे छोटे – छोटे काम तो हम किसी भी पंडित या तांत्रिक को पैसे देकर करवा सकते हैं???

२) दीदी चाहे कुछ भी कर लें , कितनी भी मेहनत करे साधना में सफलता पता नहीं क्यों नहीं मिलती??

३) दीदी मैं साधना के समय अपने शरीर में बहुत थकान, दर्द और कामुकता महसूस करता हूँ??

४) दीदी साधना बहुत अच्छे से चल रही थी पर पता नहीं रात में कैसे बस मन में एक विचार आया और सब मेहनत बर्बाद हो गयी???

तो मेरे कुछ भाई बहनों के ऐसे प्रश्नों पर हंसी आ गयी (जब की मुझे ज्ञात है की ये तो बस वो कुछ लोग हैं जिन्होंने अपनी कमियां मानी हैं पर सच बात तो ये है की होता लगभग सब के साथ

यही है, बस हम मानने को तैयार नहीं हैं) क्योकि शायद आप लोग षट्कर्म का सही अर्थ ही नहीं सकझ रहे हो....मैं मास्टर की कही एक बात आपको बहुत बार बता चुकी हूँ की तंत्र मूर्खों की अपेक्षा पर नहीं चलता.....हम लोग जिन कामों को छोटा मान कर किसी पंडित या ओझा से करवाते हैं वो हमें कह तो देते हैं की गैरंटी से आपका काम हो जायेगा पर आप सब बताईये क्या कोई ऐसा है जिसने इन लोगों के पास पैसे खर्च किये हों ओर उसे मनोवांछित नतीजे प्राप्त हुए हों.....नहीं ऐसा कोई एक भी नहीं मिलेगा क्योंकि जिस विषय पर तुम्हारा ज्ञान ना के बराबर है उसमें कोई ओर कितना परांगत हैं आप कैसे जान सकते हो......

.......अब बात आती है की यह क्रम महत्वपूर्ण हैं की नहीं तो आप एक बात आज और हमेशा के लिए याद रख लीजिए " तंत्र में जिस साधक को षट्कर्मों का ज्ञान नहीं होता वो ऐसी कई साधनाएं हैं जिनमें सफल नहीं हो पाते....अब आप सोचोगे वो कैसे????

....तो वो ऐसे जी अब जैसे ब्लॉग पर श्री यंत्र से षट्चक्र जागरण हेतु श्रंखला चल रही है और उसमें बोला जाता है की......

" आपको अपने यंत्र पर आँखें स्थिर करके रखनी हैं और अपनी अन्तश्चेतना को अपने सहस्त्रार पर एकाग्र करना है तो अब मुझे आप इमानदारी से बताईये की कितने लोग आप में से ये क्रिया सफलतापूर्वक कर पाए?? यही नहीं यदि हम पहले हुए अप्सरा यक्षिणी सेमिनार या इतर योनी संबंधित हुए सेमीनार की बात करें तो आप में से कितनी ने वो साधनाएं सफलता पूर्वक की....???"

" जवाब शायद एक ने भी नहीं....किसी से माला नहीं बनी तो किसी से मंत्र जाप पूरा नहीं हुआ....कोई साधना के दौरान अपने शरीर में होने वाले दर्द से हार जाता है, कोई अपने मानसिक विचारों को एकाग्र नहीं कर पाता तो कोई साधना काल के समय में अपने शरीर में होने वाली कामुक प्रविर्तियों से हार मान लेता है.....और मेरे कुछ भाई तो ऐसे हैं जो सफलता से पूरे ३- ४या ५ दिनों का क्रम पूरा कर लेते हैं पर जैसे ही सफलता पास होती है प्राकृति उनके शरीर के साथ अपना खेल खेल देती है जिससे ५ दिनों का क्रम खत्म होके शून्य पर आ जाता है.... "

अब फिर प्रश्न ये आता है की षट्कर्मों से इन बातों का क्या लेना देना.....तो जवाब यह है की यदि आप शांतिकर्म, वशीकरण, स्तंभन, विद्वेष्ण , उच्चाटन और मारन इन ६ षट्कर्मों की अपने भौतिक जीवन के साथ- साथ साधनात्मक जीवन में महत्ता समझोगे तो साधना में कभी असफलता का मुहं नहीं देखना पडेगा......

अब जैसे हम वशीकरण की बात करें तो इस का प्रयोग करके यदि हम किसी स्त्री या पुरुष को अपने बस में करके उससे अपनी बात मनवा सकते हैं तो आपको क्या लगता है ये प्रयोग अप्सरा,

यक्षिणियों या इतर योनियों पर असर नहीं करता? ......निश्चित रूप से करता हैं पर आप उन पर वशीकरण तब कर पायेंगे जब वो आपकी तरफ आकर्षित हों तो सम्मोहन क्रिया कब काम आएगी......

अब बात करते हैं वो हमारी तरफ सम्मोहित होंगी हो क्यूँ?? प्रयोग या मंत्र जाप तो हमसे ठंग से होता नहीं, ध्यान ही एकाग्र नहीं कर पाते तो मेरे प्रिय भाइयों आपसे ये किसने कहा की सम्मोहन केवल हम किसी दूसरे पर ही कर सकते हैं.....साधना में बैठने से पूर्व सम्मोहन की क्रिया खुद के साथ भी की जा सकती है जिससे की आप जब तक चाहे आपका मन , आपके विचार और आपका शरीर सब आपके नियंत्रण में रहेगा....फिर चाहे ये क्रिया खुद के साथ आप एक दिन के लिए करो, एक हफ्ते के लिए या फिर एक साल के लिए....इससे आपकी भौतिक दैनिक दिनचर्या पर कोई अंतर नहीं पड़ता....ना तो आप अपनी पत्नी को अपनी माँ समझने लगोगे और ना ही अपनी माता जी को अपनी बहन.....सब सामन्य रहता है बस वो विचार आपके बस में आ जाते हैं जो आपकी साधना निष्फल कर सकते हैं ....अब चाहे वो शरीर के दर्द हो या फिर साधना के समय ब्रह्मचर्य का पालन करना हो......

इन षट्कर्मों को खुद के साथ करने के बाद आप चाहे परी सिद्ध करो या अप्सरा , यक्षिणी को पत्नी , प्रेमिका या दोस्त के रूप में अपने वश में कर लो.....या फिर किसी भूतनी को बुला कर अपने काम करवाने लगो....ये सब आयेंगी और जहाँ तक बात है दैनिक जीवन में इन षट्कर्मों के म्हत्त्व की तो अगर ये क्रम भुत, पिशाच आपको सिद्ध करवा सकते हैं तो क्या इस जीवन में जो आपकी प्रेमिका है उससे आपकी शादी नहीं करवा सकते, या फिर आपको जॉब में प्रमोशन नहीं दिला सकते या फिर आपके घर में सुख शान्ति नहीं रख सकते.......आप इन षट्कर्मों से सब कर सकते हो सब सही विधि और यंत्र का ज्ञान होना चाहिए......और इससे बड़ी बात है की इन कर्मों के लिए किये जाने वाले विधान कोई बहुत लंबे चौड़े नहीं होते और ना ही मंत्र बड़े होते हैं.....छोटी – छोटी क्रियाएँ और बड़े- बड़े फायदे और फिर किसी काम के लिए किसी की मिन्नतें करने की जरूरत भी नहीं और ना ही किसी के सानिध्य को खोजने की फिर चाहे वो पैसे का मामला हो या बिजनेस का क्यूंकि आप में से बहुत लोग लक्ष्मी प्रयोग देने के लिए कहते हैं तो भाई मेरे लक्ष्मी तो आपके हाथ में है.....क्यूँ अपने बॉस पर वशीकरण प्रयोग करके अपनी प्रमोशन की बात नहीं करते या फिर क्यों विद्वेष्ण प्रयोग करके उन दो लोगों को एक दूसरे से अलग नहीं कर देते जो आपकी खुशियों में

बाधा उत्पन्न कर रहे हैं .....अपना काम खुद करो और नतीजे की खुशी भी खुद ENJOY करो क्योंकि इन कर्मों में असफलता के लेश मात्र भी चांस नहीं होते......

आशा करती हूँ अब आप इन कर्मों को छोटे- छोटे GOOD FOR NOTHINGप्रयोग नहीं समझोगे और एक बार पुन्हः अपने निर्णय पर विचार करोगे...... और हाँ ये पोस्ट मैंने इसलिए नहीं लिखी की आप LIKE YA COMMENT मेरी प्रशंसा हेतु लिखो अपितु इसलिए लिखी है की इसे पढ़ो, समझो और फिर मन में जो प्रश्न आता है उस पर चर्चा करो और एक निर्णायक निर्णय लो की हमें अब क्या करना है.....

****ROZY MAYANK NIKHIL****

****NPRU****

Posted by Nikhil at 12:59 AM 5 comments: Links to this post
Labels: SEMINAAR

TUESDAY, MAY 14, 2013

SHATKARM TANTRA SEMINAAR

TahaivaiteMahayogaahPrataujyahKshamkarmane Surya PrapaatyeddhumauNendmithyaBhavishyati ||

Above quote has been said by Shri Aadinath Lord Shiva who preached about Sarv Tantra. This teaching of Shri Aadi Shiva was for greatest connoisseur of Tantra Raavan in which he told about mantras regarding Shatkarmas. He told that through these mantras i.e. Shatkarma mantric procedures, even the most difficult tasks can be accomplished very easily. These procedures and mantra should not be considered ordinary since they have the capability to bring sun to earth. It is my sentence which can never be false i.e. it is infallible truth.

Friends

We are very fortunate to belong to such an era in which generation of today are eager to bring about change nearby them. They strive hard and want to take hard steps to bring about change. May be they are striving for personal change but at least they are isolating themselves from narrow-mindedness and are always getting prepared to adopt a new style of living. Most of the persons today have a hope to imbibe both materialistic and spiritual aspects completely into their lives. More than anything else, we are extremely fortunate that Shri Sadgurudev enriched and replenished our lives through Tantra and provided us the vision to beautify our lives through tantra. Besides this, he not only provided knowledge about greatest Tantra Vidya from open heart but also made sadhak do its practical and brought them to doorsteps of success. In his efforts, each and every moment he tolerated so much of problems, somuch blows. But he always kept on smiling hiding all his agonies inside because his aim was to make his disciples understand this great Vidya so that they can do it practically and connect it to society. He spent each and every moment of life towards this end so that Indian ancient sciences can be connected to common masses, they do not become obsolete with time. At last he left his materialistic body with this very dream in his eyes. But can Guru element ever die?. No. His all disciples and sadhaks have been witness to his continuous presence because even today nothing more matters to him than welfare of disciples.

Everyone may have their own personal opinion regarding what is their responsibility as a disciple or not? But one thing is certain that our path is path of knowledge and it is duty of every disciple that he becomes full of Guru Element as much as possible and gets closer to Guru and this process keeps on happening continuously. But does it happen? We can call ourselves as disciple proudly but only when we progress ahead on this path of knowledge. **The knowledge which Sadgurudev has attained after tolerating a lot of unbearable pain and agony, he distributed the same knowledge to all his disciples with open heart so that tantra can be connected with society, sadhaks can be formed and terrible form of Tantra system is eradicated. But in return, he got fraud, deceit and agony in the name of disciple hood. But all throughout his life, he put on so many efforts**

in this direction with the hope that even if he finds some disciples, he will consider himself as successful.

Most of us are aware of the fact that these Vidyas are so much secretive and to understand them, sadhak has to put in lot of efforts, render services to sages and saints for years. Even then it is up to them whether they want to tell or not. But Sadgurudev always kept all such things aside and tried to impart knowledge to his disciples by taking initiative himself. We probably were not able to understand that time that how much we and our life and our being knowledgeable was so important for him. His happiness lied in progress and happiness of disciples only. But how much knowledge we have imbibed it or how much not, we ourselves can analyse.

Dear friends, I remember quote of one accomplished sadhak that even after spending all your life, you get to know something about Tantra Vidya, it is not a loss for you since this knowledge will make you perceive completeness in both the worlds.

If we try to evaluate the problems and pain faced by Sadgurudev and other accomplished sadhak for attaining knowledge and connecting that knowledge with society, then only we will be able to understand the value of knowledge. Words of Sadgurudev were something like this when he was telling about Tantra few years back that we try to measure each and every moment of life, sometimes in terms of money, sometimes in terms of time that if I will not got for 2 days, iwill suffer this much and what will wife say, should I do sadhna? Leave it……..if Tantra sadhna would have been done in this manner, then all streets would have been full of tantriks. Tantra is synonymous to courage, valour, strong determination that if I have decided, I will do it at any cost. What would happen if we have taken some step for ourself in life. What would happen if we spent some time of our life for ourselves. But whatever I will do now , I will do it with courage, with full competence, with capability. Otherwise opportunity will go unutilized and we can never say when such coincidence in nature will be created for us.

Friends, words of Sadgurudev have infused courage inside us even till today and will go on doing so in future too. In order to make knowledge given by him reach our brothers and sisters and to materialize his dream, we started few years back by taking small strides and today with the cooperation of you all, we are moving forward to fulfil the dream. In this context, we organized workshop and seminar so that this knowledge does not become obsolete and people can become aware of their practical aspects and those who want to move ahead in Tantra field, they get assistance of knowledge given by Sadgurudev. After all, all of us have equal right over his knowledge. In this series, seminar of this time is based on**“Shatkarmas and Secrets of Mercurial Science”.**

We have merely considered Shatkarmas as Tone Totke but it is not true. Sadgruudev used to say that the one who has knowledge of Maaran, Vashikaran or shatkarmas is invincible on this earth. No one can beat him. It is the art of imbibing 3 male and 3 female forms of Triguna.

SHANTI KARMA : Through it, person can get rid of disease, epidemic and problems of life. He can attain complete peace in both materialistic and spiritual manner and can get rid of all faults of life.

VASHIKARAN VIDYA : Everyone is aware of it. Through it, even impossible tasks can be accomplished. It is establishing supremacy over other's thoughts and compelling him/her to accept all what we want. It may be one person or a group of persons. Sadgurudev has told 12 varieties of this Vidya which are unparalleled.

STAMBHAN- Very less information is available regarding this Vidya. Stambhan means to paralyse. It may be any person, any enemy, anybody's mind, anybody's progress, anybody's demise. All types of Stambhan come under this Vidya.

VIDVESHAN – It is destroying the attraction between two persons or elements or transforming it into repulsion. Through this Vidya, connectivity between two persons can be broken. Capability to uproot attraction element completely is Vidveshan Vidya.

UCCHAATAN - Separating a person from other place or other person. By doing it on enemies, one can make him quit a city, state or country. One can do ucchatan of money and deprive a person from it.

MAARAN- Vidya to deprive a person of his breath and taking him to verge of death is called Maaran Vidya.

These were shatkarmas. Now friends, any person can understand that why after knowing shatkarmas, person can become invincible. It contains the solution to all problems of life related to all the fields.

Along with it, there is Mercurial science through which lower degraded metals can be transmuted into valuable metals like silver and gold. Through samskars of Parad, rare accomplishments and health life can be attained. This seminar will also focus on abstruse secrets related to this Vidya too.

Talking about Shatkarmas, Lord Shiva says that even sun can be brought to earth through them. So definitely, this Vidya is completely and all capable. Definitely, there are different types of abstruse secrets related to these Karmas whether they are preliminary procedures or Mudra etc. But there are so many secrets which do not come in middle of common masses. Tantra is Vidya which is attained though Guru. It cannot be attained through books. Anyone can boost after reading the books but success is provided by the practical knowledge which has been learnt through Guru. Our Sadgurudev following the same tradition put forward many facts related to

shatkarmas in 1980-1985 and in Tantra Vidya shivir and told them personally to sadhaks too. He also demonstrated these procedures practically in front of people too.

It has always been effort from our side that all these facts and special procedures can reach our brothers and sisters. Many misconceptions have been spread regarding this abstruse subject and this subject has been neglected. But truth is that the one who has accomplished the shatkarmas become invincible. He can take his own life and even life of others to supreme heights and he can teach lessons to wrong person by destroying them. For this purpose, considering the necessity of them in modern era, we have organized a seminar on subject “Shatkarma and Secrets of Mercurial Science”. Your enthusiasm pleases us and motivates us to work more intensely. As you all know that seminar will be held on 25th of this month, so all the brothers and sisters who wants to participate in this seminar can contact on**nikhilalchemy2@yahoo.com.**

===

तथैवैते महायोगाः प्रयोज्यःक्षमकर्मणे सूर्य प्रपातयेद्भुमौ नेदंमिथ्या भविष्यति ||

उपरोक्त कथन श्री आदिनाथ भगवान शिव का है जिन्होंने सर्व तंत्र का उपदेश दिया है. श्री आदि शिव का यह उपदेश महानतम तंत्र ज्ञाता लंकापति रावण के लिए था जिसमे उन्होंने षटकर्म विषय के मंत्रो के सन्दर्भ में कहा है की इन मंत्रो के माध्यम से अर्थात षट्कर्म की मन्त्र क्रियाओ के माध्यम से दुस्कर कार्य भी शीघ्र एवं सहजता से हो जाते है. इन क्रिया मंत्रो को सामान्य समझने की भूल नहीं करनी चाहिए क्यों की यह सूर्य को पृथ्वी के ऊपर भी गिराने का सामर्थ्य रखते है. यह मेरा (शिव) वाक्य है जो की कभी मिथ्या हो ही नहीं सकता.

मित्रों

हम जिस युग में जिस समय में रह रहे है यह हमारा सौभाग्य है की हम एक एसी पीढ़ी में रह रहे है जिन्होंने अपने आस पास एक परिवर्तन की आस एक ललक है, परिश्रम की भावना है तथा बदलाव लाने के लिए कडा कदम उठाने की चाह है और यह परिवर्तन भले ही व्यक्तिगत हो लेकिन एक संकीर्णता से हम अपने आपको अलग कर रहे है, हम नए जीवन को अपनाने के लिए सदैव तैयार हो रहे है भौतिक एवं आध्यात्मिक दोनों ही पक्षों को पूर्णता से आत्मसार करने की आशा आज महत्तम व्यक्तियो के अंदर है. हमारा इससे भी बड़ा यह सौभाग्य रहा है की श्री सदगुरुदेव ने हमारे जीवन को तंत्र के माध्यम से अभिसिंचन किया, हमें जीवन को तंत्र के माध्यम से निखार कर एक नये ही जीवन सौंदर्य को देखने की द्रष्टि दी. इसके अलावा हमें महानतम तंत्र विद्या का मुक्त ह्रदय से ज्ञान दिया, न सिर्फ समझाया परन्तु उसे क्रियात्मक रूप से साधको को करवाके उनको सफलता तक हाथ पकड़ के खड़ा किया. इस कोशिश में उन्होंने न जाने हर क्षण कितना कष्ट एवं वेदना का सामना किया होगा, कितने ही न जाने घात प्रतिघात को सहन किया, सब पीड़ा को अंदर भरे हुवे वे सदैव मुस्कुराते रहे क्यों की उनका लक्ष्य था की उनके शिष्य इस महान विद्या को जाने सामने क्रियात्मक रूप से करे

तथा समाज के साथ जोड़े, उन्होंने अपना हर क्षण इस एक कार्य में ही लगाया जिससे की भारतीय प्राच्य विद्याओ को वो जनसामान्य के साथ जोड़ सके, इन महान विद्याओ का ग्रास न हो जाए, काल के हाथो ये लुप्तता तक न पहोच जाए, वे अपने अंतिम क्षण तक यही स्वप्न अपनी आँखों में ले कर चले अंततः उन्होंने अपनी भौतिक देह का त्याग किया लेकिन क्या गुरु तत्व कभी मिट सकता है? नहीं. उनके सभी शिष्य एवं साधकगण उनकी सतत उपस्थिति के साक्षी रहे है क्यों की आज भी शिष्य कल्याण से ज्यादा उनके लिए कुछ महत्त्व नहीं रखता.

एक शिष्य के नाते हमारा कर्तव्य क्या है क्या नहीं यह व्यक्तिगत बात हो जाती है और सब की अपनी अपनी अलग धारणा है लेकिन एक बात निश्चित है, हमारा रास्ता ज्ञानपथ है और हर शिष्य का कर्तव्य होता है की वह ज्यादा से ज्यादा गुरु तत्व ज्ञान से परिपूर्ण हो कर गुरु के निकट हो जाए, और यह प्रक्रिया सतत रूप से चलती ही रहे. लेकिन क्या ऐसा होता है? हम अपने आपको गर्व से शिष्य कह ज़रूर सकते है लेकिन तब जब हम ज्ञान पथ पर बढे, **सदगुरुदेव ने जिस ज्ञान को असह्य कष्टों एवं वेदना को सह कर प्राप्त किया था उन्होंने उसी ज्ञान को मुक्त हृदय से अपने सभी शिष्यों के मध्य बांटा ताकि तंत्र को समाज के साथ जोड़ा जाए, साधको का निर्माण हो सके तथा तंत्र प्रणाली का जो भयावह स्वरुप है वह दूर हो सके लेकिन बदले में उनको शिष्यता के नाम पर धोका, छल, पीड़ा की ही प्राप्ति हुई लेकिन वे आजीवन सिर्फ इसी कार्य में लगे रहे सिर्फ इस एक आशा के साथ की कुछ शिष्य भी अगर मुझे मिल जाए तो भी मैं अपना कार्य सफल मानूंगा.**

हम सबमें से ज्यादातर लोग परिचित है की इस विद्या की गोपनीयता कितनी अधिक है तथा इस विषय को समजने के लिए साधको को कितने ही न पापड़ बेलने पड़ते है, साधू संन्यासियो की सालो तक सेवा चाकरी करने पर कभी कोई सिद्ध प्रसन्न मुद्रा में वे कुछ बता दे तो बता दे वर्ना वो भी नहीं. लेकिन सदगुरुदेव ने इन सारी चीजों को एक तरफ कर अपने शिष्यों का हाथ पकड़ पकड़ का समजाने की चेष्टा की, हम सायद तब नहीं समज पाए की उनकी द्रष्टि में हम और हमारा जीवन तथा हमारा ज्ञानवान होना उनके लिए कितना महत्वपूर्ण है, शायद उनकी खुशी मात्र शिष्यों की प्रगति, शिष्यों की खुशी में ही थी. परन्तु उस ज्ञान को आत्मसार हमने कितना किया है और कितना नहीं यह हम सभी स्वयं का आकलन कर सकते है. प्रिय स्नेहीजनो एक सिद्ध का कथन मुझे याद है की पूरा जीवन दे कर भी अगर तंत्र विद्या से सबंधित कुछ ज्ञान की प्राप्ति होती है तो सौदा घाटे का नहीं है क्यों की वह ज्ञान इस लोक और परलोक दोनों में ही पूर्णता का बोध करा देगा.

कभी हम सदगुरुदेव एवं कई सिद्धो के इतने कष्ट, वेदना एवं पीड़ा का हमने मूल्यांकन करे जो उन्होंने सहन किया है ज्ञान प्राप्ति के लिए तथा उसी ज्ञान को समाज के साथ जोड़ने के लिए तब हमें शायद इस ज्ञान की कीमत समाजमे आती है. सदगुरुदेव के कुछ शब्द इस प्रकार से थे जब वो तंत्र के सबंध में कई साल पहले समजा रहे थे की हम जीवन में आए क्षण को तोलने में लग जाते है कभी पैसो से, कभी समय से, की पांच रूपया २ दिन नहीं जाऊंगा तो दो रुपये का नुसकान, बीवी का कहेगी, बच्चो का क्या करू, साधना करू?

नही नहीं छोडो जाने दो... अगर इसी प्रकार तंत्र साधना होती तो गली गली में तांत्रिक होते. तंत्र नाम है हिम्मत का साहस का एक दृढ निश्चय का की करना है तो करना ही है भले ही फिर कुछ हो जाए | क्या हो जाएगा अगर एक बार जीवन में खुद के लिए कदम बढ़ा दिया तो. क्या हो जाएगा अगर थोडा समय खुद के लिए खर्च कर दिया अपने जीवन का, इतना कर दिया है तो थोडा और सही लेकिन गिडगिडाकर नहीं, साहस के साथ; क्षमता के साथ; पूर्णता के साथ की मुझे ये करना है बाकी मौका चला जाता है तो फिर कहा नहीं जा सकता की प्रकृति में वो संयोग वापस बनेगा या नहीं.

मित्रों, सदगुरुदेव के शब्द हमें आज तक साहस देते आये है और आगे भी देते रहेगे. हमने उन्ही के द्वारा प्रदत ज्ञान को वापस हमारे भाई बहेनो तक पहुचाने के लिए एवं उनके ही स्वप्न को एक सार्थक स्वरुप देने के लिए छोटे छोटे कदमो से कई साल पूर्व एक शुरुआत की थी और आप सब के सहयोग से आज हम उस स्वप्न की और पूर्ण रूप से गतिशील है. इसी क्रम में हमने वर्कशॉप तथा सेमीनार का आयोजन किया की इस ज्ञान का लोप न हो जाए तथा व्यवहारिक रूप से रहस्यों का पता चले उनके क्रियात्मक पक्ष के बारे में जान सके क्यों की जिसको तंत्र क्षेत्र में आगे बढ़ना है तो सदगुरुदेव प्रदत ज्ञान का सहारा प्राप्त करे, उस ज्ञान पर सभी का समान्तर रूप से हक है. इसी क्रम में इस बार का सेमीनार '**षट्कर्म एवं रस विज्ञान गूढ़ रहस्य**' पर आधारित है.

षटकर्म को हमने टोने टोटके मात्र समज लिया हो लेकिन वस्तुतः यह सत्य नहीं है. सदगुरुदेव कहते थे की मारण,वशीकरण या षट्कर्म का ज्ञान जिसको है वो व्यक्ति इस पृथ्वी पर अजेय है, उसको कोई हरा नहीं सकता. कितना अद्भुत सत्य है क्यों की यह त्रिगुण के ३ पुरुष एवं ३ स्त्री स्वरुप को ही अपने अंदर उतार देने की कला है.

शांति कर्म से व्यक्ति रोग शोक महामारी जीवन के कष्ट एवं अभावो को दूर कर सकता है अपने जीवन में भौतिक एवं आध्यात्मिक रूप से पूर्ण शांति को प्राप्त कर सकता है, जीवन के सभी दोष को समाप्त कर सकता है.

वशीकरण विद्या के सन्दर्भ में तो सब को ज्ञात है , इस विद्या से असंभव से असंभव कार्य किये जा सकते है किसी के विचारों पर अपना प्रभुत्व बना कर उसे बाध्य कर देना वो हर बात मानने के लिए जो हम चाहते है, ठीक वैसे ही जैसे हम चाहते है. भले ही वह एक व्यक्ति हो या समूह हो. इस विद्या के १२ भेद सदगुरुदेव ने बाताये है जो की अन्यतम है.

स्तम्भन – इस विद्या के बारे में बहुत कम जानकारी मिलती है, स्तमभन अर्थात रोक देना, चाहे वह व्यक्ति को रोकना हो, शत्रु को, किसी को बुद्धि को, किसी की प्रगति को, किसी की दुर्गति को, सभी प्रकार के स्तम्भन इस स्तम्भन विद्या के अंतर्गत आते है.

विद्वेषण – दो व्यक्ति या तत्वों के बीच के आकर्षण को खत्म कर देना या विकर्षण में बदल देना. यह विद्या के माध्यम से दो व्यक्तियो के बीच की संधि को तोडा जा सकता है. आकर्षण तत्व को मूल के साथ उखाड सकने की सामर्थ्य का नाम विद्वेषण विद्या है.

उच्चाटन – व्यक्ति का विच्छेद करना किसी स्थल से या दूसरे किसी व्यक्ति से. किसी शत्रु आदि को उच्चाटित कर उसे घर, नगर –शहर राज्य या देश से बहार निकलवा देना, धन का उच्चाटन कर उसके धन को नाश कर देना.

मारण – किसी भी व्यक्ति के प्राण को हर लेना उसे मृत्यु के मुख तक पंहुचा देना इस विद्या को मारण विद्या कहा जाता है.

यह षट्कर्म है, अब मित्रों कोई भी व्यक्ति इस तथ्य को समज सकता है की क्यों षट्कर्म जिसने जान लिए वह पृथ्वी में अजेय हो सकता है. क्यों की जीवन के सभी पक्षों से सबंधीत समस्याओ के समाधान इसमें है ही. इसके साथ ही साथ रसायन विद्या जिसके माध्यम से हलकी निम्न धातुओ को रजत एवं स्वर्ण जैसी मूल्यवान धातुओ में परावर्तित किया जाता है तथा पारद के संस्कार कर उससे दुर्लभ सिद्धियों एवं आरोग्य की प्राप्ति होती है इस विद्या से सबंधित भी कई कई गुढ़ रहस्य है.

फिर षट्कर्म के विषय में श्री भगवान शिव कहते है की सूर्य को पृथ्वी पर भी गिराया जा सकता है :) तो निश्चय ही इस विद्या की सामर्थ्यता एवं सम्पूर्णता का अर्थ है, सार्थकता है. निश्चय ही इन कर्मो से सबंधित कई प्रकार के गुढ़ रहस्य है चाहे वह प्रारम्भिक क्रियाएँ हो या मुद्रा आदि लकिन अप्रकट रूप से कई रहस्य होते है जो की जनमानस के मध्य नहीं आते है क्यों की तंत्र गुरुगम्य विद्या है पोथी गम्य नहीं, पोथी पढ़ पढ़ कोई कुछ भी दंभ मार सकता है लेकिन गुरु के माध्यम से जो सिखा गया होता है वही क्रियात्मक ज्ञान ही सफलता प्रदान कर सकता है. हमारे सदगुरुदेव ने इसी प्रणाली से षट्कर्म से सबंधित कई कई तथ्य १९८०-१९८५ तथा तंत्र विद्या शिविर एवं व्यक्तिगत रूप से सामने रखे थे. इसी माध्यम से उन्होंने कई प्रकार से प्रायोगिक रूप से सारी क्रियाओ को कर के सब के मध्य रखा था.

यही सारे तथ्यों एवं कई विशेष प्रक्रियाओ को हम अपने भाई बहेनो तक पंहुचा सके यही कोशिश हमने सदैव की है तथा करते आए है. इस गुढ़ विषय के सबंध में भी कई भ्रांतियां फेली हुई है तथा इस विषय को नकारा गया है, लेकिन सत्य यह है की निश्चय ही वह व्यक्ति अजेय हो जाता है जिसने षट्कर्म सिद्ध कर लिए. वह अपने जीवन के साथ साथ किसी के भी जीवन को उतनी ऊँचाई पर ले जा सकता है जहाँ तक वो ले जाना चाहता हो और चाहे तो दुष्टों को सबक सिखाने के लिए वह उतना ही निचे भी गिरा सकता है. इसी हेतु आज के युग में अनिवार्यता महेसुस कर हमने 'षट्कर्म एवं रसविज्ञान गुढ़ रहस्य' विषय पर सेमीनार का आयोजन किया है. आप सब के उत्साह को देख कर निश्चय ही खुशी होती है तथा हमें भी प्रेरणा मिलती है और भी तीव्र रूप से कार्य करने की. जैसे की आप सब लोग जानते है यह सेमीनार इसी महीने की २५ तारीख को है, अस्तु, जो भी भाई बहेन साधक इस सेमीनार में भाग लेने के इच्छुक हो वे **nikhilalchemy2@yahoo.com** पर संपर्क करे.

RASESHVAR GUHYATAM VIDHAAN - ATOOT AISHVARYA PRADAAYAK "KUBER VARAD PRAYOG"

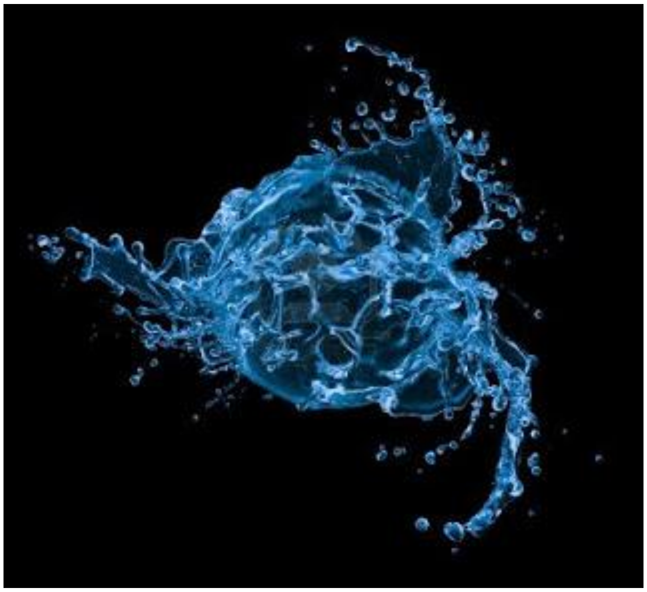

चन्दनागुरुकर्पुर कुंकुमान्तर्गतोरसः
मूर्छितः शिवपूजा सा शिवसानिध्यसिद्धये

उपरोक्त पंक्तियाँ रस साधको के मध्य प्रचलित पंक्तियाँ है जो की रस एवं दुर्लभ रस लिंग अर्थात पारद शिवलिंग की महत्ता को स्पष्ट करता है. निश्चय ही रस एक अति दिव्य धातु है पदार्थ है जिसको हम तांत्रिक पद्धति से साध ले तो हम ज़रा मृत्यु के बंधन से मुक्त हो सकते है, रस सिद्ध श्री नागार्जुन ने तो यहाँ तक कहा है की इस दिव्य धातु के माध्यम से पुरे विश्व की दरिद्रता एवं सभी प्रकार के कष्ट के साथ साथ मृत्यु को भी मिटाया जा सकता है

उपरोक्त श्लोक का विश्लेषण कुछ इस प्रकार है की रस चन्दन, कुमकुम इत्यादि पदार्थो से की जाने वाली पूजा का फल पारद के स्पर्शमात्र से ही साधक को शिवलिंग का पूर्ण पूजन का फल प्राप्त हो सकता है, मूर्छित अर्थात अचंचल पारद अर्थात शिवलिंग की पूजा करने वाले सौभाग्यशाली साधक भगवान सदाशिवसे एकाकार होने की उनके सानिध्य को प्राप्त करने की सिद्धि भी प्राप्त कर सकता है.

जो भी व्यक्ति पारद एवं रस तंत्र के क्षेत्र में रूचि एवं जानकारी रखता है वे निश्चय ही **पूर्ण चैतन्य विशुद्ध पारद शिवलिंग** के महत्त्व के बारे में समझ सकते है. इसी लिंग के लिए तो ग्रंथो में कहा है की पारद से निर्मित शिवलिंग के दर्शन मात्र से ही ज्योतिर्लिंग एवं कोटि कोटि लिंग के दर्शन लाभ के जितना पुण्य प्राप्त होता है. यह विशेष लिंग अपने आप में अनंत गुण भाव से युक्त धातु से निर्मित होता है इसी लिए उसमे किसी भी व्यक्ति को प्रदान करने की क्षमता अनंत गुना होती है. और तंत्र के सभी मार्ग में चाहे वह लिंगायत हो, सिद्ध हो, क्रम हो या कश्मीरी शैव मार्ग हो या फिर अघोर जैसा श्रेष्ठतम साधना मार्ग हो, सभी साधना मत्त में पारदशिवलिंग की एक विशेष महत्ता है तथा निश्चय ही कई प्रकार के विशेष प्रयोग गुप्त रूप से सभी मत्त एवं मार्ग में होती आई है. इसी क्रम में सदगुरुदेव ने कई विशेष प्रयोगों को साधको के मध्य रखा था जिसमे

पारदशिवलिंग के माध्यम से पूर्व जीवन दर्शन, शून्य आसन एवं वायुगमन आदि प्रयोग के बारे में समझाया एवं प्रायोगिक रूप से संपन्न भी करवाए थे. निश्चय ही अगर पूर्ण चैतन्य विशुद्द पारद शिवलिंग अगर व्यक्ति के पास हो तो साधक निश्चय ही कई प्रकार से अपने भौतिक एवं आध्यात्मिक जीवन को उर्ध्वगामी कर पूर्ण सुख एवं आनंद की प्राप्ति कर सकता है.

रसलिंग के माध्यम से संपन्न होने वाले कई विशेष एवं दुर्लभ प्रयोग को हमने समय समय पर आप सब के मध्य प्रस्तुत किया है इसी क्रम में इससे संपन्न होने वाले दो विशेष गोपनीय प्रयोगों को आप के सामने रखे जा रहे है.

१.अटूट धन सौभाग्य प्राप्ति कुबेर वरद प्रयोग -

महोदरं महाकायं द्विदंष्ट्रसमन्वितं
शङ्खपद्मगदाहस्तो कुबेराय नमाम्यहम्

बात जब दैव शक्तियों की सहायता से धन की प्राप्ति करना हो या अपने जीवन में पूर्ण सुख भोग की प्राप्ति करना हो तो निश्चय ही कुबेर का स्थान अपने आप में अन्यतम है. कुबेर यक्ष के आधिपति है तथा देवताओं के कोष के अध्यक्ष है. श्री कुबेर की साधना उपासना आदि काल से ऐश्वय की सिद्धि के लिए होती आई है. दक्षिण एवं वाम पक्ष में कुबेर सिद्धि के कई गुढ़ विधान है लेकिन इनकी उपासना एवं साधना सहज नहीं है क्यों की इनके विशेष विधान गुढ़ है तथा श्रमसाध्य है जिनको आज के युग में सभी साधको को संपन्न करना मुश्किल है. तथा श्री कुबेर से सबंध में जो विशेष लघु प्रयोग विधान है वह विविध सिद्धो के पास सुरक्षित है तथा जनसामान्य के मध्य इनका प्रचार नहीं है. इन सब विधानों में सब से दुर्लभ विधान पारद शिवलिंग के माध्यम से होने वाले विधान है. क्यों की कुबेर स्थापन आदि विधान रस लिंग के माध्यम से पूर्ण चैतन्य रूप से संपन्न होते है तथा जिनकी उपासना स्वयं कुबेर ही करते है ऐसे सदाशिव के विविध रूप मृत्युंजय अभिषेक तथा रूद्र स्थापन आदि क्रिया पारद शिवलिंग के निर्माण के बाद उसमे चैतन्यकरण क्रिया एवं प्राण प्रतिष्ठा करते वक्त ही किया जाता है. अब ऐसे पारद शिवलिंग पर विशेष प्रयोग कुबेर से सबंधित हो तो फिर सफलता दूर कहाँ.
इस विधान में लगभग **३ घंटे** लगते हैं और ये मात्र **३ दिन** का ही क्रम है.आप सम्पूर्ण परिवार की उन्नति और भाग्योदय के संकल्प के साथ इस विधान को संपन्न कर सकते हैं. किसी भी सोमवार की प्रातः या मध्यान्ह रात्रि में स्नान आदि से निवृत्त होकर श्वेत वस्त्र या पीले वस्त्र पहन कर आसन पर उत्तर मुख करके बैठ जाएँ और बाजोट पर उसी रंग के वस्त्र को बिछाएं,जिस रंग के वस्त्र आपने धारण किये हैं. अब आप हमेशा की तरह सदगुरुदेव और भगवान् गजानन गणपति का पूजन और सामर्थ्यानुसार मंत्र जप संपन्न कर पारदेश्वर को स्नान कराकर एक ताम्र पात्र में स्थापित कर दें. शाक्त परंपरा के अनुसार उस पात्र में एक मैथुन चक्र का

कुमकुम से निर्माण कर तब उस पर रसेश्वर को स्थापित करे. और उनसे समस्त दुर्भाग्य को दूर कर पूर्ण सौभाग्य और ऐश्वर्य प्राप्ति की प्रार्थना करें.

इसके बाद सामने दो अलग अलग पात्रों में सफ़ेद चन्दन और कुमकुम को घोलकर रख लें. सर्वप्रथम भगवान का निम्न ध्यान कर पंचोपचार पूजन करें और पूजन में खीर का भोग अवश्य लगावें.

ध्यान मंत्र-

ध्यायेन्नित्यंमहेशं रजतगिरिनिभं चारुचंद्रावतंसं
रत्नाकल्पोज्ज्वलांग परशुमृगवराभीतिहस्तं प्रसन्नम।
पद्मासीनं समंतात् स्तुतममरगणै व्याघ्रकृत्तिंवसानं
विश्वाद्यं विश्ववद्यं निखिलभयहरं पंचवक्त्रं त्रिनेत्रम॥

पंचोपचार पूजन के बाद निम्न कनकधारा स्तोत्र के २ पाठ करें. रस सिद्ध समाज में इस महा स्तोत्र को सुवर्णधारा स्तोत्र के नाम से भी जाना जाता है,वानस्पतिक संकेतों से भरा हुआ ये स्तोत्र विविध वनस्पतियों के सहयोग स्वर्ण निर्माण की क्रियाओं के रहस्य को स्वयं में समेटे हुए है और इसमें शब्दों का संयोजन ऐसा है की पारदेश्वर से इनका योग दरिद्रता और दैन्यता को दूर करता ही है. रस सिद्धि और कायाकल्प रहस्यों के अन्वेषण काल में आदरणीय स्वामी प्रज्ञानंद जी ने मुझे इस रहस्य से अवगत कराया था(मैंने उन्ही से प्राप्त अन्य रस तंत्र के कुछ रहस्यों का वर्णन ब्लॉग की लेखमाला रक्त बिंदु श्वेत बिंदु रहस्य में भी दिया है). और यदि सदगुरुदेव का आशीर्वाद रहा तो कालानुसार मैं इनसुवर्णधारा स्तोत्र श्लोको के उस अनुवाद को आपके समक्ष अवश्य रखूँगा.

अङ्गं हरेः पुलकभूषणमाश्रयन्ती
भृङ्गाङ्गनेव मुकुलाभरणं तमालम् ।
अङ्गीकृताखिल विभूतिरपाङ्गलीला
माङ्गल्यदास्तु मम मङ्गलदेवतायाः ॥ १ ॥
मुग्धा मुहुर्विदधती वदने मुरारेः
प्रेमत्रपाप्रणिहितानि गतागतानि ।
मालादृशोर्मधुकरीव महोत्पले या
सा मे श्रियं दिशतु सागर सम्भवा याः ॥ २ ॥
आमीलिताक्षमधिग्यम मुदा मुकुन्दम्
आनन्दकन्दमनिमेषमनङ्ग तन्त्रम् ।
आकेकरस्थितकनीनिकपक्ष्मनेत्रं

भूत्यै भवन्मम भुजङ्ग शयाङ्गना याः ॥ ३ ॥
बाह्वन्तरे मधुजितः श्रितकौस्तुभे या
हारावलीव हरिनीलमयी विभाति ।
कामप्रदा भगवतोऽपि कटाक्षमाला
कल्याणमावहतु मे कमलालया याः ॥ ४ ॥
कालाम्बुदालि ललितोरसि कैटभारेः
धाराधरे स्फुरति या तटिदङ्गनेव ।
मातुस्समस्तजगतां महनीयमूर्तिः
भद्राणि मे दिशतु भार्गवनन्दना याः ॥ ५ ॥
प्राप्तं पदं प्रथमतः खलु यत्प्रभावात्
माङ्गल्यभाजि मधुमाथिनि मन्मथेन ।
मय्यापतेत्तदिह मन्थरमीक्षणार्थं
मन्दालसं च मकरालय कन्यका याः ॥ ६॥
विश्वामरेन्द्र पद विभ्रम दानदक्षम्
आनन्दहेतुरधिकं मुरविद्विषोऽपि ।
ईषन्निषीदतु मयि क्षणमीक्षणार्थं
इन्दीवरोदर सहोदरमिन्दिरा याः ॥ ७ ॥
इष्टा विशिष्टमतयोपि यया दयार्द्र
दृष्ट्या त्रिविष्टपपदं सुलभं लभन्ते ।
दृष्टिः प्रहृष्ट कमलोदर दीप्तिरिष्टां
पुष्टिं कृषीष्ट मम पुष्कर विष्टरा याः ॥ ८ ॥
दद्याद्दयानु पवनो द्रविणाम्बुधारां
अस्मिन्नकिञ्चन विहङ्ग शिशौ विषण्णे ।
दुष्कर्मघर्ममपनीय चिराय दूरं
नारायण प्रणयिनी नयनाम्बुवाहः ॥ ९ ॥
गीर्देवतेति गरुडध्वज सुन्दरीति
शाकम्बरीति शशिशेखर वल्लभेति ।
सृष्टि स्थिति प्रलय केलिषु संस्थितायै
तस्यै नमस्त्रिभुवनैक गुरोस्तरुण्यै ॥ १० ॥
श्रुत्यै नमोऽस्तु शुभकर्म फलप्रसूत्यै

रत्यै नमोऽस्तु रमणीय गुणार्णवायै ।
शक्त्यै नमोऽस्तु शतपत्र निकेतनायै
पुष्ट्यै नमोऽस्तु पुरुषोत्तम वल्लभायै ॥ ११ ॥
नमोऽस्तु नालीक निभाननायै
नमोऽस्तु दुग्धोदधि जन्मभूम्यै ।
नमोऽस्तु सोमामृत सोदरायै
नमोऽस्तु नारायण वल्लभायै ॥ १२ ॥
नमोऽस्तु हेमाम्बुज पीठिकायै
नमोऽस्तु भूमण्डल नायिकायै ।
नमोऽस्तु देवादि दयापरायै
नमोऽस्तु शार्ङ्गायुध वल्लभायै ॥ १३ ॥
नमोऽस्तु देव्यै भृगुनन्दनायै
नमोऽस्तु विष्णोरुरसि स्थितायै ।
नमोऽस्तु लक्ष्म्यै कमलालयायै
नमोऽस्तु दामोदर वल्लभायै ॥ १४ ॥
नमोऽस्तु कान्त्यै कमलेक्षणायै
नमोऽस्तु भूत्यै भुवनप्रसूत्यै ।
नमोऽस्तु देवादिभिरर्चितायै
नमोऽस्तु नन्दात्मज वल्लभायै ॥ १५ ॥
सम्पत्कराणि सकलेन्द्रिय नन्दनानि
साम्राज्य दानविभवानि सरोरुहाक्षि ।
त्वद्वन्दनानि दुरिता हरणोद्यतानि
मामेव मातरनिशं कलयन्तु मान्ये ॥ १६ ॥
यत्कटाक्ष समुपासना विधिः
सेवकस्य सकलार्थ सम्पदः ।
सन्तनोति वचनाङ्ग मानसैः
त्वां मुरारिहृदयेश्वरीं भजे ॥ १७ ॥
सरसिजनिलये सरोजहस्ते
धवलतमांशुक गन्धमाल्यशोभे ।
भगवति हरिवल्लभे मनोज्ञे

त्रिभुवनभूतिकरी प्रसीदमह्यम् ॥ १८ ॥
दिग्घस्तिभिः कनक कुम्भमुखावसृष्ट
स्वर्वाहिनी विमलचारुजलाप्लुताङ्गीम् ।
प्रातर्नमामि जगतां जननीमशेष
लोकधिनाथ गृहिणीममृताब्धिपुत्रीम् ॥ १९ ॥
कमले कमलाक्ष वल्लभे त्वं
करुणापूर तरङ्गितैरपाङ्गैः ।
अवलोकय मामकिञ्चनानां
प्रथमं पात्रमकृतिमं दयायाः ॥ २०॥
देवि प्रसीद जगदीश्वरि लोकमातः
कल्याणगात्रि कमलेक्षण जीवनाथे ।
दारिद्र्यभीतिहृदयं शरणागतं मां
आलोकय प्रतिदिनं सदयैरपाङ्गैः ॥ २२ ॥
स्तुवन्ति ये स्तुतिभिरमीभिरन्वहं
त्रयीमयीं त्रिभुवनमातरं रमाम् ।
गुणाधिका गुरुतुर भाग्य भागिनः
भवन्ति ते भुवि बुध भाविताशयाः ॥ २२ ॥
सुवर्णधारा स्तोत्रं यत् शङ्कराचार्य निर्मितं
त्रिसन्ध्यं यः पठेन्नित्यं स कुबेरसमो भवेत् ॥

स्तोत्र पाठ के उपरान्त (**ॐ वैश्रवणाय स्वाहा**) मंत्र की १ माला संपन्न करें,इस हेतु गुरु माला या रुद्राक्ष माला का प्रयोग किया जा सकता है. इसके बाद निम्न मंत्र का उच्चारण करते हुए रसेश्वर पर चन्दन की बिंदी लगाइए.

ॐ सदाशिवाय नमः

फिर **ॐ ऐं श्रीं ह्रीं कुबेराय धन धान्य समृद्धिं देहि दापय नमः** (OM AING SHREEM HREENG KUBERAAY DHAN DHAANYA SAMRIDDHIM DEHI DAAPAY NAMAH)मंत्र को ११ बार बोलते हुए **११ बिंदी** जल मिश्रित कुमकुम (जो की हल्दी से बना हुआ हो अथवा अष्टगंध का प्रयोग करें)के द्वारा बिंदी के द्वारा भगवान् रसेश्वर पर लगायें.

बिंदी लगाने के बाद पुनः निम्न मंत्र का उच्चारण करते हुए चन्दन से रसेश्वर पर बिंदी लगायें.

ॐ रुद्राय नमः

फिर **ॐ ऐं श्रीं ह्रीं कुबेराय धन धान्य समृद्धिं देहि दापय नमः** (OM AING SHREEM HREENG KUBERAAY DHAN DHAANYA SAMRIDDHIM DEHI DAAPAY NAMAH)मंत्र को ११ बार बोलते हुए **११ बिंदी** जल मिश्रित कुमकुम (जो की हल्दी से बना हुआ हो अथवा अष्टगंध का प्रयोग करें)के द्वारा बिंदी के द्वारा भगवान् रसेश्वर पर लगायें.

बिंदी लगाने के बाद पुनः निम्न मंत्र का उच्चारण करते हुए चन्दन से रसेश्वर पर बिंदी लगायें.

ॐ कालाग्नि नमः

फिर **ॐ ऐं श्रीं ह्रीं कुबेराय धन धान्य समृद्धिं देहि दापय नमः** (OM AING SHREEM HREENG KUBERAAY DHAN DHAANYA SAMRIDDHIM DEHI DAAPAY NAMAH)मंत्र को ११ बार बोलते हुए **११ बिंदी** जल मिश्रित कुमकुम (जो की हल्दी से बना हुआ हो अथवा अष्टगंध का प्रयोग करें)के द्वारा बिंदी के द्वारा भगवान् रसेश्वर पर लगायें.

बिंदी लगाने के बाद पुनः निम्न मंत्र का उच्चारण करते हुए चन्दन से रसेश्वर पर बिंदी लगायें.

ॐ चिंतनाय नमः

फिर **ॐ ऐं श्रीं ह्रीं कुबेराय धन धान्य समृद्धिं देहि दापय नमः** (OM AING SHREEM HREENG KUBERAAY DHAN DHAANYA SAMRIDDHIM DEHI DAAPAY NAMAH)मंत्र को ११ बार बोलते हुए **११ बिंदी** जल मिश्रित कुमकुम (जो की हल्दी से बना हुआ हो अथवा अष्टगंध का प्रयोग करें)के द्वारा बिंदी के द्वारा भगवान् रसेश्वर पर लगायें.

बिंदी लगाने के बाद पुनः निम्न मंत्र का उच्चारण करते हुए चन्दन से रसेश्वर पर बिंदी लगायें.

ॐ विरूपाय नमः

फिर **ॐ ऐं श्रीं ह्रीं कुबेराय धन धान्य समृद्धिं देहि दापय नमः** (OM AING SHREEM HREENG KUBERAAY DHAN DHAANYA SAMRIDDHIM DEHI DAAPAY NAMAH)मंत्र को ११ बार बोलते हुए **११ बिंदी** जल मिश्रित कुमकुम (जो की हल्दी से बना हुआ हो अथवा अष्टगंध का प्रयोग करें)के द्वारा बिंदी के द्वारा भगवान् रसेश्वर पर लगायें.

बिंदी लगाने के बाद पुनः निम्न मंत्र का उच्चारण करते हुए चन्दन से रसेश्वर पर बिंदी लगायें.

ॐ वैद्रवाय नमः

फिर **ॐ ऐं श्रीं ह्रीं कुबेराय धन धान्य समृद्धिं देहि दापय नमः** (OM AING SHREEM HREENG KUBERAAY DHAN DHAANYA SAMRIDDHIM DEHI DAAPAY NAMAH)मंत्र को ११ बार बोलते हुए **११ बिंदी** जल

मिश्रित कुमकुम (जो की हल्दी से बना हुआ हो अथवा अष्टगंध का प्रयोग करें)के द्वारा बिंदी के द्वारा भगवान् रसेश्वर पर लगायें.

बिंदी लगाने के बाद पुनः निम्न मंत्र का उच्चारण करते हुए चन्दन से रसेश्वर पर बिंदी लगायें.

ॐ लक्ष्मी रूपाय नमः

फिर **ॐ ऐं श्रीं ह्रीं कुबेराय धन धान्य समृद्धिं देहि दापय नमः** (OM AING SHREEM HREENG KUBERAAY DHAN DHAANYA SAMRIDDHIM DEHI DAAPAY NAMAH)मंत्र को ११ बार बोलते हुए **११ बिंदी** जल मिश्रित कुमकुम (जो की हल्दी से बना हुआ हो अथवा अष्टगंध का प्रयोग करें)के द्वारा बिंदी के द्वारा भगवान् रसेश्वर पर लगायें.

बिंदी लगाने के बाद पुनः निम्न मंत्र का उच्चारण करते हुए चन्दन से रसेश्वर पर बिंदी लगायें.

ॐ कृष्ण रूपाय नमः

फिर **ॐ ऐं श्रीं ह्रीं कुबेराय धन धान्य समृद्धिं देहि दापय नमः** (OM AING SHREEM HREENG KUBERAAY DHAN DHAANYA SAMRIDDHIM DEHI DAAPAY NAMAH)मंत्र को ११ बार बोलते हुए **११ बिंदी** जल मिश्रित कुमकुम (जो की हल्दी से बना हुआ हो अथवा अष्टगंध का प्रयोग करें)के द्वारा बिंदी के द्वारा भगवान् रसेश्वर पर लगायें.

बिंदी लगाने के बाद पुनः निम्न मंत्र का उच्चारण करते हुए चन्दन से रसेश्वर पर बिंदी लगायें.

ॐ मुक्ति रूपाय नमः

फिर **ॐ ऐं श्रीं ह्रीं कुबेराय धन धान्य समृद्धिं देहि दापय नमः** (OM AING SHREEM HREENG KUBERAAY DHAN DHAANYA SAMRIDDHIM DEHI DAAPAY NAMAH)मंत्र को ११ बार बोलते हुए **११ बिंदी** जल मिश्रित कुमकुम (जो की हल्दी से बना हुआ हो अथवा अष्टगंध का प्रयोग करें)के द्वारा बिंदी के द्वारा भगवान् रसेश्वर पर लगायें.

बिंदी लगाने के बाद पुनः निम्न मंत्र का उच्चारण करते हुए चन्दन से रसेश्वर पर बिंदी लगायें.

ॐ चिंत्य रूपये नमः

फिर **ॐ ऐं श्रीं ह्रीं कुबेराय धन धान्य समृद्धिं देहि दापय नमः** (OM AING SHREEM HREENG KUBERAAY DHAN DHAANYA SAMRIDDHIM DEHI DAAPAY NAMAH)मंत्र को ११ बार बोलते हुए **११ बिंदी** जल मिश्रित कुमकुम (जो की हल्दी से बना हुआ हो अथवा अष्टगंध का प्रयोग करें)के द्वारा बिंदी के द्वारा भगवान् रसेश्वर पर लगायें.

बिंदी लगाने के बाद पुनः निम्न मंत्र का उच्चारण करते हुए चन्दन से रसेश्वर पर बिंदी लगायें.

ॐ भवेश्वर्याय नमः

फिर **ॐ ऐं श्रीं ह्रीं कुबेराय धन धान्य समृद्धिं देहि दापय नमः** (OM AING SHREEM HREENG KUBERAAY DHAN DHAANYA SAMRIDDHIM DEHI DAAPAY NAMAH)मंत्र को ११ बार बोलते हुए **११ बिंदी** जल मिश्रित कुमकुम (जो की हल्दी से बना हुआ हो अथवा अष्टगंध का प्रयोग करें)के द्वारा बिंदी के द्वारा भगवान् रसेश्वर पर लगायें.

बिंदी लगाने के बाद पुनः निम्न मंत्र का उच्चारण करते हुए चन्दन से रसेश्वर पर बिंदी लगायें.

ॐ आबद्धरूपाय नमः

फिर **ॐ ऐं श्रीं ह्रीं कुबेराय धन धान्य समृद्धिं देहि दापय नमः** (OM AING SHREEM HREENG KUBERAAY DHAN DHAANYA SAMRIDDHIM DEHI DAAPAY NAMAH)मंत्र को ११ बार बोलते हुए **११ बिंदी** जल मिश्रित कुमकुम (जो की हल्दी से बना हुआ हो अथवा अष्टगंध का प्रयोग करें)के द्वारा बिंदी के द्वारा भगवान् रसेश्वर पर लगायें.

बिंदी लगाने के बाद पुनः निम्न मंत्र का उच्चारण करते हुए चन्दन से रसेश्वर पर बिंदी लगायें.

ॐ पूर्णत्वरूपाय नमः

फिर **ॐ ऐं श्रीं ह्रीं कुबेराय धन धान्य समृद्धिं देहि दापय नमः** (OM AING SHREEM HREENG KUBERAAY DHAN DHAANYA SAMRIDDHIM DEHI DAAPAY NAMAH)मंत्र को ११ बार बोलते हुए **११ बिंदी** जल मिश्रित कुमकुम (जो की हल्दी से बना हुआ हो अथवा अष्टगंध का प्रयोग करें)के द्वारा बिंदी के द्वारा भगवान् रसेश्वर पर लगायें.

बिंदी लगाने के बाद पुनः निम्न मंत्र का उच्चारण करते हुए चन्दन से रसेश्वर पर बिंदी लगायें.

ॐ चैतन्यरूपाय नमः

फिर **ॐ ऐं श्रीं ह्रीं कुबेराय धन धान्य समृद्धिं देहि दापय नमः** (OM AING SHREEM HREENG KUBERAAY DHAN DHAANYA SAMRIDDHIM DEHI DAAPAY NAMAH)मंत्र को ११ बार बोलते हुए **११ बिंदी** जल मिश्रित कुमकुम (जो की हल्दी से बना हुआ हो अथवा अष्टगंध का प्रयोग करें)के द्वारा बिंदी के द्वारा भगवान् रसेश्वर पर लगायें.

बिंदी लगाने के बाद पुनः निम्न मंत्र का उच्चारण करते हुए चन्दन से रसेश्वर पर बिंदी लगायें.

ॐ क्रियमाणाय नमः

फिर **ॐ ऐं श्रीं ह्रीं कुबेराय धन धान्य समृद्धिं देहि दापय नमः** (OM AING SHREEM HREENG KUBERAAY DHAN DHAANYA SAMRIDDHIM DEHI DAAPAY NAMAH)मंत्र को ११ बार बोलते हुए **११ बिंदी** जल मिश्रित कुमकुम (जो की हल्दी से बना हुआ हो अथवा अष्टगंध का प्रयोग करें)के द्वारा बिंदी के द्वारा भगवान् रसेश्वर पर लगायें.

बिंदी लगाने के बाद पुनः निम्न मंत्र का उच्चारण करते हुए चन्दन से रसेश्वर पर बिंदी लगायें.

ॐ कालं तरायै नमः

फिर **ॐ ऐं श्रीं ह्रीं कुबेराय धन धान्य समृद्धिं देहि दापय नमः** (OM AING SHREEM HREENG KUBERAAY DHAN DHAANYA SAMRIDDHIM DEHI DAAPAY NAMAH)मंत्र को ११ बार बोलते हुए **११ बिंदी** जल मिश्रित कुमकुम (जो की हल्दी से बना हुआ हो अथवा अष्टगंध का प्रयोग करें)के द्वारा बिंदी के द्वारा भगवान् रसेश्वर पर लगायें.

बिंदी लगाने के बाद पुनः निम्न मंत्र का उच्चारण करते हुए चन्दन से रसेश्वर पर बिंदी लगायें.

ॐ पूर्णस्यायै नमः

फिर **ॐ ऐं श्रीं ह्रीं कुबेराय धन धान्य समृद्धिं देहि दापय नमः** (OM AING SHREEM HREENG KUBERAAY DHAN DHAANYA SAMRIDDHIM DEHI DAAPAY NAMAH)मंत्र को ११ बार बोलते हुए **११ बिंदी** जल मिश्रित कुमकुम (जो की हल्दी से बना हुआ हो अथवा अष्टगंध का प्रयोग करें)के द्वारा बिंदी के द्वारा भगवान् रसेश्वर पर लगायें.

बिंदी लगाने के बाद पुनः निम्न मंत्र का उच्चारण करते हुए चन्दन से रसेश्वर पर बिंदी लगायें.

ॐ सभामभैरवाय नमः

फिर **ॐ ऐं श्रीं ह्रीं कुबेराय धन धान्य समृद्धिं देहि दापय नमः** (OM AING SHREEM HREENG KUBERAAY DHAN DHAANYA SAMRIDDHIM DEHI DAAPAY NAMAH)मंत्र को ११ बार बोलते हुए **११ बिंदी** जल मिश्रित कुमकुम (जो की हल्दी से बना हुआ हो अथवा अष्टगंध का प्रयोग करें)के द्वारा बिंदी के द्वारा भगवान् रसेश्वर पर लगायें.

बिंदी लगाने के बाद पुनः निम्न मंत्र का उच्चारण करते हुए चन्दन से रसेश्वर पर बिंदी लगायें.

ॐ सचिन्त्य रूपाय नमः

फिर **ॐ ऐं श्रीं ह्रीं कुबेराय धन धान्य समृद्धिं देहि दापय नमः** (OM AING SHREEM HREENG KUBERAAY DHAN DHAANYA SAMRIDDHIM DEHI DAAPAY NAMAH)मंत्र को ११ बार बोलते हुए **११ बिंदी** जल मिश्रित कुमकुम (जो की हल्दी से बना हुआ हो अथवा अष्टगंध का प्रयोग करें)के द्वारा बिंदी के द्वारा भगवान् रसेश्वर पर लगायें.

बिंदी लगाने के बाद पुनः निम्न मंत्र का उच्चारण करते हुए चन्दन से रसेश्वर पर बिंदी लगायें.

ॐ पारदेश्वर्यै नमः

फिर **ॐ ऐं श्रीं ह्रीं कुबेराय धन धान्य समृद्धिं देहि दापय नमः** (OM AING SHREEM HREENG KUBERAAY DHAN DHAANYA SAMRIDDHIM DEHI DAAPAY NAMAH)मंत्र को ११ बार बोलते हुए **११ बिंदी** जल मिश्रित कुमकुम (जो की हल्दी से बना हुआ हो अथवा अष्टगंध का प्रयोग करें)के द्वारा बिंदी के द्वारा भगवान् रसेश्वर पर लगायें.

बिंदी लगाने के बाद पुनः निम्न मंत्र का उच्चारण करते हुए चन्दन से रसेश्वर पर बिंदी लगायें.

ॐ आबद्ध लक्ष्मी नमः

फिर **ॐ ऐं श्रीं ह्रीं कुबेराय धन धान्य समृद्धिं देहि दापय नमः** (OM AING SHREEM HREENG KUBERAAY DHAN DHAANYA SAMRIDDHIM DEHI DAAPAY NAMAH)मंत्र को ११ बार बोलते हुए **११ बिंदी** जल मिश्रित कुमकुम (जो की हल्दी से बना हुआ हो अथवा अष्टगंध का प्रयोग करें)के द्वारा बिंदी के द्वारा भगवान् रसेश्वर पर लगायें.

बिंदी लगाने के बाद पुनः निम्न मंत्र का उच्चारण करते हुए चन्दन से रसेश्वर पर बिंदी लगायें.

ॐ अन्नपूर्णायै नमः

फिर **ॐ ऐं श्रीं ह्रीं कुबेराय धन धान्य समृद्धिं देहि दापय नमः** (OM AING SHREEM HREENG KUBERAAY DHAN DHAANYA SAMRIDDHIM DEHI DAAPAY NAMAH)मंत्र को ११ बार बोलते हुए **११ बिंदी** जल मिश्रित कुमकुम (जो की हल्दी से बना हुआ हो अथवा अष्टगंध का प्रयोग करें)के द्वारा बिंदी के द्वारा भगवान् रसेश्वर पर लगायें.

बिंदी लगाने के बाद पुनः निम्न मंत्र का उच्चारण करते हुए चन्दन से रसेश्वर पर बिंदी लगायें.

ॐ दीर्घ रूपाये नमः

फिर **ॐ ऐं श्रीं ह्रीं कुबेराय धन धान्य समृद्धिं देहि दापय नमः** (OM AING SHREEM HREENG KUBERAAY DHAN DHAANYA SAMRIDDHIM DEHI DAAPAY NAMAH)मंत्र को ११ बार बोलते हुए **११ बिंदी** जल

मिश्रित कुमकुम (जो की हल्दी से बना हुआ हो अथवा अष्टगंध का प्रयोग करें)के द्वारा बिंदी के द्वारा भगवान् रसेश्वर पर लगायें.

बिंदी लगाने के बाद पुनः निम्न मंत्र का उच्चारण करते हुए चन्दन से रसेश्वर पर बिंदी लगायें.

ॐ कालमुक्तायै नमः

फिर **ॐ ऐं श्रीं ह्रीं कुबेराय धन धान्य समृद्धिं देहि दापय नमः** (OM AING SHREEM HREENG KUBERAAY DHAN DHAANYA SAMRIDDHIM DEHI DAAPAY NAMAH)मंत्र को ११ बार बोलते हुए **११ बिंदी** जल मिश्रित कुमकुम (जो की हल्दी से बना हुआ हो अथवा अष्टगंध का प्रयोग करें)के द्वारा बिंदी के द्वारा भगवान् रसेश्वर पर लगायें.

बिंदी लगाने के बाद पुनः निम्न मंत्र का उच्चारण करते हुए चन्दन से रसेश्वर पर बिंदी लगायें.

ॐ मृत्युरूपायै नमः

फिर **ॐ ऐं श्रीं ह्रीं कुबेराय धन धान्य समृद्धिं देहि दापय नमः** (OM AING SHREEM HREENG KUBERAAY DHAN DHAANYA SAMRIDDHIM DEHI DAAPAY NAMAH)मंत्र को ११ बार बोलते हुए **११ बिंदी** जल मिश्रित कुमकुम (जो की हल्दी से बना हुआ हो अथवा अष्टगंध का प्रयोग करें)के द्वारा बिंदी के द्वारा भगवान् रसेश्वर पर लगायें.

बिंदी लगाने के बाद पुनः निम्न मंत्र का उच्चारण करते हुए चन्दन से रसेश्वर पर बिंदी लगायें.

ॐ गणेश रूपायै नमः

फिर **ॐ ऐं श्रीं ह्रीं कुबेराय धन धान्य समृद्धिं देहि दापय नमः** (OM AING SHREEM HREENG KUBERAAY DHAN DHAANYA SAMRIDDHIM DEHI DAAPAY NAMAH)मंत्र को ११ बार बोलते हुए **११ बिंदी** जल मिश्रित कुमकुम (जो की हल्दी से बना हुआ हो अथवा अष्टगंध का प्रयोग करें)के द्वारा बिंदी के द्वारा भगवान् रसेश्वर पर लगायें.

बिंदी लगाने के बाद पुनः निम्न मंत्र का उच्चारण करते हुए चन्दन से रसेश्वर पर बिंदी लगायें.

ॐ सरस्वतेश्वर्यायै नमः

फिर **ॐ ऐं श्रीं ह्रीं कुबेराय धन धान्य समृद्धिं देहि दापय नमः** (OM AING SHREEM HREENG KUBERAAY DHAN DHAANYA SAMRIDDHIM DEHI DAAPAY NAMAH)मंत्र को ११ बार बोलते हुए **११ बिंदी** जल मिश्रित कुमकुम (जो की हल्दी से बना हुआ हो अथवा अष्टगंध का प्रयोग करें)के द्वारा बिंदी के द्वारा भगवान् रसेश्वर पर लगायें.

बिंदी लगाने के बाद पुनः निम्न मंत्र का उच्चारण करते हुए चन्दन से रसेश्वर पर बिंदी लगायें.

ॐ पूर्णेश्वरायै नमः

फिर **ॐ ऐं श्रीं ह्रीं कुबेराय धन धान्य समृद्धिं देहि दापय नमः** (OM AING SHREEM HREENG KUBERAAY DHAN DHAANYA SAMRIDDHIM DEHI DAAPAY NAMAH)मंत्र को ११ बार बोलते हुए **११ बिंदी** जल मिश्रित कुमकुम (जो की हल्दी से बना हुआ हो अथवा अष्टगंध का प्रयोग करें)के द्वारा बिंदी के द्वारा भगवान् रसेश्वर पर लगायें.

बिंदी लगाने के बाद पुनः निम्न मंत्र का उच्चारण करते हुए चन्दन से रसेश्वर पर बिंदी लगायें.

ॐ कल्याण रूपायै नमः

फिर **ॐ ऐं श्रीं ह्रीं कुबेराय धन धान्य समृद्धिं देहि दापय नमः** (OM AING SHREEM HREENG KUBERAAY DHAN DHAANYA SAMRIDDHIM DEHI DAAPAY NAMAH)मंत्र को ११ बार बोलते हुए **११ बिंदी** जल मिश्रित कुमकुम (जो की हल्दी से बना हुआ हो अथवा अष्टगंध का प्रयोग करें)के द्वारा बिंदी के द्वारा भगवान् रसेश्वर पर लगायें.

बिंदी लगाने के बाद पुनः निम्न मंत्र का उच्चारण करते हुए चन्दन से रसेश्वर पर बिंदी लगायें.

ॐ पूर्णआबद्ध रूपाय नमः

फिर **ॐ ऐं श्रीं ह्रीं कुबेराय धन धान्य समृद्धिं देहि दापय नमः** (OM AING SHREEM HREENG KUBERAAY DHAN DHAANYA SAMRIDDHIM DEHI DAAPAY NAMAH)मंत्र को ११ बार बोलते हुए **११ बिंदी** जल मिश्रित कुमकुम (जो की हल्दी से बना हुआ हो अथवा अष्टगंध का प्रयोग करें)के द्वारा बिंदी के द्वारा भगवान् रसेश्वर पर लगायें.

बिंदी लगाने के बाद पुनः निम्न मंत्र का उच्चारण करते हुए चन्दन से रसेश्वर पर बिंदी लगायें.

ॐ दीर्घ रूपाय नमः

फिर **ॐ ऐं श्रीं ह्रीं कुबेराय धन धान्य समृद्धिं देहि दापय नमः** (OM AING SHREEM HREENG KUBERAAY DHAN DHAANYA SAMRIDDHIM DEHI DAAPAY NAMAH)मंत्र को ११ बार बोलते हुए **११ बिंदी** जल मिश्रित कुमकुम (जो की हल्दी से बना हुआ हो अथवा अष्टगंध का प्रयोग करें)के द्वारा बिंदी के द्वारा भगवान् रसेश्वर पर लगायें.

बिंदी लगाने के बाद पुनः निम्न मंत्र का उच्चारण करते हुए चन्दन से रसेश्वर पर बिंदी लगायें.

ॐ कल्याणार्थ सदां पूर्वश्याम सः दीर्घ रूपाय नमः

फिर **ॐ ऐं श्रीं ह्रीं कुबेराय धन धान्य समृद्धिं देहि दापय नमः** (OM AING SHREEM HREENG KUBERAAY DHAN DHAANYA SAMRIDDHIM DEHI DAAPAY NAMAH)मंत्र को ११ बार बोलते हुए **११ बिंदी** जल मिश्रित कुमकुम (जो की हल्दी से बना हुआ हो अथवा अष्टगंध का प्रयोग करें)के द्वारा बिंदी के द्वारा भगवान् रसेश्वर पर लगायें.

बिंदी लगाने के बाद पुनः निम्न मंत्र का उच्चारण करते हुए चन्दन से रसेश्वर पर बिंदी लगायें.

ॐ अमृत्यु रूपाय नमः

फिर **ॐ ऐं श्रीं ह्रीं कुबेराय धन धान्य समृद्धिं देहि दापय नमः** (OM AING SHREEM HREENG KUBERAAY DHAN DHAANYA SAMRIDDHIM DEHI DAAPAY NAMAH)मंत्र को ११ बार बोलते हुए **११ बिंदी** जल मिश्रित कुमकुम (जो की हल्दी से बना हुआ हो अथवा अष्टगंध का प्रयोग करें)के द्वारा बिंदी के द्वारा भगवान् रसेश्वर पर लगायें.

बिंदी लगाने के बाद पुनः निम्न मंत्र का उच्चारण करते हुए चन्दन से रसेश्वर पर बिंदी लगायें.

ॐ अमृताय रूपाय नमः

फिर **ॐ ऐं श्रीं ह्रीं कुबेराय धन धान्य समृद्धिं देहि दापय नमः** (OM AING SHREEM HREENG KUBERAAY DHAN DHAANYA SAMRIDDHIM DEHI DAAPAY NAMAH)मंत्र को ११ बार बोलते हुए **११ बिंदी** जल मिश्रित कुमकुम (जो की हल्दी से बना हुआ हो अथवा अष्टगंध का प्रयोग करें)के द्वारा बिंदी के द्वारा भगवान् रसेश्वर पर लगायें.

बिंदी लगाने के बाद पुनः निम्न मंत्र का उच्चारण करते हुए चन्दन से रसेश्वर पर बिंदी लगायें.

ॐ कल्याण रूपाय नमः

फिर **ॐ ऐं श्रीं ह्रीं कुबेराय धन धान्य समृद्धिं देहि दापय नमः** (OM AING SHREEM HREENG KUBERAAY DHAN DHAANYA SAMRIDDHIM DEHI DAAPAY NAMAH)मंत्र को ११ बार बोलते हुए **११ बिंदी** जल मिश्रित कुमकुम (जो की हल्दी से बना हुआ हो अथवा अष्टगंध का प्रयोग करें)के द्वारा बिंदी के द्वारा भगवान् रसेश्वर पर लगायें.

बिंदी लगाने के बाद पुनः निम्न मंत्र का उच्चारण करते हुए चन्दन से रसेश्वर पर बिंदी लगायें.

ॐ पूर्ण कुबेर वैश्रवणाय नमः

फिर **ॐ ऐं श्रीं ह्रीं कुबेराय धन धान्य समृद्धिं देहि दापय नमः** (OM AING SHREEM HREENG KUBERAAY DHAN DHAANYA SAMRIDDHIM DEHI DAAPAY NAMAH)मंत्र को ११ बार बोलते हुए **११ बिंदी** जल मिश्रित कुमकुम (जो की हल्दी से बना हुआ हो अथवा अष्टगंध का प्रयोग करें)के द्वारा बिंदी के द्वारा भगवान् रसेश्वर पर लगायें.

इसके बाद पुनः (**ॐ वैश्रवणाय स्वाहा**) मंत्र की १ माला संपन्न करें. और कनकधारा स्तोत्र के ३ पाठ करे.

अङ्गं हरेः पुलकभूषणमाश्रयन्ती
भृङ्गाङ्गनेव मुकुलाभरणं तमालम् ।
अङ्गीकृताखिल विभूतिरपाङ्गलीला
माङ्गल्यदास्तु मम मङ्गलदेवतायाः ॥ १ ॥
मुग्धा मुहुर्विदधती वदने मुरारेः
प्रेमत्रपाप्रणिहितानि गतागतानि ।
मालादृशोर्मधुकरीव महोत्पले या
सा मे श्रियं दिशतु सागर सम्भवा याः ॥ २ ॥
आमीलिताक्षमधिग्यम मुदा मुकुन्दम्
आनन्दकन्दमनिमेषमनङ्ग तन्त्रम् ।
आकेकरस्थितकनीनिकपक्ष्मनेत्रं
भूत्यै भवन्मम भुजङ्ग शयाङ्गना याः ॥ ३ ॥
बाह्वन्तरे मधुजितः श्रितकौस्तुभे या
हारावलीव हरिनीलमयी विभाति ।
कामप्रदा भगवतोऽपि कटाक्षमाला
कल्याणमावहतु मे कमलालया याः ॥ ४ ॥
कालाम्बुदालि ललितोरसि कैटभारेः
धाराधरे स्फुरति या तटिदङ्गनेव ।
मातुस्समस्तजगतां महनीयमूर्तिः
भद्राणि मे दिशतु भार्गवनन्दना याः ॥ ५ ॥
प्राप्तं पदं प्रथमतः खलु यत्प्रभावात्
माङ्गल्यभाजि मधुमाथिनि मन्मथेन ।
मय्यापतेत्तदिह मन्थरमीक्षणार्थं

मन्दालसं च मकरालय कन्यका याः ॥ ६॥
विश्वामरेन्द्र पद विभ्रम दानदक्षम्
आनन्दहेतुरधिकं मुरविद्विषोऽपि ।
ईषन्निषीदतु मयि क्षणमीक्षणार्थं
इन्दीवरोदर सहोदरमिन्दिरा याः ॥ ७ ॥
इष्टा विशिष्टमतयोपि यया दयार्द्र
दृष्ट्या त्रिविष्टपपदं सुलभं लभन्ते ।
दृष्टिः प्रहृष्ट कमलोदर दीप्तिरिष्टां
पुष्टिं कृषीष्ट मम पुष्कर विष्टरा याः ॥ ८ ॥
दद्याद्दयानु पवनो द्रविणाम्बुधारां
अस्मिन्नकिञ्चन विहङ्ग शिशौ विषण्णे ।
दुष्कर्मघर्ममपनीय चिराय दूरं
नारायण प्रणयिनी नयनाम्बुवाहः ॥ ९ ॥
गीर्देवतेति गरुडध्वज सुन्दरीति
शाकम्बरीति शशिशेखर वल्लभेति ।
सृष्टि स्थिति प्रलय केलिषु संस्थितायै
तस्यै नमस्त्रिभुवनैक गुरोस्तरुण्यै ॥ १० ॥
श्रुत्यै नमोऽस्तु शुभकर्म फलप्रसूत्यै
रत्यै नमोऽस्तु रमणीय गुणार्णवायै ।
शक्त्यै नमोऽस्तु शतपत्र निकेतनायै
पुष्ट्यै नमोऽस्तु पुरुषोत्तम वल्लभायै ॥ ११ ॥
नमोऽस्तु नालीक निभाननायै
नमोऽस्तु दुग्धोदधि जन्मभूम्यै ।
नमोऽस्तु सोमामृत सोदरायै
नमोऽस्तु नारायण वल्लभायै ॥ १२ ॥
नमोऽस्तु हेमाम्बुज पीठिकायै
नमोऽस्तु भूमण्डल नायिकायै ।
नमोऽस्तु देवादि दयापरायै
नमोऽस्तु शार्ङ्गायुध वल्लभायै ॥ १३ ॥
नमोऽस्तु देव्यै भृगुनन्दनायै

नमोऽस्तु विष्णोरुरसि स्थितायै ।
नमोऽस्तु लक्ष्म्यै कमलालयायै
नमोऽस्तु दामोदर वल्लभायै ॥ १४ ॥
नमोऽस्तु कान्त्यै कमलेक्षणायै
नमोऽस्तु भूत्यै भुवनप्रसूत्यै ।
नमोऽस्तु देवादिभिरर्चितायै
नमोऽस्तु नन्दात्मज वल्लभायै ॥ १५ ॥
सम्पत्कराणि सकलेन्द्रिय नन्दनानि
साम्राज्य दानविभवानि सरोरुहाक्षि ।
त्वद्वन्दनानि दुरिता हरणोद्यतानि
मामेव मातरनिशं कलयन्तु मान्ये ॥ १६ ॥
यत्कटाक्ष समुपासना विधिः
सेवकस्य सकलार्थ सम्पदः ।
सन्तनोति वचनाङ्ग मानसैः
त्वां मुरारिहृदयेश्वरीं भजे ॥ १७ ॥
सरसिजनिलये सरोजहस्ते
धवलतमांशुक गन्धमाल्यशोभे ।
भगवति हरिवल्लभे मनोज्ञे
त्रिभुवनभूतिकरी प्रसीदमह्यम् ॥ १८ ॥
दिग्घस्तिभिः कनक कुम्भमुखावसृष्ट
स्वर्वाहिनी विमलचारुजलाप्लुताङ्गीम् ।
प्रातर्नमामि जगतां जननीमशेष
लोकधिनाथ गृहिणीममृताब्धिपुत्रीम् ॥ १९ ॥
कमले कमलाक्ष वल्लभे त्वं
करुणापूर तरङ्गितैरपाङ्गैः ।
अवलोकय मामकिञ्चनानां
प्रथमं पात्रमकृतिमं दयायाः ॥ २०॥
देवि प्रसीद जगदीश्वरि लोकमातः
कल्याणगात्रि कमलेक्षण जीवनाथे ।
दारिद्र्यभीतिहृदयं शरणागतं मां

आलोकय प्रतिदिनं सदयैरपाङ्गैः ॥ २२ ॥
स्तुवन्ति ये स्तुतिभिरमीभिरन्वहं
त्रयीमयीं त्रिभुवनमातरं रमाम् ।
गुणाधिका गुरुतुर भाग्य भागिनः
भवन्ति ते भुवि बुध भाविताशयाः ॥ २२ ॥
सुवर्णधारा स्तोत्रं यत् शङ्कराचार्य निर्मितं
त्रिसन्ध्यं यः पठेन्नित्यं स कुबेरसमो भवेत् ॥

इस प्रकार ये विधान पूर्ण होता है,विधान के बाद अपना जप भगवान् सदाशिव अथवा सदगुरुदेव के श्री चरणों में अपित कर सफलता के लिए प्रार्थना करें,इस प्रकार ये क्रिया तीन दिन तक करनी है. इसके बाद आप चाहें तो प्रतिदिन मात्र २१ बार **ॐ ऐं श्रीं ह्रीं कुबेराय धन धान्य समृद्धिं देहि दापय नमः** मंत्र जप कर लें. प्रतिदिन विधान के बाद खीर का भोग स्वयं ही ग्रहण कर लें.

आशा करता हूँ की आप इस विधान को संपन्न कर अपना जीवन खुशियों से परिपूर्ण कर लेंगे.आइये इस अद्वियतीय विधान को संपन्न कर हम सदगुरुदेव के श्री चरणों में अपने श्रद्धा ज्ञापित करें,और अपने शिष्यत्व को सार्थक करें.

दूसरा प्रयोग कल के लेख में........(क्रमशः)

SAHASTSARVMANOKAAMNA
RAANVITA DEH PAARAD TARA - DO ADVIYTIYA SADHNA

तारां संसारसारां त्रिभुवनजननीं सर्वसिद्धिप्रदात्रीं |

भगवती श्री महाविद्या तारा देवी के संदर्भ में कुछ भी लिखना या कहेना सूर्य को दीप दिखाने के सामान ही है. आदि काल से ही अपने साधको के मध्य देवी के हर एक स्वरुप का प्रचनल उनके स्नेह एवं प्रेम के कारण तंत्र क्षेत्र में वृहद रूप से विद्यमान है. देवी की साधना आदि ऋषि वसिष्ठ विश्वामित्र गोरक्षनाथ तथा भगवान श्री

तथागत ने भी की थी. क्यों की भगवती तारा ही तारण करने वाली अर्थात भोग से मोक्ष की तरफ ले जानी वाली है. उन्ही को ही तंत्र ग्रंथो में शक्ति के मूल रूप में मानकर अभ्यर्थना की है की हे भगवती तारा आप ब्रह्मांडीय संसार अर्थात सभी भोग एवं मोक्ष कारक तत्त्व का सार है, आप ही त्रिभुवन की स्वामिनी जन्मदात्री है तथा आपके माध्यम से ही सर्व सिद्धि की प्राप्ति होती है. और इसी लिए देवी की साधना सभी तंत्र मत्तो में सामान रूप से होती रही है. देवी से सबंधित कई प्रकार के प्रयोग एवं अनुष्ठान आदि प्रसिद्द है लेकिन गुप्त रूप से भी कई ऐसे विधान है जो की सिर्फ सिद्धो के मध्य प्रचलित रहते है. ऐसे ही कई विधान देवी के पारद विग्रह के माध्यम से संपन्न किये जाते है. आज हमारे कई भाई बहेनो के पास यह अति दुर्लभ 'पारद तारा' विग्रह विद्यमान है जो की आप सब ने जिस तीव्रता एवं उत्साह के साथ स्वीकार किया था. इसी विग्रह के सबंध में कई दिव्य प्रयोग आप सब के मध्य रखने के लिए बराबर प्रयास किया लेकिन कई प्रकार की योजना में व्यस्तता की वजह से यह प्रयोग आप से के मध्य प्रस्तुत करने में विलम्ब होता रहा है, कुछ दिन पूर्व ही इस विग्रह के माध्यम से संपन्न होने वाला एक अद्भुत तारा विधान प्रस्तुत किया गया था, अब इसी कड़ी में और दो विशेष प्रयोगों को आप सब के मध्य रखा जा रहा है जिनमे आकस्मिक धनप्राप्ति से सबंधित भगवती तारा प्रयोग एवं नीलतारा मेधा सरस्वती प्रयोग शामिल है. यह दोनों अद्भुत एवं तीव्र विधान है जो की साधक को शिघ्रातीशीघ्र फल प्रदान करने में समर्थ है. विधान सहज होने के कारण कोई भी साधक इसे संपन्न कर सकता है. आशा है की निश्चय ही साधकगण इन देव दुर्लभ प्रयोगों से लाभ की प्राप्ति करेंगे.

आकस्मिक धन प्राप्ति भगवती तारा प्रयोग –

प्रस्तूत प्रयोग आकस्मिक धन प्राप्ति से सबंधित भगवती तारा का विशेष प्रयोग है. इस प्रयोग को सम्प्पन करने पर साधक को विशेष धनलाभ की प्राप्ति होती है, वस्तुतः हमारे जीवन में हम कई प्रकार के दोषों के कारण एवं प्रारब्ध जन्य कारणों के कारण कई बार भोग लाभ की प्राप्ति से वंचित रहते है. एसी स्थिति में दीनता युक्त स्थिति से बाहर निकलने के लिए आदि काल से हमारे सिद्धो एवं ऋषियों ने भगवती तारा की साधना उपासना के सन्दर्भ में एक मत्त में स्वीकृति दी है. यूँ भगवती तारा को धनवर्षिणी, स्वर्णवर्षिणी आदि नामो से संबोधित किया गया है तो उसके पीछे यह तथ्य है की निश्चय ही देवी साधक की धन सबंधित सर्व अभिलाषा को पूर्ण करने में समर्थ है अगर प्राण प्रतिष्ठित पारद तारा विग्रह के सामने देवी के मूल मन्त्र को ही साधक पूर्ण समर्पण से युक्त हो कर जाप कर ले तो सभी समस्याओ से उसे मुक्ति मिलती है यह सिद्धो का कथन है. फिर भी कई बार विशेष प्रयोग आदि से भी लाभ प्राप्ति के लिए साधक प्रयत्न कर सकता है. देवी के पारद विग्रह से सबंध में सिद्धो के मध्य गुप्त रूप से प्रचलित जो प्रयोग है उनमे धन प्राप्ति के विशेष एवं उच्चकोटि के प्रयोग शामिल है. लेकिन इनमे से तीव्र एवं गृहस्थ साधको के लिए उपयुक्त विधान निम्न रूप से है. यह विधान सहज है एवं साधक अपने घर में यह विधान कर सकता है. साथ ही साथ यह प्रयोग अल्प मन्त्र जाप एवं साधना काल की अवधि में भी राहत है क्यों की आज के युग में सभी साधको के लिए मंत्रो के पूर्ण अनुष्ठान करना संभव नहीं है अतः इस प्रकार के दुर्लभ प्रयोग को प्रथम बार यहाँ पर प्रस्तुत किया जा रहा है. इस प्रयोग को पूर्ण करने पर

साधक को अपनी समस्या में राहत मिलती है, साधक अपने जीवन में उन्नति को प्राप्त करता है, धन प्राप्ति के नूत नविन स्त्रोत उसके सामने आते रहते है या फिर देवी नाना प्रकार से उसकी सहायता करती रहती है.
यह प्रयोग साधक किसी भी शुभ दिन शुरू कर सकता है. साधक को यह प्रयोग रात्री काल में ही संपन्न करना चाहिए.
साधक को स्नान कर साधना को शुरू करना चाहिए. साधक लाल रंग के वस्त्र को धारण करे तथा लाल रंग के आसन पर बैठे. साधक का मुख उत्तर दिशा की तरफ होना चाहिए.
साधक प्रथम सदगुरुपूजन करे तथा गुरु मन्त्र का जाप करे. इसके बाद साधक गणपति एवं भैरव देव का पंचोपचार पूजन करे. अगर साधक पंचोपचार पूजन न कर पाए तो साधक को मानसिक पूजन करना चाहिए.
साधक अपने सामने '**पारद तारा**' विग्रह को स्थापित करे तथा निम्न रूप से उसका पूजन करे.

ॐ श्रीं स्त्रीं गन्धं समर्पयामि |
ॐ श्रीं स्त्रीं पुष्पं समर्पयामि |
ॐ श्रीं स्त्रीं धूपं आध्रापयामि |
ॐ श्रीं स्त्रीं दीपं दर्शयामि |
ॐ श्रीं स्त्रीं नैवेद्यं निवेदयामि |

साधक को पूजन में तेल का दीपक लगाना चाहिए तथा भोग के रूपमें कोई भी फल या स्वयं के हाथ से बनी हुई मिठाई अर्पित करे. इसके बाद साधक निम्न रूप से न्यास करे. इसके अलावा इस प्रयोग के लिए साधक देवी विग्रह का अभिषेक शहद से करे.

करन्यास

ॐ श्रीं स्त्रीं अङ्गुष्ठाभ्यां नमः
ॐ महापद्मे तर्जनीभ्यां नमः
ॐ पद्मवासिनी मध्यमाभ्यां नमः
ॐ द्रव्यसिद्धिं अनामिकाभ्यां नमः
ॐ स्त्रीं श्रीं कनिष्टकाभ्यां नमः
ॐ हूं फट करतल करपृष्ठाभ्यां नमः

हृदयादिन्यास

ॐ श्रीं स्त्रीं हृदयाय नमः
ॐ महापद्मे शिरसे स्वाहा
ॐ पद्मवासिनी शिखायै वषट्
ॐ द्रव्यसिद्धिं कवचाय हूं
ॐ स्त्रीं श्रीं नेत्रत्रयाय वौषट्
ॐ हूं फट अस्त्राय फट्

न्यास के बाद साधक को देवी तारा का ध्यान करना है.

ध्यायेत कोटि दिवाकरद्युति निभां बालेन्दु युक् शेखरां
रक्ताङ्गी रसनां सुरक्त वसनांपूर्णेन्दु बिम्बाननाम्
पाशं कर्त्रि महाकुशादि दधतीं दोर्भिश्चतुर्भिर्युतां
नाना भूषण भूषितां भगवतीं तारां जगत तारिणीं

इस प्रकार ध्यान के बाद साधक देवी के निम्न मन्त्र की २१ माला मन्त्र जाप करे. साधक यह जाप शक्ति माला, मूंगामाला से या तारा माल्य से करे तो उत्तम है. अगर यह कोई भी माला उपलब्ध न हो तो साधक को स्फटिक माला या रुद्राक्ष माला से जाप करना चाहिए.

ॐ श्रीं स्त्रीं महापद्मे पद्मवासिनी द्रव्यसिद्धिं स्त्रीं श्रीं हूं फट

(OM SHREENG STREEM MAHAAPADME PADMAVAASINI DRAVYASIDDHIM STREEM SHREENG HOOM PHAT)

जाप पूर्ण होने पर साधक मन्त्र जाप को देवी के चरणों में योनीमुद्रा के साथ प्रणाम कर समर्पित कर दे.

***ॐ गुह्याति* गुह्यगोप्ता त्वं गृहाणाऽस्मत कृतं जपं सिद्धिर्भवतु मे देवि! तत् प्रसादाना महेश्वरी||**

साधक यह क्रम तिन दिन तक करे. तीसरे दिन जाप पूर्ण होने पर साधक शहद से इसी मन्त्र की १०८ आहुति अग्नि में समर्पित करे. इस प्रकार यह प्रयोग ३ दिन में पूर्ण होता है. साधक की धनअभिलाषा की पूर्ति होती है.

=-=

नील सरस्वती तारा मेधा सिद्धि प्रयोग –

हमारे जीवन में स्मरणशक्ति का कितना और क्या महत्त्व है यह हम स्वयं ही समज सकते है क्यों की शायद एक तरह से यह पूरा जीवन स्मरण शक्ति के ऊपर ही टिका हुआ है. हमारा जब जन्म होता है तो जन्म के साथ ही हामरे मस्तिष्क का जिस प्रकार विकास हुआ होता है तथा आगे जिस प्रकार होता है उसके ऊपर हमारे स्मरण की शक्ति का आधार रखता है, यही आधार कुछ सालो में स्थायी हो जाता है. और यही हमारी याद शक्ति बन जाती है जो की एक निश्चित सीमा में बंद जाती है. यह कुदरत की देन है की किसी को कम तो किसी को ज्यादा मात्र में स्मरण शक्ति की प्राप्ति होती है. लेकिन अगर हम इसी शक्ति का पूर्ण विकास कर ले तो? निश्चय ही सिद्धो के मध्य देवी का नीलसरस्वती स्वरुप कई विशेषताओ के कारण प्रचलित है जिसमे से एक है स्मरण शक्ति. देवी तारा तथा उनके विशेष रूप आदि की साधना करने पर साधक की स्मरण शक्ति तीव्र होने लगती है तथा जैसे जैसे साधना तीव्र होती जाती है वैसे वैसे साधक की स्मरणशक्ति का विकास होता जाता है. वस्तुतः हमारी स्पर्शेन्द्रिय एवं ज्ञानेन्द्रियो के कारण ही हम देखा, सुना, या स्पर्श याद रखते है. इन

इन्द्रियों की एक निश्चित क्षमता होती है जिसका अगर विकास कर लिया जाए तो साधक को कई प्रकार से जीवन में सुभीता की प्राप्ति होती है. और निश्चय ही एक अच्छी स्मरण शक्ति साधक को भौतिक एवं आध्यात्मिक दोनों ही पक्षों में पूर्ण सफलता प्रदान करने में बहुत ही बड़ा योगदान दे सकती है. फिर देवी से सबंधित यह प्रयोग तो अति गुप्त है. पारद की चैतन्यता एवं देवी के एक विशेष एवं गुप्त तीव्र मन्त्र के सहयोग से साधक की दसो इन्द्रियों की चैतन्यता का पूर्ण विकास होने लगता है तथा साधक को मेधा शक्ति की प्राप्ति होती है.

यह प्रयोग साधक किसी भी शुभ दिन शुरू कर सकता है. समय रात्रीकालीन रहे.

साधक स्नानशुद्धि कर पीले वस्त्र धारण कर पीले रंग के आसन पर उत्तर की तरफ मुख कर बैठ जाए.

सर्व प्रथम गुरुपूजन गुरु मन्त्र का जाप कर साधक गणेश एवं भैरव पूजन करे.

अपने सामने साधक '**पारद तारा विग्रह**' अथवा "**नील मेधा यन्त्र**"(**जिसे उपहार मे भेजा गया है और इस पर अन्य प्रयोग भी शीघ्र ही आयेंगे**) स्थापित करे तथा देवी का पूजन करे. पूजन के बाद साधक न्यास करे.

करन्यास

ॐ ऐं अङ्गुष्ठाभ्यां नमः

ॐ कूं तर्जनीभ्यां नमः

ॐ कैं मध्यमाभ्यां नमः

ॐ चां अनामिकाभ्यां नमः

ॐ चूं कनिष्टकाभ्यां नमः

ॐ ह्लीं स्त्रीं हूं करतल करपृष्ठाभ्यां नमः

हृदयादिन्यास

ॐ ऐं हृदयाय नमः

ॐ कूं शिरसे स्वाहा

ॐ कैं शिखायै वषट्

ॐ चां कवचाय हूं

ॐ चूं नेत्रत्रयाय वौषट्

ॐ ह्लीं स्त्रीं हूं अस्त्राय फट्

न्यास करने के बाद साधक देवी का ध्यान करे.

अटटाटटहास्निर्तामतिघोररूपाम् |

व्याघ्राम्बराम शशिधरां घननीलवर्नाम

कर्त्रीकपालकमलासिकराम त्रिनेत्रां

मालीढपादशवगां प्रणमामि ताराम

इसके बाद साधक भगवती तारा के विग्रह पर त्राटक करते हुए निम्न मन्त्र की ११ माला करे. इस प्रयोग के लिए साधक शक्ति माला, पीले हकीक माला या फिर स्फटिक माला का प्रयोग करे.

ॐ ऐं कूं कैं चां चूं ह्रीं स्त्रीं हूं

(OM AING KOOM KAIM CHAAM CHOOM HREENG STREEM HOOM)

जिन साधको को मन्त्र विज्ञान का अभ्यास है वह इस मन्त्र की तीव्रता एवं दिव्यता का आकलन कर सकते है, वैसे यह अति गुढ़ विषय है फिर भी साधकगण इतना समझ सकते है की मन्त्र के हर एक बीज की अपनी एक अलग ही विशेषता है. इस प्रयोग में साधना मन्त्र का निरूपण एवं विमर्श कुछ इस प्रकार है की ऐं बीज पञ्च ज्ञानेन्द्रियो के नियंत्रण का सूचक है वहीँ कूं कैं एवं चूं ये बीज एक एक तथा चां बीज दो कर्मेन्द्रि का प्रतिक है, ह्रीं स्त्रीं हूं देवी नील सरस्वती का मूल अभ्यर्थना क्रम मन्त्र है.

इस प्रकार साधक यह दिव्य मन्त्र की ११ माला पूर्ण कर लेने पर देवी को वंदन करे.
साधक को यह क्रम ३ दिन तक करना है. ३ दिन इस प्रकार करने पर यह प्रयोग पूर्ण होता है.

यह दोनों प्रयोग अभी तक गुप्त रहे है तथा सिर्फ सिद्धो के मध्य इनका प्रचलन रहा है. अतः इन विधानों को अपना कर आप सब को पूर्ण लाभ की प्राप्ति करे यही आशा सह एक बार फिर से आप सब की सफलता के लिए सदगुरु चरणों में प्रार्थना है.

RATN AUR TANTRA 1 - HAKEEK PATTHAR

हिमालयोऽपि नतमस्तकोऽस्ति
संदर्शन भवति ह्रदयं प्रसन्नं
गंगावगाहनं सुखं लभते च चित्तं
सौभाग्यदं सदगुरुं प्रणतोऽस्मी नित्यं ||

जिनकी साधना कि उच्चता को देखकर हिमालय में नतमस्तक है . जिनके दर्शन से ही मन प्रफ्फुलित होकर ह्रदय गंगा मे अवगाहन करने लगता है . उन सौभाग्य दायक गुरुदेव श्री पूज्य श्री निख्लेश्वरानन्द

स्वामीजी महाराज के श्री चरणों मे मैं अत्यंत उदात्त भावों से नम करती हूं...

जय सदगुरुदेव ,

भाइयों बहनों, मानव जीवन बड़ा जटिल है , इसको समझना और फिर इसे अपने अनुसार जीना बड़ा ही कठिन है.

क्योंकि अनेक रहस्य छुपे हैं जीवन और इस प्रकृति के मध्य .और उन रहस्यों को समझना ही बड़ी टेढ़ी खीर है . किन्तु यदि आप उनको समझना चाहे तो कठिन भी नहीं . भाइयो बहनों सिर्फ जरा सा प्रयास हमें उन रहस्यों की परतें खोलने में अति सरल हों जाता है .

आदि काल से ही समस्त संसार के क्रिया कलापों के संचालन हेतु अनेक विधाओं का जन्म स्वतः ही आवश्यकतानुसार होता चला गया .... और वह ज्ञान विज्ञान के रूप प्रचलित होता चला गया ....

भाइयों बहनों ज्योतिष विज्ञान के द्वारा और उसकी अन्य विधाओं के माध्यम से हम जीवन की जटिलताओं को समझ कर व उनके समाधान हेतु न केवल प्रयास कर सकते हैं अपितु समाधान भी कर सकते हैं .

एक व्यक्ति की स्वस्थ्यता ही उसके सम्पूर्ण जीवन का आधार मात्र होती है क्योंकि यदि शरीर निरोग है तो वह हर तरह से सक्षम है, किन्तु व्याधि के साथ जीवन जीना अत्यंत कठिन है ....

सदगुरुदेव ने चिकित्सा की अनेक विधियाँ बताई हैं ...

जैसे ग्रहों को अनुकूल करना, रत्न चिकित्सा , आयुर्वेद चिकित्सा , मन्त्र चिकित्सा , तंत्र चिकित्सा .... जो कि हमारी npru teem के माध्यम से आप तक अनेकों प्रयोग पहुँच ही रहे हैं

अब मै आपको कुछ रत्नों के बारे में क्रमशः बताना चाहती हूं जिससे कि हम बड़ी सरलता से कई रोगों से छुटकारा पा सकते हैं, जैसे आज हम हकीक पत्थर कि ही बात करें तो भले ही हकीक पत्थर सामान्यतः प्राप्त होने वाला पत्थर है,किन्तु प्रकृति ने इसमें विविध गुणों का संयोजन किया हुआ है. यदि स्मरण शक्ति कमजोर हों या मष्तिष्क सम्बन्धी कोई रोग हों तो आवश्यकता है इस पर ध्यान देने की, यदि कोई भी सामान्य सा हकीक पत्थर लेकर उस पर एक विशिष्ठ मंत्र का संयोजन कर लिया जाए तो ना सिर्फ ये स्मरण शक्ति को कमजोर होने से बचाकर शनैः शनैः प्रखर कर्ता है अपितु आत्मविश्वास जो कहीं दब गया है,उसे भी उभार कर लाता है,जिससे आपके बहुत से कार्य सरल हों जाते हैं.

इस हेतु रविवार को प्रातः स्नान कर सफ़ेद वस्त्र धारण कर सफ़ेद आसन पर बैठ कर पूर्व दिशा कि ओर मुख करके बैठ जाएँ, गुरु पूजन, गणपति पूजन संपन्न कर सामने एक हकीक पत्थर, सफ़ेद तिल कि ढेरी पर स्थापित कर लें और घी का दीपक प्रज्वलित कर सुगन्धित धूप जला लें अब उस हकीक पर ध्यान एकाग्र करते हुए आधे घंटे तक निम्न मंत्र का उच्चारण करें.

मंत्र –

ऐं ऐं ऐं ऐं ह्रीं ऐं ऐं ऐं ऐं

AING AING AING AING HREEM AING AING AING AING

जप समाप्ति के बाद जप समर्पण कर दें, और उस हकीक पत्थर को पूर्ण प्रणम्य भाव से पीले वस्त्रा मे बाँध कर स्वयं के पास जेब मे रख लें. निश्चय ही आपको इस लघु मगर प्रभावकारी प्रयोग का लाभ मिलेगा ही.

निकट भविष्य मे मैं अन्य रत्नों के प्रयोग भी आपके समक्ष रखने का प्रयास करूँगी.

SANGEET TANTRA

प्राचीन काल से मनुष्य का सबंध संगीत से रहा हैं , संगीत को मनुष्य ने अपने भाव को व्यक्त करने का माध्यम बनाया था. प्राचीन समय में यह मात्र एक मनोरंजन का स्त्रोत नहीं था. हमारे कई ऋषि मुनि संगीत शाश्त्र में निपूर्ण थे. और आज भी कई उच्च कोटि के योगीजन संगीत में पूर्ण होते हैं . क्या हमने एक बार भी यह सोचा की जो हमेशा इष्ट के आनंद में रहते हैं उन्हें यह बाहरी मनोरंजन के माध्यम संगीत की क्या जरुरत हैं .

संगीत का मतलब आज क्या लिया जाता है ये कहा नहीं जा सकता लेकिन प्राचीन काल में ये एक आध्यात्मिक माध्यम ही रहा था. संगीत के माध्यम से ही कई लोगो ने पूर्णता प्राप्त की हैं मीराबाई या फिर नरसिंह जेसे कई उदाहरण हमारे सामने ही हैं . तो फिर यह भेद क्यों ?

वास्तव में हमने संगीत को कभी समझा ही नहीं, सदगुरुदेव कहते थे की भवरे की गुंजन भी एक प्रकार से संगीत ही हैं जिसे रोज सुना जाये तो आदमी धीरे धीरे विचार शून्य हो जाता हैं. सामान्य मनुष्यों को संगीत मनोरंजन आधारित होना चाहिए लेकिन योगीजन के लिए संगीत बहुत गहरी परिभाषा लिए हुए हैं .

ध्वनि की महत्ता निर्विवाद रूप से मानी जाती हैं और एक विशेष ध्वनि कोई न कोई विशेष उर्जा प्रसारित करती ही हैं . संगीत के सप्तक या सा रे ग म प् ध नि आदि शब्दों के कोई सामान्य समूह नहीं हैं . देने को तो इन ध्वनियों को कोई भी उच्चारण दे दिया जाता लेकिन सा रे ग म प ध नि का गहन अर्थ हैं . जब एक विशेष लय के साथ एक मूल ध्वनि सम्मिलित होती हे तो वह शरीर में किसी एक विशेष चक्र को स्पंदित करती हैं .

सभी सुर अपने आपमें तत्वों के प्रतिनिधि हैं और हर सुर एक विशेष तत्व के ऊपर अपना प्रभुत्व रखता हैं . जिसमे सा- पृथ्वी, रे, ग – जल तत्व म,प – अग्नि तत्व ध- वायु और नि- आकाश तत्व के प्रतिनिधि हैं .अब जिस तरह से ये सप्त सुर हैं उसी तरह शरीर में सप्त सुरिकाए हैं जहाँ से सुर का या ध्वनि की रचना होती हैं . यह हे सर, नासिका, मुख-कंठ, ह्रदय (फेफड़े), नाभि, पेडू और ऊसन्धि. ध्यान से देखा जाए तो ये साडी जगह शरीर के सप्त चक्रों के अत्यंत ही नजदीक हैं . अब इस तरह संगीत तंत्र में कुण्डलिनी सबंध में सप्त सुर एक एक चक्र को स्पंदित करने में सहयोगीहैं

सा – मूलाधार (पृथ्वी तत्व, सुरिका- ऊसन्धि)

रे – स्वाधिष्ठान(जल तत्व , सुरिका – पेडू)

ग – मणिपुर (जल तत्व , सुरिका – नाभि)

म – अनाहत (अग्नि तत्व, सुरिका – हृदय)
प – विशुद्ध (अग्नि तत्व, सुरिका – कंठ)
ध – आज्ञा (वायु तत्व, सुरिका – नासिका)
नि – सहस्त्रार (आकाश तत्व, सुरिका – मस्तक)

इन स्वरों का, उपरोक्त स्वरिकाओ से इनसे सबंधित चक्र का ध्यान करने से चक्र जागरण की प्रक्रिया शुरू हो जाती हैं और उसे कई विशेष अनुभव होने लगते हैं . मगर ये चक्र जागरण होता हैं , भेदन नहीं.

इसी लिए विभिभन रागों की रचना हुयी हैं , जिसमे ध्वनिओ के संयोग से कोई विशेष राग निर्मित किया जाता हैं जो की वह विशेष चक्र को भेदन कर सकता हैं .

जैसे मालकोष राग के माध्यम से विशुद्ध चक्र को जाग्रत किया जा सकता है , इसी प्रकार कल्याण राग के निरंतर अभ्यास से भी विशुद्ध चक्र को स्पंदन प्राप्त होता है और वो जाग्रत हो जाता है. और एक बार जब ये चक्र जाग्रत हो जाता है तो साधक वायुमंडल में व्याप्त तरंगों को महसूस कर सकता है और उन्हें ध्वनियों में परिवर्तित कर सकता है , पर कल्याण राग जैसा राग सांयकाल के समय ही गाना उचित होता है. अर्थात सूर्य अस्त के तुरंत उपरांत. नन्द राग के द्वारा मूलाधार चक्र जाग्रत हो जाता है . और वेदों का सही अर्थ व्यक्ति तभी समझ सकता है जब उसका मूलाधार पूरी तरह जाग्रत हो. इस राग को रात्रि के दुसरे प्रहार में गाना चाहिए. ठाट बिलाबल राग देवगिरी के प्रयोग से अनाहत चक्र की जाग्रति होती है व्यक्ति अनहद नाद को सुनने में और उसकी शक्तियों की प्राप्ति में सक्षम हो जाता है, इसी प्रकार सभी राग किसी न किसी चक्र को स्पंदित करते ही हैं.

लेकिन क्या, संगीत सिर्फ कुण्डलिनी जागरण के लिए ही हैं ? नहीं. संगीत की शक्ति से तानसेन ने दीपक राग का प्रयोग कर जहा दीपको को प्रज्वलित कर दिया था वही बैजू बावरे ने संगीत के एक विशेष राग का प्रयोग कर पत्थर को पिघलाकर उसमे अपना तानपुरा दाल दिया था और राग बंद कर दिया था जिससे की वो तानपुरा उस पिघले हुए पत्थर में ही जम गया था. ये सब तो कुछ उदाहरण मात्र हैं संगीत भी अपने आप में एक पूर्ण तंत्र हे. ब्रम्हांड के सभी पदार्थ ५ तत्व से ही निर्मित हैं . संगीत के सप्त सुर इन ५ तत्वों का प्रतिनिधित्व करतेहैं . संगीत से किसी विशेष सुर या राग के माध्यम से हम अपना वायु तत्व बढ़ाले और भूमि एवं जल तत्व को कम करदे तो मनुष्य अद्रश्य एवं वायुगमन सिद्धि प्राप्त कर लेता हैं .. यदि साधक सही तरीके से संगीत का प्रयोग करे तो बाह्य चीजों पर यही प्रयोग करने पर वह भी अद्रश्य हो जाएगा. या फिर उसके तत्वों के साथ संयोग करके तत्वों को बदल ने पर उसका परिवर्तन भी संभव हैं . या फिर संगीत के माध्यम से हवा में ही सबंधित कोई भी वस्तु के तत्वों को संयोजित कर के उसे कुछ ही क्षणों में प्राप्त किया जा सकता हैं . वास्तव में ही संगीत मात्र मनोरंजन नहीं हैं , हमारे ऋषि मुनि अत्यंत ही उच्चकोटि के वैज्ञानिक थे मगर हमने समझने की कभी कोशिश नहीं की हैं

Since ancient time, human being’s relation has remained with music, human used music as a medium to express the feelings. In the ancient time, it was not just a medium for entertainment. Many of our ancient sages were accomplished in music and today even many

high spiritual level attended yogis are accomplished in music. Have we thought once even that the one who remain in joy of god realization, what is the need to them of this outer entertainment?

It can not be said that what do we understand by music today but in ancient time it was medium of spirituality. With the help of music, many people attained totality. There are several examples in front of us like Meerabai and Narsinh to name few. Then what the difference is this?

In true term we have never understood music, Sadgurudev used to say that the hum of the insect is even a music which if applied to hear daily, the human can gain thoughtless mind. For general humans music must be based on entertaining point of view but for yogis it has deep definitions.

The importance of sound is accepted widely and specific sound creates specific energy. The Saptak of music Sa, Re Ga Ma Pa Dha Ni are not just words. To just give name and pronunciations anything could had been given but Sa, Re Ga Ma Pa Dha Ni has a deep meaning. With a special rhythm if one specific sound is applied to incorporate, then it creates vibration on specific chakras of the body.

All Sapt Sur are representative of elements and every Sur (tone) hold a command over one element in which Sa- Earth , Re and Ga – Water, Ma Pa – Fire, Dha – Air and Ni – Eather.

The way we have 7 tones, we even have 7 voice force from which a sound could be made. These are head, nose, throat, lungs, navel, Abdomen andgroin, if we watch carefully, these all places are very close to 7 chakras. This way, in relation to Kundalini 7 tone can vibrate chakras in Sangeet tanra.

Sa – Muladhar (Earth element, sound generation – groin)

Re – Swadhisthan (Water element, Sound generation - Abdomen

Ga – Manipur (Water element, Sound generation – Nevel

Ma – Anahat (Fire element, Sound generation – Lungs)

Pa- Visuddh (Fire element, Sound generation – Throat)

Dha – Agya (Air element, sound generation – nose)

Ni – Sahashtrar (Eather element, Sound Generation – Head

If these tones are generated with related sound then the specific starts awaking and they start having many mysterious experiences. But this is Chakra Jagaran and not Chakra bhedan.

That's why many Raga's were meant, in which with the help of sounds, specific Raga is made which can completely open Chakras.
For example, with the help of Malkosh Raga, Visuddh chakra can be awaken, same way daily exercise of Kalyan raga even helps in vibrating Visuddh chakra. And one this chakra is activated, then sadhak can realize the etmoshperic waves and can convert them into sound but Ragas like Kalyan have to be sung into evening only means quick after sun set. With the help of Nand Raga Muladhar gets activated. And one can understand the Vedas completely only when the Muladhar is active completely. This Raga should be sung in 2nd phase of night. The That Bilabal Raaga Devgiri can active Anahat Chakra and then one can hear Anhad Naad & owns every accomplishment related to it, this way every Raga gives effect to vibrate and open specific chakra.
But is it that music can only activate kundalini? No. With the power of music, Singing Deepak Raga; Tansen lighten a lamp. Baiju Bawara on other hand sung a specific raga and melted a Stone, he threw his music instrument TanPura into that and when he stopped the Tanpura was inside the solidified liquid of stone. These are just few examples, Music is also complete Tantra. Everything in this universe is made of five basic elements. The 7 tones of music can control these five elements. If with the help of specific tone or Raga, if we increase our Air element and lessen our Earth and Water element, one can have power to fly in sky and can have power to get invisible. And if this also applied outer side on anything, that will even becomes invible. Or else it is incorporated with on elements of any specific item and elements are subjected to change, in this condition the whole substance changes. Or with the help of music one can gather elements in the air and can make anything out of this word in few moments. Truly our ancient sages were scientist but we were never bothered to understand.

TRATAK SE DHYAN KI OR

According to Yog Shastra, seven chakras are present in our body in form of bunch of nerves. It all depends on us whether we want to keep them in dormant state or activate them and improve our lives by benefits arising out of this activation……This thing applies to each and every common person who does not have anything to do with sadhnas. But those who do sadhnas, they know that how much significant these chakras are in their spiritual lives.
Though each chakra has their own importance but Aagya Chakra situated in between two eyes has lot to do with our spiritual lives. This is because it is located exactly in between our eyes where third eye is present. How much concentration you have during sadhna or you are getting deviated, it all starts from here…..but if you remember , we learnt a very abstruse fact in article related to mind that-
"If we have to save ourselves from illusion then we should abandon all the benefits and loss arising out of illusion".
This quote simply means that the things which we do not know, it is useless to run after them…..but at the time of sadhna, it does not happen so…. At that time our mental condition is such that almighty has given responsibility of entire universe on our shoulders and this state persists till the time we do not get up from sadhna. Such things happen, we all know. But we sparingly try to find out reason behind this phenomenon. But in reality it is subject to be pondered upon daily rather than occasionally. Sadhna or chanting of mantra means that the particular time belongs to us and our Isht. But if we are still thinking about worldly things at that time, then it is better not to sit on the aasan itself because just by chanting or by closing eyes, god does not get pleased…..and reason for such a state in sadhna is our mind….because
"Those who are knowledgeable, they know the fact that mind is neither a reliable friend nor an obedient servant. We can direct it but never control it"
……But those who are accomplished ascetic, their mind does not play such games with them because they are well aware of the fact that in reality , there is no such

thing like mind….it is merely an illusion and if it is confirmed from scientific point of view then no doctor will tell you about a body part called “:mind”. Because such thing does not exist.

We have named a particular type of energy/vibration emitted from our brain as mind over which we do not have any control. Because energy remains uncontrolled till the time we do not understand its utilization. For controlling energy which is continuously created inside us, first of all we have to understand the roots from which this energy is created.

…….And our body contains three characteristics of Sat, Raj and tamin one proportion or other and our mind/orientation of thoughts and work-capability is always influenced by these three qualities. The time when there is predominance of a particular quality, at that time, energy emitted from brain (which we have addressed as mind) will move towards that particular characteristic. It is because of natural law which says that energy always flow in direction of increasing density of Shakti (power). This is precisely the reason why we do not same type of work every time…. Sometimes we are saintly and sometimes…..

In order to keep minds and thought stable in sadhna, thousands of ways have been told in Meditation and Yoga path. But above all those procedures, if there is any power/activity which takes us from darkness to light…..it is none but you because nobody knows you better then you yourself. It does not make any difference that which rules have been followed by you to concentrate your thoughts because all your activities done become useless till the time your eyes do not become stable. And in order to stabilize the eyes, it is not necessary to tire yourself…..If anything is needed then it is to get rid of defects present inside you…

We all know that controlling mind or thoughts is very difficult task…..But we should also know the fact that consciousness never gets polluted; it is one of the vibrations of our soul which needs to be shown right direction. And we can show consciousness right direction only when we know right path. In Hath Yoga, six different types of procedures have been told out of which Tratak is considered to be the best because it increase our spiritual peace along with the mental peace.

In our brain, thoughts come and go in form of vibrations but when we practise tratak then we recover 70% of energy lost by inflow and outflow of thoughts. This is because now we are trying to stabilize our eyes rather than catching our thoughts. If you will try then you will know that as compared to thoughts, stabilizing eye-balls is very easy and effective too. And it is activity experienced not only once but thousands of times that as your eye-balls get stabilized …..Your mind comes under your control. And we come to know about it by seeing dot present in middle of Shakti Chakra getting stabilized.

Tratak can be done in two ways-

1) External Tratak
2) Internal Tratak

In external Tratak, you have to focus your attention on dot present in middle of Shakti chakra by which you learn the art of controlling your thoughts at spiritual level and at materialistic level, your eyes attains capability to hypnotize anyone.

In internal Tratak, you have to focus your attention on aagya Chakra…..and for it you have to focus your eyes balls in middle of two eyebrows. You may feel little bit of pain in starting days. After successfully accomplishing this tratak, on one hand your aagya chakra starts vibrating….and on the other hand, you attain the eligibility to do Kaal Vikhandan sadhna.

On physical plane, regular practice of tratak increase your capability of thinking and comprehension multiple times and destroys negative energy present inside you…..Just you have to always keep in mind one thing that whenever practice of Tratak should be done in peaceful environment. That's why morning time is considered to be the best.

Mantra given here will help you in quickly attaining success in Tratak procedure. But mantra will work with competence only when you will regularly do the practice of this procedure that too for only 10-15 minutes. You just have to sit peaceful and do gunjaran of the below mantra given by Sadgurudev for 10-15 minutes. It will activate Sushumana and make the attainment of aim very easy.

OM KLEEM KLEEM KREEM KREEM HUM HUM PHAT

====================================

योग शास्त्र के अनुसार हमारे शरीर में नाड़ियों के गुच्छों के रूप में सात चक्र स्थापित हैं जिन्हें सुप्त अवस्था में रहने देना है या जागृत करके उनसे मिलने वाले लाभों से खुद के जीवन को संवारना है यह स्वत: हम पर निर्भर करता है....यह बात हर उस आम व्यक्ति पर लागू होती है जिसे साधनाओं से कोई लेना देना नहीं होता पर जो व्यक्ति अपने जीवन में साधनाएं करते हैं वो जानते हैं की इन चक्रों की उन्के साधनात्मक जीवन में क्या महत्ता है|

वैसे तो हर चक्र का अपना एक विशेष महत्व है पर हमारे भूमध्य में स्थित आज्ञाचक्र का हमारे साधनात्मक जीवन से बड़ा लेनादेना है और वो इसलिए क्योंकि यह चक्र हमारी आँखों के बिलकुल मध्य में स्थित है जहाँ तीसरा नेत्र स्थापित होता है और साधना में आप कितनी तल्लीनता से बैठे हैं या आपका ध्यान कितना भटक रहा है ये सारा खेल यहीं से शुरू होता है ....पर यदि आपको याद हो तो मन से संबंधित लेख में हमने एक बहुत गुढ़ तथ्य को समझा था की –

" यदि भ्रम से बचना है तो भ्रम से होने वाले फायदों और नुक्सान को तिलांजली दे दो "

इस कथन का सरल सा अर्थ यह है की वो चीज़ जिसे आप जानते हो की नहीं है उसके पीछे भागना व्यर्थ है .....पर साधना के समय ऐसा नहीं हो पाता.....उस समय तो हमारी मानसिक स्थिति ऐसी होती है जैसे ईश्वर ने समस्त ब्रह्मांड का दायितत्व हमारे कंधो पर ड़ाल दिया हो और यह स्थिति तब तक ज्यों की त्यों रहती है जब तक हम साधना से उठ नहीं जाते, ऐसा होता है यह हम सब जानते हैं पर क्यों होता है इस पर यदा-कदा ही विचार करते हैं| पर असल में यह कभी-कभी नहीं बल्कि रोज विचारने वाला विषय है क्योंकि साधना या मंत्र जाप करने का अर्थ होता है की वो समय हमारा और हमारे इष्ट का है पर उस समय में भी अगर हम ज़माने भर की बातें सोच रहे हैं तो उससे अच्छा है हम आसन पर बैठे ही नहीं क्योंकि मात्र माला चला लेने से, या आँखें मूंद कर बैठ जाने से कोई भगवान कभी खुश नहीं होते ......और साधना में हमारी ऐसी दशा का कारण होता है हमारा मन ......क्योंकि

" जो ज्ञानी होते है वो जानते हैं की मन ना तो भरोसेमंद मित्र है और ना ही आज्ञाकारी सेवक, हम इसे निर्देशित तो कर सकते हैं पर नियंत्रित कदापि नहीं "

.....पर जो सिद्ध सन्यासी होते हैं उनके साथ उनका मन ऐसा खेल कभी नहीं खेलता क्योंकि वो इस तथ्य से पूर्णतः परिचित होते हैं की असल में मन जैसी कोई चीज होती ही नहीं....यह सिर्फ एक भ्रम है, छलावा है और अगर विज्ञान की दृष्टि से इस बात की पुष्टि की जाए तो आपको चिकित्सक कभी किसी ऐसे शारीरिक अंग के बारे में नहीं बताएंगे जिसका नाम " मन " हो क्योंकि ऐसा कुछ होता ही नहीं है|

हमारे मस्तिष्क से निकलने वाली एक विशेष प्रकार की ऊर्जा या यूँ कहें की तरंग को हमने मन का नाम दे दिया है जिस पर हमारा कोई नियंत्रण नहीं हैं क्योंकि ऊर्जा हमेशा तब तक अनियंत्रित रहती है जब तक आपको उसका सदुपयोग समझ में ना आ जाये| हमारे अंदर निरंतर बनने वाली ऊर्जा को नियंत्रण में करने के लिए पहले हमें इसके मूल को समझना पड़ेगा जहाँ से इस ऊर्जा का निर्माण होता है|

......हम शरीर में सत, रज, और तम तीनों गुण कम या अधिक अनुपात में मौजूद हैं और हमारे मन या विचारों की गति और कार्य करने की क्षमता इन तीनों गुणों से हमेशा प्रभावित होती है और जिस समय आपके अंदर जिस गुण की प्रधानता होगी उस समय मस्तिष्क से निकलने वाली ऊर्जा, जिसे हमने मन का संबोधन दिया है, उसी तरफ जायेगी क्योंकि यह एक प्राकृतिक नियम है की ऊर्जा का प्रवाह हमेशा शक्ति के घनत्व की तरफ ही होता है और यही कारण है की हम हमेशा एक जैसे काम कभी नहीं करते.....कभी हम साधू होते है तो कभी.....

साधना में मन या अपने विचारों को स्थिर रखने के लिए ध्यान मार्ग, योग मार्ग इत्यादि में हजारों तरीके बताए गए हैं पर उन सब विधियों से उपर अगर कोई शक्ति या क्रिया है जो आपको अंधकार से प्रकाश की ओर अग्रसर करती सकती है...तो वो हैं आप खुद हो क्योंकि आपको आपसे ज्यादा अच्छे से ओर कोई नहीं जानता| इस बात से कोई फर्क नहीं पड़ता की आपने आज तक अपने विचारों को एकाग्र करने के लिए किन-किन नियमों का पालन किया है क्योंकि आपके द्वारा किये गए सारे क्रिया कलाप व्यर्थ हो जाते हैं जब तक आपकी आँखे स्थिर नहीं हो जाती ओर आँखों को स्थिर करने के लिए आपको खुद को थकाने की कोई जरूरत नहीं है....यदि किसी चीज़ की जरूरत है तो वो है खुद को दोष मुक्त करने की....

हम सब यह तो जानते हैं की मन या विचारों को नियंत्रित करना अत्यंत दुष्कर है....पर हमें यह तथ्य भी पता होना चाहिए की चेतना कभी मलीन या दूषित नहीं होती, ये तो हमारी आत्मा की एक तरंग है जिसे हमें बस सही दिशा दिखानी होती है और इस चेतना को हम सही दिशा तभी दिखा पायेंगे जब हमें इसका सही मार्ग पता हो| हठयोग में ६ तरह की अलग – अलग क्रियाएँ बताई गयी हैं जिनमें से त्राटक को श्रेष्ठ माना गया है क्योंकि यह हमारी मानसिक शान्ति के साथ-साथ आध्यात्मिक शक्ति को भी बढ़ाता है|

हमारे मस्तिष्क में तरंगों के रूप में विचार हमेशा आते-जाते रहते हैं पर जब हम त्राटक का अभ्यास करते हैं तो इन विचारों के आने जाने से शतिग्रस्त होने वाली ऊर्जा का ७० प्रतिशत हम पुन्हः प्राप्त कर लेते हैं और वो इसलिए क्योंकि अब हमारी दौड़ विचारों को पकड़ने की ना होकर आँखों को स्थिर करने की है और यदि आप कोशिश करेंगे तो आप जानेंगे की विचारों की तुलना में आँखों की पुतलियों को स्थिर करना ज्यादा सहज भी है और कारागार भी| और यह एक बार नहीं हजारों बार अनुभूत की गयी क्रिया है की जैसे ही आपकी आँखों की पुतलियाँ स्थिर होती हैं...आपका मन भी आपके नियंत्रण में आ जाता है और इसका पता हमें चलता है शक्ति चक्र के मध्य में स्थित बिंदु के स्थिर हो जाने से|

त्राटक दो तरीकों से किया जा सकता है-

१) बाह्य त्राटक

२) आंतरिक त्राटक

बाह्य त्राटक में आपको अपना ध्यान शक्ति चक्र के मध्य में स्थित बिंदु पर केंद्रित करना होता है जिससे आध्यात्मिक स्तर पर आप अपने विचारों पर नियंत्रण करने की कला सीखते हो और

भौतिक स्तर पर आपकी आँखों में स्वत: ही किसी को भी सम्मोहित करने की क्षमता पैदा हो जाती है|

आंतरिक त्राटक में आपको अपने आज्ञाचक्र पर ध्यान केंद्रित करना होता है....और इस क्रिया में आपको अपनी आँखों की पुतलियों को भूमध्य में केंद्रित करना पड़ता है जिससे शुरूआती दिनों में थोड़ा दर्द हो सकता है| इस त्राटक को सफलतापूर्वक करने से जहाँ आपके आज्ञाचक्र में स्पंदन होना शुरू हो जाता है.....वहीँ आप काल विखंडन साधना को करने की पात्रता भी अर्जित कर लेते हो|

भौतिक स्तर पर त्राटक का नियमित अभ्यास आपके सोचने, समझने की क्षमता को कई गुना बढ़ा देता है और आपने अंदर नाकारात्मक ऊर्जा को नष्ट भी करता है.....बस आपको एक बात हमेशा ध्यान में रखनी है की आप जब भी त्राटक का अभ्यास करो तो आपके चारों तरफ शान्ति हो और इसीलिए सुबह का समय इसके लिए सबसे श्रेष्ठ माना जाता है|

यहाँ दिया गया मंत्र त्राटक की इस क्रिया में शीघ्रातिशीघ्र सफल होने में आपकी सहायता करेगा पर मंत्र अपना काम तभी दक्षता से करेगा जब आप नियमित रूप से इस क्रिया का अभ्यास करेंगे वो भी बस १० से १५ मिनट तक| आपको मात्र शांत बैठ कर सदगुरुदेव प्रदत्त निम्न मंत्र का १०-१५ मिनट गुंजरन करना है.ये सुषुम्ना को जाग्रत कर आपके लक्ष्य प्राप्ति को सरल और सुगम कर देता है.

ॐ क्लीं क्लीं क्रीं क्रीं हुं हुं फट् ||

(OM KLEEM KLEEM KREEM KREEM HUM HUM PHAT)

****ROZY NIKHIL****

****NPRU****

Posted by Nikhil at 8:34 PM No comments: Links to this post
Labels: DHYAN VA SAMADHI, SAMMOHAN SADHNA

FRIDAY, NOVEMBER 23, 2012

KRISHNA SAMMOHAN SADHNA

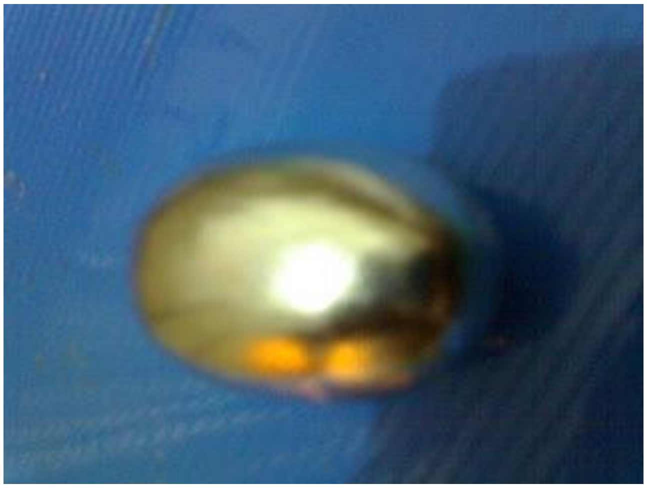

Krishnam vande jagatgurum

Whenever we think of Lord Krishna, one such image emerges in front of our eyes which brings smile on our face. From historical point of view or shastra point of view or in other view, personality of Krishna was amazing in itself and full of divinity. There is nothing which his journey from ordinary to extra-ordinary does not teach us and it provides us the knowledge about beauty of life. If even siddhs call him as Jagat Guru (Guru of entire world) then what more can be said about him. What was that quality in Shyam or Murli Manohar that whenever one thinks of him, person is filled with sweetness. There was something beyond beauty and attraction in his personality that whosoever came in contact with him, May it is his friend or enemy, they were not able to get out of his charming spell. And when we talk about one such quality which binds person with attraction, one such quality that whosoever comes in contact with that person is filled with sweetness, something attaining which all sorrows disappear and at the time of separation it feels like

death. If all this is given name of one quality, then is it not Sammohan? Definitely Krishna was person full of attraction and even much more than it, he was full of Sammohan. Today even after hundreds of years whenever we talk of Sammohan or attraction, his name is always taken.

If we split this word then it means full of Mohan. Mohan is one such quality which compels any other person to become favourable, filling our self with so much of divinity that when some other person comes in contact with that divinity, he is also filled with divinity and what is left is just sweetness where there is no anxiety or sorrow. But is it possible to have such Sammohan? If such Sammohan can be attained then what is left. May it be materialistic life or spiritual life, getting completeness in both becomes so much easy. On one hand, person can gain prosperity and happiness in his daily life, his work field, business, and household life and enjoy his life and on the other hand he can activate his inner power at mental level and develop his spiritual consciousness to maximum. But how can it be possible?

There is nothing called impossible in field of Tantra. Parad tantra has been called last Tantra in itself where exceptional prayogs are carried out with the help of Parad and Tantra. In this context, there are many abstruse procedures in this field which are related to attraction and Sammohan. One such prayog is Krishna Sammohan Prayog by which person can create so much of Sammohan inside him which is capable of providing various types

of favours on both materialistic and spiritual plane. This is because of the fact that while on one hand parad, present in each particle as life fluid in universe fills person with complete Sammohan and on the other hand this activity is accelerated by Tantra procedure with the help of Devi powers.

Sadhak should start this sadhna from any Sunday. It should be done at sunrise or after 9 in the night.

Sadhak should take bath, wear red dress and sit on red aasan.

Sadhak should face north direction.

Sadhak should establish Parad Saundarya Kankan in front of him. If it is not possible for sadhak then sadhak should establish any picture of Lord Krishna or Sammohan Yantra but after establishing Saundarya Kankan sadhak can get highest benefit and attain complete success. After doing Guru Poojan and Ganesh poojan, do normal poojan of Lord Krishna picture or gutika.

After this, sadhak should chant Guru Mantra and then chant 11 rounds of below mantra. Sadhak should use Rakt or Moonga rosary for chanting. If sadhak has Sammohan rosary then he can also use it for this sadhna.

KLEEM KRISHNAAY SAMMOHAN KURU KURU NAMAH

Sadhak should do this procedure for 3 days. After 3 days, sadhak should safely keep the rosary. This sadhna can be used for Sammohan sadhna in future. Establish Saundarya Kankan in worship room.

कृष्णंवन्देजगत्गुरुं

कृष्ण का नाम मानस में आते ही आँखों के समक्ष एक एसी मूर्ति साकार हो जाती है की अपने आप अधरों पर एक मुस्कान तैर जाए. ऐतेहासिक द्रष्टि से या शाश्त्रोक्त नज़रिए से, चाहे किसी भी रूप में देखा जाए, कृष्ण का व्यक्तित्व अपने आप में एक अनूठा तथा दिव्यता से परिपूर्ण व्यक्तित्व रहा है. एक सामान्य से असामान्य तक की उनकी जीवन यात्रा हमें क्या क्या नहीं सिखाती समाजाती और देती है वह ज्ञान की आखिर जीवन का सौंदर्य क्या है. अगर सिद्धो के द्वारा भी कृष्ण को जगत गुरु कहा गया है तो उसके आगे तो क्या कहा जा सकता है. श्याम और मुरली मनोहर में क्या ऐसा गुण था की आज भी किसी को जब उनके बारे में ध्यान आता है तो व्यक्ति अपने आप में ही मधुरता युक्त हो जाता है. सौंदर्य और आकर्षण से भी ऊपर उस व्यक्तित्व में ऐसा कुछ ज़रूर था की जो भी उनके समपर्क में आता था चाहे वह उनके मित्र हो या शत्रु, सब उनके मोह पाश से मुक्त नहीं हो पाते थे. और जब जब भी एक इसे गुण की बात कही भी आती है जो व्यक्ति को आकर्षण से बद्ध कर दे, एक ऐसा गुण की जो भी उस व्यक्ति के संपर्क में आये वह मधुरता से भर जाए, कुछ ऐसा की उससे मिलते ही सरे दुःख दर्द दूर हो जाए और वियोग के समय जेसे प्राण ही निकल जाए, अगर इन सब को एक गुण का नाम दिया जाए तो क्या वह सम्मोहन नहीं है? निश्चय ही कृष्ण आकर्षण और उससे भी बहोत आगे सम्मोहन से युक्त व्यक्तित्व थे आज भी सेकडो वर्षों के बाद भी जिनका नाम जहाँ पर भी सम्मोहन या आकर्षण की बात होती है, वहाँ आ ही जाता है.

अगर इस शब्द का संधि विच्छेद किया जाये तो इसका अर्थ होता है मोहन से परिपूर्ण. मोहन वह गुण जो की किसी भी व्यक्ति को बाध्य कर दे अनुकूल बनने के लिए, अपने आप को उस स्तर तक दिव्यता से भर देना की जहां दूसरे व्यक्ति भी उस दिव्यता के संपर्क में आते ही खुद दिव्यता से युक्त हो जाये. और पीछे रह जाये तो बस एक मधुरता जहां पर कोई चिंता या विषाद ही न हो. लेकिन क्या ऐसा सम्मोहन प्राप्त करना संभव है? और अगर ऐसा सम्मोहन प्राप्त हो जाए तो क्या फिर शेष ही क्या रह गया. चाहे वह भौतिक जीवन हो या अध्यात्मिक जीवन हो. निश्चय ही दोनों पक्षों में पूर्णता प्राप्त करना कितना सहज हो सकता है. एक तरफ व्यक्ति अपने रोजिंदा जीवन में अपने कार्य क्षेत्र, व्यापर, गृहस्थी में पूर्ण वैभव और सुखमय हो कर जीवन का आनंद ले सकता है वहीँ दूसरी तरफ अपनी आतंरिक शक्तियों का विविध मनः स्तर पर जागृत करता हुआ आध्यात्मिक चेतना का भी पूर्ण विकास कर सकता है. लेकिन यह सब कैसे हो सकता है?

तंत्र के क्षेत्र में असंभव जेसा तो कुछ है ही नहीं. पारद तंत्र तो अपने आप में अंतिम तंत्र कहा गया है जहां पर एक से एक विलक्षण प्रयोग पारद और तंत्र के माध्यम से सम्प्पन किये जाते है. इसी क्रम में सम्मोहन और आकर्षण से सबंधित भी कई गुढ़ प्रक्रियाएं इस क्षेत्र में निहित है ही. ऐसा ही एक प्रयोग है कृष्ण सम्मोहन प्रयोग. जिसके माध्यम से व्यक्ति अपने अंदर एक ऐसा सम्मोहन उत्पन्न कर सकता है जो की उसे भौतिक तथा अध्यात्मिक दोनों धरातल पर कई कई प्रकार की अनुकूलताएं प्रदान करने में सर्व समर्थ है. क्यों की जहां एक और पारद इस ब्रह्माण्ड में जिव द्रव्य के रूप में कण कण में उपस्थित हो कर पूर्ण सम्मोहन आकर्षण को

मनुष्य के कण कण में भी सम्मोहन भर देता है वहीँ दूसरी तरफ इस कार्य को दैवीय शक्तियों के माध्यम से पूर्ण वेगवान बनाती है तंत्र प्रक्रिया.

यह साधना साधक किसी भी रविवार की रात्री में शुरू करे. समय सूर्योदय का हो या फिर रात्री में ९ बजे के बाद का.

साधक स्नान आदि से निवृत हो कर लाल वस्त्रों को धारण करे. तथा लाल आसान पर बैठ जाए. साधक का मुख उत्तर दिशा की तरफ रहे.

साधक अपने सामने पारद **सौंदर्य कंकण** स्थापित करे अगर साधक के लिए यह संभव न हो तो साधक अपने सामने भगवान कृष्ण का कोई चित्र या सम्मोहन यंत्र स्थापित कर ले लेकिन सौंदर्य कंकण स्थापित करने पर साधक महत्तम लाभ प्राप्ति तथा पूर्ण सफलता को अर्जित कर सकता है. गुरुपूजन, गणेशपूजन सम्प्पन कर साधक भगवान कृष्ण के चित्र या गुटिका का भी सामान्य पूजन सम्प्पन करे.

इसके बाद साधक गुरुमंत्र का जाप कर निम्न मंत्र की ११ माला जाप करे. यह जाप साधक को रक्त माला या मूंगा माला से करनी चाहिए. अगर साधक के पास कोई सम्मोहन माला है तो उसका प्रयोग भी इस साधना हेतु किया जा सकता है.

क्लीं कृष्णाय सम्मोहन कुरु कुरु नमः

(kleem krishnaay sammohan kuru kuru namah)

साधक यह क्रम ३ दिन तक करे. ३ दिन हो जाने पर साधक माला को सुरक्षित रखले. यह माला आगे भी सम्मोहन साधनाओ के लिए उपयोग की जा सकती है. सौंदर्य कंकण को पूजा स्थल में स्थापित कर दे.

POORNA SAFALTA HETU - RAAJMUKHI PRAYOG

Each and every person has one sweet dream in life that he should attain success in each and every field. May be it is acquiring self-knowledge , family peace ,

materialistic success , respect in society , spiritual progress and enjoying all pleasures of life , who does not want to attain such type of success in life? Definitely in today's as well as ancient times every person aspire to attain this type of success and for fulfilling this aspiration, there was no dearth of hard-working people in any era. But Universe operates in accordance with law of karma. So many times, person despite of putting lot of hard-work is not able to attain success due to his karmas of current life and past life. There can be various types of shortcomings underlying this problem. But in order to get rid of these shortcomings person himself has to put in efforts. Prayog presented here is one amazing Vidhaan to get rid of obstacles coming between sadhak and success. Presented prayog is related to Raajmukhi Devi which is one of the forms of Aadya Devi Mahadevi which provides complete happiness and pleasure to sadhak. There are many types of benefits one can attain from this prayog but some important aspects are as follows.

It is Tri-beej samputit sadhna which activates three powers of sadhak i.e. Knowledge, desire and activity. As a result there is development in memory power of sadhak and there is facilitation in understanding novel knowledge.

Raajmukhi goddess has also been called goddess of Vashikaran.Attraction and vashikaran spreads over sadhak's face through which sadhak can attain success in many fields and many persons are spellbound to automatically consider sadhak to be better than them.

This is primarily a prayog for accomplishment of work but here rather than being a prayog for particular work, it is prayog for accomplishment of all works of sadhak. After doing this prayog, it becomes easy for sadhak to attain success in his works. Along with it, sadhak starts attaining respect in society.

Sadhak can start this prayog on any auspicious day.

Sadhak can do sadhna anytime in day or night but daily time should remain same.

Sadhak should take bath and wear pink dress. If pink dress is not possible, sadhak can make use of white dress.

After this sadhak should sit on pink/white aasan, do Guru Poojan and chant Guru Mantra. Thereafter, sadhak should make one downward facing triangle by vermillion

in any container. After this, sadhak should establish oil lamp in centre of this triangle. Sadhak should light it and do Nyas procedure.

Karnyas-

OM HREENG SHREENG KLEEM ANGUSHTHAABHYAAM NAMAH
OM RAAJMUKHI TARJANIBHYAAM NAMAH
OM VASHYAMUKHI MADHYMABHYAAM NAMAH
OM MAHAADEVI ANAAMIKAABHYAAM NAMAH
OM SARVAJAN VASHY KURU KURU KANISHTKABHYAAM NAMAH
OM SARV KAARY SAADHAY SAADHAY NAMAH KARTAL KARPRISHTHAABHYAAM NAMAH

ANGNYAS-

OM HREENG SHREENG KLEEM HRIDYAAY NAMAH
OM RAAJMUKHI SHIRSE SWAHA
OM VASHYAMUKHI SHIKHAYAI VASHAT
OM MAHAADEVI KAVACHHAAY HUM
OM SARVAJAN VASHY KURU KURU NAITRTRYAAY VAUSHAT
OM SARV KAARY SAADHAY SAADHAY NAMAH ASTRAAY PHAT

After this, sadhak should chant 11 rounds of basic mantra.
Sadhak can use Sfatik/Rudraksh/Moonga/Pink Hakik rosary for chanting

Mantra:

(OM HREENG SHREENG KLEEM RAAJMUKHI VASHYAMUKHI MAHAADEVI SARVAJAN VASHY KURU KURU SARV KAARY SAADHAY SAADHAY NAMAH)

After 11 rounds, sadhak should mentally pray to goddess and dedicate jap to her. Sadhak should do this procedure for 3 days. After 3 days, sadhak can wash lamp and container and can again use for any work. Rosary should not be immersed. It can be used again for doing this sadhna.

==

जीवन में सभी व्यक्तियो का यह एक सुमधुर स्वप्न होता है की उसे सभी क्षेत्र में सफलता की प्राप्ति हो तथा उसे जीवन के सभी क्षेत्र में विजय श्री तिलक की प्राप्ति हो. चाहे वह स्वयं के ज्ञान की बात हो, पारिवारिक

सुख शांति, भौतिक रूप से सफलता, समाज में मान तथा सन्मान, अध्यात्मिक उन्नति, तथा जीवन के पूर्ण सुख रस का उपभोग करना हो, कौन व्यक्ति अपने जीवन में एसी सफलता की प्राप्ति नहीं करना चाहता? निश्चित रूप से सभी व्यक्ति अर्वाचीन या प्राचीन दोनों ही काल में इस प्रकार की सफलता की कामना करते थे और इसकी पूर्ती के लिए अथाक परिश्रम भी करने वालो की कमी किसी भी युग में नहीं थी. लेकिन ब्रह्माण्ड कर्म से बद्ध है, व्यक्ति अपने कार्मिक वृतियो के कारण चाहे वह इस जन्म से सबंधित हो या पूर्व जन्म से सबंधित, कई बार पूर्ण श्रम करने के बाद भी सफलता की प्राप्ति नहीं कर पता है. इन सब के मूल में कई प्रकार के दोष हो सकते है. लेकिन इन दोषों की निवृति के लिए व्यक्ति को स्वयं ही तो प्रयत्न करना पड़ेगा. प्रस्तुत प्रयोग, साधक और उसकी सफलता के बिच में आने वाली बाधा को दूर करने का एक अद्भुत विधान है.
प्रस्तुत प्रयोग राजमुखी देवी से सबंधित है जो की आद्य देवी महादेवी का ही एक स्वरुप है, जो की साधक को राज अर्थात पूर्ण सुख भोग की प्राप्ति कराती है. प्रस्तुत प्रयोग के कई प्रकार के लाभ है लेकिन कुछ महत्त्वपूर्ण पक्ष इस प्रकार से है.
यह त्रिबीज सम्पुटित साधना है जो की साधक की तिन शक्ति अर्थात, ज्ञान, इच्छा तथा क्रिया को जागृत करता है फल स्वरुप साधक की स्मरणशक्ति का विकास होता है तथा नूतन ज्ञान को समजने में सुभीता मिलती है
राजमुखी देवी को वशीकरण की देवी भी कहा गया है, साधक के चहरे पर एक ऐसा वशीकरण आकर्षण छा जाता है जिसके माध्यम से साधक कई कई क्षेत्र में सफलता की प्राप्ति कर सकता है तथा कई व्यक्ति स्वयं ही साधक को अपने से श्रेष्ठ व्यक्ति मान लेने के लिए आकर्षण बद्ध हो जाते है.
मुख्य रूप से कार्यसिद्धि के लिए यह प्रयोग है लेकिन यहाँ सिर्फ कोई विशेष कार्य के लिए यह प्रयोग न हो कर साधक के सभी कार्यों की सिद्धि के लिए यह प्रयोग है. इस प्रयोग को करने पर साधक को अपने कार्यों में सफलता का मिलना सहज होने लगता है साथ ही साथ साधक को समाज में मान सन्मान की भी प्राप्ति होने लगती है.
यह प्रयोग साधक किसी भी शुभदिन में शुरू कर सकता है.
साधक दिन या रात्री के कोई भी समय में यह साधना कर सकता है लेकिन रोज साधना का समय एक ही रहे.
साधक को स्नान आदि से निवृत हो कर गुलाबी वस्त्रों को धारण करना चाहिए, अगर गुलाबी वस्त्र किसी भी रूप में संभव न हो तो साधक को सफ़ेद वस्त्रों का प्रयोग करना चाहिए.
इसके बाद साधक गुलाबी/सफ़ेद आसान पर बैठ जाए तथा गुरुपूजन एवं गुरुमन्त्र का जाप करे. साधक को इसके बाद अपने सामने किसी पात्र में कुमकुम से एक अधः त्रिकोण का निर्माण करना चाहिए. इसके बाद साधक उस त्रिकोण के मध्य में एक दीपक स्थापित करे. यह दीपक तेल का हो. इसे प्रज्वलित कर साधक न्यास क्रिया को सम्प्पन करे

करन्यास –

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अन्गुष्ठाभ्यां नमः

ॐ राजमुखी तर्जनीभ्यां नमः
ॐ वश्यमुखी मध्यमाभ्यां नमः
ॐ महादेवी अनामिकाभ्यां नमः
ॐ सर्वजन वश्य कुरु कुरु कनिष्टकाभ्यां नमः
ॐ सर्व कार्य साधय साधय नमः करतल करपृष्ठाभ्यां नमः

अंगन्यास –

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ह्रदयाय नमः
ॐ राजमुखी शिरसे स्वाहा
ॐ वश्यमुखी शिखायै वषट्
ॐ महादेवी कवचाय हूं
ॐ सर्वजन वश्य कुरु कुरु नैत्रत्रयाय वौषट्
ॐ सर्व कार्य साधय साधय नमः अस्त्राय फट्

उसके बाद मूल मन्त्र की ११ माला मन्त्र का जाप करे.
यह जाप साधक स्फटिक/रुद्राक्ष/मूंगा/गुलाबीहकीक माला से कर सकता है.

मन्त्र –

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं राजमुखी वश्यमुखी महादेवी सर्वजन वश्य कुरु कुरु सर्व कार्यसाधय साधय नमः (OM HREENG SHREENG KLEEM RAAJMUKHI VASHYAMUKHI MAHAADEVI SARVAJAN VASHY KURU KURU SARV KAARY SAADHAY SAADHAY NAMAH)

११ माला होने पर साधक देवी को मन ही मन वंदन करे तथा जाप उनको समर्पित कर दे. इस प्रकार साधक को यह क्रम ३ दिन तक रखना चाहिए. ३ दिन बाद साधक दीपक तथा पात्र को धो सकता है तथा पुनः किसी भी कार्य में उपयोग कर सकता है. माला का विसर्जन नहीं करना है, इस माला का प्रयोग साधक आगे भी इस साधना हेतु कर सकता है.

PARAM DURLABH PAARAD SADGURUDEV VIGRAH

Friends,

“Sadgurudev”, listening to this word, hearts of millions of disciple are filled with amazing feeling of affection. Tears automatically come in their eyes upon remembering that divine affection. And why it would not be, his love and affection for us cannot be compared at all, this can be known only by the person who has felt that love and experienced it. He spent all his life for all of us amidst all the difficulties but never complained even for a moment. He always spread smile on the lips of his disciples and blessed all his disciples. Burning in the fire of all criticisms and blame-games, he drank all the poison of his disciples but he never had bitterness for anyone in his life rather his life stand out as an amazing example of knowledge, politeness and divinest affection which cannot be compared with any other. Even faced with so many betrayers and various Paadpadm-like disciples, his knowledge-providing and fearlessness-providing life always remained unperturbed. His life is an ideal for all of us for all the times to come and is beyond comparison.

And it is worship of lotus divine feet of Sadgurudev from which field of sadhna is originated and at the zenith of sadhna, when sadhak is transformed into disciple and reaches the supreme state, sadhak finds that entire universe is bowing down on lotus feet of Sadgurudev, he is the final stage of all the sadhnas and state beyond it can be only called Neti Neti. Therefore there is always a need of guide when one wants to move forward on the path of sadhna. Without it, it is not possible to even take a single stride on this path. Therefore, every new person who wishes to move forward on this path, it is important for him to have guide and if possible Guru and even beyond it, the Sadgurudev so that he can surrender himself to his divine lotus feet…..

But is it so much easy?

Today there is crowd of not only Gurus but Sadgurus in society and it is but natural for any new aspirant to be inspired by their captivating propagation. But with passage of time, it is felt that both time and money were wasted and nothing concrete was accomplished. But this is the fact of today. Among all these, there are present competent persons too but only fortunate person can reach them…otherwise fate of other is only to get betrayed….

But the great person whose hard-work has revived sadhna world to amazing heights again is only one who is known by us with the name of Paramhans Swami Shri Nikhileshwaranand Ji (Dr. Narayan Dutt Shrimali Ji in householder form). He has also been called sun-like personality whose rays of knowledge have illuminated this field. And it is virtually impossible to write or say about personality of Sadgurudev Ji. In today's era there is increase in number of sadhaks who are accepting personality like Sadgurudev as Sadgurudev and their desire to get his visible company is getting intense. And why it should not be, for any disciple, there is nothing in this universe which can match divine lotus feet of Sadgurudev. Just imagine the level of joy when Sadgurudev is sitting in front of you and you are offering bath to his divine feet, following complete procedures.

There are so many persons among us who does all these procedures with dedication every day. But there are many who are always on lookout for Guru Vashikaran sadhna but in reality, Sadgurudev can be only bound by the cord of selfless love. Otherwise, binding him by sadhna is virtually impossible.

But how this affection can be raised?

There can be only two states of pouring out affection. Firstly to dive deep inside it or secondly to completely imbibe it inside us. Out of these two, first one is very easy because it is much easier to dive in anybody's love.

But all these are literal things. All would have listened to it but how to translate them into practicality?

Now here one thing that comes into our mind is Bhakti path which was never acceptable to Sadgurudev Ji. He always said that tell to universe that we do not need bhakti, we need sadhna. Then how can he find superfluous Bhakti interesting. And this era is also not of bhakti (it may be for many but it is our thinking). Then what articles should be used so that we achieve concentration in sadhna and attain purity too because Sadgurudev can be found only by pure love or by surrendering ourselves into his lotus feet.

Now question is that how this purity can be attained?

There can be many suggestions but when we implement them, it is found that the one which is useful for a particular person……is not suitable for others. Then what should be done?

This is certain that may be it can take so many births, but I have to reach those lotus feet and offer my whole life by saying that oh lord! Howsoever I may be, but I am all yours. I know that my life is full of shortcomings and errors committed by me, but now I have taken shelter under you.

There is joy in waiting. Isn't it…

No….

Yes….

Those who want to wait will wait. But those who have understood the hints given by Sadgurudev, they would have felt that he always has indicated through various sadhnas that if sadhna is done by making parad as base, then results can be obtained very quickly in lesser duration because parad is the only metal which has got infinite ability for attraction. And to add to it, those who do sadhna in front of Parad idol, slowly and gradually Parad starting making them pure…..sadhak starts becoming holy and pure. And when it happens, Sadhak finds that Sadgurudev was never alien from us, he was always inside our heart just that our inner eyes have opened now. Sadhak's complete life is filled with bliss, And why not, we do not have to make any journey for finding Sadgurudev because any one stride taken will takes us away from him, since there is useless to find him outside when he lives inside us.

But the Sadgurudev who lives inside our heart, mind and soul needs one base and Parad idol is capable of providing that base. And one such idol which is free of all type of faults i.e. it is made up of parad on which at least 8 sanskars have been done. And not only this, divine procedures needs to be done on it so that our Praan gets connected to its base, Sadgurudev.

And friends, Sadgurudev is always waiting for us. Just we are making him wait; we keep on desiring for something or the other. And Sadgurudev silently fulfills our desire of money, fame, respects etc. in hope that someday their doors of heart will open for him. He is always standing to take us in his arms.

Is there any end to desires?.....No, never……so he has opened the way for construction of this idol for all of us who are living under the burden of our desire and have make this divine journey possible for all of us.

And all this has been possible through the medium of our divine senior ascetic Guru Brothers and sisters and their love and sympathy towards all of us………because they can understand problem of all of us very easily. But it is also right that when they see us not doing sadhna with complete dedication; their heart is filled with lot of sympathy for us that why they do not do sadhna with purity and reach those divine lotus feet quickly. And under their divine blessings and directions, it has been decided to make this idol available to all of us.

Only name of Sadgurudev is capable of giving supreme auspiciousness and when it is combined with Parad Dev and given the form of divine idol, and then it is analogous to establishing Sadgurudev in worship room who is pouring out affection for us. When Sadgurudev will be in front of us, then success is certain…..it will be only possible through his grace.

Let us leave calculation of siddhis for some other days but now let us focus only on Sadgurudev……Sadhna will happen automatically , by his affection….what is needed is pure love, there will be no delay from Sadgurudev. He is always with us.

And friends, do not consider this Parad Sadgurudev Nikhil idol as any other ordinary idol because when sadgurudev’s charan Paaduka are so much important, then this idol made up of Parad of 8 sanskars is special in itself.

One of the ways is to establish these idols in sadhna room, it will definitely show effect. But if sadhna procedure is done in front of it, it will be best.

So do we still need to do sadhnas in front of this idol too…?

Why not, there are lots of sadhnas related to Sadgurudev which will come forth and those can be done in front of this idol …

But which are those sadhnas…

Sadgurudev is superior to trinity of gods and his state even superior to “Par Brahma”. Sadhna related to this form and amazing sadhna which is full of tantric impact is going to be coming soon. And nothing can be written about its effect because there significance cannot be limited by anyone.

One can also perform Abhishek on such idol. And when Sadgurudev is Shiva himself, then what is that state of life which cannot be fulfilled by his blessings.

When your sadhna room will have the idol containing Parad and Praan energy of Sadgurudev, then how long can accomplishment and success in sadhna remain far away from us…

Let us keep accomplishment in sadhna aside…..When base of our Praan is in front of us then who will do calculation of siddhis and mantra jap because it has been said too that how can we count him who gives infinitely…

Friends, now it is for you to understand. Whatever I have to say, I have said it. It is for you all to make decisions….

~~~~~~

मित्रो ,

“सदगुरुदेव” यह शब्द सुनते ही लाखो लाखो शिष्य शिष्याओ के ह्रदय अद्भुत स्नेह भाव से भर जाते हैं उनकी आखों मे ही स्नेह के कुछ कण रोके जाने पर भी बाहर आ ही जाते हैं,स्वत ही उस दिव्य स्नेह की याद आते ही आखें स्वयम ही अश्रुपूरित हो जाती हैं, ह्रदय स्वयम ही सदगुरुदेव जी के श्री चरणों में बिछ जाता हैं और ऐसा क्यों न होगा उनका हम सब के लिए जो स्नेह, प्रेम हैं उसकी कोई तुलना की ही नहीं जा सकती हैं वह तो जिसने महसूस किया हैं, अनुभव किया हैं, वही जान सकता हैं.और हम सभी के लिए उन्होंने जो दिन रात एक कर के कार्य किया,अपने सारे जीवन को जिन्होंने, जलते अंगारे में नंगे पैर चलते हुए भीकभी उफ़ नहीं की,बस सदैव अपने आत्मान्शो को सदैव मुस्कुराहट और आशीर्वाद ही बाटते रहे रहे,आलोचनाओ और घात प्रतिघात के मध्य पल प्रतिपल जलते हुए,
~~~~~~

उन्होंने अपने शिष्य शिष्याओं के लिए सारा जहर हस्ते हुए पीते रहे पर उनके जीवन में किसी के लिए भी कोई कडवाहट नहीं रही बल्कि वह ज्ञान और विन्रमता के साथ दिव्यतम स्नेह की एक ऐसी अद्भुत मिसाल रहे की जिस जीवन का कोई दूसरा उदाहरण हो ही ही नहीं सकता हैं.संभव ही नहीं हैं ,विस्वासघातियों और अनेको पाद पद्म रूपी शिष्यों रूपी धधकते अंगारे में मध्य भी गुलाब के फुल के जैसा सदैव ज्ञान प्रदायिनी और अभय प्रदायिनी उनका स्वरुप सदैव अविचिलित रहा,उनका जीवन हम सभी के लिए सर्व काल के लिए आदर्श हैं. उनके जीवन उसकी तो कोई तुलना ही नहीं हैं.

और साधना क्षेत्र का प्रारंभ ही सदगुरुदेव जी के श्री चरण कमलों की वंदना से होता हैं और साधनाओ की पराकाष्ठा मे जब एक साधक ..शिष्य बनते हुये उस परम चरम अवस्था पहुचता हैं तब वह पाता हैं की सम्पूर्ण ब्रम्हांड ही जिनके श्री चरणों मे नमन कर रहा हैं वही तो सारी साधनाओ की अंतिम अवस्था हैं और जहाँ से आगे की स्थिति भी नेति नेति कही जा सकती हैं.अतः जिस किसी को भी साधना फिर वह चाहे किसी भी क्षेत्र हो,किसी भी विज्ञानं का क्षेत्र हो एक मार्गदर्शक की आवश्यकता तो होती ही हैं.बिना उसके तो एक भीकदम आगे बढ़ पाना संभव नही हैं.अतः हर किसी नव व्यक्ति जो इस क्षेत्र मे आगे जाना चाहता हैं उसके लिए एक परमावश्यक बात हैं की वह एक मार्ग दर्शक और संभव हो तो एक गुरू और उसके भी आगे एक सदगुरुदेव के श्री चरण प्राप्त कर सकें जिनके दिव्य चरण कमलों मे अपने आप को समर्पण करने की प्रक्रिया मे वह सलग्न हो सकें ..

पर आज क्या यह इतनी सरल हैं?

आज बाज़ार मे गुरुओ की कौन कहें अब तो सदगुरुओ की भी मानो भीड़ सी लगी हुयी हैं और अत्यधिक लुभावने प्रचार के मध्य किसी भी नव व्यक्ति का उस प्रचार से प्रभावित हो जाना एक स्वाभाविक सा हैं पर समय बीतने पर पता चलता हैं की समय और धन दोनों ही नष्ट हुये और उसके पास कुछ जयकारे के अलावा कुछ भी नही आया.पर यह तो इस युग की रीति हैं इन्ही के बीच कुछ योग्यतम व्यक्तित्व भी हैं पर जिनके भाग्य हो सिर्फ वहीँ ही उन तक पंहुच..अन्यथा शेष के भाग्य में तो छला जाना ही ..

पर जिन महा पुरुषों के अथक प्रयासों के कारण आज साधना जगत पुनः अपनी उचाई तक अग्रसर होने की राह मे बढ़ चला हैं और वह आज के काल मे एक ही व्यक्ति हैं जिन्हें हम सभी अपने प्राणाधार के रूप मे परमहंस स्वामी श्री निखिलेश्वारानंद जी (गृहस्थ रूप मे डा श्री नारायण दत्त श्रीमाली जी)के नाम से जाने जाते हैं.को एक सूर्यवत व्यक्तित्व कहा जाता हैं जिनकी तप उर्जा किरणों से यह क्षेत्र गतिशील हैं.और सदगुरुदेव जी के व्यक्तित्व के बारे मे लिखना या कहना मानो सूर्य को दीपक दिखाने का प्रयास करना हैं. आज इस समय मे सदगुरुदेव जैसा व्यक्तित्व को अपना सदगुरुदेव स्वीकार करने वाले साधको की संख्या मे अत्यधिक प्रगति हो रही हैं वहीँ उनका प्रत्यक्ष सानिध्य प्राप्त करने की लालसा भी बढती जा रही हैं,और क्यों न हो एक शिष्य के लिए भला सदगुरुदेव के श्री चरण कमलों से बढ़कर भला कौन सी त्रिलोक मे वस्तु हो सकती हैं.कल्पना करें की सदगुरुदेव आपके सामने बैठे हो और आप उनके श्री श्री चरणों को या उन्हें ही स्नान करवा रहे हो पूर्ण विधि विधान से तो कितना न मन उल्लसित हो जाता हैं .

आज भी हमारे मध्य कुछ ऐसे व्यक्तित्व हैं जिनकी हर दिन की पूजा रचना मे वह पूरे मनोयोग से यह सारी क्रियाए करते हैं /करती हैं.पर अनेक इस प्रयास में रहते हैं कोई गुरु वशीकरण साधना मिल जाए पर वास्तव में सदगुरुदेव सिर्फ और सिर्फ स्नेह की डोर से वह भी निस्वार्थ हो तो उससे ही स्वयम बंध सकते हैं अन्यथा साधना से उन्हें बाँध पाना सर्वथा असंभव सा हैं.

पर यह स्नेह बढे कैसे ?

क्योंकि जीवन में दो ही अवस्था किसी को स्नेह करने की हो सकती हैं की या तो उसमे हम डूब जाए या अपने में उन्हें आत्मसात कर ले,इनमे प्रथम कहीं ज्यादा आसान सा हैं क्योंकि किसी के स्नेह में डूब जाना कहीं जायदा सरल हैं .

पर यह तो शाब्दिक बाते हो गयी सभी ने सुनी पढ़ी होंगी पर इसको परिणित कैसे करें .?

यहाँ अब जो बात आती हैं की सिर्फ भक्ति मार्ग की तो वह तो सदगुरुदेव जी को कभी स्वीकार थी नहीं उन्होंने तो सदैव कहा की कह दो ब्रम्हांड से की हमें भक्ति नहीं साधना चाहिए तब उन्हें कैसे कोरी भक्ति रुचिकर लगेगी और यह युग भक्ति का हैं भी नहीं (हाँ अनेक के लिए हो सकता हैं पर यहाँ हमारा एक सामने सा विचार हैं) तब किस तरह के उपकरणों का प्रयोग किया जाये की साधना में एकाग्रता भी हो जाए और निश्छलता भी आ जाए क्योंकि सदगुरुदेव जी को निश्छल स्नेह से ही तो पाया या उनके श्री चरणों में अपने आप को समर्पित किया जा सकता हैं?

अब यह प्रश्न हैं की ये निश्छलता लायी कहाँ से जाए ?

सलाहे तो अनेक हैं पर जब उनको प्रयोग में लाया जाए तो पता चलता हैं की जो उनके लिए उपयोगी थी या रही ....वह हमारे लिए नहीं हुयी तो अब क्या किया जाए ?

यह तो निश्चित हैं की चाहे कितने भी जन्म लग जाए उन श्री चरणों तक पहुंचना ही हैं और अपने सारे जीवन को यह कहते हुए उन दिव्य श्री चरण कमलो में समर्पित कर ही देना हैं की हे प्रभु जैसा भी हूँ ,पर हूँ तो आखिर आपका ही भले ही यह जीवन प्रभु कमियों से, गलतियों से भरा पडा हैं प्रभु पर अब आपकी ही शरण में हूँ.

पर माना की इंतज़ार में भी एक मजा हैं ..हैं न ..

नहीं न ..

की हैं न ..

जिन्हें इंतज़ार करना हैं वह तो करेंगे ही पर जिन्होंने सदगुरुदेव जी के इशारे समझे हैं उन्होंने यह भी अनुभव किया होगा की उन्होंने सदैव से अनेको साधनाओ के माध्यम से कई कई बार इंगित किया की यदि पारद को आधार बना कर यदि साधना की जाए तो निश्चित रूप से परिणाम की प्राप्ति बहुत ही तीव्रता से और कम से कम समय हो सकती हैं क्योंकि पारद ही एक मात्र ऐसी दिव्यतम जीवित धातु हैं जिसमे आकर्षण की असीम शक्ति हैं.

और यह भी की जो भी पारद देव के उपासक हैं यहाँ मेरा मतलब यह हैं की यदि पारद विग्रह के सामने कोई भी साधना की जाए तो पारद उस साधक को भी धीरे धीरे अपने जैसे ही शुद्धतम ही नहीं, बल्कि विशुद्धतम बना देने की क्रिया प्रारंभ कर देते हैं तो ..निर्मलता और निश्छलता स्वयं ही साधक में आने लगती हैं और जब यह होता हैं तो साधक पाता हैं की सदगुरुदेव उससे कभी दूर ही नहीं थे वे तो सदैव से उसके पास ,,,या यह कहूँ की उसके ह्रदय में ही थे बस आखें खुली और ..साधक का सारा जीवन मानो अमृतता से भर गया और .क्यों न हो सदगुरुदेव को पाने के लिए कही की भी कोई यात्रा नहीं करनी हैं क्योंकि यदि एक कदम भी आगे बढाया कहीं और तो वह उनसे दूर ही होगा,क्योंकि जो रोम रोम में हैं उन्हें खोजने का बाहर सारा प्रयास व्यर्थ सा हैं .

पर यह रोम रोम में वह हैं हमारे मन प्राण ह्रदय में सदगुरुदेव हैं उसके लिए एक आधार चाहिए और वह आधार दे पाने में एक पारद विग्रह ही सक्षम हैं और एक ऐसा विग्रह जो स्वयं भी समस्त दोषों से रहित हो मतलब अष्ट संस्कार से कम से कम युक्त पारद से निर्माणित हो ही ,और इतना ही नहीं बल्कि उन सभी दिव्य क्रियाये से युक्त हो जिनके माध्यम से हमारे प्राणों का, हमारे प्राणाधार में जितनी जल्दी एकाकार हो जाए .

और मित्रो, सदगुरुदेव तो हमेशा से तैयार खड़े हैं बस हमारी और से देर हैं हमें कभी यह तो कभी वह ..चाहते रहते हैं और सदगुरुदेव हमारी हर इच्छा धन यश मान प्रतिष्ठा की पूरी चुपचाप करते जाते हैं ,बस इस आशा में में कभी तो उनके इस प्राणाश के ह्रदय के बंद दरवाजे उनके लिए खुलेंगे. कभी तो वह उनकी और भी देखेगा.वह तो बाहे फैलाए सदैव से खड़े हैं.

पर इच्छाओ का कभी अंत हैं ?..कभी नहीं ..तो इन इच्छाओं के बोझ तले दवे हम सभी के लिए उन्होंने इस विग्रह की निर्माण के रास्ते खोल कर मानो एक दिव्यतम पथ पर अब सभी के लिए रास्ते और भी सुगम कर दिये हैं .

और यह सब संभव हुआ हमारे दिव्यतम वरिष्ठ सन्यासी भाई बहिनों के माध्यम से जो सदगुरुदेव जी के आत्मवत ही हैं और उन सभी की असीम करूणा हैं हम सब के प्रति...... क्योंकि वह हम सभी की परेशानी कहीं ज्यादा आसानी से समझ सकते हैं पर यह भी सही हैं की हम सभी को जब वह किसी भी कारण वश मनोयोग से साधना करते नहीं देखते हैं तो उन सभी का ह्रदय हम सभी के प्रति और भी करूणाद्र हो जाता हैं कि ये क्यों नहीं निश्छलता और निस्वार्थ भाव से साधना पथ पर अग्रसर हो कर जल्दी से उन परम पावन श्री चरणों में पहुँच जाते और और उन सभी के आशीर्वाद से,उनके निर्देशों पर इस विग्रह के लिए आप सभी को उपलब्ध करवाने का निश्चय हुआ हैं .

सिर्फ सदगुरुदेव का नाम ही अपने आप में परम पावनता देने में समर्थ हैं और फिर जब उनके साथ पारद देव का संयुक्तीकरण हो कर उनका ही एक दिव्यतम विग्रह सामने आये तब ,मानो हमारे साधना कक्ष में सदगुरुदेव मंद मंद मुसकुराते हुए अपने ही आत्मान्शो को हर पल अपने असीम स्नेह से संचित कर रहे होंगे तो भला फिर सफलता कहीं दूर हैं,और जब सदगुरुदेव ही सामने होंगे तो किसे फिकर हैं सफलता की ...वह तो उनके एक कृपा कटाक्ष से संभव है और यूँ हो जाएगी .

सिद्धियों का गुणा भाग किसी और दिन के लिए पर अभी तो सदगुरुदेव और सदगुरुदेव और सदगुरुदेव और कुछ नहीं ..साधना तो उनके स्नेह में भींग कर यूँ ही हो जायेंगी ..बस एक निश्छल स्नेह और निस्वार्थ भाव की ही तो जरुरत हैं ,फिर सदगुरुदेव जी को आने में बिलम्ब कैसा वह तो सदैव से ही साथ हैं.

और मित्रो इस पारद सदगुरुदेव निखिल विग्रह को एक सामान्य सा विग्रह समझने की गलती न करना क्योंकि जहाँ सदगुरुदेव जी की चरण पादुका का ही इतना महत्व हैं वही एक पूर्ण रूप से अष्ट संस्कारित पारद विग्रह से बने इस विग्रह की अपनी ही विशेषता हैं.

एक तो यह तरीका हैं की इन विग्रहो को अपने साधना कक्ष में स्थापित कर दिया जाये तो भी असर मिलेगा ही पर इनके सामने यदि साधना प्रक्रिया भी संपन्न की जाए तो सोने में सुहागा वाली बात होगी .

तो क्या इस विग्रह के सामने भी ..?

क्यों नहीं एक से एक बढ़कर सदगुरुदेव जी से सबंधित साधनाए सामने आने वाली हैं वह यदि इस विग्रह के सामने की जाए तो ...

पर कौन कौन सी ..

अभी तो इतना ही इशारा कर रहा हूँ की सदगुरुदेव जी को ब्रम्हा,विष्णु,महेश के साथ ब्रम्ह ही नहीं बल्कि "पार ब्रम्ह" जो की ब्रम्ह से भी ऊपर की स्थिति हैं.उस स्वरुप से सबंधित साधना और दूसरी वह अद्वितीय साधना जो की तंत्रोक्त प्रभाव युक्त हैं वह सामने आने वाली हैं .और भला इनके प्रभाव की बात ही कैसे लिखी जा सकती हैं क्योंकि उनके स्वरुप फिर वह चाहे कोई भी हो उसकी महत्वता को सीमाबद्ध कोई भी नहीं कर सकता हैं .

आज के समय में जब ऐसा विग्रह प्राप्त हो रहा हो जिस पर आप आप अभिषेक भी संपन्न कर सकते हैं.और सदगुरुदेव तो स्वयं शिव ही हैं तब भला कौन सी अवस्था जीवन की ऐसी होगी जो उनके आशीर्वाद से पूर्ण न होगी .

पारद और सदगुरुदेव जी की प्राण और तप उर्जा के साथ उनके वरदायक प्रभाव से युक्त यह विग्रह से जब आपका साधना कक्ष आपूरित होगा तो साधन में सिद्धि और सफलता कहाँ दूर होगी और ..

चलिए साधना सिद्धि को भी अभी एक तरफ रख दें ..जब हमारे प्राणाधार जब सामने हो तो भला हिसाब किताब सिद्धियों का कौन रखेगा और कौन गिनेगा मंत्र जप का हिसाब क्योंकि कहाँ भी तो गया हैं न की " क्या रखें उसके नाम का हिसाब, जो जो देता हैं हर पल बेहिसाब ..

मित्रो अब आपको समझना हैं .मैंने तो अपनी बात जो कहना थी वह कह दी .अब आपका निर्णय हैं..

TIBBATI SAMPOORN SAABAR LAKSHMI VASHIKARAN VIDHAAN

Shree Lakshmujaatam Hi Sansaaram Tasmin Sati Jagattrayam |
Tasmin Kseene Jagat Ksheenam Tachichakitsayam Prayatntah ||

"Entire world is sphere of work of Shree Lakshmi. Emergence of it gives birth to all three worlds and its vanishing leads to disappearance of world. Therefore, it should be our endeavour to attain it or in better words, we should think of attaining it by right means"

Line said above signifies the reality based on which entire world is operational. Today utility of wealth cannot be ignored.

During my research on Para Science, with blessings of Sadgurudev, I got introduced to various sadhaks and their padhatis. I tried to understand and imbibe those points to the best of my capability which I got from those saints. I was fortunate to see one special yantra with one sadhak during my journey to Arunachal Pradesh. After my Diksha, my field of world had become North-East India. I got the knowledge of Parad Vigyan, Ayurveda, Intense Tantra and infallible secrets of Shaakt Padhatis from a particular place situated in this direction. Especially the liveliness and procedure if Kaul Maarg which I experienced and witnessed, I could not see in any other state.

Well, the yantra which I am talking about, that yantra was with swami (master) of **Bodhmath Ashram**, **Shri Taranath Ji**. And I went there with the instruction of **Shree Kaalidutt Sharma Ji**. He had told me to go there once and experience the specialty of that yantra. And in this curiosity, I reached the Ashram after intense search. When I

told Swami Ji about my aim of visit and gave the letter of Sharma Ji, he felt very happy.

During dinner time, I got plenty of food in that small hut where there was no servant or any other arrangement. I enjoyed hot chapatti made up of wheat, my favourite vegetable and rice and various dishes that night even though in that particular region neither wheat is grown the most nor I saw many fruits in my way. There was one Baajot lying to the left of the Baajot of Swami Ji and swami ji kept one empty plate and bowl on it and covered it with red silky cloth. He recited one particular mantra and lighted one oil lamp in the front of that Baajot. After some time, when he uncovered that plate, the plate contained hot food.

After hearty dinner, I sat near Swami Ji and initiated the discussion of that yantra regarding which Sharma Ji had told me. As I started discussion on yantra, Swami ji laughed and told that the dinner which you had just now, just think how could you have had such dinner in this uninhabited area , I get this food due to this yantra only.

I felt ashamed and apologised and expressed my desire to know about this yantra in detail. Then he told me that no one can tell you better regarding it except **Sadgurudev**. Some more persons also do have its information and they have taken complete benefit out of this yantra in their life. When I asked whether I can meet any of them, then he told me the name of Shri **Arun Kumar Sharma Ji**. He also told me about the yantra and procedure of making it.

When I asked Sadgurudev about that yantra then he told that basically "This is a Sabar Yantra whose Vidhaan reached Tibet from India and there its complete procedure is also in vogue. **The manner in which Shri Yantra is considered to be powerful medium of financial progress and fulfilment of desire, in the same manner this sabar yantra is considered to be infallible means for attainment of instantaneous wealth, binding Lakshmi and riddance from poverty in Tibet.** Through this yantra, even the age-old poverty is eradicated. **Sabar Mantras are many times faster as compared to Vedic and Tantric mantra. Desires are fulfilled in it by establishing control over shaktis representing ether Shakti whereas in case of Vedic sadhna and mantra, works are accomplished by the blessing of merely Dev Shaktis. Though many other Shaktis are also formed from those elements from which these Dev categories has been formed. In case of Sabar Vidhaan, these shaktis can be made favourable by mantra power and made to successfully carry out the work more easily".**

On this yantra, prayogs can be done in three ways.

Saumya Padhati
Tantric Padhati
Teevr (Intense) Saabri Padhati.

Results obtained are different in all three padhatis because sadhna procedure of each padhati is different from other and different sadhna articles are used in each of them.

Even getting material from Shunya (Shunya Siddhi), manifestation of Shakti and motion in accordance with mind is also possible at very

high level and doing sadhna with Teevr Kram. But they are not our aim right now. We will not discuss any such Vidhaan here because it is not our priority. Here the motive is to attain financial independence and progress by which we can get rid of financial limitations. Rather than dying each moment, it is better to completely uproot the poverty so that your next generation can see the stability of Shree Lakshmi in their life by doing right deeds and use this wealth as per their wish.

It is said also that person suffering from poverty dies each and every moment.

What can be more sorrowful than not able to arrange enough money for the progress and development of one's own children and brothers and sisters...
What can be more compelling than seeing family members suffering and not able to arrange enough money for their treatment......
What can be more curse than not able to fulfil small-2 desires of children due to financial weakness.....
In spite of being blessed with so many qualities, not able to materialise the thought plans just because of shortage of money. What can be more painful than this......?
Starting business after taking debt and still no customers comes to your place..... Then what can be bitter poison than seeing that debt and the dream getting broken into pieces...

Some of your own has taken your money by emotionally fooling you or cheating you and is not returning it back.....what can be more misfortune than this

Late Arun Kumar Sharma Ji had lot of affection for me and I often used to attain knowledge of hidden Vidhaans and secrets from him. In this sequence , he told me about this yantra that " though there are many prayogs mentioned in Shastra for getting riddance from poverty and attainment of wealth but doing them is playing with problems only due to non-availability of sadhna articles, absence of accurate Vidhaan and Sadhan, strict rules and lengthy Vidhaans. But in such a situation it is much easier and fruitful to do Vidhaan related to TIBBATI SAMPOORN SAABAR LAKSHMI VASHIKARAN MAHAYANTRA for business, job and financial well-being.

Writing on and Praan Pratishtha Vidhaan of this yantra, made by combination of numbers and letters is very effective and hidden. And till today whosoever has completely utilised this yantra, that person has not felt any need to look back and has become financially stronger and progressed ahead....To fulfil the dream of Sadgurudev not only body and mind are required but also accurate proportion of money is also required. Not only Sadgurudev's dream, but even one's own dream cannot be fulfilled in scarcity of money. I have done this prayog and reaped the complete benefits out of it.And my temptation behind putting this in front of brothers and sisters is that they should also become financially strong , fulfil their own dreams and do Guru Work.

Praan-Pratishtha (Energising) of this yantra demands a lot of hard-work because firstly Vidhaan to energise it is of Sabar Maarg. Secondly every yantra has to be energised separately. Thirdly the procedure of instilling consciousness to each yantra and chanting mantra while showing some hidden mudras are done in front of some particular yantra seperately.Thus it is natural for it to consume a lot of hard-work. .....But when you all will attain success in its related prayog, I will get remuneration of my hard-work in your happiness.

This yantra is gift from **"Nikhil Para Science Research Unit"** (NPRU)to all those brothers and sisters who wants to attain finance base and strength in their life, who do not want to live a life deprived of money...., and I made this promise to all in **"Yakshini Apsara Seminar".** I can say with certainty that using this yantra and its Vidhaan will make your fortune favourable ....along with fourfold rise in your business, job, it will also show the new path for the appropriate entry of money

One may probably face failure in other Vidhaans, but this sabar Vidhaan is very special in itself. Accomplishing this yantra is very simple.....only 34 days, daily poojan by household articles and daily chanting 1 round of mantra in night, 34 oblation of Kheer and ghee......and after that only establishment of yantra. Some precautions needs to be taken care of, they will be enclosed with Vidhaan. Follow them and take benefits of yantra.

You all can send mail to **Anurag Singh Gautam Bhai**(**nikhilalchemy2@yahoo.com**) for getting this yantra. Please keep in mind that by sending mail to me or any other person; you

will only waste your time. Along with yantra, its prayog Vidhi will be sent. **Remember that yantra and its Vidhaan in combination completes the entire procedure. Therefore, neither you can give this yantra to anyone once you have touched it nor you can give it without permission. I have made available this valuable Sadhan Kriya to you all after taking permission only....Thus please keep in mind the directions necessarily otherwise you will be responsible for occurrence of any loss.**

This Vidhaan and yantra are for your dreams and home....there is no place for illogical argument. Passing illogical arguments is just wastage of one's own and our time......Due to scarcity of time, I could make available only very less number of yantra after accomplishing them. Thus, the yantra will be made available to only those who will send the mail first. You need not to pay even one paisa for getting this yantra. Yantra will be sent through registered post. If **now also, we do not follow the path of sadhna and curse our fate then nobody else but we ourselves will be responsible for it.**

"Nikhil Pranaam"

==

श्री लक्ष्मीजातं हि संसारं तस्मिन् सति जगत्त्रयम् |
तस्मिन् क्षीणे जगत् क्षीणं तच्चिकित्सयं प्रयत्नतः ||

"श्री लक्ष्मी का कार्य यह संसार है.इनके आविर्भाव से ही तीनों जगत की उत्पत्ति होती हैं और इनका तिरोभाव होने पर जगत का अभाव हो जाता है.इसलिए प्रयत्न कर उन्ही की प्राप्ति का या ये कहें की सद्प्राप्ति का विचार करना चाहिए."

उपरोक्त पंक्तियाँ प्रतीक हैं उस सच्चाई का जिसके धरातल पर समग्र विश्व गतिशील है. आज धन की उपयोगिता को नकारा नहीं जा सकता है.

पराविज्ञान पर शोध के मध्य सदगुरुदेव के आशीर्वाद से मेरा परिचय और सम्बन्ध विविध साधकों और उनकी पद्धतियों से हुआ.अपने सामर्थ भर मैंने उन सूत्रों को आत्मसात करने और समझने का प्रयास भी किया जो मुझे उन

मनीषियों से प्राप्त हुए थे. ऐसे ही एक साधक के पास मुझे एक विशेष यन्त्र को देखने का सौभाग्य मिला,जब मैं अपनी अरुणाचल प्रदेश की यात्रा पर था. अपनी दीक्षा के बाद से मेरा कार्य क्षेत्र एक प्रकार से उत्तरपूर्व भारत ही हो गया था. पारद विज्ञान,आयुर्वेद,तीव्र तंत्र और शाक्त पद्धतियों के अचूक रहस्यों का ज्ञान मुझे इसी दिशा के स्थान विशेष से हुआ.खास तौर पर कौल मार्ग की जो सजीवता और क्रिया मैंने यहाँ अनुभव की और साक्षी रहा,वे कदापि किसी अन्य प्रदेश में मुझे देखने को नहीं मिली थी.

खैर जिस यन्त्र की मैं बात कर रहा हूँ,वह यन्त्र मुझे **बोधमठ आश्रम** के स्वामी **श्री तारानाथ जी** के पास था.और **श्री कालीदत्त शर्मा जी** के निर्देश पर मैं वहाँ गया था.उन्होंने मुझसे कहा था की एक बार तुम जाकर उस यन्त्र की विशेषता अवश्य अनुभव करना. और उसी उत्सुकता में मैं उस आश्रम को ढूँढता ढूँढता पंहुच गया.जब मैंने स्वामी जी को अपने आगमन का उद्देश्य बताया और शर्मा जी का पत्र दिया तो वे बहुत प्रसन्न हुए.

रात्रिकाल में भोजन के समय उस छोटी सी कुटिया में जहाँ कोई सेवक और व्यवस्था नहीं थी,मुझे भरपूर भोजन की प्राप्ति हुयी.जबकि उस क्षेत्र विशेष में ना तो गेंहू की ही विशेष पैदावार होती है और ना ही विविध फल ही मुझे राह में दिखाई पड़े थे.फिर भी गेंहू की गरमागरम रोटी,मेरी मनपसंद सब्जी,पसंदीदा चावल और कई पकवानों का स्वाद मैंने उस रात्री को उस स्थान पर लिया. स्वामी जी के बाजोट के बाएं तरफ एक ओर बाजोट रखा हुआ था,और स्वामी जी नें उस पर बाजोट पर खाली थाल और कटोरी रख दी थी और उसके ऊपर लाल रेशम का वस्त्र ढांक दिया था,और किसी मंत्र विशेष का उच्चारण करते हुए उन्होंने एक तेल का दीपक उस थाली वाले बाजोट के सामने प्रज्वलित कर दिया था.थोड़ी देर बाद जब उन्होंने उस वस्त्र को उस थाल के ऊपर से उठाया तो उसमें गरमागरम भोजन मौजूद था.

भरपेट खाने के बाद मैं स्वामी जी के पास बैठ गया और उनके सामने मैंने उस यन्त्र की चर्चा छेड़ दी जिसके बारे में मुझे शर्मा जी ने बताया था.जैसे ही मैंने यन्त्र की बात की स्वामी जी ठठाकर हंस पड़े और कहा की अरे अभी जो तुमने भोजन किया है,वो भोजन भला इस वीराने में किस दुकान पर मिलता,वो भोजन उसी यन्त्र के प्रताप से मुझे मिल जाता है.

मैंने शर्मिन्दा होकर उनसे क्षमा मांगी और विस्तार से उस यन्त्र के बारे में जानने की इच्छा प्रकट की.तब उन्होंने मुझे कहा की इस बारे में तुम्हे **सदगुरुदेव** से बेहतर और कोई नहीं बता सकता है,हाँ इसकी जानकारी और भी कुछ लोगों को है और उन सभी लोगो ने इस यन्त्र का लाभ अपने जीवन में पूरी तरह से उठाया भी है.मेरे ये पूछने पर की क्या उनमें से किसी से मैं मिल सकता हूँ उन्होंने **श्री अरुण कुमार शर्मा जी** का नाम बताया. और साथ ही यन्त्र और उसकी निर्माण विधि को भी उन्होंने समझाया.

जब मैंने सदगुरुदेव से उस यन्त्र के बारे में पूछा तो उन्होंने बताया की मूलतः “ये **साबर यन्त्र**है,जिसका विधान भारत से होकर तिब्बत तक पंहुच गया और वहीँ पर इसकी पूर्ण विधि भी प्रचलित है.**जिस प्रकार श्रीयंत्र आर्थिक उन्नति और मनोकामना पूर्ती का सशक्त माध्यम माना गया है,वैसे ही ये साबर यंत्र लक्ष्मी की अकस्मात प्राप्ति,लक्ष्मी का बंधन और दरिद्रता निवारण का तिब्बत में अचूक उपाय माना जाता रहा है, इस यन्त्र के द्वारा जन्म जन्मान्तर की दरिद्रता का नाश किया जाता है**.**साबर मन्त्र वैदिक मन्त्रों और**

तांत्रिक मन्त्रों की अपेक्षा कई गुना अधिक तीव्र होतें है.ईथर शक्ति का प्रतिनिधित्व करने वाली शक्तियों को वश में करके उनसे अपनी मनोकामना की पूर्ती की जाती है.जबकि वैदिक साधना और मंत्र मात्र देव शक्तियों का अनुग्रह प्राप्त कर कार्य संपादित करते हैं.जबकि इसी ब्रह्माण्ड में उन्ही तत्वोव से अन्य शक्तियां भी निर्मित होती हैं,जिनसे देव वर्ग की निर्मित्ति संपन्न हुयी है.साबर विधान में उन्ही अन्य शक्तियों को मंत्र बल से अनुकूल कर कहीं अधिक सहजता से कार्य को सफलता पूर्वक संपादित करवाया जा सकता है."

इस यन्त्र के ऊपर तीन प्रकार से प्रयोग संपादित किये जा सकते हैं-

सौम्य पद्धति से

तांत्रिक पद्धति से

तीव्र साबरी पद्धति से

तीनों पद्धतियों से प्राप्त परिणाम भिन्न भिन्न होते हैं,क्यूंकि प्रत्येक पद्धति की साधनक्रिया दूसरी पद्धति से भिन्न होती है,और भिन्नता होती है उनकी साधना सामग्री में भी.

अति उच्चावस्था और तीव्र क्रम से साधन क्रिया करने पर शुन्य से पदार्थ प्राप्ति,शक्ति का प्रत्यक्षीकरण और मनोनुकूल गमन भी संभव है,किन्तु यहाँ हमारा अभीष्ट ये नहीं है.और ना ही हम उस पर या उस विधान पर कोई चर्चा ही करेगे,क्यूंकि वो हमारी प्राथमिकता नहीं है यहाँ हमारा अभीष्ट है,उस आर्थिक स्वतंत्रता और उन्नति को पाना जिसके द्वारा आर्थिक अभाव को हमारे जीवन से कोसों दूर किया जा सके,तिल तिल कर मरने से कहीं बेहतर हैं दरिद्रता का समूल नाश ताकि आपके बाद आपकी आने वाली पीढियां भी सुकर्म करते हुए अपने जीवन में श्री लक्ष्मी का स्थायित्व देख सकें और उसका मनोनुकूल उपभोग कर सकें.

वैसे भी कहा जाता है की दरिद्रता से ग्रस्त और अभिशप्त व्यक्ति हर पल मरते जाता है.

अपनी संतान या भाई बहनों के जीवन विकास हेतु समुचित अर्थ की व्यवस्था ना कर पाने से बड़ा दुःख और क्या है......

अपने परिवार के सदस्यों को रोगग्रस्त होकर तडपते देखने से और उनके उपचार हेतु उचित आर्थिक प्रबंध ना कर पाने से अधिक विवशता क्या हो सकती है.......

अपने बच्चों की छोटी से छोटी इच्छा को आर्थिक कमजोरी के कारण पूरा ना कर पाने से अधिक बड़ा श्राप क्या हो सकता है.......

गुणों की खान होने के बाद भी मात्र धन की कमी के कारण अपनी वैचारिक योजनाओं को साकार ना कर पाने से बड़ी पीड़ा क्या हो सकती है......

कर्ज लेकर व्यवसाय प्रारंभ करने पर भी आपकी तरफ ना तो ग्राहक ध्यान देता हो और ना ही धन....तब ऐसी स्थिति में वो कर्ज और उसे लेने के पीछे देखे गए सपने को चूर चूर होते देखने से बड़ा जहर क्या हो सकता है.......

आपका अपना धन आपका कोई अपना ही आपको भावुकता के सागर में बहाकर या धोखा देकर हड़प लिया हो और वापस ना कर रहा हो..इससे बड़ा दुर्भाग्य और क्या हो सकता है.....

स्वर्गीय अरुण कुमार शर्मा जी का मुझसे बहुत स्नेह था और अक्सर मैं उनसे गुप्त विज्ञानों और रहस्यों का ज्ञान प्राप्त किया करता था,इसी क्रम में इस यन्त्र के बारे में उन्होंने मुझे बताते हुए कहा था की "वैसे शास्त्रों में दरिद्रता निवारण और धन प्राप्ति के विविध प्रयोग हैं,किन्तु साधना सामग्री की अनुपलब्धता, साधन और उचित विधान की कमी तथा कठोर नियमों और लंबे विधानों के कारण उन्हें संपन्न करना मानों जटिलताओं से दो दो हाथ करना ही है. किन्तु ऐसी स्थिति में व्यवसाय,नौकरी और आर्थिक सुदृणता प्राप्ति के लिए **तिब्बती सम्पूर्ण साबर लक्ष्मी वशीकरण महायंत्र** और उससे सम्बंधित विधान को करना कही ज्यादा आसान और सफलता प्रदायक है."

अंकों और शब्दों के संयोजन से निर्मित इस यन्त्र का अंकन और प्राण प्रतिष्ठा विधान अत्यंत प्रभावकारी और गुप्त है,तथा आज तक जिसने भी इस यन्त्र का पूर्ण प्रयोग किया है,उसे अपने जीवन में फिर कभी पीछे मुड़कर देखने की आवशयकता महसूस नहीं हुयी और वो आर्थिक रूप से मजबूत होकर आगे बढ़ता चला गया.. सदगुरुदेव के स्वप्न को पूर्ण करने के लिए मात्र तन और मन की आवश्यकता ही नहीं है,अपितु उचित परिमाण में धन का होना भी अनिवार्य है,और मात्र सदगुरुदेव के स्वप्न को [पूरा करने में ही क्यूँ,स्वयं के स्वप्न भी तो धन के अभाव में पूरे नहीं हो सकते हैं.मैंने इस प्रयोग को किया है,और पूरा लाभ पाया है,और अपने एनी भाई बहनों के समक्ष इसे रखने का मेरा लालच भी यही है की वे सभी भी आर्थिक रूप से मजबूत होकर अपने स्वप्नों को पूरा करते हुए गुरु कार्य कर सके.

इस यन्त्र की प्राण प्रतिष्ठा में अत्यंत श्रम करना पड़ता है,क्यूंकि एक तो इसे प्राण प्रतिष्ठित करने का विधान साबर मार्ग का है,दुसरे हर यन्त्र की प्राण प्रतिष्ठा प्रथक प्रथक ही करनी पड़ती है,तीसरे हर यंत्र को चैतन्यता देने का कार्य और कुछ गोपनीय मुद्राओं का प्रदर्शन करते हुए मंत्र जप अलग अलग ही यन्त्र विशेष के सामने किया जाता है.अतः परिश्रम का आधिक्य होना स्वाभाविक ही है....किन्तु जब आप सभी इससे सम्बंधित प्रयोग कर सफलता प्राप्त कर लोगे तो मुझे मेरे परिश्रम का पारिश्रमिक आपके आह्लाद में मिल ही जाएगा.

ये यन्त्र उन सभी भाई बहनों के लिए **"निखिल पराविज्ञान शोध इकाई"(NPRU)**की ओर से उपहार है जो अपने जीवन में आर्थिक आधार और मजबूती प्राप्त करना चाहते हैं,जो अब गिडगिडाते हुए धन के लिए तरस तरस कर जीवन नहीं जीना चाहते हैं.,और इसका वायदा मैंने **"यक्षिणी अप्सरा सेमीनार"** में सभी से किया था.हाँ मैं दावे से कह सकता हूँ की इस यन्त्र और उसके विधान का प्रयोग करने पर भाग्य आपको अनुकूलता देगा ही....आपके व्यवसाय,नौकरी में चतुर्मुखी उन्नति और गति के साथ साथ ये नवीन मार्ग भी प्रशस्त करेगा आर्थिकता के समुचित प्रवेश हेतु.

अन्य विधानों में शायद विफलता का मुंह देखना फिर भी संभव होगा,किन्तु ये साबर विधान अपने आप में विलक्षण है,इसे यन्त्र के सामने सिद्ध करना बहुत ही आसान है..मात्र ३४ दिन,कुछ घरेलु सामग्री से नित्य पूजन और प्रतिदिन रात्रि में १ माला मंत्र जप,३४ आहुति घृत और खीर की...और उसके बाद मात्र यन्त्र स्थापन....कुछ

सावधानियों का ध्यान रखना है,वो विधान के साथ ही संलग्न रहेंगी.आप उनका पालन कीजियेगा और यन्त्र का लाभ उठाइयेगा.

आप सभी **अनुराग सिंह गौतम भाई(nikhilalchemy2@yahoo.com)** को इस यन्त्र की प्राप्ति हेतु मेल भेज दीजियेगा,ध्यान रखियेगा की मुझे या अन्य किसी भी मेल एड्रेस पर यन्त्र प्राप्ति के लिए मेल भेजने से मात्र आप अपना समय ही व्यर्थ करेंगे.यन्त्र के साथ ही आपको इसकी प्रयोग विधि प्रेषित कर दी जायेगी..**याद रखियेगा की यन्त्र और उसका विधान मिलकर ही पूरी क्रिया होती है.अतः आप ना तो अपना यन्त्र किसी को एक बार स्पर्श करने के बाद दे सकते हैं ना ही बगैर अनुमति के इसका विधान मैंने इस हेतु अनुमति लेने के बाद ही इस बहुमूल्य साधन क्रिया को आप सभी के लिए उपलब्ध कराया है..अतः निर्देश का ध्यान अवश्य रखेंअन्यथा होने वाली हानि के जिम्मेदार आप स्वयं ही होंगे..**

ये विधान और यन्त्र मात्र आपके अपने स्वप्नों और घर के लिए है..कुतर्कता की यहाँ कोई जगह ही नहीं है. कुतर्क्ता मात्र अपना और हमारा समय व्यर्थ करने का कार्य है.. समय अभाव के कारण मैं बहुत कम यन्त्र सिद्ध करके उपलब्ध करा पाया हूँ,अतः जिस क्रम से मेल पहले आ जायेगी,मात्र ये उसे ही उपलब्ध करा पाएंगे.आपको इस यन्त्र की प्राप्ति हेतु **१ पैसा** भी नहीं देना है,रजिस्टर्ड डाक से ही यन्त्र निकाले जायेंगे. यदि **अब भी हमने साधना का मार्ग ना अपनाया और भाग्य को ही दूषण देते रहे तो जिम्मेदार कोई और नहीं हम स्वयं ही होंगे**.

TIBBATI SAABAR LAKSHMI VASHIKARAN SADHNA VIDHAN

Poorv Janm Krit Dosh Eh Janmani Yad Bhavet |
Daaridray Durbhagya Vimuchayante Aishwarya Prapyte Mahalakshmi Sadhvai ||

Tantra is the expansion of feelings, it is the expansion of life and taking the support of this expansion entire bad-luck and poverty can be eliminated. Upon attaining the grace of Sadguru in life, there is definitely arise in good-luck and it completely

annihilate bad-luck and inconsistencies of life. And it all depends on his grace that he can tell a simple solution for any cumbersome problem.

Vidhaan presented here may seem very easy but we will not be able to understand the divinity of this amazing Vidhaan which has been obtained so easily until and unless we apply it. Upon doing prayog with dedication, you yourself will experience something special.

Though earlier I was only in favour of putting forward only one Vidhaan. But seeing your affection and enthusiasm towards this Vidhaan **I am giving 2 procedures out of total 5 procedures.**

All the things remain same in both the procedures but there is difference in number of days. You can do it either in 34 days or in 17 days. You can fix time and day according to your time-schedule and commitments. In addition to normal poojan articles one will needBundi ka Laddu (a sweet of the shape of ball) , flock of cotton impregnated with Itr (perfume) , two red rosaries, dhoop , Rakt Chandan (red sandal) , lamp , curd , Panch Meva , Kheer , five betel leaves folded and seasoned and five different/similar fruits for this prayog.

It has to be done in night. One can choose north, east or west direction .Daily in the night take bath before sadhna and wear the dress. Dress and aasan will be red.Before doing basic sadhna, like every sadhna do Sadgurudev poojan, chant at least 4 rounds of Guru Mantra, do lord Ganpati poojan and Lord Bhairav poojan necessarily and this is compulsory in each and every sadhna. After this, set up one small Baajot in front of Sadgurudev's Baajot and spread red cloth on it and in middle of that cloth make one circular round with red sandal and write **HREENG HREENG SAA** in middle of it. And establish yantra on it after bathing it with clean water. While doing its bath, recite **HREENG HREENG SAA JALSNAANAM SAMARPYAAMI.**

After this, chant mantra in sequence given below and offer articles on yantra.

HREENG HREENG SAA SUGANDHIDRAVYAM SAMARPYAAMI (offer flock of cotton impregnated with Itr (incense))

HREENG HREENG SAA PUSHP MAALYAM SAMARPYAAMI (offer garland of flowers)

HREENG HREENG SAA DHOOPAM AAGRAPYAAMI (offer Dhoop)

HREENG HREENG SAA DEEPAM DARSHYAAMI(Offer Til (sesame) oil or ghee lamp)

HREENG HREENG SAA DADHIM SAMARPYAAMI(Offer Curd)

HREENG HREENG SAA PHALAANI SAMARPYAAMI (Offer fruits)

HREENG HREENG SAA NAIVEDYAM SAMARPYAAMI (Offer Panch Meva, Bundi's Laddu and Kheer)

HREENG HREENG SAA TAAMBOOLAM SAMARPYAAMI (Offer 5 betel leaves)

HREENG HREENG SAA KARPOOR SAMARPYAAMI (Offer camphor)

After it chant 5 rounds of beej mantra **HREENG HREENG SAA** with Rakt Chandan rosary, Kamalgatta Rosary, Sarv Shakti Rosary (which you have accomplished before), Moonga Rosary or Shankh (conch shell) Rosary. And if you are doing Vidhaan of 34 days , then while reciting basic mantra 34 times offer oblation of Ghee and Kheer (Mix Panch Meva , which you have offered on yantra). But if you are doing Vidhaan of 17 days then you have to recite basic mantra 71 times and offer oblation of ghee and Kheer.

BASIC MANTRA

OM SATYA BHAVAANI KAALIKA , BAARAH BARAS KUNWAAR , EK MAAI PARMESHWARI , CHOUDAH BHUVAN HUAAR , DO PAKSH NIRMALEE, TERAH DEVAAR, ASHT BHUJA MAAI KAALIKA, GYARAH RUDRA SEV,SOLAH KALA SAMPOORNI ,TRAN NAIN BHARMAAR, DASO DUAARE NIRMALI, PAANCHO RAKSHA KAR, NAU NAATH SHAT DARSHANI PANDRAH TITHI JAAN , CHARO VED HAATH SUHAAVE KAR MAAI KALYAAN

After offering oblation, again chant 5 rounds of **HREENG HREENG SAA.** All Vidhaan hardly takes one or one and half hours. After this, do Jap Samarpan, pray, leave the aasan and offer one cooper spoon of water under the aasan and apply that water on your forehead. Consume the offered fruits yourself or give it to any priest daily.

On the next night, before starting the procedure remove the articles offered on yantra before and do the procedure with new articles. You have to do this procedure daily for the number of days fixed by you. You can immerse the offered articles daily or on the day succeeding the day of sadhna completion.

After completion of sadhna, on the next day offer food to any Brahman couple or unmarried small girl for seeking their blessings. Girl should not belong to your family or clan. And thereafter sadhak should establish yantra by his own hands in business place or safe.

Some important facts have to be kept in mind that *sadhak who will start sadhna, he will do it till last day, sadhna has not be left in between and also no alternative will be used. In addition to accomplishment of yantra, one thing has to be kept in mind that daily dhoop should be offered to yantra but it should not be touched by anybody else and shadow on none should not fall on it.*If anyone except sadhak i.e. wife, son, daughter or father-mother shows dhoop then they should pray and show it from far off. In case of absence of sadhak they should take complete bath and they should neither touch that yantra nor their shadow fall on it. Sensitivity of yantra is very high therefore all these facts have to be kept in mind. Those who want to eliminate poverty and want to make life financially sound and take life to higher pedestal, they will do it so.

If we talk about its effect, then if you do this sadhna while following purity, you can see good luck coming into your life and prosperity becoming stable in life, see your business growing like anything. What is needed is to do sadhna while following all rules. Sadhna will not yield results, it is impossible.

“Nikhil Pranaam”

****

पूर्व जन्म कृत दोष इह जन्मनि यद् भवेत |
दारिद्रय दुर्भाग्य विमुच्यन्ते ऐश्वर्य प्राप्यते महालक्ष्मी साधवै ||

तंत्र विस्तार है भावों का,विस्तार है जीवन का और इसी विस्तार का सहयोग लेकर समस्त दुर्भाग्य को,दरिद्रता को नष्ट किया जा सकता है. जीवन में सदगुरु कृपा होने पर निश्चय ही जीवन और सौभाग्य का उद्भव होता है और उदित सौभाग्य जीवन की विसंगतियों और दुर्भाग्य का पूर्ण नाश निश्चित ही करता है.और ये उनकी ही कृपा होती है की वे किसी कठिन समस्या का भी सहज और सरल उपाय बता दें.

प्रस्तुत विधान भी देखने में अत्यंत सहज है,किन्तु मात्र सहजता और सरलता से हुयी इसकी प्राप्ति के कारण आप इस अद्भुत विधान की दिव्यता को तब तक नहीं समझ पायेंगे,जब तक स्वयं ही अपने श्रम से प्रायोगिक

रूप ना दे दें. प्रयोग को श्रद्धा और पूर्ण आत्म भाव से संपन्न करने के बाद आप स्वयं ही इसकी विलक्षणता अनुभव कर पायेंगे.

वैसे मैं इसका मात्र एक ही विधान आप सभी के सामने रखना चाहता था.किन्तु आप सभी का स्नेह और इस विधान के प्रति उत्साह देखकर इसकी ५ विधियों में से २ विधियां यहाँ पर आप सभी के समक्ष दे रहा हूँ.

प्रस्तुत दोनों विधियों में बाकी सब तो एक जैसा ही है किन्तु दिवस की संख्या में अंतर है. आप इसे या तो ३४ दिवस में संपन्न कर सकते हैं या फिर १७ दिन में. आप अपनी व्यस्तता और समय के विभाजन को देखकर समय और दिवस का निर्धारण कर सकते हैं.सामान्य पूजन सामग्री के अतिरिक्त बूंदी का लड्डू,इत्र का फाहा,दो लाल माला,कपूर,धूप,रक्त चन्दन,दीप,दही, पञ्चमेवा,खीर,पांच बीड़ा पान,पांच अलग प्रकार के या समान फल अनिवार्य है.

समय रात्रि का ही होगा,उत्तर,पूर्व या पश्चिम दिशा का आप चयन कर सकते हैं.नित्य रात्रि में साधना के पूर्व स्नान करने के पश्चात वस्त्र धारण कर लें.वस्त्र वा आसन लाल होगा.मूल साधना के पहले आप हर साधना की ही तरह सदगुरुदेव पूजन और गुरु मंत्र का कम से कम ४ माला जप,भगवान गणपति पूजन और भगवान भैरव का पूजन अवश्य करें और ये हर साधना में अनिवार्य है.इसके बाद सदगुरुदेव के बाजोट के सामने ही एक छोटा बाजोट स्थापित कर लें और उस पर लाल वस्त्र बिछा दें और उस वस्त्र के मध्य में लाल चन्दन से एक गोल घेरा बनाकर उसके मध्य में **ह्रीं ह्रीं सा** लिख दें.और उस के ऊपर यन्त्र को शुद्ध जल से स्नान करवाकर स्थापित कर दें. स्नान कराते समय **ह्रीं ह्रीं सा जलस्नानं समर्पयामी** कहें.

इसके बाद निम्न क्रम से मंत्र उच्चारण करते हुए सामग्रियों को यन्त्र पर अर्पित करते जाएँ.

ह्रीं ह्रीं सा सुगंधिद्रव्यम समर्पयामी कहते हुए इत्र का फाहा समर्पित करें.
ह्रीं ह्रीं सा पुष्प माल्यं समर्पयामी कहते हुए पुष्प माला समर्पित करें.
ह्रीं ह्रीं सा धूपं आघ्रापयामी कहते हुए धूप समर्पित करें.
ह्रीं ह्रीं सा दीपम् दर्शयामी कहते हुए तिल के तेल अथवा घृत का दीप समर्पित करें.
ह्रीं ह्रीं सा दधिम् समर्पयामी कहते हुए दही समर्पित करें.
ह्रीं ह्रीं सा फलानि समर्पयामी कहते हुए फल समर्पित करें.
ह्रीं ह्रीं सा नैवेद्यम समर्पयामी कहते हुए पञ्चमेवा,बूंदी के लड्डू और खीर समर्पित करें.
ह्रीं ह्रीं सा ताम्बूलं समर्पयामी कहते हुए पाँचों पान समर्पित करें.

ह्लीं ह्लीं सा कर्पूरं समर्पयामी कहते हुए कपूर समर्पित करें.

इसके बाद रक्त चन्दन माला,कमलगट्टा माला,सर्व शक्ति माला(जो आपने पहले सिद्ध की हुयी है),मूंगा माला या शंख माला से **ह्लीं ह्लीं सा** (**HREENG HREENG SAA**) बीज मंत्र की ५ माला जप करें. और यदि आप ३४ दिनों का विधान कर रहे हैं तो मूल मंत्र का ३४ बार उच्चारण करते हुए **घी और खीर**(पञ्च मेवा जो आपने यन्त्र पर अर्पित किया था,उसमें मिला लें) से हवन करें.किन्तु यदि आप १७ दिन का विधान कर रहे हैं तो ७१ बार आप मूल मंत्र का उच्चारण करते हुए घृत और खीर से हवन करें.

मूल मंत्र -

ॐ सत्य भवानी कालिका,बारह बरस कुंवार,एक माई परमेश्वरी,चौदह भुवन हुआर,दो पक्ष निर्मली,तेरह देवार,अष्ट भुजा माई कालिका,ग्यारह रूद्र सेव,सोलह कला सम्पूर्णी,त्रण नैन भरमार,दसो दुआरे निर्मली,पांचों रक्षा कर,नौ नाथ षट दर्शनी पन्द्रह तिथि जान,चारों वेद हाथ सुहावे कर माई कल्याण ||

हवन के बाद पुनः **ह्लीं ह्लीं सा** मंत्र की ५ माला करें. इस पूरे विधान में मुश्किल से १ या डेढ़ घंटा लगता है. इस क्रिया के बाद जप समर्पण कर प्रार्थना कर आसन छोड़ दें और आसन के नीचे १ आचमनी जल अर्पित कर उस जल को माथे पर लगा लें.फल का प्रसाद स्वयं ग्रहण कर लें या फिर किसी ब्राह्मण को नित्य दे दें.

अगले दिन रात्रि में क्रिया प्रारंभ करने के पूर्व यन्त्र पर समर्पित सभी सामग्री को हटा दें और नवीन सामग्री से क्रिया करें.यही क्रिया आप को अपने तय किये हुए दिनों में नित्य करनी है.आप प्रतिदिन के निर्माल्य को या तो नित्य विसर्जित करें या फिर साधना पूरी होने के अगले दिन विसर्जित कर दें.

साधना पूरी होने के बाद अगले दिन किसी ब्राह्मण दम्पति को अथवा किसी कुमारी को पूर्ण भोजन करवाकर दक्षिणा देकर तृप्त करें.कन्या स्वयं के परिवार या वंश की नहीं होना

चाहिए. और उसके बाद यन्त्र को स्वयं साधक अपने हाथ से व्यापारिक प्रतिष्ठान अथवा तिजोरी में स्थापित कर दें.

कुछ विशेष तथ्य का अवश्य ध्यान रखे,की *जो भी साधक इस साधना को प्रारंभ करेगा अंतिम दिवस तक वो साधना संपन्न करेगा ही,साधना बीच में नहीं छोडना है और ना ही इसका कोई विकल्प ही प्रयोग किया जायेगा.यन्त्र सिद्धिकरण के साथ ही इस बात का विशेष ध्यान रखा जाए की यन्त्र को* नित्य धूप दिखाई जाए किन्तु किसी और का स्पर्श नहीं होना चाहिए और ना ही किसी की परछाई पड़े. यदि साधक के अतिरिक्त कोई और जैसे पत्नी,पुत्र अथवा पुत्री या माता-पिता धूप दिखा रहे हो तो वो भी मात्र प्रणम्य भाव से दूर से ही धूप दिखाएँ वो भी साधक की अनुपस्थिति में पूर्ण स्नान किये हुए और उनकी भी परछाई या स्पर्श उस यन्त्र को ना हो.यन्त्र की संवेदनशीलता अत्यधिक तीव्र है इसलिए इन तथ्यों का ध्यान रखना अनिवार्य है.जिन्हें दरिद्रता का नाश करना है और जीवन को अर्थयुक्त कर अपने परिवार तथा जीवन को उच्चता की और बढ़ाना है वे ऐसा करेंगे भी.

रही बात इसके प्रभाव की तो शुद्धता का पालन करते हुए यदि आप इस साधना को संपन्न कर लेते हैं तो स्वयं ही आप सौभाग्य को आपका वरण करते हुए और ऐश्वर्य को आपके घर में स्थायित्व लेते हुए देख सकते हैं,व्यापार को दिन दूनी रात चौगुनी प्रगति की ओर बढ़ता हुआ देख सकते हैं.आवशयकता मात्र नियमों का पालन करते हुए साधना को संपन्न करने की होती है,साधना फल ना दे ये होना असंभव ही है.

ROG NIVAARAK SINHMUKHI PRATYANGIRA SHAKTI PRAYOG

मनुष्य ब्रम्हांड की एक अद्भुत रचना है, जिसे जितना भी समजा जाए उतना ही कम लगता है. आधुनिक विज्ञान तो मनुष्य के कुछ ही हिस्सों तक पहोचा है और इस क्षेत्र में पूर्ण रूप से अपनी शोध को गतिशील बनाये हुवे है. हमारे प्राचीन ऋषि मुनियों ने भी इसी दिशा में शोध कार्य किया था और शरीर से सबंधित कई प्रकार के गोपनीय तथ्यों के बारे में अपनी तपस्या से पता लगाया था. मनुष्य शरीर एक अत्यधिक जटिल रचना है, यह ठीक एक यंत्र की तरह है जिसमे कई प्रकार के पुर्जे होते है और कोई भी एक पुर्जा खराब होने पर पूरा यंत्र खराब हो जाता है. हमारा शरीर

स्वस्थ हो तब हमारा जीवन स्वस्थ है और हमारा शरीर अपनी गितिशिलता के अनुरूप कार्यशील रहेगा. लेकिन जब यह कार्य में रुकावट आती है तो कई प्रकार की समस्याओ का सामना करना पड़ता है. ये रुकावट को या फिर यह गतिशीलता में शरीर को जो बाधा प्राप्त हो रही है उसे ही रोग कहते है. रोग मनुष्य को मात्र बाह्य या शारीरिक रूप से नहीं बल्कि मानसिक रूप से भी तोड़ देता है तथा जीवन के क्रियाकलाप में विक्षेप का प्रसार करने लगता है. आज के युग की चिकित्सा पध्धति मात्र बाह्य लक्षणों की तरफ ध्यान देती है लेकिन मानसिक रूप से जो क्षति पहोचाती है तथा जो सूक्ष्म भाग और शरीर के अंदर के अन्य शरीर तथा तत्वों पर जो क्षति होती है उस की क्षति पूर्ती करना अत्यधिक कठिन कार्य होता है और इसी लिए कई बार कई प्रकार के रोग उत्तम चिकित्सा लेने पर भी पूरी तरह मिटते नहीं और कई बार होते है. तंत्र क्षेत्र के कई अद्भुत विधान है जिसके माध्यम से रोगों से मुक्ति पा कर एक सम्पूर्ण जीवन को जिया जा सकता है. ऐसे दुर्लभ विधानों के माध्यम से जहा एक और रोग और रोगजन्य कष्ट और पीड़ा से मुक्ति मिलती है वहीँ दूसरी और जो क्षति हुई है उसकी भी पूर्ति होती है जिससे भविष्य में वह रोग के लक्षण नहीं होते है. ऐसा ही एक दुर्लभ विधान देवी प्रत्यंगिरा से सबंधित है. यह प्रयोग श्रद्धा और विश्वास के साथ किया जाए तो रोग के कष्ट से निश्चित रूप से व्यक्ति को मुक्ति दिला सकती है.

यह प्रयोग रविवार रात्री काल में ११ बजे के बाद शुरू किया जा सकता है.

साधक के वस्त्र और आसान लाल रंग के हो. साधक को उत्तर दिशा की तरफ मुख कर बैठना चाहिए.

साधक अपने सामने देवी प्रत्यंगिरा का चित्र या यन्त्र स्थापित करता है तो उत्तम है लेकिन यह संभव ना हो तो भी साधक मंत्र का जाप कर सकता है. साधक सर्व प्रथम हाथ में जल ले कर संकल्प करे की मेरे सभी रोग शोक दूर हो इस लिए में यह प्रयोग सम्पन्न कर रहा हू. देवी मुझे आशीष और सहायता प्रदान करे. अगर साधक किसी और व्यक्ति के लिए मंत्र जाप कर रहे हो तो संकल्प में उस व्यक्ति का नाम उच्चारित करे. इसके बाद साधक मानसिक रूप से पूजन सम्पन्न करे तथा मूंगा माला से निम्न मंत्र की २१ माला जाप करे.

ॐ सिंहमुखी सर्व रोग स्तंभय नाशय प्रत्यंगिरा सिद्धिं देहि नम:

मंत्र जाप के बाद साधक देवी को नमस्कार करे और कल्याण करने की प्रार्थना कर सो जाए. साधक को यह क्रम ११ दिनों तक करना चाहिए. साधना समाप्ति पर साधक यन्त्र चित्र आदि को पूजा स्थान में स्थापित कर दे और माला को किसी को देवी मंदिर में दक्षिणा के साथ अर्पित कर दे तो रोग शांत होते है तथा पीड़ा से मुक्ति मिलती है. अगर साधक कोई चिकित्सा ले रहा हो या औषधि ले रहा हो तो यह प्रयोग करते वक्त उसे बंद करने की ज़रूरत नहीं है. साधक अपनी चिकित्सा के साथ ही साथ यह प्रयोग को कर सकता है इसमें किसी भी प्रकार का कोई दोष नहीं है.

Human is great creation of the universe that whatever we understand it remains always less. Modern science reached to very limited parts of the body and in this direction their research keeps on going. Our ancient sages too made their research in this direction and many secrets related to the body were been revealed by them with the help of their ancient systems of the worships.

Human is very complicated structure, this is like a machine which owns many parts and any of the part belonging this yantra if get damage then machine does not work properly. When our body is healthy, our life will remain active with its power of continuity. But when this function gets any obstacle then many troubles comes in the way. These obstacles of the body are called as diseases. Disease creates troubles not only in the outer body but it also affects in the mind functioning and it troubles in day to day functioning of the life. Today, treatment methods only focuses on the outer symptoms and troubles but it is also difficult task to recover the loss and damages made in the mind and on the elements of micro or astral parts or the inner bodies. That is why after taking proper treatment too many diseases

doesn’t vanishes and appears again and again. In tantra field there are so many miraculous processes which may give relief from the diseases and one can live life completely. With such rare processes one may have relief of sufferings of the pain caused by diseases and on the other hand it also recovers the deficiency and the damages caused in the body thus to prevent body to develop the disease again. One of such process is related to Devi Pratyangira. If this process is done with faith and devotion then for sure human being can have complete freedom from the diseases.

This process should be started on Sunday night after 11 PM

Cloths and sitting mat of the sadhak should be Red in color. Sadhak should sit facing north direction. It is better if sadhak establish yantra or picture of devi pratyangira in front of him but if that is not possible one may do mantra chanting without it too. By taking water in the palm sadhak should first do the sankalp that ‘I am doing this prayog to remove all my diseases and troubles. Goddess may please bliss and help me.’ If sadhak is doing this process for someone else then one should speak name of that particular person in the sankalpa for whom the process is being carried out. After this, sadhak should do poojan mentally and with Mungaa Rosary one should chant 21 rounds of the following mantra.

Om SinhMukhi Sarv Rog Stambhay Naashay Pratyangiraa Siddhim Dehi Namah

After mantra chanting is done sadhak should bow to the goddess and should pray for her blessings. Sadhak should do this process for 11 days. When sadhana is completed one should place yantra and picture in the worship place and rosary should be placed in goddess temple with some offerings. This results in relief in the diseases and freedom from the pain caused by the same. If sadhak is taking medication in the sadhana duration then it is not essential to stop it. Sadhak can do this prayoga with regular medication or the treatment. This causes no faults in the sadhana.

******NPRU******

Posted by Nikhil at 11:51 PM 2 comments:

Labels: ROGMUKTI

MONDAY, MAY 21, 2012

AUSHADI SIDDHI PRAYOG

हमारे प्राचीन आचार्यो ने मनुष्यों के लाभार्थ अपने जीवन को समर्पित किया था और विज्ञान के क्षेत्र में कई प्रकार की विशेष शोध कार्य अपने जीवन काल में किये थे. इसके पीछे उनका उद्देश्य था की सर्व मनुष्य सुखी तथा सम्प्पन जीवन जिए और रोग, शोक कष्ट आदि से मुक्ति को प्राप्त करे. चिकित्सा विज्ञान में श्रुशुत आदि महासिद्धो ने अपना योग्यदान जिस प्रकार से दिया है वह अपने आप में अद्‌वितीय है. मनुष्य को रोग से मुक्ति के लिए आयुर्विज्ञान तथा चिकित्सा आज से सेकडो वर्ष पूर्व भी अपने आप में श्रेष्ठ थी, लेकिन काल क्रम में उसका ग्रास हुआ. आज बहुत औषद और जड़ी का नाम मात्र पढने या सुनने को मिल जाता है लेकिन इसके सन्दर्भ में कोई भी विशेष जानकारी नहीं मिल पाती. ज्ञान की अवलेहना का यह परिणाम अत्यधिक गंभीर हुआ और हम रोग ग्रस्त होते गए, शोकमय जीवन बिताने के लिए बाध्य हो गए. इसी चिकित्सा विज्ञानं का एक तंत्र पक्ष भी था जिसे चिकित्सातंत्र कहा गया है, जिसके अंतर्गत रोगी को रोगमुक्ति के लिए चिकित्साविज्ञानं के सिद्धांत तथा तंत्र की दिव्य शक्ति दोनों के समन्वय से प्रयत्न किया जाता था. वस्तुतः यहाँ पर यह समजना ज़रुरी है की व्यक्ति के स्थूल शरीर के साथ अन्य शरीर भी जुड़े हुए होते है तथा यह शरीर मात्र द्रश्य अवयव के अलावा सूक्ष्म अवयव पर भी कार्यशील है, जेसे की मन तथा प्राण. भले ही ये द्रश्य रूप में नहीं है लेकिन शरीर में रोग के समय शरीर के ऐसे सूक्ष्म भागो पर भी क्षति पहोचाती है. उदहारण के लिए रोग के समय में मन पर से नियंत्रण हट जाता है तथा मानसिक स्थिति बदल जाती है. इसका अर्थ है की मन पर भी रोग का अशर हुआ है. जब चिकित्सा ली जाती है तो वह शरीर के स्थूल अंगों पर कार्य करती है लेकिन सूक्ष्म अंगों पर कार्य नहीं हो पता. इस लिए वह क्षति की पूर्ति में बहोत ही अधिक समय लगता है.

तंत्र में चिकित्सा के सबंध में विविध प्रयोग है, जिसके माध्यम से इस प्रकार की क्षति की पूर्ति तीव्र गति से की जा सकती है. अगर औषध में किसी प्रकार से सूक्ष्म ऊर्जा का निर्माण किया जाए तब वह सूक्ष्म उर्जा शरीर के उन भागो तक भी पहोच सकती है जिन भागो तक औषध नहीं पहोच सकता. इस लिए इस

प्रकार की चिकित्सा उत्तम है. अगर कोई चिकित्सक अपने औषधो को मांत्रिक उर्जा से परिपूर्ण करता है और वह सामान्य औषद देता ही तब उन रोगी को जल्द आराम मिलता है जिन्होंने मंत्र उर्जा से परिपूर्ण चिकित्सा ली है.

प्रस्तुत मंत्र अपने आप में स्वयं सिद्ध है. जब भी किसी भी प्रकार का कोई भी औषध लेना हो तब निचे दिए गए मंत्र को १०८ बार औषधि को हाथ में रख कर जाप कर ले. ये जाप मन में भी किया जा सकता है तथा इसमें कोई माला, यन्त्र, दिशा वस्त्र आदिकी ज़रूरत नहीं है. इस प्रकार ये प्रयोग बहोत ही सहज है. इस प्रयोग को अगर रोगी खुद न कर सके तो कोई भी यह प्रयोग कर औषधि को रोगी को दे सकता है, इसके अलावा चिकित्सक भी यह प्रयोग सम्प्पन कर अपने रोगियो को औषधि दे सकता है. निश्चित रूप से औषध की कार्यक्षमता को बढ़ा कर इस प्रकार का मन्त्रउर्जा से पूरित औषध जल्द ही आराम देता है तथा उन अद्रश्य अवयवों की क्षतियो की भी पूर्ति करता है जो की सामन्य औषध नहीं कर सकता है. इस प्रयोग को हर बार औषधि लेते समय करना चाहिए तथा मन्त्र जाप के बाद औषधि लेनी चाहिए.

मन्त्र : **ॐ ह्रीं धन्वंतरि आरोग्य सिद्धिं ह्रीं नमः**

Our ancient sages devoted their whole life for the betterment of the mankind and made many type of the research works in the field of science during their life time. The motto behind their task was that all humans stays happy and live prosperous life and become free from diseases, troubles and pains. In the field of treatment or medical science the way shurushut and other mahasiddha contributed is remarkable. Before centuries also, the science of ayurveda and medical was great for human being to get rid from diseases, but it got affected time while. Today, many medicines and herbs are just known or heard by their names and there is no other special information is available in this regards. Neglecting such divine knowledge resulted in very serious results and we became diseased, we became forced one to live life with sorrow. This Chikitsa science or ancient medical science was also having its tantra branch which used to be called as ChikitsaTantra; under which, efforts used to be done co-operatively with concepts of the medical science and divine power of the tantra to make the patient relief from the disease. Here, we need to understand that many bodies are attached with the main body or Sthool Sharir and this body is active not only with visible parts but with invisible parts also, for example Man (mind) and Praana. Though they are not visible but disease in the body affects those parts too. For example, when one is diseased, control over mind is lost and mental state becomes changed from the normal. This means that affect of the disease has also been seen on mind. When treatment is taken, that works on the visible body parts but repair work on the other parts not become possible. Thus, to overcome that remained deficiency takes long time to recover.

In tantra, there are lots of various rituals related to treatment, with the help of same such deficiency of the treatment could be fulfilled. If with any method creation of the micro energy is made in the medicine that way that micro energy can reach to the body parts where medicine could not reach. This way, this type of treatment is great. If any practitioner make medicine filled with mantra energy and normal medicine is given to another than the patient will get relief more quickly whom medicine filled with mantra energy has been given.

The given mantra is Swayam Siddha. When any kind of medicine is needed to be taken, one should have medicine in hand and then chant following mantra 108 times. This mantra chanting could also be done in mind and there is no specific process are needed like rosary, yantra, direction, cloths etc. this way, the given prayog is very easy. If this prayog could not be done by patient than anyone can do this process on medicine and can give it to the patient. For sure, by increasing healing capacity of the medicine, such medicine filled with mantra power gives better and quick results and also recovers the deficiencies on the invisible parts which could not be done by normal medicines. This prayog should be done every time while taking the medicine and after mantra chanting one should take the medicine.

Mantra : Om Hreem Dhanvantari Aarogya Siddhim Hreem Namah

****NPRU****

Posted by Nikhil at 12:54 AM 2 comments:
Labels: ROGMUKTI

SATURDAY, MAY 5, 2012

रोग निवारण के लिए सरल साधना विधान .

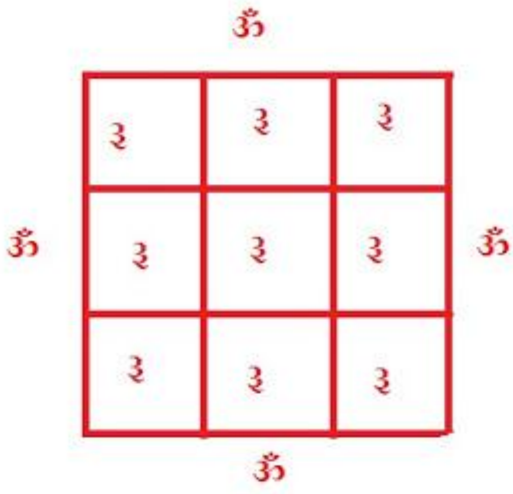

रोग मुक्ति यंत्र

“स्वस्थ’ की परिभाषा हैं जो अपने मे स्थित हो .पर कितने हैं जो अपने मे स्थित हैं . और आधुनिक युग मे जिसे भागादौड़ी करना पड़ रही हो.... अपने जीवन को बचाए रहने के लिए ...हर पल सघर्ष रत रहना पड़ रहा हो वह कहाँ से और कैसे अपने मे स्थित हो जाए .

“जीवेत शरद शतम “ अब सिर्फ सुनने की बात हैं ऋग्वेद मे यह आशीर्वाद कहा हैं पर क्या इसका मतलब किसी भी तरफ से खींच खांच करके विस्तर मे पड़े पड़े १०० वर्ष का जीवन ..पर नही जो स्व स्थ हो और बलशाली हो ऐसा जीवन ..जो उमंग् युक्त हो ..

और जो भले ही ७० का हो गया हो पर उस मे अभी भी जीवन उर्जा हैं वह हैं नौजवान और जो २० वर्ष का हो पर जीवन से हार रहा हो वही हैं वृद्ध .

पर यह बात तो उमंग की हुयी पर जब शरीर ही रोग ग्रस्त हैं तब ...आपकी इच्छा शक्ति भी कमजोर हो जाती हैं क्योंकि कहीं न कहीं इच्छशक्ति का भी लेना देना इसी भौतिक शरीर से तो हैं .
आज की जीवन शैली ने सुख सुविधा तो बढ़ा दी ...पर जीवन का सकूँ भी छीन लिया हैं की अगर और न करें.... इतना श्रम तो ....घर परिवार और अन्य की अपेक्षाओ पर व्यक्ति खरा कैसे उतरा जाएगा , न चाह कर भी व्यक्ति इस जीवनशैली को अपनाये रहने के लिए बाध्य सा हो जाता हैं.
पर परिणाम धीरे धीरे उसके स्वास्थ्य पर दस्तक देने ही लगते हैं .और जब वह इसका उपचार देखता हैं तो आधुनिक चिकित्सा बस तात्कालिक राहत दे सकती हैं.और उसे साइड एफ्फेक्ट तो हैं ही और यह उपचार पद्धिति अत्यधिक महँगी भी तो हैं . पर इस सन्दर्भ मे व्यक्ति जब हारने लगता हैं तब वह एक उसी परम सत्ता को ही देखता हैं पर अब समय तो लगता ही हैं .फिर परिणाम मिले गा या नही भी मिले ..... यह भी तो निश्चय ता से नही कहा जा सकता हैं .

और इस समय साधना क्षेत्र की तरफ व्यक्ति देखता हैं .पर खुद साधना करने से भी बचना चाहता हैं यह मानव का स्वाभाव ही हैं की कोई ओर उसके लिए यह सब कर दे .... पर यदि साधक स्वयं कमर कस ले तो कहीं ज्यादा सफल परिणाम मिल सकते हैं .क्योंकि खुद के लिए कहीं ज्यादा गंभीरता से व्यक्ति प्रयास करेगा .

और व्यक्ति को अपने स्वास्थ्य के प्रति तो ध्यान रखना ही चहिये..यह तो विज्ञानिक दृष्टी से भी आज माना जाने लगा की जो मंत्र जप मे जयादा समय देते हैं उन पर पड़ने वाले काल का प्रभाव भी कम होता जायेगा . सीधा मतलब कहीं ज्यादा समय तक व्यक्ति युवा दिख सकता हैं ...मंत्रो की विशिष्ट शब्द रश्मिया का बहुत सूक्ष्मता से असर होता हैं और मानव जीवन की प्राणों पर सीधा असर होता हैं . स्वतः ही अनेको दोषों से छुटकारा मिलता हैं जो की धीरे धीरे हमें समाप्त करते जाते हैं जैसे क्रोध आदि ..क्योंकि इन मंत्रो के असर से व्यक्ति कहीं ज्यादा शांत और प्रसन्न चित्त रह सकता हैं . और जब शान्त औत प्र सन्न चित्त रहेगा तो स्वत ही शरीर जिन सेल से बना हैं वह कहीं ज्यादा उर्जा युक्त होंगे .

पर यह भी सच हैं की आज व्यक्ति के पास समय हैं ही कहाँ .. तब बड़ी साधनाए वह नही कर सकता हैं . यह तो व्यक्ति का दुर्भाग्य ही कहा जायेगा की आज दिव्य देह प्राप्ति जैसी उच्चतम कोटि की साधना उपलब्ध हैं पर व्यक्ति के पास समय ही नही . हमने अनेको साधनाए छोटी या बड़ी इन सदर्भ मे आपके सामने रखी हैं , उसी श्रंखला मे आज यंत्र विधान युक्त एक सरल पर प्रभावकारी उपाय आपके सामने हैं .

यन्त्र की यह विशिष्ट ता रहती हैं की व्यक्ति यदि सही ढंग से उनका निर्माण कर ले और उसे स्थापित ही बस कर ले तो भी उसका परिणाम धीरे धीरे उसे प्राप्त होता है रहता हैं . अतः इस यंत्र विज्ञानं के इन आयामों को जानने की... सीखने की आवश्यकता अब आन पड़ी हैं पर आज एक सरल सा ..

पीपल के पेड़ तो जीवन प्रदायिनी कहा ही गया हैं ऐसा भी कहा गया हैं की प्रति दिन केबल रविवार को छोड़कर अगर व्यक्ति पीपल के पेड़ के सामने ...या नीचे खड़े होकर यह भावना करे की उसके शरीर मे जीवन दायिनी शक्ति का प्रवाह बढ़ रहा हीं तो स्वतः ही वह अनुभव करेगा की कुछ दिन के अंदर ही वह काफी स्वस्थ सा हो गया हैं. तो पीपल के नयी कोपले ले , ले जिस पर यन्त्रबनाया जा सके .किस भी शुभ दिन की रात मे पूर्ण विधान के साथ सदगुरुदेव का पूजन करे गुरु मंत्र की कम से कम १६ माला जप तो करे ही अपने इस प्रयोग की सफलता के लिए औरइन पीपल के नये

नए पत्ते पर २१ बार यह यंत्र का निर्माण करे स्याही के रूप मे सिंदूर और घी का मिश्रण लेना हैं .और कलम के रूप मे वह अनार की कलम ले सकता हैं .

यंत्रों को धूप दीप दे कर सिद्ध कर ले . मन ही मन प्रार्थना करे की सदगुरुदेव का आशीर्वाद इन यंत्रोमे समाहित रहा हैं , और जब निर्माण कार्य समाप्त हो जाए तब इन सिद्ध किये यंत्रों को जब कोई भी बीमार दिखे या स्वयं बीमारी से ग्रस्त हो तो किसी भी ताबीज मे डाल कर गले मे धारण कर ले , और यह ध्यान रखें की धागा लाल रंग का ही हो . वह स्वयं देखेंगा की उसे काफी अनुकूलता मिलने लगी हैं .अन्य यन्त्र को प्रवाहित कर दे ..एक या दो दिन के अंदर ही यन्त्र को धारण करना हैं .जब कभी फिर से कोई समस्या आये तो फिर से इन यंत्रों का निर्माण करे ..

यह तो सरल प्रयोग हैं यदि समस्या गंभीर हैं तो निश्चय ही हमें बृहद प्रयोगों की ओर भी देखना पड़ेगा क्योंकि रोगों के मूल मे कई प्रकार की चीजे हैं ..कभी तो मात्र खान पान की अशुद्धिया या नियम पूर्वक आहार और उचित आहार न लेना ..कतिपय केस मे नव ग्रहों की अनुकू लता का ना होना , तो कुछ केस मे पितृ दोष के कारण या स्थान दोष के कारण भी ...अतः यदि स्वास्थ्य लाभ न हो रहा हो तो किसी भी योग्य विद्वान से परामर्श लेना हीचाहिए ..यह तथ्य हमेशा ध्यान रखना ही चाहिए .

==

Health means the one who is situated in himself, but how many are there who are situated in themselves. In this modern era, where we have to run after everything ….have to continuously fight every moment to save and sustain our life, how is it possible to be situated in ourselves?
“Jeevet Sharad Shatam” has now become a myth. Rig-Veda has called this as blessing. But does it mean that we should spend our life lying on bed for 100 years. But rather we should be healthy, strong and full of joy……
And the one who is 70 years old but is full of energy is young and the one who is 20 years of age and is losing from the life is old.
This was regarding joy but when body is caught up in diseases than your will power also become weak because somewhere the willpower bears a relationship with physical body.
Though today’s life style has increased the comforts of life, it has taken the peace of mind also. If the person does not work hard, how he could fulfil the expectations of his family and others. Unwillingly the person is compelled to adopt this life-style.
But gradually, it starts having impact on the health. And when he looks for its treatment, then modern treatment gives him only the immediate relief, there are side-effects also and this treatment system is very expensive also. But when in this context, he starts losing then he starts looking towards that almighty god. But it takes time……and results may come or not……..it can’t be said with conviction.
And at this time, he looks towards sadhna field, but he does not want to indulge in sadhna himself. This is the nature of human being that someone else could do for him…….But if sadhak takes it on his own, then he could get much better results because for himself, the person will try much harder.

The person should always give proper attention to his health. Today scientific vision also agrees with the fact that the one who spends more time in chanting mantras, impact of time reduces on them. In other word, person can look younger for a longer time. The special alphabet rays of mantras influences very subtly; they directly influence the praan of human life. We start getting rid of many defects like anger etc. which are finished gradually. It is because of the fact that due to the impact of mantras, person can remain much happier and peaceful and when he will be happier and peaceful then automatically the basic constituent of the body, the cells will be full of energy.

But It is also true that today person do not have ample time……he can't do big sadhnas…..This can be called misfortune of the person that today high-order sadhna like Divya Deh sadhna is available, but he does not have time. We have put forward many sadhnas in this context, in the same series we will be talking about one simple but highly effective Yantra process.

Yantras contains speciality that if person makes it in a right manner and only establish it then also he starts getting the results gradually. Therefore, now the time has come to learn such dimensions of Yantra science. Today the simple one….

Tree of peepal has been called life-giver. It has also been said that if person stands in front of or underneath the peepal tree on every day except Sunday and feels that life-giving power is getting circulated in his body, then he will automatically experience that he has become healthy in quite a few days. Take the new sprouts of peepal tree on which the yantra can be made. Do the complete poojan of Sadgurudev on night of any auspicious day. For getting success in this process, chant at least 16 rosaries of Guru Mantra. Make the yantra 21 times on new leaf of peepal tree. Combination of ghee and sindoor has to be used as ink and one can take the pen of pomegranate.

Siddh the yantra by offering dhoop and deep. Pray mentally that blessings of Sadgurudev is getting incorporated in yantra and when you are done making these yantras then whenever you see any sick person or when you become sick, put this yantra in amulet and wear the amulet in your neck. Keep in mind that only red thread is to be used. That person will himself feel that he has started getting relief. Offer all other yantra in river/pond. You have to wear the yantra in 1-2 days. Whenever you face the problems again, make the yantras again.

This is an easy process. If the problem is serious then definitely we have to look forward to high-order process because in the root of diseases so many things can be there…..sometimes impurities in our food or not taking the food in an orderly way or not taking right food……in few cases nine planets are unfavourable, In some cases pitr dosh (defect due to ancestor) or Sthan dosh (defect due to place). Therefore, if your health is still not improving then one should take advice from capable scholar. This fact has to be kept in mind.

******NPRU******

Posted by Nikhil at 4:27 AM No comments:
Labels: ROGMUKTI

THURSDAY, APRIL 26, 2012

दृष्टी दोष निवारक अद्भुत सरल प्रयोग(Amazing and easy process to get rid of eye related problems)

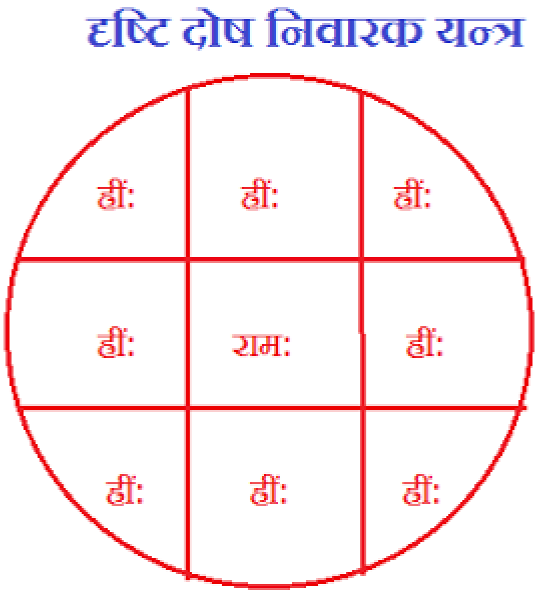

आखें तो जीवन का सौंदर्य हैं इसके बिना सौंदर्य की कल्पना की ही नही की जा सकती हैं.आप किसी भी व्यक्ति को देखें आपकी दृष्टी सबसे पहले उसकी आखों पर ही जाती हैं.. साधना क्षेत्र मे तो अनेको नेत्र दृष्टी की बात आती हैं ...जिसमे दिव्य नेत्र , आत्म नेत्र , आकाश नेत्र , गगन नेत्र , ब्रहम नेत्र , ब्रम्हांड नेत्र की भी बात आती हैं पर भौतिक नेत्रो की आवशयकता और उपयोगिता को कोई भी नकार नही सकता हैं .साधरणतः जब जन्म कुंडली मे सूर्य या चंद्र किसी कारण वश कमजोर होते हैं और दूसरे भाव या बारहवे भाव मे पाप ग्रहों की उपस्थित या दृष्टी के कारण आई न्यूनता के का रण भी नेत्र रोशनी मे कमी आने लगती हैं .

जब अनेको आधुनिक चिकित्सीय उपाय करने के बाद भी यदि नेत्र के रोग या दोष दूर नही हो रहे हो तो अब साधना का उपाय ही शेष रहता हैं. इस नेत्र रोग की निवृति के लिए कुछ उपाय आपके सामने हैं .आधुनिक विज्ञानं की उपलब्धियों को नकारा भी नही जा सकता तो एक तरफ उसका भी सहारा लिया जाना चाहिए साथ ही साथ साधना उपाय पर भी ध्यान देना चाहिए .

1. सुबह उठकर अपने मुंह मे पानी भर ले और ठन्डे पानी से आखों मे छीटे मारनाचाहिए .यह बहुत लाभ दायक पाया गया हैं .
2. गाजर और पालक की भाजी का जूस तो यदि संभव हो तो हर दिन एक एक कप पीना ही चाहिए यह आखों के लिए बहुत लाभ दायक रहा हैं .
3. सुबह उठकर सूर्य भगवान को अर्ध्य भी देने का क्रम बना ले , भले ही इसकी उपयोगिता समझ मे आज ना आये पर आखों कि ज्योति के अधिपति सूर्य , चंद्र हैं अतः सूर्य अर्ध्य से समस्या के समाधान मे बहुत सहायता मिलाती हैं.

4. दैनिक जीवन मे सुर्योपंसना के महत्त्व को समझना चाहिए . सूर्य देव से संबंधित कोई भी मंत्र को अपने जीवन मे महत्त्व अवश्य दें .कम से कम ११ माला मंत्र जप तोकरे ही ..क्योंकि अन्य आवश्यकताए अपनी जगह हैं पर आखों के साथ ....

5. चाक्शुश्मती स्त्रोत के पाठ को तो अनिवार्य रूप से अपने जीवन मे एक भाग बना ही ले . यह बहुत ही लाभ दायक और अनेको से प्रशंशित रहा हैं आसानी से यह स्त्रोत किसी भी धार्मिक दूकान मे मिल जाता हैं .

6. पितृ दोष के कारण भी यह समस्या बन जाती हैं ,तो इस दोष की शांती के लिए साधनात्मक उपाय जो कि कई बार आये हैं उनका उपयोग अवश्य करें .अनेको लोगों को पितृ दोष शांती या श्राद्ध कर्म करने पर स्वत ही कई रोग को दूर होने मे अनुकूलता मिले लगी . इस ओर भी ध्यान रखे यदि आपको चिकित्सीय य्पाय के बाद भी कोई लाभ नही मिल पा रहा हो .

7. कई बार अनेको उपाय करने के बाद भाई सफलता या नेत्र रोग या दोष दूर नही हो रहे होते हैं क्योंकि ग्रह वाधा या ग्रह दोष का बहुत प्रभाव जो कि किसीभी चिकित्सीय उपाय को सफल नही होने देता हैं इस अवस्था मे सूर्य और चंद्र के तांत्रिक मंत्रो का जप खासकर स्वयं करना , बहुत लाभदायक माना गया हैं .इस बात को भी गंभीरता से लेने चाहिए .

8. जब तक बहुत अधिक आवश्यक न हो या चिकित्सक ने न बोला हो हर समय चश्मा नही लगाये रखना चहिये .यहाँ मेरा तातपर्य आखें के व्यायाम से हैं कि यदि आपका चिकित्सक आपको आखों के व्याम करने कि इजाज़त देता हैं तो तो यह व्यायाम को करना ही चहिये .

9. <u>सबसे महत्वपूर्ण विधि ::</u>सदगुरुदेव जी ने १९९४ या १९९५ मे एक लेख "मंत्र तंत्र यन्त्र विज्ञानं "मे जिसका शीर्षक मे आखों से चश्मे उतरना का था वेलेमिक व्यायाम पद्धिति के बारे मे विस्तार से बताया था , उसे भी अपने जीवन मे लाये .यह भी बहित अधिक महत्वपूर्ण पद्धिति रही हैं .

10. अब यंत्र जगत से ......आप दिए हुए यंत्र को बना ले और अपने पूजा स्थान मे रख ले ..धीरे धीरे आपकी नेत्रो का दोष दूर होते जायेगा .यह बहुत सरल हैं पर अनेको विद्वानों का परीक्षित रहा हैं .इस यन्त्र को अष्ट गंध से कागज पर बना ले और अपने पूजा स्थान पर रख ले .. .

पर हमें ध्यान देना हैं कि यह बहुत अधिक महत्वपूर्ण हैं कि हम यन्त्र जगत के उपाय के साथ जो जूस और अन्य बाते लेख मे हैं उस पर भी ध्यान रखा जाए तो निश्चय ही नेत्र रोग दूर करने मे सफलता मिलेगी ..अगर आप चाहे तो ब्लॉग या तंत्र कौमुदी पत्रिका मे दिए किसी भी मनो कामना या मनो बांछित कार्य समपन्न करने वाले प्रयोग को कर के भी लाभ उठा सकते हैं .

==

Eyes are the beauty of life. Without them, beauty can never be even imagined of. When you see any person, first thing that you see is his/her eyes only. In sadhna field we talk of so many eye visions like Divya Netra (Eyes) ,Aatm Netra, Aakash Netra, Gagan Netra, Brahm Netra, Brahmand Netra but we can't ignore the need and importance of physical eyes. <u>Generally when sun and moon, by any reason are weak in horoscope and when malefic planets are present or aspecting second or twelfth house, then there can be deterioration of vision in eyes.</u>

When in spite of doing modern medical treatments, we are not able to get rid of eye related problems, then only the way of sadhna is left. Here are certain ways to get rid of eye related problems. We can't ignore the importance of modern science so on one hand we should take assistance of it also. Side by side we should also concentrate on the sadhna way.

1) After getting up in the morning, fill your mouth with water and sprinkle cold water on your eyes. This has been found quite beneficial.
2) If possible, drink one cup of juice, made by pulp of carrot and spinach. This is very beneficial for your eyes.
3) Develop the habit of offering water to the sun (called arghya in Hindi).May be today we can't understand its importance but the fact is sun and moon are the supreme deity of vision. Therefore offering water to sun helps a lot in solution to this problem.
4) We should understand the importance of sun-worship in our daily life. Always give importance to mantra related to sun god in your life.Atleast chant 11 rosary of the mantra…..because every need is important but with eyes…….
5) Make the reading of Chakshushmati Stotra as a necessary part of your life. This has been highly beneficial and highly acclaimed too. One can get this easily from any religious bookstore.
6) This problem can also be due to Pitra dosh (problem due to ancestor), so try the sadhna solution for pacifying it, which has come earlier multiple times. Many people have got relief automatically from various diseases after doing Pitra dosh or Shradhkarma (karmas done to pacify the problems due to ancestor)……….Also keep this in mind when you are not getting any relief from medicines.
7) Sometimes, even after doing so many remedies we are not able to get rid of eye related problems and diseases .This is due to the high influence of Grah Badha (Planetary problem) which does not allow any medicinal remedy to be successful. In such a condition chanting tantric mantra related to sun and moon by person himself is considered to be very beneficial. One should take this point seriously.
8) Till the time it is not very-2 necessary or your doctor has not told you, you should not always wear spectacles. Here what I mean is exercise of eyes. If your doctor allows any exercise of eyes, then one should do that exercise.
9) Most Important Process: Sadgurudevji has given one article in 1994 or 1995 in "Mantra Tantra Yantra "by the title "Hoe to get rid of spectacles from eyes". In that, he told in detail about the Velemic exercise process. Bring it in your life. This has also been a very important system.
10) Now from yantra world……..Make the yantra given above and keep in in your worship room. Gradually your eye problem will start vanishing. This is very easy but has been tested by many scholars. Make the yantra by asthgandh on piece of paper and keep it in worship room.

But we have to keep one thing in mind that this is very important that along with the solution given from yantra world, we should also focus upon the juice and other things given in the aricle.Definitely, it will help in getting rid of eye problems. If you want, you can also take benefit from any wish fulfilling process given in blog or Tantra Kaumadi magazine.

******NPRU******

Posted by Nikhil at 12:31 AM 2 comments:
Labels: LAGHU PRAYOG, ROGMUKTI

WEDNESDAY, NOVEMBER 16, 2011

A simple but effective prayog for having mental peace

उतार चढाव तो मानो जीवन का एक हिस्सा हैं , और जो इस बात को समझ लेता हैं वह कुछ हद तक जीवन की गति को भी समझने लगता हैं वह अब बात बात में दुखी नहीं होता वह पुरे जीवन को एक सम भाव दृष्टी से ही देखने लगता हैं .. और यही तो रहस्य हैं सम भाव में जीने का , वह जो न दुःख में दुखी होता और न जो सुख में सुखी होता हैं वही तो हे अर्जुन मेरा प्रिय हैं,, ऐसा भगवान् श्री कृष्ण ने कहा था ,,, सदगुरुदेव जी कहते हैं इसका यह मतलब नहीं लिया जाए की व्यक्ति निठल्ला ही बैठ जाये यह भी तो ध्यान में रखो की जिस महा योगी परम पुरुष ने यह बात कहीं थी वे जीवन में कितने कर्म शील थे उन्होंने कब जीवन से समझौता का मार्ग हमेशा बताया , हाँ वे शांति के पक्ष धर थे पर एक सीमा तक ही ....उन्होंने यह भी तो कहा था की ऐसा क्या नहीं हैं जो मुझे प्राप्त नहीं हैं पर फिर भी मैं कर्म रत हूँ क्योंकि जैसा उच्च व्यक्ति करते हैं उसी को दृष्टी गत करके अन्य लोग अपना जीवन निर्धारित करते हैं..

पर यह भी सच हैं की जीवन के इस बार बार उतार चढाव से व्यक्ति कभी कभी परेशां हो कर यह भी सोचने लगता हैं की कुछ पल के लिए तो इस उतार चढाव से हट कर शांति का अहसास तो हो ,, और तब तंत्र की षट कर्म विधा में से एक "शांति कर्म"का स्थान आता हैं .

हमें इस बात को नहीं भूलना नहीं चाहिए की तंत्र के " ष ट कर्मो " में "शांति कर्म" का भी अपना स्थान हैं जिस पर साधक ध्यान नहीं देते , आप ही बताये किसी भी साधना करने के लिए एक निश्चित वातावरण मतलब

अनुकूलता की तो जरुरत होती हैं ही और यह न हो तो कम स एकं जब तक मंत्र जप किया जा रहा हो तब तक तो...

सदगुरुदेव जी ने एक मंत्र बहुत पहले पत्रिका में दिया था ,व्यक्ति के क्रोध को शांत करने का उसी से मिलता जुलता यह प्रयोग आपके जीवन में आराम के पल लायेगा,

बार बार यह भी कहा जा चूका हैं और सारे तंत्र्य इस बात पर एक मत हैं कि पीपल के पेड़ में ऐसा कुछ विशेष हैं जो व्यक्ति की अनेको समस्याए बहुत आसानी से दूर कर सकता है , जैसे की गंभीर रोगों से युक्त व्यक्ति पीपल के पेड़ पकड़ कर खड़ा हो जाये और महसूस करे की पीपल की जीवन प्रदायनी शक्ति उसके अन्दर प्रविष्ठ हो रही हैं तो पायेगा वह की उसकी जीवन शक्ति बढती जा रही हैं और उसके गंभीर रोग में सुधार होना चालू भी होगया क्योंकि यह पेड़ अपने आप में परं उर्जा का विशाल भण्डार हैं.....

तो इस प्रयोग में आपको सांय काल पीपल के पेड़ में मीठा पानी अर्पित करना हैं और यदि कुछ अगरबत्ती आदि भी वहां लगा दे तो अच्छा होगा मन्त्र-

ॐ नमः शान्ते प्रशान्ते ॐ ह्रीं ह्रां सर्व क्रोध प्रशमनी स्वाहा |

आप प्रति दिन १०८ बार उच्चारण कर सकते हैं , और जो भी लडाई झगड़ा आपके परिवार में यदि चल रहा हैं तो वह भी दूर होगा और अब आप आराम से अपनी साधना या उच्च जीवन के बारे में निर्णय ले सकते हैं , क्योंकि यदि हमारा आवास स्थान में ही लडाई झगड़ा और तनाव बना रहेगा तो यह कैसे संभव हैं की व्यक्ति आगे कुछ उच्च सोच सके , भले ही यह प्रयोग बहुत सरल हैं पर यह भी ध्यान देना चाहिए की यह जरुरी नहीं हैं की सरल प्रयोग हैं तो देर से अ सर देगा .... जीवन में सभी चीज का एक अर्थ तो हैं ही ...

****

Ups and down makes the rhythm of life, and one , who understand this philosophy he is able to understand the way of life a little, now he is not in sorrow in small misfortunate nor he felt extremely happy , when he encounter something very positive. And he , now takes life in even mindness condition. Bhagvaan shri krishn advocated this things. Sadgurudev ji says that this does not mean that person became total idle , one should see , who is saying the word , and how was the life of Bhagvaan shri krishn ,,that is full

of extremely working , busy in positive work. And bhagvaan shri krishn said that , I have everything , I do not need anything but still I do work , since as the higher level person do , other person in society will work accordingly.

But this is also true sometimes person is , because of the rhythm of thses ups and down felt very sad and want some moment of peace . and this is the place where one of the karm of famous tantra’s shat karm comes in to picture.

One should not forgot that this “shanti karm “ has its own place in tantra shat karm. On that in general sadhak often does not pay much attention. Think about a minit without having peace in your life , how you can proceed on the path or proceed on the sadhana field. At least one should have mental peace when he is doing the mantra jap.

Sadgurudev ji has given one , such a mantra to control person’s anger, and very similar to that mantra here in this sadhana ..mentioned.

This has been told many times ,that there is some very vital force reside in pipal tree , and this has been accepted by all the tantragy too. And if any person suffering from severe illness and if stand very close to this tree and try to encircled this tree with his both hand and feel that the great energy forces coming in his body so instantly, he will receive that too. Since this tree is full of great life energy forces.

So you have to offer some sweet water to this tree in evening time and do poojan with agarbaati ,

Mantra :

Om namah shante prashante om hreem hraam sarv krodh prashamni swaha ||

Now you can chant every day 108 times this mantra than whatever the friction arises in your family life means between your family member , that will be reduces to much level and you will feel much relax. Do not think that since this is very easy prayog so may be its result will be very late .. each and every prayog ha s its own value.

DAINIK JEEVAN ME POORN AATM SURAKSHA HETU - POORN PHETKARINI APARAJITA PRAYOG

LEAVES ARE ALL DEAD ON THE GROUND,
TRY TO KEEP THOSE THAT THE OAK IS KEEPING…..

I found above lines of **Robert Frost** very inspirational…..It may happen that you may read it and think that what is so special in it???....But my dear brothers and sisters, if you try to understand these lines, you will find that essence of life is contained within them…..Literal meaning of it is-

"The time which has been passed has already passed, but those moments which are in our hands is life. Live these moments because there is nothing immortal in life……everything is susceptible to change in which change is the only unchanging reality. But contrary to it, time is like flowing river which flows without any limits….no drop of water, once passed, will return back to you……..past is like arrow which have already been fired and future is like arrows kept in quiver….Only Present is one such arrow which we can utilize and those who possess the capability to hit the target, can truly attain the bliss…."

Aren't these lines amazing and today's article is connected to it because every one of us has seen both good and bad aspects of life. But the problems which we have faced due to lack of alertness, at least we can be saved from them by doing this procedure…..Isn't it!!

You all will agree with this fact is that life changes every moment. But it is not necessary that every change happens for good. For example, let us consider our daily life……we have become so much materialistic that we don't even know that in which direction river of our life is flowing……It is true that life is like flowing river, life and death are two banks of it and both the banks are stable at their own ends. But due to lack of alertness and knowingly, changing one bank with the other cannot be called an intelligent thing….

So many girls commit suicide everyday either due to rape or eve-teasing. Unfortunately, if they do not do it, our society deprives them their right of living

peacefully in society. So many innocent girls go to school but do not return back to home. Small kids go outside their home for playing but do not return back……Today, we are living in such society where not only ladies and small kids are insecure but males also are insecure…They will go from home to office but what will happen in midway, no one can say….Common man gets unsettled by such incidents but he does not make any concrete efforts to counter them…

१) But it is point worth pondering over that why such alarming incidents happen in civilized society???

२) Are we providing appropriate security to wife, daughters and kids of our family???

३)Are we capable of doing self-defence ourselves that we can secure our family and society???

….there can be so many questions like this but simple answer of each question is none but a big NO. Reason for it is our low willpower which not only encourages such vicious persons but also provides conducive environment for them to flourish… But Tantra says that there is no such problem whose solution cannot be obtained… I know that this article is focused on society rather than Tantra but its solution is somewhere contained in Tantra since Tantra is one such precise weapon which will react in accordance with direction in which it has been used…Therefore today we will know about tantric procedure of self-defence told by Sadgurudev… This procedure can be done by any family member, even a child can do it because this procedure will work only for the one by whose name, and resolution has been taken. And upon doing this procedure, whenever you go outside your home, just read this mantra 51 or 108 times. This will ensure your security in every circumstance till the time you reach home safely….

Procedure-

On midnight of any Tuesday, wear red dress and sit on red aasan facing south direction. Perform Guru Poojan, Ganpati and Bhairav poojan and make Maithun chakra on ground in front of you and establish supaari in its middle at place where Bindu is located. Ignite one mustard oil lamp on right hand side of Maithun chakra i.e. on your left side and offer turmeric mixed sindoor on supaari. And after it, chant 51 rounds of below mantra by rudraksh, Moonga or Black agate rosary. This is **Poorn Aparaajita Phetkaarini Mantra** which**attacks and provides security at one and same time**. In Tantra, Phetkaarini sadhna has got its own importance and **Mayank** used to tell me that he has heard a lot of appreciation of this mantra from Sadgurudev and **Sadgurudev** in every shivir from1995 to 1998 used to tell sadhaks to do this mantra daily for 5 minutes. It is highly intense mantra in itself.

Mantra-

HLEEM PHOOM HLEEM

After completion of chanting, pray to Sadgurudev and mother Phetkaarini for success and offer mantra Jap to her. Offer one Aachmani of water beneath the aasanand on the next day, wash the Maithun Chakra with clean water and ignite Guggal dhoop there. Keep supaari at any uninhabited place and offer dakshina and sweets to any small girl. In future, daily chanting of this mantra for 5 minutes provides security to sadhak.

LEAVES ARE ALL DEAD ON THE GROUND,
TRY TO KEEP THOSE THAT THE OAK IS KEEPING.....

Robert frost की ये पंक्तियाँ हमेशा से मुझे बहुत प्रेरणादायक लगती हैं.....हो सकता है आप इन्हें पढ़ें और सोचें की इनमें ऐसा विशेष क्या है???....मगर मेरे प्रिय भाइयों और बहनों इन पंक्तियों को समझोगे तो पता चलेगा की इनमें जीवन का सार निहित है......इनका शाब्दिक अर्थ है-

" जो समय बीत गया उसका अर्थ है वो काल की बलि चढ़ चुका है, मगर अभी के जो पल तुम्हारे हाथ में हैं वो जीवन है, इसी को जी लो क्योंकि जीवन में कुछ भी शास्वत नहीं है....सब कुछ परिवर्तन के अधीन है जिसमें केवल और केवल परिवर्तन ही अपरिवर्तनीय है पर इसके विपरीत समय निर्विघ्न प्रवाहित होने वाली जीवंत नदी के समान है.....पानी की एक बूंद भी लौटकर किसी के पास वापिस नहीं आएगी.....भूत निशाना साधे बाण के समान है और भविष्य तरकश में रखे बाण के समान ....केवल वर्तमान ही एक ऐसा बाण है जिसे हम उपयोग में ला सकते हैं और इस बाण से जो लक्ष्य साधने की क्षमता रखते हैं, वो ही आनंद को प्राप्त कर सकते हैं......"

हैं ना कमाल की पंक्तियाँ और आज के हमारे इस लेख से भी इनका बहुत लेना देना है क्योंकि हममें से हर किसी ने जीवन के हर अच्छे बुरे पहलु को देखा है पर जो तकलीफें हमने सतर्कता की कमी के कारण झेली हैं इस प्रयोग को करके हम कम से कम उन दिक्कतों से तो बच सकते हैं.....हैं ना !!

इस बात से तो आप सब सहमत होंगें की जीवन पल प्रति पल बदलता है पर ये जरूरी नहीं होता ही हर बदलाव अच्छाई के लिए हो, जैसे हम आज कल की अपनी दिनचर्या को ही लेते हैं.....हम सब इतने भौतिकवादी हो चुके हैं की जीवन की नदी किस ओर बह रही है इसका ज्ञान ही नहीं....

.....यह बिलकुल सत्य कथन है की जीवन एक बहती नदी है, जिसके जीवन और मृत्यु दो किनारे हैं और दोनों किनारे अपनी-अपनी जगह पर स्थिर हैं पर सतर्कता की कमी के कारण जानते बुझते एक किनारे को दुसरे किनारे के साथ बदल देना तो कोई समझदारी नहीं.....

कितनी लडकियाँ प्रतिदिन बलात्कार या फिर उनके साथ हुई घटिया छेड़छाड़ के कारण आत्म हत्या कर लेती हैं और यदि दुर्भाग्यवश कोई ऐसा ना करे तो हमारा समाज उससे सुख चैन से जीने का अधिकार छीन लेता है, कितनी मासूम छोटी-छोटी बच्चियां घर से स्कूल तो जाती हैं मगर वापिस नहीं आती, छोटे बच्चे खेलने के लिए घर से बहार निकलते हैं मगर लौट कर नहीं आते....हम आज ऐसे समाज में जी रहे हैं जहाँ स्त्री या छोटे बच्चे तो दूर की बात रही पुरुष तक सुरक्षित नहीं हैं......घर से ओफिस के लिए निकलेंगे तो रास्ते में कब क्या घटित हो जाए कोई नहीं कह सकता....

आम आदमी को ऐसी घटनाएँ विचलित तो करती हैं पर वो उनके विरुद्ध कोई ठोस कदम नहीं उठाता....

१)पर यहाँ सोचने वाली बात ये है की ऐसी त्रासदियाँ सभ्य समाज में क्यों घटित होती हैं???

२)क्या हम अपने घर की बहु बेटियों और बच्चो को उचित सुरक्षा प्रदान कर रहे हैं???

३) क्या हम खुद अपनी आत्म रक्षा करने में इतने सक्षम हैं की हम अपने परिवार और फिर समाज को सुरक्षित कर सकें???

......कितने ही जटिल सवाल किन्तु हर सवाल का एक साधारण जवाब “ नहीं ....a big NO “ कारण हमारी आत्म कमज़ोरी जो भुत, पिशाच और चोरों के समान ऐसे दुष्ट लोगों को ना केवल पनपाती है बल्कि उन्हें हृष्ट-पुष्ट होने के लिए एक उचित वातावरण भी प्रदान करती है.....पर तंत्र कहता है ऐसी कोई समस्या नहीं है जिसका समाधान ना हो......

मैं जानती हूँ ये लेख तंत्र पर केन्द्रित ना होकर समाज पर है पर इसका समाधान कहीं ना कहीं तंत्र में ही निहित है क्योंकि तंत्र एक ऐसे अचूक हथियार के समान है जिसका जिस दिशा में उपयोग किया जाएगा बिलकुल प्रतिक्रिया के रूप में ये वैसे ही कार्य

करेगा.....इसीलिए हम आज ये जानेंगे की सदगुरुदेव ने कैसे तंत्र से आत्म रक्षा करने का विधान समझाया है......

इस प्रयोग को आपके घर का कोई भी सदस्य कर सकता है, यहाँ तक की बच्चे भी क्योंकि यह विधान उसी के लिए कार्य करेगा जिसके नाम का संकल्प लेकर इसको किया जाएगा और एक बार इसे करने के बाद आप जब भी घर से बाहर जाएँ इस मन्त्र को मात्र ५१ या १०८ बार पढ़ लें जिसके आप घर से बाहर जाने तक से अपने घर सकुशल लौटने तक पूरी तरह हर परिस्थिति से सुरक्षित रहेंगे.....

प्रयोग विधि -

किसी भी मंगलवार की मध्य रात्री को लाल वस्त्र धारण कर लाल आसन पर बैठ जाएँ और मुहं दक्षिण की ओर हो. पूर्ण गुरु पूजन,गणपति व भैरव पूजन संपन्न कर सामने भूमि पर एक मैथुन चक्र का निर्माण कर उसके मध्य में जहाँ बिंदु होता है वहाँ एक सुपारी स्थापित कर लें और उस मैथुन चक्र के दाहिने अर्थात आपके बायीं तरफ एक सरसों तेल का दीपक प्रज्वलित कर लें और सुपारी पर हल्दी मिश्रित सिन्दूर अर्पित कर दें.और इसके बाद रुद्राक्ष,मूंगा या काली हकीक माला से निम्न मंत्र की ५१ माला जप कर लें ये **पूर्ण अपराजिता फेत्कारिणी मंत्र** है जो**आक्रमण और सुरक्षा एक साथ करता है**.तंत्र में फेत्कारिणी साधना का अपना महत्त्व है और मुझे **मयंक** बताते थे की उन्होंने सदगुरुदेव से इस मंत्र की बहुत प्रसंशा सुनी है और **सदगुरुदेव** लगभग हर शिविर में १९९५ से ९८ तक इसे साधकों को ५ मिनट नित्य करने को कहते रहे हैं. ये अपने आप में अत्यधिक तीक्ष्ण मंत्र है.

मंत्र -

ह्लीं फूं ह्लीं

HLEEM PHOOM HLEEM

जप समाप्ति के पश्चात आप सदगुरुदेव और माँ फेत्कारिणी से पूर्ण सफलता की प्रार्थना कर जप समर्पित कर दें और आसन के नीचे एक आचमनी जल अर्पित कर उठ जाएँ और दुसरे दिन उस मैथुन चक्र को साफ़ पानी से साफ़ कर वहाँ थोड़ी सी गुग्गुल धुप

प्रज्वलित कर दें.और सुपारी को किसी निर्जन स्थान पर अर्पित कर दें और किसी कन्या को दक्षिणा और मिष्ठान की भेट दे दें. भविष्य में भी नित्य प्रति के जीवन में ५ मिनट इस मंत्र का जप करना अनुकूलता देता है.

*****ROZY MAYANK NIKHIL*****

तंत्र और प्रेत सिद्धि (TANTRA AUR PRET SIDDHI)

Field of tantra is full of limitless possibilities ……There is nothing within it which we can ignore by saying it as impossible. Vidhaans one superior to other, unfailing prayogs and unbelievable secrets!!!!! One name came in this series of secrets i.e. of Pret Siddhi……First of all we have to understand what are these prets……Physical body is the most dear and important carrier of soul. That's why soul likes to remain as much as possible in this body and due to this only; yogis have given importance to physical body for purpose of sadhna. But this body has got its own limits and decorum. And when following this decorum, physical body reaches its last stage then soul is compelled to leave it which we term as death. After leaving physical body, soul in order to fulfil unfulfilled wishes, before acquiring subtle body creates one such body which we call as Vaasna Shareer(Body) or

Pret Shareer. Actually, it is one such body which is created completely by Jeev Aatma on its own.Therfore its siddhi rather than being troublesome is favourable to sadhak accomplishing it since once such prets come under your control, they can do your work within moment.

Well it is different subject!!!!!Let's concentrate on the subject again....Teaching on Mudra subject, Master once told me that to get riddance from life-death cycle , our sages and saints have given the description of 64 Yog aasan and 64 Mudras in various scriptures. Every aasan and its related Mudra has got its own special significance because their combination gives birth to special energy through which these prets ,present in ether, gains power to accomplish your works.

If seen from Tantric point of view, nature is the mixed form of three qualities Sat, Raj and Tam. But whereas these three Guna (qualities) are present in nature in mixed form, they have their own independent existence in universe too. Entire living world is divided into Bhu Mandal, Chandra Mandal and Surya Mandal and these three Mandals sequentially are rulers of Tamsik, Satvik and Raajsik qualities.

On left hand side of Bhu Mandal to Chandra Mandal, there is primacy of Tam Guna and on the right side; there is primacy of Raj Guna. In middle, where these two limits meet, we know it by name of Shunya Maarg which is used by Mahasiddh yogi and

sanyasis for going from one place to other. Tamsik souls reside in Tama Guna situated on left side of Chandra Mandal which we know in materialistic world by names of Pret, Betaal and Pisaach.

There is one path parallel to Shunya maarg which is calledDaamrottam Maha Path and this path is used by pret yonis for coming on this Bhu Lok (earth).And due to close proximity between these two paths, it is told that whenever you want to go by subtle body, then arrangement should be made in such a way that nobody wake you up in this duration because once deviated from path, then return is impossible. There is one path emerging from Tam Guna path of Prets which is called Maha Divyoodh Maarg because through this Maarg, Yaksha-Yakshini and Gandharv full of Raj qualities come of earth……..this Mahadaamri path and Maha Divyoodh path meet in the centre of Bhu Mandal. Therefore, sometimes it happens that instead of soul whose aavahan is done, some other soul comes because Daamri path is full of transmigration of these souls.

These are some basic facts related to Pret siddhi whose knowledge every sadhak should possess who wants to accomplish prets because it is one such yoni , ignorance about which can make you their servant rather than being their servant. But if these are accomplished successfully for once then in invisible form, they remain with you and not only they do desired work but invisible

provides you security and they do not manifest themselves unless their aavahan is done by their master. Once I get permission, I will give its related prayog and sadhna through which sadhna is accomplished definitely.

Up till then

Nikhil Pranaam

==

तंत्र का क्षेत्र असीम सम्भावनाओं से भरा पड़ा है....इसमें ऐसा कुछ नहीं है जिसे असंभव कह कर नजरअंदाज किया जा सके. एक से बढकर एक विधान, अचूक प्रयोग और अविश्वसनीय रहस्य!!!!! ऐसे ही रहस्यों की श्रंखला में एक नाम आता है प्रेत सिद्धिका.....

सबसे पहले हमें यह समझना होगा की यह प्रेत होते क्या है....स्थूल शरीर आत्मा का सबसे प्रिय और महत्वपूर्ण वाहक है इसीलिए आत्मा अधिक से अधिक अवधि के लिए इसी शरीर में रहना पसंद करती है और इसीलिए योगियों ने भी साधना के लिए स्थूल शरीर को ही महत्व दिया पर इस देह की अपनी एक सीमा और मर्यादा है और इसी मर्यादा का पालन करते हुए भौतिक देह जब अपनी अंतिम सीमा तक पहुंच जाती है तो आत्मा को विवश होकर इसका परित्याग करना पड़ता है जिसे हम मृत्यु कहते है. स्थूल देह को त्यागने के पश्चात अपनी अतृप्त वासनाओं को पूरा करने के लिए आत्मा सूक्ष्म शरीर धारण करने से पहले एक ऐसे शरीर का निर्माण करती है जिसे हम वासना शरीर या प्रेत शरीर कहते है. वास्तिवकता तो यह है की यह एक ऐसा शरीर है जिसका निर्माण स्वतंत्र रूप से पूर्णतः जीवात्मा ही करती है इसिलए इसकी सिद्धि कष्टदायक ना होकर इसको सिद्ध करने वाले साधक के अनुकूल होती है क्योंकि ऐसे प्रेत यदि आपके वश में आ जाये तो यह आपका हर काम क्षण भर में कर देते हैं.

खैर यह एक दूसरा विषय है!!!!! विषय पर पुनः ध्यान केंद्रित करते हुए......मुद्राओं के विषय में समझाते हुए मास्टर ने एक बार बताया था की जन्म मरण से मुक्त होने के लिए हमारे ऋषि मुनियों ने ८४ योगासन और ८४ ही मुद्राओं का अलग-अलग ग्रंथों में विवरण दिया है. हर आसन और उससे सम्बंधित मुद्रा का अपना एक विशेष महत्व है क्योंकि इनके संयोजन से एक विशेष उर्जा का जन्म होता है जिससे ईथर में उपस्थित यह प्रेत आपके कार्यों को पूरा करने के लिए शक्ति ग्रहण करते हैं.

तांत्रिक द्रष्टि से देखा जाए तो सत्व, रज, तम इन तीन गुणों का मिश्रित रूप ही प्रकृति है पर यह तीनों गुण इस प्रकृति में जहाँ मिश्रित रूप से व्याप्त हैं वहां इसी ब्रह्मांड में इनकी अपनी अपनी स्वतंत्र सत्ता भी है. सम्पूर्ण जीवित जगत भूमंडल, चन्द्रमण्डल और सूर्यमंडल इन तीनों मंडलों में बंटा हुआ है और यह तीनों मंडल क्रम अनुसार तामसिक, सात्विक और राजसिक गुणों के अधिष्ठाता है.

भूमंडल से चन्द्रमंडल के बायीं ओर तमोगुण तथा दायीं ओर रजोगुण की प्रधानता है. मध्य में जहाँ इन दोनों की सीमाएं मिलती है उसे हम शुन्य मार्ग के नाम से जानते हैं जिसका उपयोग महासिद्ध योगी सन्यासी एक स्थान से दूसरे स्थान पर आने जाने के लिए करते हैं. चंद्रमंडल के बायीं ओर स्थित तमोगुण में तामसिक आत्माएं निवास करती हैं जिन्हें भौतिक जगत में हम प्रेत, बेताल, पिशाच इत्यादि नामों से जानते हैं.

इसी शून्य मार्ग के समांतर एक ओर पथ है जिसे डामरोत्तम महा पथ कहते है ओर इसी पथ का उपयोग यह प्रेत योनियां भूलोक पर आने के लिए करती है ओर इन दोनों पथों के इतने पास होने की वजह से ही हमेशा समझाया जाता है की जब भी अपने सूक्ष्म शरीर से कहीं जाना हो तो ऐसी व्यवस्था करके जाओ की कोई आपको उस अवधि में उठाये नहीं क्योकिं एक बार पथ भटक गए तो वापसी संभव नहीं होती. प्रेतों के तमोगुण मार्ग से एक ओर मार्ग निकलता है जिसे महादिव्यौध मार्ग कहते हैं क्योंकि इसी मार्ग के रास्ते राजसी गुण सम्पन्न यक्ष-यक्षिणी, गन्धर्व पृथ्वी लोक पर आते है....इस महाडामरी पथ और महादिव्यौध पथ का संगम भूमंडल के केन्द्र में होता है इसीलिए कभी कभी ऐसा होता है की जिस आत्मा का आवाहन किया जाए उसकी जगह कोई और आत्मा आ जाती है क्योंकि डामरी पथ इन आत्माओं के आवागमन से भरा रहता है.

प्रेत सिद्धि से सम्बंधित यह कुछ मूल तथ्य हैं जिनका ज्ञान हर उस साधक को होना चाहिए जो प्रेत को सिद्ध करना चाहता है क्योंकि यह एक ऐसी योनी हैं जिससे संबंधित अज्ञान उसको आपका नहीं अपितु आपको उसका दास बना सकती है पर यदि एक बार सफलतापूर्वक इसे साध लिया तो यह अप्रत्क्ष रूप से सदा आपके साथ रहते है और ना सिर्फ आपके मनोवांछित काम करते है बल्कि अदृष रूप से हमेशा आपकी रक्षा भी करते हैं और तब तक सामने नहीं आते जब तक इनके स्वामी द्वारा इनका आवाहन ना किया जाये.
अनुमति मिलने पर इससे सम्बंधित प्रयोग और साधना भी दूंगी जिससे प्रेत सिद्ध होता ही है.
तब तक के लिए......
निखिल प्रणाम

****ROZY NIKHIL****

****NPRU****

Posted by Nikhil at 1:00 AM 2 comments:
Labels: bhoot-pret, RAHASYA, TANTRA SIDDHI

SATURDAY, FEBRUARY 12, 2011

Paramhansa Swami Trijta Aghori ji

(सदगुरुदेव जी से जुड़े उनके कुछ जाने - अनजाने प्रसंग)

पथपर आगे बड़ते हुए सदगुरुदेव जी ने पीछे मुड कर देखा तो वे अश्रुपूरित नेत्रों से उन्हें अभी भी वही पर खड़े हुए एकटक देख रहे थे,अभी कुछ देर पहले ही अपने जीवन की सर्वोपरि ,अलभ्य बस्तु रति राज गुटिका सदगुरुदेव जी को देते हुए बे कह रहे थे की नारायण आप ने मुझ जैसे चट्टान ह्रदय को भी ममता सिखा ही दी , अब मेरा भी कोई भाई हैं इस जगत में , .

सदगुरुदेव जी के नेत्रों में भी उन्हें याद करते हुए अश्रु छलक उठे की सही अर्थो में वह मेरे अग्रज कि तरह उसने

मेरा पथ प्रदर्शक बना इस तंत्र क्षेत्र में , लगातार २५ दिनों तक वे सदगुरुदेव जी को निद्रा स्तंभन करके ,यक्षि णी साधना , पूर्ण काया कल्प साधना ,ब्रम्हांड निर्माण तक साधना , यक्षिणी चेटक, ब्रम्हांड चेटक , रूप परिवर्तन चेटक जैसे उच्च कोटि के अनगिनत दुर्लभ साधनाए , अद्रश्य गमन साधना ,प्रेत साधना से लेकर, वार्ताली स्तभ्न साधना ,घोर शमशान साधना से लेकर अघोर पथ की दुर्लभ आगे साधना भी उन्हें लगातार सिखा रहे हैं , और आज अब सदगुरुदेव की आगे जाने की वेला आई तो उसी समय एक बकरे को एक हाँथ से उठा कर सैकड़ो फीट उछल दिया , फिर उसी अज की गर्दन एक झटके से तोड़ कर उसका पूरा खून पी रहे हैं,

सदगुरुदेव व्यथित हो कर बोल उठे , इतनी निर्दयता क्यों... क्या बिगाड़ा था उसने .

वे मुस्कुरा के बोले , बोल नारायण कहे तो इसे अभी जिन्दा कर दूं,

कैसे ये संभव हैं ..

क्यों नहीं महाकाल रौद्र भैरव के लिए क्या असंभव हैं ..

वे आसनस्थ होकर मत्रजाप में लग गए , मात्र कुछ ही क्षणों में पूर्ण तयः मृत प्राय बकरा जीवित हो कर चल पड़ा ,

ये कैसे संभव हुआ

शुक्रो पासित मृत संजीवनी विद्या से ,
तो मुझे अभी तक सिखाया क्यों नहीं .
सारे गुर बिल्ली से सिखने के बाद शेर ने बिल्ली पर ही हमला कर दिया , बिल्ली पेड़ पर चढ़ गयी , शेर ने कहा की ये तो मुझे नहीं सिखाया था , बिल्ली ने कहा यही सीखा देती तो आज जान कैसे बच पाती इसलिए तो ये तुम्हे अभी तक नहीं बताया था.
सदगुरुदेव जी बोले मेरी मौसी मुझे भी अब तो सिखा दो .
(सदगुरुदेव मन ही मन उस करुणा और स्नेह से भींग गए समझ गए कि उन्हें कुछ दिन ओर अपने साथ रोकने के लिए ये खेल रचा गया था उनके द्वारा)
कौन हैं ये जिन्हें सदगुरुदेव इतना चाहते रहे हैं ?

ये हैं ....
विश्व बंदनीय, अप्रितम , साक्षात सदेह तंत्राव्तार , अदिव्तीय योगियो में भी श्रेष्ठ ,पुराणिक युग कालीन सर्वथा अलभ्य मृत संजीवनी विद्या के एक मात्र साधक , ऐसे अलौकिक व्यक्तिव धारी परमहंस स्वामी त्रिजटा अघोरी जीके बारे में तो तंत्र जगत ही नहीं साधना जगत का हर व्यक्ति चाहे वह आज इस क्षेत्र में आया हो या हज़ार साल का ही क्यों न हो उनके दर्शन की कामना तो मन में हमेशा से लिए हुए ही रहता हैं. एक ऐसा व्यक्तिव जिन्होंने अंत्यंत कठिन , अभावग्रस्त से निकल कर वो उचाईयां प्राप्त की हैं जिसके आगे पूरा विश्व भी नत मस्तक हैं ही . कहते हैं कि तंत्र क्षेत्र में कठोर से कठोर उच्च , और अगेय साधना फिर चाहे वह शमशान हो या अघोर पथ कि इनका सामना पूरे विश्व में कोई नहीं कर सकता .
उच्च ललाट पर सुशोभित लाल सिंदूर का तिलक ,कमर के नीचे तक झूलती लम्बी लम्बी तप कि गरिमा से युक्त तीन जटाये के कारण ये साधक / साधना जगत में त्रि जटा के नाम से विख्यात हैं .भगवान् काल भैरव के अदिव्तीय साधक ओर मृत संजीवनी विद्या के एक मात्र साधक जो आज भी सदेह ,सिद्धाश्रम के ९ सर्वोच्च परम योगियों के मध्य में से एक आज भी उत्तरांचल कि घनघोर दुर्गम पर्वत श्रंखला भैरव पहाड़ी में स्थित महाकाल रौद्र भैरव के मदिर के पास में गुप्त रूप से निवास रत हैं .
पूज्य सदगुरुदेव जी कहते थे कि केबल मात्र तंत्र के बल पर सिद्धाश्रम पहुँचने वाला ये एक मात्र व्यक्तिव हैं . साधना जगत में उनकी उच्च्य बताना मानो सूर्य को दीपक दिखाना हैं ,एक ही आसन पर २० से २५ दिनों तक स्थिर एकाग्र रूप से बैठकर ये साधना पूरी करके ही उठते हैं . इनका भौतिक कद लगभग सवा सात फीट का हैं अत्यंत बलिष्ठ ,सौष्ठव युक्त शरीर के साथ घन के सामान घनघोर ,ह्रदय को कम्पायमान कर देने वाली आवाज के स्वामी हैं . कोई भी साधक ऐसा नहीं रहा जो

इनका साक्षात् महाकाल रूपी रूप देख कर सर्व प्रथम दर्शन में स्थिर रह पाया हो . पर भौतिक शरीर कि महत्ता के सामान ही हृदय से उतने ही प्रेम मय ,प्रेम परिपूर्ण हैं . कुछ काल उपरान्त सदगुरुदेव जी के निखिलेश्वरानद स्वरुप को जानने के बाद सदगुरुदेव जी की लीला से आश्चर्य चकित हो कर से उन्होंने भी दीक्षा ली ओर उनसे तंत्र क्षेत्र कि अगम्य साधनाए प्राप्त की . एक बार अपने अग्रज गुरु भाइयों से सुनने में आया था कि एक पूर्ण बड़ी पुस्तक सदगुरुदेव जी ने इनके जीवन पर लिख कर छपने को देने जा रहे थे , तभी रात्रि काल मैं प्रेस में ही सदेह से आकर इन्होने वह किताब ही टुकड़े टुकड़े कर दी,सदगुरुदेव जी से कह उठे “जब ये नासमझ , लोग अपनी स्वार्थपरता को शिष्य रूप की आड़ मैं छुपा कर आपसे ही छल करते रहते हैं और लेश मात्र भी शर्म सार नहीं हैं अपने कृत्यों पर और अपनी मक्कारी , चापलूसी को शिष्यता का नाम देते रहते हैं तब ये न जाने मेरे बारे में क्या क्या अनर्गल प्रलाप कर लोगों को मुर्ख बना कर अपना स्वार्थ सिद्ध करेंगे इसलिए ये किताब को ही में नष्ट कर दे रहा हूँ. , सदगुरुदेव जी ने कहा कि . आखिर वे अघोरी हैं अभी गुस्से में हैं तंत्र क्षेत्र के साधक कोकैसा होना चाहिए , जो निश्चय ता , साहस ,एक आसन निष्ठता, और अपने इष्ट के सामान तेज धारण करे हो ये तो इनके व्यक्तिव को देख करही सिखा जा सकता हैं.

एक साधक गुरु भाई प्रणम्य हो कर जिज्ञासा रख रहे हैं उनसे कह रहे हैं की क्या हैं आखिर इस गुरु मन्त्र में , ऐसा क्या विशेष हैं जो आप इसे सर्वश्रेठ मंत्र कहते हैं ब्रह्माण्ड का ,ये तो हर गुरु की तरह सिर्फ गुरु मंत्र ही तो हैं ..
महायोगी कह रहे हैं वत्स धन मांग लो आयु मांग लो सुदर स्त्रियाँ मांग लो पर ये न पूछो ,...

आप सेज्यादा ब्रह्माण्ड में इसके बारे में कौन बता सकता हैं देना हैं तो ये दीजिये या फिर मना कर दे.

hain
वे कह रहे हैं कभी सोचा हैं की सदगुरुदेव का नाम अखिल क्यों नहीं रखा गया , क्यों निखिल कहते हैं उन्हें ...." वे बोलते जा रहे हैं पूरी प्रकति मौन हो कर एक एक अमृत बूँद पी रही हैं फिर जो उन्होंने प्रत्येक अक्षर की व्याख्या करी मानो ब्रहमाड का सारा ज्ञान हि नहि बल्कि स्वयं ब्रम्हांड ही उतर आया हो उस समय सुनने के लिए ,sabhi maun

सारा विश्व की ज्ञान धरोहर ही नहीं विश्व के अन्दर क्या, परे क्या , सब हैं समाया हुए इस महा मंत्र में , एक एक अक्षर की व्याख्या करने में साक्षात् ब्रम्हा भी असमर्थ हैं ...वे भाव बिहोर होकर बोलते जा रहे हैं .... तुम तो अपना गुरु मन्त्र जानते ही हो उसका पहला अक्षर हैं ...

प् का ये अर्थ हैं ....
र का ये अर्थ हैं.......

म का ये अर्थ हैं, ...
....
......
क्या क्या नहीं समाया हैं सारी अखिल ही नहीं निखिल सम्पदा हैं सिद्धियाँ हैं उच्चता हैं श्रेष्ठता हैं एक एक अक्षर में ...   और तुम लोग हो की   यहाँ वहां भटकते रहते हो ....

किंचित क्रोध रोष में बोले ....अरे ये गली बाज़ार के भिखारी जादूगरी दिखा कर अपना अपना स्वार्थ सिद्ध कर रहे हैं, तुम लोग समझते क्यों नहीं, ये धोखे बाज़ तुम्हे क्या दे देंगे,.... क्या दे सकते हैं ये...... ये गुरु रूप की आड़ में बैठे ठग तो खुद भिखारी हैं .आखिर कब समझोगे तुम उन्हें (सदगुरुदेव) ... पर तुम लोग समझ भी कैसे सकते हो ..उन्होंने ही तो ये माया फेलाई हैं भला नारायण हो माया नहो कैसे न हो ये .. कुछ ही पहचान पाए हैं उन्हें, शेष के आंखोंमें आसूं ही रहेगे जब वे यहाँ से सिद्धाश्रम चल देंगे,,,.....और तब तुम जब समझोगे ...... तब तक सिर्फ आंसूं ही होंगे ..... तुम्हारे पास... वे नहीं ......

सदगुरुदेव भगवान् , अब आप ही बताये की मैं कैसे गुरु बचन को पूर्ण करूँ ,आपने जो अति प्राचीन तंत्र ग्रन्थ आसुरी कल्प   खोजने की आज्ञा दी थी , मैं हार गया अब आप ही मार्ग बताये ,सदगुरुदेव बोले तुम त्रिजटा अघोरी जी के पास जाओ उनसे मिलो मैंने उन्हें संकेत दे दिया हैं ,(गुरु भाई ,सदगुरुदेव जी से पूछ रहे थे)
लगतार कठिन पहाड़ियों को पार करते हुए मानसरोवर के पास में हिरण्याक्ष पहाड़ी की ऊपर पहुँच के देखता हूँ तो सामने त्रिजटा अघोरी जी पर्वतासन पर विराजमान हैं ,जैसे हि मैने उनके चरण स्पर्श कर परिचय दिया ,उन्होंने हृदय से आशीर्वाद प्रदान किया . सदगुरुदेव की कुशलता के बारेमें पूछा,. पिछले कई महीनो से समाज   में उनके विरुद्ध चलाये जा रहे झूंठे प्रचार ,अपमान जनित बाते , ओर पत्र पत्रिकाओं में अनर्गल प्रलाप केबारेमें बताया ,
मेरे द्वारा बताने पर , मानो साक्षात् महाकाल ही उनके रूप में उतर आये हो.

अब में सिद्धाश्रम की भी परवाह नहीं करूँगा , इस पात कियों को तो दंड देना हो होगा . ये दुष्ट ऐसे नहीं मानेगे , वे वहां आग में साक्षात् तिल तिल कर जल रहे हैं ओर में यहाँ बैठा उन्हें देखता रहूँ , ये नहीं हो सकता , अब बहुत हो गया ." घनघोर ध्वनि चारों और गुंजायमान हो रही थी ."
किसी तरह अपने को नियत्रित कर अश्रु प्रवाह रोकते हुए बोले " केबल और केबल उनमें ही ये सामर्थ्य हैं जो इतना विष पिने के बाद भी अपना तिल तिल खून जला कर भी समाज को अमृत दे रहे हैं ,हम सभी उनकी आज्ञा से बंधे हुए उन्हें विवशता से मुस्कराहट लिए हुए ,अपने शिष्यों को तैयार करने की अनथक श्रम के बीच , अग्नि शोलो के बीच जलता हुए देख रहे हैं "

तुम लोगों के कितना सौभाग्य हैं पर तुम लोग तो उसे जान भी नहीं पा रहे हो.....

.हम सभी उनकी प्रतीक्षा में हैं ,जिस दिन हमारे आराध्य हमेशा के लिए हमारे साथ होंगे .

तुम लोग उनके मन हृदय की वेदना कम से कम अगर वे नहीं कहते हैं तो उनकी आँखों में देख कर ही सम झ सको, समझ सको की

आखिर उन्हें किस चीज की आवश्यकता हैं तुम लोगों से .. सिर्फ तुम लोगों से स्नेह के कारण ही तो वे व हां हैं....... पर तुम लोग तो सिर्फ अपना ही स्वार्थ ....

****

(some memorable moment with ref to sadgurudevji)

Sadgurudev ji turn his face to see him, still with tearful eyes he was standing there watching Sadgurudev,but the need of time and responsibility stopped him .just a few minite before he has given the most precious things in the world "Rati Raaj Gutika", person belongs to sadhana knew already about that , he himself earned through untold hard work and obedience to his gurus , but with love he gave to Sadgurudev ji. .he is saying that" Narayan , you teach what is mamta (sneh /love) to a stone hearted person like me.. now I can say I have a brother like you .."

Even sadggurudev ji recalling that incident, have tear in his eye and said ***" in true sense he became my elder in the tantric sadhan field andlead to the path unknown to many…"*** nearly 25days of his first meeting with Sadgurudev ji, he through "**Nidra Stambhann Prayog**" stopped Sadgurudevji's sleep and continuously taught sadhana like .*yakshini sadhana, purn kaya kalp sadhana, bramhaand creation sadhana, yakshni chetak, bramhaand chetak ,rup parivartan chetak like such a high and rare sadhana, Adrashy gaman sadhana , from prêt sadhana to vartali stambhann sadhana , from ghor shamshan sadhan to durlabh aghor sadhana, he was teaching continuously,* neither he take rest nor giving any rest to Sadgurudev ji, now a perfact combination formed.

And today when Sadgurudev ji has to go, the time come, he bring a he-goat and through that in air with one hand, and catch , break it s neck in two part and start sucking blood coming out of that.

Sadgurudev ji very painfully told that *why such a cruelty ,what wrong he does to you ,so that you have taken that his life in such away..*

He smiling spoke."**speak to me Narayan if you say than I will again bring back that in**"

How that is possible?

There is nothing is impossible for bhgvaan Mahakaal Roudra Bhairav?

Than he sitting on the aasan and starts mantra jap within few second that he goat again is in life taking breathing again .as if nothing happened to him before.

How that was possible ?

Through" Sukropasit Mrit-Sanjivani vidya."

Why did not you teach me that yet?

After getting training of all art from cat ,once lion attacked on the cat, the cat jumped over the tree. Very shamefully lion asked to the cat why did not teach him that art, cat replied- if I did that so than i could not be alive this moment.

Sadgurudev ji replied with smile- **my mausi now teach me that too**.

(Sadgurudev ji understood the feeling behind the incident and the love and sneh,/ compassion of him , that he try to stop him anyway…)

Who is this persoanalty, whom even Sadgurudev ji loved so much..

He is..

Respected from whole world , unique , human form of Tantra , and such a unimaginable personality having , **Paramhansa swami Trijata Aghori ji** , everybody whether today he is treaded on this path or thousand years old one of, not only tantra world but in sadhana field also , all are having ever desire to see him, once in their life span whether that may be of a few second. one such a personality who start from very difficult struggle full child hood to reach such a unparallel, unmatchable height that whole world bow down to his sadhana level height and achievement.

Having large red colored sindur on his divine great forehead, and jataye (matted hair) having full of divine energy, which are so long that they are touching his legs because of .theses tree jata of him, he is known as tri jata ji, ***greatest sadhak of bhagvaan kaal bhairav and only one in the whole world who are blessed with sanjivinai vidya (a puranik era's vidya through that life can be induce to any dead)*** and still in his mortal body , and one amongst in nine supreme yogi of siddhashram , still living in deep dense forest surrounding hills in uttranchal in India.

Sadgurudev used to tell him, ***he is the first person, who only through his achievement in tantra's field so high that he could reach the holiest place in the whole universe i.e. Siddhashram*** .to write about his greatness in sadhana field like showing a earthen lamp to fully bright lighted sun in day time. sitting 20 to 25 days straight on a aasan without any moment for to complete in any sadhana, is just a play for him. His physical height is as about more than seven feet. very forceful , highly well built body and blessed with voice sound like cloud sound in rainy season. ***no sadhak ever can stand on his feet ,on seeing him first such a personality like Bhagvaan Mahakaal rup***. But he also having such large heart , full value of human value and full of so much love that words can not describe about his softness, such a great person he is.. after a time when he knew about Sadgurudev ji's Nikhileshwaranand form, he amazed on sadgurudev ji's lila and also taken Diksha from sadgurudevji and have got some very rear gems of sadhana of tantra..

It has been listen from our elder guru brother that once Sadgurudev ji wrote a large size book about him , and that has been to press for printing, in the same night he physically came and tear down the book in pieces, and told to Sadgurudev ji " thses ignorant people, through taking refuse of shishyata , hides their selfishness and does continuously deception to you and not having a single percent of shame of their wrong-doing and gave them a name of shishyata ,than they, I know not what will do useless/baseless things about me and make fools other, to fulfill their selfishness. that is why I destroyed that book.

Sadgurudev later replied *he is aghori and he is in anger*,

How should be a sadhak of tantric, can be fully learnt /understand by watching him his unshakable will, fearlessness ,perfectly motion less sitting and having the same radiance of as of his isht deity.

One sadhak guru brother , after giving proper respect ,asking him ..**what is in, so special about in Guru mantra, that's why you says that , is supreme most mantra of the universe ,this is type of mantra alike any guru's have. after all this is a guru mantra**.!!!

He replied, my son ..ask me for immense wealth, beautiful woman , and long life ,I can give but not ask about this secret ..

<u>Who other than You ,in the universe can describe about that, if want to give me ,please give that or simple say no to me.</u>

He start saying..***'have you ever thought/noticed why Sadgurudev ji 'sname is Nikhil not akhil..since he***…." He is absorbs in his though and words start flowing from his divinity. Nature stand still to listen and start drinking Amrit bond coming out . everywhere silence absorbs… than he starts to describe each and every words of guru mantra in details , like knowledge of whole universe 's not but universe it self stand there to listen that divinity.

“*Not only all the divine knowledge /gyan but what is inside or out side of whole universe is inside in that, everything’s is in that guru mantra. Even Bramha ji is not able to describe that .. you already know what is the gurumantra and take its first letter is ..*
“pa” stands for and carring the meaning …,
“ra” stand for and carring the meaning ….,
“ma” stands for and carring the meaning …..,like that…
what not included in that , not only akhil but Nikhil wealth , highness, greatness uniqueness are included in that and you people living that wondering hear and there aimlessly…”.
He spoke with little anger …***theses bagger sitting in the market showing magical skill fulfilling their selfish ness, why did you not people understand that, theses cheater/thug what they will give to you…… , When did you not understand about Sadgurudev….. but how can you people understand him (Sadgurudev)…… he spread his maya ,where narayan is, there his maya….. only a few can recognize his original form …remaining have tears in their eyes when he will finally move to siddhashram….and thaneven if you understand him …. Only than tears will be with you… he is not…***
Sadgurudev Bhagvaan- “now tell me how can I obey guru agya to search old tantrak granth like Aasuri kalp, I am help less could not that anywhere, advice me where can I search that..sadgurudev ji replied that . now go and meet trijta I have already indicated about you. (one guru bhai asking to Sadgurudev)
“After crossing to continue high mountain I reach mount hiranyaksh, on reaching its top where temple of mahakaal Raudra Bhairav is situated , found that trijata ji sitting on a big rock ,I touched his divine feet and provide mine aim and introduction that why I am here. ,he blessed me. And ask about Sadgurudev ji. L informed him about so many false allegation, propaganda and false baseless remarks on him either in print media and in others way too. Happening to him from last so many months.
After listing my word , it seems like mahakaal appeared in his form.
“I do not bother about siddhshram , theses culprits has to be punished , theses can not be easily come on the way , he is burning there ,in that fire in part by part slowly slowly and what I am doing here ,just to see him helplessly , this is enough , I cannot wait any more. “His voice sounded very high all round.
Anyhow he controlled himself and said “***he and only he has the ability to withstand in such a huge fire with smile and providing Amrit to society , and we all are here watching him , nothing can be done from our side since this is his agya. watching him working day and night with such a pain and hard work with smile just to make their shishy be able enough***, “
How fortunate you all are ,but not understanding/recognizing that… we all are waiting him ,the day when our isht will be with us.
You people atleast understand the pain lies in his heart , even if he not tells you, you all have to understand the pain and feeling for you in his eyes. To understand that what he wants from you all …..
only for his love toward s you all , is cause for him to stay there.. but you all just looking only your selffiness………..

SAPT JEEVAN SARV DEVATV SARV SADHNA SIDDHI DIKSHA

क्या ये सच है ??? बस यही सोचता रहा उस रात ..... आखिर क्यूँ उसी बात को मैं बार बार सोच रहा था .

अब नींद भी नहीं आ रही थी मुझे , पर क्यों??

बस अब नहीं समझ में आ रहा है , अब तो कल मैं सदगुरुदेव से पूछ कर ही रहूँगा. दर असल में हुआ ये था की नवरात्री का शिविर चल रहा था और उस दिन प्रथम सत्र में लगभग १२ बजे गुरुदेव ने अचानक अपने प्रवचन के मध्य बताया की " तुम लोगो से मेरे सम्बन्ध आज के नहीं हैं बल्कि मैं पिछले २५ जन्मों से तुम्हारा गुरु हूँ" और बस तभी से ये बात मेरे दिमाग के दरवाजे खटखटाने लगी और उसके बाद तो बस बैचेनी सी मेरे मन में समा गयी थी. और अब प्रतीक्षा थी तो बस सदगुरुदेव से मुलाकात की.......

आखिरकार अष्टमी को उनसे मुलाकात संभव हो पाई और वो भी खुद उन्होंने ने ही बुलाया और सर पर चपत मारकर कहा – अब तेरे दिमाग में ये क्या नया घूमने लगा , तू कभी अपने दिल दिमाग को आराम भी देगा.

जी आप ने ही तो कहा है की शिष्य बनने के पहले साधक को जिज्ञासु होना चाहिए- मैंने आँखे झुका कर उत्तर दिया.

हाँ बेटा ये सही बात है और उससे भी ज्यादा जरुरी ये है की,चाहे गुरु सर्व समर्थ हो तब भी अपने मन के भाव उनके चरणों में लिख कर या बोलकर व्यक्त करना ही चाहिए .

पर यदि उनसे मुलाकात संभव नहीं हो तब ????

क्या तेरे पास गुरुचित्र भी नहीं है, उसके सामने व्यक्त कर .

और यदि कभी गुरुचित्र भी पास में न हो तब??

बेटा गुरु और शिष्य प्रथक नहीं होते हैं. बल्कि वो दो देह औए एक प्राण ही होते हैं, भला आत्मिक रूप से अलग अलग रहकर कोई कैसे शिष्य बन सकता है. जब गुरु के प्राणों से साधक के प्राण मिल जाते हैं या एकाकार हो जाते हैं तभी तो वो साधक सच्चे अर्थों में शिष्य बन पाता है. गुरु के प्राणों में उसके प्राण एक

तीव्र आकर्षण से जुड जाते हैं , और ये जुड़ाव इतना तीव्र होता है की इसे विभक्त किया ही नहीं जा सकता .
और खुद ही सोच जब आत्मिक रूप से दो प्राण एकाकार हो जाते हैं तब चाहे शिष्य कितने बार भी जन्म ले ले , कही भी जन्म ले ले, गुरु अपने उस अंश को ढूँढ कर अपने पास बुला लेता है , ठीक वैसे ही जैसे मैंने तुम सभी को खोज कर बुलाया है. पर ये इतना सहज नहीं होता है , क्योंकि तब वो शिष्य अपने संबंधों की तीव्रता को महसूस नहीं कर पाता है और न ही उसे अपने जीवन का मूल चिंतन ही याद रहता है , उसे तो बस अपने आस पास के स्वार्थलोलुप रिश्तों की ही याद रहती है और प्रेम की सत्यता को तो वो समझ ही नहीं पाता. बस जिन्हें वो शुरू से देखता आया,वो रिश्ते ही उसकी दृष्टि में सत्य होते हैं. पर जब शिष्य गुरु के प्राणों के तीव्र आकर्षण से उनके श्री चरणों में पहुच जाता है तो गुरु उसे पूर्णत्व प्रदान कर ही देते हैं.
क्या मैं अपना पिछला जीवन देख सकता हूँ ?
हाँ क्यूँ नहीं देख सकता. पिछला जीवन तो कोई भी साधक देख सकता है , यदि वो मदालसा साधना संपन्न कर ले तो ये क्रिया सहज हो जाती है . इसी प्रकार पारदेश्वर के ऊपर त्राटक की क्रिया कर साधक अपने विगत जीवन को देख सकता है.
पर मुझे वो सभी पूर्व जन्म देखने हैं जिनमे मैं आपके श्री चरणों में था और आपके दिव्य साहचर्य से मेरे जीवन सुवासित और पवित्र हुए थे .
क्या ये संभव है??
हाँ मेरे बेटे यदि उपरोक्त साधनाओ को साधक लगातार करता रहता है तो निश्चय ही वो और ज्यादा जन्मों को देख सकता है. पारद शिवलिंग पर त्राटककी क्रिया तो होनी ही चाहिए .
क्या मैं पिछले जीवन में की गयी साधनाओ को इस जीवन से जोड़ सकता हूँ??
निश्चय ही जोड़ सकते हो. पर एक बात याद रखो की पिछले जीवन को देखना और उसमे की गयी साधनाओ का इस जीवन से योग करना ये दो अलग अलग बाते हैं. क्यूंकि उन साधनाओं को इस जीवन से जोड़ने में जिस ऊर्जा और शक्ति की आवश्यकता होती है वो सामान्य रूप से एक नए साधक में नहीं होती है.
तब ये कैसे हो सकता है?
यदि गुरु अपने तपः बल से साधक को एक विशेष दीक्षा दे तो निश्चय ही ऐसा संभव हो जाता है , क्यूंकि चाहे साधक ने कितने ही जीवन में साधनाएं की हो पर अत्यधिक कठिन होता है पिछले सात जीवनों की शक्तियों को एकत्रित करना सम्पूर्ण चक्रों के जागरण के बगैर उनकी चैतन्यता को प्राप्त किये बगैर ये संभव ही नहीं है , परन्तु जब सद्गुरु उसे ऐसी विशेष दीक्षा दे दे और स्वयं के प्राणों का घर्षण कर शिष्य को वो मन्त्र प्रदान कर दे तो साधक उस मन्त्र कापारद शिवलिंग पर त्राटक करते हुए जितना ज्यादा जप करता जायेगा उसे वो सब सामर्थ्यता धीरे धीरे प्राप्त होते जाती है फिर चाहे उस शिष्य ने अपने पिछले

जीवनों में किसी भी प्रकार की , कितनी भी साधनाएं की हो चाहे वो किसी भी शक्ति की हो , वे सभी साधनाएं और उनका पूर्ण प्रभाव साधक को इसी जीवन में प्राप्त हो ही जाता है और साधक उन सभी प्रक्रियाओं में पूर्ण रूपें पारंगत हो जाता है. और सात जीवनों की यात्रा के बाद तो साधक की यात्रा इतनी सहज हो जाती है की उस मन्त्र के अभ्यास से से वो और पीछे जाते जाता है और उन शक्तियों को क्रमशः प्राप्त करते जाता है. और सद्गुरु हमेशा यही चाहते हैं की उनका शिष्य अपने अस्तित्व को पूर्ण रूपें समझे और अपने लक्ष्य को प्राप्त करे. इससे ज्यादा गुरु को और क्या चाहिए .

क्या मुझे वो दीक्षा प्राप्त होने का सौभाग्य मिल पायेगा? इसे प्राप्त करने की पात्रता क्या है?

इसके पहले तीन ऐसी दीक्षाएं हैं , जिन्हें प्राप्त कर साधक उससे सम्बंधित साधनाओं को पूर्णता के साथ संपन्न करे तो निश्चय ही साधक को सद्गुरु उसके आग्रह पर ये अद्वियीय दीक्षा प्रदान करते ही हैं और साथ ही साथ इससे जुड़े रहस्यों को उजागर भी कर देते हैं.

सदगुरुदेव के आशीर्वाद से मैंने उन तीनों दीक्षाओं को प्राप्त कर उनसे सम्बंधित साधनाएं भी संपन्न की और तब मैंने गुरुदेव से उस अद्भुत दीक्षा और उससे सम्बंधित रहस्यों का ज्ञान प्रदान करने के लिए प्रार्थना की. तब उन्होंने अत्यंत करुणा भाव से मुझे वो पूर्ण क्षमता युक्त अद्भुत दीक्षा प्रदान की जिसे सिद्धाश्रम के योगियों के मध्य "सप्त जीवन सर्व देवत्व सर्व साधना सिद्धि दीक्षा" के नाम से जाना जाता है.

बाद में मैंने उनके निर्देशानुसार साधनाओं को क्रियाओं को संपन्न कर उन रहस्यों को समझ पाया जो मेरे पिछले जीवन से जुड़े हैं.और आज मैं जो कुछ भी समझ पा रहा हूँ उसके मूल में यही रहस्य है. जीवन का सौभाग्य होता है साधनाओं को संपन्न कर अपने पिछले जीवन को अपनी इन्ही आँखों से देख पाना, क्यूंकि तभी तो हमें अपने इस जीवन के दुर्भाग्य का कारण ज्ञात हो पाता है.

क्या अब भी हम गिडगिडाकर ही जीवन जीते रहेंगे. अब मर्जी है आपकी क्यूंकि जीवन है आपका.

Is this true????Only this I kept thinking that night….But Why, I was thinking only this one point again & again?????Even, I was restless, cannot make for the sleep…..But, not able to make Why????

Now, it's enough, I will definitely ask Sadgurudev tomorrow anyhow…

Actually what happened there was Navratri Encampment and on the first day in first session approximate at 12:00 pm in the mid of the session Gurudev suddenly told that the relations between You and Mine is not from today, but we are bonded as a Shishya and a Guru from last 25 birth-cycles……& that was the point which got stucked in my mind and I became so curious….only, I was waiting for the moment I will meet Sadgurudev….

At last, on Ashtami day, I was able to meet Sadgurudev & that too he called me up & patted on my head saying –(All the conversation was between me & Gurudev)

Gurudev - now what new is running in my head & can you give rest to your heart & mind???

Me - Gurudev, you only told that a devotee should have the ability to be curious – I answered by lowering my eyes down….

Gurudev -Yes, My son this is very much true, but the more important thing is no matter the Guru is wholesole,still express the emotions either in written or oral in his feets…
Me – But, what if meeting is not possible???
Gurudev - Don't you have any of the Guru Picture with you? Do express in front of his picture...
Me – But, what if Guru Picture is also not with you???
Gurudev – My Son, Guru and Shishya are not separate, they are two bodies but one soul….You only tell, how departed from the soul, one can be able to act as a Shishya…..When the devotees get attached with the soul of the Guru, then only a devotee is able to become a true Shishya…The soul of the Shishya gets attached with the Guru soul with great attraction & this attraction is so much bonded that it cannot be departed….
& now you only think when the two different life becomes one through the soul, then no matter the Shishya takes infinite birth he will be identified by his Guru from anywhere and will be called near to him just as I have called all of you…..But, this is not so easy, because at this time the Shishya cannot realize the intensity of the relations and neither he is able to recollect the main base of his life…He is just carried away with the relations which are near to him and is unaware of the fat of true love because he believes only those relations which he had seen since his childhood and grown up with them….But, as soon as he devotes himself into the guidance of the Guru, the Guru provides him the completeness of the life….
Me – Can I experience my previous birth???
Gurudev - Yes, why not???Any devotee can see this if he performs – Madalsa Sadhna, this act will become easy….Simliarly, by performing Tratak Kriya on Pardeshwar will also help in experiencing of his previous birth….
Me – But, I want to experience all my previous birth in which I was devoted to you and my life got blessed under your shelter…..Is this possible???

Gurudev - Yes, my Son, if you will practice the above Sadhna regularly, you will able to feel the experience of more & more previous birth life…. & yes Tratak Kriya on Pardeshwar is must…
Me – Can I get connected with the previous devotions also in this life???
Gurudev -Yes, you can definitely do it but do remember to experience previous birth and to connect the devotions with this life are totally different from each other because to connect those devotions from that life to this life requires too much energy and power and a new devotee does not contains that much of amount….
Me – Then, how is this possible???
Gurudev - If the Guru by recollecting all his devotional power and energy gives a special convocation (Deeksha) to the Shishya, it becomes possible…because no matter a devotee has worked so hard for the devotions but to recollect the last 7 births energy and to activate the whole chakras & auras without the activations of these energy is very much difficult….But, when the Guru gives such a special convocation and keep his all his life on sake for the Shishya and gives that mantra & when the Shishya performs that Mantra on

Parad Shivling by the Tratak Kriya he is able to become capable enough to recollect & experience all those energy & powers which he conducted or performed in his previous births & becomes expert in all these processes….& after the 7 births this journey becomes so easy that the devotee can go back to as many life and acquire as much energy and power he can & Sadgurudev always wants this only that his Shishya understand the motto of his existence and achieve his target and aim…..

Me – Will I be blessed with this convocation & how can I make myself eligible for the same???

Gurudev -Before this convocation, the devotee needs to acquire 3 other convocations by which he can perform any act in a complete manner and when he accomplished this thing, the Sadgurudev not only provides the most special convocations on request of the devotee but also explore the many hidden secrets related to all these acts…

With the blessings of the Sadgurudev performed all the 3 convocations and accomplished all the other devotions also & then I requested Sadgurudev to provide me the special secrets of that devotions and then the Sadgurudev with all his love and blessings told the most special convocation which is known as – "Sapt Jeevan Sarv Devatv Sarv Sadhna Siddhi Deeksha" in the camp of the devotes of the Siddhashram…

Later on, in guidance of the Sadgurudev I performed all those devotions and was able to understand all those hidden secrets which were connected with my previous births and today also, if I am able to understand all the other aspects are just because of the fact which lies in base of all these acts…..

This is only the blessings and a good fortune to see, know and learn about the past and previous birth life as because only after this we are able to understand about all the misshapennings of this present life…

we can devote our lives in Sadgurudev holy feets…..Still, you want to live on others mercy???? Well, the decision is yours as the life belongs to you….

****NPRU****

for our facebook group-http://www.facebook.com/groups/194963320549920/

Posted by Nikhil at 11:09 AM 2 comments:
Labels: GURU SADHNA, POORV JEEVAN DARSHAN SADHNA

THURSDAY, SEPTEMBER 1, 2011

Purv Jivan Darshan Sadhana

मानव जीवन एक अनत लम्बाई लिए हुए श्रंखला   में ही गति शील ही हैं , यदि आज के जीवन को बर्तमान माने तो इसका भविष्य और भूतकाल भी तो होना ही चाहिए ही , जीवन को एक रस्सी मान ले और उसके मध्य के किसी भी भाग के पकड़ ले तो निश्चय ही   कहीं तो उसका प्रारंभ होगा और कहीं तो उसका अंत होगा ही भले ही वह हमें दृष्टी गत   हो या न हो, ठीक इसी तरह हमें हमारा न अतीत मालूम हैं न भविष्य हम मध्य में कहाँ हैं , कहाँ जायेंगे यह सब भी नहीं मालूम ,

जीवन के अनेक प्रश्नों का उत्तर इतना आसान नहीं हैं , की मात्र कुछ तर्क   और वितर्क से वर्तमान जीवन की सारी उच्चता   और विसंगतियों को समझा जा सके .उसके समझने के लिए पूर्व जीवन दर्शन होना ही चाहिए , तब पता चल सकता हैं की मेरे जीवन में ऐसा क्यों हैं इसका कारण क्या हैं , और जब ये समझ में आ जायेगा तो उसके निराकरण के उपाय भी खोजे जा सकते हैं .

अन्यथा,पूरा जीवन एक अनबुझ पहेली सा बन कररह जायेगा , अपने देश में तीन महान धर्म का उदय हुआ हैं ये हिन्दू , बौद्ध और जैन धर्म हैं , आपस में इनके कितने भी विरोधाभास   दिखाए दे पर एक बात पर सभी एक मत हैं की कर्म फल तो प्राप्त   होता   ही हैं   और सहन करना ही पड़ेगा

वेदान्त कहता हैं -हाँ हमने ही उस कर्म का निर्माण किया हैं तो हम ही उसे समाप्त कर भी सकते हैं , पर कैसे उसके लिए कारण भी तो जानना पड़ेगा न ,

आज के जीवन में यही क्यों मेरा भाई हैं या मेरे निकटस्थ होते हुआ भी इनके प्रति मेरे स्नेह सम्बन्ध क्यों नहीं हैं , क्यों दूरस्थ होता हुआ भी व्यक्ति अपना सा लगता हैं, क्यों इतनी गरीबी या शरीर में इतने रोग हैं आदि आदि अनेक प्रश्नों के उत्तर भी मिल जाते हैं,

क्या इस जीवन में जो गुरु हैं या सदगुरुदेव हैं क्या वह   विगत जीवन में भी या उससे भी पहले के जीवन से जुड़े हैं और क्या कारण था की /और कहाँ से संपर्क टुटा , सब तो इस पूर्व जीवन दर्शन से संभव हैं,

आजकल अनेको प्रविधिया विकसित हैं ध्यानके माध्यमसे व्यक्ति धीरे धीरे पीछे जा सकता हैं पर ठीक बाल्य काल की   ४ वर्ष कि आयु से पहले जाना बहुत ही कठिन हैं ,इस अवरोध को पास करना कठिन हैं . सम्मोहन भी एक विधा हैं पर   उसके लिए उच्चस्तरीय सम्मोहनकर्ता होना चाहिए , साथ ही साथ मानव मस्तिष्क इतना शक्तिशाली हैं की वह जो नहीं हैं वह भी आपको दिखा सकता हैं , इन तथ्योंको जांच करना जरुरी हैं .

साधना क्षेत्र में भी अनेको साधनाए हैं पर सभी इतनी क्लिष्ट हैं इन सभी   को ध्यान में रखते हुए एक सरल प्रभाव दायक साधना आप सभी के लिए ..

मन्त्र :

क्लीं पूर्वजन्म दर्शनाय फट्

सामान्य साधनात्मक नियम :

- जप में काले रंग की हकीक माला का उपयोग करें
- साधना बुध वार से प्रारंभ करसकते हैं
- जप काल में दिशा दक्षिण   रहेगी

- साधन काल में धारण किये जाने वाले वस्त्र और आसन लाल रंग के होंगे
- धृत के दीपक को देखते हुए रात्रि काल १० बजे के बाद(10PM) मे 31 माला मन्त्र जप होना चाहिए
- यह क्रम ११ दिन तक चले अर्थात कुल ११ दिन तक साधना चलनी चाहिए .

सफलता पूर्वक होने पर आपको स्वप्न या तन्द्रा अवस्था मे पूर्व जन्म सबंधित द्रश्य दिखाई देते है. जिनके माध्यम से आपके जीवन की अनेक रहस्य खुलती जाती हैं.

आज के लिए बस इतना ही

******** This human life is an integral/ very small part of a infinite lengthy chain , if we consider this life as a present than past and future will definitely be there. If you consider life as rope and in any middle part you touch than you can surely knew that there must be somewhere beginning and so there must be some there end, but we can not see that , but this is true , we don't know where we came from and where we will go .

The answer of Many question's of life are not so easy to answer, we cannot justify the any problem's with through logic only , so we need to see the past lives so that we can understand why we behaves like that , reason behind of various cause/events that , if we know the cause than we can search the remedy of that problem.

Other wise our whole life became a just a puzzle , here in our country three great religion comes Hindu, jain and bouddh , in spite of various differences and beliefs they all are agreeing on a point that there "a law of karma" applicable everywhere and what you sow ,you must be reap.

Vedanta says – yes if created the past karma than we can also remove or destroy that ,but how ? for that again we need to know the cause,

In this life ,why this is my brother or this fellow is very near to me but still I did not get enough feeling for him, and on the other hand that one is living very distant land , and we have strong attachment to that why?. Why I am so poor or why so many dieses happened to my body, alike all theses question also get answered.

The Sadgurudev or guru of this life, whether they are alsobe my guru/Sadgurudev in the past life . What is the reason why our connection got broke, so this all can be easily known. There are so many process available today , through meditation you can go backward but crossing the line of childhood age of 4 years memory is very very difficult, the hypnotism is also a very powerful medium, for that you have to be a very expert in that science, but

always remember that our mind is also a powerful medium , it can fool you, so the cross checking of various facts must also be necessary to arrived a conclusion.

There are many sadhana for this purpose in sadhana jagat and they are quite lengthy, so here is one which very easy and effective for you all..

Mantra:

KLEEM PURVJANAM DARSHNAAY PHAT

General rules :

- For jap you can use black hakik rosary/mala .
- Sadhana can be started on any Wednesday.
- Direction would be south facing.
- The clothes and aasan would be of red in color.
- Light up an earthen lamp filled with ghee and sadhana should be started after 10 pm(night), and each day 31 mala should be done.
- While doing Mantra jap ,Tratak on that earthen lamp (Deepak) is necessary .
- This sadhana should be done 11 day in continuous .

On successfully completing this sadhana you will get glimpse of your past life in dreams. and many mystery of your life get solved.

This is enough for today .

NAYE BHAI BAHNON KE LIYE - DAINIK SADHNA POOJAN KRAM

अखंड मंडलाकारं व्यापितम येन चराचरम |
तदपदं दर्शितम येन तस्मै श्री गुरूवै नमः||

जय सदगुरुदेव,

स्नेही भाइयों बहनों,

पूजन करना और साधना विधान दोनों एक अलग विधा हैं. पूजन मात्र आत्म संतुष्टि का एक साधना मात्र है, और साधना जीवन को गति देने कि क्रिया. किन्तु ये एक दूसरे पूरक हैं एन दोनों को अलग नहीं किया जा सकता. क्योंकि साधना के पूर्व व्यक्ति को अपने आप को शुद्ध करना और उसमें भी बाह्य और आंतरिक शुद्धिकरण करना ही होता है जिससे कि हम उस मन्त्र को धारण करने या हमारा अन्तःकरण उसे वहन कर सके..... और इसी कारण प्रारम्भिक पूजन का विधान है ......

सबसे पहले पवित्रीकरण-

ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वा गतोअपी वा

य: स्मरेत पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यांतर: शुचि: |

इसके बाद पंचपात्र से तीन बार जल पीना है और एक बार से हाथ धोना है.....

ॐ अमृतोपस्तरणमसि स्वाहा |

ॐ अमृतापिधानीमसि स्वाहा |

ॐ सत्यं यश: श्रीर्मयि श्री:श्रयतां स्वाहा |

ॐ नारायणाय नमः

कहकर हाथ धो लें

अब शिखा पर हाथ रखकर मस्तिष्क में स्तिथ चिदरूपिणी महामाया दिव्य तेजस शक्ति का ध्यान करें जिससे साधना में प्रवृत्त होने हेतु आवश्यक उर्जा प्राप्त हों सके---

चिदरूपिणि महामाये दिव्यतेज: समन्वित: |

तिष्ठ देवि ! शिखामध्ये तेजोवृद्धिं कुरुष्व मे ||

न्यास-

बांये हाथ में जल लेकर दाहिने हाथ कि पाँचों अँगुलियों से जल लेकर शरीर के विभिन्न अंगों से स्पर्श करना है....

ॐ वाङ्गमे आस्येस्तु (मुख को)

ॐ नसोर्मे प्राणोंअस्तु (नासिका के दोनों छिद्रों को)

ॐ अक्षोर्मे चक्षुरस्तु (दोनों नेत्रों को)

ॐ बाह्वोर्मे ओजोअस्तु (दोनों बाँहों को)

ॐ ऊवोर्र्मे ओजोअस्तु (दोनों जंघाओं को)

ॐ अरिष्टानि अङ्गानि सन्तु.... पूरे शरीर पर जल छिड़क लें---

अब अपने आसन का पूजन करें जल, कुंकुम, अक्षत से---

ॐ ह्रीं क्लीं आधारशक्तयै कमलासनाय नमः |

ॐ पृथ्वी ! त्वया धृतालोका देवि ! त्वं विष्णुना धृता

त्वं च धारय माँ देवि ! पवित्रं कुरु चासनम |

ॐ आधारशक्तये नमः, ॐ कूर्मासनाय नमः, ॐ अनंतासनाय नमः |

अब दिग्बन्ध करें यानि दसों दिशाओं का बंधन करना है,जिससे कि आपका मन्त्र सही देव तक पहुँच सके, अतः इसके लिए चावल या जल अपने चारों ओर छिडकना है और बांई एड़ी से भूमि पर तीन बार आघात करना है ....

अब भूमि शुद्धि करना है जिसमें अपना दायाँ हाथ भूमि पर रखकर मन्त्र बोलना है---

ॐ भूरसि भूमिरस्यदितिरसि विश्वधाया विश्वस्य भुवनस्यधर्त्री |

पृथ्वी यच्छ पृथ्वीं दृ (गुं) ह पृथ्वीं मा ही (गूं) सी:

अब ललाट पर चन्दन, कुंकुम या भस्म का तिलक धारण करे....

कान्तिं लक्ष्मीं धृतिं सौख्यं सौभाग्यमतुलमं मम

ददातु चन्दनं नित्यं सततं धारयाम्याहम ||

अब इसके पश्चात आप संकल्प ले सकते हैं----

ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णु: श्रीमदभगवतो महापुरुसस्य विश्नोराज्ञया प्रवर्तमानस्य अद्द्य: श्रीब्रह्मण: द्वतीय परार्धे श्वेतवाराह्कल्पे वैवस्वतमनवन्तरे, अष्टाविंशतितमे कलियुगे कलिप्रथम चरणे जम्बुद्वीपे भारतवर्षे, अमुक क्षेत्रै, अमुक नगरे, विक्रम संवत्सरे, अमुक अयने, अमुक मासे, अमुक पक्षे अमुक पुण्य तिथि, अमुक गोत्रोत्पन्नोहं अमुक देवता प्रीत्यर्थे यथा ज्ञानं, यथां मिलितोपचारे, पूजनं करिष्ये तद्गतेन मन्त्र जप करिष्ये या हवि कर्म च करिष्ये..... और जल पृथ्वी पर छोड़ दें.....

तत्पश्चात गुरुपूजन करें---

भाइयों बहनों गुरु ध्यान अनेकों हैं अतः आप स्वयं चुन लें.......या

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णु गुरुर्देवो महेश्वरा

गुरु ही साक्षात् परब्रह्म तस्मै श्री गुरुवे नमः

अब आवाहन करें.....

ॐ स्वरुपनिरूपण हेतवे श्री गुरवे नमः, ॐ स्वच्छप्रकाश-विमर्श-हेतवे श्रीपरमगुरवे नमः | ॐ स्वात्माराम् पञ्जरविलीन तेजसे पार्मेष्ठी गुरुवे नमः |

अब गुरुदेव का पंचोपचार पूजन संपन्न करें----

इसमें स्नान वस्त्र तिलक अक्षत कुंकुम फूल धूप दीप और नैवेद्ध का प्रयोग होता है----

अब गणेश पूजन करें ---

हाथ में जल अक्षत कुंकुम फूल लेकर (गणेश विग्रह या जो भी है गनेश के प्रतीक रूप में) सामने प्रार्थना करें ---

ॐ गणानां त्वां गणपति (गूं) हवामहे प्रियाणां त्वां प्रियपति (गूं) हवामहे निधिनाम त्वां निधिपति (गूं) हवामहे वसो मम |

आहमजानि गर्भधमा त्वामजासी गर्भधम |

ॐ गं गणपतये नमः ध्यानं समर्पयामी |

आवाहन---

हे हेरम्ब! त्वमेह्येही अम्बिकात्रियम्बकत्मज |

सिद्धि बुद्धिपते त्र्यक्ष लक्ष्यलाभपितु: पितु:

ॐ गं गणपतये नमः आवाहयामि स्थापयामि नमः पूजयामि नमः |

गणपतिजी के विग्रह के अभाव में एक गोल सुपारी में कलावा लपेटकर पात्र मे रखकर उनका पूजन भी कर सकते हैं.....

अब क्षमा प्रार्थना करें---

विनायक वरं देहि महात्मन मोदकप्रिय |

निर्विघ्न कुरु मे देव सर्व कार्येशु सर्वदा ||

विशेषअर्ध्य---

एक पात्र में जल चन्दन, अक्षत कुंकुम दूर्वा आदि लेकर अर्ध्य समर्पित करें,

निर्विघ्नंमस्तु निर्विघ्नंस्तू निर्विघ्नंमस्तु | ॐ तत् सद् ब्रह्मार्पणमस्तु |

अनेन कृतेन पूजनेन सिद्धिबुद्धिसहित: श्री गणाधिपति: प्रियान्तां ||

अब माँ का पूजन करें---

माँ आदि शक्ति के भी अनेक ध्यान हैं जो प्रचलित हैं....

किन्तु आप ऐसे करें...

सर्व मंगल मांगल्ये शिवे सर्वार्थ साधिके |

शरण्ये त्रयाम्बिके गौरी नारायणी नमोस्तुते ||

अब भैरव पूजन करें---

ॐ यो भूतानामधिपतिर्यास्मिन लोका अधिश्रिता: |

यऽईशे महाते महांस्तेन गृह्णामी त्वामहम ||

ॐ तीक्ष्णदंष्ट्र महाकाय कल्पांतदहनोपम् |

भैरवाय नमस्तुभ्यंनुज्ञां दातुर्महसि ||

ॐ भं भैरवाय नमः |

अब आप किसी भी साधना में प्रवृत्त होने के लिए पूर्ण रूप से तैयार हैं....... प्रिय स्नेही भाइयो बहनों मेरा कहना सिर्फ इतना है कि किसी भी कारण आपकी साधना का कोई भी पक्ष छूटना नहीं चाहिए . चाहे फिर वह पूजा विधान ही क्यों ना हों .....

अभी नए जुड़े भाई बहनों के लिए विशेष ....

भाइयों बहनों ये सब कुछ **सदगुरुदेव** की **यज्ञ विधान** और **दैनिक साधना विधि**किताब में है, किन्तु शायद कई ऐंसे भी हैं जिनके पास ये नहीं है अत: इस हेतु सभी के लिए..... J

निखिल प्रणाम

GOTRAPURUSH SADHNA- MANOKAAMNA SIDDHI

The importance of pitrus have already been discussed that how from one bija which is the main base from that process of the creation keeps on running and how the blessing of that main bija holder stays and affects. This way about gautra even it could be said that from the bija of those main sages we are created or there is a contribution of them in our creation that's why they are called as our main dawn ancestor and with blessings of them our wishes could be fulfilled.

Poojan of gautra's sage is belived to be very essential part of vaidik karmakanda body. The reason behind it was that we worship our ancient sages and can remove our deficiencies for haapy life under their bliss and can fulfill our wishes and desires. Here it is require understanding that those great souls are still same dynamic as they used to be. They keep on showering their bliss and mercy but we have trapped our self so much so that we do not gives any concern for our tradition and with that being out of it we have made our lives full of troubles.

For the main aadipurusha of gautra processes and mantras could be found in tantra. But for every gautra individual mantra description here is not possible. The process given below could be done by anyone and can have bliss of gautra great souls.

This sadhana could be started from any day; best time for sadhana is early morning bramha muhurta.

Direction should be north or east. Sfatik rosary should be brought to use. Cloths and aasana should be white in colour.

By memorizing main gautra purusha do the poojan of him mentally. Light dhoop and ghee lamp. After that chant 25 rosary of following mantra.

Om amukam gautr purushay sarvaarth saafalyam pranamyaami

Here one should take name of gautra at the place of amukam in mantra. Those who are not aware about their gotra can use the word ‘Aadi Purushaay’

This process should be done for 8 days. This results in bliss of pitru and gautra and fulfilment of wishes or desires of mind.

जीवन मे पितरों की महत्ता के बारे मे उल्लेख कर दिया गया है की किस प्रकार एक बीज जो की मूल होता हे उससे लगातार सृजन की क्रिया आगे बढती जाती है और वह मूल बीज धारक की कृपा किस प्रकार सदैव बनी रहती है. इसी क्रम मे गौत्र के विषय मे भी यही कहा जाता सकता है की मुख्य ऋषियो के बीज से हमारा निर्माण हुआ है या उनका योगदान हमारे सर्जन मे रहा है इसी लिए वे हमारे मुख्य आदि पूर्वज भी कहे जाते है. इस स्थिति मे उन महापुरुषों की विशेष कृपा को प्राप्त किया जा सकता है और उनके आशीर्वाद से हमारी मनोकामनाओ की पूर्ति भी संभव है.

व्यक्ति के गौत्र आदि पुरुष के पूजन को हमारे वैदिक शास्त्रों मे कर्मकांड का आवश्यक अंग माना है इसके पीछे यही चिंतन था की हम उन सिद्ध पुरुषों की उपासना करे और उनके आशीर्वादतले अपने जीवन के अभावो को दूर कर सके और अपनी मनोकामनाओ की पूर्ति कर सके. यहाँ पर एक बात को समझना आवश्यक है की वे महान आत्माए आज भी उतनी ही गतिशील है जितनी वे पहले हुआ करती थि. वे निरंतर कृपा को अनुकम्पा को प्रवाहित करते रहते है लेकिन हम अपने आप मे इतने उलझ चुके है की अब हम अपनी परंपराओ पर ध्यान तो नही देते हे लेकिन साथ ही साथ उससे विमुख होकर खुद अपने ही जीवन को व्यर्थ मे समस्याओ से ग्रस्त रख रहे है

गौत्र के आदिपुरुषों के लिए भी तन्त्र मे विभ्भिन मंत्र और प्रक्रियाए प्राप्त होती है. लेकिन हर एक गौत्र के लिए अलग अलग प्रक्रियाए देना संभव नहीं है. यहाँ पर जो प्रयोग दिया जा रहा है वह प्रयोग कोई भी व्यक्ति सम्प्पन कर सकता है और गौत्र महात्माओ की कृपा प्राप्त कर सकता है.

इस साधना को किसीभी वार से शुरू किया जा सकता है, साधना के लिए ब्रम्ह मुहूर्त का समय उत्तम है दिशा उत्तर या पूर्व रहे, माला स्फटिक की हो. वस्त्र आसन सफ़ेद रहे

अपने गौत्र के आदि पुरुष को याद कर उसका मानसिक पूजन करे. धुप व् शुद्ध घी के दीपक को प्रज्वल्लित करे. उसके बाद निम्न मंत्र की २५ माला का जाप करे.

ॐ अमुकं गौत्र पुरुषाय सर्वार्थ साफल्यम प्रणम्यामि

इसमें अमुक की जगह गौत्र का नाम लेना चाहिए. जिन्हें अपने गौत्र के बारे मे पता न हो वो वहा पर आदिपुरुषाय शब्द का उपायोग करे.

इस प्रयोग को ८ दिन करना चाहिए. जिससे पितृ एवं गौत्र प्रसन्न होते है और मनोवांछित इच्छाओ की पूर्ति करते है.

PITRA MOKSH MOKSH

Pitra (Ancestors) are one of the very important part of our Vedic culture. There are various types of questions present before modern western science that human's journey is not merely a journey from birth to death. Then what is the state of man before birth or after death. But our ancient sages and saints put forward various types of facts regarding this subject based on their elaborate research and subtlest analysis. Out of which one of the important aspect was related to Pitra aspect too.

Pitra has got an expanded meaning but for making a layman understand, description can be given like this.

Person is composed of body and Aatm element (soul). There is an important role of Praan element too. When physical body is combined with the Aatm element, then one attains the form of human. But after destruction of physical body, Aatm element is left. This Aatm element in order to move in astral world requires one body, this body is Vaasna Shareer. This is the first astral body. Due to this body, person's thinkingremains the same after death as it was before death. This is called soul by us. Combination of Aatm element with subtle

body is soul. Now the relatives of person i.e. family members, after their death, their relationship does not end since they are in Vaasna Shareer in which same cravings/relation exist as there were before death. Therefore, they expect same things from generation as they were expecting before death.

Now the thing is that due to craving relationship, they remain in Vaasna world rather than astral world. In other words, they live on earth only, related to our world and their movement becomes subtle. Since they are not free from bonds, they cannot accept new womb by which they can take birth and start a new life or go to astral world and rest before taking new birth.And in all these states, they have highest expectation and hope from their descendants. That's why in our culture, there is very important place of Pitra Moksha.

ShraadhPaksh is commencing from firtst day of Krishna Paksha od Ashwin Month.This prayog should be done on 1st October. It is Monday and this prayog is related to Lord Shiva's Mrityunjay form.Thus it is auspicious Muhurat for the sadhna prayog for attaing blessings of Pitra.If sadhak is unable to do this prayog on this day, he can do it on any Monday.

Sadhak attains following benefits from this prayog.

In Pitra paksha of sadhak, Pitra who are still bonded attains Mukti.They gets freedom from physical craving bonds so that they can take new birth or can take rest in Astral World.

Sadhak gets rid of all Pitra Dosh and if there is any problem due to them, he gets relief from them.

Sadhak gets the blessings of Pitra. Therefore unfinished works of sadhak are accomplished by the blessings of Pitra and he attains progress in business and money related fields.

Sadhak should do this prayog at the time of sunset. Sadhak can do it also in the Morning at the time of sunrise but if sadhak does it during sunset then it is best.

Sadhak should take bath, wear white dress and sit on white aasan. Sadhak should face North direction.

Sadhak should establish Parad Shivling or ay Shivling in front and do its normal poojan. After Poojan, sadhak should pray to whole Pitra and light Ghee lamp. Sadhak should make offering of fruits and Kheer.

After this, Sadhak should start mantra Jap. Sadhak should use Rudraksh rosary for reciting Mantras.

First of all, sadhak should chant 1 round of Maha Mrityunjay Mantra.

Om TriyambakamYajamaheSugandhimPushtivardhanam

UrvaarukmivBandhnaanMrityorMuksheeyMaamrtaat

After this, sadhak should chant 21 rounds of the below mantra

omjumhreem kleem pitrumoksham kleem hreemjumnamah

After chanting 21 rounds, sadhak should again chant 1 round of Maha Mrityunjay Mantra.

After it, sadhak should pray to Lord Mrityunjay for salvation of whole Pitras. And sadhak should pray to whole Pitras to give their blessings.

Fruits and Kheer should be offered to Cow. If it is not possible then it should be immersed in river, pond or ocean while remembering Pitras. Rosary should also be immersed. It is necessary to do this on the same day or next day. In this way, this prayog is completed.
===पितृ हमारी वैदिक संस्कृति का एक अत्यधिक महत्वपूर्ण भाग है. आधुनिक पाश्चात्य विज्ञान के सामने भी आज कई प्रकार के प्रश्न आज विद्यमान है की मानव यात्रा मात्र जन्म से मृत्यु तक ही नहीं है तो फिर उसके पहले या बाद में मनुष्य की क्या और किस प्रकार गति होती है. लेकिन हमारे प्राचीन ऋषियों तथा सिद्धों ने इस सबंध में बहोत ही सूक्ष्म से सूक्ष्मतम शोध और खोज कर के कई प्रकार के तथ्यों को सामने रखा था. इसमें से कई महत्वपूर्ण पक्ष में से एक पक्ष पितृ सबंधित भी है.
पितृ का अर्थ अत्यधिक वृहद है लेकिन सामान्यजन को समजने के लिए इसका विवरण कुछ इस प्रकार से दिया जा सकता है.
मनुष्य शरीर तथा आत्म तत्व से निर्मित है. प्राण तत्व का भी पूर्ण योगदान है. जब शरीर स्थूल होता है और उसके साथ आत्मतत्व का संयोग होता है तो वह मनुष्य के रूप में होता है. लेकिन स्थूल शरीर का नाश होने पर आत्म तत्व बचता है इस तत्व को भी गतिशीलता के लिए सूक्ष्म लोक में भी एक शरीर की ज़रूरत पड़ती है, यह वासना शरीर होता है. यह प्रथम सूक्ष्म शरीर है. इस शरीर के कारण व्यक्ति के मानस मृत्यु के पश्च्यात भी वेसा ही रहता है जेसा मृत्यु से पहले होता है. इसी को ही हम आत्मा का नाम देते है. आत्म तत्व के साथ सूक्ष्म शरीर का संयोग वही आत्मा है. अब मनुष्य के जो भी सबंधी होते है अर्थात जिसको हम परिवार का सदस्य कहते है उनकी मृत्यु पश्च्यात उनके आपसे सबंध विच्छेद नहीं होते क्यों की उन्हें वासना शरीर प्राप्त है

जिसमे उनकी वासना अर्थात बंधन वही होते है जो की मृत्यु से पहले. इसी लिए पीढ़ी या वंसज से उनकी अपेक्षाएं ठीक उसी प्रकार से होती है जिस प्रकार मृत्यु से पहले.

अब यहाँ पर बात इस प्रकार से है की वासनात्मक बंधन के कारण उनकी गति शुक्ष्म लोक में ना हो कर वासनाजगत में होती है अर्थात वह पृथ्वी पर ही हमारी दुनिया से सबंधित रहते है और उनकी गति सूक्ष्म हो जाती है. इस प्रकार बंधन मुक्त ना होने के कारण वे नूतन गर्भ को भी स्वीकार नहीं कर पाते जिसके माध्यम से वे जन्म ले कर नया जीवन शुरू कर सके या सूक्ष्म लोक में जा कर वहाँ पर गर्भाधान से पहले विश्राम प्राप्त कर सके. और इन सब स्थितियों में उनकी अपेक्षा और आशा अपने वंश से सर्वाधिक होती है. इसी लिए हमारी संकृति में पितृ मोक्ष का अत्यधिक महत्वपूर्ण स्थान और महत्त्व है.

श्राद्ध पक्ष का आरंभ अश्विन महीने के कृष्ण पक्ष की प्रतिपदा से हो रहा है. यह प्रयोग तारीख १ अक्टूबर को करना चाहिए. इस दिन सोमवार है तथा यह प्रयोग भगवान शिव मृत्युंजय स्वरुप का है अतः इस प्रकार यह पितृकृपा प्राप्ति सबंधित इस साधना प्रयोग के लिए एक श्रेष्ठ मुहूर्त है, इस दिन यह प्रयोग सम्प्पन न कर सके वे व्यक्ति इस प्रयोग को किसी भी सोमवार पर कर सकते है.

इस प्रयोग से साधक को निम्न लाभों की प्राप्ति होती है

साधक के पितृ पक्ष में अमुक्त पितृ को मुक्ति की प्राप्ति होती है तथा वह वासना शरीर से मुक्त हो कर नूतन जन्म स्वीकार करने के लिए या फिर सूक्ष्म लोक में अनुरूप विश्राम के लिए दैहिक वासनात्मक बंधनों से मुक्ति मिलती है.

साधक को सभी पितृ दोष की निवृति होती है तथा इससे सबंधित अगर कोई समस्या हे तो उसे राहत मिलती है.

साधक को पितृ कृपा की प्राप्ति होती है अतः साधक के रुके हुवे काम पितृ कृपा से आगे बढते है, व्यापर तथा धन सबंधित कार्य क्षेत्र में भी उन्नति की प्राप्ति होती है.

यह प्रयोग साधक सूर्यास्त में प्रारंभ करे. प्रातःकाल सूर्योदय के समय भी यह प्रयोग को किया जा सकता है. लेकिन अगर सूर्यास्त के समय साधक इस प्रयोग को प्रारंभ करे तो उत्तम है.

साधक को स्नान आदि से निवृत हो कर सफ़ेद वस्त्रों को धारण कर के सफ़ेद आसान पर बैठना चाहिए.

साधक का मुख उत्तर दिशा की तरफ होना चाहिए.

साधक अपने सामने पारद शिवलिंग या कोई भी शिवलिंग को स्थापित करे तथा उसका सामान्य पूजन करे.

पूजन के बाद साधक अपने समस्त पितृ को मान में वंदन करते हुवे उनके लिए एक घी का दीपक लगाए, साधक फल का तथा खीर का भोग लगाये.

इसके बाद साधक मंत्र जाप शुरू करे. साधक को मन्त्रजाप के लिए रुद्राक्ष माला का प्रयोग करना चाहिए.

साधक सर्व प्रथम महामृत्युंजय मंत्र की एक माला मंत्र जाप करे.

ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।

उर्वारुकमिव बन्धनान् मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्

इसके बाद साधक निम्न मंत्र की २१ माला मंत्र जाप करे

ॐ जुं ह्रीं क्लीं पितृ मोक्षं क्लीं ह्रीं जुं नमः

(om jum hreem kleem pitru moksham kleem hreem jum namah)

२१ माला के बाद साधक फिर से एक माला महामृत्युंजय मंत्र की करे.

इसके बाद साधक भगवान मृत्युंजय से समस्त पितृ प्रेत की मोक्ष के लिए प्रार्थना करे. तथा समस्त पितृ को आशीर्वचन के लिए प्रार्थना करे.

साधक इस प्रकार प्रयोग को पूर्ण करे. जो फल तथा खीर है उसे गाय को खिलाना चाहिए. अगर यह किसी भी प्रकार से संभव नहीं हो तो पितृ याद कर के उसे नदी, तालाब या समुद्र में विसर्जित कर दे. साथ ही साथ माला को भी विसर्जित कर दे. यह कार्य उसी दिन या दूसरे दिन हो जाना आवश्यक है. इस प्रकार यह प्रयोग पूर्ण होता है

कार्य सिद्धि हेतु सरल साधना ....

कर्म प्रधान इस विश्व मे बिना कर्म किये न देवता .... न दानव ....न ही किसी मनुष्य का जीवन संभव हैं पर यह कर्म किस प्रकार का हो यह व्यक्ति और परिस्थितियों पर कहीं ज्यादा निर्भर करता हैं ..कोई या किसी के लिए मानसिक श्रम की महत्वता हैं तो कोई सिर्फ शारीरिक श्रम कर रहा हैं . और साधना भी एक अति उच्चस्तरीय कर्म हैं जिसमे जितना ज्यादा एकाग्रता और निष्ठा की जरुरत होती हैं उतनी तो शायद किसी ओर कर्म मे नही ..पूर्ण रूप से कर्म शून्य हो पाना तो बस महा योगियो के लिए भी सम्भव हैं हालाकि वे भी इस अवस्था को पाने के बाद लगतार और भी कर्म शील हो जाते क्योंकि जिस तरह से वे कार्यों का संपादन या काम करते हैं वही बहुसख्यक के लिए आदर्श हो ता हैं अतः सभी को कर्म तो करना ही पड़ता हैं . पर यह कर्म या कार्य फलीभूत होगा ही . यह हमेशा नही कहा जा सकता हैं और जब ऐसा नही हैं तो तो स्वाभाविक हैं की कार्य के संभावित परिणाम की चिंता तो मन मे आएगी .

और इतना विवेक होना ही चहिये की ,किसी भी कार्य को करने से पहले हमारे कार्य का संभावित परिणाम क्या होगा .नही तो यह गेंदे के पौधा लगाकर उसके फल की इच्छा रखने जैसा हो जायेगा ..जो की अर्थ हीन हैं क्योंकि उसमे फल आता ही नही हैं.

जीवन मे कतिपय मौको पर कुछ ऐसे कार्य आ जाते हैं जिनका सफल होना अति आवश्यक होता हैं ..कई बार तो हमारे जीवन की पूरी आधारशिला उस पर टिकी होती हैं. खासकर जॉब के लिए साक्षात्कार मे जाना,विवाह के लिए उचित जगह पर बात चलाना, या घर मकान के लिए लोन लेना आदि अनेको कारण गिनाए जा सकते हैं और इन बातों का समय पर पूरा ना होना मानो हार के सामान ही हैं .

पर कैसे मनोवांछित कार्य मे पूर्णता पायी जाए कोई तो हो ऐसा उपाय ...?भौतिक उपाय तो हम सब जानते हैं ही उस पर क्या विचार विमर्श करना .और साधना जगत हमारे प्रयासों को रोकती नही हैं न ही हमें निठ्‌ ल्ला बने रहने को कहती हैं बल्कि कार्य मे बाधाए ना आये और हम सही समय पर इच्छित परिणाम की प्राप्ति कर पाये ....तो हमें सहयोग ही करती हैं ...एक ऐसी ही साधना आपके सामने ..

मंत्र :

ॐ नमो भगवती पद्मावती सर्व जन मोहिनी ,सर्व कार्य कारिणी मम विकट संकट हरणी,मम मनोरथ पुरिणी,मम चिंता चूर्णी,ॐ नमो ॐ पद्मावती नम: स्वाहा ||

विधान :

- किसी भी शुभ दिन से दिन या रात मे जप किया जाना हैं .
- वस्त्र आसन पीले हो तो अधिक उचित होगा .
- माला कोई भी या हकीक की ज्यादा उचित होगी .
- मात्र ११०० बार जप करना हैं , दिन निर्धारित नही हैं पर ११ या २१ दिन मे कर ले .इससे ज्यादा उचित नही हैं .
- और दसवा हिस्सा मतलब अब १०८ बार आहुति अबश्य दे दे.

जब तक कार्य मे अनुकूलता नही मिल जाती तब तक एक माला जप जरुर करते चले .अब यह तो बताने की आवश्यकता हैं की सदगुरुदेव का पूर्ण पूजन हर साधना मे हर दिन एक आवश्यक अंग होगा न केबल इस बल्कि हर साधना मे ...

==================================

In this Karma-centric world, without doing any karma, neither the deva….nor the devils…..and none of human being's life is possible. However, the type of Karma done depends on the person and more importantly on the circumstances .For some, mental hard-work is important and some are only doing physical hard-work…….And Sadhna is also a high-order Karma which demands a lot of dedication and loyalty that no other karma demands. Getting rid of karmas completely only is possible for Maha Yogis. However, after reaching this stage, they become more and more disposed to the karmas because the way they do or carry out their work is an example for most of the people. Therefore, everyone has to involve in karmas …..But that karma will be fruitful…..that cannot be said always and if it is like this, then there will definitely be anxiety in our mind regarding the possible results of our karma.

And person should be intelligent enough to know the possible results of the work before doing it…..Otherwise the scenario will be like anticipating flower from the plant of marigold…..which is meaningless since it does not bear any flower.

In life several occasions come when it becomes very important that our work is successful…..sometimes the foundation of our life is based on them like going to the interview for job, contacting right family for the marriage or taking loan for house etc. Such type of work if not fulfilled on time, is a huge setback for us.

But there should be some remedy to get the completeness in our desired work…? Materialistic way we know, why to waste energy discussing it. Sadhna world neither asks us not to make efforts nor asks us to remain idle, it only assists us so that no hurdles come in middle of our work and we get the desired results at right time. Here is one such sadhna in front of you all…

Mantra:

Om Namo Bhagwati Padmavati Sarv jan Mohini, Sarv KaaryaKaarini Mam Vikat Sankat Harni,MamManorathPurini,MamChintaChurni, Om Namo Om Padmavati Namah Swaha ||

Process:

It can be started from any auspicious day and chanting can be done in morning or night.

If aasan and dress is yellow then it will be much better.

Rosary can be anything and if it is of Hakik, it is better.

You have to chant it 1100 times, number of days is not fixed but if it is completed in 11 or 21 days, then it does not get any better than this.

And 1/10 th part means offer 108 aahutis necessarily.

Till our circumstance does not get favorable, keep on chanting 1 round of rosary…..Now it is needed to tell you all that complete poojan of Sadgurudev will be essential part of every sadhna on every day. Not only in this sadhna but in all sadhnas…..

****NPRU****

for our facebook group-
http://www.facebook.com/groups/194963320549920/

PLZ CHECK : - http://www.nikhil-alchemy2.com/

Posted by Nikhil at 2:38 AM 3 comments:
Labels: KAARYA SIDDHI SADHNA, PADMAVATI SADHNA

SUNDAY, AUGUST 28, 2011

FOR FINANACIAL GAIN-PADMAVATI DEVI PRAYOG

सदगुरुदेव भगवान कहते हैं की जिस काल में उन्होंने अपना एक शिक्षक के रूप में, कार्य प्रारंभ किया था, उस काल में और आज के काल में कोई ज्यादा अंतर नहीं हैं , उ स समय व्यक्ती के चरित्र का बहुत मूल्य था अगर व्यक्ति भले ही निर्धन हो पर यदि चरित्र वान होता था तो उच्च से उच्च व्यक्ति फिर वह चाहे कितना ही धनवान हो उसे खड़े हो कर सम्मान देता ही था ,

पर आजके युग में चरित्र की कोई मूल्य ही नही हैं , जिसके पास धन हो सब उसे ही सम्मान देते हैं फिर भले ही बह कितने ही गिरे हुए चरित्र का ही क्यों न हो , वह भी ठीक था , और आज भी ठीक हैं .

यह सत्य हैं धन सब कुछ नहीं होता पर बहुत कुछ तो होता हैं ही , इसी बात को ध्यान में रख कर सदगुरुदेव भगवानने इतनी साधनाए मात्र धन के पक्ष को मजबूत करने की लिये दी थी.

सदगुरुदेव भगवान् ने यही भी कहा था की " तुम इन साधनाओ का मूल्य समझते नहीं हो अगर इनमे से एक भी साधना अगर पूरे मनोयोग से की होती तो आज तुम शिष्यों में से कितनो के पास यह आर्थिक समस्या होती ही नहीं , "यह कहते हुए उन्होंने लगभग २० विभिन्न संप्रदाय के नाम , जितनी की साधनाओ को उन्होंने एक ही पत्रिका के अंक में दी थी , गिनाये थी

"लक्ष्मी प्राप्ति ", "एश्वर्य महा लक्ष्मी साधना " , "तारा साधना ", "महालक्ष्मी साधना के दुर्लभ प्रयोग ", ऐसे अनेको ग्रंथो की रचना की हैं पर हम लोग भी समझे तो हैं न ,, पर हम तो साधना को मात्र पढ़ कर रख देने की बात समझते हैं .

इसी श्रंखला में उन्होंने एक बार एक लेख दिया था, "लक्ष्मी साधना के दुर्लभ रहस्य" उसमे उन्होंने यह बताया हैं की जब सामान्य लक्ष्मी साधना से भी लाभ होता न दिख रहा हो तो व्यक्ति को जैन धर्म की

धन की आधिस्थार्थी " पद्मा वती देवी “ की साधना करने को आगे आना ही चाहिए , इस स्वरुप की प्रभाव तो आज हम सभी जैन धर्म के लोगों की संमृद्धि देख कर समझ सकते हैं ही सदगुरुदेव भगवान ने अनेको बार भगवती पद्मा वती की पूरी साधना विधि दी हैं , पर ….

जब समय न हो , जो की हमारी पूरी पीढ़ी का मूल वाक्य हैं तब …

- जब हम बड़ी साधना के लिए उत्सुक न दिखे तब ..
- जब हम साधनात्मक नियम पालन करने के इच्छुक न हो तब ..
- जब हम अपने पर नियंत्रण न कर पा रहे हो तब,,
- जब हम महगें यंत्र और माला न ले पा रहे हो तब.
- जब हमारे घर में साधना का वाता वरण ही न हो तब
- न ही हमारे पास कोई अपना साधना कक्ष हो तब ..

इन्ही बातों को सदगुरुदेव भगवान ने बहुत पहले समझ कर अनेको सरल प्रयोग भी दिए थे , जो की बृहद साधनाओ का स्थान तो नहीं ले पाएंगे .

पर आपको जीवन में कुछ तो अनुकूलता ला पाएंगी ही , और जब आपको थोडा भी अनुकूलता दिखाई देगी तो आप स्वयं ही आगे बढ़ेंगे हैं , हैं न .

मंत्र :

ओम पद्मावती सकल पद्मे पद्मपुषिनी वान्छिताथ्र्य पुरय पुरय नमः

सामान्य नियम ;

- यह मंत्र को रोज सुबह १ माला १ महीने तक जाप करना चाहिए
- और आर्थिक उन्नति के लिए प्रार्थना करनी चाहिए
- साधक को भोजन मे लहसुन प्याज का त्याग करना चाहिए.
- माला स्फटिक / कमलगट्टे की रहे.
- दिशा उत्तर, वस्त्र ,आसन सफ़ेद..
- जप का समय सुबह का

क्या एक बार फिर से लिखूं की सदगुरुदेव भगवान् से प्रार्थना तो हर साधना का अनिवार्य अंग हैं ही , यह तो आप सभी जानते हैं ही , पर हममे से कितने हैं जो हर दिन का मंत्र जप करने के बाद , सारे मंत्र जप को अपने परम प्रिय ,प्राणा धार सदगुरुदेव के श्री दिव्य चरण कमल में पुरे मनो योग से समर्पित करते हैं …हर साधना का मूल आधार सदगुरुदेव भगवान् नहीं हैं बल्कि वे ही एक मात्र आधार हैं ………

वह ही आदि हैं अंत हैं

.. सदगुरुदेव देव साक्षात् परम ब्रहम

तस्मै श्री सदगुरुदेव नमः

आज के लिए बस इतना ही

****

Sadgurudev Bhagvaan , on a place says that , “in comparison to the time ,when he started his career as a teacher and the current one ,only differences is that , in that era , character had a very high value , a person with high character with very low financial health , get respect by even the very wealthy person, and now the character has been replaced by money, now character has not has such value , only if a person has money ,everyone will see and do the respect of him, that was right at that time so this is right in this time.” Money is not everything but it can do many things, for that view our Sadgurudev has given us so many sadhana to improve our financial health.

Sadgurudev Bhagvaan says that “ you are not understanding the values of theses sadhana, if you had completed any one sadhana with full heart and devotion than many of you, are not facing the problem related to wealth/money, as you are facing now ” and he mentioned approx 20 various sect name of that , he has given sadhana specially in a issue at that time.

“Lakshmi prapti “, “Ashvery Mahalakshmi Sadhana” , “Tara sadhana”, “Mahalakshmi sadhana ke durlabh prayog” like so many sadhanatmak books written by him. But we are not understanding their value, if we can than…..

In this relation , once he has given various hidden secret rules related to lakshmi sadhana to us and mentioned that when desired financial property is not achieving through various lakshmi sadhana , than a person must go for “padmavati devi sadhana” , who is the ruler of financial prosperity in jain dharma sadhana. And one can understand the financial health our jain brothers . Sadgurudev Bhagvaan has given many times padma vati sadhana ,but….

When we do not have time (the basic argument of our generation) than..

When we are not interested in any big sadhana than,,

When we are not ready for to follow sadhanatmak rules than..

When we are not able to purchase costly yantra and mala than..

When such a sadhanatmak atmosphere is not available in our home than..

When we have not any separate room for sadhana than..

Taking care of these arguments Sadgurudev Bhagvaan has given many small sadhana for this purpose, yes its is true that they are a not replacing the effect of

long sadhana but they can surely given some relief and positivity in money matter, when you feet the change you can surely come forward to do sadhana .. yes it is true..

Mantra ;

Om padmavati sakal padme padampushini vaanchhitarthye puray puray namah ||

General rules:

Do jap this mantra one mala for next 30 days .

And pray for financial improvement.

Should not eat lahsun and pyaj in that duration.

Jap mala be off sphatik or kamal-gutte .

Direction should be north and cloths/aasan be of white color.

Jap time should be morning hours,

Is it right for me to request you all that , pray to Sadgurudev Bhagvaan for success in any sadhana , is an essential / must part of any sadhana, this all you know already, but how many of us , offer our jap at the end of any days mantra to the divine holy lotus feet of Sadgurudev Bhagvaan with full devotion and heart ,

Sadgurudev Bhagvaan is not one of the basic foundation of any sadhana, but he is the only foundation of any sadhana.

He is the beginning and he is the end.

“Sadgurudev sakshat param braham ..

Tasmai shri sadgurudev namah.”

This is enough for today..

RASESHVAR GUHYATAM VIDHAAN - ATOOT AISHVARYA PRADAAYAK "KUBER VARAD PRAYOG"

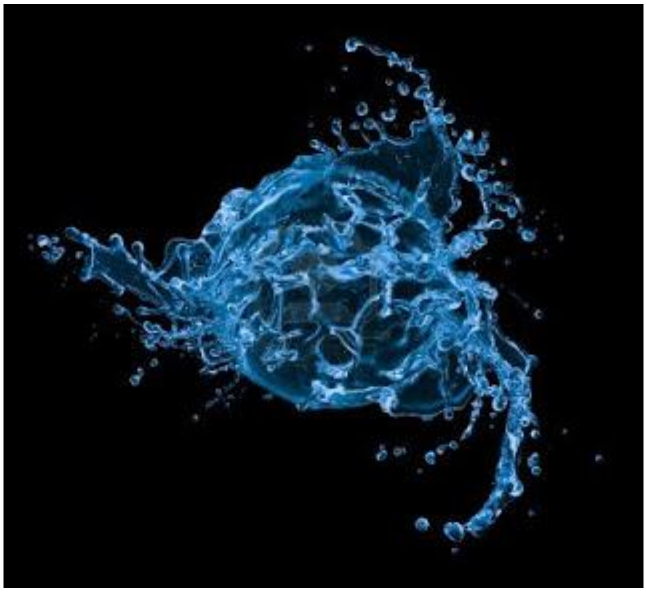

चन्दनागुरुकर्पुर कुंकुमान्तर्गतोरसः
मूर्छितः शिवपूजा सा शिवसानिध्यसिद्धये

उपरोक्त पंक्तियाँ रस साधको के मध्य प्रचलित पंक्तियाँ है जो की रस एवं दुर्लभ रस लिंग अर्थात पारद शिवलिंग की महत्ता को स्पष्ट करता है. निश्चय ही रस एक अति दिव्य धातु है पदार्थ है जिसको हम तांत्रिक पद्धति से साध ले तो हम ज़रा मृत्यु के बंधन से मुक्त हो सकते है, रस सिद्ध श्री नागार्जुन ने तो यहाँ तक कहा है की इस दिव्य धातु के माध्यम से पुरे विश्व की दरिद्रता एवं सभी प्रकार के कष्ट के साथ साथ मृत्यु को भी मिटाया जा सकता है

उपरोक्त श्लोक का विश्लेषण कुछ इस प्रकार है की रस चन्दन, कुमकुम इत्यादि पदार्थो से की जाने वाली पूजा का फल पारद के स्पर्शमात्र से ही साधक को शिवलिंग का पूर्ण पूजन का फल प्राप्त हो सकता है, मूर्छित अर्थात अचंचल पारद अर्थात शिवलिंग की पूजा करने वाले सौभाग्यशाली साधक भगवान सदाशिवसे एकाकार होने की उनके सानिध्य को प्राप्त करने की सिद्धि भी प्राप्त कर सकता है.

जो भी व्यक्ति पारद एवं रस तंत्र के क्षेत्र में रूचि एवं जानकारी रखता है वे निश्चय ही **पूर्ण चैतन्य विशुद्ध पारद शिवलिंग** के महत्त्व के बारे में समझ सकते है. इसी लिंग के लिए तो ग्रंथो में कहा है की पारद से निर्मित शिवलिंग के दर्शन मात्र से ही ज्योतिर्लिंग एवं कोटि कोटि लिंग के दर्शन लाभ के जितना पुण्य प्राप्त होता है. यह विशेष लिंग अपने आप में अनंत गुण भाव से युक्त धातु से निर्मित होता है इसी लिए उसमे किसी भी व्यक्ति को प्रदान करने की क्षमता अनंत गुना होती है. और तंत्र के सभी मार्ग में चाहे वह लिंगायत हो, सिद्ध हो, क्रम हो या कश्मीरी शैव मार्ग हो या फिर अघोर जैसा श्रेष्ठतम साधना मार्ग हो, सभी साधना मत्त में पारदशिवलिंग की एक विशेष महत्ता है तथा निश्चय ही कई प्रकार के विशेष प्रयोग गुप्त रूप से सभी मत्त एवं मार्ग में होती आई है. इसी क्रम में सदगुरुदेव ने कई विशेष प्रयोगों को साधको के मध्य रखा था जिसमे

पारदशिवलिंग के माध्यम से पूर्व जीवन दर्शन, शून्य आसन एवं वायुगमन आदि प्रयोग के बारे में समझाया एवं प्रायोगिक रूप से संपन्न भी करवाए थे. निश्चय ही अगर पूर्ण चैतन्य विशुद्द पारद शिवलिंग अगर व्यक्ति के पास हो तो साधक निश्चय ही कई प्रकार से अपने भौतिक एवं आध्यात्मिक जीवन को उर्ध्वगामी कर पूर्ण सुख एवं आनंद की प्राप्ति कर सकता है.

रसलिंग के माध्यम से संपन्न होने वाले कई विशेष एवं दुर्लभ प्रयोग को हमने समय समय पर आप सब के मध्य प्रस्तुत किया है इसी क्रम में इससे संपन्न होने वाले दो विशेष गोपनीय प्रयोगों को आप के सामने रखे जा रहे है.

१.अटूट धन सौभाग्य प्राप्ति कुबेर वरद प्रयोग -

महोदरं महाकायं द्विदंष्ट्रसमन्वितं
शङ्खपद्मगदाहस्तो कुबेराय नमाम्यहम्

बात जब दैव शक्तियों की सहायता से धन की प्राप्ति करना हो या अपने जीवन में पूर्ण सुख भोग की प्राप्ति करना हो तो निश्चय ही कुबेर का स्थान अपने आप में अन्यतम है. कुबेर यक्ष के आधिपति है तथा देवताओं के कोष के अध्यक्ष है. श्री कुबेर की साधना उपासना आदि काल से ऐश्वय की सिद्धि के लिए होती आई है. दक्षिण एवं वाम पक्ष में कुबेर सिद्धि के कई गुढ़ विधान है लेकिन इनकी उपासना एवं साधना सहज नहीं है क्यों की इनके विशेष विधान गुढ़ है तथा श्रमसाध्य है जिनको आज के युग में सभी साधको को संपन्न करना मुश्किल है. तथा श्री कुबेर से सबंध में जो विशेष लघु प्रयोग विधान है वह विविध सिद्धो के पास सुरक्षित है तथा जनसामान्य के मध्य इनका प्रचार नहीं है. इन सब विधानों में सब से दुर्लभ विधान पारद शिवलिंग के माध्यम से होने वाले विधान है. क्यों की कुबेर स्थापन आदि विधान रस लिंग के माध्यम से पूर्ण चैतन्य रूप से संपन्न होते है तथा जिनकी उपासना स्वयं कुबेर ही करते है ऐसे सदाशिव के विविध रूप मृत्युंजय अभिषेक तथा रूद्र स्थापन आदि क्रिया पारद शिवलिंग के निर्माण के बाद उसमे चैतन्यकरण क्रिया एवं प्राण प्रतिष्ठा करते वक्त ही किया जाता है. अब ऐसे पारद शिवलिंग पर विशेष प्रयोग कुबेर से सबंधित हो तो फिर सफलता दूर कहाँ.
इस विधान में लगभग **३ घंटे** लगते हैं और ये मात्र **३ दिन** का ही क्रम है.आप सम्पूर्ण परिवार की उन्नति और भाग्योदय के संकल्प के साथ इस विधान को संपन्न कर सकते हैं. किसी भी सोमवार की प्रातः या मध्यान्ह रात्रि में स्नान आदि से निवृत्त होकर श्वेत वस्त्र या पीले वस्त्र पहन कर आसन पर उत्तर मुख करके बैठ जाएँ और बाजोट पर उसी रंग के वस्त्र को बिछाएं,जिस रंग के वस्त्र आपने धारण किये हैं. अब आप हमेशा की तरह सदगुरुदेव और भगवान् गजानन गणपति का पूजन और सामर्थ्यानुसार मंत्र जप संपन्न कर पारदेश्वर को स्नान कराकर एक ताम्र पात्र में स्थापित कर दें. शाक्त परंपरा के अनुसार उस पात्र में एक मैथुन चक्र का

कुमकुम से निर्माण कर तब उस पर रसेश्वर को स्थापित करे. और उनसे समस्त दुर्भाग्य को दूर कर पूर्ण सौभाग्य और ऐश्वर्य प्राप्ति की प्रार्थना करें.

इसके बाद सामने दो अलग अलग पात्रों में सफ़ेद चन्दन और कुमकुम को घोलकर रख लें. सर्वप्रथम भगवान का निम्न ध्यान कर पंचोपचार पूजन करें और पूजन में खीर का भोग अवश्य लगावें.

ध्यान मंत्र-

ध्यायेन्नित्यंमहेशं रजतगिरिनिभं चारुचंद्रावतंसं
रत्नाकल्पोज्ज्वलांग परशुमृगवराभीतिहस्तं प्रसन्नम।
पद्मासीनं समंतात् स्तुतममरगणै व्याघ्रकृत्तिंवसानं
विश्वाद्यं विश्ववद्यं निखिलभयहरं पंचवक्त्रं त्रिनेत्रम॥

पंचोपचार पूजन के बाद निम्न कनकधारा स्तोत्र के २ पाठ करें. रस सिद्ध समाज में इस महा स्तोत्र को सुवर्णधारा स्तोत्र के नाम से भी जाना जाता है,वानस्पतिक संकेतों से भरा हुआ ये स्तोत्र विविध वनस्पतियों के सहयोग स्वर्ण निर्माण की क्रियाओं के रहस्य को स्वयं में समेटे हुए है और इसमें शब्दों का संयोजन ऐसा है की पारदेश्वर से इनका योग दरिद्रता और दैन्यता को दूर करता ही है. रस सिद्धि और कायाकल्प रहस्यों के अन्वेषण काल में आदरणीय स्वामी प्रज्ञानंद जी ने मुझे इस रहस्य से अवगत कराया था(मैंने उन्ही से प्राप्त अन्य रस तंत्र के कुछ रहस्यों का वर्णन ब्लॉग की लेखमाला रक्त बिंदु श्वेत बिंदु रहस्य में भी दिया है). और यदि सदगुरुदेव का आशीर्वाद रहा तो कालानुसार मैं इनसुवर्णधारा स्तोत्र श्लोको के उस अनुवाद को आपके समक्ष अवश्य रखूँगा.

अङ्गं हरेः पुलकभूषणमाश्रयन्ती
भृङ्गाङ्गनेव मुकुलाभरणं तमालम् ।
अङ्गीकृताखिल विभूतिरपाङ्गलीला
माङ्गल्यदास्तु मम मङ्गलदेवतायाः ॥ १ ॥
मुग्धा मुहुर्विदधती वदने मुरारेः
प्रेमत्रपाप्रणिहितानि गतागतानि ।
मालादृशोर्मधुकरीव महोत्पले या
सा मे श्रियं दिशतु सागर सम्भवा याः ॥ २ ॥
आमीलिताक्षमधिग्यम मुदा मुकुन्दम्
आनन्दकन्दमनिमेषमनङ्ग तन्त्रम् ।
आकेकरस्थितकनीनिकपक्ष्मनेत्रं

भूत्यै भवन्मम भुजङ्ग शयाङ्गना याः ॥ ३ ॥
बाह्वन्तरे मधुजितः श्रितकौस्तुभे या
हारावलीव हरिनीलमयी विभाति ।
कामप्रदा भगवतोऽपि कटाक्षमाला
कल्याणमावहतु मे कमलालया याः ॥ ४ ॥
कालाम्बुदालि ललितोरसि कैटभारेः
धाराधरे स्फुरति या तटिदङ्गनेव ।
मातुस्समस्तजगतां महनीयमूर्तिः
भद्राणि मे दिशतु भार्गवनन्दना याः ॥ ५ ॥
प्राप्तं पदं प्रथमतः खलु यत्प्रभावात्
माङ्गल्यभाजि मधुमाथिनि मन्मथेन ।
मय्यापतेत्तदिह मन्थरमीक्षणार्धं
मन्दालसं च मकरालय कन्यका याः ॥ ६॥
विश्वामरेन्द्र पद विभ्रम दानदक्षम्
आनन्दहेतुरधिकं मुरविद्विषोऽपि ।
ईषन्निषीदतु मयि क्षणमीक्षणार्धं
इन्दीवरोदर सहोदरमिन्दिरा याः ॥ ७ ॥
इष्टा विशिष्टमतयोपि यया दयार्द्र
दृष्ट्या त्रिविष्टपपदं सुलभं लभन्ते ।
दृष्टिः प्रहृष्ट कमलोदर दीप्तिरिष्टां
पुष्टिं कृषीष्ट मम पुष्कर विष्टरा याः ॥ ८ ॥
दद्याद्दयानु पवनो द्रविणाम्बुधारां
अस्मिन्नकिञ्चन विहङ्ग शिशौ विषण्णे ।
दुष्कर्मघर्ममपनीय चिराय दूरं
नारायण प्रणयिनी नयनाम्बुवाहः ॥ ९ ॥
गीर्देवतेति गरुडध्वज सुन्दरीति
शाकम्बरीति शशिशेखर वल्लभेति ।
सृष्टि स्थिति प्रलय केलिषु संस्थितायै
तस्यै नमस्त्रिभुवनैक गुरोस्तरुण्यै ॥ १० ॥
श्रुत्यै नमोऽस्तु शुभकर्म फलप्रसूत्यै

रत्यै नमोऽस्तु रमणीय गुणार्णवायै ।
शक्त्यै नमोऽस्तु शतपत्र निकेतनायै
पुष्ट्यै नमोऽस्तु पुरुषोत्तम वल्लभायै ॥ ११ ॥
नमोऽस्तु नालीक निभाननायै
नमोऽस्तु दुग्धोदधि जन्मभूम्यै ।
नमोऽस्तु सोमामृत सोदरायै
नमोऽस्तु नारायण वल्लभायै ॥ १२ ॥
नमोऽस्तु हेमाम्बुज पीठिकायै
नमोऽस्तु भूमण्डल नायिकायै ।
नमोऽस्तु देवादि दयापरायै
नमोऽस्तु शार्ङ्गायुध वल्लभायै ॥ १३ ॥
नमोऽस्तु देव्यै भृगुनन्दनायै
नमोऽस्तु विष्णोरुरसि स्थितायै ।
नमोऽस्तु लक्ष्म्यै कमलालयायै
नमोऽस्तु दामोदर वल्लभायै ॥ १४ ॥
नमोऽस्तु कान्त्यै कमलेक्षणायै
नमोऽस्तु भूत्यै भुवनप्रसूत्यै ।
नमोऽस्तु देवादिभिरर्चितायै
नमोऽस्तु नन्दात्मज वल्लभायै ॥ १५ ॥
सम्पत्कराणि सकलेन्द्रिय नन्दनानि
साम्राज्य दानविभवानि सरोरुहाक्षि ।
त्वद्वन्दनानि दुरिता हरणोद्यतानि
मामेव मातरनिशं कलयन्तु मान्ये ॥ १६ ॥
यत्कटाक्ष समुपासना विधिः
सेवकस्य सकलार्थ सम्पदः ।
सन्तनोति वचनाङ्ग मानसैः
त्वां मुरारिहृदयेश्वरीं भजे ॥ १७ ॥
सरसिजनिलये सरोजहस्ते
धवलतमांशुक गन्धमाल्यशोभे ।
भगवति हरिवल्लभे मनोज्ञे

त्रिभुवनभूतिकरी प्रसीदमह्यम् ॥ १८ ॥
दिग्घस्तिभिः कनक कुम्भमुखावसृष्ट
स्वर्वाहिनी विमलचारुजलाप्लुताङ्गीम् ।
प्रातर्नमामि जगतां जननीमशेष
लोकधिनाथ गृहिणीममृताब्धिपुत्रीम् ॥ १९ ॥
कमले कमलाक्ष वल्लभे त्वं
करुणापूर तरङ्गितैरपाङ्गैः ।
अवलोकय मामकिञ्चनानां
प्रथमं पात्रमकृतिमं दयायाः ॥ २०॥
देवि प्रसीद जगदीश्वरि लोकमातः
कल्याणगात्रि कमलेक्षण जीवनाथे ।
दारिद्र्यभीतिहृदयं शरणागतं मां
आलोकय प्रतिदिनं सदयैरपाङ्गैः ॥ २२ ॥
स्तुवन्ति ये स्तुतिभिरमीभिरन्वहं
त्रयीमयीं त्रिभुवनमातरं रमाम् ।
गुणाधिका गुरुतुर भाग्य भागिनः
भवन्ति ते भुवि बुध भाविताशयाः ॥ २२ ॥
सुवर्णधारा स्तोत्रं यत् शङ्कराचार्य निर्मितं
त्रिसन्ध्यं यः पठेन्नित्यं स कुबेरसमो भवेत् ॥

स्तोत्र पाठ के उपरान्त (**ॐ वैश्रवणाय स्वाहा**) मंत्र की १ माला संपन्न करें,इस हेतु गुरु माला या रुद्राक्ष माला का प्रयोग किया जा सकता है. इसके बाद निम्न मंत्र का उच्चारण करते हुए रसेश्वर पर चन्दन की बिंदी लगाइए.

ॐ सदाशिवाय नमः

फिर **ॐ ऐं श्रीं ह्रीं कुबेराय धन धान्य समृद्धिं देहि दापय नमः** (OM AING SHREEM HREENG KUBERAAY DHAN DHAANYA SAMRIDDHIM DEHI DAAPAY NAMAH)मंत्र को ११ बार बोलते हुए **११ बिंदी** जल मिश्रित कुमकुम (जो की हल्दी से बना हुआ हो अथवा अष्टगंध का प्रयोग करें)के द्वारा बिंदी के द्वारा भगवान् रसेश्वर पर लगायें.

बिंदी लगाने के बाद पुनः निम्न मंत्र का उच्चारण करते हुए चन्दन से रसेश्वर पर बिंदी लगायें.

ॐ रुद्राय नमः

फिर **ॐ ऐं श्रीं ह्रीं कुबेराय धन धान्य समृद्धिं देहि दापय नमः** (OM AING SHREEM HREENG KUBERAAY DHAN DHAANYA SAMRIDDHIM DEHI DAAPAY NAMAH)मंत्र को ११ बार बोलते हुए **११ बिंदी** जल मिश्रित कुमकुम (जो की हल्दी से बना हुआ हो अथवा अष्टगंध का प्रयोग करें)के द्वारा बिंदी के द्वारा भगवान् रसेश्वर पर लगायें.

बिंदी लगाने के बाद पुनः निम्न मंत्र का उच्चारण करते हुए चन्दन से रसेश्वर पर बिंदी लगायें.

ॐ कालाग्नि नमः

फिर **ॐ ऐं श्रीं ह्रीं कुबेराय धन धान्य समृद्धिं देहि दापय नमः** (OM AING SHREEM HREENG KUBERAAY DHAN DHAANYA SAMRIDDHIM DEHI DAAPAY NAMAH)मंत्र को ११ बार बोलते हुए **११ बिंदी** जल मिश्रित कुमकुम (जो की हल्दी से बना हुआ हो अथवा अष्टगंध का प्रयोग करें)के द्वारा बिंदी के द्वारा भगवान् रसेश्वर पर लगायें.

बिंदी लगाने के बाद पुनः निम्न मंत्र का उच्चारण करते हुए चन्दन से रसेश्वर पर बिंदी लगायें.

ॐ चिंतनाय नमः

फिर **ॐ ऐं श्रीं ह्रीं कुबेराय धन धान्य समृद्धिं देहि दापय नमः** (OM AING SHREEM HREENG KUBERAAY DHAN DHAANYA SAMRIDDHIM DEHI DAAPAY NAMAH)मंत्र को ११ बार बोलते हुए **११ बिंदी** जल मिश्रित कुमकुम (जो की हल्दी से बना हुआ हो अथवा अष्टगंध का प्रयोग करें)के द्वारा बिंदी के द्वारा भगवान् रसेश्वर पर लगायें.

बिंदी लगाने के बाद पुनः निम्न मंत्र का उच्चारण करते हुए चन्दन से रसेश्वर पर बिंदी लगायें.

ॐ विरूपाय नमः

फिर **ॐ ऐं श्रीं ह्रीं कुबेराय धन धान्य समृद्धिं देहि दापय नमः** (OM AING SHREEM HREENG KUBERAAY DHAN DHAANYA SAMRIDDHIM DEHI DAAPAY NAMAH)मंत्र को ११ बार बोलते हुए **११ बिंदी** जल मिश्रित कुमकुम (जो की हल्दी से बना हुआ हो अथवा अष्टगंध का प्रयोग करें)के द्वारा बिंदी के द्वारा भगवान् रसेश्वर पर लगायें.

बिंदी लगाने के बाद पुनः निम्न मंत्र का उच्चारण करते हुए चन्दन से रसेश्वर पर बिंदी लगायें.

ॐ वैद्रवाय नमः

फिर **ॐ ऐं श्रीं ह्रीं कुबेराय धन धान्य समृद्धिं देहि दापय नमः** (OM AING SHREEM HREENG KUBERAAY DHAN DHAANYA SAMRIDDHIM DEHI DAAPAY NAMAH)मंत्र को ११ बार बोलते हुए **११ बिंदी** जल

मिश्रित कुमकुम (जो की हल्दी से बना हुआ हो अथवा अष्टगंध का प्रयोग करें)के द्वारा बिंदी के द्वारा भगवान् रसेश्वर पर लगायें.

बिंदी लगाने के बाद पुनः निम्न मंत्र का उच्चारण करते हुए चन्दन से रसेश्वर पर बिंदी लगायें.

ॐ लक्ष्मी रूपाय नमः

फिर **ॐ ऐं श्रीं ह्रीं कुबेराय धन धान्य समृद्धिं देहि दापय नमः** (OM AING SHREEM HREENG KUBERAAY DHAN DHAANYA SAMRIDDHIM DEHI DAAPAY NAMAH)मंत्र को ११ बार बोलते हुए **११ बिंदी** जल मिश्रित कुमकुम (जो की हल्दी से बना हुआ हो अथवा अष्टगंध का प्रयोग करें)के द्वारा बिंदी के द्वारा भगवान् रसेश्वर पर लगायें.

बिंदी लगाने के बाद पुनः निम्न मंत्र का उच्चारण करते हुए चन्दन से रसेश्वर पर बिंदी लगायें.

ॐ कृष्ण रूपाय नमः

फिर **ॐ ऐं श्रीं ह्रीं कुबेराय धन धान्य समृद्धिं देहि दापय नमः** (OM AING SHREEM HREENG KUBERAAY DHAN DHAANYA SAMRIDDHIM DEHI DAAPAY NAMAH)मंत्र को ११ बार बोलते हुए **११ बिंदी** जल मिश्रित कुमकुम (जो की हल्दी से बना हुआ हो अथवा अष्टगंध का प्रयोग करें)के द्वारा बिंदी के द्वारा भगवान् रसेश्वर पर लगायें.

बिंदी लगाने के बाद पुनः निम्न मंत्र का उच्चारण करते हुए चन्दन से रसेश्वर पर बिंदी लगायें.

ॐ मुक्ति रूपाय नमः

फिर **ॐ ऐं श्रीं ह्रीं कुबेराय धन धान्य समृद्धिं देहि दापय नमः** (OM AING SHREEM HREENG KUBERAAY DHAN DHAANYA SAMRIDDHIM DEHI DAAPAY NAMAH)मंत्र को ११ बार बोलते हुए **११ बिंदी** जल मिश्रित कुमकुम (जो की हल्दी से बना हुआ हो अथवा अष्टगंध का प्रयोग करें)के द्वारा बिंदी के द्वारा भगवान् रसेश्वर पर लगायें.

बिंदी लगाने के बाद पुनः निम्न मंत्र का उच्चारण करते हुए चन्दन से रसेश्वर पर बिंदी लगायें.

ॐ चिंत्य रूपये नमः

फिर **ॐ ऐं श्रीं ह्रीं कुबेराय धन धान्य समृद्धिं देहि दापय नमः** (OM AING SHREEM HREENG KUBERAAY DHAN DHAANYA SAMRIDDHIM DEHI DAAPAY NAMAH)मंत्र को ११ बार बोलते हुए **११ बिंदी** जल मिश्रित कुमकुम (जो की हल्दी से बना हुआ हो अथवा अष्टगंध का प्रयोग करें)के द्वारा बिंदी के द्वारा भगवान् रसेश्वर पर लगायें.

बिंदी लगाने के बाद पुनः निम्न मंत्र का उच्चारण करते हुए चन्दन से रसेश्वर पर बिंदी लगायें.

ॐ भवेश्वर्याय नमः

फिर **ॐ ऐं श्रीं ह्रीं कुबेराय धन धान्य समृद्धिं देहि दापय नमः** (OM AING SHREEM HREENG KUBERAAY DHAN DHAANYA SAMRIDDHIM DEHI DAAPAY NAMAH)मंत्र को ११ बार बोलते हुए **११ बिंदी** जल मिश्रित कुमकुम (जो की हल्दी से बना हुआ हो अथवा अष्टगंध का प्रयोग करें)के द्वारा बिंदी के द्वारा भगवान् रसेश्वर पर लगायें.

बिंदी लगाने के बाद पुनः निम्न मंत्र का उच्चारण करते हुए चन्दन से रसेश्वर पर बिंदी लगायें.

ॐ आबद्धरूपाय नमः

फिर **ॐ ऐं श्रीं ह्रीं कुबेराय धन धान्य समृद्धिं देहि दापय नमः** (OM AING SHREEM HREENG KUBERAAY DHAN DHAANYA SAMRIDDHIM DEHI DAAPAY NAMAH)मंत्र को ११ बार बोलते हुए **११ बिंदी** जल मिश्रित कुमकुम (जो की हल्दी से बना हुआ हो अथवा अष्टगंध का प्रयोग करें)के द्वारा बिंदी के द्वारा भगवान् रसेश्वर पर लगायें.

बिंदी लगाने के बाद पुनः निम्न मंत्र का उच्चारण करते हुए चन्दन से रसेश्वर पर बिंदी लगायें.

ॐ पूर्णत्वरूपाय नमः

फिर **ॐ ऐं श्रीं ह्रीं कुबेराय धन धान्य समृद्धिं देहि दापय नमः** (OM AING SHREEM HREENG KUBERAAY DHAN DHAANYA SAMRIDDHIM DEHI DAAPAY NAMAH)मंत्र को ११ बार बोलते हुए **११ बिंदी** जल मिश्रित कुमकुम (जो की हल्दी से बना हुआ हो अथवा अष्टगंध का प्रयोग करें)के द्वारा बिंदी के द्वारा भगवान् रसेश्वर पर लगायें.

बिंदी लगाने के बाद पुनः निम्न मंत्र का उच्चारण करते हुए चन्दन से रसेश्वर पर बिंदी लगायें.

ॐ चैतन्यरूपाय नमः

फिर **ॐ ऐं श्रीं ह्रीं कुबेराय धन धान्य समृद्धिं देहि दापय नमः** (OM AING SHREEM HREENG KUBERAAY DHAN DHAANYA SAMRIDDHIM DEHI DAAPAY NAMAH)मंत्र को ११ बार बोलते हुए **११ बिंदी** जल मिश्रित कुमकुम (जो की हल्दी से बना हुआ हो अथवा अष्टगंध का प्रयोग करें)के द्वारा बिंदी के द्वारा भगवान् रसेश्वर पर लगायें.

बिंदी लगाने के बाद पुनः निम्न मंत्र का उच्चारण करते हुए चन्दन से रसेश्वर पर बिंदी लगायें.

ॐ क्रियमाणाय नमः

फिर **ॐ ऐं श्रीं ह्रीं कुबेराय धन धान्य समृद्धिं देहि दापय नमः** (OM AING SHREEM HREENG KUBERAAY DHAN DHAANYA SAMRIDDHIM DEHI DAAPAY NAMAH)मंत्र को ११ बार बोलते हुए **११ बिंदी** जल मिश्रित कुमकुम (जो की हल्दी से बना हुआ हो अथवा अष्टगंध का प्रयोग करें)के द्वारा बिंदी के द्वारा भगवान् रसेश्वर पर लगायें.

बिंदी लगाने के बाद पुनः निम्न मंत्र का उच्चारण करते हुए चन्दन से रसेश्वर पर बिंदी लगायें.

ॐ कालं तरायै नमः

फिर **ॐ ऐं श्रीं ह्रीं कुबेराय धन धान्य समृद्धिं देहि दापय नमः** (OM AING SHREEM HREENG KUBERAAY DHAN DHAANYA SAMRIDDHIM DEHI DAAPAY NAMAH)मंत्र को ११ बार बोलते हुए **११ बिंदी** जल मिश्रित कुमकुम (जो की हल्दी से बना हुआ हो अथवा अष्टगंध का प्रयोग करें)के द्वारा बिंदी के द्वारा भगवान् रसेश्वर पर लगायें.

बिंदी लगाने के बाद पुनः निम्न मंत्र का उच्चारण करते हुए चन्दन से रसेश्वर पर बिंदी लगायें.

ॐ पूर्णस्यायै नमः

फिर **ॐ ऐं श्रीं ह्रीं कुबेराय धन धान्य समृद्धिं देहि दापय नमः** (OM AING SHREEM HREENG KUBERAAY DHAN DHAANYA SAMRIDDHIM DEHI DAAPAY NAMAH)मंत्र को ११ बार बोलते हुए **११ बिंदी** जल मिश्रित कुमकुम (जो की हल्दी से बना हुआ हो अथवा अष्टगंध का प्रयोग करें)के द्वारा बिंदी के द्वारा भगवान् रसेश्वर पर लगायें.

बिंदी लगाने के बाद पुनः निम्न मंत्र का उच्चारण करते हुए चन्दन से रसेश्वर पर बिंदी लगायें.

ॐ सभामभैरवाय नमः

फिर **ॐ ऐं श्रीं ह्रीं कुबेराय धन धान्य समृद्धिं देहि दापय नमः** (OM AING SHREEM HREENG KUBERAAY DHAN DHAANYA SAMRIDDHIM DEHI DAAPAY NAMAH)मंत्र को ११ बार बोलते हुए **११ बिंदी** जल मिश्रित कुमकुम (जो की हल्दी से बना हुआ हो अथवा अष्टगंध का प्रयोग करें)के द्वारा बिंदी के द्वारा भगवान् रसेश्वर पर लगायें.

बिंदी लगाने के बाद पुनः निम्न मंत्र का उच्चारण करते हुए चन्दन से रसेश्वर पर बिंदी लगायें.

ॐ सचिन्त्य रूपाय नमः

फिर **ॐ ऐं श्रीं ह्रीं कुबेराय धन धान्य समृद्धिं देहि दापय नमः** (OM AING SHREEM HREENG KUBERAAY DHAN DHAANYA SAMRIDDHIM DEHI DAAPAY NAMAH)मंत्र को ११ बार बोलते हुए **११ बिंदी** जल मिश्रित कुमकुम (जो की हल्दी से बना हुआ हो अथवा अष्टगंध का प्रयोग करें)के द्वारा बिंदी के द्वारा भगवान् रसेश्वर पर लगायें.

बिंदी लगाने के बाद पुनः निम्न मंत्र का उच्चारण करते हुए चन्दन से रसेश्वर पर बिंदी लगायें.

ॐ पारदेश्वर्यै नमः

फिर **ॐ ऐं श्रीं ह्रीं कुबेराय धन धान्य समृद्धिं देहि दापय नमः** (OM AING SHREEM HREENG KUBERAAY DHAN DHAANYA SAMRIDDHIM DEHI DAAPAY NAMAH)मंत्र को ११ बार बोलते हुए **११ बिंदी** जल मिश्रित कुमकुम (जो की हल्दी से बना हुआ हो अथवा अष्टगंध का प्रयोग करें)के द्वारा बिंदी के द्वारा भगवान् रसेश्वर पर लगायें.

बिंदी लगाने के बाद पुनः निम्न मंत्र का उच्चारण करते हुए चन्दन से रसेश्वर पर बिंदी लगायें.

ॐ आबद्ध लक्ष्मी नमः

फिर **ॐ ऐं श्रीं ह्रीं कुबेराय धन धान्य समृद्धिं देहि दापय नमः** (OM AING SHREEM HREENG KUBERAAY DHAN DHAANYA SAMRIDDHIM DEHI DAAPAY NAMAH)मंत्र को ११ बार बोलते हुए **११ बिंदी** जल मिश्रित कुमकुम (जो की हल्दी से बना हुआ हो अथवा अष्टगंध का प्रयोग करें)के द्वारा बिंदी के द्वारा भगवान् रसेश्वर पर लगायें.

बिंदी लगाने के बाद पुनः निम्न मंत्र का उच्चारण करते हुए चन्दन से रसेश्वर पर बिंदी लगायें.

ॐ अन्नपूर्णायै नमः

फिर **ॐ ऐं श्रीं ह्रीं कुबेराय धन धान्य समृद्धिं देहि दापय नमः** (OM AING SHREEM HREENG KUBERAAY DHAN DHAANYA SAMRIDDHIM DEHI DAAPAY NAMAH)मंत्र को ११ बार बोलते हुए **११ बिंदी** जल मिश्रित कुमकुम (जो की हल्दी से बना हुआ हो अथवा अष्टगंध का प्रयोग करें)के द्वारा बिंदी के द्वारा भगवान् रसेश्वर पर लगायें.

बिंदी लगाने के बाद पुनः निम्न मंत्र का उच्चारण करते हुए चन्दन से रसेश्वर पर बिंदी लगायें.

ॐ दीर्घ रूपायै नमः

फिर **ॐ ऐं श्रीं ह्रीं कुबेराय धन धान्य समृद्धिं देहि दापय नमः** (OM AING SHREEM HREENG KUBERAAY DHAN DHAANYA SAMRIDDHIM DEHI DAAPAY NAMAH)मंत्र को ११ बार बोलते हुए **११ बिंदी** जल

मिश्रित कुमकुम (जो की हल्दी से बना हुआ हो अथवा अष्टगंध का प्रयोग करें)के द्वारा बिंदी के द्वारा भगवान् रसेश्वर पर लगायें.

बिंदी लगाने के बाद पुनः निम्न मंत्र का उच्चारण करते हुए चन्दन से रसेश्वर पर बिंदी लगायें.

ॐ कालमुक्तायै नमः

फिर **ॐ ऐं श्रीं ह्रीं कुबेराय धन धान्य समृद्धिं देहि दापय नमः** (OM AING SHREEM HREENG KUBERAAY DHAN DHAANYA SAMRIDDHIM DEHI DAAPAY NAMAH)मंत्र को ११ बार बोलते हुए **११ बिंदी** जल मिश्रित कुमकुम (जो की हल्दी से बना हुआ हो अथवा अष्टगंध का प्रयोग करें)के द्वारा बिंदी के द्वारा भगवान् रसेश्वर पर लगायें.

बिंदी लगाने के बाद पुनः निम्न मंत्र का उच्चारण करते हुए चन्दन से रसेश्वर पर बिंदी लगायें.

ॐ मृत्युरूपायै नमः

फिर **ॐ ऐं श्रीं ह्रीं कुबेराय धन धान्य समृद्धिं देहि दापय नमः** (OM AING SHREEM HREENG KUBERAAY DHAN DHAANYA SAMRIDDHIM DEHI DAAPAY NAMAH)मंत्र को ११ बार बोलते हुए **११ बिंदी** जल मिश्रित कुमकुम (जो की हल्दी से बना हुआ हो अथवा अष्टगंध का प्रयोग करें)के द्वारा बिंदी के द्वारा भगवान् रसेश्वर पर लगायें.

बिंदी लगाने के बाद पुनः निम्न मंत्र का उच्चारण करते हुए चन्दन से रसेश्वर पर बिंदी लगायें.

ॐ गणेश रूपायै नमः

फिर **ॐ ऐं श्रीं ह्रीं कुबेराय धन धान्य समृद्धिं देहि दापय नमः** (OM AING SHREEM HREENG KUBERAAY DHAN DHAANYA SAMRIDDHIM DEHI DAAPAY NAMAH)मंत्र को ११ बार बोलते हुए **११ बिंदी** जल मिश्रित कुमकुम (जो की हल्दी से बना हुआ हो अथवा अष्टगंध का प्रयोग करें)के द्वारा बिंदी के द्वारा भगवान् रसेश्वर पर लगायें.

बिंदी लगाने के बाद पुनः निम्न मंत्र का उच्चारण करते हुए चन्दन से रसेश्वर पर बिंदी लगायें.

ॐ सरस्वतेश्वर्यायै नमः

फिर **ॐ ऐं श्रीं ह्रीं कुबेराय धन धान्य समृद्धिं देहि दापय नमः** (OM AING SHREEM HREENG KUBERAAY DHAN DHAANYA SAMRIDDHIM DEHI DAAPAY NAMAH)मंत्र को ११ बार बोलते हुए **११ बिंदी** जल मिश्रित कुमकुम (जो की हल्दी से बना हुआ हो अथवा अष्टगंध का प्रयोग करें)के द्वारा बिंदी के द्वारा भगवान् रसेश्वर पर लगायें.

बिंदी लगाने के बाद पुनः निम्न मंत्र का उच्चारण करते हुए चन्दन से रसेश्वर पर बिंदी लगायें.

ॐ पूर्णेश्वरायै नमः

फिर **ॐ ऐं श्रीं ह्रीं कुबेराय धन धान्य समृद्धिं देहि दापय नमः** (OM AING SHREEM HREENG KUBERAAY DHAN DHAANYA SAMRIDDHIM DEHI DAAPAY NAMAH)मंत्र को ११ बार बोलते हुए **११ बिंदी** जल मिश्रित कुमकुम (जो की हल्दी से बना हुआ हो अथवा अष्टगंध का प्रयोग करें)के द्वारा बिंदी के द्वारा भगवान् रसेश्वर पर लगायें.

बिंदी लगाने के बाद पुनः निम्न मंत्र का उच्चारण करते हुए चन्दन से रसेश्वर पर बिंदी लगायें.

ॐ कल्याण रूपायै नमः

फिर **ॐ ऐं श्रीं ह्रीं कुबेराय धन धान्य समृद्धिं देहि दापय नमः** (OM AING SHREEM HREENG KUBERAAY DHAN DHAANYA SAMRIDDHIM DEHI DAAPAY NAMAH)मंत्र को ११ बार बोलते हुए **११ बिंदी** जल मिश्रित कुमकुम (जो की हल्दी से बना हुआ हो अथवा अष्टगंध का प्रयोग करें)के द्वारा बिंदी के द्वारा भगवान् रसेश्वर पर लगायें.

बिंदी लगाने के बाद पुनः निम्न मंत्र का उच्चारण करते हुए चन्दन से रसेश्वर पर बिंदी लगायें.

ॐ पूर्णआबद्ध रूपाय नमः

फिर **ॐ ऐं श्रीं ह्रीं कुबेराय धन धान्य समृद्धिं देहि दापय नमः** (OM AING SHREEM HREENG KUBERAAY DHAN DHAANYA SAMRIDDHIM DEHI DAAPAY NAMAH)मंत्र को ११ बार बोलते हुए **११ बिंदी** जल मिश्रित कुमकुम (जो की हल्दी से बना हुआ हो अथवा अष्टगंध का प्रयोग करें)के द्वारा बिंदी के द्वारा भगवान् रसेश्वर पर लगायें.

बिंदी लगाने के बाद पुनः निम्न मंत्र का उच्चारण करते हुए चन्दन से रसेश्वर पर बिंदी लगायें.

ॐ दीर्घ रूपाय नमः

फिर **ॐ ऐं श्रीं ह्रीं कुबेराय धन धान्य समृद्धिं देहि दापय नमः** (OM AING SHREEM HREENG KUBERAAY DHAN DHAANYA SAMRIDDHIM DEHI DAAPAY NAMAH)मंत्र को ११ बार बोलते हुए **११ बिंदी** जल मिश्रित कुमकुम (जो की हल्दी से बना हुआ हो अथवा अष्टगंध का प्रयोग करें)के द्वारा बिंदी के द्वारा भगवान् रसेश्वर पर लगायें.

बिंदी लगाने के बाद पुनः निम्न मंत्र का उच्चारण करते हुए चन्दन से रसेश्वर पर बिंदी लगायें.

ॐ कल्याणार्थ सदां पूर्वश्याम सः दीर्घ रूपाय नमः

फिर **ॐ ऐं श्रीं ह्रीं कुबेराय धन धान्य समृद्धिं देहि दापय नमः** (OM AING SHREEM HREENG KUBERAAY DHAN DHAANYA SAMRIDDHIM DEHI DAAPAY NAMAH)मंत्र को ११ बार बोलते हुए **११ बिंदी** जल मिश्रित कुमकुम (जो की हल्दी से बना हुआ हो अथवा अष्टगंध का प्रयोग करें)के द्वारा बिंदी के द्वारा भगवान् रसेश्वर पर लगायें.

बिंदी लगाने के बाद पुनः निम्न मंत्र का उच्चारण करते हुए चन्दन से रसेश्वर पर बिंदी लगायें.

ॐ अमृत्यु रूपाय नमः

फिर **ॐ ऐं श्रीं ह्रीं कुबेराय धन धान्य समृद्धिं देहि दापय नमः** (OM AING SHREEM HREENG KUBERAAY DHAN DHAANYA SAMRIDDHIM DEHI DAAPAY NAMAH)मंत्र को ११ बार बोलते हुए **११ बिंदी** जल मिश्रित कुमकुम (जो की हल्दी से बना हुआ हो अथवा अष्टगंध का प्रयोग करें)के द्वारा बिंदी के द्वारा भगवान् रसेश्वर पर लगायें.

बिंदी लगाने के बाद पुनः निम्न मंत्र का उच्चारण करते हुए चन्दन से रसेश्वर पर बिंदी लगायें.

ॐ अमृताय रूपाय नमः

फिर **ॐ ऐं श्रीं ह्रीं कुबेराय धन धान्य समृद्धिं देहि दापय नमः** (OM AING SHREEM HREENG KUBERAAY DHAN DHAANYA SAMRIDDHIM DEHI DAAPAY NAMAH)मंत्र को ११ बार बोलते हुए **११ बिंदी** जल मिश्रित कुमकुम (जो की हल्दी से बना हुआ हो अथवा अष्टगंध का प्रयोग करें)के द्वारा बिंदी के द्वारा भगवान् रसेश्वर पर लगायें.

बिंदी लगाने के बाद पुनः निम्न मंत्र का उच्चारण करते हुए चन्दन से रसेश्वर पर बिंदी लगायें.

ॐ कल्याण रूपाय नमः

फिर **ॐ ऐं श्रीं ह्रीं कुबेराय धन धान्य समृद्धिं देहि दापय नमः** (OM AING SHREEM HREENG KUBERAAY DHAN DHAANYA SAMRIDDHIM DEHI DAAPAY NAMAH)मंत्र को ११ बार बोलते हुए **११ बिंदी** जल मिश्रित कुमकुम (जो की हल्दी से बना हुआ हो अथवा अष्टगंध का प्रयोग करें)के द्वारा बिंदी के द्वारा भगवान् रसेश्वर पर लगायें.

बिंदी लगाने के बाद पुनः निम्न मंत्र का उच्चारण करते हुए चन्दन से रसेश्वर पर बिंदी लगायें.

ॐ पूर्ण कुबेर वैश्रवणाय नमः

फिर **ॐ ऐं श्रीं ह्रीं कुबेराय धन धान्य समृद्धिं देहि दापय नमः** (OM AING SHREEM HREENG KUBERAAY DHAN DHAANYA SAMRIDDHIM DEHI DAAPAY NAMAH)मंत्र को ११ बार बोलते हुए **११ बिंदी** जल मिश्रित कुमकुम (जो की हल्दी से बना हुआ हो अथवा अष्टगंध का प्रयोग करें)के द्वारा बिंदी के द्वारा भगवान् रसेश्वर पर लगायें.

इसके बाद पुनः (**ॐ वैश्रवणाय स्वाहा**) मंत्र की १ माला संपन्न करें. और कनकधारा स्तोत्र के ३ पाठ करे.

अङ्गं हरेः पुलकभूषणमाश्रयन्ती
भृङ्गाङ्गनेव मुकुलाभरणं तमालम् ।
अङ्गीकृताखिल विभूतिरपाङ्गलीला
माङ्गल्यदास्तु मम मङ्गलदेवतायाः ॥ १ ॥
मुग्धा मुहुर्विदधती वदने मुरारेः
प्रेमत्रपाप्रणिहितानि गतागतानि ।
मालादृशोर्मधुकरीव महोत्पले या
सा मे श्रियं दिशतु सागर सम्भवा याः ॥ २ ॥
आमीलिताक्षमधिग्यम मुदा मुकुन्दम्
आनन्दकन्दमनिमेषमनङ्ग तन्त्रम् ।
आकेकरस्थितकनीनिकपक्ष्मनेत्रं
भूत्यै भवन्मम भुजङ्ग शयाङ्गना याः ॥ ३ ॥
बाह्वन्तरे मधुजितः श्रितकौस्तुभे या
हारावलीव हरिनीलमयी विभाति ।
कामप्रदा भगवतोऽपि कटाक्षमाला
कल्याणमावहतु मे कमलालया याः ॥ ४ ॥
कालाम्बुदालि ललितोरसि कैटभारेः
धाराधरे स्फुरति या तटिदङ्गनेव ।
मातुस्समस्तजगतां महनीयमूर्तिः
भद्राणि मे दिशतु भार्गवनन्दना याः ॥ ५ ॥
प्राप्तं पदं प्रथमतः खलु यत्प्रभावात्
माङ्गल्यभाजि मधुमाथिनि मन्मथेन ।
मय्यापतेत्तदिह मन्थरमीक्षणार्थं

मन्दालसं च मकरालय कन्यका याः ॥ ६॥
विश्वामरेन्द्र पद विभ्रम दानदक्षम्
आनन्दहेतुरधिकं मुरविद्विषोऽपि ।
ईषन्निषीदतु मयि क्षणमीक्षणार्थं
इन्दीवरोदर सहोदरमिन्दिरा याः ॥ ७ ॥
इष्टा विशिष्टमतयोपि यया दयार्द्र
दृष्ट्या त्रिविष्टपपदं सुलभं लभन्ते ।
दृष्टिः प्रहृष्ट कमलोदर दीप्तिरिष्टां
पुष्टिं कृषीष्ट मम पुष्कर विष्टरा याः ॥ ८ ॥
दद्याद्दयानु पवनो द्रविणाम्बुधारां
अस्मिन्नकिञ्चन विहङ्ग शिशौ विषण्णे ।
दुष्कर्मघर्ममपनीय चिराय दूरं
नारायण प्रणयिनी नयनाम्बुवाहः ॥ ९ ॥
गीर्देवतेति गरुडध्वज सुन्दरीति
शाकम्बरीति शशिशेखर वल्लभेति ।
सृष्टि स्थिति प्रलय केलिषु संस्थितायै
तस्यै नमस्त्रिभुवनैक गुरोस्तरुण्यै ॥ १० ॥
श्रुत्यै नमोऽस्तु शुभकर्म फलप्रसूत्यै
रत्यै नमोऽस्तु रमणीय गुणार्णवायै ।
शक्त्यै नमोऽस्तु शतपत्र निकेतनायै
पुष्ट्यै नमोऽस्तु पुरुषोत्तम वल्लभायै ॥ ११ ॥
नमोऽस्तु नालीक निभाननायै
नमोऽस्तु दुग्धोदधि जन्मभूम्यै ।
नमोऽस्तु सोमामृत सोदरायै
नमोऽस्तु नारायण वल्लभायै ॥ १२ ॥
नमोऽस्तु हेमाम्बुज पीठिकायै
नमोऽस्तु भूमण्डल नायिकायै ।
नमोऽस्तु देवादि दयापरायै
नमोऽस्तु शार्ङ्गायुध वल्लभायै ॥ १३ ॥
नमोऽस्तु देव्यै भृगुनन्दनायै

नमोऽस्तु विष्णोरुरसि स्थितायै ।
नमोऽस्तु लक्ष्म्यै कमलालयायै
नमोऽस्तु दामोदर वल्लभायै ॥ १४ ॥
नमोऽस्तु कान्त्यै कमलेक्षणायै
नमोऽस्तु भूत्यै भुवनप्रसूत्यै ।
नमोऽस्तु देवादिभिरर्चितायै
नमोऽस्तु नन्दात्मज वल्लभायै ॥ १५ ॥
सम्पत्कराणि सकलेन्द्रिय नन्दनानि
साम्राज्य दानविभवानि सरोरुहाक्षि ।
त्वद्वन्दनानि दुरिता हरणोद्यतानि
मामेव मातरनिशं कलयन्तु मान्ये ॥ १६ ॥
यत्कटाक्ष समुपासना विधिः
सेवकस्य सकलार्थ सम्पदः ।
सन्तनोति वचनाङ्ग मानसैः
त्वां मुरारिहृदयेश्वरीं भजे ॥ १७ ॥
सरसिजनिलये सरोजहस्ते
धवलतमांशुक गन्धमाल्यशोभे ।
भगवति हरिवल्लभे मनोज्ञे
त्रिभुवनभूतिकरी प्रसीदमह्यम् ॥ १८ ॥
दिग्घस्तिभिः कनक कुम्भमुखावसृष्ट
स्वर्वाहिनी विमलचारुजलाप्लुताङ्गीम् ।
प्रातर्नमामि जगतां जननीमशेष
लोकधिनाथ गृहिणीममृताब्धिपुत्रीम् ॥ १९ ॥
कमले कमलाक्ष वल्लभे त्वं
करुणापूर तरङ्गितैरपाङ्गैः ।
अवलोकय मामकिञ्चनानां
प्रथमं पात्रमकृतिमं दयायाः ॥ २०॥
देवि प्रसीद जगदीश्वरि लोकमातः
कल्याणगात्रि कमलेक्षण जीवनाथे ।
दारिद्र्यभीतिहृदयं शरणागतं मां

आलोकय प्रतिदिनं सदयैरपाङ्गैः ॥ २२ ॥
स्तुवन्ति ये स्तुतिभिरमीभिरन्वहं
त्रयीमयीं त्रिभुवनमातरं रमाम् ।
गुणाधिका गुरुतुर भाग्य भागिनः
भवन्ति ते भुवि बुध भाविताशयाः ॥ २२ ॥
सुवर्णधारा स्तोत्रं यत् शङ्कराचार्य निर्मितं
त्रिसन्ध्यं यः पठेन्नित्यं स कुबेरसमो भवेत् ॥

इस प्रकार ये विधान पूर्ण होता है,विधान के बाद अपना जप भगवान् सदाशिव अथवा सदगुरुदेव के श्री चरणों में अपित कर सफलता के लिए प्रार्थना करें,इस प्रकार ये क्रिया तीन दिन तक करनी है. इसके बाद आप चाहें तो प्रतिदिन मात्र २१ बार **ॐ ऐं श्रीं ह्रीं कुबेराय धन धान्य समृद्धिं देहि दापय नमः** मंत्र जप कर लें. प्रतिदिन विधान के बाद खीर का भोग स्वयं ही ग्रहण कर लें.

आशा करता हूँ की आप इस विधान को संपन्न कर अपना जीवन खुशियों से परिपूर्ण कर लेंगे.आइये इस अद्वित्यीय विधान को संपन्न कर हम सदगुरुदेव के श्री चरणों में अपने श्रद्धा ज्ञापित करें,और अपने शिष्यत्व को सार्थक करें.

दूसरा प्रयोग कल के लेख में........(क्रमशः)

CHANDRA GRAH ANUKOOL YANTRA SADHNA

७	२	९
८	६	४
३	१०	५

चन्द्रग्रह अनुकूलता प्रदायक यन्त्र

नवग्रह में चन्द्र का स्थान बहोत ही महत्वपूर्ण है. व्यक्ति पर चंद्र का प्रभाव मानस, भावनाये, मातृभाव एवं मातृसुख, तथा कल्पना शक्ति पर विशेष रूप से होता है. अगर व्यक्ति पर चन्द्र ग्रह का प्रभाव विपरीत है तो एसी स्थिति में व्यक्ति को निम्न समस्याओ का सामना विशेष रूप से करना पड़ता है.
मातृसुख का क्षय और मातृपक्ष में रोग
मानसिक संतुलन का अयोग्य संचार तथा हिन् भावना

मानसिक रोगों से ग्रसित होना
निष्ठुरता का प्रवेश और मानव समुदाय से घृणा
अज्ञात आशंकाओ से ग्रसित रहना
आज के युग में व्यक्ति के जीवन में मानसिक समस्याओ का सामना कई प्रकार से करना ही पड़ता है लेकिन कई बार इस प्रकार के प्रभाव कई प्रकार के मानसिक रोग को जन्म देता है. मानसिक रोग कई प्रकार के मानसिक विकास को रोक देता है और व्यक्ति का तथा उसके परिवार का जीवन कष्टमय बन जाता है. अगर व्यक्ति इससे सबंधित प्रयोग सम्पपन करता है तो चन्द्र ग्रह की कृपा प्राप्त होती है तथा इससे सबंधित पक्षों में व्यक्ति को अनुकूलता मिलती है.
यह प्रयोग साधक किसी भी ग्रहणकाल या सोमवार को कर सकता है
यन्त्र किसी भी सफ़ेद कागज़ या भोजपत्र पर बनाया जा सकता है
साधक सूर्यास्त के बाद यह प्रयोग करे तो उत्तम है; वैसे साधक सोमवार को दिन में भी यह प्रयोग कर सकता है. सर्व प्रथम साधक स्नान करे तथा सफ़ेद वस्त्र धारण कर सफ़ेद आसान पर उत्तर दिशा की तरफ मुख कर बैठ जाए.
उसके बाद साधक कागज़ या भोजपत्र पर मूल अंक यन्त्र का निर्माण अष्टगंध से करे. अगर यह संभव ना हो तो साधक को हल्दी में पानी मिला कर उस स्याही से यह यन्त्र बनाए. इसमें किसी भी प्रकार की कलम का उपयोग किया जा सकता है.
यन्त्र को धुप दे या अगरबत्ती प्रज्वलित करे.
इसके बाद साधक यन्त्र को अपने सामने रख कर निम्न ध्यान का ११ बार उच्चारण करे.
ध्यान : श्वेत श्वेतांबरधरः श्वेताश्व: श्वेतवाहन | गदापाणिद्विबाहुश्च कर्तव्यो वरद शशी.
ध्यान के बाद व्यक्ति को चंद्र मंत्र की ११ माला मंत्र जाप सफ़ेद हकीक माला से सम्पपन करे.
मन्त्र : ॐ श्वेत शुभ्राय शशि चन्द्राय सर्वाभीष्ट साधन कुरु कुरु नमः
प्रयोग के बाद साधक भोज पत्र या कागज को पूजा स्थान में स्थापित कर दे तथा माला को भी रख दे. अगर साधक चाहे तो इस माला से व्यक्ति भविष्य में इस यंत्र के सामने यही प्रयोग कई बार कर सकता है.

In nine planets Chandra or moon holds an important place. Chandra effects on the person especially on the aspects like mind, feelings, mother hood and maternal happiness, and power of imagination. If moon is not favorable then person may suffer especially from following troubles.

Troubles in happiness of mother side or diseases in maternal

Loss of the mental balance and inferiority complex

Cause of various mental disorders

Cause of ruthlessness and disgust of humans

To have unknown fears and suspects

In today’s life, one may suffer from various mental troubles but many times such effects may cause many mental diseases. Mental disorders may ruin growth and mental developments and also cause troubling life for the person and family. If related prayog is done then blessings of the moon is gained and one may have favorable conditions related to these aspects.

This process could be done on any eclipse or on Monday.

This yantra could be made on any paper or on Bhoj Patra

It is better if one does this process after sun set; sadhak may do this process in day time on Monday too. First sadhak should bathe and wear with cloths after that one should sit on white sitting mat facing north direction.

After this, sadhak should take bhoj patra or paper and draw the moo lank yantra with AshtaGandha. If that is not possible one should draw the yantra with turmeric mixed with water. Any pen may be used to prepare the yantra. One should give dhoop to yantra or light incense sticks.

After that by placing yantra in front, one should chant meditation 11 times

Meditation: Swet Swetaambaradharah Swetaashwah Swetavaahan | gadaapaanidwibaahusch Kartavyo varad shashi.

After meditation one should chant 11 rounds of the following mantra with white hakeek rosary.

Mantra : Om Shwet Shubhraay Shashi Chandraay sarvaabhisht sadhan Kuru Kuru Namah

After this process is done one should place Bhoj patra or paper in worship place and rosary should also be place. If sadhak wants, one may do this process again in the future with this rosary in front of this yantra many times.

****NPRU****

Posted by Nikhil at 3:11 AM 2 comments:
Labels: GRAH DOSH NIVARAK, NAVGRAH DOSH NIVARAK

SATURDAY, APRIL 28, 2012

उत्साह... उमंग और आत्मविश्वास को बढ़ाने मे सहायक एक साधना विधान .....

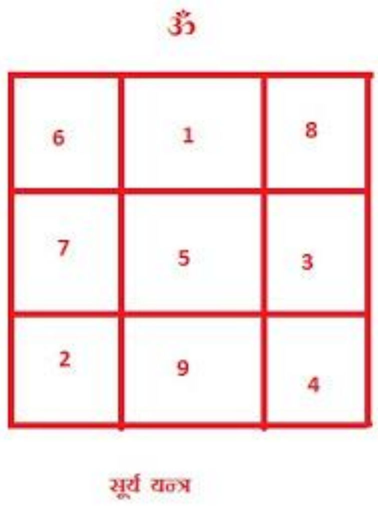

सफलता पाने के लिए जीवन मे आत्म विश्वास एक सबसे बड़ी आवश्यकता हैं , अब यह सफलता चाहे आध्यात्मिक क्षेत्र मे हो या भौतिक क्षेत्र मे ...पर बिना आत्मविश्वास के ....

बड़े बड़े वाक्य कह देने से तो आत्म बिश्वास नही बन जाता हैं जब सब कुछ सही चल रहा हो तब बात अलग हैं तब जो कहें सब ठीक हैं, पर जब सब टूट रहा हो ....नष्ट हो रहा हो जीवन के प्रति निराशा सी आ रही हो तब ..

इस समय साधना ही एक ऐसा मार्ग सामने रखती हैं जो जीवन मे पुनः आशा का संचार कर देती हैं . साधक सामान्य रूप से नव ग्रह का महत्त्व जितना होना चाहिए उनके जीवन मे.....खासकर साधना क्षेत्र उतना नही समझते हैं इसे बस मात्र ज्योतिष तक ही सीमित रख देते हैं जबकि वस्तु स्थिति बहुत ही विपरीत हैं .

ग्रह राज्यं प्रयच्छनति ग्रहा राज्यं हरन्ति च |
ग्रहेस्तु व्यापितम सर्व जगदेतच्चराचराम ||

ग्रह ही राज्य देते हैं और ग्रह ही राज्य का हर ण कर लेते हैं ,इन ग्रहों के प्रभाव मे सम्पूर्ण चर और अचर हैं , सभी ओर इनका प्रभाव व्याप्त हैं .

नव ग्रह ही हमारे जीवन मे सुख दुःख , लाभ हानि और आशा , उमंग और आत्मविश्वास का कारण होते हैं या बनते हैं. सदगुरुदेव जी ने एक साधक का अनुभव पत्रिका मे दिया था जिन्होंने किसी विशेष साधना मे छ या सात बार असफल होने पर अपने गुरु से पूंछ कर नव ग्रह शांति का अनुष्ठान किया और साधना मे सफलता पायी .इस बात का परिचायक हैं कि नव ग्रहो का महत्त्व कितना हैं .

ठीक इसी तरह जीवन मे जब भी कुछ ऐसे विपरीत ग्रहो का समय आये या गोचर वत अवस्था जिनकी स्थिति साधक की कुंडली मे ठीक नही हैं तब स्वाभाविक रूप से मन मे गहन निराशा का आविर्भाव होना स्वाभाविक सा हैं .

ज्योतिष मे सूर्य को नव ग्रहो मे ग्रह राज की उपाधि से विभूषित कर रखा हैं और यह उचित भी हैं सूर्य देव की उपयोगिता को ध्यान मे रखने पर . साथ ही साथ सूर्य देव आत्मा के भी प्रतीक हैं

ऋग्वेद कहते हैं ..

"सूर्य आत्मा जगतस्तस्थषचश ||"

सूर्य सबकी आत्मा हैं .

जिनकी भी कुंडली मे यह सूर्य तत्व कमजोर हैं स्वाभाविक हैं कि उनमे जल्दी ही निराशा का बार बार आगमन होना , और यह स्थिति किसी भी दृष्टी से ठीक नही हैं .

शांकर भाष्य कहता हैं ..

"रश्मीना प्राणां ना रसानां च स्वीकर णा त सूर्यः ||"
सूर्य रश्मि ही समस्त प्राणियों की शक्ति हैं .
पर यह भी सच भी हैं कि जब आत्मा मे ही उमंगयुक्त नही होगी तो शरीर तो अनुचर मात्र हैं अकेले शरीर कुछ भी नही कर सकता हैं .
" आरोग्यम भास्करादिच्छेत "
मानसिक और बाहय दोनों रोगों की निवृति सूर्य उपासना से हो जाती हैं .

अगर सूर्य से संबंधित रत्न पहिने जाए तो कुछ और नयी समस्याए सामने आ सकती हैं कि वह किस भाव के मालिक हैं या उनको स्थिति कैसी हैं इन सब बातों मे न जा कर यदि सूर्य देव के तांत्रिक मंत्रो का सहारा लिया जाए तो परिस्तिथियाँ बहुत ही जल्दी अनुकूल मे आ सकती हैं

यह आवश्यक भी हैं क्योंकि जीवन के हर क्षेत्र मे आत्मविश्वास और उत्साह उमंग की आवश्यकता होती हैं और जीवन मे भी वहीं लोग ज्यादा सफल होंगे जो की गहन आत्मविश्वास से युक्त होंगे .दुखी और निराश लोगों के साथ कोई भी नही रहना चाहता हैं .
सूर्य तत्व प्रधान व्यक्ति जीवन मे निश्चय ही उचाईया छूते जाते हैं ,भगवान हनुमान , आदि शंकराचार्य , सदगुरुदेव , भगवान राम आदि सभी व्यक्ति सूर्य प्रधान ही रहे हैं और इनका आज तक क्या प्रभाव और योग दान रहा हैं वह किसी से छुपा नही हैं , नही कोई परिचय का मोहताज हैं .

सूर्योपनिषद स्पस्ट करता हैं की

सूर्याद भवन्ति भूतानि सूर्येण पालितानी च |
सूर्यं लयं प्रापुयु यः सूर्यः सो ऽमेव च ||

सूर्य ही जगत की उत्पत्ति पालन और नाश के का रण बनते हैं .
इन सूर्य देव को अनुकूल करने के लिए यन्त्र विज्ञानं मे भी एक प्रयोग हैं उसे उपयोग मे लाया जा सकता हैं .
भोज पत्र मे लाल चन्दन से इस यंत्र का लेखन करना हैं , और दिन निश्चय हीदिन सूर्य वार मतलब रविवार होगा ,और ताम्बे के ताबीज मे इसे रखकर धारण किया जा सकता हैं .यन्त्र की पहले पूजा अर्चन जरुर कर ले धूप आदि से और पुरुष वर्ग इसे दाहिनी भुजा मे और स्त्री वर्ग इसे बायीं भुजा मे धारण कर ले ..

यंत्र निर्माण के सभी सामान्य नियम कई कई बार पोस्ट मे बताये गए हैं . अतः पुनः उल्लेख ठीक नही हैं . आप सभी के जीवन मे सूर्य तत्व प्रबल हो जिससे कि आप आत्मविश्वास से लबालब भरे हो और एक योग्य साधक बन कर जीवन मे लाभ उठाए .

===

To attain success in life, self-confidence is needed the most. Whether the success is in spiritual field or materialistic field……..but without self-confidence…..
Just superfluous talks will not create self-confidence. When everything is happening right for you, then it is different thing, whatever you say is correct, but when everything is crumbling…….getting destroyed, a sense of frustration is creeping in towards the life then…..
At such times sadhna only puts the way forward which instils the hope again in the life.
Generally, sadhak does not understand the due importance of nine planets in their life, especially in sadhna field. They limit them merely to astrology. However the actual condition is exactly opposite.
Grah RajyamPraychnatiGrahaRajyamHarenti Ch |
Grahestuvyaaptimsarvjagdetcgracharaam ||
Planets only give kingdoms and planets only steal the kingdom. Due to the influence of these planets, all moving and non-moving things are there. Everywhere their influence is evident. These nine planets only are the reason or becomes the reason for happiness, pain, profit, loss, optimism, joy and self-confidence in our life. Sadgurudevji had given the experience of one sadhak in the magazine that, upon getting failures 6-7 times, after asking Gurudev, did the anushthan to pacify the nine planets and got success in sadhna. This incident indicates the supreme importance of nine planets.

Similarly, when the time for opposite planets comes in the life or due to transit of planets, a situation arises which is not suitable in sadhak's horoscope then it is quite natural for the feeling of hopelessness to arise in your mind.
In astrology, sun has been honoured as king of the nine planets. And this is correct too, considering the importance of lord sun. To add to that lord sun signifies our soul.
Rigveda says………
"Surya AatmaJagatststhshchsh||"
Sun is the soul of everyone.
Whose horoscopes have the weak sun element, it is natural that very soon, frustration will enter their life again and again and this condition is not at all correct from any point of view.
Shankar Bhaasya says….
"RashmeenaPranaamNaaRasanaam Ch SweekarNaa Ta Suryah: ||"
Sun rays only are the power of all creatures.
But this is also true that if soul is not joyful, then body is only a servant. Body alone can't do anything.
"AarogyamBhaskaradichet"
All the mental and external diseases can be cured by worshipping sun.
If any gems related to sun are worn, then some new problems can arise like which house sun is the lord of or what are the condition of them. Rather than going into all these, if we take assistance of tantric mantras then circumstances can become favourable very quickly.
This is necessary also because every field of life requires self-confidence, enthusiasmand zeal. In life those persons will be more successful who are confident. Nobody wants to live with sad and frustrated persons.
Allpeople who have the supreme sun element definitely reach the top. Lord Hanuman, Aadi Shankracharya, Sadgurudev, and Lord Ram etc. all these were sun-central. Their contribution and influence is not hidden from anyone, nor does it need any introduction.
Suryopnashid explains that
SuryaadBhaventiBhootaaniSuryeenPaalitaani Ch |
SuryamLayamPrapuyu YahSuryahSohamev Ch ||

Sun is the cause of origin, maintenance and destruction of the world. To make lord sun favourable, there is one process in Yantra science which can be used.

Make this yantra (given above in diagram) on Bhoj patra with Red sandal and the day definitely will be the day of sun means Sunday. It can be worn in copper amulet. First do the worship of the yantra with dhoop etc. Male should wear it on right arm and female on the left arm.

All the general rules regarding yantra construction has been given in the various post many times so it is not correct to reiterate them. May you all have the strong sun element so that you are full of self-confidence and become able sadhaks and attain success in life.

******NPRU******

for our facebook group-
http://www.facebook.com/groups/194963320549920/

PLZ CHECK : - http://www.nikhil-alchemy2.com/

Posted by Nikhil at 6:04 AM No comments:
Labels: GRAH DOSH NIVARAK, KAARYA SIDDHI SADHNA, NAVGRAH DOSH NIVARAK

SATURDAY, APRIL 7, 2012

बीजोक्त तंत्र- तंत्र ज्योतिष और मनोकामना पूर्ती नव्य श्री चैतन्य कल्प

तंत्र एक भाव है,दृष्टिकोण है, ये ना तो कभी किसी का भला करता है और ना ही कभी किसी का बुरा ही करता है | ये साधक को मात्र उस जगह ले जाकर खड़ा कर देता है,जहाँ से वो स्वयं निर्धारित करे की उसे किस भाव की और गति करना है | सदगुरुदेव के द्वारा कहा गया ये वाक्य तंत्र की सत्यता को हम सभी के समक्ष पूर्णता के साथ उजागर करता है| नभमंडल में दिखने वाले तारे मात्र चमकने का ही कार्य नहीं करते हैं,मात्र गणना करने का ही कार्य नहीं करते हैं अपितु सन्देश प्रवाहित करने का भी कार्य करते हैं | वह सन्देश जो किसी अन्य ब्रह्माण्ड से हमारे लिए प्रेषित किया जा रहा हो, आज विज्ञान भी हमारे महर्षि कणाद द्वारा कथित उन पुरातन सूत्र को मानने लगा है जिसमें कहा गया था की हमारी दृष्टि पथ पर संचालित या दिखाई देने वाले विश्व के साथ या ब्रह्माण्ड के साथ सामानांतर रूप से और भी ब्रह्माण्ड गतिशील हैं जहाँ पर क्रिया और प्रतिक्रिया निरंतर होते रहती है |

किन्तु इस तथ्य को समझना इतना सहज नहीं है ये अणु विज्ञानं का विषय है, किन्तु ये भी सत्य है की हम भले ही इस तथ्य को पूरी तरह ना समझ पाए तब भी इसका लाभ हम अवश्य उठा सकते हैं | आपने सुना ही होगा की प्राचीनकाल में ज्योतिषों द्वारा की गयी गणना के आधार पर जो निष्कर्ष

निकलते थे,वे इतने सटीक होते थे की व्यक्ति दांतों तले अंगुली दबाने को विवश हो ही जाता था | किन्तु समय के साथ साथ इन गणनाओं द्वारा किये गए फल कथन अत्यधिक त्रुटिपूर्ण हो गए |

आखिर ऐसा क्यूँ हुआ ?

इसका मुख्य कारण था हमने मात्र सूत्रों को ही आधार मान लिया और ये भी मात्र इन्ही के द्वारा हमारे कर्त्तव्य की इतिश्री हो जायेगी, किन्तु ये हमारी सबसे बड़ी भूल थी | यदि हम उन मनीषियों के जीवन और उनकी दिनचर्या का अध्यन करते तो हमें ज्ञात हो पाता की तंत्र का उनके जीवन में कितना प्रभाव था और वे सभी अपना कितना समय तंत्र और इन सूत्रों के समन्वय में लगाते थे | प्रत्येक विद्वान अपने इष्ट के प्रति समर्पित था और अपनी इष्ट कृपा से वे प्रकृति के गूढतम रहस्यों को भली भांति आत्मसात कर लिया करते थे | उन्होंने बाह्य ब्रह्माण्ड के साथ अन्तः ब्रह्माण्ड के रहस्य को भी समझने का भली भांति प्रयास किया, यदि किसी एक सूत्र की उन्हें प्राप्ति हुयी तो उसे परखा और तब लोगों के सामने रखा | उन्होंने ये भी समझा की तंत्र वस्तुतः जीवन जीने का तरीका है और प्रकृति में सभी सजीव और निर्जीव इसी व्यवस्था के अंतर्गत आते हैं, या तो यहाँ पर स्वतंत्र है या उससे कही ऊपर **परातंत्र** यहाँ मैंने परतंत्र की बात नहीं कही है,वो तो अत्यंत घृणित अवस्था है,तभी तो भगवान कृष्ण ने गीता में कहा है की –

“स्वधर्मे निधनं श्रेयः परधर्मो भयावह”

किन्तु हम इस वाक्य को जातिसूचक मानते हैं जबकि ये धर्म से प्रेरित है|

धर्म अर्थात “धारयति इति धर्मः”

जिसे अंगीकार किया जाये धारण किया जाये वही धर्म है | अपनी स्वयं की व्यवस्था में जीते हुयी प्रकृति की समरसता को समझ कर आत्मसात करना ही परातंत्र है,अर्थात एक ऐसी व्यवस्था जहाँ पदार्थ और तत्व आपसे संवाद करने लगते हैं तब कोई भेद नहीं रह जाता और सभी को सभी का रहस्य ज्ञात हो जाता है |और जब ये हो जाता है तो ज्योतिष के द्वारा नवीन सूत्र रचित हो सकते हैं और वे सूत्र कालातीत ना होकर सदा सदा के लिए अमर हो जाते हैं, संवाद और सूत्रों के उसी प्राप्ति का क्रम ही तो तंत्र ज्योतिष कहलाता है | तंत्र ज्योतिष अर्थात प्रकृति की व्यवस्था से ज्योतिष का योग | मास्टर कहते हैं की उन्हें सदगुरुदेव ने बताया था की जहाँ ज्योतिष समस्या का कारण ब्रह्मांडीय तारों और ग्रहों की गति का अध्यन करके समझता है वहीं तंत्र के द्वारा प्रकृति की व्यवस्था को समझकर उसका समाधान प्रकृति से ही प्राप्त कर लिया जाता है |

सम्पूर्ण तंत्र ज्योतिष के सूत्रों की चर्चा तो असंख्य पृष्ठों में भी नहीं की जा सकती है,किन्तु जब हम यहाँ पर इस विधा का वर्णन कर रहे हैं तो एक उदाहरण दे कर इस की महत्ता समझाने का प्रयास करुँगी |

प्रत्येक मनुष्य अपने जीवन में किसी ना किसी कामना को पूरा होते देखना चाहता है,और ऐसा नहीं है की एक कामना पूरी हो गयी तो दूसरी कामना की चाह ही नहीं होगी | किन्तु प्रत्येक मनोकामना पूर्ती की चाबी भिन्न भिन्न ही होती है| जैसे हम एक सिद्धांत लेते हैं की १२ राशियाँ हैं यथा –

मेष

वृष

मिथुन

कर्क

सिंह

कन्या

तुला

वृश्चिक

धनु

मकर

कुम्भ

मीन

राशिओं का यह क्रम हम सब ने देखा हैं और हमे यह भी पता है की प्रत्येक राशि का स्वभाव हर दूसरी राशि से भिन्न ही होता है और जीवन में घटनाओं के घटित होने के काल विशेष की जानकारी के लिए उच्च ज्योतिषी राशि दशा का भी आलंबन लेते हैं अर्थात इन राशियों के काल को आधार मान कर घटनाओं का सही समय जाना जा सकता है किन्तु यदि जन्मपत्री ही त्रुटिपूर्ण हो तो किसी भी दशा का सहयोग लेकर घटनाओं का सताया ब्यौरा प्रस्तुत नहीं किया जा सकता| अब जिनकी जन्मपत्री सही नहीं

है उनकी भी अपनी मनोकामनाएं हैं और जिनकी जन्मपत्री सही है उनकी अपनी मनोकामनाएं हैं तब ज्योतिष तो मात्र घटनाओं के काल का प्रस्तुतिकरण करता है वो भी तब जब गणना का आधार त्रुटि रहित हो, किन्तु यह नियम तो सत्य जन्मपत्री वालों के लिए है और वो भी तब जब गणना करने वाला विद्वान और कुशल हो| यह सम्भावना वर्तमान में ना के बराबर है और जब सत्य जन्म पत्री वालों का यह हाल है तो जिनकी जन्म कुंडली सत्य नहीं है वह तो मात्र तथा कथित ज्योतिषों के चक्कर में फसकर आजीवन मृगमरीचिका में भटकते रहते हैं और जब निर्देशित की हुई घटनाएँ घटित नहीं होती है तो ज्योतिष विज्ञान जैसे परम शास्त्र को कल्पना बता देते हैं|

वास्तविकता तो यह है की यदि कोई भी ग्रह किसी भी राशि में प्रतिकूल हो गया हो तब भी तंत्र ज्योतिष के सहयोग से प्रकृति की व्यवस्था को अपने अनुकूल कर किसी भी श्रेष्ठ मनोकामना की पूर्ती की जा सकती है| १२ राहियाँ सप्त ग्रहों में विभाजित हैं अर्थात राशिओं के दो ही वर्ग होते हैं – पहला उष्ण वर्ग जिसका अधिपति सूर्य होता है इसके आदिप्त्य में राजा होने के नाते सिंह राशि आती है, उसके बाद इसका युवराज बुध होता है जो कन्या राशि का स्वामी है फिर महामंत्री के रूप में शुक्र अपनी राशि तुला के साथ होते हैं, मंगल रुपी सेनापति वृशिक राशि के स्वामी हैं तब राजगुरु बृहस्पति शिक्षा अनुपालन और व्यवहार को सिखाने के लिए धनु राशि के स्वामी बनते हैं और जीवन में निष्ठा, सेवा और करम के प्रति कैसे जीवन दिया जाता है यह गुण शनि मकर के अधिपति होके सिखाते हैं| याद रखिये यह सभी राशियाँ और ग्रह सूर्य के आदिपत्य में हैं और सूर्य प्रतीक है आत्मा का जिसमें उष्णता और प्रखरता होना अनिवार्य गुण है अतः यह ६ ग्रह जीवन में तीव्रता और आत्म सम्मान को दर्शाते हैं. क्रम यही रहेगा किन्तु प्रकृति परिवर्तित हो जाती है जब बात शीत वर्ग राशियों की – यहाँ पर चंद्रमा राजा होते हैं कर्क राशि का स्वामी बनके, पुनः उपरोक्त क्रम अनुसार ही राजा के बाद युवराज बुध मिथु राशि, महामंत्री शुक्र वृष राशि के, सेनापति मंगल मेष राशि के, राजगुरु ब्रस्पति मीन राशि के तथा करम को गति देने वाले शनि कुंभ राशि के स्वामी होते हैं|

क्रम वही है किन्तु शीत प्रकृति में चंद्रमा चिंतन, मानसिकता और भाव के प्रतिनिधि होते हैं जिसका शीतल होना अनिवार्य है अर्थात निर्णय लेने के पहले समग्र चिंतन का आधार शांत मास्तिष्क ही होता है और उस चिंतन से संबंधित समस्त परिक्रियाओं से जुड़े हुए करम भी शांत ही होने चाहिए किन्तु जब चिंतन के परिणाम स्वरुप निर्णय प्राप्त होता है उसमें अडिगता और प्रखरता का होना अनिवार्य है और उस निर्णय को सत्य साबित करने के लिए किये गए करमों में भी तेजस्विता झलकनी चाहिए| सोचिये राशियाँ १२ हैं जो बटी हुई हैं ७ ग्रहों में, २ ग्रह राजा होने के नाते १-१ राशि का अपनी वशिष्ट प्रकृति के साथ नेतृत्व करते हैं किन्तु बाकी के ५ ग्रह २-२ राशियों के स्वामी हैं ,प्रकृति के दोनों गुणों से युक्त होकर अर्थात उष्ण और शीत| यदि जीवन में व्यक्ति के पास शांत मस्तिष्क है और आत्मा की प्रखरता से

परिपूर्ण निर्णय और कार्यक्षमता तो आप ही बताईये ऐसा कौन सा स्वप्न, ऐसी कौन सी मनोकामना होगी जिसे साकार नहीं किया जा सकता और यही सूत्र तो तंत्र ज्योतिष का महत्वपूर्ण सूत्र है|

चलिए व्याख्या में ना उलझा कर इसका विधान ही बताती हूँ- भारत वर्ष में १२ श्री विग्रह ऐसे हैं जो राजराजेश्वरी श्री विद्या के विग्रह हैं और यह विग्रह भी प्रकृति के २ ही गुणों में विभाजित हैं अर्थात उष्ण गुण और शीत गुण तथा यह १२ विग्रह १२ राशियों के भी प्रतीक हैं| यदि इनका पूजन तंत्र ज्योतिष के आधार पर एक यन्त्र विशेष का निर्माण कर किया जाए १२ राशियों , अधिपति ९ ग्रहों और भगवती के १२ रूपों की कृपा और आशीर्वाद से परिस्थितियां अनुकूल होकर मनोकामना पूर्ती तथा स्वप्न को साकार करती ही हैं|

"तन्त्रश्चर्या ज्योति:पुष्प" ग्रन्थ में वर्णित ये विधि इतनी सटीक है की प्रभाव देखकर मन आश्चर्य चकित हो जाता है | **ये सम्पूर्ण ग्रन्थ तंत्र ज्योतिष के सूत्रों का अद्भुत ग्रन्थ है** | ग्रन्थ में ये विधि **नव्य श्री चैतन्य कल्प** के नाम से वर्णित है |

किसी भी रविवार से अगले सोमवार तक ९ दिन इस प्रयोग को किया जाता है | साधना का समय प्रातः सूर्योदय को निर्धारित है | वस्त्र ऊपर सफ़ेद तथा नीचे पीला या केसरिया लाल होगा ऊपर सफ़ेद अंगवस्त्र तथा नीचे पीला या केसरिया लाल धोती या साड़ी धारण करना चाहिए | भोजन में केसर या पीला रंग मिश्रित मीठे चावल अनिवार्य हैनाथ्र्त इन्ही का भोग लगाना है तथा अन्य भोज सामग्रियों के साथ इसे भी स्वयं खाना है | माला रुद्राक्ष की होनी चाहिए | नित्य २१ माला मंत्र जप होगा | साधना काल में नित्य सूर्य को अर्घ्य दिया जाना अनिवार्य है और अर्घ्य ताम्र पात्र से दिया जायेगा |

स्नान कर अर्घ्य प्रदान कर साधना कक्ष में पूर्व दिशा की और बैठ जाए तथा "**ओम**" का उच्चारण तीन बार करे तथा सामने बाजोट पर सफ़ेद वस्त्र बिछाकर उस पर गुरु यन्त्र या चित्र और गणपति जी का स्थापन कर पंचोपचार पूजन करे तथा प्रयोग में सफलता हेतु आशीर्वाद की प्रार्थना करे |

तत्पश्चात उसी वस्त्र पर "**नव्य श्री चैतन्य कल्प यन्त्र**" का निर्माण सिन्दूर से करे और जहाँ पर चित्र में रंग भरा हुआ दिख रहा है वहाँ कुमकुम भर दे| बीच का गोला खाली रहेगा और वहाँ कुमकुम से ही "**श्रीं**" अंकित करना है| सबसे पहले उस **"श्रीं"** का पूजन कुमकुम मिश्रित अक्षत से करे अर्थात निम्न मंत्र बोलते हुए कुमकुम मिले हुए चावल एक एक मंत्र बोलकर अर्पित करे |

ओम श्री रूपेण कामाक्षी स्थापयामि पूज़यामि नमः

ओम श्री रूपेण भ्रमराम्बा स्थापयामि पूजयामि नमः

ओम कुमारी स्थापयामि पूजयामि नमः

ओम श्री रूपेण अम्बा स्थापयामि पूजयामि नमः

ओम श्री रूपेण महालक्ष्मी स्थापयामि पूजयामि नमः

ओम श्री रूपेण कालिका स्थापयामि पूजयामि नमः

ओम श्री रूपेण ललिता स्थापयामि पूजयामि नमः

ओम श्री रूपेण मंगलावती स्थापयामि पूजयामि नमः

ओम श्री रूपेण विंध्यवासिनी स्थापयामि पूजयामि नमः

ओम श्री रूपेण विशालाक्षी स्थापयामि पूजयामि नमः

ओम श्री रूपेण त्रिपुरसुंदरी स्थापयामि पूजयामि नमः

ओम श्री रूपेण गुह्यकेशी स्थापयामि पूजयामि नमः

तत्पश्चात पंचोपचार विधि से उस "श्रीं" का पूजन करे और इसके बाद ५,६,७ इस क्रम से जहाँ गिनती लिखी है वहाँ पर कुमकुम मिश्रित अक्षत और पंचोपचार पूजन करें | अर्थात जहाँ ५ अंकित है वहाँ कुमकुम वाले अक्षत अर्पित करे इसके बाद जहाँ ६ लिखा है वहाँ पर और ऐसे १० की गिनती तक आये इसके बाद ४ फिर ३ फिर २ फिर १ फिर १२ और फिर ११ तक सफ़ेद अक्षत अर्पित करे |

५. ओम सिंह राशिधिपत्ये दिवाकराय मम आत्मप्रकाश प्रकाशय प्रकाशय नमः

६. ओम कन्या राशिधिपत्ये उष्ण बुधाय नमः

७. ओम तुला राशिधिपत्ये उष्ण दैत्य गुरुवे नमः

८. ओम वृश्चिक राशिधिपत्ये उष्ण अंगारकाय नमः

९. ओम धनु राशिधिपत्ये उष्ण बृहस्पत्ये नमः

१०. ओम मकर राशिधिपत्ये उष्ण यमाग्रजाय नमः

अब सफ़ेद अक्षत अर्पित करे –

४. ओम कर्क राशिधिपत्ये मम चिंत्य विचिन्त्य सुधाकराय नमः

३. ओम मिथुन राशिधिपत्ये शीत बुधाय नमः

२. ओम वृष राशिधिपत्ये शीत शुक्राय नमः

१. ओम मेष राशिधिपत्ये शीत भुमिसुताय नमः

१२. ओम मीन राशिधिपत्ये शीत देवगुरुवे नमः

११. ओम कुंभ राशिधिपत्ये शीत शनिदेवाय नमः

क्रम ध्यान रखिये और अक्षत का रंग भी की कहाँ कौन से रंग का अक्षत अर्पित करना है फिर सम्पूर्ण यन्त्र का पुष्प और नैवेद्य से पूजन कीजिये और पूर्ण एकाग्र मन से स्थिर भाव से **“ श्रीं ह्रीं ह्रीं श्रीं”** (**SHREEM HREEM HREEM SHREEM**) मंत्र का २१ माला जप करे, ये क्रम ९ दिनों तक करे और अंतिम दिन पूजन और जप के बाद सभी सामग्री किसी जंगल में रख दे और कुछ दक्षिणा शिवमंदिर और शक्ति मंदिर में अर्पित कर दे | माला को विसर्जित नहीं करना है |उसे आप पूजन स्थल पर रख सकते हैं या धारण भी कर सकते हैं, प्रयोग के दुसरे दिन ९ बच्चियों को भोजन या मिष्ठान अर्पित कर दे |

ये हमारे जीवन का सौभाग्य है की ऐसा अद्भुत विधान हमारे समक्ष है जो जीवन की विपरीत परिस्थितियों में गिन्गिदाने की अपेक्षा विजय प्राप्ति के मार्ग पर चल कर मनोकामना पूर्ती की क्रिया को सफल बनाता है और वैसे भी तंत्र प्रयोग करने की क्रिया है इसका अनुभव पढकर नहीं अपितु क्रिया संपन्न कर ही किया जा सकता है |

TRUTH !!!!!!!!!!!!!!!!!!!!!!!!!!!!!!

मित्रो,

जैसे जैसे साधना सामग्री के बारे मे और पारद विग्रहों के बारे मे हमारी ओर से आपके सामने जानकारी आती जा रही हैं,साथ ही साथ इन वस्तुओ को प्राप्त करने के लिए आप लोगों का उत्साह भी साफ़ साफ़ परिलक्षित होता हैं तो यही समय हैं की कुछ प्रश्नों के उत्तर आपके सामने स्पस्ट होना ही चाहिये,और यह आवश्यक भी हैं जिससे आप सभी और भी सुविचारित तरीके से पूरी तरह निर्णय ले कर ही इन वस्तुओ को प्राप्त करने के लिए हमसे कहें. इनमे से कुछ प्रश्न बेतुके से भी हो सकते हैं पर उन सभी को आप ध्यान से पढ़े .

प्रश्न :NPRU द्वारा उपलब्ध कराये जा रहे विभिन्न साधनात्मक दुर्लभ वस्तुओ का लागत मूल्य इतना अधिक क्यों हैं ?

उत्तर –मित्रो,यह हम कई कई बार स्पस्ट कर चुके हैं,की इन वस्तुओ को उपलब्ध कराने हेतु हमारा कोई व्यापारिक उदेश्य नही हैं.हलाकि कतिपय लोगों को ऐसा लगता होगा,और ऐसा लगने के लिए हमेशा से ही वे स्वतंत्र हैं,न केबल अभी बल्कि आगे भी ..क्योंकी यह उनका कार्य हैं पर यह विचारणीय तथ्य हैं कि हमारी कोई भी दूकान या शाखा नही हैं,साधको के लाभार्थ कई कई बार जो दुर्लभ वस्तुए हमें प्राप्त हो सकती हैं या जिनकी हमें जानकारी हमारे वरिष्ठ सन्यासी गुरू भाई बहिन द्वारा प्राप्त होती हैं,उनको उपलब्ध करवाने हेतु यह एक प्रयास ही हैं.इन दुर्लभ वस्तुओ को प्राप्त करने मे लगा श्रम,उन दुर्लभ वस्तुओ की शोधित करना और विभिन्न प्रक्रिया से संगुफित करना, जिनमे हवन और अन्य प्रक्रियाये हैं.

अब किसी अन्य स्थान की तरह बस एक ताबे का टुकड़ा लेकर कुछ भी बना कर कर उसे उपलब्ध करा दिया जाए,फिर चाहे किसी साधक का सारा श्रम बेकार हो जाए,वह इन आलोचकों को स्वीकार हैं,क्योंकी वह साधना सामग्री मात्र कुछ रुपये मे प्राप्त हो गयी हैं, और अब अपनी सारी असफलता अब सदगुरुदेव जी पर आरोपित कर दें.अब आप सोच लें.की सही प्रामाणिक

सामग्री उपलब्ध करवाना भी मानो एक गुनाह हैं .कुछ ऐसे मानसिकता वाले लोग तो हर बात का केबल आर्थिक पक्ष ही देखते हैं.

प्रश्न :इसका क्या प्रमाण हैं की उपलब्ध कराई जाने वाली वस्तुए प्रामाणिक हैं .?

उत्तर –मित्रो,आश्चर्य की बात तो यह हैं की जहाँ लोग हज़ारों रूपये दे रहे हैं,आप इशारा समझ सकते हैं,वहां सामग्री की गुणवत्ता की बात करने मे इन आलोचकों को साप सूंघ जाता हैं.वहां तो कुछ बोला ही नही जाता हैं और अपने बचाव ने एक से एक तर्क ,पर यदि कोई प्रामाणिक साधना उपकरण उपलब्ध करवा रहा हैं तो उसे चाहिये की वह इन कतिपय फर्जी आई डी धारक आलोचकों से पहले प्रमाण ले,इनकी सहमति ले.हमने सदैव कहा है की आप इन सामग्रियों की सत्यता को परखने के लिए स्वतंत्र हैं.इनकी प्राण ऊर्जा को मापने के लिए जिन यंत्रों का प्रयोग किया जाता है,उसके द्वारा इनकी प्राण ऊर्जा को स्वयं हो माप लीजिये.और जाकर उन स्थानों की भी सामग्री का सत्यापिकरण करवा कर देखिये,जो ये कहते हैं की सामग्री प्रमाणिक है और प्रत्येक साधना और विधान को सामग्री की ओट लेकर मात्र करोडो रुपयें खीचते हैं.

आभा मंडल मापने वाले यंत्र से प्राण प्रतिष्ठा का तेज नापिए स्वतः हि दूध का दूध और पानी का पानी हो जाएगा.किसी श्रेष्ठ कर्मकांडीय विद्वान् से एक बार पूरा विधान और उस क्रिया पर होने वाला व्यय ज्ञात तो करके देखिये.(विधि विधान को तो मैंने यहाँ पर चर्चा में शामिल भी नहीं किया है)

और क्या कहूँ इन आलोचकों लोगों ने शायद अपनी माँ का दूध पिया नही हैं ,अन्यथा फर्जी id से कभी उग्रतारा तो कभी गुरू त्रिमूर्ति की फर्जी आई डी बना कर आरोप लगाना ,और अपने आप को सिद्ध हस्त तांत्रिक बताना,पर हिम्मत तो इतनी नही की, अपनी सही आई डी से सामने आये और अपनी बात कहें,आमने सामने की लडाई के लिए तो हमारी सारी टीम तो हमेशा से तैयार हैं,और ऐसा भी नहीं है की हमें इस तथ्य का ज्ञान नहीं था की कौन ऐसा कर रहा है, वो अपने बन कर हि तो ऐसा कर रहे थे.किन्तु इसका लाभ हुआ क्या.

कोई २ महीने मे मारण प्रयोग करके हमे नेस्तनाबूद कर रहा था. **तो कोई अब इस होली की रात मे मारण प्रयोग करने की तैयारी मे लगा हुआ हैं,इन पक्तियों के माध्यम से इन कतिपय सिद्ध हस्त तांत्रिको को यही चुनौती देता हूँ की जिस भी भयंकर से भयंकर मारण प्रयोग को ये कर सकते हैं करके देख लें,हमारा एक बाल भी टेढा कर पाए तो बताये.क्यूंकि कम से कम हमारी आई डी तो वास्तविक फोटोज के साथ ही है.वास्तविक तंत्र मुह पर चुनौती देता है और**

क्रिया को सफल बनता है.कौन कब कहाँ क्या क्या बाते करता है योजनायें बनता है...इतना तो हमारी समझ में भी आता ही है.

मित्रो,दोस्त बने तो इतना साहस रखें की सामने साथ खड़े हो सकें और शत्रुता रखें तो भी सामने आकर चुनौती दे,कायरो की भांती फर्जी आई डी से अपशब्दों और अपनी अमर्यादा दिखाना का क्या अर्थ हैं.क्या हम आज तक कोई भयभीत हुये,आप सभी ने विगत मे हुये अनेक प्रयास देखें ,पर हम तो आगे बढते गए,आज भी कई कई ग्रुप मे यही कृत्य होते रहते हैं.

अगर आपको भरोषा नही हैं तो आपके लिए यह साधनात्मक वस्तुएं नही हैं.

मित्रो हमने यह बात बार बार की हैं की जिन भी प्रक्रिया की हम बात करते हैं जो इन साधनात्मक वस्तुए के निर्माण मे की जाती हैं वह जो सत्य मे इसको सीखना चाहते हैं और उनमे चाहे गयी यथा उचित योग्यता के साथ विन्रमता भी यदि हो तो जितना हमें निर्देश हुआ हैं उस मर्यादा के अंतर्गत हमें सिखाने मे कोई आपत्ति नही हैं,पर इसे यह न समझा जाए की हर किसी के लिए यह संभव हैं आप यह समझ सकते हैं.अन्यथा यहाँ कोई कोचिंग सेण्टर तो हैं नही.और जिन भी भाइयों ने हमारे द्वारा आयोजित कार्यशालाओ मे भाग लिया हैं वह इस तथ्य से भली भांती परिचित हैं,अब क्यों नही हम यह कार्यशालाएं कर रहे हैं तो उसका यही उत्तर हैं की पूर्व मे हमने यह सारी प्रक्रियाये सभी के लिए कर दी ,जिसका परिणाम यह हुआ की हमारे द्वारा उपलब्ध कराये गए फोटो और नोटस् को सुनियोजित तरीके से बदल कर किताबे निकाली जा रही हैं, कम से कम हमें इस बात का गर्व है की हमने एक पहल की थी और उसी पहल का लाभ उठाया गया और यहाँ के नोट्स तोड़ मरोड़ कर छपवाकर अपनी पीठ थप थापायी जा रही है.अन्यथा पहले यह सब कहाँ थे.अतः बेवजह आरोप लगाकर,यह छद्म रूप से मित्र बन् कर कोई यह यदि सोचता हैं की वह सारे सत्य जानने का अधिकारी हो गया हैं तो वह माने बैठे रहे और अपनी ढपली अपने ग्रुप मे बजाता रहे.हमने पूर्व मे भी कई कई बार यह बात रखी हैं .

एक विशेष तथ्य ये है की जब ये फेसबुक ग्रुप प्रारंभ हुआ था तो जब हम साधनाएं लिखा करते थे तो सैकड़ो उंगलियाँ उठती थी की आपको अधिकार नहीं है आप लोग कैसे बता सकते हैं,कैसे किसी को साधना सम्बन्धी जानकारी दे सकते हैं...आप सब गुरु द्रोही हैं इत्यादि इत्यादि,हमने उस उपाधि को भी ग्रहण किया,की ठीक है भैया आप सही कह रहे हो...किन्तु ये क्रम रुका नहीं और आज यदि अन्य भाई बहनों में इतनी हिम्मत आई है की वे भी ज्ञान आदान प्रदान कर रहे हैं तो अपना वो प्रयास और उसकी पहल पर गर्व होता है. अन्यथा तब भी अन्य भाई बहनों के पास

ज्ञान था किन्तु वे मात्र अपराध बोध में ग्रसित रहते थे.उन्हें ज्ञान का विस्तार ग्लानी देता था.एक अपराध भाव से ग्रस्त करता था.जबकि आज सभी आपस में पूर्ण प्रेम भाव से आपस में ज्ञान का आदान प्रदान करते हैं और उसका लाभ उठाते हैं.

और इस बात को अच्छी तरह से समझ लिया जाए या जान लिया जाएँ की,और पूर्व काल मे भी कई कई बार हम यह स्पस्ट कर चुके हैं **की जोधपुर और दिल्ली स्थित आश्रमो और गुरू त्रिमूर्ति से हमारा कोई सबंध नही हैं,अतः हम बाध्य नही हैं की कोई भी उनसे सबंधित व्यक्तियों के या उनकी संस्था से सबंधित किसी भी बातों का उत्तर हम दें ही. और ना ही वे हमसे कोई जानकारी प्राप्त करने का अधिकार रखते हैं.**

साथ ही साथ कार्यशालाओ के आयोजन की बात बार बार की जाती हैं ,पहले यह समझे की सेमीनार मे चार पांच घंटे लगातार बैठे रहने पर के प्रश्न पर सोचिये,उसमे मे एक या दो बार अल्प अवकाश देना पड़ता हैं और जब कार्यशालाओ का आयोजन किया जाए और उसमे १०० माला सुबह और १०० माला शाम को जप एक एक बार मे करनी पड़ेगी वह भी एक दो दिन नही बल्कि ७ से २० दिन तो भला दूसरी बार कौन आएगा ,यहाँ यह जबाब नही की.... मैं तैयार हूँ ,बल्कि वास्तविकता हम भी जानते हैं ही .

पहले तो यह समझा जाए की यह किताबें कोई २०,००० या ३०,००० कापी मे तो छपती नही हैं, सिर्फ जितने लोगों को हम सेमीनार मे अनुमति देते हैं.लगभग उतनी ही छापी जाती हैं,निश्चय ही समय,धन और श्रम तो लगता ही हैं.क्योंकी यह किताबें सेमीनार मे भाग लेने वालें व्यक्तियों के लिए ही हैं.साथ ही साथ किसी भी किताब की कीमत उसके पृष्ठ संख्या देख कर लगाने वाले व्यक्तियों की मानसिकता को सिर्फ प्रणाम ही किया जा सकता हैं.साधनात्मक ज्ञान का मूल्यांकन कभी भी उसके पृष्ठ संख्या देख कर नही किया जा सकता हैं.पर कुछ अति बुद्धिमान हैं उन्हें मैं यह बताना चाहता हूँ की स्वर्ण प्रिया लक्ष्मी साधना मे सदगुरुदेव उस साधना के यंत्र के बारे मे यह कहते हैं की इस यन्त्र की महत्वता के सामने व्यक्ति का जीवन भी कुछ नही हैं.तो जरा सोचिये भला एक जीवित मानव की तुलना मे एक ताबे का ढाई इंच का टुकड़ा की कीमत ...पर अभी भी कई हैं ऐसे .

साथ ही साथ ,इस सेमीनार मे ही आपमे से कई लोगों ने वहां आकर कहा की उन्हें यह यन्त्र किताब चाहिये हैं और उनकी आर्थिक स्थिति नही हैं ऐसी की इसे वह ले पाए या कुछ ने कहा की वह बाद मे धन राशि भेज देंगे या कुछ मे ने कहा की वह पार्ट पार्ट करके दे पायेंगे और हमें उन्हें

तत्काल किताब और यन्त्र सहर्ष प्रदान की,अगर उनके अनुरोध मे जरा सा भी सत्य रहा.अब आप ही सोचिये अगर हमारी यह व्यावसायिकता होती तो ...

अगर व्यक्ति सोचें तो समझ पायेगा की एक सेमीनार मे भाग लेने के लिए व्यक्ति का कुल व्यय लगभग ८ से १० हज़ार तक हो जाता हैं.(इसमें उसके अपने घर से यहाँ तक आना जाना और होटल मे रुकने,भोजन का व्यय भी तो समझे)तब वह जाकर यह किताब और यन्त्र पा पाता हैं.सेमीनार के बहाने किताब के साथ कोई सिर्फ ताबें का टुकड़ा नही भेजते हैं उस यन्त्र जो किताब के साथ भेजा जाता हैं उसका मूल्यांकन कर पाने के लिए जो योग्यता चाहिये वह कहाँ हैं ?.

साथ ही साथ अगर सारा व्यय,जो कुल आय हुयी हैं उससे निकाल देने के बाद जो भी बचता हैं वह योग्य साधनात्मक कार्यों मे ही लगता हैं .

इन बातों को न मानने के लिए आलोचक स्वतंत्र हैं वह कोई हमारे बंधुआ मजदुर तो हैं नही दूसरी बात फर्जी आई डी से लिखने वालें ऐसे महान तांत्रिको क्या कहाँ जाए,इनकी बुद्धि शायद घास चरने चली जाती हैं,इन्हें यह तो याद रहता हैं की इसमें लाभ कमाया जा रहा हैं.पर उन्हें यह नही दिखायी देता की जो सामग्री हम साथ मे उपहार स्वरुप दे रहे होते हैं ,इन्हें यह नही दिखता की कितने हमने लक्ष्मी यन्त्र उपहार स्वरुप अपने खर्चे पर भेंजें,वहां पर मौन साध कर ये चुपचाप बैठ जाते हैं.मित्रो तीन बार हमें कितने लक्ष्मी यन्त्र अपने खर्चे पर भेंजें.वह इन अक्ल के अन्धो को दिखाई नही देता हैं.

साथ ही साथ हमने एक योजना बनायीं रही की हर महीने सात सात साधनाए न केबल हम देंगे बल्कि उनकी लियी आवश्यक साधना यन्त्रपूरी तरह से अपने खर्चे पर फ्री मे भी,हाँ उन प्रयोगों के लिए माला आपको ही बनाना पड़ेगा,हमने सारी विधियाँ भी सामने रखी यहाँ तक की सेमीनार मे भी विशिष्ट माला निर्माण की बात हमने आपके सामने पूरी तरह से रखी..पर सिर्फ़ एक महिने साधना करने के बाद अनेको का उत्साह ठंडा पड़ गया ,और ...जरा सोचें की यह सब क्या फ्री मे हो जाता हैं .इन आलोचकों का बस चले तो इन्हें सब कुछ फ्री मे ही .तब भी शायद इनका पेट ...

और यह मित्रो इस तरह से सम्भव होता हैं की हमारे कई कई भाई जिनके नाम मैं कई पोस्ट मे ले चुका हूँ वह निस्वार्थ भाव सहायता करते हैं,ये होते हैं इस तरह हमारा और उनका एक समूह बनता हैं,जो अपने ही कम भाग्यशाली भाइयों की सहायता करता हैं वह भी चुपचाप ....ये होते हैं एक सच्चा साधक और शिष्यता की राह पर चलने वाले अन्यथा यहाँ तो ..ऐसा लिखते जाए की आरिफ भाई आप तो ये हो वो हो और मैंने तो आपमें ..परन्तु अंदर ही अंदर ...

प्रश्न :ये पारद विग्रह ,कभी पारद कंकण तो कभी पारद शिवलिंग,तो अभी हाल मे पारद सहत्रन्विता देह तारा हर बार एक नया विग्रह ,क्या यह एक नया तरीका नही हैं लोगों को अपने जाल मे फसायें रखने का ?

उत्तर: क्या अब हर बात के लिए इन नव आलोचकों को सदगुरुदेव की हर बात बतानी ही पड़ेगी इनके पास न तो समय हैं न ही अपने सदगुरुदेव द्वारा कहीं गयी बातों को समझने का,हमने तो जिस ज्ञान को सदगुरुदेव ने उस काल मे सबके सामने रखा वह फिर एक बार सबको उपलब्ध करवाया या करवाने का प्रयास कर रहे हैं ,तो इनको हजम नही हो रहा हैं कृपया एक बार उनकी पूरा साहित्य पढ़े तो उनकी द्वारा बनायीं गयी केसेट्स सुने तो और यह न भूले की सन १९८० से जब तक रिकार्डिंग की सुविधा नही थी तब उस काल मे सदगुरुदेव द्वारा प्रदत्त ज्ञान का क्या ? और उनके सन्यासी शिष्य शिष्याओ द्वारा प्रदत्त ज्ञान को क्या...........और सदगुरुदेव द्वारा दिया गया अद्भुत ज्ञान को क्या ....इन आलोचकों के प्रमाण की आवश्यकता हैं .

और हमने तो कभी नही कहा की यह तो लेना ही होगा .हमारी तरफ से कोई जोर जबरजस्ती हैं ही नही .किसी के साथ भी नही ,और एक और तथ्य हैं की हमारे द्वारा बनाए गए विग्रह पूरे शास्त्रीय विग्रह इतने महगें हैं की सभी उसे ले पायें यह संभव सा भी नही हैं,यह तो सदगुरुदेव की परम कृपा रही की उन्होंने उस काल मे यह सब उपलब्ध करवाया,पर यह उनके लिए संभव रहा ....

और आज ***कुछ लोग या सस्थान *** अल्प मोल मे इनको उपलब्ध कर रहे हैं,ज्यादा अच्छा होगा की जिन्हें सिर्फ मूल्य से मतलब हैं वह उन्ही से प्राप्त करें.यह उनके लिए और हमारे लिए दोनों के लिए श्रेष्ठ होगा .

मित्रो ,पहली यह बात अच्छी तरह से समझ लेना चाहिये की हम कोई मंत्र सृष्टा तो हैं नही हैं,की अपने घर मे बैठे रोज रोज नयी नयी साधनाओ का निर्माण करते जाएँ या हमारे यहाँ कोई फैक्टरी मंत्र और साधना निर्माण की लगी हुयी हैं हालाकि हमारे आलोचकों मे कई कई मंत्र सृष्टा बने हुये हैं ...... ,

पर हमारी वास्तविकता तो यही हैं या यूँ कहूँ सत्य तो यही हैं की हम सभी (NPRU) तो संकलन करने वाले हैं.और यह तथ्य तो हमने कई कई बार सामने रखा हैं की हमें किन स्त्रोतों से यह साधनाए प्राप्त होती हैं ,उनमे से सदगुरुदेव जी के सन्यासी शिष्य शिष्याओ का एक बहुत विशाल वर्ग हैं,साथ ही जब सदगुरुदेव साधना प्रयोग करवाते तो कई कई उच्चस्तरीय दुर्लभ ग्रंथो का

उल्लेख करते रहे और ऐसा तो उन्होंने कई कई अपने लेखन मे भी किया हैं तो उन दिव्यतम ग्रंथो मे प्रकशित साधना मंत्रो की प्रमाणिकता पर संदेह भला हम कैसे कर सकते हैं,तो अब क्या हर साधना को प्रकाशित करने से पूर्व इन आलोचकों से प्रमाण पत्र लेना कोई अनिवार्य प्रक्रिया ...

स्वयं की या उन साधकों की अनुभूत साधनाएं और उन्होंने जिस भी पद्धति से सफलता प्राप्त की है उसे बिना किसी फेर बदल के ही दिया जाता है.

इसके साथ ही साथ हमारी साधना यात्रा के समय जिन भी सिद्धो ,महासिद्धो ,तंत्र विद ,तंत्र मर्मज्ञो से जो भी प्रामाणिक ज्ञान मिला हैं वह आपके सामने हैं .अब आप उसका क्या प्रयोग और कैसे प्रयोग करते हैं वह तो एक साधक की मानसिकता पर हैं,पर आलोचना करने वाले कम से कम यह तो बताए की किन किन किताब से हमने लिखा हैं .हमने दुर्लभतम मौलिक साधना क्रम जो हमें सदगुरुदेव की असीम कृपा करूणा से प्राप्त हुये हैं.और हमने कभी यह कोई क्लेम किया हैं की हम इन साधनाओ के निर्माणकर्ता हैं,अब यह इन आलोचको की मानसिकता पर निर्भर हैं की साधनाए करके अपने साधना जीवन को उच्चता पर ले जाएँ या फिर अनर्गल आरोपों की बरसात करते रहे .

प्रश्न : हमें कैसे पता चले की आप जो कहते हैं वह ज्ञान सच मे ..प्रामाणिक हैं ही ?

उत्तर :मित्रो ,**सेमीनार मे चार से छह घंटे बिना किसी किताब से देखें,अनवरत बोलना वह भी हर प्रश्न का सटीकता से उत्तर देते हुये,भला किस किताब को रट कर संभव हो सकता हैं,वह जहाँ मंत्रो का उच्चारण और मुद्राओं का प्रदर्शन के साथ साथ उन साधनात्मक रहस्य को भी उद्घाटित करना होता हैं क्या अब भी यह सब किसी रटंत विद्या से संभव हैं एक पल को सोचें? ,और यह तो तभी संभव हो सकता हैं जब उन साधनात्मक स्थिति को स्वयम जिया हो ,उन साधना को स्वयं साकार साक्षात् किया हो ,और यह तो आप मे से अनेको ने देखा हैं,**

तब भी कितने बार इन सामने ज्ञान से पैदल ..आलोचकों को ..

किसी भी ज्ञान की प्रामाणिकता पर सदेह उठाने के लिए एक स्वयं का भी उस अवस्था के आस पास होना जरुरी हैं.

प्रश्न :दुर्लभ वनस्पतियों को हमें पूरी जानकारी हर हाल मे दी जाए,अगर ऐसा नही करते हैं तो सारी npru टीम की यह व्यावसायिकता ही हैं यह और क्या ?

उत्तर :सिर्फ लिख देने से वह कार्य कर ही दीया जाए यही तो आलोचकों का मंतव्य होता हैं ,पर हम तो अपनी मर्यादा मे बंधे हैं जिन वनस्पतियों का उपयोग तंत्र मे विशिष्टता से होता हैं अगर वह प्रचुरता से उपलब्ध होती हैंतो हमें आपको उसको फ्री मे उपलब्ध करवाने मे कोई दिक्कत

नही हैं.जिस तरह आज आरिफ भाई जी ने चंद्र प्रिया जड़ी के बारे मे कहा की अगले सेमीनार मे वह यह उपहार स्वरुप उपलब्ध करवाएंगे ,पर अन्य जिनको पाना बहुत कठिन हैं उनके लिए तो यह तो संभव नही हैं.साथ ही साथ इनका परिचय सभी के लिए उपलब्ध करवा पाना संभव होगा क्योंकी विगत समय का हमें अनुभव हैं ही ,और यह तो सभी जानते हैं की सीधे पेड़ ही सबसे पहले काटे जाते हैं अतः सिर्फ बातों मे भावुकता लाकर यह एक बार फिर से हो जाए कम से कम अब तो संभव नही हैं.हमारी टीम अपनी मर्यादा और सीमा जानती हैं .

अब जिसे इनकी प्रमाणिकता पर संदेह हो वह सदैव से स्वतंत्र हैं किसी अन्य स्त्रोत से जहाँ पर उसे विश्वास हो,वही से साधना सामग्री ले ... यही उसके लिए उचित होगा. क्यूंकि ये बात हम पहले भी कह चुके थे की जब सभी भाई बहन बोलते हैं की प्रमाणिक सामग्री की व्यवस्था करवाई जाये तो हम सदैव मन करते रहे हैं.

साथ ही साथ ,उन तथाकथित स्वयम्भू महान सिद्ध तान्त्रिको को जो इस फेसबुक मे फर्जी आई डी बनाकर हमारे आस् पास उपस्थित हैं (कुछ मित्र बनकर तो कुछ प्रशंसक बन कर भी),वे यह अच्छी तरह से से समझ ले की,बनाते रहे फर्जी आई डी और करते रहे इंतज़ार सिद्ध महुर्तो का, करते रहे टाइम पास मारण प्रयोग ....पर हम सदैव विजय पथ पर ही अग्रसर होते आयें हैं और होते जायेंगे ही.हमारी आज तक की यात्रा इस बात का गवाह हैं,हमने जो कहा हैं वह हमने हर हाल मे किया ही हैं,और हम सदगुरुदेव जी के दिव्य चरण कमल आश्रित हैं. यह इन मित्र रूपी छदम वेश धारी आलोचकों को ध्यान मे रहे .

There is one more mode/genre connected to Sadhna-related genre which has also been called Ayurveda. But

What is the relationship of Ayurveda with sadhna?

How one can completely accomplish any sadhna through it?

It cannot be even thought that link can be established between chanting mantra and sadhna on one hand and herb on the other?

One can get little bit help but can sadhna also …..?

Why not, when nature has made everyone complete in itself then how we can consider any aspect to be less or more important,

But what is their use in Itar Yoni sadhna or Karn Pishaachini Sadhna?

One sadhak make every possible attempt to attain success in sadhna because there are only two states in life, either to keep one medicine and declare our self as Vaidya (term used in Hindi for ancient doctors) or continuously move ahead. It is correct that knowledge has got one limit, modern day sadhak may be reluctant or feel shame to learn certain things in front of someone but how can be forget our actual condition? Have we become complete that we resort to shyness and shame? What we have learnt and experienced, we are telling to others but there are so many among disciples of Sadgurudev Ji who are continuously doing sadhna from hundreds of years then can we still stand egoistically in front of them ….we have accomplished this…my name is this . Keep in mind that Sadgurudev closely watches everyone and he never accepts any ego even if it is ego of knowledge or accomplishments. Because if seen in real sense then the sadhnas which we boost of calling as Tantra Sadhna, they are not even a, b, c, d of Tantra world……if you are not able to digest this fact then please read "HIMALAYA KE YOGIYON KI GUPT SIDDHIYAN", in which it has been given that Tantra path opens only after one has completed sadhnas of five peeths successfully. Thus, in this sense we all are……. Therefore, there should not be any shame/reluctance on our part to learn knowledge rather a new emotion would be portrayed in front of everyone that you are still young and you have intense desire to learn and you want to reach completeness….not this ….that you have started boosting of yourself by achieving only certain things…then who will learn about advanced things?

In the similar manner , there are so many procedures in Ayurveda that it alone can take you to supreme heights , even till Divya Ashrams…But how….?

For it, one should have attitude and feeling of complete dedication that I have to achieve completeness through it. We can talk on this more later. Here for this

seminar, we should understand that how these herbs can be used to lower intensity of any particular sadhna or can make it suitable for doing it at home. Here we are not talking about any such herb for namesake which is not easily available rather we are talking about those herbs which are readily available. It is true that this one-day seminar has got its own time-limits or will have so. Butwe will try our best to reveal as much information and facts in this context as possible. I am completely aware of the fact that it takes your hard-earned money for arranging for travel and accommodation. It is your affection which makes this possible. It is your intense desire which materializes it.It is your connectivity with us which makes this possible. Otherwise, in today people have become so much busy that they even do not go their homes in festivals and what to say about this….

Because we are connected in one knot , knot of Sadgurudev's knowledge and affection in which anyone can be/considered to be elder or younger for one moment…….but at last , we all are parts of soul of Sadgurudev….then…

While doing any sadhna, mental state of person especially his physical instability affects him a lot and this problem comes in front of person so many times in different forms then how can it be controlled by herbs? Otherwise his entire sadhna effort does not take even one second to go in vain. We discussed certain solutions in previous seminar and there are so many Ayurveda hidden secrets in Itar Yoni and Karn Pishaachini category sadhnas which can be learnt from any competent person, working on which person can attain success. But it takes time and politeness along with patience because it completely depends upon other person that he sees that particular thing in you.

Any capable sadhak takes assistance of all those things, knowledge, genre which can take him to his aim i.e. lotus feet of Sadgurudev Ji…which is supreme aim of all….where after complete surrender….one disciple is born from sadhak and who is greeted by each and every particle of nature that now here is free soul based on dignified emotional platform of one disciple…..

Only for those dear ones…

To be continued…

==

साधनात्मक विधाओ से जुडी हुयी, एक और विधा भी हैं जिसे आयुर्वेद भी कहा गया हैं.पर आयुर्वेद से साधना का क्या रिश्ता?

उससे कोई कैसे साधना पूरी सिद्ध कर लेगा ?

यह तो सोचा भी नही जा सकता हैं.क्योंकि कहाँ बैठकर मंत्र जप और साधना और कहाँ जड़ी बूटियों की बात... इनमे कैसे ..?

थोड़ी बहुत सहायता तो मिल सकती हैं पर क्या साधना भी ..?

क्यों नही, जब प्रकृति ने सभी को पूर्ण बनाया हैं तो उसके किसी भी पक्ष को हम कैसे कम या ज्यादा अंक सकते हैं,

पर इतर योनी साधना या कर्ण पिशाचिनी साधना मे इनका क्या उपयोग ?

एक साधक अपनी साधना मे सफलता पाने के लिए हर प्रयास करता ही हैं क्योंकि जीवन मे दो ही अवस्था होती हैं या तो एक सूंठ रख कर खुद को वैद्य घोषित कर दें या फिर लगातार आगे बढ़ते जाए,मानता हूँ की ज्ञान की एक सीमा पर किसी के सामने कुछ ओर सीखने मे आज के साधको को कुछ शंका या संकोच हो सकता हैं पर हम यह कैसे भूल जाते हैं की हम हैं आखिर कहाँ ? क्या हम सम्पूर्ण हो गए हैं जो की की इतनी लाज शरम का अवलंबन लेने लगे.हमें जो सीखा ,स्वनुभावित किया वह हम दूसरे को बता रहे हैं पर सदगुरुदेव जी के शिष्य मे से कई कई तो लगातार साधना रत रहते हुये शताब्दियों की की सीमा भी पार कर चुके हैं तब क्या उनके सामने भी हम ऐसे ही अकड़े रहेंगे की... हम तो ये हैं ..या हमारा तो नाम हैं..या हमें या हमारे बारे मे ...ध्यान रहे सदगुरुदेव सभी पर ध्यान रखते हैं ही और वह किसी का भी घमंड स्वीकार भी नही करते हैं फिर वह चाहे ज्ञान का ही क्यों न हो या सिद्धियों का ही क्यों न हो .क्योंकि अगर सही दृष्टी से देखा जाये तो जिन साधनाओ को हम तंत्र साधना कहते नही आघाते, वह तो वास्तव मे a, b,c ,d भी नही हैं तंत्र जगत का..क्या यह बात आप स्वीकार नही कर पा रहे हो तो आप "हिमालय के योगियों की गुप्त सिद्धियाँ" पढ़े ,उसमे दिया हैं की किस तरह पाँचों पीठ की साधना सफलता पूरी करने के बाद ही तंत्र का रास्ता खुलता हैं इस अर्थ मे तो सभी ...अतः ज्ञान के सीखने मे कभी भी किसी भी प्रकार की लज्जा नही बल्कि यह तो एक नया भाव सभी के सामने आएगा की आप अभी भी युवा हैं और अभी भी आपमें सीखने की ललक हैं और आप अपने को पूर्णता तक ले जाना चाहते हैं ..न की... अभी इतने मात्र से ही आप अकड गए .तब आगे की बात कौन समझेगा ?.

ठीक इसी तरह आयुर्वेद मे भी इतनी प्रक्रियां हैं की यह अकेला ही आपको सर्वोच्चता तक ले जा सकता हैं जी हाँ दिव्य आश्रमो तक भी ..पर कैसे ..?

उसके लिय एक मानस और एक पूर्ण समर्पण की मुझे इससे ही पूर्णता पाना हैं ही, वह भाव ना ही चाहिए .चलिए इस पर बात तो होती ही रहेगी यहाँ इस सेमीनार के लिए,हम यह समझे की किस तरह से इन जड़ी बूटी का प्रयोग कर किसी भी विशिष्ट साधना की उग्रता को कम किया जा सकता हैं या उसे घर पर करना के

लिए संभव किया जा सकता हैं और अनुकूलता पायी जा सकती हैं.यहाँ बात ऐसी जड़ी की नही हो रही है जिसका सिर्फ आप नाम सुन ले और फिर राम भजो जी ..वाली बात हो जाए बल्कि उनको उन जड़ी बूटियों को आप आस अपने पास आसानी से पा सकें उनकी बात कर रहा हूँ .यह जरुर हैं कि इस एक दिव्यतम सेमीनार की अपनी ही एक समय सीमा हैं या होगी.पर हमारी तरफ से पूरा जा पूरा ध्यान होगा की जितना ज्यादा से जायदा आपको इस संदर्भ मे मैं सूत्र और जानकारी दे सकूँ उतना मैं आपके सामने रखूंगा,मुझे इस बात का भान हैं की यहाँ तक आने जाने और अपने लिए रुकने की व्यवस्था करना मे कितना आपका स्व अर्जित धन लगता हैं और इसलिए साथ ही साथ आपका स्नेह हैं, जो यह संभव करवाता हैं, एक ललक हैं जो यह साकार करवाती हैं, एक अपनत्व की भावना हैं जो यह संभव बनवाती हैं .अन्यथा आज के व्यस्त समय मे लोग त्योहारों मे अपने घर तक तो नही जाते और फिर यहाँ ....

क्योंकि कहीं न कहीं हम सब एक सूत्र मे ही बंधे हुये हैं वह है सदगुरुदेव जी के ज्ञान रूपी स्नेह का सूत्र हैं जिसमे कोई बड़ा या छोटा हो एक पल के लिए हो सकता हैं / माना जा सकता हैं ..... पर हैं तो सभी सदगुरुदेव के आत्मांश ..तो ..

किसी भी साधना को करते समय व्यक्ति की मानसिक अवस्था खासकर शारीरिक उथल पुथल का उस पर बहुत असर पड़ता हैं और यह ही अनेक बार अनेक रूप से व्यक्ति के सामने आ जाती हैं तो कैसे जड़ी बूटी के माध्यम से उसे नियंत्रित किया जाए ?.अन्यथा उसका सारा साधनात्मक श्रम मानो समाप्त होते एक पल भी नही लगता हैं.हमें ऐसे कुछ उपाय पर विगत सेमीनार पर चर्चा की हैं और इतर योनियों या कर्ण पिशाचिनी वर्ग की साधनाओ ने अनेको ऐसे आयुर्वेद युक्त गुप्त रहस्य हैं जो की किसी योग्य व्यक्ति से सीखे जा सकते हैं, जहाँ श्रम करके व्यक्ति सफलता तक पहुच सकता हैं पर इसके लिए समय और नम्रता के साथ धैर्य का भी तो होना जरुरी हैं क्योंकि यह तो पूरी तरह से सामने वाले पर निर्भर करता हैं की वह आपके अंदर कब वह बात देखें.

योग्य साधक हर उस चीज,ज्ञान ,विधा और सहयोगिता का सहारा लेता ही हैं जो उसे उसके लक्ष्य मतलब सदगुरुदेव जीके दिव्य चरण कमलों तक ले ही जाए ...जो की सभी का परम लक्ष्य हैं ...जहां पूरे समर्पण के बाद ..एक साधक से एक शिष्य का जन्म होता हैं और जिसका प्रकृति का एक एक कण ..अभिन्दन करता हैं कि अब हैं यह एक शिष्य की गौरवमय भाव भूमि पर आधारित एक मुक्त आत्मा ....

केबल उन्ही अपनों के लिए

SABAR TANTRA MAHAVISHANK-NATH JAGAT KI ADBHUT MUDRAAYEN

मुद्रा विज्ञानं के अंतर्गत कई एसी मुद्राओ का अभ्यास होता हे जिससे साधक साधनाओ की उत्च्च्तम स्थिति को प्राप्त कर लेता हे. तंत्र में मुद्रा को एक अत्यधिक आवश्यक अंग माना गया हे, और मुद्राओ का अभ्यास करने वाला साधक तंत्र में तीव्र गति से सफलता प्राप्त कर सकता है. सभी प्रकार की साधनाओ में मुद्रा का एक महत्वपूर्ण स्थान हे और इसी के अंतर्गत मुद्राओ के कई प्रकार हे. शक्तिओ को आकर्षित कर के केन्द्रीभूत करना मुद्राओ मुख्य कार्य है तथा मुद्राओ का आधार पंचतत्वों का नियमन हे. उंगलियां पंचतत्वो की प्रतिनिधि हे व् इनको निर्देशित दिशा में गतिविध करने पर शारीरिक तत्वों में परिवर्तन होने लगता हे जिसका सीधा सम्बन्ध परा जगत से होता है.

मुद्राओ का महत्व सिर्फ मात्र एक तथ्य पर भी जाना जा सकता हे की इन्हें वामाचार के मुख्य पंचमकार में भी यह एक अंग है. यु मुद्राए न सिर्फ आध्यात्मिक वरन भौतिक सफलताओ के लिए भी बराबर महत्व पूर्ण है. नाथ योगियो के मध्य गुप्त रूप से ही सही लेकिन कुछ एसी महत्वपूर्ण मुद्राओ का अभ्यास गुरु मुखी परंपरा से कराया जाता हे की साधक अत्यंत ही सहज प्रयास में वह सब कुछ हासिल कर लेता हे जो उसका अभीष्ट होता है, एसी मुद्राओ का उलेख्ख किसी ग्रन्थ में नहीं किया गया था ताकि इसका दुरुपयोग न हो सके और योग्यता वां व्यक्तियो को ही मात्र इसका ज्ञान हो सके. नाथ तंत्र दीक्षा के बाद इस प्रकार की मुद्राओ का अभ्यास अत्यंत गुप्त रूप से चुने हुए शिष्यों को कराया जाता है. कई नाथ संप्रदाय के महायोगी सिर्फ मुद्राओ के माध्यम से ही अष्टसिद्धियो को प्राप्त कर चुके हे. पूज्य श्री निखिलेश्वरानंद जी ने अत्यधिक कृपा कर के मुझे कई एसी दुर्लभ मुद्राओ का ज्ञान दिया था. उन मुद्राओ का प्रभाव देख कर चमत्कृत व् दंग रह गया था में. आज उन्ही मुद्राओ में से कुछ मुद्राओ का उल्लेख में आगे कर रहा हू.

<u>दिव्यात्मा आकर्षण मुद्रा:</u>

अंगुष्ठ को मध्यमा अंगुली के निचे स्थापित करे. फिर मध्यम को अंगुष्ठ के ऊपर हथेली तक मोड दे. बाकि तीनों अंगुलिया सीधी रहे. दोनों हाथो में यही क्रिया हो, उसके बाद परस्पर दोनों हाथो को जोड़ दे. यह दिव्यात्मा आकर्षण मुद्रा बनती हे जिससे सिद्ध जगत की दिव्यात्माओ का आकर्षण होता हे. इस मुद्रा को यथा संभव ३० मिनिट तक ब्रम्ह मुहूर्त में और ३० मिनिट सोने से पहले अभ्यास करना चाहिए. इस मुद्रा के अभ्यास से साधक को दिव्यात्मा प्रत्यक्ष अप्रत्यक्ष रूप में सहायता प्रदान करती है और साधना का मार्ग प्रसस्त करती है, अगर नियमित रूप से साधनात्मक नियमों के साथ इस मुद्राका साधक ११ दिन तक अभ्यास कर लेता हे तो उसे स्वप्न में दिव्यात्मा का दर्शन सुलभ होता है और साधक उनसे स्वप्नावस्था में साधना सबंधी प्रश्न पूछ सकता हे एवं उनका मार्गदर्शन ले सकता हे.

सिद्धनाथ दंड मुद्रा:

बाये हाथ की सभी अंगुलियों को मोड के हथेली तक लाया जाए. अंगुष्ठ सीधा तना हूआ रहे. अब दायें हाथ की अंगुलिओ से बाये हाथ के अंगुष्ठ को ऊपर से पकड़ा जाए, तथा दाये हाथ का अंगुष्ठ सीधा रहे. इस मुद्रा में दायाँ हाथ ऊपर और बाया हाथ निचे रहेगा. इसे सिद्धनाथ दंड मुद्रा कहते हे. इसका अभ्यास करते वक्त आंखे बांध रहे व् ध्यान नाभि पर रहे. इस मुद्रा का अभ्यास करने वाले साधक की ज्ञानशक्ति अत्यधिक बढ़ जाती हे और उसे सृष्टि के कई गोपनीय रहस्य अपने आप ही समज आने लगते हे, ज्ञान शक्ति बढ़ जाने पर उसे कई विविध प्रकार के चमत्कारिक अनुभव स्वयं ही होने लगते हे और साधना के गोपनीय रहश्य उसके सामने थिरकने लगते हे. स्थायी रूप से इस मुद्रा का अभ्यास करने पर कई सिद्धिया साधक को स्वतः ही प्राप्त हो जाती हे.

मंजरी मुद्रा:

दोनों हाथो तर्जनी अनामिका व् मध्यमा अंगुलीओको हथेली की तरफ मोड दे व् प्रथम अंगुली को एक दम सीधा रखे अंगुष्ठ को सीधा कर दे. अब दोनों हाथो के अंगुष्ठ को एक दूसरे से स्पर्श करने पर मंजरी मुद्रा बनती हे.

इस मुद्रा की जीतनी प्रशंशा की जाए कम है, इस मुद्रा के नियमित अभ्यास से व्यक्ति का मोह कम हो जाता है, उसमे साधना के प्रति एक आदर भाव उत्प्पन होता हे, साधना के लिए अनुकूल स्थिति उसे प्राप्त होती रहती है, यह मुद्रा आनंद कोष को जागृत करती हे फल स्वरुप साधक चाहे संसार के बाहरी क्रियाकलापों में हो या किसी भी कार्य में हो, अंदर से वो हर पल एक आनंद में डूबा रहता हे और अपने आप में ही खोया हूआ वह प्रकृति से एक कार हो जाता हे. वास्तव में यह मुद्रा अत्यधिक गुप्त हे क्यूंकि योगतंत्र की उच्चतम साधनाओ के लिए जिस प्रकार की भावभूमि साधक में होनी चाहिए यह मुद्रा उसी का ही स्थापन करती है.

There are special practices applied under Mudra science, which lead sadhak to achieve highest levels in Sadhanas. In the tantra, Mudra is believed as one of the very important part, and Sadhaka practicing Mudra can achieve success in tantra with rapid speed. In every kind of sadhana, mudra owns its important place and thus leads various types of the same. To attract powers and centralize them is main work of the Mudra and the base of the Mudra is to control 5 elements. Fingers are representation of 5 elements and to active those in proper direction can lead change in body elements which is directly connected with Trans world.

The importance of Mudra can even be understood with a single fact that it isalso part of Panchamakara of Vaam marg. This way, mudras are useful for not only spiritual attainment

but for material success even. Though secretly but in nath cult there are few important mudras which are applied for the sadhak to practice with Guru Disciple tradition only leading sadhak achieve his desires in very less efforts. Such mudras are not described in any scriptures so no one can misuse it and only appropriates may only get the knowledge of these mudras. After Nath tantra Diksha only selected disciples receive this knowledge secretly. There are Many Nathyogis who succeeded to receive AshtSiddhi through Mudras only. With extreme please of pujy Nikhileshwaranandji he blessed me with such rare knowledge of Mudras. After watching effect of these Mudras, I was amazed. Today, I am sharing few of them with you, below.

Divyatma Aakarshan Mudra:

Place your thumb under Madhyama finger. Then the thumb should be folded by Madhyamafinger touching the palm. The rest three fingers should be straight. Same goes for other hand, and then both hands should be joined together. This is Divyatma aakarshan mudra which leads an attraction of Divyatmas. This mudra should be applied to practice for 30 minutes in Bramh Muhurt and 30 minutes before sleeping. Practicing this mudra results into help from Divyatma in Direct/indirect way to sadhak and clears the way of sadhana. If sadhak practices this mudra for 11 days with all the regulations of sadhana that way he receives the blessing of Divyatma in dream and in that condition of dream sadhak may ask question in regard of sadhana and can seek their guidance.

Sidhhnath dand Mudra:

All Fingers of the Left hand should be folded to palm. Thumb should be straight. Now with the fingers of the right hand the thumb of the left hand should be hold and the thumb of the right hand should be straight and up. In this mudra right hand will be on upper side and left hand will be below the right hand. This is called as siddhnath dand Mudra. While practicing this mudra, eyes should remain close and concentration should be on navel. The practitioner of this mudra will get increment in knowledge power, and he becomes capable to understands many secret of this world by himself, with increasing knowledge power, he witness many mysterious experiences and many secrets of sadhana gets revealed in front of him. If this mudra is permanently placed in practice, it generates self to have so many siddhis.

Manjari Mudra:

The tarjani, anamika and madhyama fingers should be folded in both hands. The first finger should be straight and thumb should even be straight in its own direction. Now both the thumb should be applied for touch. This becomes Manjari Mudra. The words for appreciation are less for this mudra, with practice of this mudra, it lessens the enchantment of person, and the respect toward sadhana starts to flow. Sadhaka starts receiving favorable conditions for sadhana, this mudra activates Anand Kosha thus if sadhak is in whatever material work or task, even though from the inside he will have a joy and being lost within he becomes part of the divine nature. In fact this Mudra is very secret because the platform requires for sadhak to perform high level of yog tantra sadhana, this Mudra prepares the same attributes in sadhak.

MAANAS SIDDHI:FIRST DOOR FOR DIVINE CONSCIOUSNESS(मानस सिद्धि : दिव्य चेतना का प्रथम द्वार)

Tat Srishtitav Tad Ev Pravishtaat
"After creating Universe, Brahma Ji became embedded in it"
"We ourselves are Brahma and we should create ourselves considering ourselves as being present in entire universe"

Few days before, we read in Maanas Siddhi article regarding the thoughts arising in our mind during sadhna that how while doing sadhna, we get inkling about those things and thoughts regarding which we have never thought and we have not faced any situation due to which such thoughts arise in our mind…..But such thoughts not only arise in our mind rather wherever possible, we are influenced by it and in that article only, I expressed one easy but very useful thought , told to me by my Master that "If we have to save ourselves from illusion then we should abandon all the benefits and loss arising out of illusion".

Today here I am going to put forward that Vidhaan, that procedure in front of you all which is very hidden and secretive because controlling one's own thoughts means controlling your speed in field of Tantra. Because controlling your mind or thoughts arising in mind only means that now thoughts will come/go as per our will which is incomparable accomplishment in itself because "The one who possess knowledge, they know that mind is neither reliable friend nor faithful servant, we can direct it but never control it". But Tantra is one such Vigyan where there is no place for word like

Impossible. As I have already discussed that "Tantra does not run as per the expectation of foolish people since there is no place of emotions in it…".
High-order sadhak of Siddh Mandal Virupaaksh once said regarding Tantra and Sadhnas that "THERE IS ONLY ONE RULE THAT THERE IS NO RULE".These words have been told by him which Master explained to me that Siddhi is accomplished by those who are as much cruel for themselves as they can be for others. But here cruelty does not mean to physically harm one's self, it means to stand firmly on the resolutions taken by one's self……but friends, if mind allows it then only .Isn't it…………But how it will be if we imbibe the quote SHIVOHAM! SHIVOHAM! Meaning I am Shiva. Doing sadhna is also one Karma which is medium to take us to the state of Karma-lessness. Because unbalancing activities disturbs life-cycle continuously but they influence only those who considers himself different from supreme power but what about those who works according to him in thoughts, speech and karmas….Such person take their decision themselves. It is something like if there is no punishment then falseness will also not exist. In the same way if thoughts will not create illusion then there is no question to go astray…..and the day when these wandering in dark will finish ,same day there will be no difference between us and those divine powers…..we and they will become one and same……that day quote "SHIVOHAM! SHIVOHAM!" will be realized in practice.

In the previous article we understood that we should not react to thoughts arising in our mind, we should only behave as mute spectator while concentrating our vision. If one gets success in doing this then understand that Sadgurudev has provided you the first success relating to control of thoughts since it means not seeing even one moment of participation in the incidents happening in thoughts. In other words, he (Sadgurudev) has provided you (Sadhak) capability to introspect yourself…….meaning now you are learning about concentration……because such situation is created only when we become thoughtless, we ourselves don't know that what will we do or say now? We never think about this but clearly we are stage-manager of this unseen mentality. This subject may seem little bit difficult but in reality it is all about "I and my" from which we have to free ourselves.

If there is not aim in front of you then there is no question of its attainment and the one that can be felt, only those things exist…….Therefore you have to frame the limit of that world in which these thoughts occurs and concentrate on any one point or senses so that reality can be reviewed correctly and reality is that thought will create a doubt within you up till the time you are on Aasan….its flow will stop once you stop the sadhna. But our aim is to do sadhna sitting stable on Aasan and with thoughtless mind.

For controlling your thoughts while doing Sadhna, like Manah Shakti Sadhna, you have to follow one very easy but hidden Vidhaan in this sadhna too. It has remained hidden because such quickly-fruitful sadhnas are not available that much easily. You can do this sadhna on morning of any Monday because it is not a night-time sadhna. You have to chant 11 rounds of mantra given below. Direction will be north and dress will be white. If you have accomplished any rosary according to Vidhaan given by Master or any Aasan in Virupaaksh Aasan Siddhi Sadhna then you should use them because accomplished sadhna

articles increase the result of sadhna multiple times……but if you have not done anything like this then you can you Rosary and Aasan used in daily worship.

Before starting basic sadhna, do at least 11 rounds of Guru Mantra because he is the only one whose blessing can provide success in any sadhna. Take the blessing of Lord Ganpati so that sadhna can be completed without hurdle. After sadhna, offer Bhog of any sweet article as per your capacity to Sadgurudev and offer Jap in his lotus feet.

Mantra:
OM AING HREENG MANAS CHETNA SAADHAY SAADHAY HREENG AING OM

This sadhna is as much as hidden as it is easy. Therefore after doing it, share its experience with everyone and as I always repeat one thing told by my Master that after doing any sadhna, chant at least 1 round or repeat it again in interval of some days so that this mantra become accomplished for you for eternity.

Nikhil Pranaam….

==

तत् सृष्टित्व तद् इव नु प्रविशतात्

" ब्रह्मांड की रचना करने के पश्चात ब्रहमा जी इसी में समा गए "

हम ही ब्रह्म है और हमें स्वयं को समस्त ब्रह्मांड में व्याप्त समझते हुए स्वयं के निर्माण का कार्य करना है "

कुछ दिन पूर्व मानस सिद्धि लेख में हमने साधना करते समय हमारे मानस में उठने वाले विचारों के विषय में पढा था कि कैसे साधना करते समय हमें उन चीजों अथवा विचारों का आभास होने लगता है जिनके विषय में हमने ना तो कभी चिंतन किया होता है और ना ही कभी ऐसी स्थिति से हमारा सामना हुआ होता है जिससे ऐसे विचार हमारे मन में उभरे.....पर ऐसे विचार ना केवल हमारे दिल दिमाग में उभरते है बल्कि यथा संभव हम उनसे प्रभावित भी होते हैं और उसी लेख में ही इस समस्या के समाधान हेतु अपने मास्टर द्वारा समझाया एक सरल पर बेहद उपयोगी विचार भी मैंने आपके समक्ष ज़ाहिर किया था कि " यदि भ्रम से बचना है तो भ्रम से होने वाले फायदों और नुक्सान को तिलांजली दे दो " .

आज यहाँ मैं उस विधान को, उस प्रक्रिया को आपके समक्ष रखने जा रही हूँ जो बेहद गोपनीय और रहस्यमय है क्योंकि अपने विचारों को अपने बस में कर लेने का अर्थ है तंत्र के क्षेत्र में अपनी गति को अपने हाथ में ले लेना क्योंकि मन को या मन में उठने वाले विचारों पर नियंत्रण का अर्थ ही यही है की अब विचार हमारी गति से चलेंगे जो अपने आप में एक अतुलनीय उपलब्धि है क्योंकि " जो

ज्ञानी होते है वो जानते हैं की मन ना तो भरोसेमंद मित्र है और ना ही आज्ञाकारी सेवक, हम इसे निर्देशित तो कर सकते हैं पर नियंत्रित कदापि नहीं "पर तंत्र एक ऐसा विज्ञान हैं जिसमें असंभव जैसे शब्द के लिए कोई स्थान नहीं पर जैसे की मैं पहले ही आपसे इस कथन पर चर्चा कर चुकी हूँ की " तंत्र मूर्खों की अपेक्षाओं पर नहीं चलता क्योंकि इसमें भावना का कोई स्थान नहीं है....."

सिद्ध मंडल के उच्चकोटि के साधक विरूपाक्ष जी ने एक बार तंत्र और साधनाओं के विषय में समझाते हुए कहा था " **THERE IS ONLY ONE RULE THAT THERE IS NO RULE"** यह शब्द उन्ही के कहे हुए हैं जिन्हें मास्टर ने समझाते हुए बताया था की सिद्धि उसी का वरण करती है जो खुद के लिए उतना ही निर्दयी है जितना वो किसी और के लिए हो सकता है पर यहाँ निर्दयी होने का अर्थ खुद के साथ मार काट करने से कदापि नहीं है, इसका अर्थ है अपने किये हुए संकल्प पर दृढ़ता से टिके रहना.....पर बंधु मन ऐसा होने दे तब ना....पर कैसा हो यदि हम शिवोहं ! शिवोहं ! यानी मैं शिव हूँ.....वही मैं हूँ कथन को आत्मसात कर लें. साधना करना भी कर्म है जो हमें अकर्म तक की स्थिति तक ले जाने का एक माध्यम है क्योंकि असंतुलन पैदा करने वाली क्रियाएँ जीवन चक्र को निरंतर कर देती है पर इसका प्रभाव उसी पर होता है जो खुद को अद्वैत से अलग मानता है पर उसका क्या जिसके मन, वचन और कर्म उसी के अनुसार चलते हैं.....ऐसा मनुष्य अपना निर्णय स्वयं करता है बिलकुल वैसे जैसे दंड ना हो तो झूठ भी नहीं होगा ठीक उसी तरह यदि विचार भ्रम पैदा नहीं करेंगे तो भटकने का सवाल ही नहीं उठता......और जिस दिन यह भटकना खत्म हो जाएगी उस दिन हम में और दैवी शक्तियों में कोई भेद नहीं होगा....वो हम और हम वो हो जायेंगी... उस दिन शिवोहं ! शिवोहं ! का कथन भी सार्थक हो जाएगा.

पिछले लेख में हमने इस बात को समझा था की साधना करते समय मन में उठने वाले विचारों पर हमें कोई प्रतिक्रिया नहीं करनी चाहिए, अपनी दृष्टि को एकाग्र रखते हुए उन्हें केवल एक मूक दर्शक की तरह देखना चाहिए क्योकि यदि ऐसा करने में आपको सफलता मिलती है तो समझ लेना विचारों को वश में करने की साधना के संदर्भ में सदगुरुदेव ने आपको पहली सफलता प्रदान कर दी क्योकि विचारों में घटित होने वाली घटनाओं में अपनी सहभागिता को एक क्षण के लिए भी ना देखना अर्थात उन्होंने (सदगुरुदेव ने) आपको (साधक को) उसके स्वयं को अवलोकन करने दिया....मतलब अब तुम एकाग्रता के बारे में सीख रहे हो..... क्योंकि ऐसी स्थिति तब ही उत्पन्न होती है जब हम विचार विहीन होते हैं, हमें खुद को नहीं मालुम होता कि अब हम क्या करेंगे या कहेंगे? हम इसके बारे में सोचते भी नहीं लेकिन स्पष्टत: इस अनदेखी विचारधारा के सूत्रधार होते तो

हम स्वयं ही है. विषय थोडा सा कठिन प्रतीत होता है पर असल में है नहीं सब “ मैं और मेरे “ का खेल है जिससे हमें मुक्त होना है.

यदि सामने कोई लक्ष्य ना हो तो उसे पाने का सरोकार भी नहीं होता और जिसकी अनुभूति होता है अस्तित्व भी उसी का ही होता है...इसीलिए आपको उस विश्व को जिसमें यह विचार घटित होते हैं उसकी सीमा बाँध देनी है और खुद को किसी भी एक बिंदु या इंद्री पर केंद्रित कर देना होता है ताकि वास्तविकता की सही समीक्षा हो सके और वास्तविकता यह है कि विचार तब तक ही आपको भ्रमित करेंगे जब तक आप अपने आसन पर हो....साधना रोक देने पर इनका प्रवाह भी रुक जाएगा. पर हमारा उदेश्य विचार मुक्त होते हुए आसन पर स्थिर रहते हुए साधना करना है.

साधना करते समय अपने विचारों पर नियंत्रण स्थापित करने हेतु आपको मन: शक्ति साधना की तरह इस साधना में भी एक अति सरल किन्तु गोपनीय विधान का अनुसरण करना है. गोपनीय इसलिए क्योंकि इतनी शीघ्र फलदायक साधनाएं इतनी सहजता से उपलब्ध नहीं होती. इस साधना को आप किसी भी सोमवार की सुबह को कर सकते हो क्योकि यह रात कालीन साधना नहीं है. दिए गए मंत्र का आपको ११ माला मंत्र जाप करना है. साधना करते समय आपकी दिशा उत्तर होगी और वस्त्र सफेद. यदि मास्टर द्वारा बताए विधान के अनुसार आपने कोई माला और विरूपाक्ष आसन सिद्धि साधना में आपने कोई आसन सिद्ध किया हो तो आप उनका ही उपयोग करें क्योकि सिद्ध सामग्री साधना के फल को कई गुणा बढा देती है......पर यदि आपने ऐसा कुछ नहीं किया है तो आप अपने दैनिक विधान में उपयोग की जाने वाली माला और आसन का उपयोग कर सकते हैं.

मूल साधना आरंभ करने से पूर्व गुरु मंत्र की कम से कम ११ माला मात्र जाप जरूर करें क्योकि केवल वो ही हैं जिनके आशीर्वाद से किसी भी साधना में सफलता प्राप्त की जा सकती है और साधना निर्विघ्न सम्पन्न हो इसके लिए भगवान गणपति का आशीर्वाद लें. साधना के पश्चात सामर्थ्य अनुसार सदगुरुदेव को किसी भी मीठे पदार्थ से भोग लगायें और अपना जप उनके श्री चरणों में समर्पित कर दें.

मंत्र-

ॐ ऐं ह्रीं मनस चेतना साधय साधय ह्रीं ऐं ॐ

OM AING HREENG MANAS CHETNA SAADHAY SAADHAY HREENG AING OM

यह साधना दिखने में जितनी सरल है उतनी ही गोपनीय भी है इसलिए इसे करने के पश्चात अपने अनुभव जरूर सब के साथ बांटे और जैसे की मैं मेरे मास्टर की एक बात हमेशा दोहराती हूँ की

किसी भी साधना को करने के पश्चात उसे प्रतिदिन कम से कम एक माला या कुछ दिनों के अंतराल से फिर से कर लेना चाहिए जिससे की वो मंत्र हमेशा- हमेशा के लिए आपको सिद्ध हो जाए.

निखिल प्रणाम

SARVMANOKAAMNA POORTI - BRAHMAASTRA BAGLAMUKHI SADHNA

इल इल चिली चिली फिल फिल |

दी, इलाई बिलीन बिलाकी ||

हे प्रभु ! हम जीवन में साधनाओं के माध्यम से सभी समस्याओं का समाधान प्राप्त कर लें और जीवन को पूर्ण सुखी सफल और संपन्न बनाने मे सफल हों |

जय सदगुरुदेव ,

भाइयो बहनों जीवन का सौभाग्य होता है महाविद्या साधना . क्या आप जानते हैं सदगुरुदेव ने तो हमेशा से महाविद्या साधना पर ही जोर दिया है क्योंकि,

महाविद्या साधना का अर्थ ही है संसार किसर्वोच्च शक्ति, महाविद्या यानि साधक के जीवन से समस्याओं का दूर हों जाना . इन साधनाओं मे से कोई एक भी साधना पूर्णता के साथ हुई नहीं कि जीवन पूर्ण निष्कंटक और सुरक्षित होने के साथ ही आर्थिक भौतिक और अद्ध्यात्मिक उन्नति की ओर अग्रसर हों जाता है .

भाइयों बहनों वर्तमान समय बड़ी भाग दौड और आपाधापी वाला है . इसके साथ ही एक होड सी लगी आगे बढ़ने की, और इस होड में लोग सब कुछ भूल भी जाते हैं , रिश्ते नाते, दोस्ती भाईचारा सब कुछ . और इस होड़ में ही कुछ लोग अपना विवेक खो देते हैं और दुसरे का नुक्सान भी करने से नहीं चूकते . कभी व्यापर बंधन, कभी तंत्र प्रयोग, कभी और सुना कि काला जादू जैसे प्रयोग भी कर देते हैं

फलस्वरूप इनसे पीड़ित व्यक्ति की स्तिथी बद से बदतर होते चले जाते हैं और जैसा मैंने अभी आपको तंत्र बाधा प्रयोग देते समय बताया था कि जीवन नारकीय होता चला जाता है ....

प्रत्येक महाविद्या अपने आपमें पूर्ण होती हैं ये आप सबको पहले भी बता चुकी हूं ....

मेरी अति प्रिय माँ आदि शक्ति का सबसे अधिक सम्मोहक, तीव्र शत्रु हंता और समस्त मनोकामनाओं को शीघ्रअति शीघ्र पूर्ण करने में सक्षम है....... वो हैं .... माँ बगलामुखी.....

जीवन की समस्त समस्याओं, बाधाओं को दूर कर पूर्ण सुख शांति और निर्द्वंद, निर्भय, और पूर्ण सम्पन्नता के साथ जीना सिखाती माँ बगला........

माँ बगलामुखी के बारे में कई भ्रांतियां ....

जैसे----- इनके प्रयोग मारण के लिए किया जाता . इन्हें स्तम्भन के लिए साधा जाता है, इनका प्रयोग शत्रु को परेशान करने के लिए किया जाता है आदि आदि .....

अभी तक कुछ प्रयोग ऐसे दिए गए हैं जिससे ये तो साबित हों गया कि माँ के अनेक हैं जैसे --- अत्यंत तीव्र शत्रु हंता है तो तीव्र दारिद्रयहंता भी यदि स्तम्भनकारी हैं तो पूर्ण रक्षक भी . और साथ ही सम्रद्धिप्रदाता एवं साधको के लिए स्वयं मातृ स्वरूपा भी हैं .....

भाइयों बहनों ! आपमें से अनेकों के प्रश्न मेरे पास हैं औए उन सब समस्याओं का निदान तो करना ही हैं . मेरे मन में अचानक ये ख्याल आया कि सामने ही बगला मुखी जयंती है और आप सबको इस शुभ अवसर का लाभ तो उठाना ही चाहिए . हैं ना Jतो ....

मैने जो स्वयं अनुभूत किया, जिसका परिक्षण अनेकों बार सफलता पूर्वक किया, और जिसने मुझे अनेक कलाओं में पारंगत किया, माँ आज भी निरन्तर मेरा मार्ग दर्शन करती है ...

तो आइये इस बगला जयंती पर समस्त कामनाओं को, सभी कष्टों को चाहे वो रोग हों, दरिद्रता हों भय हों, असफलता हों, रुकावटें हों, बाधाएं हों कुछ भी हों....

एक प्रयोग एक साधना किन्तु संकल्प भिन्न, और रही बात पूर्ण सफलता की तो स्वयं करिये और देखिये ....

क्योंकि जब तक कोई चीज अनुभूत ना किया जाये तब तक उसके गुणों का अंदाजा नहीं होता.... अतः तैयार हों जाइये बगला जयंती को सेलिब्रेट करने हेतु..... हैं ना

प्रयोग विधि -

पीले वस्त्र, पीला आसन, पीले फूल और हल्दी में रंगे पीले ही चावल.....

उत्तर या पूर्व दिशा बगला यंत्र या बगला चित्र या विग्रह या इन सबके अभाव में माँ दुर्गा का चित्र भी ले सकते हैं .

पीली हकीक माला या हरिद्रा माला या रुद्राक्ष माला .

समय प्रातःकाल या ब्रह्म मुहूर्त से लेकर मध्यान्ह के पूर्व.

प्रातः स्नान आदि से निवृत्त होकर आसन ग्रहण करें एवं पूर्ण भक्ति भाव से गुरु, गणेश एवं स्वर्णाकर्षण भैरव की पूजा संपन्न कर गुरु मन्त्र की चार माला संपन्न करें और प्रार्थना करें और गुरुदेव से आशीर्वाद और अनुमति

ध्यान-

सुवर्णासन्-संस्थितां त्रिनयनां पीतान्शुकोल्लासिनिं,
हैमाभाँगरुचिं शशांक-मुकुटां सच्चाम्कपक्र-स्त्रग्युतां |
हस्तैर्मुद्गर पाशबद्ध-रसनां संविभ्रतीं भूषणे,
व्याप्तांगी बगलामुखीं त्रिजगतां संस्ताम्भनीं चिन्तयेत||

विनियोग-

ॐ अस्य श्री बगलामुखी ब्रह्मास्त्र मंत्रस्य भैरव ऋषिर्विराट् छंद:, श्री बगलामुखी देवता, क्लीं बीजम् , ऐं शक्ति:, श्रीं कीलकं, मम परस्य मनोभिलाषित-कार्यसिध्यर्थे विनियोग: |

ऋष्यादिन्यास:---

शिरसि भैरवऋषये नमः | मुखे विराटछंदसे नमः | हृदि बगलामुखी देवताये नमः | गुह्ये क्लीं बीजाय नमः | पादयो: ऐं शक्तये नमः | सर्वांगे श्रीं कीलकाय नमः |

करन्यास;

ॐ ह्रां अंगुष्ठाभ्यां नमः | ॐ ह्रीं तर्जनीभ्यामं नमः | ॐ ह्रूं मध्यम्याभ्यामं नमः | ॐ ह्रैं अनामिकाभ्यां नमः | ॐ ह्रौं कनिष्ठ्काभ्याँ नमः | ॐ ह्र: करतलकर प्रष्ठाभ्यां नम:|

हृदयादिन्यास;----

ॐ ह्रां हृदयाय नमः | ॐ ह्रीं शिरसे स्वाहा | ॐ ह्रूं शिखायै वषट् | ॐ ह्रैं कवचाय हूं | ॐ ह्रौं नेत्रत्रयाय वौषट् | ॐ ह्रः अस्त्राय फट् |

मन्त्र:----

ॐ ह्रीं ऐं श्रीं क्लीं श्री बगलानने ! मम रिपून् नाशय-नाशय ममेश्वर्याणि देहि-देहि शीघ्रं मनोवांछित्कार्यं साधय-साधय ह्रीं स्वाहा |

OM HREEM AING SHREEM KLEEM SHREEM BAGLAANANE MAM RIPUN NAASHAY NAASHAY MAMESHWARYAANI DEHI DEHI SHEEGHRAM MANOVAANCHHIT KARYAM SAADHAY SAADHAY HREEM SWAHA

उपरोक्त मन्त्र की ११ माला मन्त्रजप स्थिर और एकाग्र होकर जपें . तत्पश्चात दुबारा माँ का ध्यान कर जप समर्पण करें फिर गुरु मन्त्र की चार माला मन्त्र जप कर जप समर्पित कर आशीर्वाद प्राप्त करें .....

इस प्रयोग में आप अपनी समस्या से सम्बंधित संकल्प लें . और पूर्ण श्रद्धा भाव से साधना संपन्न करें..... और रही बात रिजल्ट की तो साधना करिये और स्वयं अनुभव करें ......

मनोकामना पूर्ति का एक सरल प्रयोग:

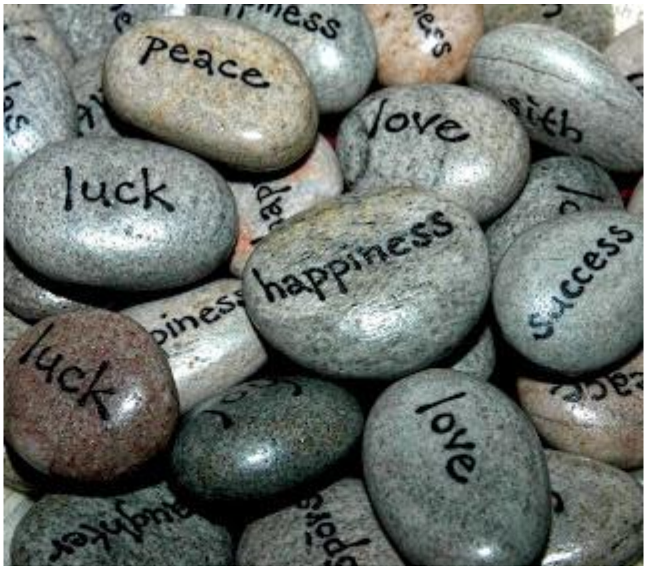

आपके और हमारे मन में हर समय कोई न कोईमनोकामना जरुर होती है और मनोकामना पूर्णहोने पर हमें अत्यंत प्रस न्नता होती है।

हर मानव मन चाहता है की उसकी मनोकामनापूर्ण हो, कोई चमत्कार हो जाए जिससे उसकीकामना पूर्ण हो जाये; कुछ लोगों कीमनोकामनाएं पूर्ण भी हो जाती हैं लेकिन हरव्यक्ति के साथ चमत्कार नहीं हो सकता।

लेकिन तंत्र में कई गुप्त क्रियाएं, मंत्र, साधनायेंऔर विधान हैं जिनकी सहायता से आप अपनीमनोकामना पूर्ण कर सकते हैं, और हर व्यक्तिअपने जीवन में चमत्कार जैसे शब्दों का प्रयोगकर सकता है।

तो आपके जीवन में चमत्कारिक परिवर्तन लानेके लिए एक ऐसी ही साधना जिसे आप पूर्ण श्रद्धाऔर विश्वास के साथ करें और लाभ उठाएं।

आप एक नारियल लेकर (जो की जटा से युक्त हो)उसे सिंदूर मे तिल का तेल मिलकर और गीलाकर उस से पूरा रंग दें और अपने मन की कामनापूरी होने की प्रार्थना माँ भगवती जगदम्बा से करेंऔर निम्न मंत्र का १५ मिनट तक उतनी ही जोर से उच्चारण करें,जितने मे आपको ही सुनाईदे.किसी और को नहीं.

ॐ ईं ह्रीं कं ह्रीं ईं ॐ

(OM EEM HREEM KAM HREEM EEM OM)

ये क्रम आपको ७ दिन तक करना है.याद रहेनारियल सिर्फ पहले दिन ही स्थापित करनाहै.अंतिम दिन क्रिया पूरी होने के बाद नारियलको किसी नदी या तालाब मे विसर्जित कर दें औरकिसी बच्ची को जो घर से सम्बंधित ना हो,उसेकुछ मिठाई और धन दे दें.ये क्रिया असाध्यकामना भी सहज सिद्ध कर देती है आवशयकताहै मात्र पूर्ण विश्वास की.

प्रयोग करें और अपने अनुभव बताएं...

निखिल प्रणाम।।
जय सदगुरुदेव।।

****NPRU****

Posted by Nikhil at 8:58 AM No comments: Links to this post
Labels: LAGHU PRAYOG

FRIDAY, SEPTEMBER 14, 2012

3 Laghu Prayog

In Modern era, scarcity of time is common problem for any person. Though some people want to do sadhna but since they are busy in various types of work, they cannot take out time for sadhna. Such person should focus on Laghu (short) but very intense and effective prayogs rather than on big tantric anushthan. These normal prayogs can be done by any sadhak and they do not need many articles or complex procedures. Thus those who are facing scarcity of time and can't take out time for following big procedures, they can also get many results by doing such small prayogs. Here three prayogs related to happy married life, for attaining courage and for getting riddance from planetary obstacles can be given through which sadhak in small duration only can
Raise their good-fortune.

On any Monday, sadhak should take 7 Bilv Patra and write **'OM SHIVAAY SAMAST DOSH NIVAARANAAY PHAT'** with Kesar on all of them. Now take one Bilv patra in hand and recite **'OM SHIVAAY SAMAST DOSH NIVAARANAAY PHAT'**7 times. In this manner, repeat this activity on all 7 Bilv Patra. After that do Shiv Poojan in any Shiva Temple and after that while reciting **'OM SHIVAAYPHAT'**, offer each Bilv Patra. In this way, sadhak should do this procedure for 1, 3 or 7 Mondays. By this, all planetary obstacles and evil karmas of sadhak are finished and peace is established in home.

On any Tuesday sadhak should offer Bhog of gram and jaggary in any Hanuman temple. Sadhak should take some sindoor from Hanuman idol and make a Tilak on his own forehead and chant below mantra 108 times. It does not require any rosary etc.**'OM HAM HANUMANTAAY VEERROOPAAY NAMAH'.**After that sadhak

should accept the Bhog himself. Courage and strength starts getting inculcated in sadhak.

On any Sunday, at time of sunrise sadhak should make a divine offering to sun (called arghya in Hindi).Sadhak should not eat anything. And in afternoon sadhak should offer food to 7 unmarried girls and provide them dakshina as per his capacity. Sadhak should take food only after completing this task. At that time sadhak should keep his food plate in front and recite **"OM HREEM BHASKARAAY HREEM NAMAH"** 7 times and then take food. Sadhak should not talk while eating and chant the mantra mentally up till food is finished. After doing this prayog, all obstacles due to planets are destroyed.

==================================

आधुनिक युग में व्यक्ति के पास समय का अभाव एक आम समस्या है, कई प्रकार के कार्यों में व्यस्त होने के कारण कई व्यक्ति साधना करने के लिए उत्सुक होते है लेकिन समय नहीं दे पाते है. ऐसे व्यक्तियो को चाहिए की वह बड़े तांत्रिक अनुष्ठानो की अपेक्षा लघु मगर अत्यधिक तीव्र प्रभावी प्रयोगों को सम्प्पन करे. यह सामान्य प्रयोग कोई भी साधक कर सकता है तथा इसमें ज्यादा सामग्री तथा विधिविधान की भी आवश्यकता नहीं है. अतः जिनके पास समय का अभाव हो तथा बड़े क्रम को अपनाने के लिए समय न हो उनको ऐसे छोटे प्रयोग करने पर भी कई परिणाम प्राप्त कर सकते है. यहाँ पर गृहस्थ सुख शांति से सबंधित, सौर्य की प्राप्ति के लिए तथा ग्रह पीड़ा से मुक्ति के लिए तिन ऐसे ही प्रयोगों को दिया जा सकता है जिसके माध्यम से साधक अल्प समय को दे कर भी अपने जीवन में भाग्य का उदय कर सकता है.
सोमवार के दिन साधक सात बिल्वपत्र ले उन सातो बिल्वपत्र पर केसर से **'ॐ शिवायसमस्त दोष निवारणाय फट'** लिखे. अब एक बिल्व पत्र को हाथ में रख कर ७ बार**'ॐ शिवाय समस्त दोष निवारणाय फट'** उच्चारण करे, इस प्रकार सभी ७ बिल्व पत्र पर यह प्रक्रिया करे. इसके बाद किसी शिवमंदिर में शिव पूजन करे तथा उसके बाद एक एक बेल पत्र को **'ॐ शिवाय फट् '** का उच्चारण करते हुवे समर्पित करना चाहिए. इस प्रकार साधक इस क्रिया को एक, तिन या सात सोमवार तक करे. इससे साधक के सभी गृहदोष, पापकर्म समाप्त होते है तथा घर में शांति का स्थापन होने लगता है.
मंगलवार के दिन साधक चने तथा गुड का भोग किसी हनुमान मंदिर में लगाए. हनुमान जी की प्रतिमा पर से सिन्दूर ले कर अपने ललाट पर तिलक कर के साधक निम्न मंत्र का १०८ बार जाप करे. इस जाप में साधक को किसी भी माला आदि की ज़रूरत नहीं है.**'ॐ हं हनुमंताय वीररूपाय नमः'** इसके बाद साधक भोग को स्वयं ग्रहण कर ले. साधक में वीरता तथा सौर्यता का संचार होने लगता है.

किसी भी रविवार को साधक सूर्योदय के समय सूर्य को अर्ध्य अर्पित करे. साधक को निराहार रहना चाहिए तथा दोपहर के समय में ७ कुंवारी कन्याओं को भोजन यथा शक्ति दक्षिणा प्रदान करे. यह सम्प्पन होने के बाद ही साधक खुद भोजन करने के लिए बैठे, उस समय साधक भोजन की थाली को सामने रख कर **‘ ॐ ह्रीं भास्कराय ह्रीं नमः ’**का ७ बार उच्चारण कर के भोजन ग्रहण करे तथा भोजन करते समय कुछ बोले नहीं, मन ही मन यह मंत्र का जाप करता रहे जब तक की भोजन न हो जाये. इस प्रयोग को करने पर साधक को ग्रह से सबंधित पीड़ा का नाश होता है.

इच्छित व्यक्ति स्तम्भनं प्रयोग

Blows and counter-blows have become part and parcel of life. Now times are gone when people used to fight giving you open challenge. Now harming you in hidden manner have become the only motive. There are many categories of people mentioned in shastras…….there are many among these also which want to disturb others without any reason……Harming anybody for sake of money only or for land. Or being jealous with your progress, creating various kinds of conspiracy against you.
Sadhak belonging to the field of tantra very well knows how to deal with such problems. But there is wide gap between knowing it and doing it.Stambhan is one of karmas under Shat Karmas (6 process of tantra).Every one of us are well introduced to the form of prime deity of Stambhan Goddess Balgamukhi .If the person does not have any solution in mind, he can take the procedural knowledge of this Vidya and use it for his own security. Definitely he will benefit from it.
But it is very hard to find the person capable of providing this knowledge and the person who can use it appropriately…..and the problem is that how to take time out for doing such type of prayog. Everyone is hard-pressed for time; this fact is known to everybody.
There are both type of process in field of tantra: those consuming more time and those taking less time. Generally it is said that first of all less time-consuming process should be paid attention and if the results are not as per our need then the attention should shift to high-order sadhna .This is correct too since where there is need of needle then why to use sword.
And in the base of Tantra Mantra, there is one important part or science called Yantra Science…..even a small portion of it has not been revealed so far……This science has been full of so many amazing hidden and hard to believe secrets. The various prayogs given by us have been the matter of appreciation among various saints, tantra acharyas and various high-order tantra scriptures. Hundreds have done them and taken benefits from it.This need of the hour is that if we have time, why not we do this prayog which have been so accurate and tested.
These easiest processes have their own significance. Make this yantra. It can be

done on morning of any auspicious day.
For making yantra, one can use the stick of pomegranate or any other appropriate stick which is available.
Mixture of Kumkum and Gorochan has to be used as ink for writing yantra.
Yellow dress and yellow aasan will be more appropriate.
Take resolution (Sankalp) in the beginning of prayog.
Keep in mind that write the name of the person in middle of yantra who is troubling you.
After making yantra i.e. after writing the name of person, this yantra has to be kept in clay container for full one day and dhoop, deep and navidya has to be offered.
On the next day, place one clay plate above the clay container (in which yantra was kept) and tie this container nicely with any cloth. Keep it in any far-off place where nobody comes.

After doing this, that person is not able to frame any harmful plan against you.
After this do Sadgurudev poojan and chant Guru Mantra as per your capacity and pray for your success.
===

घात प्रतिघात तो जीवन का खासकर आज के , तो एक अंग वह भी आवश्यक बन गयी हैं वह समय कहीं कोसों दूर चला गया जब लोग सामने चुनौती दे कर लड़ना पसंद करते थे . अब तो गुप्त रूप से आपको नुक्सान पहुचना ही एक मात्र मकसद रह गया हैं, यूँ तो शास्त्रों मे लोगों की अनेक प्रकार की श्रेणियाँ उल्लेखित हैं . उनमे से कुछ ये भी हैं की अकारण ही दूसरे को परेशां करने वाले ...किसी की जमीन पर या किसी को सिर्फ कुछ धन के लिए नुक्सान पहुचने वाले . या आपकी उन्नति से जल कर आपके लिए तरह तरह के षड्यंत्र का निर्माण करने वाले .

तंत्र क्षेत्र का साधक इन सभी समस्यायों को कैसे निपटा जाये यह भली भांति जानता हैं पर जानने और करने मे कोसो की दुरी होती हैं ,षट्कर्म मे से एक कर्म स्तम्भंन्न भी हैं और स्तम्भनं की प्रमुख देवी भगवती बल्गामुखी के स्वरुप से कौन नही परिचित होगा , जिसे कोई भी उपाय ना सूझे तो विधिवत ज्ञान ले कर इस विद्या का प्रयोग अपने रक्षार्थ करें निश्चय ही उसे लाभ होगा .

पर न तो इस विद्या का ज्ञान देने वाले और न ही उचित प्रकार से प्रयोग करने वाले आज प्राप्त हैं .और् सबसे बड़ी समस्या यह हैं की इन प्रयोगों को करने के लिए कैसे समय निकाला जाए .आज समय की कितनी कमी हैं यह तो हम सभी अच्छी तरह से जानते हैं ही .
साधना क्षेत्र मे दोनों तरह के विधान हैं लंबे समय वाले और कम समय वाले भी ..साधारणतः यह कहा जाता हैं की सबसे पहले कम समय वाले विधानों की तरफ गंभीरता से देखा जाना चाहिये

और जब परिणाम उतने अनुकूल ना हो जितनी आवशयकता हैं तब बृहद साधना पर ध्यान दे यह उचित भी है क्योंकि जहाँ सुई का काम हो वहां तलवार की क्या उपयोगिता ..

और तंत्र मंत्र के आधारमे एक महत्वपूर्ण अंग या विज्ञानं हैं यन्त्र विज्ञानं ..अभी भी इसका एक अंश मात्र भी सामने नही आया हैं . एक से एक अद्भुत गोपनीय और दाँतों तले अंगुली दवा लेने वाले रहस्यों से ओत प्रोत रहा हैं यह विज्ञानं.

हमारे द्वारा अनेक प्रयोग जो दिए जाते रहे हैं वह अनेको मनिशियों ,तंत्र आचार्यों और उच्च तांत्रिक ग्रंथो मे बहुत प्रशंषित रहे हैं और सैकडो ने उनके प्रयोग किये हैं और लाभ भी उठाया हैं , आवश्यकता बस इस बात की हैं की यदि समय हो तो क्यों न इन प्रयोगों की करके भी देखा जाये जो अनुभूत और सटीक रहे हैं .

इन सरलतम विधानों का अपना एक महत्त्व हैं.इस यन्त्र का निर्माण करें .

- किसी भी शुभ दिन प्रातः काल मे कर सकते हैं .
- यन्त्र निर्माण के लिए अनार या जो भी उचित लकड़ी प्राप्त हो उसका उपयोग कर सकते हैं .
- यन्त्र लेखन मे स्याही सिर्फ कुकुम और गोरोचन को मिलाकर बना ना हैं .
- वस्त्र पीले और आसन का रंग पीला हो तो कहीं जयादा उचित होगा .
- प्रयोग के शुरुआत मे संकल्प ले .
- यह ध्यान रखे की यन्त्र के बीच मे उस व्यक्ति का नाम लिखे जिसने आपको परेशां कर् रखा हो
- यन्त्र निर्माण मतलब उस व्यक्ति का नाम लिखने के बाद पुरे एक दिन इस यंत्र को एक मिटटी के वर्तन मे रखना हैं और धूप दीप और नैवेद्य अर्पित करना हैं .

- बाद मे मतलब दूसरे दिन इसके ऊपर (मिटटी के वर्तन) जिसमे यह यन्त्र निर्माण के बाद रखा हैं किसी अन्य मिटटी की प्लेट उसके ऊपर रख दे और अच्छी तरह से इस पात्र कोकिसी कपडे से बाँध कर .किसी दूर निर्जन स्थान पर रख दे .

ऐसा करने से वह व्यक्ति फिर आपके लिए कोई हानि का रक योजना नही बना पाता हैं .

इसके बाद सदगुरुदेव जी का पूजन और गुरू मंत्र का जप यथाशक्ति करे औरसफलता के लिए प्रार्थना करें ...

Intense attraction Experiment - to call the missing person (तीव्र आकर्षण साधना –गुमशुदा व्यक्ति को बुलाने के लिए)

गुमशुदा व्यक्तियों को वापिस बुलाने के लिए मैंने इस साधना का प्रभाव बहुत अचरजकारी है. और अन्य मन्त्रों के बजाय इसे सिद्ध करने में कोई दिक्कत भी नहीं आती, नवरात्री में १०,००० की संख्या में इस मन्त्र को कर लेने से ये सिद्ध हो जाता है , सामने **तीव्र आकर्षण यन्त्र** या **पारद शिवलिंग** रख कर मूंगा माला से इस मंत्र को १४ माला नित्य करने से ९ दिन में ये साधना सिद्ध हो जाती है. मन्त्र सिद्ध हुआ या नहीं इसका परीक्षण करने के बिनोला,पीली सरसों,तथा चूहे के बिल की मिटटी को मिला निम्न मंत्र से १०८ बार अभिमंत्रित करे,और एक सरकंडे को बीच में से चीर कर दो अलग अलग लोगो को जोर से पकडे रहने के लिए दे दे , और मन्त्र पढ़ कर उस अभिमंत्रित मिश्रण को उस सरकंडे पर मारे .यदि सरकंडा आपस में जुड जाये तो समझ ले की सफलता मिल गयी है .

फिर जब भी किसी खोये हुए व्यक्ति को वापिस बुलाना हो तो मध्य रात्रि में खोये हुए व्यक्ति का चित्र अथवा वस्त्र सामने रख उस पर अभिमंत्रित पिष्टी को ५४० बार मंत्र का उच्चारण करते हुए मारे. यदि व्यक्ति जीवित है तो निश्चय ही शीघ्र अतिशीघ्र वो वापिस आ जाता है.

मन्त्र- **ॐ नमो भगवते रुद्राय ए दृष्टि लेखि नाहर : स्वाहा,**
दुहाई कंसासुर की जूट-जूट ,फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा .

==

To call back the missing persons I have found the effect of this particular experiment simply astonishing. And rather than mantras proving this mantra is much easier and does not have any problem, In Navratree, if the number of 10,000 mantras are done then it said to be to proven. Just place **Teevra Akarshan Yantra** OR **Paarad shivling** in front of it do chanting with coral beads for 14 times on the mantra of continual 9 days

to prove it is spiritual. Whether such Mantra is proved or not to test it take Binolah, yellow mustard, and mud of rats home, while mixing it do the 108 times spellbound, and a reed in the middle of the rip to two different people to be caught out strongly and read mantra spellbound mix that died on the reed. Let the cane ge joint each other added to the sense of taking has been successful. Then when a lost person to call back take the lost person's picture in the middle of the night before or put clothing on him spellbound Pishte mantra recited 540 times. If the person is alive as soon as possible so of course he comes back.

Mantra :

Om Namo bhagwate rudraye e drishti lekhi naahar : swaha

Duhai kansasur ki joot-joot, furo mantra ishawaro vacha

VYAKTITV VIKAAS SADHNA VIDHAAN

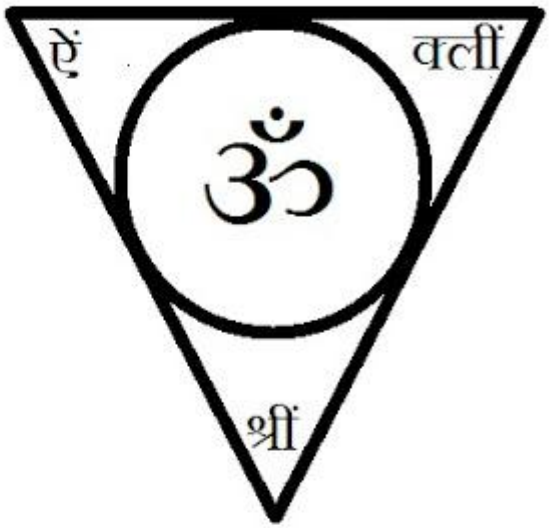

One of the mast important bases for predicting the nature of life spent by person is his personality. From our birth till our death, basis of all our activities is our personality. Although word personality is small but its meaning is very vast and it influences each and every aspect of our life. Emotional and behavioral procedures inside us constitute our personality. Undoubtedly, person having great personality can attain more and more success in life. On the other hand, negative personality i.e. person having inferiority complex can’t taste that much success in life.

If we pay attention, we can say that our mental thoughts and reaction to our thoughts decides the success or failure of all our works. Definitely, positive and negative thoughts of our mind influence our body and work done by our body with definite energy. More negative energy accumulates inside us, more negatively it will affect our personality. During stress/ depression we are not able to carry out work proficiently. Similarly, due to lack of self-confidence we can’t do certain type of works.

Sadhna process presented here is related to personality-development whereby with the help of sadhna we can get rid of negative energy and fill positive energy inside us. Moreover this sadhna is useful for all the sadhaks since it provides both materialistic and spiritual benefits.

Inferiority complex inside sadhak is eradicated. As a result, he gets new outlook towards life and he is filled with enthusiasm to live life completely.

There is increase in confidence of sadhak. As a result, he always keeps on getting internal motivation to progress continuously.

Some sadhaks feel shy. As a result, their personality does not come in front of public. This sadhna provides riddance from this problem slowly and gradually.

In this manner, it is completely beneficial procedure for all of us. Though it is one day process but sadhak can do this process for as many days depending upon his capability and condition.

Sadhak can start this sadhna on any auspicious day. It can be done anytime in morning or night.

Sadhak should take bath, wear white dress and sit on white aasan facing east direction.

First of all, sadhak should perform Guru Poojan and pray to Sadgurudev for success in sadhna.

Sadhak should make above yantra on a Bhoj Patra or white paper with Tri-Gandh (Kesar, Vermillion and Camphor). Sadhak can use any pencil. Pencil of pomegranate is best.

Sadhak should establish the yantra in front of him and offer rice, flowers etc. Sadhak should light oil-lamp during Poojan.

Thereafter, sadhak should perform Ganesh Poojan and do Nyas.

KAR NYAS
AING KLEEM SHREEM ANGUSHTHAABHYAAM NAMAH
AING KLEEM SHREEM TARJANIBHYAAM NAMAH
AING KLEEM SHREEM MADHYMABHYAAM NAMAH
AING KLEEM SHREEM ANAAMIKAABHYAAM NAMAH
AING KLEEM SHREEM KANISHTKABHYAAM NAMAH
AING KLEEM SHREEM KARTAL KARPRISHTHAABHYAAM NAMAH

HRIDYAADI NYAS
AING KLEEM SHREEM HRIDYAAY NAMAH
AING KLEEM SHREEM SHIRSE SWAHA
AING KLEEM SHREEM SHIKHAYAI VASHAT
AING KLEEM SHREEM KAVACHHAAY HUM
AING KLEEM SHREEM NAITRTRYAAY VAUSHAT
AING KLEEM SHREEM ASTRAAY PHAT

After Nyas, sadhak should chant 21 rounds of the below mantra.

OM AING AINGKLEEM KLEEM SHREEM SHREEM NAMAH

Sadhak should use crystal rosary for chanting. If sadhak does not have crystal rosary, he can use Rudraksh rosary or can chant using fingers. In this manner, this one-day procedure is completed. Sadhak should establish made yantra in worship-place. Rosary should not be immersed. It can be used for chanting in future sadhnas.

कोई भी व्यक्ति के जीवन किस प्रकार से आगे बीतेगा उसका एक अति महत्वपूर्ण आधार उसका व्यक्तित्व है. हमारे जन्म से ले कर हमारी मृत्यु तक हमारे सारे क्रिया कलापों का एक बड़ा आधार हमारा ही व्यक्तित्व होता है, वस्तुतः व्यक्तित्व शब्द भले ही छोटा हो लेकिन इसका वृहद वृत्तांत हो सकता है जो की हर एक व्यक्ति के जीवन में महद रूप से सभी कार्यमें असरकरता है. हमारे अंदर की भावनात्मक एवं व्यवहारात्मक प्रक्रिया को ही हमारा व्यक्तित्व कहते है. निःसंदेह एक उच्चतम व्यक्तित्व का धनि व्यक्ति जीवन में ज्यादा से ज्यादा सफलता की प्राप्ति कर सकता है, वहीँ दूसरी तरफ नकारात्मक व्यक्तित्व अर्थात अपने मानस में हिन् भावनाओं को ले कर चलने वाले व्यक्तित्व पूर्ण व्यक्ति अपने जीवन में सफलता का उतना स्वाद नहीं ले पाते है.

देखा जाए तो हमारे मानस के विचार एवं विचार पर होने वाली प्रतिक्रिया ही हमारे सारे कार्यों की सफलता या असफलता का निर्धारण करती है क्यों की कहीं न कहीं सकारात्मक एवं नकारात्मक विचारों का असर हमारे मस्तिस्क से हमारे शरीर एवं शरीर से हमारे कार्यों के ऊपर एक निश्चित ऊर्जा का आघात तो करता ही है. हमारे अंदर जितनी ही ज्यादा नकारात्मक उर्जा का संग्रह होगा उतना ही हमारे व्यक्तित्व के ऊपर उसका नकारात्मक प्रभाव होगा. हम तनाव में रहें या अवसाद से घिरे रहें तो निश्चय ही हमारे कार्य योग्य रूप से नहीं होते, वहीँ कई बार आत्मविश्वास की कमी के कारण भी कई प्रकार के कार्य हम कर नहीं पाते है.

प्रस्तुत साधना प्रयोग व्यक्तित्व के विकास के सन्दर्भ में है जहां पर साधना के माध्यम से नकारात्मक उर्जा को दूर कर हमारे अंदर स्पष्ट एवं पूर्ण उर्जा को भरा जा सके. यह साधना यूँ तो सभी साधको के लिए उपयोगी ही है क्यों की इस साधना से कई प्रकार के लाभ प्राप्त होते है जो की न सिर्फ भौतिक परन्तु अध्यात्मिक जीवन के लिए भी आवश्यक है.

साधक के अंदर ही हिन् भावना का शमन होता है फल स्वरुप उसे जीवन सबंधित नयी द्रष्टि की प्राप्ति होती है तथा जीवन को पूर्ण रूप से जीने की एक उमंग व्याप्त होती है.

साधक के आत्मविश्वास में वृद्धि होती है फल स्वरुप उसे हमेशा प्रगतिमय रहने के लिए आतंरिक प्रेरणा मिलती रहती है.

कई साधक भाई बहेनो को संकोच की समस्या होती है, इसी कारण उनका व्यक्तित्व उभर कर सब के मध्य नहीं आ पता है इस साधना से साधक के अंदर के संकोच आदि से धीरे धीरे मुक्ति मिलती है.

इस प्रकार यह प्रयोग सभी के लिए एक पूर्ण लाभदायक प्रयोग है. यूँ तो यह एक दिवसीय प्रयोग है लेकिन साधक इसको अपने सामर्थ्य अनुसार एवं अपनी स्थिति के अनुसार जितने दिन करना चाहे कर सकता है.

यह साधना साधक किसी भी शुभ दिन शुरू कर सकता है. साधक यह विधान दिन या रात्रि के किसी भी समय में कर सकता है.

साधक को स्नान कर सफ़ेद वस्त्र को धारण कर सफ़ेद आसन पर बैठना चाहिए. साधक का मुख पूर्व दिशा की और हो.

सर्व प्रथम साधक गुरु पूजन सम्प्पन करे तथा सदगुरु से साधना में सफलता के लिए आशीर्वाद प्राप्त करे.

साधक सर्व प्रथम एक भोजपत्र पे या सफ़ेद कागज़ पे त्रिगंध से (केसर, कुमकुम, कपूर) उपरोक्त यंत्र का निर्माण करे. साधक किसी भी कलम का प्रयोग कर सकता है. अनार की कलम श्रेष्ठ है.

इस यंत्र को साधक अपने सामने स्थापित करे तथा अक्षत, पुष्प आदि समर्पित करे. पूजन में साधक को तेल का दीपक प्रज्वालित्त करना चाहिए.

इसके बाद साधक गणेश पूजन आदि सम्प्पन कर न्यास करे.

करन्यास

ऐं क्लीं श्रीं अङ्गुष्ठाभ्यां नमः
ऐं क्लीं श्रीं तर्जनीभ्यां नमः
ऐं क्लीं श्रीं मध्यमाभ्यां नमः
ऐं क्लीं श्रीं अनामिकाभ्यां नमः
ऐं क्लीं श्रीं कनिष्टकाभ्यां नमः
ऐं क्लीं श्रीं करतल करपृष्ठाभ्यां नमः

हृदयादिन्यास

ऐं क्लीं श्रीं हृदयाय नमः
ऐं क्लीं श्रीं शिरसे स्वाहा
ऐं क्लीं श्रीं शिखायै वषट्
ऐं क्लीं श्रीं कवचाय हूं
ऐं क्लीं श्रीं नेत्रत्रयाय वौषट्
ऐं क्लीं श्रीं अस्त्राय फट्

न्यास के बाद साधक निम्न मन्त्र का जाप करे. साधक को २१ माला मन्त्र का जाप करना है.

ॐ ऐं ऐं क्लीं क्लीं श्रीं श्रीं नमः

(OM AING AING KLEEM KLEEM SHREEM SHREEM NAMAH)
साधक को यह जाप स्फटिक माला से करना चाहिए. अगर साधक के पास स्फटिक माला उपलब्ध न हो तो साधक रुद्राक्ष माला से या कर माला से यह मन्त्र जाप करे.
इस प्रकार यह एक दिवसीय प्रयोग पूर्ण होता है. साधक ने जिस यंत्र का निर्माण किया है उसे पूजा स्थान में स्थापित कर दे. माला का विसर्जन नहीं करना है, यह माला आगे भी साधनाओ में मन्त्र जाप के लिए उपयोग की जा सकती है.

****NPRU****

Posted by Nikhil at 11:44 PM No comments: Links to this post
Labels: AATM CHETNA, AATMVISHVAS PRAPTI VIDHAAN, KAARYA SIDDHI SADHNA

BHAGWAAN PAARDESHVAR SADHNA - KAARYA SIDDHI VIDHAAN

Janmjdukhvinashaaklingam Tat PranmaamiSadashivlingam

There is no difference between Lord Shiva and Tantra. All the 64 tantras have been originated from Lord Shiva. He is worshipped by all god and goddesses. From ancient times, he has been worshipped as Isht in various regions of the world. In fact, in highly abstruse form, his symbol in the form of Shivling has been subject of worship in all important regions of the world. And it has been said in various scriptures and Tantra sect regarding Shivling that by worshipping Shivling, person becomes capable of attaining anything in life. Moreover, worship of Lord Shiva is quickly fruitful too because he listens to prayers of his devotee very quickly. Everyone is well aware of this fact.

There are various types of Shivling told in Tantra scriptures. Out of them, significance of Parad Shivling is the most since it is replica of Lord Shiva's sperm. Ras Vigyan and Ras Tantra i.e. Parad Vidya has been one of the great vidyas of our country and it has also been called last tantra. Parad Shivling has been major subject of worship in this Parad Tantra field. This Shivling acts as agent of accomplishment and knowledge. If there is pure Shivling prepared by fully tantric procedure then person definitely attains various types of benefits. It has been approved by scriptures and even Ras Acharyas hold such an opinion. Ancient and modern accomplished sadhak have inarguably accepted the significance of this rare Shivling. According to Tantra, when mercury is capable of saving persons from jaws of death then can it not provide person riddance from our problems? Definitely, Ras Ling is all capable of resolving problems of both Bhog and salvation. There are many tantric procedures in vogue among Siddhs related to this Ras Ling. Procedure present here belongs to that set of procedures and it is done on Parad Shivling. This procedure is very easy for all sadhaks. In fact, this procedure can provide sadhak progress in both the aspects. Accomplishment of work here does not mean any particular work rather it is related to sadhak's progress in life. If sadhak does not get appropriate results even after hard-work, he is facing problem in business etc. or there is problem in his home in one form or the other, then sadhak should do this procedure. If there is any work of sadhak in which he is repeatedly facing problem or work is struck, such obstacle is also resolved. In this manner, this procedure is important for all sadhaks.

Sadhak should start this sadhna from any Monday. It can be done in morning or after 9 P.M in the night.

Sadhak should take bath, wear yellow dress and sit on yellow aasan facing North direction. Sadhak should spread yellow cloth in front of him and establish **Parad Shivling** on it. Sadhak should then perform Poojan of Sadgurudev and Shivling. In poojan, yellow colour flowers should be offered and yellow coloured sweets/fruits should be offered as Bhog. Sadhak can use any lamp of any oil.

After Poojan, sadhak should do tratak on Parad Shivling and chant 21 rounds of below mantra. Sadhak should use yellow agate or Rudraksh rosary for chanting.

OM HREENG HOOM OM

After completion of chanting, sadhak has to offer 108 oblations of pure ghee in fire. If sadhak can't do this procedure at home, he can do it in ant Shiva temple. Sadhak should use wood of Bilv tree as Samidha in oblation. It is easily available. If it is

not available in sufficient quantity then sadhak should keep one piece of wood of Bilv tree along with wooden blocks of other tress and perform oblation.

In this manner, this procedure is completed within one night. If sadhak wants, he can repeat this procedure for 3 or 7 days. Sadhak gets success in his future endeavours.

जन्मजदुःखविनाशकलिङ्गम् तत् प्रणमामि सदाशिवलिङ्गम्

भगवान शिव और तंत्र में कोई भेद ही कहाँ है. ६४ तन्त्रो की उत्पत्ति ही भगवान शिव से मानी गई है. जो सभी देवताओं के भी जो आराध्य है वह भगवान शिव आदि काल से विश्व के कई कई प्रदेशो में इष्ट रूप में पूजित रहे है, वस्तुतः अति गुढ़ रूप में उनका प्रतिक चिन्ह शिवलिंग के स्वरुप में विश्व के सभी प्रमुख प्रदेश में उपासना का विषय रहा है. और इसी शिवलिंग के संदभ में विविध ग्रन्थ एवं तंत्र मत्त में कहा गया है की शिवलिंग की उपासना से व्यक्ति कुछ भी प्राप्त करने के लिए योग्य हो जाता है तथा भगवान शिव की उपासना अति शीघ्र फल दायक भी है क्यों की भोलेनाथ अपने साधको की पुकार को अति शीघ्र सुन लेते है यह तथ्य तो हर कोई जानता ही है.

शिवलिंग के विविध प्रकार तंत्र शास्त्रों में बताए गए है उनमे पारद शिवलिंग का महत्त्व सब से अधिक है क्यों की यह शिव सत्व शिव की प्रतिकृति ही है. रस विज्ञान एवं रस तंत्र अर्थात पारद विद्या हमारे देश की एक महान विद्या रही है जिसे तन्त्रो में भी अंतिम तंत्र कहा गया है और इसी पारद तंत्र क्षेत्र की मुख्य उपासना तो पारद शिवलिंग ही रहा है. यही शिवलिंग ही तो मुख्य सिद्धि एवं ज्ञान का कारक होता है. अगर पूर्ण तंत्रोक्त विधान से निर्मित विशुद्ध शिवलिंग हो तो व्यक्ति को निश्चय ही कई प्रकार के लाभ प्राप्त होते है यह शास्त्र सम्मत है तथा रसाचार्यो का भी यही मत्त है. प्राचीन एवं अर्वाचीन सिद्धो ने इस दुर्लभ लिंग की महत्ता को निर्विवादित रूप से स्वीकार किया है. तंत्र मत्त के अनुसार जो पारद व्यक्ति को मृत्यु के मुख के वापस ले आने की सामर्थ्य रखता है क्या वह पारद हमें हमारी समस्याओ से मुक्ति नहीं दिला सकता? निश्चय ही भोग तथा मोक्ष दोनों समस्याओ के निराकरण के लिए यह रस लिंग सर्व समर्थ है. तथा इसी रस लिंग से सबंधित कई कई तांत्रिक विधान सिद्धों के मध्य प्रचलित है. प्रस्तुत प्रयोग भी उसी क्रम का एक प्रयोग है जिसे पारद शिवलिंग पर सम्प्पन किया जाता है. यह प्रयोग सभी साधको के लिए सहज है. वस्तुतः यह प्रयोग साधक को दोनों पक्षों में उन्नति प्रदान कर सकता है. कार्य सिद्धि का अर्थ कोई एक विशेष कार्य से न हो कर साधक के जीवन की प्रगति के सबंध में है. अगर साधक को परिश्रम करने पर भी उचित परिणाम की प्राप्ति नहीं होती हो, व्यापार आदि में समस्या हो रही हो, या फिर घर परिवार में किसी न किसी रूप से कोई समस्या बनी रहती हो तब यह प्रयोग साधक को करना संपन्न करना चाहिए. अगर साधक का कोई कार्य है जिसको बार बार करने में समस्या आ रही हो

या अटक रहा हो तो उस बाधा का भी निराकरण होता है. इस प्रकार यह प्रयोग सभी साधको के लिए महत्त्वपूर्ण है.
यह साधन साधक किसी भी सोमवार के दिन करे. साधक यह साधना सुबह के समय या रात्री में ९ बजे के बाद करे.

साधक स्नान आदि से निवृत हो कर पीले वस्त्रों को धारण करे तथा पीले आसन पर बैठ जाए. साधक का मुख उत्तर दिशा की तरफ होना चाहिए. साधक को अपने सामने पीले रंग के वस्त्र पर **पारद शिवलिंग** को स्थापित करे. साधक को सदगुरुदेव एवं शिवलिंग का पूजन करना है, इस पूजन में साधक को पीले रंग के पुष्प को समर्पित करना चाहिए तथा पीले रंग की मिठाई या फल का भोग लगाना चाहिए. दीपक तेल का हो. साधक किसी भी तेल का प्रयोग कर सकता है.

पूजन के बाद साधक पारदशिवलिंग पर त्राटक करते हुवे निम्न मन्त्र का २१ माला जाप करे. यह जाप साधक पीले हकीक माला से या रुद्राक्ष की माला से सम्प्पन करे.

ॐ ह्रीं हूं ॐ

(OM HREENG HOOM OM)

मन्त्र जाप पूर्ण हो जाने पर साधक को शुद्ध घी से १०८ आहुति अग्नि में समर्पित करनी है. साधक अगर घर पर यह क्रम न कर सके तो किसी शिव मंदिर में भी यह क्रिया कर सकता है. इस प्रयोग में आहुति की समिधा में बिल्व वृक्ष की लकड़ी का प्रयोग करे यह आसानी से उपलब्ध हो जाती है अगर पर्याप्त मात्र में यह उपलब्ध न हो पाए तो साधक को दूसरे वृक्ष की लकडियों के साथ एक टुकड़ा बिल्व वृक्ष की लकड़ी का रख कर हवन सम्प्पन करे.

इस प्रकार एक ही रात्री में यह प्रयोग पूर्ण होता है. साधक अगर चाहे तो यही क्रम को ३ दिन या ७ दिन तक कर सकता है. साधक को भविष्य में अपने कार्यों में सफलता की प्राप्ति होती है.

मंत्र योग से काल ज्ञान

हमारे प्राचीन ऋषियो ने सही अर्थो में विज्ञानं का अभ्यास किया था जिनका मूल उद्देश्य मनुष्य जाति के लिए इसे अविष्कार करना था जिससे वे उन खुशियों को प्राप्त कर सके जिसे हमारे शास्त्रों

में **आनंद** कहा गया हैं . इसी दौरान उन्होंने आध्यात्मिकता के पथ पर कई इसी क्रिया पद्धत्तिओ की रचना की जिससे हर एक अपनी मानसिकता के अनुरूप पथ को चुन सके.

इसी राह में १०८ पद्धत्तिओ की रचना हुई जैसे मंत्र, तंत्र, योग, ध्यान, दर्शन, यज्ञ, पारद, सूर्य विज्ञानं,...ये सब अलगअलग खास पद्धत्तिया थी जिनका उद्देश्य एक ही था. जरुरी हैं की मनुष्य अपने जीवन में एक ऐसा रास्ता चुने जोकि उसे अपने आध्यात्मिक लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए सहायता प्रदान करे क्यूँ की हर एक मानव एक अलग विचार पद्धत्ति एवं जीवन जीने का के लिए स्वतंत्र हैं . मगर समय चलते हमारे महर्षियोंने ज्यादा खोज की, उन्होंने पद्तियो के मध्य स्थिरता स्थापित की और सबसे सहज पद्धत्तिओ के लिए खोज की, जिसमे जल्द और बेहतर परिणाम प्राप्त करे. इस दौरान , उन्होंने क्रिया पद्धत्तिओ को एक दुसरे के साथ मिलाना शुरू किया जिससे और नयी पद्धत्तिया सामने आई.

जैसे की सूर्य विज्ञानं पूर्ण रूप से अणु आधारित विज्ञानं हैं , जब उसे तंत्र के साथ सम्मिलित किया गया तो वो और सहज हो गया. और एक नया रास्ता मिला जिसमे सूर्य विज्ञानं लेंस की आवश्यकता न होके मात्र नेत्रों के माध्यम से पदार्थ परिवर्तन संभव था, इसी क्रिया को सूर्य विज्ञानं तंत्र कहा गया. यही तथ्य पारद तंत्र के ऊपर भी लागु होता हैं . जब पारद विज्ञानं का समन्वय तंत्र की विभिन्न क्रियाओ के साथ किया गया, तब पारद से लाभ प्राप्त करना और भी आसान हो गया.

भारतीय आध्यात्मिक प्रणालियों में सबसे ज्यादा प्रसिद्द प्रणाली मंत्र एवं योग रही हैं , वैसे तो दोनों एक दुसरे से बिलकुल अलग हैं . मंत्र सिर्फ ध्वनी का विज्ञानं हैं . हमारे कान सिर्फ कुछ एकं निश्चित आवर्ती तक ही ध्वनि सुन सकते हे, लेकिन ध्वनि तो हर जगह होती ही हैं . चाहे हम सुन सके या नहीं, ध्वनि से एक विशेष उर्जा का निर्माण होता ही हैं . इस तरह विशेष ध्वनि विशेष उर्जा का निर्माण करती हैं और जब अलग अलग ध्वनियो का निर्माण एक साथ किया जाता हैं वे एक साथ एक अलग ही उर्जा को जन्म देती हे. यही मंत्र विज्ञानं का सही संकल्पना हे. दूसरी तरफ योग में आध्यात्मिक अनुभूतियो के लिए शरीर का सहारा लिया जाता हैं . योग पद्धति में शरीर को माध्यम मात्र ही गिना जाता हैं . विशेष प्रकार के व्यायाम से आत्मा को एक विशेष उर्जा के द्वारा आध्यात्मिक मार्ग पर आगे बढाया जाता हैं , अलबत्ता योग में भी विविध प्रकार हैं .

जब इन दोनों प्रणालियों को , एक विशेष प्रणाली खोजने के लिए एक साथ जोड़ा गया, तब वह मंत्र योग बना. इस प्रणाली में मंत्र जाप से निर्मित ध्वनि को , योग की विशेष तकनीक से जोड़ा गया. इससे कई सिद्धिया प्राप्त करना आसान हो गया. और इसमे भी आगे शोध कार्य हुआ. इसी दौरान ये तथ्य सामने आया कि कुछ विशेष तरीको से निर्मित ध्वनि की उर्जा, कुण्डलिनी में कोई विशेष चक्र को स्पंदित करती हैं . काल ज्ञान के विषय में, अनाहत चक्र जोकि हृदय पटल के पास स्थित हैं वही काल ज्ञान को समेटे हुए हैं . और उन्होंने खोज की काल ज्ञान के लिए उपयुक्त क्रिया की.

इस प्रकार की पद्धतिया हमेशा ही गोपनीय रखी गयी, क्यूंकि इस प्रकार की प्रणाली को अभ्यास में लेने के लिए गुरु की तरफ से शिष्यों को ये शर्त हुआ करती थी कि वो मूल दो प्रणालियों पूर्ण हो. जैसे की यहाँ मन्त्र एवं योग. या तो गुरु शिष्य से अत्यंत खुश हैं तो ही वो इस प्रकट की प्रक्रिया दे देते थे. इस प्रकार की प्रक्रियाए बहुत आसान होती हे और रोजबरोज के जीवन में की जा सकती हैं . या फिर इसमें इसमे ज्यादा बाध्यता नहीं हैं . इस लिए ये गृहस्थो के लिए ज्यादा उपयुक्त हैं . मेरे देखने में आया हे कि ऐसी पद्धतिया गुरु अपने जीवन के आखरी क्षणों में अपने मुख्य शिष्य को देते रहे हैं या फिर कुछ इसे इंसानों को जो की उनके ज्यादा नजदीक रहे हो. में आप लोगो के सामने एक इसी ही प्रक्रिया रख रहा हूँ .

कुछ दिनों तक पूरक कुम्भक रेचक का अभ्यास करे. मतलब की सांस अन्दर खींचना अन्दर रोकना और फिर बाहर निकलना. जितना हो सके उतना लम्बी प्रक्रिया हो मगर कोई बलपूर्वक प्रयास नहीं. कुछ दिनों में ये क्रिया प्राकृतिक हो जाएगी.

इसके बाद नीचे दी गयी क्रिया का अभ्यास प्रारंभ करना चाहिए

पूरक करते वक्त बीज मंत्र " ह्रीं " का उच्चारण करे .
कुम्भक करते वक्त बीज मंत्र " ह्रां " का उच्चारण करे .
रेचक करते वक्त बीज मंत्र " ह्रूं " का उच्चारण करे .

कुछ दिनों तक मन ही मन जाप होना चाहिए. फिर अभ्यास हो जाने के बाद उच्चारण भी हो, अभ्यास से यह सहज संभव हो जाएगा.

आँखे बंद होनी चाहिए और अनाहत चक्र पर ध्यान करे. कुछ समय बाद आपको कई द्रश्य दिखने लगेंगे जो की आपने पहले कभी नहीं देखे होंगे. इसी का अभ्यास आगे करते रहने अनाहत चक्र जाग्रत होने से आप काल खंड के किसी भी क्षण को पकड़ के देख सकते हैं .

==

Our ancient sages were real scholars of the science whose basic aim was to make invention through which the mankind can attain total happiness or the magnifying joy termed as “Anand” in the scriptures. Mean while they developed particular systems for the path of spirituality which lay the option of comfortable selection according to one’s nature.

In this regard’s total 108 system were been designed like Mantra, Tantra, Yoga, Dhayana, Darshana, Yagna, Paarad, Sury Siddhant etc. these were the particular branches leading to the same goal with different ways. As one is independent with differentiation of thoughts and way of conduct to live the life, they can select particular path in which they do attend a spiritual goal with best of the comfort.

But when the time passed, more research had been carried out by our Maharishis. They made a core balance between these systems and started innovating best possible systems, which can give quick and best results. Meanwhile they started combining various methods with each other and it gave a birth to very new and effective systems.

For example Sury Vigyan was complete science of atoms. When it was applied a bled with tantra it became easier. And a new way was found in which the lens used for Sury Vigyan was not required and the atoms of matters could be change with medium of eyes only, it became sury vigyan tantra. The same goes for Paarad Tantra, when paarad vigyan was combined with various tantrik processes, it became easier to handle paarad and take benefit of it.

In all Indian spiritual system, the most famous systems to everyone had remained Mantra and Yoga, though both are very different from each other. Mantra is science of Sounds only. Our ear can hear sounds up to some decibels, but sound is everywhere rather we can hear it or not, and sound do prepare a particular energy vibration. This way, particular sound prepares a particular energy and combining various sounds it gives a set of specific energy. This is the actual concept of Mantra Vigyan. On the other side, Yoga deals with spiritual attainment with the help of body. In Yoga system body is counted as medium only. With particular exercise they generate energy in the body with leads a soul to the spiritual way. Well, in yoga even we have various types.

When this both science were combined for to invent a new system, it became Mantra Yoga. In this system, energy of the sound generated through specific chanting was combined with various yoga techniques. This made various accomplishments easy to achieve. Again they went deep and started researching more.

This way, they found that with some methods a vibration could be generated to activate particular chakra of Kundalini. In regards of kaal gyan, it is found that Anahat Chakra situated to side of Heart is the main holder of Kaal. And they innovated special method for Kaal Gyan.

Such exercises and Processes had always remained secret; because, to go through with such process, there was a condition for the disciples to master in both the sciences. Like in this case Mantra and Yoga. Or else if Guru is very pleased with disciple he will provide such process. Such processes are very easy in nature to perform and can be added into day to day life. Or else there are very less boundaries. It makes it very easy for householders. I have seen many yogis to give such process at very last time of their life to the chief disciples or to particular people which had been in very touch of them. One of such process I am sharing with you all.

……………………………………………………………

One should practice Poorak, Khumbhak and rechak of Yoga for some days. Simply to breath-in, Hold and Breath-out, but one should do it as long as they can and with no force at all. In some days it became very natural to do this.

After that one should follow the particular practice.

When Doing poorak Chant beej Mantra “Hreem”.

At the time of Khumbhak chant " Hraam"
At the time of Rechak chant " Hroom"
In practice first you can chant in Mind, then practicing it for some days, you chant it with mouth.
The eyes should be closed and concentration should be at anahat chakra with in. slowly you will start watching various scenes which previously you have not seen. Practicing it make you catch any moment of any tense and you will be able to see anything you desire when Anahat chakra becomes activated.

SABAR SOMAVATI SADHNA –FOR YOUR PERFECT JOB

जब बात पूर्णता की हो रही हो तो उसका अर्थ जीवन के दोनों पक्षों से होता है. अध्यात्मिक क्षेत्र में जहा हम विविध साधनाओ का अभ्यास करते हुए गुरु चरणों में लिन हो जाए उस तरह जीवन में यह भी जरूरू है की भौतिक पक्ष भी मजबूत हो. हमें मान सन्मान यश कीर्ति ऐश्वर्य की प्राप्ति हो सके. भौतिक जीवन में सफलता के बिना आध्यात्मिक पक्ष में सम्पूर्णता को प्राप्त करने के लिए प्रयत्नशील होने पर अत्यधिक संघर्षो का सामना करना पड़ता है, वरन उत्तम तो ये है की हम गृहस्थ और आध्यात्म दोनों को साथ में लेके अपनी मंजिल की तरफ आगे बढे. साधनाओ के अंतर्गत सभी प्रकार की गृहस्थ समस्याओ के निराकरण के लिए उपाय है, इसका सीधा अर्थ यही बनता है की साधना मार्ग सिर्फ आध्यात्मिक उन्नति के लिए नहीं है लेकिन भौतिक पक्ष में भी पूर्ण सफलता प्राप्त करने के लिए साधनाओ का सहारा लिया जा सकता है. आज के इस युग में जहाँ एक तरफ द्रव्य का ही बोलबाला है, जीवन के लिए एक उत्तम आय का स्त्रोत होना अत्यधिक जरुरी हो चूका है. लेकिन कई बार यु होता है की व्यक्ति विशेष को अपनी काबिलियत होने पर भी अपने कार्य क्षेत्र में योग्य पद या काम नहीं मिल पता है. या फिर काम मिलने पर भी कई प्रकार की बाधाए अडचने आने लगती है. कई बार योग्य जगह काम मिलने पर भी वेतन की समस्या होती है. कई लोगो की, खास कर के वह विद्यार्थी जो की अपनी पहली नौकरी की तलाश में हो उन्हें भी यह चिंता बराबर बनी रहती है की उन्हें यथायोग्य काम मिले जो की भविष्य में उनकी प्रगति के लिए एक आधार स्तंभ बने.
साबर साधनाओ में एसी कई साधनाए प्राप्त होती है जो की इस प्रकार के उद्देश्य में पूर्णता प्राप्त करने के लिए साधको का मार्ग प्रसस्त करती है. आगे की पंक्ति में भी एक एसी ही अद्भुत साधना दी जा रही है. इस साधना को करने पर साधक को योग्य काम मिलने में जोभी अडचने हो दूर हो जाती है, योग्य मनोकुलित व् प्रगति वर्धक

स्थान पर नौकरी मिलती है. अगर किसीको अपनी नौकरी में किसी प्रकार की समस्या भी हो तो भी यह साधना से वह दूर होती है. संस्क्षेप्त में कहा जाए तो यह साधना काम व् नौकरी की हर समस्याओ को दूर करने क लिए ही बनी है.

इस साधना को साधक सोमवार मंगलवार शुक्रवार या शनिवार से शुरू कर सकते है
समय रात्रि के १० बजे बाद का रहे, दिशा उत्तर रहे.
रात्रि में स्नान करने के बाद सफ़ेद वस्त्र को धारण करे. इसके बाद अपने पूजा स्थान में बैठ कर के गुरु पूजन सम्प्पन करे और सफलता प्राप्ति के लिए प्रार्थना करे.
उसके बाद निम्न मंत्र का १०८ बार उच्चारण करे
ओम सोमावती भगवती बरगत देहि उत्तीर्ण सर्व बाधा स्तम्भय रोशीणी इच्छा पूर्ति कुरु कुरु कुरु सर्व वश्यं कुरु कुरु कुरु हूं तोशिणी नमः
यह जाप सफ़ेद हकीक माला से हो और उस माला को मंत्र जाप के बाद धारण कर ले.
यह क्रम पुरे ११ दिन तक रहे. इस साधना में रात्रि में भोजन करने से पहले थोडा खाध्य पदार्थ गाय को खिलाना चाहिए. ऐसा करने के बाद ही भोजन करे. अगर यह संभव न हो तो रात्रि में भोजन न करे.
इस साधना पूरी होने पर माला को विसर्जित नहीं करना चाहिए तथा गले में धारण करे रखना चाहिए.
यह साधना का करिश्मा है की यह साधना करने पर कुछ ही दिनों में यथायोग्य परिणाम प्राप्त होने लगते है.
When we are speaking of Completeness, it means about both aspects. Whereas we get dissolve in the holy feet of sadgurudev by understanding and practicing various sadhana of spirituality; it is also an important thing to have a strong material platform. We may receive reputation, respect, fame, glory.When it is tried to have completeness without being properly settled in material world, it may result in facing various hardship and struggles. Instead of that, it is better to move ahead toward our goals, with both material and spiritual sides. There are solutions for each and every material problems under sadhana, this directly means that sadhanas are not mere meant for spiritual gaining but sadhana support can also be took to have a complete success in material needs even.In today's one sided world, there is a single concept of money speaking, it has become very important for everyone to have a proper income source. But many time it happens that a person with all capabilities even, does not become able to have a proper job and work. Or if they get it, so many troubles and difficulties keeps on knocking. Some time while having a proper work too, there is a problem of pay. Many people especially those who are searching for their first job do always worry on their first job which may work as proper pillar of their future career.In sabar sadhanas, we may have many sadhanas which lay sadhak to complete his desires by clearing the way. In below lines one of such sadhana is given. By doing this sadhana, all the troubles to have a proper

work for sadhak becomes out of the way, the job is gained at proper liking and future worth working place. If anyone is facing any problem in running job too may perform this sadhana to remove that trouble. In short, this sadhana is meant for to remove each and every kind of job and work related problems.

Sadhak may start this sadhana on either day of Monday, Tuesday, Friday or Saturday.
Time should be after 10 in night, direction should be north.
After bath wear white cloths. Sit at your worship place and perform guru poojan. Pray for success.
After that chant following mantra for 108 time (1 rosary)
om somaavati bhagavati baragat dehi uttirn sarv baadha stambhay roshini ichchha poorti kuru kuru kuru sarv vashyam kuru kuru kuru hum toshini namah
The chanting should be done with white hakeek rosary, after chanting wear the rosary.
This process should continue for 11 days. In this sadhana one should offer some food to cow before having a dinner. One should have dinner after doing this process only. If it is not possible, do not have dinner.
After sadhana one should NOT drop rosary but rosary should be worn around neck.
This is miracle of sadhana that after completion of sadhana, in few days one may have desired results.

NIKHIL KALP KUTIR.....BHOOMI POOJAN SAMAROH - AN REPORT

Each and every moment of life has got its own importance. We cannot compare one moment with another. But some moments are precious which become treasure for life and what could be said about those fortunate ones who were part of these

moments…Those moments are moments of joy and ecstasy not only for now but also for future when we will see our Sadgurudev dream getting materialised….when we will also make contribution and then we can say that Lord! I was fortunate that I was present in these so much important moments.

Now this function has been completed…or in other words series of future celebrations/function has started. Now we have to only work and expand field of sadhna……we do not have to stop at any moment…..we have to take our works to a particular level as soon as possible. This is a festival and our devotion at lotus feet of Sadgurudev. Now the speed of our work will reach ultimate level. Not only declarations but working in stages and taking each steps to completion…..because there is no time left considering the level of task ahead.

This function could be considered unparalleled in many dimensions. It was clear direction from our seniors that all the Vedic or tantric procedures which will be done in this programme , whether they may seem subtle or vast , but all these procedures would be carried out by females of this huge family. It was because when Shakti will worship Shakti then how can obstacles or hurdles remain in path. Keeping this fact and feeling in mind, this work was accomplished.

Sadgurudev have always loved female disciples (which are ultimately her soul-daughters) much more than sons and he always used to say that daughters are the embodiment of love and affection, who keep on showering affection throughout their lives. On one hand daughters are manifestation of Maa Bhagwati Paramba and on other hand they are complete form of creativity of life and tenderness …and we have tried to materialise this feeling of Sadgurudev….To add to that, we have also eradicated the misconception that there are only few among us who are sharing all the burden……..doing of poojan by our sisters also illustrate that it is not like this. Rather our sisters are fully capable. They are not inferior to anyone in any respect. And you all are completely aware of abilities of many sisters among them. Truth does not need any support, nor it needs anyone to recognise it, it is complete in itself.

All the poojan work which was done was primarily carried out under the direction of Rajni Nikhil Ji and now there is no need of her introduction. From previous few

months, she was doing sadhna in Tantra Maha Peeth for this work and was busy in Praan-Pratishtha of one special Shri Yantra on which Arif Bhai Ji himself had done various procedures.

The **very special Parad Shri Yantra** was buried in the middle of vast stretch of land after completion of poojan on poojan day. It was the indicator of the fact that from now on, there will be no obstacle during course of construction on this land.

Because not only this Sri Yantra rather…….all the poojan work accomplished was not merely poojan of Bhagwati Shodash Tripur Sundari but it was complete Aavaran poojan. Thus results of this procedure will be witnessed by both you and us in future. This is not any ordinary procedure. It is not only invitation rather complete establishment of Aadya Shakti (Bhagwati Raaj Raajeshwari) by various secretive mantras for completion of this special work…..that too as soon as possible. And the handful of sand which we all offered in Bhoomi sthapan prayog of this special Shri Yantra……was indicator of our collective power …..It is not our rather……..it is work of all of us. And we all will not only equally render cooperation but will always remain together in all respect, only as brothers and sisters……no elder and no younger…all are equal.

From past few days we all were busy in completing Bhoomi Poojan work. But we were unaware of number of brothers and sisters coming as except 8 or 10 people nobody told us in spite of us writing again and again. It seemed that all were curious to surprise us by their last minute presence out of which some had joined the group just 1-2 days back and some were seniors too…..their sudden arrival………All had started gathering at railway station . And when I reached there, bus was completely full ……Now arrangement for one more bus was to be made…

We had thought that all brothers and sisters after coming to Jabalpur can take rest in appropriate hotel. But there were 2-3 railway examination falling on the 9th December due to which it had become virtually impossible to find a room in any hotel. All brothers and sisters tried hard to get hotel and mostly all were successful in getting them in late night……When there is situation like it….then it was not an easy task to instantaneously arrange for other bus in the morning. Thus arrangement for car etc. was made…. All the remaining people reached the place through the car.

Poojan work was being done at full force. As I have already said that this time females have taken this task in their hands. Therefore, we could focus on other tasks. Arif bhai tried to meet all as far as possible. All brothers and sister took time from him while roaming in the ground because everyone knew that they have come for one day only and he is also starved for time.

After completion of Poojan all of us enjoyed the simple and delicious food. We all have made sure that as much as possible; food arrangements will be made from nearby villages so that many brothers and sisters coming from cities could enjoy food made by them and in this manner, our mutual relation with villagers can be strengthened.

Evening time has already started. People had to leave by that day train too, but they were not willing to go and wanted to stay there. But we cannot ignore the harsh realities of necessities of life …and ….**Sadgurudev has always said that He aspire his disciples not to be acetic rather they want them to be true sadhak while fulfilling their social, personal and timely responsibilities. He wanted his disciples not to run from responsibilities of life rather they should face it resolutely….and be successful….and become pride of Sadgurudev.**

Those brothers, who could not go by bus, went by car with other brothers. It was pleasing that there is no discrimination……no distance….no differences of any kind………no discrimination on basis of knowledge, post or position…..all are ours…….so affection is natural….and when Sadgurudev blessing is on all of us then…..

And one more thing which I forget to tell you that we all went and saw vast stretch of land from poojan place to banks of Narmada River (which is boundary) and experiences that really, here amazing work is going to take place which is not disguise under…that just by using name of Sadgurudev , someone is earning bread.

Rather we all are working day and night to make land flat and even for carrying out future work. We cannot even imagine how much it was difficult to work on this land; it was filled with so many stones. Bhai Ji always directed that all work carried out should not be informed on Facebook rather we should silently carry out work for that day as much as possible ….so that when brothers and sisters come, they experience

that work is not going to begin rather it is already being done day and night right from the day when they purchased the land. They have not left any stones unturned.

For this reason, there was delay in publication of Tantra Kaumadi. You all should see our work and understand that we all are strongly determined in all circumstances and till every limits that this dream will be fulfilled in its complete form….at any cost….We have not seen any muhurat……no festival. Just put the planet and constellation on one side …..When Sadgurudev is with us each and every moment then we have to just work and this is the only basic mantra…….success is all ours.

And after seeing this land, you cannot even think that there were 20-20 feet deep trenches …entire region was filled with dense shrubs…but you can see work of our team.

And why it should not be friends…..each and every disciple of Sadgurudev has got the capability to do amazing things….and all this is one part of him only. Arif Bhai Ji is working hard to make sure that work is carried out at faster pace and so that as soon as possible we all brothers and sister will gather and do sadhnas together and you all, with ease, not only take guidance from brothers and sisters rather will become ready for providing their contribution towards fulfilment of Sadgurudev's dream…….because just saying Jai Sadgurudev……and my life is his only……arranging some tent and food….such type of disciples are not required ….rather those who can say that we have to fulfil the dream of our father. We have to prove right the hard-work put by Sadgurudev for us…..He Sadgurudev; we will work day and night. This dream will be fulfilled.

Here I am reminded of one incident of Swami Vivekananda in which he during his foreign stay said that if I get 100 youngsters whose trust is of steel and body is of iron, then I will transform the entire world.

And you will be surprised that after listening to this roar , only one girl came forward , touched his lotus feet and said Swami Ji I am present at your service , you can search for remaining 99 and that lady….later on became world-famous by the name of Sister Nivedita.

Saying that Arif Bhai Ji, I know that you will be successful……..it does not solve any purpose….rather it should be that it is dram of my father and I will also contribute. How can I sit idle?

Friends you have seen the land yourself

1. It is situated on the north of Road (It the one and only road which is used for taking rounds around sacred Narmada and this place is always sacred owing to lotus feet of Mahayogi and Acharyas who travel on it). It has been considered to increase money and good-luck in Vaastu Shastra

2. On the other hand, Narmada River itself is situated on the north of the land which from Vaastu Shastra point of you, indicates complete success and good-fortune.

3. And Vaastu Shastra also says that if the stones are found by digging the land, then that land is auspicious for increase in age, wealth and prosperity.

When we got some time after poojan (though Arif Bhai Ji had said to me that he wants to say certain things in detail) but due to scarcity of time, he only said that **neither I need help of single rupee from you all nor today's programme was done with this desire…..I only need your company and nothing more…..If you cannot do anything then at least do not betray the trust.**

Because it hurts a lot …..Here no one is there to take credit. We all are brothers and sisters then no things like betrayal should come in such auspicious work.

Due to heavy request from brothers, Arif Bhai Ji met the brothers till 2:00 A.M in one room of Hotel Samdariya ……..one small meeting, just like small gosthi. After it, all took little time from him for their personal talks. It went on till 2:00 A.M in the night. And on the next day from 8:00 A.M in the morning Bhai ji went to meet other Guru Brothers in Hotel Shivalik and this went on till 1:00 P.M. Even when he was going to his hometown in the evening, then all those brothers and sisters, who were present at railway station, met him.

One more thing that from last 4 days winter had disappeared ….and all our brothers and sisters had come with blanket and quilt and all were saying that is this cold….here

we are sweating. Now how I can make them understand actually it is winter …….but with your arrival……due to your affection….summer has arrived….smile

But I will post photo of site on the net from which you will be able to understand the intensity of cold.

But this incident has taught that next time it should be written that you all check yourself and make arrangements accordingly…smile

Really…..what can be said about the affection of you all…..it seemed that to give base to our hard-work, Sadgurudev is situated in hearts of you all and is pouring affection. I am present inside all of them…..I am with you and all of you are parts of soul.

Because today affection between two people stays for some time…..how is it possible …??

Keep on boosting about friendship…..nobody knows….when someone become egoistic….

I will be there with you……each and every moment…..saying this one day….

And such things have happened with Arif Bhai Ji many times…….but still knowing everything he sometimes say that ….there is no time for such talks…now our work will be answer to all…who are still hesitating to come forward or who in spite of being with us…

But among them there are so many affectionate ones whose number cannot be counted nor we can imagine their amazing affection………so many persons wept when he left by train. It has also been said…

That not by big-big words…..superficial talks….

Rather the thing which is not uttered…..which remains inside and where words become silent….

At that moment what more can be precious than one drop of tear in eyes….

This is love…..true love….

We all are grateful to you for your love and affection….

We love all those who are with us …….and we wait for those real companions who will come in future because……it is not possible that disciples of Sadgurudev will not have love and ability for his dream……
His blood is running in our veins ………we are with each other for completion of work.

We all are with each other to materialise this multi-dimensional dream and …….how can we consider your love …your trust ….your dedication to be lesser. We all will meet very soon. And this sequence will go on always…..
So smile…and please tell us about your feelings ……because it has got a meaning too….
And shall I write all things……We are waiting for your kind words….
With no miserliness…..do write….

==

जीवन का हर क्षण का अपना ही एक महत्त्व हैं , किसी एक क्षण की, किसी दूसरे क्षण से तुलना की ही नही जा सकती हैं.पर कुछ क्षण अनमोल होते है जो जीवन भर की सम्पदा हो जाते हैं और इन क्षणों मे जिस किसी को भाग लेने का मौका मिलता हैं . वे क्षण सच मे ...एक खुशी...एक प्रसन्नता...के पल आज ही नही बल्कि भविष्य के लिए भी हो जायेंगे जब सदगुरुदेव के स्वप्न को और भी साकारता लेते हुये देखेंगे ..जब हमारा योगदान भी होगा और तब हम भी यह कह सकते हैं की हे प्रभु ..यह हमारा सौभाग्य रहा की इतने महत्वपूर्ण क्षणों मे मैं भी उपस्थित रहा ..

अब यह समारोह सम्पन्न हो चुका हैं ..या यूँ कहूँ की अब नए आने वाले समारोहों की श्रंखला प्रारंभ होने के लिए मानो शंख ध्वनि हो गयी हैं.की अब सिर्फ कार्य और सिर्फ साधना क्षेत्र का विस्तार ...और विस्तार ..अब नही रुकना हैं ..अब कार्यों को जितना जल्दी एक स्तर तक पहुचाना ही हैं . यह तो उत्सव ही हैं ,और सदगुरुदेव के श्री चरणों मे यह भावांजलि ......हमारे कार्यों की........ अब और तीव्रता ..अपने चरम पर होते जायेगी .केबल कोई और घोषणा नही बल्कि अब चरण बद्ध कार्य और हर चरण को उसकी पूर्णता तक पहुचाना ..क्योंकि अब समय मानो हैं ही नही ..जिस स्तर का कार्य अब सामने हैं,उसे देखते हुये .

यह समारोह अपने आप मे अनेको आयाम मे, अप्रितम कहा जा सकता हैं, हमारे वरिस्ठो का स्पस्ट आदेश रहा हैं की इस कार्यक्रम मे जो भी वैदिक और तंत्रकीय प्रक्रियाये होगी, जो भले ही सूक्ष्म या बृहद दिखाई दे, पर वे सारी प्रक्रिया, अब हमारे इस विशाल परिवार की नारी शक्ति के द्वारा ही क्रियान्वित होंगी .क्योंकि जब स्वयम शक्ति ही शक्ति का पूजन करने बैठेंगी तब भला मार्ग मे कैसे कोई विपत्ति या वाधाएं टिक पाएंगी .और इसी भावना को .इसी तथ्य को अपने सामने रखते हुये यह कार्य किया गया .

सदगुरुदेव हमेशा अपनी शिष्याओ को, जो की उन्ही की ही तो आत्मवत पुत्रियाँ हैं, को पुत्रो से भी कई कई गुना जयादा स्नेह करते रहे हैं ,और वह यह भी अनेको बार कहते रहे की पुत्रियां ही तो स्नेह का साक्षात् स्वरुप होती हैं, जो जीवन भर सिर्फ स्नेह और स्नेह ही लुटाती रहती हैं , जहाँ पुत्रियां साक्षात् माँ भगवती पराम्बा का स्वरुप हैं तो वहीँ कोमलता और जीवन की सृजनात्मकता का एक पूर्ण रूप ...और सदगुरुदेव जी की इस भावना को हमने यहाँ साकार करने की कोशिश की ..साथ ही साथ इस भ्रांती का निर्मूलन भी की ..हमारे यहाँ सिर्फ कुछ ही ऐसे हैं जिन पर सारा भार हैं ...और हमारी बहिनों के द्वारा यह पूरा पूजन होने से यह भी पता चलता हैं की ऐसा नही हैं .बल्कि हमारी बहिने भी पूरी तरह सक्षम हैं वे किसी भी अर्थो मे...... किसी से कम नही हैं और आप सभी .....इनमे से अनेको की प्रतिभा से पूर्ण परिचित हैं भी ..और इनके बारे मे क्या लिख सकता हूँ.सत्य को किसी के आसरे की जरुरत नही, न ही किसी के पहचान कराने की, वह अपने आप मे भी पूर्ण होता हैं.

जो भी पूजन कार्य समपन्न हुआ उसमे प्रमुखता से रजनी निखिल जी ने निर्देशन किया और उनके परिचय की अब कोई आवश्यकता हैं ही नही.वे विगत कई महीनो से तंत्र महा पीठ कामाख्या मे इसी कार्य के लिए साधनारत रही और एक विशेष श्री यन्त्र की प्राण प्रतिष्ठा मे संलग्न रही जिस पर स्वयम आरिफ भाई जी ने भी अनेको प्रक्रियाये पहले से सम्पन्न कर रखी थी.

जिसे (**अति विशिष्ट पारद श्री यन्त्र**) इस पूजन दिवस मे समस्त पूजन कार्य पूरा होने पर इस भू खंड के मध्य मे जमीन मे दवा दिया गया , जो की इस बात का परिचायक हैं की अब से इस भूखंड पर न कोई निर्माण के दौरान ,न किसी भी प्रकार की कोई वाधा आएँगी.

क्योंकि न केबल यह श्री यंत्र बल्कि.....जो भी पूजन कार्य हुआ वह भगवती षोडशी त्रिपुर सुन्दरी का ..... न केबल पूजन बल्कि सम्पूर्ण आवरण पूजन से संयुक्त हो कर हुआ हैं . अतः इस क्रिया के क्या परिणाम होंगे..आप और हम सभी स्वयम देखेंगे ही...यह कोई सामान्य प्रक्रिया नही हैं बल्कि अपने आप मे अनेको रहस्यमय मंत्रो से संयुक्त हो कर मानो भगवती राज राजेश्वरी को मानो इस विशेष कार्य की पूर्णता.........वह भी जल्दी से जल्दी संभव करवाने हेतु,उन्हें न केबल निमंत्रण बल्कि उन आद्या शक्ति को पूर्णता के साथ स्थापन भी करना हुआ हैं.और हम सभी ने एक एक मुठ्ठी मिटटी जो इस विशिष्ट श्री यन्त्र के भूमि स्थापन प्रयोग मे इस पर अर्पित की......... वह मानो एक संगठन शक्ति का ही प्रतीक हैं की........यह हमारा ही नही बल्कि......हम सब का ही अब कार्य हैं.और हम सभी एक बराबरी से इस कार्य मे..........सहयोग ही नही बल्कि हर दृष्टी से साथ होंगे, सिर्फ भाई बहिन के रूप मे, कोई छोटा या बड़ा नही...............सभी एक बराबर...

विगत कई दिवसों से हम सभी इस भूमि पूजन कार्य की तैयारी को पूर्णता देने के कार्य मे लगे हुये थे .पर कितने भाई बहिन आ रहे हैं हमारे बार बार लिखने पर भी सिर्फ ८ या १० लोग को छोड़कर किसी ने भी बताया नही था .सभी, हमें भी अंतिम समय उपस्थित होकर आश्चर्य चकित मानो कर देने के लिए उतावले थे . जिनमे से कुछ तो मानो एक दो दिन पहले ही हमारे इस ग्रुप मे जुड़े तो कुछ वरिस्स्ठ भी ...उन सभी का अचानक आगमन ....रेलवे स्टेशन मे सुबह से सभी एकत्रित होने लगे थे .और जब तक मेरा पहुचना वहां पर हुआ तब तक तो एक पूरी बस ठसाठस भर चुकी थी ..मतलब अब एक और .बस का इंतज़ाम ..

कुछ यूँ हुआ की हमारे द्वारा जो भी सोचा गया था की, सभी भाई बहिन आराम से जबलपुर मे आ कर उचित होटल मे आराम कर सकेंगे .पर दो या तीन exam जो रेलवे के थे वह भी ९ तारीख हो ही थे .इस कारण किसी भी होटल मे जगह मिल पाना लगभग असंभव सा हो गया .सभी भाई बहिन ने बहुत मेहनत करी की किसी तरह उन्हें .कोई तो होटल मिल सकें और देर रात तक लगभग सभी कामयाब हो ही गए ...जब यह हालत हो रही हो ... तब सुबह दूसरी बस का तत्काल इंतजाम करना कोई आसान काम नही था .अतः तत्काल कार आदि की अव्यवस्था की गयी .... हम सभी जब सभी जो शेष रहे वह उसके के माध्यम सेसमय रहते आयोजन स्थल तक पहुच गए .

वहां पूजन कार्य अपने पूरी चरम पर चल रहा था .जैसा की मैं आपसे निवेदन कर ही चुका हूँ की इस बार नारी शक्ति ने यह कार्य अपने हाथ मे लिया था .तो थोडा सा हम सभी अन्य कार्यों मे और ध्यान दे सकते रहे .आरिफ भाई जी ने जितना संभव हो सकता था सभी से मिलने की पूरी कोशिश की .मैदान मे घूम घूम कर सभी भाई बहिन एक एक करके उनसे समय ले रहे रहे .क्योंकि सभी जानते रहे की वह भी मात्र एक दिन के लिए आये हैं और उनके पास भी समय की बेहद कमी हैं .

पूजन कार्य की पूर्णता के बाद हम सभी ने ,सरल स्वादिष्ट सुस्वादु भोजन की व्यवथा रखी गयी थी उसका आनंद लिया . हम सभी ने यह सुनिश्चित कर रहा था की जितनी भी व्यवस्था अगर संभव हो सकती हैं तो वह आस पास के गांव से ही लेंगे ताकि शहर से आये अनेक भाई बहिन .... उनके द्वारा बनाये गए भोजन का लाभ भी ले सकें,और इसी तरह से गाँव वालों के प्रति हमारे आपसी सबंध और भी प्रगाढ़ हो सकें,

इसके बाद संध्या काल प्रारंभ भी चुका था, लोगों को उसी दिन की ट्रेन से जाना भी था ,पर लोग जा ही नही रहे थे सभी और भी रुकना चाह रहे थे ,पर समय की और जीवन की आवश्यकता का अपना ही एक कठोर सत्य हैं उससे आप नज़र अंदाज़ भी तो नही कर सकते हैं .....और ..**सदगुरुदेव का सदैव से यही कहना रहा हैं की अब सन्यासी नही बल्कि वे जीवन की सारी जिम्मेदारियों और अपेक्षाओ को पूर्ण करते हुये अपनी सामाजिक , व्यक्तिगत और काल गत समस्त जिम्मेदारियों को पूरा करते हुये एक सच्चे साधक की वह कामना करते हैं की उनके शिष्य शिष्या ऐसे बने जो जीवन से भांगे नही बल्कि दृढ़ता पूर्वक उसका सामना कर ....सफल बने...अपने सदगुरुदेव का गौरव बने.**

जो कुछ भाई .बस मे जाने से छूट गए वह भी फिर किसी तरह कार मे एक दूसरे के साथ चल कर शहर पहुंचे ..यह बहुत ही सुखदायक हैं की कोई भेद भाव नही,.... कोई दुरी नही ..कोई किसी भी प्रकार का मन मुटाव नही,......कोई ज्ञान या कोई पद या स्थिति का भेद भाव नही ..... सभी तो अपने ही हैं न ..तो ये स्नेह तो होगा ही ...और जब सदगुरुदेव जी की करुणा दृष्टी सभी पर हैं तब ...

हाँ यह बात तो मैं भूल ही गया बताना की हम सभी ने पूजन स्थल से लेकर ..पवित्र नर्मदा तट तक जहाँ तक हमारी इस भूखंड की सीमा हैं, वहां तक स्वयम चल कर देखा और यह अनुभव किया की सच मे .यहाँ एक अपने आप मे अद्भुत कार्य होने जा रहा हैं जो की किसी तरह की लीपापोती नही हैं की...... बस नाम सदगुरुदेव जी का लेकर का लेकर अपनी रोटियां सेकते रहे .

बल्कि हम सभी दिन रात श्रम करके इस भूखंड को कार्य के लिए .समतल बनाने के कार्य मे लगे रहे ..यह भूखंड जितना सोचा था, उससे भी कहीं जयादा पत्थरों से भरा हुआ हैं .इस पर कार्य करना कितना कठिन हैं यह अनुमान भी नही लगाया जा सकता हैं.भाई जी का लगातार यह निर्देश की हम क्या कार्य कर रहे हैं....... उसकी कोई बात अभी फेस् बुक नही की जाए बल्कि चुपचाप .जितना कार्य उस दिन तक के लिए संभव हो पाए ...हम करें....... ताकि हमारे भाई बहिन आकर देखें और अनुभव भी करें की सच मे .अब से कार्य चालू नही बल्कि ये सभी दिन रात कार्य कर रहे थे,जिस दिन से जमीन ली गयी हैं उस दिन से यह लोग शांत बैठे नही रहे हैं .

इस कारण तन्त्र कौमुदी के प्रकाशन मे देर हो रही थी पर .आप सभी स्वयम हमारा कार्य देखें और समझे की हम हर हालत मे हर सीमा तक दृढ प्रतिज्ञ हैं की यह स्वपन पूरी तरह ही नही बल्कि सम्पूर्णता से अपने पूर्ण स्वरुप मे साकार हो कर रहेगा...ही ..हर हाल मे ..हर कीमत मे...इस कार्य के लिए हमने न ही महूर्त देखा, न......... कोई त्यौहार .सारे गृह नक्षत्र एक ओर ...जब बस जब सदगुरुदेव प्रतिपल साथ हैं तो हमें कार्य करना हैं और बस यही .मूलमंत्र ...सफलता हमारे लिए ही हैं .

और आप उस भूखंड को देख कर सोच भी नही सकते की वहां पर २० –२० फीट गहरी खाईयां रही हैं ..सारा क्षेत्र घनी झंडियों से भरा हुआ पर .हमारी टीम का कार्य आप देख सकते हैं .

और क्यों न हो मित्रो ..सदगुरुदेव का एक एक शिष्य अपने आप मे अद्भुत करने की क्षमता रखता हैं ..और यह सब उन्ही उसी शक्ति का ही तो एक अंश हैं और .आरिफ भाई जी और भी कार्य तीव्रता कैसे संभव हो सके इसी मे लगे हैं की जल्द से जल्द हम सभी भाई बहिन यहाँ पर एकत्रित हुआ करेंगे , साधनाए साथ मे करेंगे और आप आराम से, पूरी तरह से निश्चिन्ता से , न केबल अपने भाईयों से, बहिनों से हम सभी साधनात्मक मार्ग दर्शन ले सकेंगे ,बल्कि सदगुरुदेव के इस स्वप्न को साकार करने मे अपनी भूमिका हेतु आप तैयार भी हो सकेंगे ..क्योंकि सिर्फ जय सदगुरुदेव .... और ये जीवन उन्ही का हैं ..... और कुछ टेंट लगा देना ..... कुछ भंडारा करा देने वाले शिष्य भाई नही......... बल्कि जो कमर कस कर कह सके की हमें तो अपने ही पिता का स्वप्न साकार करना हैं .सदगुरुदेव द्वारा हमारे लिए अहिर्निश किये गए श्रम् को सही साबित कर दिखाना हैं ही .... हे सदगुरुदेव हम दिन रात कार्य करेंगे .यह स्वप्न पूरा होगा ही ..और हम अभी ..नही यह कहीं जायदा अच्छा होगा की मैं ..करूँगा .

यहाँ पर मुझे स्वामी विवेकानद जी के साथ हुये उस संस्मरण की बात याद आती हैं जिसमे उन्होंने अपने विदेश प्रवास कहा की मुझे १०० ऐसे युवक युवतियां मिल जाए जिनके विश्वास स्टील का और शरीर फौलाद का बना हुआ हो तोमैं सारे संसार का कायाकल्प कर दूँगा .

और जानते हैं मित्रो यह हुंकार सुन कर सिर्फ एक लड़की सामने आई और उसने उनके श्री चरणों का स्पर्श करते हुये कहा की स्वामी जी मैं आपकी सेवा मे उपस्थित हूँ अब आप शेष ९९ की खोज कर ले और वही युवती ..सिस्टर निवेदिता के नाम से विश्व विख्यात हुयी .

यह कहना की आरिफ भाई जी मैं जानता हूँ आप कामयाब होगे ही .... यह कोई बात नही ....बल्कि होना तो यही चाहिये की यह मेरे पिता का ही स्वपन हैं और मेरा भी योगदान होगा ,मैं कैसे बैठे रह सकता हूँ .

मित्रो यह भूखंड .आपने स्वयम देखा हैं

1. की रोड (यह एक मात्र रोड हैं पवित्र नर्मदा की परिक्रमा करने केलिए करने के लिए उस स्थान पर उपयोगित की जाती हैं ,जिस पर अनेको महायोगी और आचार्यों के पावन श्री चरणों से यह स्थान सदैव पवित्र युक्त ही हैं)के उत्तर दिशा की ओर स्थित हैं यह वास्तु शास्त्र मे धन और धान्य को बढ़ाने वाला माना गया हैं .
2. वही इस भूखंड के स्वयम के उत्तर भाग मे स्वयम नर्मदा नदी हैं जो की वास्तु शास्त्र के हिसाब से पूर्ण सफलता और सौभाग्य का प्रतीक हैं.
3. और वास्तु शास्त्र कहते हैं की जिस भूखंड को खोदने से यदि पत्थर निकले वह भूखंड तो आयु, धन और धान्य और एश्वर्य वृद्धि कारक होती हैं .

वहीँ पूजन उपरांत जब कुछ क्षण मिले .हालाकि आरिफ भाई जे ने मुझसे कहा था की वह कुछ बाते सभी से विस्तार से करना चाहेंगे परन्तु समय की कमी के कारण .बस उन्होंने इतना ही कहा की **मुझे आप सभी से ..एक पैसे की भी सहायता नही चहिये .न ही यह आज का कार्य कोई इस तरह के इच्छा रखने के लिए प्रचार के लिए किया गया हैं ..मुझे बस आपका साथ चाहिये और कुछ भी नही ..कम से कम अगर कुछ भी नही कर सकते तो विश्वासघात तो न करें..**

क्योंकि वह बहुत पीड़ा पहुंचाता हैं की ...यहाँ कौन श्रेय लेने के लिए हैं हम सभी भाई बहिन ही तो हैं तब आपस मे इस पवित्र कार्य मे विश्वासघात जैसा तो न आये ...

भाइयों के बहुत अनुरोध पर आरिफ भाई जी स्वयम रात को २ बजे तक मिलते रहे .हम सभी होटल समदरिया के एक रूम मे ..... एक छोटी सी मीटिंग और गोष्ठी ही समझ ले उसी रूप मे आपस मे बात करते रहे , बाद मे सभी ने थोडा थोडा समय अपनी व्यक्तिगत बातों के लिए उनसे लिया लगभग यह रात के २ बजे तक चलता रहा .और अगले दिन फिर सुबह ८ बजे से भाई जी ..अन्य और गुरू भाइयों से व्यक्तिगत मिलने के लिए स्वयम होटल शिवालिक गए और दिन के १ बजे तक पुनः यह सिलसिला चलता रहा .यहाँ तक की जब वह शाम को अपने गृह नगर जा रहे थे तब भी जो भी भाई बहिन रलवे स्टेशन पर उपस्थित रहे उनसे भी वह मिलते रहे .

हाँ यह बात जरुर हैं की विगत चार दिन से ठण्ड की ऋतू छुट्टी मानने अपने घर चली गयी ..और हमारे सभी भाई बहिन रजाई कम्बल लेकर यहाँ आ गए और सभी यही कह रह थे की ..भैया ये ठंडी हैं ...यहाँ तो पसीने छूट रहे हैं अब मैं कितनो को समझाता की की हैं तो ठंडी .... पर आप सभी के साथ साथ आने पर ....आपके इतने स्नेह के कारण ही तो यह गर्मी आ गयी हैं .... smile

पर सच्ची मुच्ची मैं आपको साईट के फोटो आज नेट पर पोस्ट करूँगा जिसमे आप समझ पाएंगे की क्या आलम वहां का ठंडी रहा हैं .

पर इस घटना से यही सीखा गया हैं की अगली बार यही लिखा जाए की आप सभी स्वयम चेक कर ले और उसके हिसाब से अपने साथ .सामान लाये .... smile

सच मे ..आप सभी के स्नेह को क्या कहा जाए ..माने हमारे श्रम को और भी आधार देने के लिए सदगुरुदेव आप सभी के हृदयस्थ होकर अपने स्नेह से हम सभी को सिंचित करते रहे हैं .मानो की यह सभी अपने ही तो हैं .इन सभी के भीतर मैं ही तो हूँ .... तुम सभी के साथ हूँ ,और ये सभी मेरे ही आत्मांश हैं .

क्योंकि आज दो व्यक्ति का भी स्नेह कुछ समय टिका रह जाए ..कहाँ संभव हैं..??

मित्रता का रट लगाए लगाये.... न मालूम कब ....किसका कौन सा.. अभिमान जाग जाए ..कौन जानता हैं .

मैं साथ होउंगा ... .हर पल साथ हूँ ......कहते कहते एक दिन वहीँ ..

और ऐसा तो कई कई बार आरिफ भाई जी के साथ हुआ हैं ..पर सब कुछ जानते बुझते वह कभी कभी कह देते हैं की ...... अब इन सब बातों का समय कहाँ ..अब सिर्फ कार्य ही हमारा उत्तर हैं सभी के लिए ..जो अभी भी साथ आने मे हिचकते हैं या जो साथ रह कर भी ...

पर इन सबके मध्य स्नेह करने वाले इतने ज्यादा हैं की उन्हें न तो गिना जा सकता हैं न ही उस अद्भुत स्नेह की कोई कल्पना भी ....कितनो के आखों से आसूं बह निकले जब वह ट्रेन से जाने लगे .और कहा भी गया हैं न..

की बड़े बड़े शब्दों से नही ..बड़ी बड़ी बातों से नही .

बल्कि जो बात कह न पाए ..जो मन मे ही रह जाए और जहाँ शब्द ही मौन हो जाए .

उस पल पर पलकों पर आये एक अश्रु बूंद से भी कीमती और इस जहाँ मे भला क्या हो सकता हैं..

वहीँ स्नेह हैं ..वहीँ सच्चा ..स्नेह हैं ... .

आप सभी के इस स्नेह के लिए हम सभी पल प्रतिपल आभारी हैं ,और सदैव भी ..

जो साथ मे हमारे हैं उनका स्नेह हैं ....और जो सच्चे सहयोगी भविष्य मे आयेंगे उनका इंतज़ार भी क्योंकि ..सदगुरुदेव के शिष्यों मे ...उनके स्वप्न के लिए .अगर स्नेह और क्षमता न होगी यह तो संभव ही नहीं हैं .

उनका ही रक्त हमारी घमनियों मे बह रहा हैं ...वह इस कार्य की पूर्णता केलिए ही हम सभी एक साथ हैं .

इस बहु आयामी स्वप्न को साकार करने के लिए हम भी का पल प्रतिपल साथ हैं और ..भला हम आपके स्नेह ....आपके बिस्वास ...... आपकी श्रद्धा को कम कैसे आंक सकते हैं .आप सभी के इस स्नेह को विन्रमता सहित प्रणाम करते हुये .पुनः जल्दी ही आप सभी से मिलना होगा .और यह सिलसिला हमेशा चलता रहेगा ..हमेशा ...

तो मुस्कुराए ..और आप सभी अपनी भावनाओं से हमें भी अवगत कराये .....क्योंकि उसका भी तो एक अर्थ हैं....

और अब क्या सब कुछ मैं ही लिख दूं ..अब आपके शब्दों का भी तो इंतज़ार हैं ..

विथ नो कंजूसी ......पर ..लिखना जरूर ...

BRAMH VARCHASVA SAAYUJYA PARAM TATV DHAARAN GURU RAKT KAN KAN STHAPAN PRAYOG

Jai Sadgurudev,

Auspicious moments of Holi, exceptional sadhnas and above all, your dedication made Holi colourful. Isn't….:)

I am feeling sweet smile of your success, sadhna experiences, affection and blessings of Gurudev. Brothers and sisters, Holi is special. Isn't…

I pray to divine lotus feet of Sadgurudev that colour of various type of sadhna is spread in your life…….:)

Now, along with colours, you would have tasted different types of dishes on the festive occasion of Holi. And out of which sweets would have been special. Isn't :)

Sweets are most favourite of Anu Bhaiya and Raghunath Ji…….:) and all of you know this fact very well……:)

My dear brothers and sisters, this was about colourful talks of Holi. We have different types of customs prevalent in our culture. One of the customs is that elders give some gift to younger ones along with the blessings….Isn't

So let us share this tradition among us…. Since we are sons and daughters of Nikhil and we share our joy-sorrow, thoughts, feelings and especially knowledge so

why not share gifts…Do not get worried, I am not demanding any gift from you…..:)

Let us do one thing that I will give you all something as gift….Is it right now…..:)

Brothers and sister, we are truly fortunate to have taken birth in the era of Sadgurudev and more than that, we are very lucky to have his company and his blessings. Probably you will know that even gods and goddesses are jealous of our luck since they are not that much fortunate….

All those who have not seen Gurudev and have not taken initiation from him in physical form, please do not get disappointed. This procedure is especially for them…

My dear ones, now Gurudev is always with us all the time in the form of nature. What is needed is to feel it, know it and imbibe it inside each and every particle of blood because this is what dedication of disciple is all about. And where there is dedication, there can be no distance. Only Guru and disciple remains, nothing else….

Sadgurudev knew that time will come when society will be wandering about with anxiety; new generation will be thirsty for knowledge. Then this knowledge will only come to their rescue…..

Brothers, it is fact that the amount of knowledge and scriptures which he has left for us is so much that we need not to wander anywhere else….

I was talking about gift. And the gift is this wonderful sadhna….

GURU PRAAN AND RAKT KAN KAN STHAAPAN PRAYOG:-

As the name suggests, it is procedure to establish Guru in our Breath and blood which is very important. It is very necessary to know why it is important.

Brothers and sisters, food and environment are polluted. This food is like a poison for body since it flows in our body in form of blood.

Sadgurudev used to purify the blood through Shaktipaat procedure and then only used to do initiation procedure. Therefore, now we should do this with the help of sadhna.

The manner in which purified and refined form of food is blood, in the same manner, blood over course of time is refined into conscious, dynamic Bindu which is nothing but form of procreator Aing Beej. Bindu too in near future, if it is full of divinity is transformed into intensity-providing Retas and nectar of Ojas and travel upwards It is base of our divinity and progress. Therefore, if such blood is flowing in our nerves, we can be free from anxiety in many respects and can do not only long duration but divine sadhnas.Guru Element is base of our life, our refined form. Then nothing like nightfall happens nor the fear of discharge remains, whether it is physical discharge or mental error or moral blunder.

Procdeure:-

On any Thursday or Sunday, take bath in Mahendra Kaal (most auspicious time for sadhna), wear yellow/white dress and sit on white/yellow aasan facing north/east direction. Establish Guru Picture on Baajot. Perform Guru Poojan and Ganpati poojan in accordance with daily poojan. Chant 4 rounds of Guru Mantra. Thereafter, chant 51 rounds of below mantra by Guru Rosary.

OM PARAM TATVAM OM

This procedure has to be done for 3 days. In Fact, it is procedure to completely establish supreme element in each and every particle of blood. As sadhak keeps on doing this procedure with concentration, sadhak himself feels the change……The biggest miracle of this sadhna is that sadhak experiences incredible bless all the time and his dedication towards holy feet of Guru keeps on increasing day by day.If sadhak daily chants 11 rounds of this mantra for one year then sadhak attains Brahma Varchasva Siddhi and attains the god-like strength and capability to give boon and curse.

"Nikhil Pranam"

==

जय सदगुरुदेव,

होली की अति शुभ घड़ियाँ, उसमें अति विशिष्ट साधनाएं, और उस पर आप सबकी लगन, मिलकर बहुत ही रंग बिरंगी होली हो गयी ना....... :) :)

भाइयों आप सबके मुख की मीठी मुस्कान मै यही पर महशूस कर रही हूं जो सफलता की है, साधना में हुए अनुभवों की है,गुरुदेव के स्नेह और आशीर्वाद के अहसास की है . भाइयों बहनों है ना ये विशिष्ट होली.....

ऐंसे ही अनेक प्रकार की साधनाओं का रंग आप सबके जीवन मे बिखरता रहे, यही निवेदन है,गुरुदेव के श्री चरणों में........ :)

अब होली है तो, रंगों के साथ आप सभी ने अनेक प्रकार के व्यंजनों का स्वाद भी लिया ही होगा, और उसमें भी मिठाइयां विशेस होंगी... है ना :)

जो कि अनु भैया जी और रघुनाथजी की अति पसंदीदा चीज है...... :) और ये तो आप सभी जानते ही हैं....... :)

मेरे स्नेही भाइयों बहनों चलो ये तो हुई होली की रंग बिरंगी बात....भाइयों हमारे यहाँ अनेक प्रकार की परम्पराएँ हैं, उनमें एक ये भी की बड़े छोटों को आशीर्वाद के साथ कुछ उपहार भी देते हैं....... है ना

तो चलो हम सब इस परंपरा को हम आपस में ही बांटे..... चूँकि हम निखिलांश और हम सब सुख-दुःख, विचार भावनाएं विशेस कर ज्ञान, सभी कुछ बाँटते हैं तो फिर उपहार क्यों नहीं.... अरे अरे घबराएँ नहीं मै आपकी कोई उपहार वाली चीजें नहीं लुंगी.... :)

अच्छा ऐंसा करते हैं चलो मै ही आप सबको एक उपहार स्वरुप कुछ देती हूँ...... अब ठीक है ना ..... :)

भाइयों बहनों ये सच में हमारे जीवन का सौभाग्य है कि हमने सदगुरुदेव जी के युग मे जन्म लिया है और उससे भी बड़े सौभाग्य कि बात ये है कि हमे उनका सानिध्य, उनका वरद हस्त प्राप्त हुआ, शायद आपको पता हो कि हमारे इस सौभाग्य पर देवता भी ईर्ष्या करते हैं,क्योंकि ये सौभाग्य उनको प्राप्त नहीं है ना.......

ना ना वो लोग बिलकुल निराश न हों जिन्होंने गुरुदेव को देखा नहीं या उनसे प्रत्यक्ष दीक्षा नहीं ली है, ये प्रयोग तो विशेस उन्हीं के लिए है.....

मेरे स्नेही जनों अब तो गुरुवर प्रकृतिमय होकर प्रत्येक क्षण आपके साथ हैं, बस आवश्यकता है, उन्हें महसूस करने की, जानने की और उन्हें अपने रोम रोम मे, रक्त के प्रत्येक कण मे समाहित करने की,क्योंकि यही तो शिष्य का समर्पण है, और जहाँ समर्पण है वहां दूरी कहां? वहां तो बस गुरु और शिष्य ही होता है, और कुछ नहीं..............

भाइयों सदगुरुदेव जानते थे कि एक समय आएगा जब,आवश्यकता होगी समाज को, और भटकती हुई हैरान और परेशान,ज्ञान की प्यास लिए नई पीढ़ी को. और तब यही ज्ञान कम आएगा......

भाइयों ये सच भी है की उन्होंने इतना ज्ञान इतने ग्रन्थ हमारे लिए रख छोड़ा है कि हमें कहीं और भटकने की जरुरत ही नहीं है.......

अरे मै तो उपहार की बात कर रही थी तो ये छोटी सी उपहार स्वरूप साधना.........

गुरु प्राण व रक्त कण-कण स्थापन प्रयोग:-

जैसा कि नाम से ही पता चलता है गुरु को प्राणों में रक्त मे स्थापित करने की क्रिया, जो कि अति आवश्यक है..... और क्यों आवश्यक है ये जानना भी जरुरी है ....

भाइयों बहनों वर्तमान समय कि आवोहवा खान-पान सभी दूषित है जो शरीर मे विष के समान ही है . क्योंकि यही हमारे शरीर मे रक्त के रूप प्रवाहित है.

सदगुरुदेव शक्तिपात क्रिया के द्वारा रक्त शोधित करने के बाद ही दीक्षा क्रिया संपन्न करते थे, अतः अब इसे हमें साधना के माध्यम से संपन्न करना चाहिए,

जिस प्रकार भोजन का शुद्ध परिष्कृत अमृतरूप रक्त है, उसी प्रकार वर्ष काल खंड मे रक्त का अत्यधिक परिष्कृत चेतन्य गतिमान् और अमृतरूप और सृजनकारी ऐं बीज रूप सत्वासत्व बिंदु मे परिवर्तित होता है जो निकट भविष्य मे यदि दिव्यत्व भाव से युक्त हो तो तेजश्विताप्रदायक रेतस और महा अमृतत्व रुपी ओजस मे परिवर्तित होकर उर्ध्वगति

पाता है जो हमारे जीवन कि दिव्यता, उर्ध्वगामिता का आधार है. अतः यदि हम हमारी धमनियों मे प्रारंभ से ही ऐसा रक्त प्रवाहित हो तो निश्चित ही आगे आने समय मे हम कई चीजों से निश्चिन्त होकर दीर्घ ही नहीं अपितु कई दिव्य साधनाएं संपन्न कर सकते

हैं,**गुरुतत्व** आधार है हमारे जीवन का,हमारे परिष्कृत स्वरुप का,तब ना तो कोई स्वप्न दोष ही होता और ना ही कोई स्खलन का भय,फिर चाहे वो शारीरिक स्खलन हो,मानसिक हो या चारित्रिक.

प्रयोग-विधि:-

किसी भी गुरुवार या रविवार को महेंद्रकाल में स्नान कर पीले या सफ़ेद वस्त्र धारण कर पीले या सफ़ेद ही आसन पर पूर्व या उत्तर दिशा की ओर मुंह कर बैठ जाएँ,बाजोट पर गुरु चित्र स्थापित हो,दैनिक गुरु पूजन के अनुसार गुरु पूजन और गणपति पूजन कर गुरु मंत्र की ४ माला संपन्न करें.तत्पश्चात निम्न मंत्र की ५१ माला मंत्र जप गुरु माला से करें.

ॐ परम तत्वं ॐ

ये क्रिया ३ दिनों तक करना है.वस्तुतः ये परम तत्व को पूर्ण रूपेण रक्त के कण कण मे स्थापन करने की क्रिया है.स्वभावतः क्रिया की पूर्णता और एकाग्रता के साथ साथ

साधक को स्वयं ही परिवर्तन का अनुभव होता ही है..... इस साधना का सबसे बड़ा चमत्कार यही कहा जा सकता है की साधक को स्वयं ही एक अनिवर्चनीय आनंद की अनुभूति होती रहती है और उसका समर्पण गुरु चरणों के प्रति दिन ब दिन बढते जाता है. यदि नित्य इसी मंत्र को साधक १ वर्ष तक नित्य ११ माला करता है तो उसे ब्रह्म बर्चस्व सिद्धि की प्राप्ति और देवताओं के सामान बाल तथा शाप और वरदान देने की क्षमता प्राप्त हो जाती है.

GARBHASTH SHISHU CHETNA PRAYOG

Jai Sadgurudev,
In present times, this Mantra and procedure is very much required because orientation and direction of our future generation has changed………..nobody knows in which direction our younger generation is heading towards….?

Every day after reading accidents in news and newspapers, it seem that more the society is progressing in field of science, more it is getting degraded in samskars…….Probably this fact would have been considered by Gurudev and he provided these mantra to his disciples after accumulating them from universe so that coming generations can be educated and trained in a particular manner….

Brothers and sisters, I have seen the effect of Chetna Mantra physically, not only in my house rather there are so many sisters of mine who are thankful to Gurudev after seeing the growth of their children…

All of us know that lady is said to be complete only after becoming mother. I have heard about speciality of these mantras in shivirs and from Gurudev ji. But I was very unfortunate that when I needed this initiation and mantra, he had already went to Siddhashram ………I was feeling very disappointed that how will I provide consciousness to my children? And the most important fact was that Nikhil Ji had

gone outside for his sadhna……But In third month of my pregnancy, Nikhil Ji got a direction to return back home and provide Chetna mantra to child. Then Nikhil Ji performed one special procedure.

Brothers and sisters , it was a very special procedure seeing which I was astonished and along with it, he gave me Chetna Mantra for reading and listening…….I not only read those mantras for 9 months but performed various sadhnas too because I have heard from Sadgurudev Ji that during pregnancy, child has got a direct relation with her mother and whatever mother listens, reads or sees, he keeps on learning it….

Along with making a child conscious, it completely secures the womb as well as child and I saw that….

My son Bobby was born in first week of 11th month and from the first day he was very much awakened (conscious). His activities were not like any ordinary child……….most important thing was that my body was poisoned and doctor told that only one of them can be saved, either mother or child…….. But when he was born, he was completely healthy……But for saving me, Gurudev has to come. I saw him even while getting unconscious… :)

Brothers and sisters, I am not alone who has attained the grace of Gurudev Ji. There are so many sisters of mine who have got diverse experiences. I am sharing my experiences with you all so that you can understand the sadhnas of these mantra and their related procedures

----

Brothers and sisters, Sadgurudev has put restriction on this cassette because often Gurudev used to attain mantra from nature for progress and benefit of us and provide them to us…..Since no difference remained between Guru and Mantra at that time, therefore, Gurudev has put restriction on such initiations and mantras.

Brothers and sisters, my both sons are very intelligent and there is no need for me to give proof for it: it is self-evident……Sadgurudev hastold many qualities of this mantra, most important of which are--------

This mantra is divine, unparalleled and capable of providing high-quality Child.

Those ladies who are facing problem to conceive, they get appropriate benefits from its recitation and hearing….

If any obstacle is coming in way of girl's marriage, then they should recite these mantras with dedication, all obstacles vanish and they get married….

The way this mantra is fruitful for ladies and girls, it is also beneficial for males and boys……because through this, they can attain excellence and completeness in education. Due to effect of these mantras, divinity and glow appears on their face.

In this manner, this mantra is very useful for ladies, girls, boys and elders since due to it, heart, life and body of person becomes conscious.

If any elder desire for salvation or have desire to meet almighty, then these mantra fulfil their desire…..On one instance Gurudev told that these mantra have been called as Vishwamantra (Mantra for world). They have also been called "Vishwetmaam", "Vishwdevaatmaam"and "Brahmandaatmaam"

Brothers and sisters, Sadgurudev has told that these mantras divine and very much secretive.In his own words" I have kept these mantra hidden till now and have not made them public because donation to any ineligible person degrades the glory of donation. If any ordinary person is given a precious diamond then he can't understand its value and importance"

Now I am explaining those mantras which are formed by nature. They are formed neither by Devtas, nor by Yakshas, nor by Gandharvas, nor by Kinnars, nor by humans, nor by sages. They are formed on their own and are divine and full of consciousness--------

Brothers and sisters, the one who is able to comprehend these words, these mantras will benefit him completely…….:)

Sadgurudev has said on one instance that "I am reciting these mantras in basic voice because along with mantra, voice is very important and essential element. And it should be recited in the same sound as formed by nature"

But now it is need the most because what is required today is new guidance, new consciousness which is nothing but knowledge given by Sadgurudev through which we will carry forward this work…..Isn't it :)

Brothers and sisters, just think if we want to attain this cassette now then which Gurudham …..?

And what is guarantee that it is cassette having basic sound?

And this is the reason due to which Gurudev made us do its related procedure in Shivir.

In morning, take bath, wear clean dress and sit on aasan. Perform the complete poojan of Lord Ganpati.

Now perform Guru Poojan and seek his permission and blessings…….

Now meditating on Gurudev completely…….since it establishes a complete relation between mantra, Guru and listener/sadhak/reader.

Brothers and sister, one important thing that you have to daily read slokas given in **"Dhayan Dhaarna and Samadhi "** book before and after this mantra because then only Sadgurudev can appear in Nikhileshwaranand form and provide you Chetna initiation and can enter your body, Praan and seven chakras along with Chetna Mantra…..

Those mantras are as follows:

Poornaam Parevaam Madvam Gururvai Chaitnyam Roopam Dhaaram Dharesham GururvaiSataamDeerghMadaivTulyamGururvaiPranmyamGururvaiPranmyam

Achintay Roopam Avikalp Roopam Bramha Swaroopam Vishnu Swaroopam Rudraatvemev Partam Parbrahma Roopam Gururvai Pranmyam Gururvai Pranmyam
He Aadidevam Prabhavam Pareshaam Avichintay Roopam Hridyasth Roopam BrahmaandRoopamParmamPranitamPrameyamGururvaiPranmyamGururvaiPranmyam
Hridyam Tvamevam Praanam Tvamevam Devam Tvamevam Gyaanam Tvamevam Chaitanya Roopam Maparam Tahidevam Nityam Gururvai Pranmyam Gururvai Pranmyam
Anaadi Akalper Yvaam Poorn Nityam Ajanmaam Agochar Adirvaam Adeyam Adaivaamsari Poorn Madaiv Roopam Gururvai Pranmyam Gururvai Pranmyam

Along with these five slokas, five more special slokas should be recited so that revered "Gurudev Shri Nikhileshwaranand" can manifest himself in Guru form completely and provide Chetna Diksha too, whereby chetna mantra can be established in your body….
Aadovadaanam ParmamSadeham Praan Prmeyam Parsamprabhootam Purushotmaam Poorn MadaivRoopamNikhileshwaroyam Pranmam Namaami
Ahirgoot Roopam Siddhaashramoyam Poornasv Roopam Chaitnya Roopam DeerghoVataam Poorn Madaiv Nityam Nikhileshwaroyam Pranmam Namaami
Brahmaandmevam Gyaanarnvaapam Siddhaashramoyam Savitam Sadeyam Ajanmam PravaamPoorn Madaiv Chityam Nikhileshwaroyam Pranmam Namaami
Gururvai Tvamevam Praan Tvamevam Aatm Tvamevam Shreshth Tvamevam Aavirbhy Poorn Madaiv Roopam Nikhileshwaroyam Pranmam Namaami
Pranmayam Pranmayam Pranmayam Pareshaam Pranmayam Pranmayam Pranmayam Viveshaam
Pranmayam Pranmayam Pranmayam Sureshaam Nikhileshwaroyam Pranmam Namaami

Now I am explaining the sadhna done by me……
In morning, get up between 4:00 a.m. and 5:00 a.m., wear clean dress and sit on aasan. Perform Guru and Ganpati poojan and read the related slokas 5 times. Thereafter, chant 11 rounds of below mantra by Crystal rosary and again read those slokas 5 times……

POORVAAM PARAM POORNTAAM POORVESAAM CHAITANY ROOPAM SAH CHAITANYTA POORVA AATHARMYAANAM SHRIYAM CH SIDDHIH |

After completion of chanting, sit on the same aasan and give your mind a feeling that divinity and consciousness is getting imbibed inside you….
Brothers and sisters, pregnant ladies have to do this sadhna for complete 9 months but if any male or boy or girl does this sadhna, then it is 11 day sadhna……:) . And

if one wants to attain complete benefits from this sadhna then take it seriously and do it seriously……
And now get ready to grasp the energy, consciousness and energy of this divine and secretive sadhna……:)
==

जय सदगुरुदेव ,

वर्तमान समय मे इस मंत्र और इस क्रिया की अति आवश्यकता है, क्योंकि हमारी आने वाली पीढ़ी की दिशा ही बदल गयी..... जाने किस दिशा की ओर बढ़ रही है युवा पीढ़ी------- ?

प्रतिदिन न्यूज़ मे, पेपर मे , दुर्घटनाएं पढ पढकर यही लगता है की समाज जितनी तरक्की साइंस मे कर रहा है, उतना ही संस्कारों मे पिछड़ता जा रहा है....... शायद इस बात को ही ध्यान मे रखकर गुरुदेव ने इन मंत्रो को ब्रम्हांड से एकत्रित कर शिष्यों को प्रदान किया जिससे कि आने वाली पीढ़ी को इस तरह ही शिक्षित किया जा सके........

भाइयों-बहनों मै चेतानामंत्र के प्रभाव् को प्रत्यक्ष देख चुकी हूं, अपने घर मे नहीं अपितु और भी मेरी कई बहनें है जो अपने बच्चों को देखा कर कृतज्ञ हैं गुरुदेव के प्रति.......

ये सब जानते हैं कि प्रत्येक स्त्री तब ही पूर्णता पाती है जब उसे माँ बनने का सौभाग्य प्राप्त होता है. मैएने शिविरों और गुरुदेव जी इन मंत्रो कि विशेसता सुनी थी,किन्तु मेरा दुर्भाग्य कि जब मुझे ये दीक्षा और मन्त्र कि आवश्यकता थी तब ही बाबा का सिधाश्रम प्रस्थान हो गया-------- मुझे बड़ी निराशा हो रही थी कि अब मेरे बच्चों कैसे मै ये चेतना प्रदान करूँ ? और सबसे बड़ी बात निखिलजी भी अपनी साधना हेतु बाहर गए हुए थे...... किन्तु तीसरे मंथ मे ही निखिलजी को आदेश हुआ कि घर वापिस जाओ और बच्चे को चेतना मंत्र प्रदान करो और तब निखिल जी ने एक विशिष्ट प्रक्रिया संपन्न की .

भाइयों-बहनों ये अति विशिष्ट क्रिया थी जिसे देखकर हैरान थी, और साथ ही मुझे चेतना सुनने, पढ़ने हेतु दिया...... मैने पूरे नौ महीने तक ना केवल इन मन्त्रों पड़ा बल्कि और भी अलग-अलग साधनाएं संपन्न की क्योंकि मैने कुछ सदगुरुदेव से सुना था की स्त्री के गर्भधारण के पश्चात माँ का बच्चे से सीधा सम्बन्ध होता है और जो कुछ भी माँ सुनती पढ़ती या देखती है व सीखता जाता है.......

ये मन्त्र बच्चे को चैतन्य करने के साथ ही गर्भ को भी पूर्ण सुरक्षित रखते हुए बच्चे को भी सुरक्षित रखता है और ये देखा.....

मेरा बेटा बॉबी पूरे ११वे माह के पहले सप्ताह मे हुआ, और पहले दिन से ही ये कुछ ज्यादा ही चैतन्य था, इसके क्रिया कलाप एक सामान्य बालक जैसे नहीं थे......सबसे बड़ी बात मेरे शरीर मे जहर बन गया था और डॉक्टर ने कह दिया था कि या तो बच्चा बचेगा या माँ ....किन्तु जब इसका जन्म हुआ तो ये पूर्ण स्वस्थ था......परन्तु मुझे बचाने के लिए गुरुदेव को आना पड़ा, जिसे मैंने बेहोश होते होते भी देख लिया था-----

भाइयो-बहनों मै अकेली नहीं हूं जिसे गुरुदेवजी की कृपा प्राप्त हुई. मेरे साथ की कई बहनें हैं जिन्हें अलग-अलग अनुभव प्राप्त हुए हैं. मै अपने सारे अनुभव आप सबके साथ इसलिए बाँट रही हूँ क्योंकि आप सब मंत्रो का साधनाओं का और उनसे सम्बंधित

क्रियाएँ, प्रतिबन्धन, नियम को समझ सको----------------

भाइयों-बहनों इस कैसेट पर सदगुरुदेव ने इसलिए प्रतिबन्ध लगाया था क्योंकि अक्सर गुरुदेव हम शिष्यों कि उन्नति हेतु, लाभ हेतु प्रकृतिस्थ होकर मन्त्रों को प्राप्त करते थेऔर हमे प्रदान करते थे------------ चूँकि कि मन्त्र स्वयं गुरु और गुरुदेव स्वयं मन्त्र बन जाते थे इसलिए गुरुदेव ने ऐसी अनेक दीक्षा और मन्त्रों पर प्रतिबन्ध लगाया हुआ था......

भाइयों बहनों मेरे दोनों पुत्र अत्यंत मेधावी हैं और इसका प्रमाण मुझे देने कि आवश्यकता नहीं है.......: सदगुरुदेवजी ने इस मन्त्र कि अनेक विशेषताएं बताई हैं, जिनमें प्रमुख है ------

यह मंत्र उच्चकोटि का संतान प्रदाता है,अलौकिक और अद्वितीय है,

जिन स्त्रियों को गर्भ धारण करने मे समस्या हो वो भी इसका उच्चारण या श्रवण करें तो उचित लाभ प्राप्त हो जाता है ...

जिन कन्याओं के विवाह मे बाधा आ रही हो, यदि वे पूर्ण श्रद्धाभव से इसका उच्चारण करें तो, स्वतः ही बध्दएं समाप्त होकर विवाह संपन्न हो जाता है.......

ये मंत्र जहां स्त्रियों और बालिकाओं के लिए फलदाई है वहीँ ये मन्त्र पुरुषों और बालकों के लिए भी पूर्ण लाभदायक है..... क्योंकिं इनके माध्यम से वे शिक्षा मे श्रेष्ठता और पूर्णता प्राप्त कर सकते हैं, इन मंत्रो के प्रभाव स्वरुप उनके चेहरे पर दिव्यता और तेजश्विता दिखाई देने लगती है इस तरह ये मन्त्र पुरुषों के लिए, स्त्रियों के लिए, बालिकाओं के लिए, बालकों के लिए और वृद्धों के लिए भी बहूत ही उपयोगी है, क्योंकिं इसके माध्यम से ह्रदय के,जीवन के और शरीर के सभी तंतु चैतन्य हो जाते हैं.

ऐंसे बुजुर्ग यदि मोक्ष कि इच्छा रखते हों, या प्रभु दर्शन के आकांक्षी हों तो उनकी ये इच्छा ये मन्त्र पूर्ण करते ही हैं..... भाइयों एक बार "गुरुवर ने बताया था कि इन मन्त्रों विश्वमन्त्र कहा गया है इन्हें "**विश्वेत्मामं", "विश्वदेवात्मामं**", और ब्रह्मंडात्मामं कहा गया है.
भाइयों बहनों सदगुरुदेव ने कहा है ये मन्त्र अलौकिक हैं, अत्यंत गोपनीय है, और उनके ही शब्दों मे "मैंने इन मंत्रो को अभी तक गोपनीय रखा है और सार्वजानिक रूप से प्रकट नहीं किया, क्योंकि अपात्र को दान देने से उस दान कि महिमा घट जाती है , यदि एक सामान्य व्यक्ति को उच्चकोटि का हीरा दे दिया जाये तो वह उसका मूल्य, उसकी महत्ता को समझ नहीं पाता ."
अब मै उन मंत्रो को स्पष्ट कर रहा हूं जो प्रकृति निर्मित है , जिनकों ना देवताओं ने बनाया है, ना यक्षों ने, ना गंधर्वों ने, ना किन्नरों ने, ना मनुष्यों ने, ना ऋषियों ने . ये स्वयंभू हैं ये जो अपने आप मे दिव्य और चेतनायुक्त हैं--------
भाइयों-बहनों गुरुदेव के इन शब्दों को समझ पायेगा ये मन्त्र उसको ही पूर्णता के साथ लाभ प्रदान करेंगे........
सदगुरुदेव ने एक जगह ये भी कहा है कि "मै इन मंत्रो का मूल ध्वनि मे उच्चारित कर रहा हूं क्योंकि मन्त्र के साथ ध्वनि अत्यंत आवश्यक और अनिवार्य तत्व है तथा इसका उच्चारण उसी ध्वनि मे किया जाये जिस ध्वनि के साथ प्रकृति ने निर्मित किया है."
किन्तु अब इसकी आवश्यकता बहुत ज्यादा है क्योंकि जरुरी है अब नए मार्गदर्शन की, नई चेतना की, जो कि सदगुरुदेव के द्वारा प्रदत्त ज्ञान ही है जिसके माध्यम से हम सब मिलकर इस कार्य को आगे बढ़ाएंगे ------ है ना
भाइयों बहनों जरा सोचिये यदि आज हम उस कैसेट को प्राप्त करना चाहें तो ---- किस गुरुधाम...... ?
और क्या गारंटी है कि वो वही कैसेट है मूल ध्वनि वाली ?
और इसी कारण गुरुदेव ने शिविर मे इसका प्रयोग करवाया था .
प्रातः स्नान कर स्वक्छ वस्त्र पहन कर आसन पर बैठ जाएँ और गणपतिजी की पूर्ण पूजा संपन्न करें.
जो कि आप सब को पता ही है
फिर गुरु पूजन करें और अनुमति एवं आशीर्वाद प्राप्त करें......

अब पूर्ण रूप गुरुदेव का ध्यान करते हुए----- क्योंकि मन्त्र, गुरु,श्रवणकर्त्ता या साधक या पाठक तीनो का एक दुसरे से पूर्ण सम्बन्ध स्थापित हो जाता है.

भाइयों-बहनों एक विशेस बात इस मन्त्र के पहले और बाद में "ध्यान धारणा और समाधि" बुक मे दिए हुए श्लोकों का नित्य पाठ करना है, क्योंकि तभी सदगुरुदेव निखिलेश्वरानन्द स्वरुप मे आकर आपको चेतना दीक्षा दे सकें और चेतना मन्त्रों के साथ समाविष्ट हो सकें....आपके शरीर मे प्राणों मे, और सातों चक्रों मे....

वे मन्त्र इस प्रकार है ......

पूर्णां परेवां मदवं गुरुर्वे चैतन्यं रूपं धारं धरेशं
गुरुर्वे सनतां दीर्घ मदैव् तुल्यम् गुरूवे प्रणम्यम् गुरूवै प्रणम्यम्
अचिन्त्य रूपं अविकल्प रूपं ब्रम्हा स्वरूपं विष्णु स्वरूपं
रुद्रात्वेमेव परतं परब्रहम रूपं गुरूवै प्रणम्यं गुरूवै प्रणम्यं
हे आदिदेवं प्रभवं परेशां अविचिंत्य रूपं हृधयस्त रूपं
ब्रहमांड रूपं परमं प्रणितं प्रमेयं गुरूवै प्रणम्यं गुरूवै प्रणम्यं
हृदयं त्वमेवं प्राणं त्वमेवं देवं त्वमेवं ज्ञानं त्वमेवं
चैतन्य रूपं मपरं तहिदेव नित्यं गुरूवै प्रणम्यं गुरूवै प्रणम्यं अनादी अकल्पमयवां पूर्ण
नित्यंअजन्मा अगोचर अदिवां अदेयम
अदेवांसरी पूर्ण मदैव् रूपं गुरुर्वे प्रणम्यं गुरुर्वे प्रणम्यं

इन पांच श्लोकों के साथ ही इन विशिष्ट पांच श्लोकों का भी जप करना चाहिए, जिन के माध्यम से पूज्य "गुरुवर श्री निखिलेश्वरानंदजी" पूर्णरूप से गुरु रूप में आपके समक्ष स्पष्ट होते हुए आपको चेतना दीक्षा भी प्रदान करें, जिससे ये चेतना मन्त्र आपके शरीर मे स्थापित हो सकें......

आदोवदानं परमं सदेहं प्राण प्रमेयम परसंप्रभूतम
पुरुशोत्मां पूर्ण मदैव रूपं निखिलेश्वरोयं प्रणमं नमामि
अहिर्गोत रूपं सिद्धाश्रमोयं पूर्नास्व रूपं चैतन्य रूपं

दिर्घो वतां पूर्ण मदैव नित्यं निखिलेश्वरोयं प्रणमं नमामि
ब्रह्माण्डमेवं ज्ञानोर्णवापं सिद्धाश्रमोयं सवितं सदेयं
अजन्मं प्रवां पूर्ण मदैव चिनत्यं निखिलेश्वरोयं प्रणमं नमामि
गुरुर्वै त्वमेवं प्राण त्वमेवं आत्म त्वमेवं श्रेष्ठ त्वमेवं
आविर्भ्य पूर्ण मदैव रूपं निखिलेश्वरोयं प्रणमं नमामि
प्रणम्यं प्रणम्यं प्रणम्यं परेशां प्रणम्यं प्रणम्यं प्रणम्यं विवेशां
प्रणम्यं प्रणम्यं प्रणम्यं सुरेशां निखिलेश्वरोयं प्रणमं नमामि

अब मै उस साधना को स्पष्ट कर रही हूं जो मैंने कि है...

प्रातः ४ से ५ बजे के बीच उठ कर स्नान कर स्वक्छ वस्त्र धारण कर आसन पर बैठ जाएँ और गुरु गणपति पूजन कर सम्बंधित श्लोकों का ५ बार पाठ करें तथा उसके बाद निम्न मन्त्र कि ११ माला स्फटिक माला से जाप करें तथा दुबारा फिर से ५ पाठ करें.......

पूर्वां परं पूर्णताम पूर्वेसां चैतन्य रूपम स:
चैतन्यता पूर्वा आथारम्यानं श्रियं च सिद्धि: |

मन्त्र जप के बाद थोड़ी देर तक उसी आसन पर बैठ कर अपने मन मे भावना करें कि आपके अंदर चैतन्यता, दिव्यता समाहित हो रही है.....
भाइयों-बहनों दरअसल ये साधना गर्भवती स्त्रियों को तो पूरे नौ माह ही करना है किन्तु यदि पुरुष या बालक या कुमारी इस साधना को करते हैं तो ११ दिन कि साधना है...... और वाकई यदि इस साधना का पूर्ण लाभ लेना है तो इसे गंभीरता से ही करें और गंभीरता से ही लें ....
और अब तैयार हो जाएँ इस दिव्य और गोपनीय साधना की उर्जा तेजस्विता चेतना को ग्रहण करने के लिए.........
"निखिल प्रणाम"

GARBHASTH SHISHU CHETNA VIDHAAN

Jai Sadgurudev,

In present times, this Mantra and procedure is very much required because orientation and direction of our future generation has changed…………nobody knows in which direction our younger generation is heading towards….?

Every day after reading accidents in news and newspapers, it seem that more the society is progressing in field of science, more it is getting degraded in samskars…….Probably this fact would have been considered by Gurudev and he provided these mantra to his disciples after accumulating them from universe so that coming generations can be educated and trained in a particular manner….

Brothers and sisters, I have seen the effect of Chetna Mantra physically, not only in my house rather there are so many sisters of mine who are thankful to Gurudev after seeing the growth of their children…

All of us know that lady is said to be complete only after becoming mother. I have heard about speciality of these mantras in shivirs and from Gurudev ji. But I was very unfortunate that when I needed this initiation and mantra, he had already went to Siddhashram ………I was feeling very disappointed that how will I provide consciousness to my children? And the most important fact was that Nikhil Ji had gone outside for his sadhna……But In third month of my pregnancy, Nikhil Ji got a direction to return back home and provide Chetna mantra to child. Then Nikhil Ji performed one special procedure.

Brothers and sisters , it was a very special procedure seeing which I was astonished and along with it, he gave me Chetna Mantra for reading and listening…….I not only read those mantras for 9 months but performed various sadhnas too because I have heard from Sadgurudev Ji that during pregnancy, child has got a direct relation with her mother and whatever mother listens, reads or sees, he keeps on learning it….

Along with making a child conscious, it completely secures the womb as well as child and I saw that….

My son Bobby was born in first week of 11th month and from the first day he was very much awakened (conscious). His activities were not like any ordinary child……….most important thing was that my body was poisoned and doctor told that only one of them can be saved, either mother or child…….. But when he was born, he was completely healthy……But for saving me, Gurudev has to come. I saw him even while getting unconscious… :)

Brothers and sisters, I am not alone who has attained the grace of Gurudev Ji. There are so many sisters of mine who have got diverse experiences. I am sharing my experiences with you all so that you can understand the sadhnas of these mantra and their related procedures

----

Brothers and sisters, Sadgurudev has put restriction on this cassette because often Gurudev used to attain mantra from nature for progress and benefit of us and provide them to us…..Since no difference remained between Guru and Mantra at that time, therefore, Gurudev has put restriction on such initiations and mantras.

Brothers and sisters, my both sons are very intelligent and there is no need for me to give proof for it: it is self-evident……Sadgurudev hastold many qualities of this mantra, most important of which are--------

This mantra is divine, unparalleled and capable of providing high-quality Child.

Those ladies who are facing problem to conceive, they get appropriate benefits from its recitation and hearing….

If any obstacle is coming in way of girl’s marriage, then they should recite these mantras with dedication, all obstacles vanish and they get married….

The way this mantra is fruitful for ladies and girls, it is also beneficial for males and boys……because through this, they can attain excellence and completeness in education. Due to effect of these mantras, divinity and glow appears on their face. In this manner, this mantra is very useful for ladies, girls, boys and elders since due to it, heart, life and body of person becomes conscious.

If any elder desire for salvation or have desire to meet almighty, then these mantra fulfil their desire…..On one instance Gurudev told that these mantra have been called as Vishwamantra (Mantra for world). They have also been called “Vishwetmaam”, “Vishwdevaatmaam”and “Brahmandaatmaam”

Brothers and sisters, Sadgurudev has told that these mantras divine and very much secretive.In his own words “ I have kept these mantra hidden till now and have not made them public because donation to any ineligible person degrades the glory of donation. If any ordinary person is given a precious diamond then he can’t understand its value and importance”

Now I am explaining those mantras which are formed by nature. They are formed neither by Devtas, nor by Yakshas, nor by Gandharvas, nor by Kinnars, nor by humans, nor by sages. They are formed on their own and are divine and full of consciousness--------

Brothers and sisters, the one who is able to comprehend these words, these mantras will benefit him completely…….:)

Sadgurudev has said on one instance that “I am reciting these mantras in basic voice because along with mantra, voice is very important and essential element. And it should be recited in the same sound as formed by nature”

But now it is need the most because what is required today is new guidance, new consciousness which is

nothing but knowledge given by Sadgurudev through which we will carry forward this work…..Isn't it :)

Brothers and sisters, just think if we want to attain this cassette now then which Gurudham …..?

And what is guarantee that it is cassette having basic sound?

And this is the reason due to which Gurudev made us do its related procedure in Shivir.

In morning, take bath, wear clean dress and sit on aasan. Perform the complete poojan of Lord Ganpati.

Now perform Guru Poojan and seek his permission and blessings…….

Now meditating on Gurudev completely…….since it establishes a complete relation between mantra, Guru and listener/sadhak/reader.

Brothers and sister, one important thing that you have to daily read slokas given in "Dhayan Dhaarna and Samadhi " book before and after this mantra because then only Sadgurudev can appear in Nikhileshwaranand form and provide you Chetna initiation and can enter your body, Praan and seven chakras along with Chetna Mantra…..

Now I am explaining the sadhna done by me……

In morning, get up between 4:00 a.m. and 5:00 a.m., wear clean dress and sit on aasan. Perform Guru and Ganpati poojan and read the related slokas 5 times. Thereafter, chant 11 rounds of below mantra by Crystal rosary and again read those slokas 5 times……

POORVAAM PARAM POORNTAAM POORVESAAM CHAITANY ROOPAM SAH

CHAITANYTA POORVA AATHARMYAANAM SHRIYAM CH SIDDHIH

After completion of chanting, sit on the same aasan and give your mind a feeling that divinity and consciousness is getting imbibed inside you….

Brothers and sisters, pregnant ladies have to do this sadhna for complete 9 months but if any male or boy or girl does this sadhna, then it is 11 day sadhna……:) . And if one wants to attain complete benefits from this sadhna then take it seriously and do it seriously……

And now get ready to grasp the energy, consciousness and energy of this divine and secretive sadhna……:)
==

जय सगुरुदेव,

वर्तमान समय मे इस मंत्र और इस क्रिया की अति आवश्यकता है, क्योंकि हमारी आने वाली पीढ़ी की दिशा ही बदल गयी….. जाने किस दिशा की ओर बढ़ रही है युवा पीढ़ी------- ?

प्रतिदन न्यूज़ मे, पेपर मे , दुर्घटनाएं पढ पढकर यही लगता है की समाज जितनी तरक्की साइंस मे कर रहा है, उतना ही संस्कारों मे पिछड़ता जा रहा है……. शायद इस

बात को ही ध्यान मे रखकर गुरुदेव ने इन मंत्रो को ब्रम्हांड से एकत्रित कर शिष्यों को प्रदान किया जिससे कि आने वाली पीढ़ी को इस तरह ही शिक्षित किया जा सके........

भाइयों-बहनों मै चेतानामंत्र के प्रभाव् को प्रत्यक्ष देख चुकी हूं,अपने घर मे नहीं अपितु और भी मेरी कई बहनें है जो अपने बच्चों को देखा कर कृतज्ञ हैं गुरुदेव के प्रति.......

ये सब जानते हैं कि प्रत्येक स्त्री तब ही पूर्णता पाती है जब उसे माँ बनने का सौभाग्य प्राप्त होता है. मैएने शिविरों और गुरुदेव जी इन मंत्रो कि विशेसता सुनी थी,किन्तु मेरा दुर्भाग्य कि जब मुझे ये दीक्षा और मन्त्र कि आवश्यकता थी तब ही बाबा का सिधाश्रम प्रस्थान हो गया--------
मुझे बड़ी निराशा हो रही थी कि अब मेरे बच्चों कैसे मै ये चेतना प्रदान करूँ ? और सबसे बड़ी बात निखिलजी भी अपनी साधना हेतु बाहर गए हुए थे...... किन्तु तीसरे मंथ मे ही निखिलजी को आदेश हुआ कि घर वापिस जाओ और बच्चे को चेतना मंत्र प्रदान करो और तब निखिल जी ने एक विशिष्ट प्रक्रिया संपन्न की .

भाइयों-बहनों ये अति विशिष्ट क्रिया थी जिसे देखकर हैरान थी,और साथ ही मुझे चेतना सुनने, पढ़ने हेतु दिया...... मैने पूरे नौ महीने तक ना केवल इन मन्त्रों पड़ा बल्कि और भी अलग-अलग साधनाएं संपन्न की क्योंकि मैने कुछ सदगुरुदेव से सुना था की स्त्री के गर्भधारण के पश्चात माँ का बच्चे से सीधा सम्बन्ध होता है और जो कुछ भी माँ सुनती पढ़ती या देखती है व सीखता जाता है.......

ये मन्त्र बच्चे को चैतन्य करने के साथ ही गर्भ को भी पूर्ण सुरक्षित रखते हुए बच्चे को भी सुरक्षित रखता है और ये देखा.....

मेरा बेटा बॉबी पूरे ११वे माह के पहले सप्ताह मे हुआ, और पहले दिन से ही ये कुछ ज्यादा ही चैतन्य था, इसके क्रिया कलाप एक सामान्य बालक जैसे नहीं थे......सबसे बड़ी बात मेरे शरीर मे जहर बन गया था और डॉक्टर ने कह दिया था कि या तो बच्चा बचेगा या माँ.......किन्तु जब इसका जन्म हुआ तो ये पूर्ण स्वस्थ था......परन्तु मुझे बचाने के लिए गुरुदेव को आना पड़ा, जिसे मैंने बेहोश होते होते भी देख लिया था----- :)

भाइयो-बहनों मै अकेली नहीं हूं जिसे गुरुदेवजी की कृपा प्राप्त हुई.मेरे साथ की कई बहनें हैं जिन्हें अलग-अलग अनुभव प्राप्त हुए हैं. मै अपने सारे अनुभव आप सबके साथ इसलिए बाँट रही हूँ क्योंकि आप सब मंत्रो का साधनाओं का और उनसे सम्बंधित क्रियाएँ, प्रतिबन्धन, नियम को समझ सको----------------

भाइयों-बहनों इस कैसेट पर सदगुरुदेव ने इसलिए प्रतिबन्ध लगाया था क्योंकि अक्सर गुरुदेव हम शिष्यों कि उन्नति हेतु, लाभ हेतु प्रकृतिस्थ होकर मन्त्रों को प्राप्त

करते थेऔर हमे प्रदान करते थे------------ चूँकि कि मन्त्र स्वयं गुरु और गुरुदेव स्वयं मन्त्र बन जाते थे इसलिए गुरुदेव ने ऐसी अनेक दीक्षा और मन्त्रों पर प्रतिबन्ध लगाया हुआ था......

भाइयों बहनों मेरे दोनों पुत्र अत्यंत मेधावी हैं और इसका प्रमाण मुझे देने कि आवश्यकता नहीं है.......: सदगुरुदेवजी ने इस मन्त्र कि अनेक विशेषताएं बताई हैं, जिनमें प्रमुख है ------

यह मंत्र उच्चकोटि का संतान प्रदाता है,अलौकिक और अद्वितीय है,

जिन स्त्रियों को गर्भ धारण करने मे समस्या हो वो भी इसका उच्चारण या श्रवण करें तो उचित लाभ प्राप्त हो जाता है ...

जिन कन्याओं के विवाह मे बाधा आ रही हो, यदि वे पूर्ण श्रद्धाभव से इसका उच्चारण करें तो, स्वतः ही बध्दएं समाप्त होकर विवाह संपन्न हो जाता है.......

ये मंत्र जहां स्त्रियों और बालिकाओं के लिए फलदाई है वहीँ ये मन्त्र पुरुषों और बालकों के लिए भी पूर्ण लाभदायक है..... क्योंकिं इनके माध्यम से वे शिक्षा मे श्रेष्ठता और पूर्णता प्राप्त कर सकते हैं, इन मंत्रो के प्रभाव स्वरुप उनके चेहरे पर दिव्यता और तेजश्विता दिखाई देने लगती है इस तरह ये मन्त्र पुरुषों के लिए, स्त्रियों के लिए, बालिकाओं के लिए, बालकों के लिए और वृद्धों के लिए भी बहुत ही उपयोगी है, क्योंकिं इसके माध्यम से ह्रदय के, जीवन के और शरीर के सभी तंतु चैतन्य हो जाते हैं.

ऐंसे बुजुर्ग यदि मोक्ष कि इच्छा रखते हों, या प्रभु दर्शन के आकांक्षी हों तो उनकी ये इच्छा ये मन्त्र पूर्ण करते ही हैं..... भाइयों एक बार "गुरुवर ने बताया था कि इन मन्त्रों विश्वमन्त्र कहा गया है इन्हें "विश्वेत्मामं", "विश्वदेवात्मामं", और ब्रह्मंडात्मामं कहा गया है.

भाइयों बहनों सदगुरुदेव ने कहा है ये मन्त्र अलौकिक हैं, अत्यंत गोपनीय है , और उनके ही शब्दों मे "मैंने इन मंत्रो को अभी तक गोपनीय रखा है और सार्वजानिक रूप से प्रकट नहीं किया, क्योंकि अपात्र को दान देने से उस दान कि महिमा घट जाती है , यदि एक सामान्य व्यक्ति को उच्चकोटि का हीरा दे दिया जाये तो वह उसका मूल्य, उसकी महत्ता को समझ नहीं पाता ."

अब मै उन मंत्रो को स्पष्ट कर रहा हूं जो प्रकृति निर्मित है , जिनकों ना देवताओं ने बनाया है, ना यक्षों ने, ना गंधर्वों ने, ना किन्नरों ने, ना मनुष्यों ने,ना ऋषियों ने . ये स्वयंभू हैं ये जो अपने आप मे दिव्य और चेतनायुक्त हैं--------

भाइयों-बहनों गुरुदेव के इन शब्दों को समझ पायेगा ये मन्त्र उसको ही पूर्णता के साथ लाभ प्रदान करेंगे........:)

सदगुरुदेव ने एक जगह ये भी कहा है कि "मै इन मंत्रो का मूल ध्वनि मे उच्चारित कर रहा हूं क्योंकि मन्त्र के साथ ध्वनि अत्यंत आवश्यक और अनिवार्य तत्व है तथा इसका उच्चारण उसी ध्वनि मे किया जाये जिस ध्वनि के साथ प्रकृति ने निर्मित किया है."

किन्तु अब इसकी आवश्यकता बहुत ज्यादा है क्योंकि जरुरी है अब नए मार्गदर्शन की, नई चेतना की, जो कि सदगुरुदेव के द्वारा प्रदत्त ज्ञान ही है जिसके माध्यम से हम सब मिलकर इस कार्य को आगे बढ़ाएंगे ------ है ना   :)

भाइयों बहनों जरा सोचिये यदि आज हम उस कैसेट को प्राप्त करना चाहें तो ---- किस गुरुधाम...... ?

और क्या गारंटी है कि वो वही कैसेट है मूल ध्वनि वाली ?

और इसी कारण गुरुदेव ने शिविर मे इसका प्रयोग करवाया था .

प्रातः स्नान कर स्वक्छ वस्त्र पहन कर आसन पर बैठ जाएँ और गणपतिजी की पूर्ण पूजा संपन्न करें.

जो कि आप सब को पता ही है   :)

फिर गुरु पूजन करें और अनुमति एवं आशीर्वाद प्राप्त करें......

अब पूर्ण रूप गुरुदेव का ध्यान करते हुए----- क्योंकि मन्त्र, गुरु,श्रवणकर्त्ता या साधक या पाठक तीनो का एक दुसरे से पूर्ण सम्बन्ध स्थापित हो जाता है.

भाइयों-बहनों एक विशेस बात इस मन्त्र के पहले और बाद में **"ध्यान धारणा और समाधि"** बुक मे दिए हुए श्लोकों का नित्य पाठ करना है, क्योंकि तभी सदगुरुदेव निखिलेश्वरानन्द स्वरुप मे आकर आपको चेतना दीक्षा दे सकें और चेतना मन्त्रों के साथ समाविष्ट हो सकें....आपके शरीर मे प्राणों मे, और सातों चक्रों मे....

अब मै उस साधना को स्पष्ट कर रही हूं जो मैंने कि है...

प्रातः ४ से ५ बजे के बीच उठ कर स्नान कर स्व्क्छ वस्त्र धारण कर आसन पर बैठ जाएँ और गुरु गणपति पूजन कर सम्बंधित श्लोकों का ५ बार पाठ करें तथा उसके बाद निम्न मन्त्र कि ११ माला स्फटिक माला से जाप करें तथा दुबारा फिर से ५ पाठ करें.......

पूर्वां परं पूर्णताम पूर्वेसां चैतन्य रूपम स:
चैतन्यता पूर्वा आथारम्यानं श्रियं च सिद्धि: |

मन्त्र जप के बाद थोड़ी देर तक उसी आसन पर बैठ कर अपने मन मे भावना करें कि आपके अंदर चैतन्यता, दिव्यता समाहित हो रही है.....

भाइयों-बहनों दरअसल ये साधना गर्भवती स्त्रियों को तो पूरे नौ माह ही करना है किन्तु यदि पुरुष या बालक या कुमारी इस साधना को करते हैं तो ११ दिन कि साधना है...... :) और वाकई यदि इस साधना का पूर्ण लाभ लेना है तो इसे गंभीरता से ही करें और गंभीरता से ही लें ....

और अब तैयार हो जाएँ इस दिव्य और गोपनीय साधना की उर्जा तेजस्विता चेतना को ग्रहण करने के लिए.........:)

"निखिल प्रणाम"

MAYURESH STOTRA - SABHI MANOKAAMNAON KI

"Vakrtund Mahakaay Soorykoti Samprabha |
Nirvighnam Kuru Me Dev Sarv Kaaryeshu Sarvada ||"

Jai Sadgurudev
Dear Brothers and Sisters,
We as per tradition and owing to the fact that we have seen these types of procedures in daily life, we are accustomed to do them. But in accordance with shastras too, Lord Ganpati is worshipped before doing any auspicious work. Brothers and sisters, all of you know that Lord Ganpati destroys all types of obstacles, provide accomplishments in work and completeness to life in all respects.
It has been said in "Kalau Chandi Vinayako" that In Kalyuga, only Durga and Ganesh can provide complete success.
All human beings, gods and devils perform sadhna of Ganpati Ji for getting success in every work. Even Lord Shiva himself has done Ganesh sadhna and performed his work without any interruption.
Tulsidas has said in Ram Charit Maanas that----
" Jo Sunirat Siddhi Hoy , Gan Naayak Karivar Vadan |

Karau Anugrah Soi, Buddhi Raashi Shubh Gun Sadan||"
Not even in India but all sadhaks of world do Ganpati sadhna for accomplishment of their work and getting siddhis in all sadhnas…
Sadgurudev has told many procedures of accomplishing this sadhna,which include Mantric, tantric and Stotra procedures. In it, Mayuresh Stotra is also described. Though there are hundreds and thousands of Stotras related to Ganpati Ji but Mayuresh Stotra is considered the best. This mantra is completely activated in itself. Therefore, reading it provides complete success.
Mayuresh Stotra is considered best for getting rid of all type of diseases and anxiety, for peaceful family life, for getting rid of child diseases, for complete peace and for complete success and progress in every field….
This Stotra can be done by any person irrespective of their sex and age. It is auspicious if we start the day with this Stotra…..
This sadhna can be started from any of Wednesday…
1- East direction, yellow or white aasan, Ganpati idol/picture/yantra….
2- Curd, Durva (Green grass), Kush, Flower, Rice, Vermillion, Yellow mustard and Supaari. These eight things have to be taken into container and should be offered as Ardhya….
3- In absence of any article, rice can be used.
4- Ghee lamp is very important and so is offering of Modak (favourite sweet of Lord Ganesha) and Laddu (round-shaped sweet)
Sadhak should take bath in morning and sit on aasan facing east direction and meditate on Lord Ganpati.
" Sarv Sthooltnum Gajendrvadnam Lambodram
SundaramPrasyandanmdhugandhlubdhmdhupvyaaloolgandsthalam
Dantaaghaatvidaaritaareerudhireh Sindoorshobhaakar,
Vande Shailsut Ganpati Siddhipradam Kaamdam ||
Sindooraabh Trinetra Prathutarjathat Hamerddhaanstpadmerddhaanam
Dant Pashaakushesht-anddhu Rukarvilasiddhijpura Viraamam,
Baalendushautmaulli Karipativadnam Daanpuraargand-
Bhaugindra addhbhoop Bhajat Ganpati Raktvastraangraangam
Sumukhaschaika-dantascha kapilo gajakarankah |
Lambodarascha vikato vidhna-naaso vinaayakah ||
Dhumraketu ganaadhyaksho bhaalachandra gajaananah |
Dhvaada-shaitaani naamaani ya: pathech-chhrunuyaa-api ||
Vidhyaa-rambhe vivaahe cha praveshe nirgame tathaa |
Sangraame sankate chaiva vidhna-stasya naa jaayate ||
Now do Shodashaaupchaar poojan of Lord Ganpati Ji….i.e.

Aavahan, Aasan, Paadya, Ardhya, Aachmaneey, Bath, Cloth, Yagyopavit, Gandh (scent), Flower-Durva, Dhoop, Lamp, Naivedya, Eating leaf, Pradakshina and Pushpaanjali.
Thereafter, recite the below Stotra 11 or 21 times--

"Mayuresh Stotra"

Bramho Uvach

Puraanpurusham devam nanakreedakaram muda ,
Mayavinm durvibhavyam mayuresham namamyham||
Paratparam chidanandam nirvikaram hradi sthitam,
Gunatitam gunmayam mayuresham namamyham||
Srijantampaalyantam ch sanharntam nijechchhyaa,
Sarvvighanharam devam mayuresham namamyham||
Nanadaityanihantaaram nanarupani vibhratam,
Nanaayudhdharam bhaktya mayuresham namamyham||
Indradidevtavranndairabhishtutamahanirsham,
Sadsadwyakttmvyakattam mayuresham namamyham||
Sarvshaktimayam devam sarvrupdhram vibhuam,
sarvvidyapravktaaram mayuresham namamyham||
parvatinandanam shambhoranandparivardhnam ,
bhaktanandkaram nityam mayuresham namamyham||
munidhyeyammuninutam munikaamprapurkam ,
samashtivyashtirupam tavaam mayuresham namamyham||
sarvagyannihantaaram sarvgyankaram shuchim,
satygyanmayam satyam mayuresham namamyham||
anekkotibramhaandnaayakam jagdishwaram,
anantvibhvam vishnum mayuresham namamyham||

Mayuresh Uvaach

idam bramhkaram strotam sarvpapprashnam,
sarvkaampradam nranaam sarvopdravnaashnam||
karagrahgatanaam ch mochnam din saptkat,
aadhivyadhiharam chaiv bhuktimuktipradam shubham||

In this manner, you can make your life auspicious and accomplish your work without any hurdles and attain success in your spiritual lives.
This sadhna can be done on any fourth day of each Paksha or every Wednesday or daily too. You can make it as part of your daily sadhna ritual.
Isn't a very easy and simple procedure…..by the grace of Sadgurudev….

Nikhil Pranaam

**"वक्रतुंड महाकाय सूर्यकोटि समप्रभ |
निर्विघ्नं कुरु में देव सर्व कार्येशु सर्वदा ||"**

जय सदगुरुदेव,
प्रिय स्नेही स्वजन,
हम परम्परा अनुसार भी और अपने आपको चूँकि बचपन से इसी तरह की विधियां दैनिक जीवन में देखी हैं, अतः हम भी उसी पे चलने के आदि हैं, किन्तु शास्त्र सम्मत भी है कि भी शुभ कार्य के पहले भगवान गणपति का स्मरण किया जाता है.
भाइयों बहनों ये सब जानते है कि भगवान गणपति समस्त विघ्नों का नाश करने वाले,कार्यों में सिद्धि देने वाले, तथा जीवन में सभी प्रकार से पूर्णता देने वाले हैं.
"कलौ चंडी विनायको" के द्वारा कहा गया है कि कलियुग में दुर्गा और गणेश ही पूर्ण सफलता देने वाले हैं......
चाहे मानव हो, देव हो, या असुर हो सभी प्रत्येक कार्य कि सफलता हेतु गणपति जी की साधना संपन्न करते ही हैं, स्वयं भगवान शिव ने भी गणेश साधना सम्पन्न कर अपने कार्यों को को निर्विघ्न संपन्न किया है.
तुलसीदासजी ने राम चरित मानस में कहा है कि----
"जो सुमिरत सिद्धि होय, गण नायक करिवर वदन |
करउ अनुग्रह सोई, बुद्धि राशि शुभ गुण सदन ||"
भारत के ही नहीं वरन विश्व के सभी साधक अपने कार्यों और समस्त साधना में सिद्धि हेतु गणपति की साधना करते ही हैं.....
सदगुरुदेव ने इनकी साधना की अनेक विधियाँ बताई हैं, मांत्रिक भी और तांत्रिक भी साथ ही स्त्रोत भी.
उनमें से ही एक मयुरेश स्त्रोत का वर्णन भी है. यूँ तो गणपतिजी से सम्बंधित सैकड़ों, हजारों स्त्रोत हैं, किन्तु मयुरेश स्त्रोत उनमे सर्वोपरि माना गया है . यह मन्त्र अपने आप में पूर्ण चैतन्य है अतः इसका पाठ करने से ही पूर्ण सफलता की प्राप्ति होती है.
सभी प्रकार की चिंता एवं रोग, गृह बाधा में शांति हेतु, बच्चों के रोग निवारण हेतु, शुख शांति प्रत्येक क्षेत्र में पूर्ण सफलता और उन्नति के लिए मयुरेश स्त्रोत को सर्वश्रेष्ठ माना गया है......
इस स्तोत्र को सभी व्यक्ति स्त्री पुरुष, बाल-वृद्ध,युवा कोई भी कर सकता है . हमारे जीवन में यदि इस स्त्रोत के पाठ से दिन का प्रारंभ हो तो अति शुभ है.....
इस साधना को किसी भी बुधवार से प्रारम्भ कर सकते हैं....
१- पूर्व दिशा, पीला या सफ़ेद आशन, गणपति मूर्ति या चित्र या यंत्र......
२- दहीं, दूर्वा, कुशाग्र या कुश, पुष्प,अक्षत,कुम्कुम्, पीली- सरसों, और सुपारी . इन आठ वस्तुओं को एक

पात्र में लेकर अर्ध्य देना है....
३- जिन वस्तुओं या पदार्थों का अभाव हो उसके स्थान पर अक्षत का प्रयोग किया जाता है.
४- घी का दीपक अति महत्वपूर्ण है तथा मोदक या लड्डू का भोग......
साधक प्रातः स्नान कर आसन पर पूर्व दिशा की ओर मुह कर बैठ जाये, और भक्तिपूर्वक भगवान गणपति का ध्यान करें...
"सर्व स्थूलतनुम् गजेन्द्रवदनं लम्बोदरं सुन्दरम
प्रस्यन्द्न्मधुगंधलुब्धमधुपव्यालोलगंडस्थलम |
दंताघातविदारितारीरुधिरे: सिन्दुरशोभाकर,
वन्दे शैलसुत गणपति सिद्धिप्रदं कामदम ||
सिन्दुराभ त्रिनेत्र प्रथुतरजठर हमेर्दधानस्त्पदमेर्दधानम्
दंत पाशाकुशेष्ट-अन्द्धु रुकर्विलसद्विजपुरा विरामम,
बालेन्दुद्यौतमौली करिपतिवदनं दानपुरार्ग्न्ड-
भौगिन्द्रा बद्धभूप भजत गणपति रक्तवस्त्रान्गरांगम .
सुमुखश्चेक़दंतश्च कपिलो गजकर्णक:
लम्बोदरश्च विक्तो विघ्ननाशो विनायकः
धूम्रकेतु गणध्यक्षो भालचन्द्रो गजानना:
द्वादशेतानी नामानि य पठच्छ्णुयदपि |
विद्धारम्भे विवाहे च प्रवेशे निर्गमे तथा |
संग्रामे संकटे चैव विघ्नस्यतस्य ना जायते ||"
अब गणपति जी का पूर्ण षोडशोपचार पूजन करें.....अर्थात--
आवाहन, आसन, पाद्धय, अर्ध्य, आचमनीय, स्नान, वस्त्र, यज्ञोपवित, गंध, पुष्प-दूर्वा, धूप, दीप, नेवैद्ध, ताम्बूल, प्रदक्षिणा और पुष्पांजलि.
तत्पश्चात निम्न स्त्रोत का भक्तिपूर्ण ११ या २१ पाठ करें-----

"मयुरेश स्त्रोत"

ब्रह्मोवाच

पुराणपुरुषं देवं नानाक्रीडाकरं मुदा।
मायाविनं दुर्विभाव्यं मयूरेशं नमाम्यहम्॥

परात्परं चिदानन्दं निर्विकारं हृदि स्थितम्।
गुणातीतं गुणमयं मयूरेशं नमाम्यहम्॥

सृजन्तं पालयन्तं च संहरन्तं निजेच्छया।

सर्वविघ्नहरं देवं मयूरेशं नमाम्यहम्॥

नानादैत्यनिहन्तारं नानारूपाणि विभ्रतम्।
नानायुधधरं भक्त्या मयूरेशं नमाम्यहम्॥

इन्द्रादिदेवतावृन्दैरभिष्टुतमहर्निशम्।
सदसद्व्यक्तमव्यक्तं मयूरेशं नमाम्यहम्॥

सर्वशक्तिमयं देवं सर्वरूपधरं विभुम्।
सर्वविद्याप्रवक्तारं मयूरेशं नमाम्यहम्॥

पार्वतीनन्दनं शम्भोरानन्दपरिवर्धनम्।
भक्तानन्दकरं नित्यं मयूरेशं नमाम्यहम्॥

मुनिध्येयं मुनिनुतं मुनिकामप्रपूरकम्।
समाष्टिव्यष्टिरूपं त्वां मयूरेशं नमाम्यहम्॥

सर्वाज्ञाननिहन्तारं सर्वज्ञानकरं शुचिम्।
सत्यज्ञानमयं सत्यं मयूरेशं नमाम्यहम्॥

अनेककोटिब्रह्माण्डनायकं जगदीश्वरम्।
अनन्तविभवं विष्णुं मयूरेशं नमाम्यहम्॥

मयूरेश उवाच

इदं ब्रह्मकरं स्तोत्रं सर्वपापप्रनाशनम्।
सर्वकामप्रदं नृणां सर्वोपद्रवनाशनम्॥

कारागृहगतानां च मोचनं दिनसप्तकात्।
आधिव्याधिहरं चैव भुक्तिमुक्तिप्रदं शुभम्॥

इस तरह आप अपने जीवन में शुभता लाकर, निर्विघ्न हो, कार्यों को संपन्न कर सकते हैं, और अपने साधनात्मक जीवन में भी सफलता प्राप्त कर सकते हैं .
इस साधना को आप प्रत्येक पक्ष की चतुर्थी, या प्रत्येक बुधवार या प्रतिदिन भी कर सकते हैं, इसे आप

अपने दैनिक साधना विधान में भी सामिल कर सकते हैं........
तो है ना अति सरल एवं सहज विधान....... सदगुरुदेव के आशीर्वादस्वरुप वरदान.......

निखिल प्रणाम

****रजनी निखिल****

****NPRU****

Posted by Nikhil at 10:31 PM No comments: Links to this post
Labels: GANPATI SADHNA

MONDAY, MARCH 4, 2013

UCHCHHISHTH VINAAYAK KALPOKT PRAYOG

Each and every person wants to learn the art of living life with perfection and attain pleasures and happiness in life. Every person has dream to fulfil the desire which he has dreamed of. He wants to attain wealth, prosperity and luxury so as to gain all happiness in life and beautify his life. But how all this can be possible. Certainly, fate and law of Karma play a very crucial role in determining the type of life being lived by person. Many types of defects of our current and past lives always dominate us which has definite repercussions on our life patterns. As a result, we see two categories of people surrounding us, one who completely experience all pleasure in life and others who strive hard for it. There is no doubt in the fact that

nothing is possible without hard-work but as it has been said luck has an important role to play in our lives. If even after working hard and after trying again and again and going through various struggles, person does not get results, he is compelled to accept role of luck. But it is situation which can be overcome but for it we have to look back at knowledge of our ancestors. From ancient times, our ancestors, sages and saints have accepted unanimously that there may be limits to capability of human power or will power .But in such cases; person can get assistance of divine powers. If we are incapable to do any work, then we can attain the power by doing sadhna of god and goddess and attain success in our work. And in this context science behind tantra says that a certain procedure gives birth to certain power which helps us to attain a fixed result. In ancient times, there were lot of scriptures available which contained many types of rare procedures related to tantra sadhna which become obsolete with passage of time. One of such amazing scripture was 'Uchchhishth Vinayak Kalp Tantra'. This scripture is collection of rare sadhnas related to Lord Vinayak. In this scripture, some special mantra related to Lord Uchchhishth Vinayak have been told. But procedure related to them was known only to accomplished Siddhs of Gaanpatya sect only. Therefore getting those procedures is very difficult. In this scripture, sadhna mantras related to attainment of good-luck, luxury attainment, attraction and various other necessary aspects of life have been told. This scripture has been appreciated by Siddhs. But with passage of time, this great scripture became obsolete and procedure related to this mantra was not available.

Procedure given here is related to Mantra excerpted from Uchchhishth Vinayak Kalp Tantra which is very easy and can be done by any sadhak. It is related to attainment of wealth. In Fact, this procedure may seem very simple but it is highly intense procedure which can provide solution to so many problems of sadhak's life to him.

Through this procedure, sadhak gets resolution from any property related problem. It is seen sometimes that no type of construction can be done on property or problem are faced while selling the property. For such problems and attainment of wealth through property, this procedure is the best.

If person's money is struck somewhere, then sadhak should definitely do this procedure so that he can resolve the obstacles due to which money has stopped.

Along with it, attainment of wealth and financial development through progress in business and promotion in work-filed or job happens through this procedure. It is an intense procedure related to Lord Vinayak so how can any type of problem remain in sadhak's life.

Sadhak can do this procedure on fourteenth day of Shukl paksha of any month. Sadhak can do this procedure in day or night.

First of all, sadhak should take bath and sit in red aasan facing North direction. Sadhak should eat something sweet and do this procedure without drinking water and without washing his face. This is necessary activity to be followed for this procedure.

After it, sadhak should spread red cloth on wooden plank (Baajot) in front of him. Make heap of vermillion-coloured rice on it. Establish**pure and energised Parad Ganpati** on that heap. In absence of Parad Ganpati, sadhak should establish Red Sandal Ganpati or Swetark Ganpati or any other energised Ganpati idol and do the procedure.

Sadhak should then perform poojan of Guru and Ganpati Idol. Sadhak should offer saffron Kheer as Bhog. After poojan, sadhak should chant Guru Mantra. After chanting sadhak should perform Nyas procedure.

KAR NYAAS
KSHAAM ANGUSHTHAABHYAAM NAMAH
KSHEEM TARJANIBHYAAM NAMAH
HREEM SARVANANDMAYI MADHYMABHYAAM NAMAH
HOOM ANAAMIKAABHYAAM NAMAH
KOM KANISHTKABHYAAM NAMAH
KAIM KARTAL KARPRISHTHAABHYAAM NAMAH

HRIDYAADI NYAAS
KSHAAM HRIDYAAY NAMAH
KSHEEM SHIRSE SWAHA
HREEM SHIKHAYAI VASHAT

HOOM KAVACHHAAY HUM
KOM NAITRTRYAAY VAUSHAT
KAIM ASTRAAY PHAT

After Nyas, sadhak should chant 21 rounds of below mantra while meditating on Shri Vinayak. Sadhak can use red sandal or Moonga rosary for chanting.

OM KSHAAMKSHEEM HREEM HOOM KOM KAIM PHAT SWAHA

After completion of chanting, Sadhak should ignite fire and offer 108 oblations by this mantra. These oblations should be of saw-dust of red sandal. After offering oblation, sadhak should pray with reverence and seek blessings for success in sadhna. In this manner, this procedure is completed in one day; sadhak should accept the Bhog himself.

==================================

जीवन में सुख भोग की प्राप्ति करना और अपने जीवन को पूर्णता से जीना यह कला निश्चय ही हर एक मनुष्य सीखना चाहता है क्यों की हर एक व्यक्ति का जीवन में यह स्वप्न रहता ही है की किसी न किसी रूप में वह अपने जीवन की उन इच्छाओ की पूर्ति करे जिसके स्वप्न उसने देखे है. या फिर जीवन में पूर्ण धन वैभव ऐश्वर्य को प्राप्त करे जिसके माध्यम से वह अप्पने जीवन में सुख को अंगीकार कर जीवन के पूर्ण मधुर रस का पान कर सके. लेकिन यह क्रिया कैसे संभव है, निश्चय ही व्यक्ति के भाग्य तथा कार्मिक द्रष्टि का इसमें बहोत ही बड़ा योगदान है की मनुष्य अपना जीवन किस प्रकार से व्यतीत कर रहा है. मौजूदा जीवन तथा विगत जीवन के कई प्रकार के दोष हम पर हमेशा हावी रहते है जिसका निश्चय ही प्रभाव पड़ता है हमारी जीवन शैली पर तथा इसी कारण से हम देखते है हमारे आस पास दो प्रकार के व्यक्तियो को श्रेणी, एक जो अपने जीवन में सुख का पूर्ण रूप से प्रत्यक्ष अनुभव करते है और दूसरे वे जो इसके लिए सतत प्रत्यनशील रहते है. निश्चय ही बिना परिश्रम के कुछ भी प्राप्ति संभव नहीं है लेकिन जैसे की कहा गया है की भाग्य की भी तो एक बहोत ही बड़ी भूमिका हमारे जीवन में होती ही है. फिर अगर परिश्रम करने पर भी बार बार कोशिश करने पर भी तथा कई कई प्रकार से संघर्षो का सामना करने पर भी अगर

परिणाम की प्राप्ति न हो पाए तो व्यक्ति बाध्य हो ही जाता है उसे भाग्य की गति मानने के लिए. लेकिन यह तो एक प्रकार से अल्पविराम की स्थिति है जहां से आगे जाया जा सकता है लेकिन उसके लिए हमें हमारे पूर्वजो के ज्ञान की तरफ एक द्रष्टि डालनी होगी. आदि काल से हमारे पूर्वजो ऋषि मुनियों तथा सिद्धो ने एक स्वर में स्वीकार किया है की मनुष्य के शक्ति की सामर्थ्य की भले ही उसको सीमा दिखाई देने लगे या मनोबल भले ही सिमित हो, लेकिन एसी स्थिति में मनुष्य को देव शक्ति के द्वारा मदद प्राप्त हो सकती है. अगर किसी कार्य को करने के लिए हम असमर्थ है तो निश्चय ही हमें उन देवी देवता से साधना के माध्यम से शक्ति की प्राप्ति हो सकती है तथा कार्य की सफलता को अंगिकार किया जा सकता है. तथा इसी सबंध में तंत्र का पूर्ण यह विज्ञान भी है एक निश्चित प्रक्रिया एक निश्चित शक्ति को जन्म देता है जो की एक सुनिश्चित परिणाम की प्राप्ति करा सकती है. प्राचीनकाल में तंत्र साधना से सबंधित कई प्रकार की दुर्लभ प्रक्रियाओ से सबंधित कई ग्रन्थ प्राप्य थे जो की काल क्रम में लुप्त होते गए. ऐसा ही एक अद्भुत ग्रन्थ था ‘उच्छिष्ट विनायक कल्प तंत्र’. यह ग्रन्थ अपने आप में दुर्लभ साधनाओ जो की भगवान विनायक से सबंधित है उसका संग्रह है. इस ग्रन्थ में उच्छिष्ट विनायक देव सबंधित कुछ विशेष मंत्रो के बारे में बताया गया है, लेकिन उससे सबंधित प्रक्रिया सिर्फ गाणपत्य मत के सिद्धो को ज्ञात थी. इस लिए प्रक्रियाको प्राप्त करना अत्यधिक दुर्लभ है. इसी कल्प में सौभाग्यप्राप्ति, ऐश्वर्य प्राप्ति, आकर्षण इत्यादि जीवन के आवश्यक पक्षों से सबंधित साधना मंत्रो के बारे में बताया गया है. यह ग्रन्थ सिद्धो के मध्य प्रशंशनीय रहा है लेकिन काल क्रम में यह महान ग्रन्थ लुप्त हो गया था तथा इसके मंत्रो के सबंध में प्रक्रिया भी प्राप्त नहीं हो पा रही थी.

प्रस्तुत प्रयोग उसी उच्छिष्ट विनायक कल्प तंत्र से प्राप्त मन्त्र से सबंधित है जिसकी प्रक्रिया अत्यधिक सहज है तथा इसे कोई भी साधक कर सकता है. यह प्रयोग धन प्राप्ति के सबंध में है. वस्तुतः यह प्रयोग भले ही सामन्य प्रयोग दिखे लेकिन यह एक अत्यधिक तीव्र प्रयोग है जो की साधक को शीघ्र ही जीवन की समस्याओ का समाधान प्राप्त करा सकती है.

इस प्रयोग के माध्यम से व्यक्ति को अगर कोई सम्पति से सबंधित समस्या है तो उसका निराकरण मिलता है. कई बार यह देखा जाता है की कोई सम्पति पर किसी भी प्रकार का

निर्माण गठन आदि हो नहीं पाता है या फिर सम्पति को बेचने के लिए रखा जाता है लेकिन यह भी संभव नहीं हो पता है. इस प्रकार की समस्याओ के लिए तथा सम्पति से धन की प्राप्ति के लिए यह प्रयोग उत्तम है.

व्यक्ति का अगर कोई धन रुक गया है या फस गया है तो साधक को यह प्रयोग अवश्य करना चाहिए जिससे की जिन बाधाओं के कारण धन रुका हुआ है उससे सबंधित निराकरण साधक को मिल सके.

साथ ही साथ व्यापर वृद्धि, तथा नौकरी और कार्य क्षेत्र में पद्धोनती के माध्यम से धन प्राप्ति तथा धन का विकास तो इस प्रयोग को करने पर होता ही है क्यों की यह तो भगवान विनायक से सबंधित प्रयोग तीव्र प्रयोग है, भला किस प्रकार से फिर कोई विघ्न या बाधा साधक के जीवन में बाध्य हो सकती है.

साधक यह प्रयोग शुक्ल पक्ष की चतुर्दशी को करे. साधक यह प्रयोग दिन या रात्रि के समय कर सकता है.

साधक सर्व प्रथम स्नान कर लाल वस्त्र धारण कर लाल रंग के आसन पर बैठ जाए. साधक का मुख उत्तर दिशा की तरफ होना चाहिए. साधक को सर्व प्रथम कुछ मीठा खा ले तथा बिना पानी पिए या मुख धोए यह प्रयोग सम्प्पन करे. यह एक आवश्यक क्रिया है इस प्रयोग के लिए.

इसके बाद साधक अपने सामने लकड़ी के तख्ते पर या बाजोट पर लाल वस्त्र को बिछा दे. उस पर कुमकुम से रंगे हुवे चावल की ढेरी बनाए. उस ढेरी पर साधक **विशुद्ध एवं चैतन्य पारद गणपति** को स्थापित करे. पारद गणपति की अनुपलब्धिमें साधक को रक्त चन्दन के गणपति या स्वेतर्क गणपति या किसी भी चैतन्य गणपति विग्रह को स्थापित कर उस पर प्रयोग करना चाहिए.

साधक को इसके बाद गुरु पूजन एवं गणपति विग्रह का पूजन करना चाहिए. साधक को भोग के रूप में केसर डाली हुई खीर अर्पित करना चाहिए. पूजन के बाद साधक गुरु मन्त्र का जाप करे. जाप के बाद साधक न्यास करे.

करन्यास

क्षां अङ्गुष्ठाभ्यां नमः

क्षीं तर्जनीभ्यां नमः

ह्रीं सर्वानन्दमयि मध्यमाभ्यां नमः

हूं अनामिकाभ्यां नमः

क्रों कनिष्टकाभ्यां नमः

कैं करतल करपृष्ठाभ्यां नमः

हृदयादिन्यास

क्षां हृदयाय नमः

क्षीं शिरसे स्वाहा

ह्रीं शिखायै वषट्

हूं कवचाय हूं

क्रों नेत्रत्रयाय वौषट्

कैं अस्त्राय फट्

न्यास के बाद साधक श्रीविनायक का ध्यान कर निम्न मन्त्र की २१ माला जाप करे. यह जाप साधक रक्त चन्दन की माला से या मूंगा माला से करे.

ॐ क्षां क्षीं ह्रीं हूं कों कैं फट् स्वाहा

(OM KSHAAM KSHEEM HREEM HOOM KOM KAIM PHAT SWAHA)

जाप पूर्ण होने पर साधक इसी मन्त्र के द्वारा अग्नि प्रज्वलित कर १०८ आहुति प्रदान करे. यह आहुति साधक लाल चन्दन के बुरादे से प्रदान करे. आहुति देने के बाद साधक श्रद्धा सह प्रणाम करे तथा साधना में सफलता प्राप्ति के लिए आशीर्वाद की प्रार्थना करे. इस प्रकार एक ही दिन में यह प्रयोग पूर्ण होता है. साधक को भोग स्वयं ही ग्रहण करना चाहिए.

SWAPNESHWARI SADHNA

मनुष्य के शरीर की आतंरिक रचना बहोत ही पेचीदा है और आधुनिक विज्ञान भी इसे अभी तक पूर्ण रूप से समजने के लिए प्रयासरत है. वस्तुतः हमारे पुरातन महापुरुषों ने साधनाओ के माध्यम से ब्रम्हांड की इस जटिल संरचना को समजा था और इसके ऊपर शोधकार्य लगातार किया था जिससे की मानव जीवन पूर्ण सुखो की प्राप्ति कर सके. कालक्रम में उनकी शोध की अवलेहना कर हमने उनके निष्कर्षो को आत्मसार करने की वजाय उसे भुला दिया और इसे कई सूत्र लुप्त हो गए जो की सही अर्थो में मनुष्य जीवन की निधि कही जा सकती है. मनुष्य के अंदर का ऐसा ही एक भाग है मन. मन ऐसा भाग है जो मनुष्य को अपने आतंरिक और बाह्य ब्रम्हांड को जोड़ सकता है. क्यों की ब्रम्हांड और मन दोनों ही अनंत है. आतंरिक ब्रम्हांड की पृष्ठभूमि मन ही है क्यों की शरीर के अंदर ही सही लेकिन मन अनंत है. और आतंरिक ब्रम्हांड भी बाह्य ब्रम्हांड की तरह अनंत भूमि पर स्थित होना चाहिए इस लिए इसका पूर्ण आधार मन है. मन के भी कई प्रकार के भेद हमारे ऋषियोने कहे है उसमे से प्रमुख है, जागृत, अर्धजागृत और सुषुप्त मन. यहाँ पर एक तथ्य ध्यान देने योग्य है की आतंरिक और बाह्य ब्रम्हांड की गति समान

और नितांत है. इस लिए जो भी घटना बाह्य ब्रम्हांड में होती है वही घटना आतंरिक ब्रम्हांड में भी होती है. साधको की कोशिश यही रहती है की वह किसी युक्ति से इन दोनों ब्रम्हांड को जोड़ दे तो वह प्रकृति पर अपना आधिपत्य स्थापित कर सकता है. वह ब्रम्हांड में घटित कोई भी घटना को देख सकता है तथा उसमे हस्तक्षेप भी कर सकता है. लेकिन यह सफर बहोत ही लंबा है और साधक में धैर्य अनिवार्य होना चाहिए. लेकिन इसके अलावा इन्ही क्रमो से सबंधित कई लघु प्रयोग भी तंत्र में निहित है. स्वप्न एक एसी ही क्रिया है जो मन के माध्यम से सम्प्पन होती है. निंद्रा समय में अर्धजागृत मन क्रियावान हो कर व्यक्ति को अपनी चेतना के माध्यम से जो द्रश्य दिखता तथा अनुभव करता है वही स्वप्न है. चेतना ही वो पूल है जो आतंरिक और बाह्य ब्रम्हांड को जोडता है, मनुष्य की चेतना से सबंधित होने के कारण स्वप्न भी एक धागा है जो की इस कार्य में अपना योगदान करता है. यु इसी तथ्य को ध्यान में रख कर हमारे ऋषिमुनि तथा साधको ने इस दिशा में शोध कार्य कर ये निष्कर्ष निकला था की हर एक स्वप्न का अपना ही महत्त्व है तथा ये मात्र द्रश्य न हो कर मनुष्य के लिए संकेत होते है लेकिन इसका कई बार अर्थ स्पष्ट तो कई बार गुढ़ होता है. इसी के आधार पर स्वप्नविज्ञान, स्वप्न ज्योतिष, स्वप्न तंत्र आदि स्वतंत्र शाखाओ का निर्माण हुआ. स्वप्न तंत्र के अंतर्गत कई प्रकार की साधना है जिनमे स्वप्नों के माध्यम से कार्यसिद्ध किये जाते है. इस तंत्र में मुख्य देव स्वप्नेश्वर है तथा देवी स्वप्नेश्वरी. देवी स्वप्नेश्वरी से सबंधित कई इसे प्रयोग है जिससे व्यक्ति स्वप्न में अपने प्रश्नों का उत्तर प्राप्त कर सकता है. व्यक्ति के लिए यह एक नितांत आवश्यक प्रयोग है क्यों की जीवन में आने वाले कई प्रश्न ऐसे होते है जो की बहोत ही महत्वपूर्ण होते है लेकिन उसका जवाब नहीं मिलने पर जीवन कष्टमय हो जाता है. लेकिन तंत्र में ऐसे विधान है जिससे की स्वप्न के माध्यम से अपने किसी भी प्रकार के प्रश्नों का समाधान प्राप्त हो सकता है. ऐसा ही एक सरल और गोपनीय विधान है देवी स्वप्नेश्वरी के सबंध में. अन्य प्रयोगों की अपेक्षा यह प्रयोग सरल और तीव्र है.

इस साधना को साधक किसी भी सोमवार की रात्रिकाल में ११ बजे के बाद शुरू करे.

साधक के वस्त्र आसान वगेरा सफ़ेद रहे. दिशा उत्तर.

साधक को अपने सामने सफ़ेदवस्त्रों को धारण किये हुए देवी स्वप्नेश्वरी का चित्र या यन्त्र स्थापित करना चाहिए. अगर ये उपलब्ध ना हो तो सफ़ेद वस्त्र माला को धारण किये हुए अंत्यंत ही सुन्दर और प्रकाश तथा दिव्य आभा से युक्त चतुर्भुजा शक्ति का ध्यान कर के अपने प्रश्न का उतर देने के लिए प्रार्थना करनी चाहिए. उसके बाद साधक अपने प्रश्न को साफ़ साफ़ अपने मन ही मन ३ बार दोहराए. उसके बाद मंत्र जाप प्रारंभ करे. इस साधना में ११ दिन रोज ११ माला मंत्र जाप करना चाहिए. यह मंत्रजाप सफ़ेदहकीक, स्फटिक या रुद्राक्ष की माला से किया जाना चाहिए.

ॐ स्वप्नेश्वरी स्वप्ने सर्व सत्यं कथय कथय ह्रीं श्रीं ॐ नमः

मन्त्र जाप के बाद साधक फिर से प्रश्न का तिन बार मन ही मन उच्चारण कर जितना जल्द संभव हो सो जाए. निश्चित रूप से साधक को साधना के आखरी दिन या उससे पूर्व भी स्वप्न में अपना उत्तर मिल

जाता है और समाधान प्राप्त होता है. जिस दिन उत्तर मिल जाए साधक चाहे तो साधना उसी दिन समाप्त कर सकता है. साधक को माला को सुरक्षित रख ले. भविष्य में इस प्रयोग को वापस करने के लिए इसी माला का प्रयोग किया जा सकता है.

===

Internal design of the human is very complicated and modern science is also trying to understand it completely. In fact, our ancient sages had acquired knowledge in regards of this complicated creature of the universe with medium of sadhanas and made their research ahead in this field with which human can achieve happiness. While time passed, their research work was avoided and rather than establishing it under us, we forgot it and thus much such rare knowledge became extinct which could really be termed as wealth. Inside human being one of such part is Man (mind). Mind is the part which can connect inner universe to the outer universe because universe and mind both are infinite. Base of the inner universe is mind itself because inside our body though, mind is infinite. And thus internal universe too should be based on the infinite like outer universe and thus mind is base of the same. Several types of mind also been classified by our sages among which major are conscious, sub conscious and unconscious. Here, one thing needs to be kept in mind that the speed or movement of the inner and outer universe are same and absolute. Thus whatever happens in the outer universe does also happen in inner universe too. Sadhaka always remain in practice with any method to join these both universes and control the nature. Thus, any incident of the universe could be seen and can also be modulate. But this journey is long and sadhak should have patience. But apart from this, there are several small processes related in tantra relation with this order. Dream is one of such process which is done by mind. At the time of sleep, whatever scenes are seen or felt are dreams caused with activation of semi conscious mind with help of Chetana (consciousness / sentient). Consciousness is the bridge which provides connectivity of inner and outer universe, being relation with consciousness; dreams are also threads which contribute in this process. Thus, while keeping this point in mind our sages made their research in this regards and reached to the conclusion that every dreams have their own importance and by not being just another scene, those are indications for the individuals but many times it is clear and many times it is in code. With the base of same concepts many independent branches related to this came up like dream science, dream astrology, dream tantra. There are several sadhanas which comes under swapna tantra with which tasks are accomplished with medium of the dreams. In this tantra basic god is Swapneshwar and goddess is Swapneshwari. There are many rituals related to goddess Swapneshwari with which person can have answers of their questions in dream. For human being, this is very importatnt process because there are several such questions arises which are important to be found the answer or else whole life becomes troubling. But in tantra there are such rituals with which this task could be accomplished. One of such and rare process belongs to the goddess Swapneshwari. In comparison to other process, this process is easy and acute.

This sadhana should be started after 11 in the night of any Monday.

Cloths and sitting mat should be white and colour and direction should be north.

Sadhak should establish picture or yantra of Swapneshwari wearing white cloths. If that is not available, one should meditate goddess wearing white cloths and rosaries, beautiful and surrounded with light and divine aura having four hands. After meditation one should pray to answer the question. After that sadhak should repeat his or her question in the mind 3 times clearly. In this sadhaa 11 rounds of the rosary should be done daily for 11 days. This mantra chanting could be done with white Hakeek, Sfatik or Rudraksa rosary.

Om Swapneshwari Swapne Sarv Satyam Kathay Kathay Hreem Shreem Om Namah

After mantra chanting sadhak should repeat question again three times in mind and sleep as soon as possible. For sure, sadhak receives answer of the question and solution in the dream on last day or before that in the dream. If sadhaka wish, the day on which answer is gain sadhak can stop this sadhana on same day. Sadhak should keep the rosary. In future this rosary could be used for repetition of this process.

CHARPAT NATH PRANEET-BHAGVATI DHOOMAVATI SADHNA

धूमावती एक एसी महाविद्या है जिनके बारे मे साहित्य अत्यधिक कम मात्र मे मिलता है. इस महाविद्या के साधक भी बहोत कम मिलते है. मूल रूप से इनकी साधना शत्रु स्तम्भन और नाशन के लिए की जाती है. लेकिन इस महाविद्या से सबंधित कई ऐसे प्रयोग है जिनके बारे मे व्यक्ति कभी सोच भी नहीं सकता. चरपटभंजन नाम धूमावती के उच्चकोटि के साधको के मध्य प्रचलित रहा है, चरपट भंजन को ही चरपटनाथ या चरपटीनाथ कहा गया है. चरपटनाथ ने अपने जीवन काल मे धूमावती सबंधित साधनाओ का प्रचुर अभ्यास किया था और मांत्रिक धूमावती को सिद्ध करने वाले गिने चुने व्यक्ति मे इनकी गणना होती है, वे कालजयी रहे है और आज भी वे सदेह है. उनके बारे मे ये प्रचलित है की वह किसी भी तत्व मे अपने आप को बदल सकते है चाहे वह स्थूल हो या सूक्ष्म, जैसे मनुष्य पशु पक्षी पानी अग्नि या कुछ भी. ७५०-८०० साल पहले धूमावती साधना के सबंध मे फैली भ्रान्ति को दूर करने के लिए इस महान धूमावती साधक ने कई ग्रंथो की रचना की जिसमे धूमावतीरहस्य, धूमावतीसपर्या, धूमावती पूजा पध्धति जैसे अत्यधिक रोचक ग्रंथ सामिल है. कई गुप्त तांत्रिक मठो मे आज भी यह ग्रन्थ सुरक्षित है. लेकिन यह साधना पद्धतिया लुप्त हो गयी और जन सामान्य के मध्य

कभी नहीं आई. धूमावती अलक्ष्मी होते हुए भी लक्ष्मी प्राप्ति से लेके वैभव ऐश्वर्य तथा जीवन के पूर्ण भोग प्राप्त करने के लिए भी धूमावती साधना के कई विधानों का उन्होंने प्रचार किया था. लेकिन ये साधनाओ को गुप्त रखने की पीछे का मूल चिंतन सायद तब की परिस्थिति हो या कुछ और लेकिन इससे जन सामान्य के मध्य साधको का हमेशा ही नुक्सान रहा है. चरपटभंजन ने जो कई गुप्त पध्धातियो का विकास किया था उनमे से एक साधना एसी भी थि जिसको करने से व्यक्ति अपने सामने वाले व्यक्ति के व्यक्तित्व के बारे मे कुछ भी जान लेता है. जैसे की चरित्र कैसा है, इस व्यक्ति की प्रकृति क्या है, इसके दिमाग मे इस वक्त कौनसे विचार चल रहे होंगे? इस प्रकार की साधना अत्यधिक दुस्कर है क्यों जीवन के रोज ब रोज के कार्य मे ऐसी साधनाओ से कितना और क्या विकास हो सकता है कैसे फायदा हो सकता है ये तो व्यक्ति खुद ही समज सकता है. मानसिक शक्तियो के विकास की अत्यधिक दुर्लभ साधनाओ मे यह साधना अपना एक विशेष स्थान लिए हुए है. चरपटनाथ द्वारा प्रणित धूमावती प्रयोग आप सब के मध्य रख रहा हू.

इस साधना को करने से पूर्व साधक अपने स्थान का चुनाव करे. साधक के साधना स्थल पर और आसान पर साधक की जब तक साधना चले कोई और व्यक्ति न बैठे. इस साधना मे साधक को ११ माला मंत्र जाप एक महीने (३० दिन) तक करना है. माला काले हकीक की रहे. वस्त्र काले रहे. समय रात्रि काल मे ११ बजे के बाद का हो. धूमावती का यन्त्र चित्र अपने सामने स्थापित करे. तेल का दीपक साधना समय मे जलते रहना चाहिए.
यन्त्र चित्र का पूजन कर के विनियोग करे
विनियोग: **अस्य श्री चरपटभंजन प्रणित धूमावती प्रयोगस्य पूर्ण विनियोग अभीष्ट सिद्धियर्थे करिष्यमे पूर्ण सिद्धियर्थे विनियोग नमः**

इसके बाद निम्न मंत्र का ११ माला जाप करे

ओम धूमावती करे न काम, तो अन्न हराम, जीवन तारो सुख संवारो, पुरती मम इच्छा, ऋणी दास तमारो ओम छू

मंत्र जाप के बाद साधक धूमावती देवी को ही मंत्र जाप समर्पित कर दे.
ये अत्यधिक दुर्लभ विधान सम्प्पन करने के बाद व्यक्ति यु कहा जाए की अजेय बन जाता है तो भी अतिशियोक्ति नहीं होगी.
===

Dhoomavati is one of such mahavidhya about which least literature could be obtained. The sadhak of this mahavidya is also least.Basically her sadhana is

done to prevent from enemy or to finish them. But in relation to this mahavidya there are so many such prayoga which are un-imaginable. The name 'Charpat Bhanjan" has remained famous among highly accomplished sadhak of dhoomavati, charpat bhanjan have also been named charpat nath or charpatinath. Charapat nath have studied deeply majority sadhanas of the dhumavati in his life and among few, he holds a place who accomplished mantrik dhoomavati. He has remained deathless and he is in his actual body today even. It is famous about him that he was able to transform himself in any tangible or intangible element like human, animal, water, fire or anything else. Before 750-800 years this great sadhak of dhoomavati created scriptures to remove misunderstandings related to dhoomavati including few fantastic works like dhoomavatirahashya, dhoomavatisaparya, dhoomavatipoojapadhhati. In many secret tantric places these scriptures are safe currently even but the ritual processes have gone extinct and did not come in front of general people. Though being Alakshmi there were so many processes which were made famous by him to have wealth, to generate prosperity and complete house-holding happiness. But to make these processes secret could be circumstances of that time or may be anything else but it have always been a big loss for material sadhaka. The sadhanas developed by charpat bhanjan includes one of the sadhana through which if done by a person can have a power to understand the personality of the person or to know anything about them like character, nature aur what thoughts are going on currently in that person's mind. Sadhana like this are really very rare. Because with such sadhana what development and benefit one can generate in day to day life could be understand very simply. This sadhana holds a special place in rare sadhana which are meant for the development of the mind powers. I am sharing that charpatnath pranit dhoomavati prayoga.

Before starting this sadhana, sadhak should select their place for sadhana. There should be no one to sit on the aasan or the place of sadhana till the time sadhana days are going on. In this sadhana shadhak needs to do 11

rosary of mantra daily for one month (30 days). Rosary should be black hakeek. Cloth should be black. Time should be after 11 Pm in night. Establish dhoomavati yantra and picture infront of you. Lamp of the oil should keep on burning during sadhana time. Do viniyoga after yantra and picture poojan,

Viniyog: **asy shri charapatbhanjan pranit dhoomavatee prayogasy purn viniyog abhisht siddhiyarthe karishyame purn siddhiyarthe viniyog namah**

After this chant 11 rounds of the following mantra.

Om dhoomavatee kare na kaam, to ann haraam, jivan taro sukh sanvaaro, purati mam icchha, runi daas tamaaro om chhoo

After mantra chanting offer the chantings to the goddess dhoomavati.
It is not even more if we say that after completing this rare procedure a sadhak becomes invincible.

DATTATREY AAHUT SADHNA

Lord Shri Dattatrey is one such greatest personality and powerful Dev of Tantra world and complete sadhna world whose blessing can be considered as very fortunate for sadhaks. When Mahasiddhs of Nath sects whose quantum of sadhna knowledge cannot be even guessed, they bow with reverence and pray to

embodiment of knowledge Lord Dattatrey then what can be written about lord Dattatrey?

Lord Dattatrey, having powers of Brahma, Vishnu and Mahesh was the complete master of Yog Vidya and Tantra Vidya. Taking inspiration from him, Nath Yogis created millions of Sabar Mantra in local language and propagated them to common public. Not only this,this great saint discover such prayogs by which person taking assistance of powers of Mahasiddhs and powers of Dev and Ittar Yonis can get rid of his common problems as well as reach highest spiritual level. He is ancient sadhak and propagator of aghor sadhna and present on this earth in physical body from thousands of years. His residing place is in Dutt Mountain in Girnar line of mountainsand many sadhaks have been fortunate enough to see him in physical form. From thousands of years, many Siddh Gurus from time to time provided such prayogs to their disciples by which they can get the blessings of Lord Dattatrey and attain that capability in materialistic and spiritual life. But such prayogs are were rare and available only from Guru and hence were not able to reach common public. Though there are so many hidden prayogs related to Lord Dattatrey by which sadhak can see him in physical form but these Vidhaans are very uneasy , effort-consuming and cumbersome in which sadhak has to follow a fixed life pattern for many days or months. Following such a life-pattern is generally not possible in today's era. But there is one

prayog **Dattatrey Aahut Prayog** among them which can be completed in just one night and sadhak can get darshan of Lord Dattatrey in his dreams and become witness to his grace. If sadhak is facing some problem then its resolution is also obtained by doing this prayog in which Lord Dattatrey himself provides the guidance. This special prayog is done through the means of **Parad Shivling.** When something is said about Parad then it is not an advertisement for any type of idol. Rather those who have listened discourses of Sadgurudev and understood them, they would know that completeness is only possible through Parad. Just think when final tantra i.e. Parad Tantra is used for own spiritual progress then how one can fail.....Procedure is as follows.

Sadhak can do this prayog on any auspicious day.

Sadhak can do this prayog only in night. Sadhak should take bath, wear red dress and sit on red aasan. Sadhak should face North direction.

Sadhak should do Guru Poojan and chant Guru Mantra.

Sadhak should place energised and activated Parad Shivling made form pure Parad on Baajot in front of him. Just near the Parad Shivling, he should place yantra/picture of Lord Dattatrey. Sadhak should do poojan of Lord Dattatrey yantra/picture and thereafter do the poojan of Parad Shivling.

Sadhak should ignite Guggal Dhoop while doing Poojan. Sadhak can offer anything as a Bhog.

After poojan of Parad Shivling, sadhak should chant 21 rounds of below mantra using Rudraksh Rosary.

.

OM DRAAM DRIM DRUM DATTATREYAAY SWAPNE PRAKAT PRAKAT AVATAR AVATAR NAMAH

After completion of Mantra chanting, sadhak should pray to Lord Dattatrey for his manifestation in dreams and sleep after keeping rosary beneath the pillow. In this manner, Lord Dattatrey gives darshan to sadhak in dreams in the night and answer sadhak's curiosities. Sadhak can use this rosary in future.

===

भगवान श्री दत्तात्रेय तंत्रजगत और पूर्ण साधना जगत की एक एसी महानतम विभूति तथा पूर्ण शक्ति सम्प्पन देव है जिनकी कृपा प्राप्ति साधको के मध्य एक उच्चकोटि का भाग्य ही माना जाता है. नाथ सम्प्रदाय के महासिद्ध जिनकी साधना ज्ञान की थाह पाना संभव ही नहीं है, ऐसे ब्रह्मांडीय पुरुष भी जो ज्ञानपुंज के सामने अपना सर हमेशा जुका कर उनकी अभ्यर्थना करते हो वो दिव्य देव श्री भगवान दत्तात्रेय के क्या कोई लेखनी लिख सकती है?

त्रिदेव अर्थात ब्रह्मा विष्णु और महेश की सम्मिलित शक्ति से सम्प्पन भगवान दत्तात्रय योगविद्या तथा तंत्र विद्या के पूर्णतम ज्ञाता है. इन्ही की प्रेरणा के फलस्वरुप नाथयोगियों ने लोकभाषा में करोडो शाबर मंत्रो की रचना की तथा उनको जनसाधारण के मध्य पहोचाया. ना सिर्फ इतना ही, बल्कि इन मंत्रो के माध्यम से व्यक्ति महासिद्धो के शक्तियों के साथ साथ देव शक्ति तथा इतरयोनी की शक्तियों के सहयोग से अपनी सामान्य से सामान्य बाधाओं के साथ साथ उच्चतम से उच्चतम आध्यात्मिक धरातल का स्पर्श कर सके ऐसे प्रयोगों का आविष्कार इस महान ऋषि ने किया. अघोर साधनाओ के आदि साधक तथा मुख्य प्रचारक कई हज़ारो वर्षों से शशरीर इस पृथ्वी पर विद्यमान है जिनका स्थान दत्तपहाड़ी गिरनार श्रंखला में है तथा कई साधकोने उनके शशरीर दर्शन का सौभाग्य भी प्राप्त किया है. सेकडो वर्षों से समय समय पर कई सिद्ध गुरु अपने शिष्यों के मध्य ऐसे प्रयोग प्रदान करते थे जिसके माध्यम से भगवान दत्तात्रेय का आशीर्वचन उनको प्राप्त हो तथा अपने भौतिक तथा आध्यात्मिक जीवन में वे सक्षमता को प्राप्त कर सके. लेकिन ऐसे प्रयोग दुर्लभ और गुरुगम्य ही

रहे जो की जनसामन्य तक नहीं पहोच पाए. यूँ तो भगवान दत्तात्रय से सबंधित कई गुप्त विधान है जिसके माध्यम से साधक उनके प्रत्यक्ष दर्शन कर सकते है लेकिन वे विधान अति असहज, श्रमसाध्य तथा कठिन है जिसमे साधक को एक निश्चित जीवन क्रम कई दिनों या महीनो तक अपनाना पड़ता है जो की आज के युग में साधारणतः संभव नहीं है. लेकिन इन प्रयोगों में एक प्रयोग **दत्तात्रेय आहूत प्रयोग** भी है, जो की सिर्फ एक रात्री में ही सम्प्पन हो जाता हैजिसके माध्यम से साधक उसी रात्री में स्वप्न में भगवान दत्तात्रेय के दर्शन प्राप्त कर प्रत्यक्ष कृपाद्रष्टि का साक्षी बन जाता है. अगर साधक की कोई समस्या है तो उसका निराकरण भी उसे इस प्रयोग के माध्यम से प्राप्त हो सकता है जिसमे स्वयं भगवान दत्तात्रेय उनको मार्गदर्शन प्रदान करते है. यह विशेष प्रयोग को **पारदशिवलिंग** के माध्यम से पूर्ण सम्प्पन किया जाता है.जब बात पारद की की जाती है तो इसका अर्थ किसी भी प्रकार के विग्रह का विज्ञापन नहीं होता है,अपितु जिन्होंने भी **सदगुरुदेव** के प्रवचनों को सूना हो,समझा हो तो उन्हें पता ही होगा की मात्र पारद से ही पूर्णता प्राप्ति संभव है,अरे जब अंतिम तंत्र अर्थात पारद तंत्र का प्रयोग ही स्वयं की साधना उन्नती के लिए किया जाये तो असफलता भला कैसे मिलेगी... प्रयोग की विधि इस प्रकार है.

यह प्रयोग साधक किसी भी शुभ दिन शुरू कर सकता है.

साधक रात्री में ही इस प्रयोग को कर सकता है. साधक स्नान आदि से निवृत हो कर, लाल वस्त्र को धारण करे तथा लाल आसन पर बैठ जाए. साधक का मुख उत्तर दिशा की तरफ होना चाहिए.
साधक को गुरुपूजन तथा गुरुमन्त्र का जाप करना चाहिए.

साधक को अपने सामने एक बाजोट पर विशुद्ध पारद से निर्मित प्राण प्रतिष्ठित तथा चैतन्य पारदशिवलिंग को स्थापित करना चाहिए तथा पारदशिवलिंग के पास ही भगवान दत्तात्रेय का चित्र या यंत्र रखे. साधक भगवान दत्तात्रेय के यंत्र या चित्र का पूजन करे उसके बाद साधक पारद शिवलिंग का पूजन सम्प्पन करे.

साधक को पूजन में गुग्गल का धुप प्रज्वलित करना चाहिए. दीपक तेल का हो. साधक भोग के लिए किसी भी वस्तु का प्रयोग कर सकता है.

पारदशिवलिंग का पूजन करने के बाद साधक रुद्राक्ष माला से निम्न मन्त्र की २१ माला मन्त्र का जाप करे.

ॐ द्रां द्रिं द्रुं दत्तात्रेयाय स्वप्ने प्रकट प्रकट अवतर अवतर नमः

(om draam drim drum dattatreyaay swapne prakat prakat avatar avatar namah)

मन्त्रजाप पूर्ण होने पर साधक भगवान दत्तात्रेय को वंदन करे तथा स्वप्न में प्रकट होने के लिए प्रार्थना करे तथा माला को अपने तकिये के निचे रख कर सो जाए. इस प्रकार करने से भगवान दत्तात्रेय साधक को रात्री में स्वप्न में दर्शन देते है तथा उसकी जिज्ञासा को शांत करते है. साधक माला को कई बार उपयोग में ला सकता है.

SAHSTRAAR CHAKRA JAAGRAN - AMRITV SOAHAM SADHNA

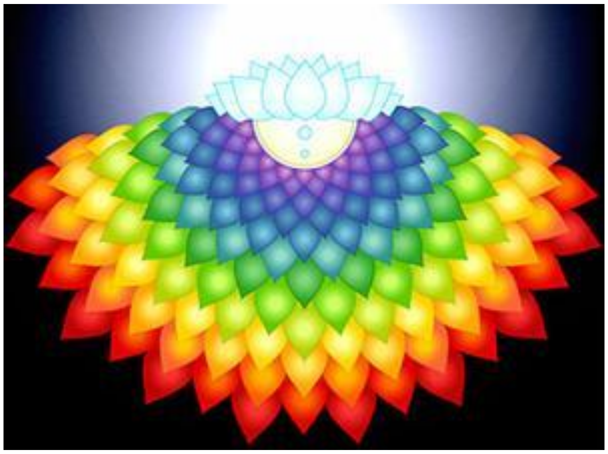

In all the various methods of spiritual world, place of Kundalini is most important. Kundalini is present inside human as prime universal power. There are diverse padhatis in various paths to complete the infinite Kundalini procedure and this Kundalini introduce person to his own huge self. Kundalini forms the basis of all fields whether it is Parad Vigyan or Soorya Vigyan or Yog Tantra or any other. Seventh Chakra of this very Kundalini has been called Sahastrar Chakra.

Root of Kundalini has said to be Muladhaar which is the residing place of Shakti. Journey of Kundalini happens in various stage like making each chakras conscious, their activation, subsequently bhedan and development. Objective of this basic journey of Kundalini is to meet with his Shiva. This is accepted by all tantra scriptures. This Chakra is Sahastrar which is said to be having 1000 lotus petals and considered to be place of Shiva.

Sahastrar Chakra is place of supreme element. From this place, human frees himself from craving of self-element and move towards truth of Brahma element and attains Samadhi (deep meditation) state. If all praan of body becomes one and is focused on

Sahastrar Chakra then person definitely attains Samadhi state where he becomes one with Brahma.
From spiritual point of view, it can be called a very highest stage where person gets introduced to various universal secrets and truth. Definitely if person can attain such higher spiritual level then what can be said about his materialistic life. There is highest development in memory power of person, sadhak get to know the thought of person approaching him, can meditate and with practice, he can attain various types of spiritual accomplishments. But in root of all of them, there are procedures to make it conscious and activate it.
Sadhak should understand that if any mass of body does not have any consciousness then its activation is not possible. And the one which is not activated cannot be developed and if it is developed too then due to it being in dormant state, this development is meaningless.
In Kundalini Procedure, first of all Kundalini is made conscious and then all chakra are made conscious and after that activation is done. This procedure is very complex and cumbersome. But rare prayog presented here is amazing in itself. Reason for it is that it is sadhna to make Sahastrar Chakra (place of Shiva) conscious and activate it. If person does this sadhna then definitely he becomes capable to attain all preliminary benefits related to Sahastrar Chakra. He becomes aware of nectar element which originates from sahastrar and due to able circulation of elements in body, sadhak gets riddance from diseases. To add to it, sadhak attains many kinds of spiritual accomplishments. Getting such hidden prayog is definitely very lucky because in ancient Tantra opinion, only few people were given such prayogs by Guru Tradition.
This prayog, even rare to Devs is done through **Parad Shivling or Saundarya Ras Kankan.**
Sadhak can start this prayog on any auspicious day.
Sadhak can do it anytime in day or night but sadhak should do it daily on same time.
Sadhak should take bath, wear white clothes and sit on white aasan. Sadhak should face North direction.

Sadhak should establish **ENERGISED PURE PARAD SHIVLING OR SAUNDARYA RAS KANKAN** in front of him. After it sadhak should do Guru Poojan and do poojan of Parad Shivling or Kankan. After poojan, sadhak should chant Guru Mantra.

Thereafter, sadhak should chant 11 rounds of below mantra while doing tratak on Shivling. Sadhak should use sfatik (Crystal) rosary for this purpose.

OM SHAM SHAAM SHIM SHUM VAM VAAM VIM VUM AMRIT VARCHASE VARCHASE SOHAM HANSAH SWAHA

After completion of chanting, sadhak should close his eyes and sit peacefully for some time. Sadhak has to do this procedure for 5 days.

In these five days, sadhak can have many types of experiences and can see many scenes or hear many voices. But there is no need to worry at all; these are symptoms of success in sadhna. Rosary should not be immersed. Sadhak can use this rosary in future for doing this sadhna.

==

आध्यात्म जगत की सभी विविध प्रणाली में कुण्डलिनी का स्थान अत्यधिक महत्वपूर्ण स्थान है. मनुष्य के अंदर ब्रह्मांडीय मुख्य शक्ति के रूप में कुण्डलिनी अवस्थित है. इसी कुण्डलिनी के अनंत क्रम को सम्पन्न करने के लिए विविध मार्ग में विविध पद्धतियाँ है और यही कुण्डलिनी मनुष्य का उसकी स्वयं की विराट सत्ता का साक्षात्कार कराता है. चाहे वह पारदविज्ञान हो सूर्यविज्ञान मंत्र, योग तंत्र या कोई भी क्षेत्र, इन सभी का आधार कुण्डलिनी ही है. और इसी कुण्डलिनी के सप्तम चक्र को सहत्रार चक्र कहा गया है.

कुण्डलिनी के मूल स्थान को मूलाधार कहा गया है जिसे शक्ति का स्थान कहा जाता है, जब की उसकी यात्रा एक एक चक्र का चेतन, जागरण, भेदन, विकास आदि विविध चरणों में होता है, तथा कुण्डलिनी शक्ति की यह मूल यात्रा उसके शिव के साथ मिलन के लिए है यह सर्व तंत्र ग्रन्थ स्वीकार करते है. यही चक्र सहस्त्रार है, जिसको सहस्त्र पद्मदल अर्थात १००० कमल पंखुड़ी वाला स्थान कहा जाता है, जिसे शिव का स्थान माना जाता है.

सहस्त्रार चक्र सर्वोच्च तत्व, परम तत्व का स्थान है. इसी स्थान से मनुष्य स्व भाव की वासना से मुक्त हो कर ब्रह्म भाव के सत्य की और बढ़ता है तथा समाधि अवस्था को प्राप्त करता है. अगर शरीर का पूर्ण प्राण एक हो कर सहस्त्रार चक्र में केंद्रित हो जाता है तो व्यक्ति निश्चय ही समाधी अवस्था को प्राप्त कर लेता है, जहां पर उसका अस्तित्व ब्रह्म में विलीन हो जाता है.

आध्यात्मिक द्रष्टि से यह एक अत्यंत ही उच्चतम अवस्था कही जा सकती है जहां से व्यक्ति विविध ब्रह्मांडीय रहस्यों तथा सत्यों से परिचित होने लगता है. निश्चय ही अगर साधक अपना आध्यात्मिक स्तर इतने उच्च स्तर को प्राप्त करा सकता है तो फिर भौतिक जीवन की तो बात ही क्या. फिर भी अगर कहा जाए तो व्यक्ति के स्मरण शक्ति में उच्चतम विकास होता है, साधक आगंतुक व्यक्ति के मानस में चल रहे विचारों को जानने लगता है, ध्यान में लिन हो सकता है तथा अभ्यास के साथ साथ व्यक्ति कई प्रकार की सिद्धियों की प्राप्ति कर सकता है. लेकिन इन सब के मूल में सर्व प्रथम चेतन तथा जागरण प्रक्रियाए है.
साधक को यह समजना चाहिए की अगर कोई पिंड में चेतना नहीं है तो उसका जागरण संभव नहीं हो पता. और जो जागृत नहीं है, उसका विकास नहीं किया जा सकता और अगर वह विकास हो भी जाए तो सुसुप्त अवस्था होने के कारण यह विकास अर्थहिन् ही है.
कुण्डलिनी क्रम में पहले कुण्डलिनी को चेतन कर सभी चक्रों को धीरे धीरे चेतन किया जाता है तथा उसके बाद जागरण किया जाता है. यह क्रिया अत्यंत ही पेचीदी तथा जटिल है. लेकिन प्रस्तुत देव दुर्लभ प्रयोग अपने आप में एक आश्चर्य है. इसका कारण यह है की यह सीधे ही सहस्त्रार चक्र अर्थात शिव स्थान को चेतन और जागरण करने की साधना है. अगर व्यक्ति इस साधना को सम्प्पन कर ले तो निश्चय ही वह सहस्त्रार चक्र से सबंधित सभी प्रारंभिक लाभों की प्राप्ति करने में समर्थ होने लगता है. सहस्त्रार से जरने वाले अमृत तत्व का उसको भान होने लगता है तथा शरीर में तत्वों का संचारण योग्य होने से साधक के रोग शोक भी शांत होने लगते है. साथ ही साथ साधक को कई प्रकार की आध्यात्मिक उपलब्धिया तो होती ही है. ऐसे गुप्त प्रयोग को प्राप्त करना निश्चय ही सौभाग्य ही है क्यों की प्राचीन तंत्र मत में मात्र कुछ ही व्यक्तियो को गुरु मुखी प्रणाली से ऐसे प्रयोगों का ज्ञान कराया जाता था. इस देव दुर्लभ प्रयोग को **पारदशिवलिंग अथवा सौंदर्य रस कंकण** के माध्यम से सम्प्पन किया जाता है.
यह प्रयोग साधक किसी भी शुभदिन शुरू कर सकता है.
समय दिन या रात्रि का कोई भी हो लेकिन साधक को रोज एक ही समय पे यह प्रयोग करना चाहिए.
साधक स्नान आदिसे निवृत हो कर सफ़ेद वस्त्रों को धारण करे तथा सफ़ेद आसान पर बैठ जाए. साधक का मुख उत्तर दिशा की तरफ रहे.

साधक को अपने सामने **प्राणप्रतिष्ठित विशुद्ध पारदशिवलिंग अथवा सौंदर्य रस कंकण** को स्थापित करना चाहिए. इसके बाद साधक गुरुपूजन तथा पारदशिवलिंग अथवा कंकण का पूजन सम्प्पन करे. साधक को पूजन करने के बाद गुरुमंत्र का जाप करना चाहिए.
इसके बाद साधक शिवलिंग पर त्राटक करते हुवे निम्न मंत्र की ११ माला मंत्र का जाप करे. यह जाप साधक स्फटिक माला से करे.

ॐ शं शां शिं शुं वं वां विं वुं अमृत वर्चसे वर्चसे सोहं हंसः स्वाहा

(OM SHAM SHAAM SHIM SHUM VAM VAAM VIM VUM AMRIT VARCHASE VARCHASE SOHAM HANSAH SWAHA)

मंत्र जाप पूर्ण होने पर साधक थोड़ी देर आँखे बंद कर के शांत चित्त से बैठ जाए. इस प्रकार साधक को ५ दिन तक करना है.

साधक को इन ५ दिन में कई प्रकार के अनुभव हो सकते है और कई द्रश्य दिखाई दे सकते है तथा विविध आवाजे सुने दे सकती है लेकिन साधक को विचलित नहीं होना चाहिए, यह सब साधना में सफलता के ही लक्षण है. माला का विसर्जन नहीं करना है, साधक भविष्य में भी इस माला का प्रयोग इस साधना को करने के लिए कर सकता है.

****NPRU****

Posted by Nikhil at 6:46 AM No comments:
Labels: CHAKRA SADHNA

FRIDAY, NOVEMBER 30, 2012

KUNDALINI MANTRAYOG

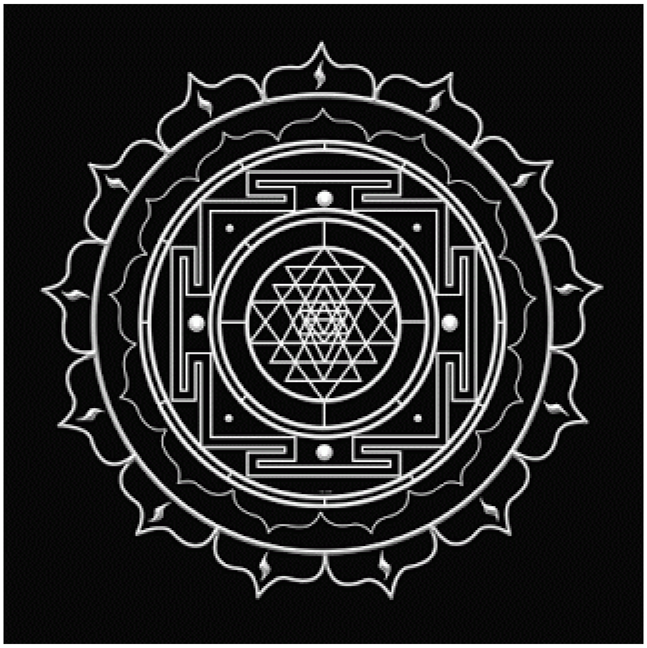

Our ancient sages and saints have touched those dimensions of life which are beyond imagination of humans. Through their sadhna power, they have reached that stage in life which can be only a

dream for any person. It may be related to attainment of complete prosperity and pleasure in materialistic life or it may be attaining completeness in spiritual life. Through there sadhna power they beautified their life by continuously improving it and they also kept their knowledge safe for future generations and propagated it too. But due to our shortcomings, we could not attain that knowledge. Our negligence made this knowledge obsolete and then we did not had any other option then to live life in shadow of doubts. Something happened in the case of Kundalini subject. The numbers of misconceptions which are spread regarding subjects like Kundalini and Yog-Tantra probably are more than any other subject. Prime reason behind it is our negligence in not understanding the subject or considering description of any person to be true. In reality what should happen is that we should experience it ourselves and become witness ourselves. Well, today nothing is considered beyond activation of Kundalini chakras and through Yoga or Tantra, they are activated. Besides it, there is no special procedure relating to Kundalini which we are aware of.

Sadgurudev have so many times disclosed so many unknown secrets relating to Kundalini in various shivirs, in his articles and recorded discourses which had earlier become obsolete with time. In the same context, he told about Kundalini Yog through which person can enter deep inside and sees his inner self-evolved Ling and chakras situated inside and can attain many

accomplishments. It is Yogic procedure about which he has told. But there is one Mantric Yog procedure of Kundalini Yog too about which may be he has not told to everyone but he has told the procedure relating to it to some disciples. Under this procedure, sadhak can combine power of Mantra with Kundalini Yog and move at faster pace. Whereas on one hand Kundalini Yog takes time and is completely dependent upon physical activity , on the other hand Kundalini Mantra Yog besides relying on physical activity also relies on voice of Mantra by which activation of power can happen at much faster pace. Prayog presented here is very rare. Those who have done Kundalini Yog practice, they can certainly feel the necessity of fruitfulness of this prayog. To add to that, it is easy too and can be done by any sadhak or sadhika.

This prayog can be started on any day. Appropriate time for this sadhna is sunrise. If sadhak cannot do it at the time of sunrise or Brahma Muhurat then sadhak should select such time when there is no noise or at least it is very less. Surroundings should be calm and there should not be any disturbance in the middle of sadhna. Sadhak can wear dress of any colour for this prayog and can chose direction of his own choice.

First of all sadhak should do Guru Poojan. Then sadhak should chant Guru Mantra.

After chanting Guru Mantra, sadhak should do the Anulom and Vilom Pranayama procedure.

After Anulom and Vilom sadhak should fill air in his stomach through two nostrils and stop it inside using Jalandhar Bandh i.e. touch jaw of face under the throat.

After this, sadhak should mentally chant beej mantra "Eem".

After chanting for some time, sadhak starts felling clearly the vibration in his navel. If air is filled inside lungs instead of stomach then this vibration is not felt in this procedure. And if sadhak does not chant Beej Mantra then his concentration will not go to chakras lower than Aagya Chakra. But after chanting for some time, concentration gradually gets stabilized from Anahat to middle of Muladhaar.

This procedure should not be done for more than 5 minutes.

After this, sadhak should do Bhasrika. At least 100 Bhasrika needs to be done and they should be done in not more than 3 minutes.

After doing Bhasrika, sadhak should close his eyes and mentally chant below mantra.

om hoom hreem shreem

Certainly, after some time sadhak starts feeling his inner depth and as sadhak goes on practicing he keeps on diving deep into infinite depth of his body.

===

हमारे प्राचीन ऋषि तथा योगियों ने अपने जीवन के उन आयामों को स्पर्श किया था जिसके बारे में मनुष्य की कल्पनाशक्ति सोच भी नहीं सकती. उन्होंने अपने साधना बल से जीवन की जिस स्थिति को स्पर्श किया था वह किसी भी मनुष्य का स्वप्न मात्र हो सकता है, चाहे

वह भौतिक जीवन में पूर्ण वैभव और सुख भोग को प्राप्त करना हो या फिर वह आध्यात्मिक जीवन की परिपूर्णता को प्राप्त करना हो. साधनाओ के बल पर उन्होंने अपने जीवन को हमेशा उर्ध्वगति को प्रदान करते हुवे निखारा तथा अपनी आगे की पीढ़ियों के लिए उन्होंने अपने ज्ञान को सुरक्षित किया तथा उसका प्रसार भी किया. लेकिन हमारी न्यूनताओ के कारण हम उस ज्ञान की प्राप्ति नहीं कर सके, हमारी उपेक्षाओ में यह ज्ञान लुप्त होने लगा और फिर हमारे पास भ्रम और भ्रांतियों में जीवन काटने के अलावा और कोई विकल्प रहा ही नहीं. कुछ ऐसा ही हुआ कुण्डलिनी के विषय में भी. आज कुण्डलिनी और योग तंत्र जेसे विषय पर जितनी भ्रांतियां फैली हुई ही उतनी सायद ही किसी विषय को ले कर हो. इसका मुख्य कारण हमारी इस विषय को न समजने की उपेक्षा तथा कोई भी व्यक्ति की व्याख्या को सत्य मान लेने की भूल है. वस्तुतः होना यह चाहिए की हम खुद अनुभव करे तथा फिर स्वयं ही स्वयं के पास प्रमाण बने. खैर, आज कुण्डलिनी को चक्रों के जागरण से अधिक कुछ समजा ही नहीं जाता तथा योग या तंत्र के माध्यम से इसका जागरण किया जाता है, इसके अलावा कोई भी विशेष प्रक्रिया या कुण्डलिनी सबंध में हमें कुछ ज्ञात नहीं है.

सदगुरुदेव ने कुण्डलिनी के सबंध में कई बार शिविरों, अपने लेख तथा रिकॉर्ड प्रवचन में कई कई ऐसे अज्ञात रहस्यों को खोला है जो ज्ञान काल क्रम में लुप्त ही हो गया था. इसी क्रम में उन्होंने कुण्डलिनी योग के बारे में बताया था, जिसके माध्यम से व्यक्ति अपने अंदर की गहराई में उतर कर अपने आतंरिक स्वयम्भू लिंग तथा शरीर के अंदर स्थित चक्रों का दर्शन कर सकता है तथा कई सिद्धियों को प्राप्त कर सकता है. यह योगिक प्रक्रिया है जिसके बारे में उन्होंने बताया है. लेकिन साथ ही साथ इस कुण्डलिनी योग की एक मांत्रिक योग प्रक्रिया भी है, जिसके बारे में उन्होंने भले ही सभी के मध्य बोला नहीं हो, लेकिन अपने कई शिष्यों को उन्होंने इसके सबंध में प्रक्रिया को बताया है. इस प्रक्रिया के अंतर्गत साधक कुण्डलिनी योग में मन्त्रबल का संयोग कर तीव्रता से गतिको प्राप्त कर सकता है. जहां एक और कुण्डलिनी योग समय लेता है तथा पूर्ण रूप से शारीरिक प्रक्रिया पर आधारित है, वहीँ कुण्डलिनी मन्त्र योग, शारीरिक प्रक्रिया के साथ साथ मांत्रिक ध्वनि की प्रक्रिया पर भी आधारित है, जिसके माध्यम से शक्तियों का जागरण कई गुना तीव्रता के साथ हो सकता है. प्रस्तुत प्रयोग दुर्लभ है, जिन्होंने कुण्डलिनी योग का अभ्यास किया है वे

व्यक्ति निश्चय ही इस प्रयोग की सार्थकता की अनिवार्यता का अनुभव कर सकते है. साथ ही साथ यह सहज भी है, जिससे यह कोई भी साधक या साधिका को करने के लिए उपयुक्त है.

यह प्रयोग किसी भी दिन शुरु किया जा सकता है. इस साधना के लिए उपयुक्त समय सूर्योदय है अगर साधक यह सूर्योदय या ब्रह्म मुहूर्त के समय नहीं कर सके तो साधक को ऐसे समय का चुनाव करना चाहिए जब शोरगुल कम हो या बिलकुल न हो. वातावरण शांत हो तथा साधक को साधना के मध्य कोई व्यव्घान उत्पन्न न हो.

इस साधना में साधक कोई भी रंग के वस्त्र धारण कर सकता है तथा दिशा भी कोई भी हो सकती है.

साधक को सर्व प्रथम गुरु पूजन गुरु मन्त्र आदि करना चाहिए. इसके बाद साधक गुरु मंत्र का जाप करे.

गुरु मन्त्र के जाप के बाद साधक को पहले अनुलोम विलोम प्राणायाम की प्रक्रिया करनी चाहिए.

अनुलोम विलोम के बाद साधक अपने दोनों नथुनों से साधक हवा अपने पेट में भरे तथा उसे जालंधर बंद लगा कर रोक रखे. अर्थात मुख का जबड़ा गले के निचे स्पर्श करा दे.

इसके बाद साधक मन ही मन में बीज मन्त्र ‘ ईं ’ का जाप करे.

यह जाप थोड़ी देर करते ही साधक को अपनी नाभि में स्पष्ट रूप से स्पंदन अनुभव होने लगता है. अगर हवा पेट की जगह फेफडो में भरी जाए और फिर यह क्रिया की जाए तो स्पंदन का अनुभव नहीं होता है. और अगर साधक बीज मन्त्र का जाप नहीं करता है तो उसका ध्यान आज्ञा चक्र से निचे की तरफ नहीं जाएगा लेकिन थोड़ी देर बीज मन्त्र का जाप करते ही वह धीरे धीरे अनाहत से मूलाधार के बिच में स्थिर होने लगता है.

इस प्रक्रिया को ५ मिनिट से ज्यादा नहीं करना चाहिए. इसके बाद साधक भस्त्रिका करे. भस्त्रिका कम से कम १०० करनी है. जिसमे ३ मिनिट से ज्यादा समय नहीं लगना चाहिए. इस प्रकार भस्त्रिका कर लेने के बाद तुरंत आँखे बंद कर निम्न मन्त्र का मानसिक जाप करते रहना चाहिए.

ॐ हूं ह्रीं श्रीं

(om hoom hreem shreem)

निश्चय ही थोड़े ही समय में साधक को अपनी आतंरिक गहराई का अनुभव होने लगता है तथा साधक जैसे जैसे अभ्यास करता रहता है वह अपने शरीर की अनंत गहराई में उतरने लगता है.

****NPRU****

Posted by Nikhil at 12:42 AM No comments:
Labels: CHAKRA SADHNA

THURSDAY, AUGUST 23, 2012

LAAKINI SADHNA

Sense of knowledge in human life is one such fact which can't be ignored in any way. From birth to death, person through his daily activities, through his works, through his thoughts and through his internal and external dynamism develops consciousness, tries to brighten up his identity. But in roots of all this, the fact which by becoming the base of all activities provides the inspiration to develop consciousness, is sense of knowledge. The dynamism of his work runs according to its quantum of perception of knowledge and type of knowledge he senses. And this journey starts from Swa Bhaviti to Aham Bramhaasmi. Because after attaining complete knowledge and knowledge about complete authority, person's consciousness also moves towards it.It will become the base of his works and dynamism. Prime Authority behind composition of universe is Bramha and his knowledge is Bramha knowledge. And complete part of this Bramha is established in all subtle to subtle things. Whole universe has been created by fission of that complete authority. And his prime fission was into two parts- SadaShiv and Shakti. Moving forward, their different parts in their split state become inanimate and animate things.

Shakti represents female element. And her infinite forms exist amongst all of us. No consciousness exists in any solid until and unless it is infused with Shakti. In our inner and outer universe, base of our consciousness is Shakti. And wherever it exists, it has got a novel form.

One of the important differences between human beings and other creatures is that humans can develop their consciousness infinitely. The form of prime Shakti (power) in humans exists in their own body in form of Kundalini. That's why human beings do not need any novel fact to discover and attain external consciousness or in external form, no ideological sentimental base is required for it.He himself can attain complete Bramha Knowledge by activation dormant powers present inside him. Because everything that is external is internal too. Thus, as Bramha and universe are present externally, in the same way they are present internally too.

And the complete universe embedded inside human beings is in form of Kundalini only. All letters and Maatrika powers are implicit in the seven chakras of Kundalini from Muladhaar to Sahastrar which are the beej of all gods and goddesses and are the base of mantras. Therefore, if they are activated and made conscious then definitely one can accomplish all goddesses and gods and base of all these split form is Bramha only. Thus, it is procedure to reach our own basic element. In this manner, person successively completes sadhna of god or goddess related to each chakra. In reality, it is a difficult and patient journey.

As it is clear that different forms of Shakti becomes the base of any solid, dead, male element or positive energy by Chetna procedure. On this basis, every chakra has got its own ruler Shakti relating to control and flow in that corresponding chakra. This supreme Shakti also has got its own different forms which exist in middle of chakras. It is natural that the goddess form related to chakra is very much powerful and is always ready to do well being of sadhak. Sadhak can imagine that if Kundalini contains whole universe, then what all ruler Shakti of its prime chakra can't provide to sadhak?

In reality, sadhnas and sadhna padhatis of these Shaktis have remain hidden and abstruse since sadhak can definitely become very powerful through these sadhnas. Manipur chakra has been very much hidden and secretive chakra. This chakra is centre of Praan and possesses creative capability since when person is in womb then his consciousness is through the means of Navel only. Besides this, ability of creation and composition lies in this chakra. One can find many mythological instances regarding it.This surya or Fire form chakra has been the focal point of body and fission of praans take place here. Internal bodies of humans are tied to it only. Actually, when Vaasna and subtle body are separated from physical body, they is connected to navel through Rajatrajju.

The prime Shakti of this chakra is Goddess Laakini.Many forms of goddess exist in this chakra and its sadhna padhati is said to be very cumbersome, aggressive and hidden in itself since after sadhna, sadhak attains many benefits and in the sadhna of these Shakti , many time very fearful situation is created.

But sadhna presented here pertaining to goddess is a peaceful sadhna. In it, no fearful situation is created. Sadhak attains many benefits from this sadhna like riddance from disease, solution of all stomach-related problems, development of Yog-Shakti, development of consciousness, attainment of mental powers. But the most important achievement of this sadhna is that sadhak becomes capable to wander in fourth dimension places. Sadhak attains the capability that he activates his internal body in body and enters fourth dimension places, see these places which can’t be seen by normal vision and can visit those Siddh places which can’t be visited by physical body generally. No fearful situation is created in this sadhna. It is possible that during sadhna time, temperature of body may seem to increase but there is no need to worry. Sadhak should complete sadhna without anxiety.

Sadhak can start this sadhna on any day. It should be done after 10:00 P.M. Sadhak should wear red dress and sit on red aasan. Direction will be north.

Sadhak should light one oil-lamp in front of himself. Besides this, nothing else is needed. After it, sadhak should pronounce Laakini Dhayan 11 times.

LAAKINI DHYAN

NEELAMDEVIM TRIVAKTAAM TRINAYANLASITAAM DRINSHTINIMUGRRUPAAM
VAJRAMSHATIM DADHANIMBHAYVARKRAAM DAKSHVAAME KRAMEN
DHYAATVA NAABHISTH PADME DASHDALVILSATKARNIKE LAAKINI TAAM
MAANSAASHEEM GAURRAKTASREEKHRIDYVTEEM CHINTYET SADHKENDRAH

After pronouncing Dhayan mantra, sadhak should close the eyes and pronounce below mantra. Sadhak should chant 11 rounds of mantra with Sfatik rosary. During chanting, sadhak should focus internally on navel.

Laakini Manipur Mantra – GUM RAM TAM(टं) THAM(ठं) DAM(डं) DHAM(ढं) NAM(णं) TAM(तं)THAM(थं) DAM(दं) DHAM(धं) NAM(नं) RAM GUM

Sadhak should do it for seven days. Sadhak can have different type of experiences in these 7 days. But after 7 days sadhak definitely attains the capability that he can activate his internal body in body and see hidden regions of fourth dimension. Laakini mantra is TAM(टं) THAM(ठं) DAM(डं) DHAM(ढं) NAM(णं) TAM(तं)THAM(थं) DAM(दं) DHAM(धं) NAM(नं) but it has been seen that after doing samput of prime beej of Manipur, intensity of this mantra increases. Besides it, as per KankaalMaalini, samput of Guru Beej should be given so that success is ascertained. In this way, the mantra becomes GUM RAM TAM(टं) THAM(ठं) DAM(डं) DHAM(ढं) NAM(णं) TAM(तं)THAM(थं) DAM(दं) DHAM(धं) NAM(नं) RAM GUM which can give various types of siddhis. Rosary should not be immersed. Sadhak can chant this mantra in future with it.

Those person who can't do entire procedure, they daily at the time of sleeping in night can close their eyes and do mental pronunciation of this mantra while concentrating on navel. They can witness related experiences.

==

मनुष्य जीवन में ज्ञान का बोध निश्चित रूप से एक ऐसा तथ्य है जिसे किसी भी रूप से नाकारा नहीं जा सकता. जन्म से ले कर मृत्यु तक व्यक्ति अपने नित्य क्रिया कलापों के माध्यम से कार्यों के माध्यम से या विचारों के माध्यम से अपनी आतंरिक तथा बाध्य गतिशीलता के माध्यम से अपनी चेतना का विकास करता है, अपने अस्तित्व को ज्यादा से ज्यादा निखारने की ओर हमेशा प्रयत्नशील रहता है. लेकिन इन सब के मूल में जो तथ्य सारी क्रियाओं का आधार बन कर चेतना को और विकसित करने की प्रेरणा प्रदान करता है वह है ज्ञान का बोध. मनुष्य को जितना भी ज्ञान का बोध होता है और जिस प्रकार के ज्ञान का बोध होता है उसकी कार्यों की गतिशीलता भी उसके अनुरूप ही चलती है. और यह यात्रा स्व भवति से ले कर अहं ब्रम्हास्मि तक चलती है. क्यों की पूर्ण ज्ञान पूर्ण सत्ता का ज्ञान प्राप्त होने पर व्यक्ति की चेतना भी उसी तरफ गतिशील होने लगेगी. कार्यों तथा गतिशीलता का आधार वही बनेगा. ब्रम्हांड की संरचना की मुख्य सत्ता ब्रम्ह है. और उसी का ज्ञान ब्रम्हज्ञान है. और इसी ब्रम्ह का पूर्ण अंश ब्रम्हांड के सभी सूक्ष्म से सूक्ष्म में भी प्रस्थापित है. उसी पूर्ण सत्ता के विखंडन से ही तो पूर्ण ब्रह्माण्ड का सर्जन हुवा है. और उसका मुख्य विखंडन दो भाग में हुवा. सदाशिव तथा शक्ति. आगे उनके ही विभिन्न अंश विखंडित अवस्था में सभी जड़ तथा चेतन बने.
शक्ति स्त्री तत्व का प्रतिनिधित्व करती है. तथा उन्ही के अगणित स्वरुप हम सब के मध्य विद्यमान है. किसी भी ठोस में तब तक चेतना नहीं होती जब तक वह शक्ति संयुक्त नहीं हो जाता. हमारे आतंरिक तथा बाह्य ब्रम्हांड में जो भी चेतना का आधार है वही शक्ति है. तथा जहाँ पर भी इसकी सत्ता है वहाँ पर उसका एक नूतन ही स्वरुप है.
मनुष्य तथा बाकी जिव में एक मुख्य अंतर यह है की मनुष्य अपनी चेतना का विकास अनंत रूप से कर सकता है. क्यों की मनुष्य में मुख्य शक्ति का स्वरुप कुण्डलिनी के रूप में शरीर में ही विद्यमान होता है. इस लिए मनुष्य को बाह्यगत चेतना की खोज तथा प्राप्ति नहीं करने के लिए किसी नूतन तथ्य की आवश्यकता नहीं है, या फिर बाह्य रूप से उसके लिए वैचारिक भावभूमि की आवश्यकता नहीं है. वह खुद अपने अंदर की सुप्त शक्तियो के जागरण मात्र से पूर्ण ब्रम्हज्ञान की प्राप्ति कर सकता है. क्यों की जो भी बाह्य है वह आतंरिक भी है. इस लिए जिस प्रकार से ब्रम्ह तथा ब्रम्हांड बाह्य रूप में विद्यमान है उसी प्रकार वह आतंरिक रूप में भी वही विद्यमान है.
और मनुष्य अपने अंदर एक पूर्ण ब्रम्हांड को समाहित किये हुवे है तो वह कुण्डलिनी के स्वरुप में ही है. कुण्डलिनी के मुख्य सात चक्रों में मूलाधार से ले कर सहस्त्रार तक सप्त चक्रों में पूर्ण वर्ण तथा मातृका शक्तियां निहित है, जो की सभी देवी तथा देवता के बीज है. मंत्रो का आधार है. इस लिए अगर इनको चेतन कर लिया

जाए तो निश्चित रूप से सभी देवी तथा देवता को साध लिया जा सकता है और इन सब विखंडित स्वरुप का मूल ब्रम्ह ही तो है. इसी लिए यह अपने मूल तत्व तक पहोचने से सबंधित प्रक्रिया है. इस प्रकार व्यक्ति क्रमशः एक एक चक्रों से सबंधित देवी या देवता की साधना को पूर्ण कर लेता है. वास्तव में यह एक कठिन और धैर्यपूर्ण सफर है.

जेसे की स्पष्ट है, शक्ति के विभिन्न स्वरुप ही आधार बनते है किसी ठोस, शव, पुरुषतत्व या घनात्मक की चेतना प्रक्रिया से. इसी आधार पर सभी चक्रों के नियंत्रण तथा संचार से सबंधित हर एक चक्र की अपनी एक अधिष्ठात्री शक्ति है. अधिष्ठात्री के भी कई अलग अलग स्वरुप चक्रों के मध्य विद्यमान रहते है. स्वाभाविक है की यह देवी स्वरुप जो की चक्रों से सबंधित है वह अत्यधिक शक्तिसम्प्पन होती है तथा अपने साधको के कल्याण करने के लिए हमेशा तत्पर रहती है. साधक कल्पना कर सकता है की जो कुण्डलिनी में पूरा ब्रम्हांड समाहित है उनके मुख्य चक्र की अधिष्ठात्री साधक को क्या कुछ प्रदान नहीं कर सकती.

वास्तव में इन शक्तियोंकी साधना तथा साधना पद्धतियाँ गुप्त और गुढ़ रही है. क्यों की साधक निश्चित रूप से अत्यधिक शक्ति सम्प्पन इन साधनाओ के माध्यम से हो सकता है.

मणिपुर चक्र अपने आप में एक अत्यधिक गुढ़ तथा रहस्यमय चक्र रहा है. इस चक्र प्राण का केन्द्र है. सर्जन क्षमता से संयुक्त है. क्यों की व्यक्ति जब गर्भ में होता है तो उसकी चेतना नाभि के माध्यम से ही बनी रहती है. इसके अलावा सर्जन या संरचना करने की क्षमता इस चक्र में है इसके पौराणिक कई उदहारण मिलते है. प्राणों के विखंडन तथा सूर्य और अग्नि रूप यह चक्र मनुष्य शरीर का केन्द्र रहा है. मनुष्य के आतंरिक शरीर भी इसी जगह से जुड़े हुवे होते है. वस्तुतः जब मनुष्य के स्थूल शरीर से वासना, सूक्ष्म इत्यादि कोई भी शरीर अलग होता है तो भी वह नाभि से रजतरज्जू के माध्यम से जुड़ा हुवा रहता है.

इस चक्र की मुख्य शक्ति देवी लाकिनी है. देवी के कई स्वरुप इस चक्र में विद्यमान है. तथा इनकी साधना पद्धति अपने आप में अत्यधिक कठिन उग्र और गुप्त कही जाती है. क्यों की साधना के बाद, साधक को कई प्रकार के लाभों की प्राप्ति होती तथा इन शक्तियों की साधना में कई बार अत्यधिक भयावह स्थिति भी बन जाती है.

लेकिन प्रस्तुत साधना देवी से सबंधित एसी साधना है जो की सौम्य है. इसमें साधक को किसी भी प्रकार की भय की स्थिति नहीं बनती है. इस साधना से साधक को कई लाभों की प्राप्ति होती ही है जेसे की रोग मुक्ति, पेट से सबंधित समस्याओ का समाधान, योगशक्ति का विकास, चेतना का विकास, मानसिक शक्तियों की प्राप्ति लेकिन इस साधना की सबसे बड़ी उपलब्धि है साधक चतुर्थ आयाम के स्थानों में विचरण करने के योग्य बन जाता है. साधक में यह क्षमता आ जाती है की वह अपने शरीर में आतंरिक शरीर को जागृत कर चतुर्थ आयाम के स्थानों में प्रवेश कर सके. इसे स्थानों को देख सके जिसको देखना सामान्य द्रष्टि से संभव नहीं हो तथा इसे सिद्ध स्थलों की यात्रा कर सके जहां पर स्थूल शरीर के माध्यम से जाना सामान्यतः संभव नहीं है. इस साधना में किसी भी प्रकार की कोई भय की स्थिति नहीं बनती है. साधक को हो सकता है साधना समय में शरीर का

तापमान बढ़ता हुवा अनुभव हो लेकिन इसमें भय वाली कोई बात नहीं है साधक निश्चिंत हो कर पूरी साधना करे.

साधक यह साधना किसी भी दिन शुरू कर सकता है. यह साधना रात्रिकाल में १० बजे के बाद ही की जाए. साधक लाल वस्त्र पहेन कर लाल आसान पर बैठ कर उत्तर दिशा की तरफ मुख बैठ जाए.

साधक को अपने सामने एक तेल का दीपक लगाना चाहिए. इसके अलावा ओर किसी भी चीज़ की आवश्यकता इसमें नहीं है. इसके बाद साधक लाकिनी ध्यान का ११ बार उच्चारण करे

लाकिनी ध्यान –

नीलांदेवीं त्रिवक्तां त्रिनयनलसितां द्रंष्टिणिमुग्ररूपां
वज्रंशक्तिं दधानामभयवरकरां दक्षवामे क्रमेण
ध्यात्वा नाभिस्थ पद्मे दशदलविलसत्कर्णिके लाकिनिं तां
मांसाशीं गौररक्तासृकहृदयवतीं चिन्तयेत साधकेन्द्रः

ध्यान मंत्र के उच्चारण के बाद साधक अपनी आँखे बंद कर के निम्न मंत्र का उच्चारण करे. साधक को स्फटिक माला से ११ माला मंत्र जाप करना है. मंत्र जाप करते समय साधक का ध्यान आतंरिक रूप से नाभि पर हो.

लाकिनी मणिपुर मन्त्र - गुं रं टं ठं डं ढं णं तं थं दं धं नं रं गुं

साधक को यह क्रम ७ दिन तक करना चाहिए. ७ दिन में साधक को विविध प्रकार के अनुभव हो सकते है लेकिन ७ दिन बाद साधक को निश्चित रूप से यह क्षमता प्राप्त होती है की वह अपने शरीर के आतंरिक शरीर को जागृत कर चतुर्थ आयाम के गुप्त क्षेत्रो को देख सके तथा प्रवेश कर सके. लाकिनी मंत्र टं ठं डं ढं णं तं थं दं धं नं है, लेकिन अनुभव आया है की मणिपुर के मुख्य बीज का सम्पुट करने पर इस मंत्र की तीव्रता बढ़ जाती है, इसके अलावा कंकालमालिनी में निर्देशानुसार इस मंत्र में गुरुबीज का सम्पुट दिया जाना चाहिए जिससे सफलता सुनिश्चित हो ही जाए. इस प्रकार यह पूरा मन्त्र गुं रं टं ठं डं ढं णं तं थं दं धं नं रं गुंबनता है. जो की कई प्रकार की सिद्धि दे सकता है. माला का विसर्जन नहीं करना है. साधक इससे भविष्य में भी इस मंत्र का जाप कर सकता है.

जो व्यक्ति यह पूर्ण क्रम नहीं कर सकते वे लोग नित्य रात्रि में सोते समय आँख बंद कर के इसी मंत्र का मानसिक उच्चारण नाभि पर ध्यान केंद्रित कर करते रहे तो इससे सबंधित अनुभव होने लगते है.

****NPRU****

BINDU GORAKSH NAATH PRAYOG

IshwarSantaan –SantaanDoyPrakaarKo | Naad Roop Bindu Bindu Roop Nad |Shishya Bindu Roop Putra Nath Roop | Naad Shakti Roop Bindu Naad Roop Kari Bhaye |

Literature of Upanishads contains combinations of various types of ancient and modern Upanishads. In fact, Tantric Upanishads can be called best Tantric scriptures in themselves but since they were written in secretive language, it is generally very difficult to comprehend their abstruse meaning. In this context, there are many types of Upanishads related to various sects containing various specialities. One of such sect is Nath sect, containing best qualities of Aadinath form of Lord Aadi Shiva. In fact, there are various stories related to origin of Navnaath and Dattatrey and Navnaath have got significant contribution to field of Tantra. Sabar sadhna are in vogue due to them only. Out of the ancient Nath siddhs, there are lot of stories known to public at large about Shri Gorakshnath. Shri Gorakshnath set prime example of discipleship and has always been revered as embodiment of tantra. His work in field of tantra and maintaining Guru-disciple Tantric tradition is unparalleled till today. There have been lot of sadhnas related to Tantra Acharya Shri Gorakhnath and there have been various types of Tantric scripture and literature related to him which are in vogue in field of tantra. Among ancient and modern Upanishads, there are 3 Upanishads related to Gorakhnath and all the three are best in themselves revealing the yogic truths and tantric procedures. But these scriptures are written in rare and secret

language. Therefore, one does not get information about them normally. Lines presented above have been taken from Gorakshopnashid. These lines are very abstruse which are presenting facts related to important aspects of Aagam.
It has been said in these lines that there are two child of god i.e. Supreme Brahma's part is present in universe in primarily two forms i.e. Bindu in Naad form and Naad in Bindu form. Bindu in Naad form means which is Anahat Naad, which is subtlest sound, which is sound of feeling universe or mantra. It is nothing but Bindu having creation capability i.e. sperm. Naad in Bindu form means which is sperm, which contains complete Brahma, is sound and mantra. Shishya Bindu Roop Putra Nath Roop means that disciple-hood resides in everyone in form of Bindu. Shri Gorakhnath is also called Nath Putra because he got affection as son from Lord SadaShiv himself by the grace of his Guru Shri Aadi Matsyendranath. Shri Gorakhnath is also embodiment of Brahma. That's why he is present in every person in form of Bindu.
Naad Shakti Roop Bindu Naad Roop Kari Bhaye means that Naad exists in form of Shakti. In other words Mantra is Shakti (power), sound is power. It is prayer to Shri Gorakhnath to purify Bindu (sperm), take it in upward direction and make it reach Anahat Chakra. It is because he, embodiment of discipleship is present in every creature in from of Bindu.
If now meaning is understood in combined form then it means that Bindu and Mantra are two prime portions of universe. Shri Gorakshnath is present in Bindu in discipleship form who can introduce sadhak to Brahma through mantra. Every tantra unanimously accept that Bindu form of humans, Sadashiv and entire universe is Parad itself. If it is purified through special procedures and is combined with Naad i.e. through Mantric procedures then it can definitely provide desired success to sadhak.
. In this context, through various researches, various types of rare Parad idols and gutikas were created. One of such gutika is Bindu Retas Gutika which is also called Siddh Retas Gutika on which various types of special procedures are done. Regarding this rare gutika and its significance, information has been provided earlier too. Nath sect has got an intimate relation with mercury; many rarest of rare sadhnas of this sect can be done only in front of rare idols of Parad. In the same context, various type of sadhna can be done with the help of Siddh Retas Gutika. Procedure given here is amazing and rare procedure related to Bindu Retas Gutika which has been called Bindu Goraksh Prayog. Sadhak can attain various types of benefits from this procedure.
Sadhak's Bindu i.e. sperm is purifies. As a result, he gets riddance from mental deformities. Person's heart is purified.

Ejaculation of Sperm through natural means of nightfall does not happen and sperm is secured. Following celibacy is facilitated. It is also a procedure related to accomplishment of aasan. There is development in capability of sadhak to sit on aasan; sadhak feels easiness to sit on aasan.

Sadhak attains the necessary base for activation of serpent power (Kundalini) and various type of spiritual sadhnas, may be they are related to Yoga and Tantra. Sadhak's serpent power becomes conscious.
Though this procedure is of 3 days but if sadhak does this procedure for 7 days, then Shri Gorakshnath subtly manifests in front of sadhak either in Tandra state (sleepiness state) or through dreams.
Person may feel that it is sadhna related to spirituality only but sadhak can himself think that mental consciousness and attainment of sources of divine energy by body and mind can beautify the materialistic life of sadhak.
Sadhak can start this procedure from Thursday of Shukl Paksha of any month. It should be done after 9:00 P.M in night.
Sadhak should take bath, wear white dress and sit on white aasan facing North direction.
Sadhak should establish Bindu Retas Gutika or Devranjini Gutika in any container placed on Baajot in front of him. After it, sadhak should establish Gorakhnath picture or yantra in front of him. First of all, sadhak should do Sadgurudev poojan. It is better for sadhak to perform Sabar Guru Poojan. Along with it, sadhak should also perform poojan of Lord Bhairav and Ganesh. Sadhak can offer any fruit as Bhog during poojan. Oil lamp should be used and sadhak should ignite Dhoop.
During poojan of picture/yantra, sadhak should also do mental poojan of Navnaath, Lord Dattatrey and Shri Aadishiv Bholenaath. After it, sadhak should chant Guru Mantra as per his capacity and pray to Sadgurudev for success in sadhna and get his blessings. After Guru Mantra, sadhak should chant one round of Mahasiddh Mantra
OM HREEM SHREEM MAHAASIDDHAAY NAMAH

After it pray to Siddh Gorakshnath for fulfilment of desire of accomplishment of aasan and body. After prayer, sadhak should chant 11 rounds of below mantra.
OM NAMO GURUJI BINDUROOPAAY SIVAGORAKHASIDDHAKO AADESH
Sadhak can use any Rudraksh rosary for chanting mantra. After completion of chanting, sadhak should again perform the poojan and accept the Bhoga. Pray

to Guru Gorakhnath and all accomplished saints. Sadhak should do this procedure for 3 days. It is easy procedure but sadhak gets various types of special benefits from this procedure. Rosary should not be immersed; it can be used for doing Sabar sadhnas in future. If sadhak desires, he can do this procedure for 7 days or till the time he wants. But sadhak should at least do this procedure for 3 days.

====================================

इश्वर संतान-संतान दोय प्रकार को | नाद रूप बिंदु बिंदु नाद रूप | शिष्य बिंदु रूप पुत्र नाथ रूप | नाद शक्ति रूप बिंदु नाद रूप करि भये |

उपनिषद साहित्य में कई प्रकार के प्राचीन तथा अर्वाचीन उपनिषद का समावेश होता है. वस्तुतः तांत्रिक उपनिषद अपने आप में श्रेष्ठतम तांत्रिक ग्रन्थ कहे जा सकते है लेकिन वस्तुतः गुप्त भाषा में लिखे होने के कारण सामान्यतः इनका गूढार्थ समजना अत्यधिक मुश्किल है. इसी कड़ी में कई प्रकार के उपनिषद विविध मत तथा सम्प्रदाय से सबंधित है जो की सभी अपने आप में श्रेष्ठतम विलक्षणताओ के साथ है. ऐसा ही एक सम्प्रदाय है भगवान आदि शिव के आदिनाथ स्वरुप की प्रणाली का श्रेष्ठतम गुणधान लिए हुवे, नाथ सम्प्रदाय. वस्तुतः नवनाथ की उत्पति के सबंध में अनेक कथा है तथा दत्तात्रेय एवं नवनाथ का तंत्र क्षेत्र में अमूल्य योगदान है तथा साबर साधनाओ का प्रचलन इनकी ही देन है. इन्ही आदि नाथ सिद्धो में श्री गोरक्षनाथ के सबंध में तो घर घर में कथाएं प्रचलित है. शिष्यता की मिशाल तथा अपने आप में जीवित जागृत तंत्र के रूप में श्रीगोरखनाथ सदैव ही वन्दनीय रहे है. उन्होंने तंत्र के क्षेत्र में तथा गुरुशिष्य तांत्रिक प्रणाली में जो कार्य किया है वह आज भी एक मिशाल है. अपने समय के श्रेष्ठतम तंत्र आचार्य श्रीगोरखनाथ से सबंधित भी कई प्रकार की साधना उपासना होती आई है तथा उनसे सबंधित कई प्रकार के तांत्रिक ग्रन्थ तथा साहित्य के बारे में तंत्र क्षेत्र में प्रचलित है. प्राचीन अर्वाचीन उपनिषदों में तथा प्राप्य अप्राप्य रूप से भी यह कहा जाता है की गोरखनाथ से सबंधित ३ उपनिषद है तथा तीनों ही अपने आप में अत्यंत ही उत्तम और श्रेष्ठतम योगिक सत्यों एवं तांत्रिक प्रक्रियाओ को स्पष्ट करता है लेकिन यह ग्रन्थ दुर्लभ तथा गुप्त भाषा में निहित है अतः सामान्य रूप से इनकी जानकी प्राप्त नहीं होती है. प्रस्तुत पंक्तियाँ गोरक्षोपनिषद की है. यह पंक्तियाँ बहोत ही गुढ़ है जो की आगम पक्ष के अति महत्वपूर्ण पक्ष से सबंधित तथ्य को प्रस्तुत कर रही है. इन पंक्तियोंमें कहा गया है की इश्वर संतान दो है अर्थात ब्रह्म का अंश दो मुख्य स्वरुप में इस ब्रह्माण्ड में है. नाद रूप बिंदु बिंदु रूप नाद. नाद रूप में बिंदु अर्थात जो अनहत नाद है, जो सूक्ष्मतम ध्वनि है जो की ब्रह्माण्ड की अनुभूति की ध्वनि है या मन्त्र है वह नाद रूप से बिंदु अर्थात सर्जन क्षमता से युक्त बिंदु या वीर्य है. तथा बिंदु रूप नाद अर्थात जो वीर्य है, जो बिंदु है वही पूर्ण ब्रह्म से युक्त है, ध्वनि है तथा मन्त्र है.
शिष्य बिंदु रूप पुत्र नाथ रूप का अर्थ है की यही बिंदु के स्वरूप में सभी में शिष्यता का निवास होता है. श्रीगोरखनाथ को नाथ पुत्र कहा गया है, क्योंकी उनको गुरु श्री आदि मत्स्येन्द्रनाथ कृपा से स्वयं भगवान

सदाशिव से पुत्र रूप में स्नेह प्राप्त हुआ था. श्रीगोरखनाथ भी ब्रह्म स्वरुप है इस लिए वे सभी व्यक्तियो में बिंदु के रूपमें स्थित है.

नाद शक्ति रूप बिंदु नाद रूप करि भये का अर्थ है की नाद शक्ति रूप में है, अर्थात मन्त्र शक्ति है, ध्वनि शक्ति है. तथा बिंदु को भी शोधन कर उर्ध्वगामी कर नाद रूप में अर्थात अनाहत पद्म या चक्र तक पहोचाने की प्रार्थना श्री गोरखनाथ को है क्यों की इन सब के मूल में, शिष्यता के रूप वह सभी बिंदु के जिव में स्थित है. अगर अब संयुक्त रूप से इसका अर्थ समजा जाए तो वह यह होता है की **बिंदु और मन्त्र यह दो ही ब्रह्माण्ड के मुख्य भाग है. श्रीगोरक्षनाथ शिष्यता रूप में बिंदु में स्थित है जो की मन्त्र के द्वारा साधक को ब्रह्म का साक्षात्कार का आनंद प्रदान करा सकते है. सर्व तंत्र एक स्वर में स्वीकार करते है की मनुष्य, सदाशिव तथा समस्त ब्रह्माण्ड का बिंदु स्वरुप तो स्वयं पारद है. अगर विशेष प्रक्रियाओ से उसका शोधन किया जाए तथा उसको नाद युक्त अर्थात मांत्रोक्त प्रक्रियाओ से संयुक्त किया जाए तो निश्चय ही यह साधक को मनोवांछित सफलता प्रदान कर सकता है.**इसी क्रम में विविध शोध के माध्यम से एक से एक दुर्लभ पारद विग्रह तथा गुटिकाओ की रचना हुई. एसी ही एक गुटिका है बिंदु रेतस गुटिका जिसे सिद्ध रेतस गुटिका भी कहा गया है, जिसके ऊपर कई प्रकार के विशेष प्रयोग सम्प्पन होते है. इस दुर्लभ गुटिका के सन्दर्भ में तथा इसकी महत्ता के बारे में कई बार पहले ही जानकारी दी जा चुकी है. निश्चय ही नाथ पंथ से पारद का एक अटूट रिश्ता है, इस पंथ की कई दुर्लभ से दुर्लभतम साधना पारद के दुर्लभ विग्रह के सामने ही सम्प्पन की जा सकती है. इसी क्रम में बिंदु रेतस गुटिका के माध्यम से भी कई प्रकार की साधना सम्प्पन होती है. प्रस्तुत प्रयोग बिंदु रेतस गुटिका से सबंधित ऐसा ही एक अद्भुत तथा दुर्लभ प्रयोग है जिसे बिंदुगोरक्ष प्रयोग कहा गया है. यह प्रयोग कई कारणों इस प्रयोग के माध्यम से साधक को कई लाभों की प्राप्ति होती है.

साधक का बिंदु अर्थात वीर्य का शोधन होता है, फल स्वरुप उसको मानसिक विकारो से मुक्ति मिलती है. व्यक्ति का चित्त शुद्ध एवं निर्मल होता है.

शरीर से कुदरती तौर पर स्वप्न दोष आदि के माध्यम से बहार आ जाने वाले वीर्य का क्षय नहीं होता है तथा वीर्य की सुरक्षा होती है, ब्रह्मचर्य पालन में सुविधा की प्राप्ति होती है.

यह आसन सिद्धि से सबंधित प्रयोग भी है. साधक की आसन क्षमता में विकास होता है, शरीर सुलभ रूप से आसन पर बैठने में सहजता अनुभव करने लगता है.

कुण्डलिनी जागरण तथा विविध प्रकार की आध्यात्मिक साधना वह चाहे योग सबंधित हो या तंत्र से सबंधित, उसके लिए साधक को पृष्ठभूमि की प्राप्ति होती है, साधक को कुण्डलिनी में चैतन्यता की प्राप्ति होती है.

यूँ तो यह प्रयोग ३ दिन का है लेकिन अगर साधक इस प्रयोग को ७ दिन तक सम्प्पन करता है तो सूक्ष्म रूप से श्रीगोरक्षनाथ साधक को तंद्रा या स्वप्न के माध्यम से दर्शन देते है.

व्यक्ति को यह निश्चय ही लग सकता है की यह वस्तुतः मात्र आध्यात्म से सबंधित साधना है लेकिन साधक स्वयं ही यह सोच सकता है की मानस में चैतन्यता तथा विविध रूप से शरीर और मन को प्राप्त होती हुई दिव्य ऊर्जा के स्त्रोत साधक के भौतिक जीवन मैं भी तो निखार और सौंदर्य की प्राप्ति करा ही सकता है.
यह साधना साधक किसी भी शुक्ल पक्ष के गुरुवार से शुरू कर सकता है. समय रात्रीकाल में ९ बजे के बाद का रहे.
साधक स्नान आदि से निवृत हो कर सफ़ेद वस्त्र को धारण करने चाहिए तथा सफ़ेद आसन पर उत्तर की तरफ मुख कर बैठना चाहिए.
अपने सामने बाजोट पर साधक किसी पात्र में **बिंदु रेतस गुटिका** या देव रंजनी गुटिका को स्थापित करे. इसके बाद साधक अपने सामने गोरखनाथ का चित्र या सबंधित यंत्र स्थापित करे. साधक को सर्व प्रथम सदगुरुदेव पूजन करना चाहिए. श्रेष्ठ यह रहता है की साधक साबर गुरु पूजन सम्प्पन करे. साथ ही साथ साधक को भगवान भैरव एवं गणेश का पूजन भी करना चाहिए. पूजन में भोग के लिए साधक किसी भी फल का उपयोग करे. दीपक तेल का रहे तथा साधक को धुप प्रज्वलित करना चाहिए.
चित्र या यंत्र के पूजन के समय नवनाथ, भगवानश्रीदत्तात्रेय तथा श्री आदिशिव भोलेनाथ का भी मानस पूजन सम्प्पन कर लेना चाहिए. इसके बाद साधक गुरु मन्त्र का यथा संभव जाप करे तथा सदगुरुदेव से साधना में सफलता की प्राप्ति के लिए प्रार्थना करे एवं आशीर्वाद ले. गुरु मन्त्र के बाद साधक को महासिद्ध मन्त्र की भी एक माला कर लेनी चाहिए.
ॐ ह्रीं श्रीं महासिद्धाय नमः

(OM HREEM SHREEM MAHAASIDDHAAY NAMAH)

इसके बाद आसन सिद्धि तथा देह सिद्धि प्राप्ति की मनोकामना पूर्ण करने के लिए सिद्ध गोरक्षनाथ जी को मन ही मन प्रार्थना करे. प्रार्थना के बाद साधक निम्न मन्त्र की ११ माला का जाप करे.

ॐ नमो गुरुजी बिंदुरूपाय शिवगोरखसिद्धको आदेश

(OM NAMO GURUJI BINDUROOPAAY SIVAGORAKHASIDDHAKO AADESH)

साधक मन्त्र जाप के लिए किसी भी रुद्राक्ष की माला का प्रयोग करे. मन्त्र जाप पूर्ण होने पर साधक वापस पूजन सम्प्पन करे. तथा भोग को ग्रहण करे. गुरुगोरखनाथ के साथ साथ सभी सिद्धगण को वंदन करे. साधक को यह क्रम ३ दिन तक करना है. यह सहज क्रम है लेकिन साधक को इस क्रम में कई प्रकार से विशेष अनुकूलता की प्राप्ति होती है. माला को प्रवाहित नहीं करना है, यह आगे भी साबर साधनाओ के लिए उपयोग की जा सकती है. साधक अगर चाहे तो यह क्रम ७ दिनों तक या जितने दिनों तक चाहे कर सकता है लेकिन साधक को कम से कम यह क्रम ३ दिन तक करना चाहिए.

तंत्र एक दर्शन नही हैं..... न ही सिद्धांत हैं..... न ही इसकी बात करता हैं बल्कि यह तो एक विधि सामने रखता हैं कि ऐसा करने पर इसका परिणाम यह होगा ..और साथ ही साथ यह जीवन की किसी भी स्थिति को न नकारता हैं ...... न ही उसे घृणा कि दृष्टी से देखता हैं बल्कि उसमे कैसे दिव्यता लायी जाए..... कैसे इसी शरीर को जिसे कतिपय घृणा की दृष्टी से देखते हैं .....परम तत्व तक पहुँचाने का एक रास्ता बना दिया जाए . तंत्र एक महासागर हैं अनेको प्रकार की धाराए इसमें मिलती गयी और आज इसकी शाखाए ना मालूम कितनी हैं.

तंत्र मानव जीवन की कमियों को समझता हैं और उससे से भागने को प्रोत्साहित नही बल्कि उसे समझने का एक तरीका ..... एक दृष्टी कोण ..एक मानस .... सामने रखता हैं कि भागो नही जानो ..समझो और मुक्त होते जाए ..तंत्र यह स्वीकार करता हैं कि मानव जीवन पर अनेको पूर्व जीवन की कमियों का प्रभाव हैं .और काम क्रोध जो भी हैं वह आत्मा के मूल भूत सौंदर्य को छुपा ले रहे हैं .

तंत्र दमन का पक्षधर नही हैं .वह यह जानता हैं कि उर्जा का कोई भी रूप फिर चाहे वह यह हो या वह ..अगर दमित किया गया गया तो कहीं न कहीं से वह फिर प्रगट होगा है अतएव कहीं ज्यादा उचित होगा कि उसे रूपांतरित कर दिया जाए जीवन की उर्ध्व मुखी दिशा कि ओर ...

तंत्र काम भावना को हीन दृष्टी से नही देखता बल्कि उसकी अतितेरिकता का विरोधी हैं .तंत्र सामने रखता हैं कि यही काम उर्जा जो की सामान्य मानव मे अधोमुखी हैं कैसे उसे उर्ध्व मुखी कर दिया जाए . यह काम भावना को नष्ट करने की बात नही करता क्योंकि यह जानता हैं कि यही तो कुण्डलिनी शक्ति हैं बस इसकी दिशा को परिवर्तित करना हैं .क्योंकि अगर ऐसे ही नष्ट कर दिया गया तो मानव जीवन और निर्जीव निस्तेज सा रह जायेगा जीवन की सारी खुशियाँ उमग , प्रसन्न ता समाप्त हो जायेगी . जीवन मे जो भी उत्साह की अवस्था हैं जो प्रगति ...वह इसी के कारण हैं . ठीक यही स्थिति क्रोध के साथ हैं बिना क्रोध तत्व के जीवन तो रीढ़ विहीन केचुए के सामान हो जायेगा .. तो यह भी स्थिति तंत्र को स्वीकार नही हैं .

तंत्र स्वीकारता को बहुत महत्त्व देता हैं ....कि ऐसा हैं तो हैं ..तो हैं...... .अब कर लिया स्वीकार अब ... जो भी परिणाम सामने आये .वह भी स्वीकार हैं .पूरे मन से .... पूरे प्राण से.... पूरी आत्मा से.... पूरे ह्रदय से ... पर इस स्वीकारिता की आड़ मे कोई उछह्ल्खता को बढ़ावा नही देता हैं .कि इसके आड़ मे जो मन चाहे सो करते जाए ..

आज का साधक सभ्य हैं सुसंस्कृत हैं और इस विपरीत वातावरण मे भी वह जब साधना के लिए बैठ्ता हैं तो यदि काम क्रोध अति मे ... उसके सामने आ जाते.... किसी मे इसकी मात्रा कम होगी तो दूसरे तत्व की अधिक ..पर परिणाम वही की साधना मे बैठ ही नही पाए या अधूरे मे ही छोडना पड़ी ..

अब अगर हर समस्या को दूर करने के लिए की एक एक साधना करना पड़े तो ...रास्ता बहुत ही बोझिल सा हो जायेगा ,हालाकि वस्तु स्थिति इसके विपरीत ही हैं . समय दोनों रास्तों मे उतना ही हैं . बस मार्ग थोडा सा अलग अलग हो जाते हैं .

तब क्या किया जाए ????

बस मान मसोस कर बैठा रहा जाए ..क्योंकि ..जब आप कुछ भी करने को उठते हैं तो प्रकृति सबसे पहले आपके सामने ऐसी विपरीत परिस्थितियां रखती हैं ..क्योंकि जो शक्तिशाली होगा वही जीवन युद्ध या साधना समर मे टिकेगा ..

अब हर ची ज के लिए मंत्र जप तो ठीक नही हैं ..और वह भी तब जब समय का अत्यधिक अभाव हो ... और ऐसे समय एक विज्ञानं हमारे सामने आता है जिसको हमने जाना समझा तो हैं पर उसकी उच्चता से सभी अनिभिग्य हैं ..वह हैं***** यन्त्र विज्ञानं .*****..

और यह यन्त्र हैं क्या ???

किसी भी नाम का उच्चारण करने पर ..किसी भी देव वर्ग का आवाहन करने पर ...ब्रम्हाडीय शक्ति से सबंधित मंत्र जप करने पर जो आकृति बनती हैं जिसमे उन् शक्तियों से सबंधित सभी उप् शक्तियां भी होती हैं उस ज्यामितीय आकृति को यन्त्र कहा जा सकता हैं . अब निश्चय ही प्राण प्रतिष्ठा और अन्य विधान तो हैं ही पर कुछ विधान तो इतने सरल हैं की ....

मतलब एक से एक अ द्भुत यन्त्र जिनके बारे मे कभी तथ्य सामने आये तो व्यक्ति शायद जीवन भर भी विश्वास न कर पाए .. वह भी स्वयं सिद्ध ....मतलब साधक को जप करना ही ना पड़े ..

अभी तो इस विज्ञानं के अमूल्य रत्न आना बाकी हैं ...इस विज्ञानं से भी आपका परिचय कार्य जाएगा ही ...आने वाले तंत्र कौमुदी के किसी ही अंक मे ..

आज एक ऐसा ही यन्त्र आपके सामने .. जिसको सिद्ध करने का कोई विधान नही बस आप किसी भी कागज मे बनाकर अपने साधना कक्ष मे रख दें .और कोई भी विधान् नही परिणाम आप स्वयं अनुभव करेंगे . हाँ किसी शुभ दिन इसे बना ले तो कहीं ज्यादा उचित होगा ..... पर ऐसा क्या हैं इसमें .. जो यह मनोकामना भी पूर्ति करदेगा .. तो देखें इस यन्त्र की रचना को ..

ॐ********शब्द सारे विश्व का ....परम शक्ति ... और सभी का उद्गम हैं .. तो

ह्रीं****** शब्द को देखें यह ह्रदय के आकार ही प्रतीक होता हैं और इसका निवास स्थान भी ह्रदय कमल मतलब अनाहत चक्र हैं. तो

ऐं *** शब्द को देखे यह भी गले जैसा दीखता हैं तो इसका स्थान विशुद्ध चक्र हैं . तो

क्लीं *** शब्द नाभि के जैसा लगता हैं , तो इसका स्थान नाभि चक्र मतलब मणिपुर चक्र हैं .

इस तरह से हैं आश्चर्य कि बात यह हैं की बीज मंत्रोकी संरचना देखिये किस तरह सिर्फ इनके लिखने के ढंग से यह बताया जा सकता हैं कि यह किन किन स्थानों से जुड़े होंगे या स्थान पर स्थापित हैं .इन विशिष्ट बीज मंत्रो से युक्त होने के कारण यह साधक कि मनो कामना पूर्ति मे सहायक हैं .

क्योंकि तंत्र मे कोई भी बात या तथ्य उपेक्षणीय नही हैं . जो विज्ञानं सभी मे दिव्यता देखता हैउसी ने हर अक्षर मे मे विशिष्ट ता देखी हैं . अगर साधक जानने का इच्छुक हो तो ..

इस यन्त्र का निर्माण या लेखन किसी भी शुभ दिन कर ले ,कैसे करना यह बाते कई कई बार पूर्व के लेखों बताई जा चुकी हैं तो पुनः उल्लेख करना उचित नही हैं ..

इस सरल से प्रयोग को कर के देखें ..और लाभ उठाये ...

==================================

Tanta is not a philosophy………not a principle……………neither it talks about it ,rather it puts the process forward whereby we can get the results …….and to add to that , it does not ignore any condition of life………nor it see them with contempt rather how to bring about divinity in it……….how to make our body the way to reach supreme element ,which we see with contempt. Tantra is a very big ocean, various streams have been added to it and today no one can say how many branches it has.

Tantra understands the shortcomings of life and it does not encourage us to run away from them rather it suggest one way …………one attitude…….one mind-set to understand, not to

run………understand it and get rid of it.Tantra accepts the fact that there is influence of shortcoming of various past lives on human life…. and the kaam, anger whatever they are, they are hiding the basic inherent beauty of soul.

Tantra never favours suppression. It knows very well that any form of energy whatever it may be …if it is suppressed , it will definitely emerge in some way or other, therefore it will be much better to transform it in higher direction of life………………….

Tantra never sees the sexual feeling with inferiority point of view rather it only opposes the excess of it.Tantra says how to make sexual energy directed upwards which is directed downwards in common man. It does not talk about destroying the sexual feeling because it knows this itself is the kundalini power (serpent power) ,just its direction has to be changed because if it is destroyed then human life will become spiritless, it will wither away…….whole joy ,happiness of life will vanish . All the joy and progress of life is due to this power only. Same is the condition with anger .Without anger; life will become spineless like that of earthworm…….so this condition is also not accepted by Tantra.

Tantra gives very high importance to acceptance………………..that if it is like this then ok ……if we have accepted it ……………..whatever may be the consequences, that are also accepted with full mind, full soul, full heart. However in the guise of acceptance, it is not to promote any disharmony that in guise of it, we keep on doing whatever we want to.

Sadhak of present times is well-mannered, civilized and whenever he sits for sadhna in this unfavourable environment, then if kaam, anger is in excess, it comes in front of him. A person may have any of them in deficiency; he might have any other shortcoming in excess….. But ultimately the result is the same that either he is not able to sadhna or he is not able to complete the sadhna.

Now if we have to do sadhna every time to get rid of every problem then the path will become burdensome. However the actual condition is actually opposite of it.Both the ways consume same amount of time but only the paths are different.

Now what we can do?

Should we sit idle…………………because……….whenever we get up to do something then nature first puts forward the unfavourable circumstances in front of us………Because only the powerful will survive in the battle of life and sadhna ….

Now to chant mantra for everything is not correct especially when we are facing scarcity of time….and at this time one science comes to our rescue, the science which we know but we are unaware of its supremacy. That science is Yantra Science.

And what is this Yantra?

The image which is formed after pronunciation of any name, after Aavahan of any deva, after chanting the mantra related to any universal power and which contains all the sub power related to that power is called Yantra. Now though we have Pran-Prathishta (Energizing) process and other process, but several procedures are so much easy that……

Meaning amazing yantras regarding whom if the facts are revealed then people may find it hard to believe ……….that too self-accomplished……..meaning that sadhak does not even have to chant the mantras.

Precious jewels of this science is yet to be revealed…………….You all will be introduced to this science……..in any of the coming editions of Tantra Kaumadi.

Today , let’s see one of such yantra …………….no process to accomplish (siddh) this yantra, just form it on piece of paper and keep it in sadhna room …..Nothing more need to be done, you

yourself will experience the results. It would be much better if it is made on any auspicious day……………..but what is so special about it…………..which will fulfil your wish too………..let's look at the design of this yantra.

ॐ*******(OM)** Supreme power of whole universe ………and origin of everything…….then

ह्रीं**** (Hreem)** If we see it, it appears to be in form of Heart and it's residing place is also lotus heart meaning Anahat Chakra.

ऐं * (Aim)**looks like the throat ,it's place is Vishudha Chakra.

क्लीं *(Kleem) looks like Navel and it's place is Navel Chakra (Manipur Chakra).**

Amazing thing is about the design of these beej mantras…..just by way of writing one can tell about the place where they are associated with or where they are established. Being in combination with these special beej mantras, it helps in fulfilling the wishes of the sadhak. Because in tantra, anything or any fact is not worth ignoring. The science which sees divinity in everything, it has seen the specialty in every alphabet, if sadhak is willing to know it……
Construct or write this yantra on any auspicious day. How to do it has already been told in the previous articles .To repeat it again will not be correct.
Do this easy process and get the benefits.

ITARYONI BADHA SE MUKTI HETU - RUDRA PRAYOG

We are not alone in this infinite universe. This fact has now been accepted by science too. There are many experiments carried out in modern science regarding it and there are such powers about which science becomes silent because they are beyond the understanding limits of science. Well, development of modern science and experimentation is only contribution of few years but in this direction, our sages and saints have done research and experimentation for hundreds of years and put forwards their own thoughts. Primarily, all maharishis have accepted that in universe there are present not only human beings but also various types of creatures besides human beings. Definitely from element point of view, their composition of elements is different from humans but there identity still remains. In this sequence when Aatm

element present inside human leaves physical body at the time of death and attains a new body then it becomes different from humans. In reality Pret, Bhoot, Pisaach, Rakshas live with Aatm element of humans only but they live in Vaasna and other bodies. Besides it, our ancient scriptures accept the existence of various types of creatures in other Loks in which Yaksha, Vidyadhar and Gandharv are important. Now let us talk about other form of humans. When death of person has happened with excessive cravings (Vaasna) then after death he attains Vaasna body instead of subtle/astral body since at the time of death soul was situated in that body. Stronger is the craving, more inferior will be the Yoni of humans. For example, Pret yoni is more inferior to Bhoot Yoni. This topic is very vast but here understanding this topic is essential. Now in order to fulfill their cravings or unfulfilled desires they roam in particular body up till particular time. Definitely their tendencies and basic nature is full of inferiority and that's why they get this Yoni. Sometimes, they wander around the place which was their workplace or their residence during their lifetime. Many of the times they engage in various activities so as to cause harm to their old enemies or other persons in one form or another. Proportion of land and water element is negligible in them and therefore they are powerful than humans. Some of these creatures even possess the ability to enter someone else's body for fulfilling their cravings. Such types of incidents are witnessed by us in our day to day life.

There are various types of Vidhaans present in Tantra for security from Itar Yoni. But for it sadhak has to do various types of procedures which are uneasy. Besides it, in today's era it is not easily possible to arrange for the place/time required in such prayog like cremation ground or forest or doing at midnight.

Vidhaan presented here belongs to Dakshin Maarg but it is very intense which can be done by person easily and he can get rid of this type of problems for all his family members. If there is no such problem then

still he can provide security from them. This is sadhna prayog of Lord Rudra related to Parad Shivling. Basically, Parad Shivling is the base of this whole prayog. Therefore it is necessary to have Parad Shivling formed from pure Parad on which Praan Pratishtha (infusion of praan) and activation procedure have been done in

complete tantric manner. No sadhna can provides success on impure and unconscious/Unenergized parad Shivling.

This prayog can be done by sadhak on any Monday.

It is much better if sadhak does this prayog in night. If it is not possible in night then this prayog can be done in day time too.

Sadhak should take bath, wear red dress and sit on red aasan while facing north.

Sadhak should establish **Parad Shivling** in front of him. Sadhak should do poojan of Guru and Parad Shivling and chant Guru Mantra. Then sadhak should chant 11 rounds of below mantra in front of Parad Shivling. Rudraksh rosary should be used for chanting.

OM NAMO BHAGAWATE RUDRAAY BHOOT VETAAL TRAASANAAY PHAT

After mantra Jap sadhak should keep Parad Shivling in some container and do its Abhishek by water while chanting above mantra. This should be done for approximately 10 minutes. After this, sadhak should sprinkle that water on his family members and in entire house.

In this manner, sadhak should do this procedure for 3 days.

If sadhak does not have any problem and if he wants to do this prayog for security from Tantra Prayog or Itar Yoni obstacles then also he can do this prayog. There is no need to immerse rosary. Sadhak can use it multiple times.

NOTE – Brothers and sisters Amogh Vidhaan of **"Tibbeti Sabar Lakshmi Vashikaran Yantra"** which I told to give it on 21 November , it has not been given only because many of our brothers have not yet got that yantra due to unavoidable reasons and my effort is only this that everyone has got right of progress and good-fortune. So let's wait for **one more week** so that once all of us get yantra, Vidhaan of this amazing Kriya can be given to all.

===

यह अनंत ब्रह्माण्ड में हम अकेले नहीं है इस तथ्य को अब विज्ञान भी स्वीकार करने लगा है. आधुनिक विज्ञान में भी कई प्रकार के परीक्षण इससे सबंधित होने लगे है तथा एसी कई शक्तियां है जिनके बारे में विज्ञान

आज भी मौन हो जाता है क्यों की विज्ञान की समज के सीमा के दायरे के बाहर वह कुछ है. खेर, आधुनिक विज्ञान का विकास और परीक्षण अभी कुछ वर्षों की ही देन है लेकिन इस दिशा में हमारे ऋषि मुनियों ने सेंकडो वर्षों तक कई प्रकार के शोध और परिक्षण किये थे तथा सबने अपने अपने विचार प्रस्तुत किये थे, मुख्य रूप से सभी महर्षियों ने स्वीकार किया था की ब्रह्माण्ड में मात्र मनुष्य योनी नहीं है, मनुष्य के अलावा भी कई प्रकार के जिव इस ब्रहमाड में मौजूद है, निश्चय ही मनुष्य से तात्विक द्रष्टि में अर्थात शरीर के तत्वों के बंधारण में ये भिन्न है लेकिन इनका अस्तित्व बराबर बना रहता है. इसी क्रम में मनुष्य के अंदर के आत्म तत्व जब मृत्यु के समय स्थूल शरीर को छोड़ कर दूसरा शरीर धारण कर लेता है तो वह भी मनुष्य से अलग हो जाता है. वस्तुतः प्रेत, भूत, पिशाच, राक्षश, आदि मनुष्य के ही आत्म तत्व के साथ लेकिन वासना और दूसरे शरीरों से जीवित है. इसके अलावा लोक लोकान्तरो में भी अनेक प्रकार के जिव का अस्तित्व हमारे आदि ग्रन्थ स्वीकार करते है जिनमे यक्ष, विद्याधर, गान्धर्व आदि मुख्य है. अब यहाँ पर बात करते है मनुष्य के ही दूसरे स्वरुप की. जब मनुष्य की मृत्यु अत्यधिक वासनाओ के साथ हुई है तब मृत्यु के बाद उसको सूक्ष्म की जगह वासना शरीर की प्राप्ति होती है क्यों की मृत्यु के समय जिव या आत्मा उसी शरीर में स्थित थी. जितनी ही ज्यादा वासना प्रबल होगी मनुष्य की योनी इतनी ही ज्यादा हिन् होती जायेगी. जेसे की भुत योनी से ज्यादा प्रेत योनी हिन् है. यह विषय अत्यंत वृहद है लेकिन यहाँ पर विषय को इतना समजना अनिवार्य है. अब इन्ही वासनाओ की पूर्ति के लिए या अपनी अधूरी इच्छाओ की पूर्ति के लिए ये ये जिव एक निश्चित समय तक एक निश्चित शरीर में घूमते रहते है, निश्चय ही इनकी प्रवृति और मूल स्वभाव हीनता से युक्त होता है और इसी लिए उनको यह योनी भी प्राप्त होती है. कई बार यह अपने जीवन काल के दरमियाँ जो भी कार्यक्षेत्र या निवास स्थान रहा हो उसके आसपास भटकते रहते है, कई बार ये अपने पुराने शत्रु या विविध लोगो को किसी न किसी प्रकार से प्रताडित करने के लिए कार्य करते रहते है. इनमे भूमि तथा जल तत्व अल्प होता है इस लिए मानवो से ज्यादा शक्ति इसमें होती है. कई जीवो में यह सामर्थ्य भी होता है की वह दूसरों के शरीर में प्रवेश कर अपनी वासनाओ की पूर्ति करे. इस प्रकार के कई कई किस्से आये दिन हमारे सामने आते ही रहते है.
इन इतरयोनी से सुरक्षा प्राप्ती हेतु तंत्र में भी कई प्रकार के विधान है लेकिन साधक को इस हेतु कई बात विविध प्रकार की क्रिया करनी पड़ती है जो की असहज होती है, साथ ही साथ ऐसे प्रयोग के लिए स्थान जेसे की स्मशान या अरण्य या फिर मध्य रात्री का समय आदि आज के युग में सहज संभव नहीं हो पता.
प्रस्तुत विधान एक दक्षिणमार्गी लेकिन तीव्र विधान है जिसे व्यक्ति सहज ही सम्प्पन कर सकता है तथा अपने और अपने घर परिवार के सभी सदस्यों को इस प्रकार की समस्या से मुक्ति दिला सकता है तथा अगर समस्या न भी हो तो भी उससे सुरक्षा प्रदान कर सकता है. यह पारदशिवलिंग से सबंधित भगवान रूद्र का साधना प्रयोग है. मूलतः इसमेंपारद शिवलिंग ही आधार है पुरे प्रयोग का, इस लिए पारद शिवलिंग विशुद्ध पारद से निर्मित हो तथा उस पर पूर्ण तंत्रोक्त प्रक्रिया से प्राणप्रतिष्ठा और चैतन्यकरण प्रक्रिया की गई हो यह नितांत आवश्यक है. अशुद्ध और अचेतन पारद शिवलिंग पर किसी भी प्रकार की कोई भी साधना सफलता नहीं दे सकती है.

यह प्रयोग साधक किसी भी सोमवार को कर सकता है.
साधक रात्रीकाल में यह प्रयोग करे तो ज्यादा उत्तम है, वैसे अगर रात्री में करना संभव न हो तो इस प्रयोग को दिन में भी किया जा सकता है.
साधक स्नान आदि से निवृत हो कर लाल वस्त्रों को धारण करे तथा लाल आसान पर बैठ जाए. साधक का मुख उत्तर की तरफ हो.

साधक अपने सामने **पारदशिवलिंग** को स्थापित करे. साधक गुरु तथा पारद शिवलिंग का पूजन करे तथा गुरुमंत्र का जाप करे और फिरं निम्न मंत्र की ११ माला मंत्र जाप पारदशिवलिंग के सामने करे. यह जाप रुद्राक्ष माला से करना चाहिए.

ॐ नमो भगवते रुद्राय भूत वेताल त्रासनाय फट्

(OM NAMO BHAGAWATE RUDRAAY BHOOT VETAAL TRAASANAAY PHAT)

मंत्र जाप के बाद साधक पारद शिवलिंग को किसी पात्र में रख कर उस पर पानी का अभिषेक उपरोक्त मंत्र को बोलते हुवे करे. यह क्रिया अंदाज़े से १० मिनिट करनी चाहिए. इसके बाद साधक उस पानी को अपने पुरे घर परिवार के सदस्यों पर तथा पुरे घर में छिड़क दे.
इस प्रकार यह क्रिया साधक मात्र ३ दिन करे.
अगर साधक को कोई समस्या नहीं हो तथा मात्र उपरी बाधा से तथा तंत्र प्रयोग से सुरक्षा प्राप्ति के लिए भी अगर यह प्रयोग करना चाहे तो भी यह प्रयोग किया जा सकता है. माला का विसर्जन करने की आवश्यकता नहीं है, साधक इसका उपयोग कई बार कर सकता है.

विशेष बात- भाइयों और बहनों **"तिब्बती साबर लक्ष्मी वशीकरण यन्त्र"** का अमोघ विधान जिसे मैंने २१ नवम्बर को देने को कहा था,उसे मात्र अभी इसलिए नहीं दिया है,क्यूंकि बहुत से भाइयों को वो यन्त्र अभी भी किसी अपरिहार्य कारण से प्राप्त नहीं हो पाए हैं.और मेरा प्रयास मात्र इतना है की सौभाग्य और उन्नति पर सभी का अधिकार है तो,क्यूँ ना हम **१ हफ्ते** और प्रतीक्षा कर लें,ताकि सबको यन्त्र मिलते ही उस अद्वित्तीय क्रिया को संपन्न करने का विधान एक साथ दे दें.

****NPRU****

Posted by Nikhil at 9:47 AM 1 comment:
Labels: BHAY MUKTI SADHNA, bhoot-pret, SHIV SADHNA

TUESDAY, OCTOBER 16, 2012

BHOOTINI SADHNA

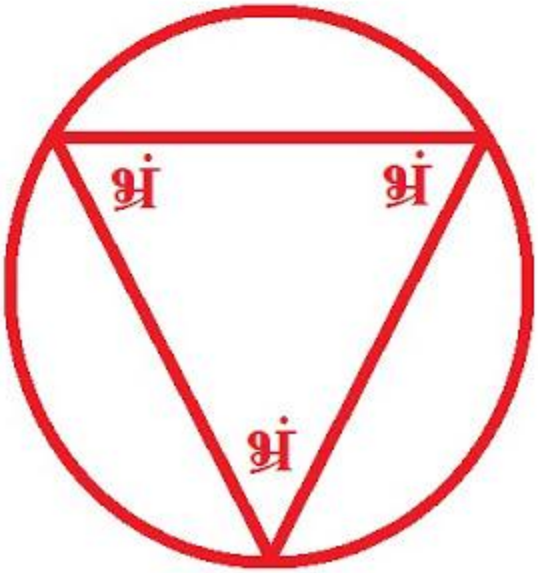

Human imagination has got definite limitation beyond which he cannot even think and his logical mind always stops him to accept beyond his self-knowledge. But in today's modern era , as a result of scientific research some facts have come into light which proves that human journey is not merely a journey from birth to death rather death is only a halt. Human beings after death attains some different yoni, various names and sub-names are given to it.

May be today's science is still doing research on its existence but our ancient sages and saints had done a very elaborate exploration thousands of years back and put forward very amazing information in front of common public. Human after death undergoes a journey depending on his karmas and in this sequence he attains different types of yonis or gets rebirth. There are many differences within it but the yonis which are known among public are Bhoot, Pret, Pisaach, Rakshas or Brahma Rakshas. These all are Karma-dependent. This

subject is very vast. Here we will discuss about the procedures related to them in Tantra.

There are available many prayog in tantra corresponding to various Yonis in which through sadhna, Ittar Yonis are made to do various types of work. But these sadhnas may look easy, but they are not that much easy. Thus it is best for sadhak to do Laghu prayog related to these Ittar yonis.

Bhoot is a male noun, in the same manner Bhootini is a female noun. In reality it is misconception only that Bhootini are dreadful and ugly rather truth is that Bhootini look like any other normal worldly female, they are also beautiful and sweet. Actually their form is manifested in front of us depending upon the sadhna and mental image of Saadhy form. Manifestation of dreadful form in Tamsik sadhna is a separate thing but it is not necessary that such thing will happen in every sadhna.

Prayog presented here is one amazing prayog upon doing which sadhak can manifest Bhootini in his dream and see her and even converse with her. For sadhak this prayog is important in one way that through this prayog, person can get an answer to any of his question from Bhootini in dream. This prayog is not the prayog of Taamas Bhaav of Bhootini. Therefore, Bhootini will manifest in amiable form only.

It is best for sadhak to do this prayog on any Amavasya though this prayog can be done on any Wednesday.

Sadhak should do this prayog in night after 10:00 P.M. First of all, sadhak should take bath, wear red dress and sit on red aasan. After doing Guru Poojan and chanting Guru Mantra, sadhak should make this yantra on white paper. Sadhak should grind banana peel, make its solution and mix vermillion in it and use this as ink. Sadhak should use wood of Banyan tree as pencil for making this yantra. Once yantra is made, sadhak should keep this yantra in any container in front of him/her and light one oil lamp and start chanting mantra.

Sadhak should chant 11 rounds of the below mantra. For this, sadhak has to use Rudraksh rosary.

bhram bhram bhram bhuteshwari bhram bhram bhram phat

After completion of Mantra Jap, sadhak should burn this yantra with help of that lighted lamp. Ash of yantra thus formed has to be applied on forehead as Tilak (ceremonial mark) and above mantra has to be recited three times. After that sadhak should mentally recite his question three times and go to sleep. Sadhak gets darshan of Bhootini in his dreams and she provides answer to his question. After getting answer, sadhak gets up from sleep. At that time sadhak should write the answer otherwise there is every chance that he will forget it.Sadhak should not use that lamp and rosary in any other sadhna but they can used for doing this sadhna again. The container in which yantra was placed, it has to be washed and it can be used. If Yantra ash is still remaining then sadhak should immerse the ash and wood used for writing the yantra. Sadhak on next day can get rid of the mark by washing his face but it is necessary to keep the mark till morning.

==

मनुष्य की कल्पना का एक निश्चित दायरा होता है जिसके आगे वह सोच भी नहीं सकता है और तर्क बुद्धि उनको स्व ज्ञान से आगे कुछ स्वीकार करने के लिए हमेशा रोक लगा देती है, लेकिन आज के आधुनिक युग में वैज्ञानिक परिक्षण में भी ऐसे कई तथ्य सामने आये है जिसके माध्यम से यह सिद्ध होता है की मनुष्य की गति सिर्फ जन्म से ले कर मृत्यु तक की यात्रा मात्र नहीं है वरन मृत्यु तो एक पड़ाव मात्र ही है. मनुष्य मृत्यु के समय शरीर त्याग के बाद कोई विविध योनी को धारण करता है विविध नाम और उपनाम दिए जाते है.

भले ही आज का विज्ञान उसके अस्तित्व पर अभी भी शोध कर रहा हो लेकिन हमारे प्राचीन ऋषि मुनियों ने इस विषय पर सेकडो हज़ारो सालो पहले ही अत्यंत ही प्रगाढ़ अन्वेषण कर के अत्यधिक विस्मय युक्त जानकारी जनमानस को प्रदान की थी. मनुष्य के मृत्यु के बाद उसकी निश्चय ही कार्मिक गति होती है तथा इसी क्रम में विविध प्रकार की योनी उसे प्राप्त होती है या उसका पुनर्जन्म होता है. इसके भी कई कई भेद है, लेकिन जो प्रचलित है वह योनी है भुत, प्रेत, पिशाच, राक्षस या ब्रह्मराक्षस आदि है जो की कर्मजन्य होते है. यह विषय अत्यंत ही वृहद है. यहाँ पर हम चर्चा करेंगे तंत्र में इन से जुडी हुई प्रक्रिया की.

विविध योनियो से सबंधित विविध प्रकार के प्रयोग तंत्र में प्राप्त होते है. जिसमे साधनाओ के माध्यम से विविध प्रकार के कार्य इन इतरयोनियो से करवाए जाते है. लेकिन यह साधनाए दिखने में जितनी सहज लगती है उतनी सहज होती नहीं है इस लिए साधक के लिए उत्तम यह भी रहता है की वह इन इतरयोनियों के सबंध में लघु प्रयोग को सम्प्पन करे.

जिस प्रकार भुत एक पुरुषवाचक संज्ञा है उसी प्रकार भुतिनी एक स्त्रीवाचक संज्ञा है. वस्तुतः यह भ्रम ही है की भुतिनियाँ डरावनी होती है तथा कुरुप होती है, वरन सत्य तो यह है की भुतिनि का स्वरुप भी उसी प्रकार से होता है जिस प्रकार से एक सामान्य लौकिक स्त्री का. उसमे भी सुंदरता तथा माधुर्य होता है. वस्तुतः यह साधना तथा साध्य के स्वरुप के चिंतन पर उनका रूप हमारे सामने प्रकट होता है, तामसिक साधना में भयंकर रूप प्रकट होना एक अलग बात है लेकिन सभी साधना में ऐसा ही हो यह ज़रुरी नहीं है.

प्रस्तुत एक दिवसीय प्रयोग एक अचरज पूर्ण प्रयोग है, जिसे सम्प्पन करने पर साधक को भुतिनी को स्वप्न के माध्यम से प्रत्यक्ष कर उसे देख सकता है तथा उसके साथ वार्तालाप भी कर सकता है. साधको के लिए यह प्रयोग एक प्रकार से इस लिए भी महत्वपूर्ण है की इसके माध्यम से व्यक्ति अपने स्वप्न में भुतिनी से कोई भी प्रश्न का जवाब प्राप्त कर सकता है. यह प्रयोग भुतिनी के तामस भाव के साधन का प्रयोग नहीं है, अतः व्यक्ति को भुतिनी सौम्य स्वरुप में ही द्रश्यमान होगी.

यह प्रयोग साधक किसी भी अमावस्या को करे तो उत्तम है, वैसे यह प्रयोग किसी भी बुधवार को किया जा सकता है.

साधक को यह प्रयोग रात्री काल में १० बजे के बाद करे. सर्व प्रथम साधक को स्नान आदि से निवृत हो कर लाल वस्त्र पहेन कर लाल आसान पर बैठ जाए. गुरु पूजन तथा गुरु मंत्र का जाप करने के बाद दिए गए यन्त्र को सफ़ेद कागज़ पर बनाना चाहिए. इसके लिए साधक को केले के छिलके को पिस कर उसका घोल बना कर उसमे कुमकुम मिला कर उस स्याही का प्रयोग करना चाहिए. साधक वट वृक्ष के लकड़ी की कलम का प्रयोग करे. यन्त्र बन जाने पर साधक को उस यन्त्र को अपने सामने किसी पात्र में रख देना है तथा तेल का दीपक लगा कर मंत्र जाप शुरू करना चाहिए.

साधक को निम्न मंत्र की ११ माला मंत्र जाप करनी है इसके लिए साधक को रुद्राक्ष की माला का प्रयोग करना चाहिए.

भ्रं भ्रं भ्रं भुतेश्वरी भ्रं भ्रं भ्रं फट्

(bhram bhram bhram bhuteshwari bhram bhram bhram phat)

मंत्र जाप पूर्ण होने पर जल रहे दीपक से उस यन्त्र को जला देना है. यन्त्र की जो भष्म बनेगी उस भष्म से ललाट पर तिलक करना है तथा तिन बार उपरोक्त मंत्र का उच्चारण करना है. इसके बाद साधक अपने मन में जो भी प्रश्न है उसके मन ही मन ३ बार उच्चारण करे तथा सो जाए. साधक को रात्री काल में भुतिनी स्वप्न में दर्शन देती है तथा उसके प्रश्न का जवाब देती है. जवाब मिलने पर साधक की नींद खुल जाती है, उस समय प्राप्त जवाब को लिख लेना चाहिए अन्यथा भूल जाने की संभावना रहती है. साधक दीपक को तथा माला को किसी और साधना में प्रयोग न करे लेकिन इसी साधना को दुबारा करने के लिए इसका प्रयोग किया जा सकता है. जिस पात्र में यन्त्र रखा गया है उसको धो लेना चाहिए. उसका उपयोग किया जा सकता है. अगर यन्त्र की राख बची हुई है तो उस राख को तथा जिस लकड़ी से यन्त्र का अंकन किया गया है उस लकड़ी को भी साधक प्रवाहित कर दे. साधक दूसरे दिन सुबह उठ कर उस तिलक को चेहरा धो कर हटा सकता है लेकिन तिलक को सुबह तक रखना ही ज़रुरी है.

****NPRU****

Posted by Nikhil at 8:02 AM No comments:
Labels: bhoot-pret

THURSDAY, OCTOBER 11, 2012

TANTRA AUR PRET SIDDHI

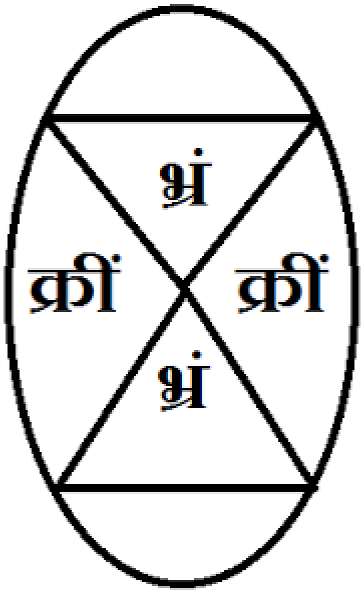

Universe spread all around us is not merely centre of air and smoke rather it contains such secrets and knowledge whose even one part if anyone understands, his life changes!!!! Because universal knowledge is not illusion rather it has been witness of construction and destruction of entire world millions of times. And as long as sequence of construction and destruction will go on, there will be an addition to universal knowledge.....but this knowledge cannot be obtained by books or by reading lengthy scriptures...though these scriptures helps us to understand this knowledge to some extent.

Almighty never hesitates to provides his knowledge provided one condition is satisfied that you are eligible. We can attain universal knowledge in two ways.....1) Aagam Level 2) Nigam Level!!!! Aagam is based on 64 types of tantric knowledge and Nigam is based upon Vedas.....Well Nigam Knowledge or Veda Shastras are not our subject here so let us talk about Tantra Knowledge which is also called secretive knowledge or Mystic Knowledge. Because tantra is not

thought pattern to ponder upon or in other words it is not philosophy. It is 100% based on experiences.

When we talk about experiences then one sadhak experiences three types of experiences while doing sadhna-

1) In the first level of sadhna, he feels his own senses, which we usually understand as pain in hands and feet….inability to sit on aasan.
2) In the second level we experience that OTHER thing which we are accomplishing or whose aavahan is being done.
3) Lastly, one experiences that other-worldly almighty supreme power which we call as state of Samadhi.

But here we are talking about Pret Siddhi which is second-level experience. If you all remember that in last article we read that the lok in which pret resides is called Vaasna Lok and deeper will be the craving, more time it will take for soul to get riddance from Pret Yoni and attain astral body. Besides this, we also understood that the path through which prets and Pisaach comes to earth is called Maha Vaasna Path, which is unified with Mahadivyodh path at the centre of earth…….

But we have not understood the fact till now that why these two paths meet in the centre of earth, not anywhere else. Simple answer to this is that density of energy is maximum at centre of earth or in other words, gravitation power is maximum at centre of earth compared to any other place and due to this gravitation power only, Pret yonis are attracted towards earth.

Before understanding the Vidhaan of this prayog or doing this prayog, you have to keep in mind two very important things-

1) This sadhna is Pret manifestation sadhna. We all know this also that if we accomplish it after manifesting it, pret will follow our directions. But to make it do all this, your resolution should be strong. In other words, you have to sadhna whole heartedly because wherever you become weak, this sadhna will be finished at that particular moment…And one more thing that since these yonis are attracted towards you due to attraction of mantra, you should try as far as possible to use accomplished aasan for this prayog….because that aasan breaks your contact with gravitation pull of earth.

2) Very few among us know this fact that there is one moment in these 24 hours when our body experiences death. In other words this is moment when our all senses become weak and heart pulse stops……what is that moment and when it comes in day to day life, it is very advanced Vidhaan. But while doing this prayog, this moment will come when you will be at the verge of completion of sadhna. You have to understand that mute indication while establishing control over inner fear……..you have to recognise the existence of that thing which do not have any existence and hear its basic feet steps.

Vidhaan- Basically this sadhna is related to **Mishrdaamar Tantra**.

This prayog is done on midnight of any amavasya. In other words, it will be appropriate to do this sadhna between 11:30 to 3:00 in the night.

Dress and Aasan will be black.

Direction will be south.

Use of Veeraasan is much more beneficial.

As Naivedya, roast black til, mix them in honey and make them like a Laddu. Besides this, make an arrangement for Pakode or Bade made up of Udad (black gram) and keep them in leaf or clay bowl.
Lamp will be of mustard oil.
Only black cloth should be spread on Baajot and establish clay container on it in which yantra will be made.

Take bath in the night and sit on aasan in worship room. Perform Guru Poojan, Ganpati Poojan and Bhairav Poojan. Read **Sadgurudev Kavach 11 times** necessarily for security. Now make above-said yantra on that clay container with ring finger or iron-nail and make one circle of water on its four sides by reciting basic mantra i.e. sprinkle it.

And in the middle of yantra, establish one earthen or oil lamp having oil and light it. And the bhoga- container which can be any leaf-bowl or clay container, keep it in front of that plate. Now chant 5 rounds of below mantra by black Hakik or Rudraksh rosary. It may take approximately 3 hours for chanting of mantras.

In the middle of mantra Jap, one can feel rustle in room. Sometimes atmosphere become heavy, it can become gloomy. Sometimes, one can have heavy headache or stomach-ache and one may feel defecation or urination. One can hear the voice of strong stones falling on door or window but do not get distracted by them. Complete the mantra Jap once you have sat for sadhna since getting up even once will make this sadhna banned for you and you cannot accomplish this mantra again in future.

In the middle of Jap, one smoke-like figure is seen nearby you who at completion of Jap manifest itself. Then give him that Bhog-container and take promise that it will provide cooperation in your good deeds uptil 3 years. Then he will give you his own bracelet or piece of cloth and will become invisible. And whenever in future, you want to call him, recite the basic mantra 7 times at lonely place while touching that cloth or bracelet. He will do your work. Keep in mind that using it for harmful purpose will put you in danger. After Jap, Do guru Poojan etc. and get up. On the next day, except your dress and aasan immerse lamp, container, and Baajot cloth. Wash the room with clean water and sprinkle Ganga Water and show Guggal dhoop while reciting Nikhil Kavach.

Mantra:-

Iriyaa Re Chiriyaa, Kaalaa Pret Re Chiriyaa, Pitar Kee Shakti, Kaali Ko Gan, Kaaraj Kare Saral, Dhunva So Bankar Aa, Hawaa Ke Sang Sang Aa, Saadhan Ko Saakaar Kar, Dikhaa Apnaa Roop, Shatru Dare Kaanpe Thar Thar, Kaaraj Moro Kar Re Kaali Ko Gan , Jo Kaaraj Naa Kare Shatru Naa Kaanpe To Duhaai Maataa Kaalkaa Kee. Kaali Kee Aan.

I hope that your profitable and beneficial works will be successful by this non-harmful prayog. Leave fear and become fearless, I pray to Sadgurudev for all of you.

"Nikhil Pranaam"

===

हमारे चारों ओर फैला ब्रह्मांड हवा और धुएं का केन्द्र मात्र नहीं है, अपितु इसमें निहित है ऐसे रहस्य और ऐसा ज्ञान जिसका अगर एक अंश मात्र भी यदि किसी की भी समझ में आ जाये तो उसकी जीवन धारा ही बदल जाती है!!!!

क्योंकि ब्रह्मांडीय ज्ञान कोई कोरी कपोल कल्पना ना हो के इस समस्त चराचर विश्व की उत्पत्ति और विध्वंस का करोडों बार साक्षी बन चुका है और जब तक सृजन और संहार का क्रम चलता रहेगा इस ब्रह्मांडीय ज्ञान में इजाफा होता जायेगा.......पर यह ज्ञान हम किताबों से या बड़े बड़े ग्रंथो को पढ़ कर प्राप्त नहीं कर सकते...किन्तु यह ग्रंथ उस ज्ञान को कुछ हद तक समझने में हमारी संभव सहायता जरूर करते हैं.

परमसत्ता अपना ज्ञान देने में कभी कोई कोताहि नहीं करती पर उसके लिए मात्र एक ही शर्त है की आप में पात्रता होनी चाहिए. ब्रह्मांडीय ज्ञान को हम दो तरह से अर्जित कर सकते हैं – १) आगम स्तर २) निगम स्तर !!!! आगम ६४ तरह के तांत्रिक ज्ञान पर आधारित है और निगम वेदों पर निर्भर करता है.....खैर निगम ज्ञान या वेद शास्त्र यहाँ हमारा विषय नहीं है तो हम बात करते हैं तंत्र ज्ञान की जिसे गुहा ज्ञान या रहस्यमय ज्ञान भी कहते हैं. क्योंकि तंत्र कोई चिंतन-मनन करने वाली विचार प्रणाली नहीं है या यूँ कहें की तंत्र कोई दर्शन शास्त्र नहीं है यह शत प्रतिशत अनुभूतियों पर आधारित है.

अब जब अनुभूतियों की बात करते हैं तो एक साधक साधना करते समय तीन तरह की अनुभूतियों का अनुभव करता है –

१) साधना के प्रथम स्तर पर उसे अपनी इन्द्रियों का बोध होता है जिसे हम ऐसे समझते हैं की हाथ पैर दुःख रहे हैं.....आसन पर बैठा नहीं जाता.

२) दूसरे स्तर पर हमें उस दूसरे की अनुभूति होती है जिसे हम सिद्ध कर रहे होते हैं या जिसका आवाहन किया जा रहा होता है.

३) अंतिम अनुभूति होती है उस अलौकिक, अखंड परम सत्ता की जिसे हम समाधि की अवस्था कहते हैं.

पर यहाँ हम बात कर रहे हैं प्रेत सिद्धि की तो वो दूसरे स्तर की अनुभूति है. यदि आप सब को याद होगा तो पिछले लेख में हमने पढ़ा था की प्रेत जिस लोक में रहते हैं उसे वासना लोक कहते हैं और वासना जितनी गहन होगी उतना ही अधिक समय लगेगा आत्मा को प्रेत योनि से मुक्त हो के सूक्ष्म योनि प्राप्त करने में और साथ ही साथ हमने यह भी समझा था की इन प्रेतों और पिशाचों का भू लोक पर आने वाला मार्ग महावासना पथ कहलाता है किसका महादिव्योध मार्ग से एकीकरण पृथ्वी के केन्द्र में होता है.......

पर हमने तब यह तथ्य नहीं समझा था की पृथ्वी के केन्द्र में ही यह दोनों मार्ग क्यों मिलते हैं कहीं और क्यों नहीं तो इसका एक सीधा सरल उत्तर यह है की भू के गर्भ में अर्थात उसके केन्द्र में ऊर्जा का घ्नतत्व सबसे अधिक मात्रा में होता है या यूँ कहें की केन्द्र में कहीं ओर की तुलना में गुरुत्वाकर्षण की क्रिया सबसे ज्यादा होती है और इसी गुरुत्वाकर्षण की शक्ति के कारण ही प्रेत योनियाँ भू लोक की तरफ खींची चली आती हैं.

इस प्रयोग के विधान को समझने से पहले या ये प्रयोग करने से पहले आपको दो अति महत्वपूर्ण बातों को अपने ज़हन में रखना होगा –

१) यह साधना प्रेत प्रत्यक्षीकरण साधना है तो हम ये भी जानते हैं की यदि आपने उसे प्रत्यक्ष करके सिद्ध कर लिया तो वो आपके द्वारा दिए गए हर निर्देश का पालन करेगा किन्तु उससे यह सब करवाने के लिए आपको अपने संकल्प के प्रति दृढ़ता रखनी पड़ेगी अर्थात आपको पूरे मन, वचन और क्रम से ये साधना करनी पड़ेगी, क्योंकि जहाँ आप कमजोर पड़े आपकी साधना उसी एक क्षण विशेष पर खत्म हो जायेगी......और हाँ एक बात और अब चूंकी ये योनियाँ मंत्राकर्षण की वजह से आपकी तरफ आकर्षित होती है तो यथा संभव कोशिश करें की यदि

आपने आसन सिद्ध किया हुआ है तो आप उसी आसन पर बैठ कर इस प्रयोग को करें... क्योंकि वो आसन भू के गुरुत्व बल से आपका सम्पर्क तोड़ देता है.
२) हम में से बहुत कम लोग यह बात जानते है की दिन के २४ घंटों में एक क्षण ऐसा भी होता है जब हमारी देह मृत्यु का आभास करती है अर्थात यह क्षण ऐसा होता है जब हमारी सारी इन्द्रियाँ शिथिल हो जाती है और हृदय की गति रुक जाती है.... रोज मरा की दिनचर्या में यह पल कौन सा होता है और कब आता है यह तो बहुत आगे का विधान है पर इस प्रयोग को करते समय यह पल तब आएगा जब आप साधना सम्पूर्णता की कगार पर होंगे तो आपको उस समय खुद के डर पर नियंत्रण करते हुए उस मूक संकेत को समझना है......वो जिसका कोई अस्तित्व नहीं है उसके अस्तित्व को पहचानते हुए उसकी मूल पद ध्वनि को सुनना है.
विधान – मूलतः ये साधना **मिश्रडामर तंत्र** से सम्बंधित है.
अमावस्या की मध्य रात्रि का प्रयोग इसमें होता है,अर्थात रात्रि के ११.३० से ३ बजे के मध्य इस साधना को किया जाना उचित होगा.
वस्त्र व आसन का रंग काला होगा.
दिशा दक्षिण होगी.
वीरासन का प्रयोग कही ज्यादा सफलतादायक है.
नैवेद्य में काले तिलों को भूनकर शहद में मिला कर लड्डू जैसा बना लें,साथ ही उडद के पकौड़े या बड़े की भी व्यवस्था रखें और एक पत्तल के दोनें या मिटटी के दोने में रख दें..
दीपक सरसों के तेल का होगा.
बाजोट पर काला ही वस्त्र बिछेगा,और उस पर मिटटी का पात्र स्थापित करना है जिसमें यन्त्र का निर्माण होगा.
रात्रि में स्नान कर साधना कक्ष में आसन पर बैठ जाएँ. गुरु पूजन,गणपति पूजन,और भैरव पूजन संपन्न कर लें. रक्षा विधान हेतु **सदगुरुदेव के कवच का ११ पाठ** अनिवार्य रूप से कर लें.
अब उपरोक्त यन्त्र का निर्माण अनामिका ऊँगली या लोहे की कील से उस मिटटी के पात्र में कर दें और उसके चारों और जल का एक घेरा मूल मंत्र का उच्चारण करते हुए कर बना दें,अर्थात छिड़क दें.
और उस यन्त्र के मध्य में मिटटी या लोहे का तेल भरा दीपक स्थापित कर प्रज्वलित कर दें.और भोग का पात्र जो दोना इत्यादि हो सकता है या मिटटी का पात्र हो सकता है.उस प्लेट के सामने रख दें.अब काले हकीक या रुद्राक्ष माला से ५ माला मंत्र जप निम्न मंत्र की संपन्न करें.मंत्र जप में लगभग ३ घंटे लग सकते हैं.
मंत्र जप के मध्य कमरे में सरसराहट हो सकती है,उबकाई भरा वातावरण हो जाता है,एक उदासी सी चा सकती है.कई बार तीव्र पेट दर्द या सर दर्द हो जाता है और तीव्र दीर्घ या लघु शंका का अहसास होता है.दरवाजे या खिडकी पर तीव्र पत्रों के गिरने का स्वर सुनाई दे सकता है,इनटू विचलित ना हों.किन्तु साधना में बैठने के बाद जप पूर्ण करके ही उठें. क्यूंकि एक बार उठ जाने पर ये साधना सदैव सदैव के लिए खंडित मानी जाती है और भविष्य में भी ये मंत्र दुबारा सिद्ध नहीं होगा.
जप के मध्य में ही धुएं की आकृति आपके आस पास दिखने लगती है.जो जप पूर्ण होते ही साक्षात् हो जाती है,और तब उसे वो भोग का पात्र देकर उससे वचन लें लें की वो आपके श्रेष्ट कार्यों में आपका सहयोग ३ सालों तक करेगा,और तब वो अपना कडा या वस्त्र का टुकड़ा आपको देकर अदृश्य हो जाता है,और जब भी भाविओश्य में

आपको उसे बुलाना हो तो आप मूल मंत्र का उच्चारण ७ बार उस वस्त्र या कड़े को स्पर्श कर एकांत में करें,वो आपका कार्य पूर्ण कर देगा. ध्यान रखिये अहितकर कार्यों में इसका प्रयोग आप पर विपत्ति ला देगा.जप के बाद पुनः गुरुपूजन,इत्यादि संपन्न कर उठ जाएँ और दुसरे दिन अपने वस्त्र व आसन छोड़कर,वो दीपक,पात्र और बाजोट के वस्त्र को विसर्जित कर दें. कमरे को पुनः स्वच्छ जल से धो दें और निखिल कवच का उच्चारण करते हुए गंगाजल छिड़क कर गूगल धुप दिखा दें.

मंत्र:-

इरिया रे चिरिया,काला प्रेत रे चिरिया.पितर की शक्ति,काली को गण,कारज करे सरल,धुंआ सो बनकर आ,हवा के संग संग आ,साधन को साकार कर,दिखा अपना रूप,शत्रु डरें कापें थर थर,कारज मोरो कर रे काली को गण,जो कारज ना करें शत्रु ना कांपे तो दुहाई माता कालका की.काली की आन.

मुझे आशा है की आप इस अहानिकर प्रयोग के द्वारा लाभ और हितकर कारों को सफलता देंगे. भय को त्याग कर तीव्रता को आश्रय दें,यही मैं सदगुरुदेव से हम सभी के लिए प्राथना करती हूँ.

KRODH BHAIRAV SADHNA

In field of Tantra, place of Lord Bhairav is amazing in itself. He has always been revered and worshipped among sadhaks from centuries because of providing quick accomplishments and doing welfare of sadhaks. All his diverse form, are same as Shiva form and are amazing and exceptional in themselves. Though there are 52 forms of Bhairav are in vogue in Tantra field, but eight forms are known primarily. These are in combination known by the name of Asht Bhairav. In fact various types of sadhnas related to Lord Bhairav have been carried out through various Tantric

sects. In Kapaalik, Nath, aghor sect etc. place of Lord Bhairav has been considered to be supreme. In Tantra, on one hand, it is necessary to do poojan of Lord Ganpati so as to get rid of obstacles. Along with it, siddhs are also of view that Bhairav poojan is also a necessary procedure for any sadhna because he is the god who provides security to sadhak and sadhna procedure followed by sadhak. In fact, Bhairav has been presented as destructive god as a result of which he is seen among common public with fear. But his destructive nature is not for sadhak rather for enemies and troubles of sadhak. This fact has been experienced by many Maha Siddhs in their lives. From Aadi Shankracharya, Gorakhnath to all the contemporary and ancient Siddhs, all have unanimously accepted Bhairav sadhna as essential and very important procedure of life. Though various types of procedures related to Lord Bhairav are known among sadhaks and within it too Batuk Bhairav and Kaal Bhairav form are forms most popular among Tantra sadhaks. But along with it other forms of Bhairav are also special in their own way. Same thing applies to Lord Krodh Bhairav too. This form is the embodiment of anger i.e. form full of Tamas character. Due to predominance of Tamas character, sadhak gets very fast and instantaneous results. His upasana has been done for very intense procedures like Maaran, Ucchatan, for destroying army etc. In fact, this sadhna is not so much popular. There are many reasons behind it, especially his destructive nature. Therefore sadhak do not attempt his sadhna out of fear. Due to extreme Tamas character, these procedures are uneasy as well as little bit cumbersome. Sadhna presented here is related to this form of Lord which when completed by sadhak, he can destroy the entire family of enemies. This procedure has only been known among accomplished sadhaks because though it is very intense prayog but it does not too much of time. Just by doing sadhna once, sadhak can take benefit out of it throughout his life. In today's era when sadhak is always surrounded by insecurity and there is crowd of known and unknown enemies at each and every step then in such circumstances, this type of procedure is necessary. Therefore in spite of being an intense procedure, this procedure has been presented here so that at the time of need, sadhak can maintain the dignity of his life and family and attain complete security.

This procedure is highly intense procedure. Therefore sadhak should do this procedure after carefully considering his own courage levels. Sadhak may have intense experiences during sadhna.

If any person is troubling sadhak very much and is causing harm without any reason then it is right to do this procedure. But this procedure should not be done to trouble anyone without any reason otherwise sadhak may have to face consequences. Sadhak should take this procedure as defensive procedure and he can do it for securing his family.

Sadhak can do this procedure on any Amavasya or eighth day of Krishn Paksha of any month in cremation ground or any uninhabited place. It should be done after 10:00 P.M in night.
Sadhak should wear black dress and sit on black aasan. Sadhak should face south direction.
Sadhak should establish any Bhairav idol or picture in front of him and offer vermillion on it. Sadhak should perform poojan of picture/idol after doing Guru Poojan. Sadhak should offer red colour flowers. Sadhak should offer wine in any container also.
After it, sadhak should chant Guru Mantra. Thereafter, sadhak should do Nyas procedure.

KAR NYAS

BHRAAM ANGUSHTHAABHYAAM NAMAH
BHREEM TARJANIBHYAAM NAMAH
BHROOM MADHYMABHYAAM NAMAH
BHRAIM ANAAMIKAABHYAAM NAMAH
BHRAUM KANISHTKABHYAAM NAMAH
BHRAH KARTAL KARPRISHTHAABHYAAM NAMAH

HRIDYAADI NYAS

BHRAAM HRIDYAAY NAMAH
BHREEM SHIRSE SWAHA
BHROOM SHIKHAYAI VASHAT
BHRAIM KAVACHHAAY HUM
BHRAUM NAITRTRYAAY VAUSHAT
BHRAH ASTRAAY PHAT

After Nyas, sadhak should chant 51 rosaries of below mantra using Rudraksh rosary.

OM BHRAM BHRAM BHRAM KRODHBHAIRAVAAY AMUKAM UCCHAATAY BHRAM BHRAM BHRAM PHAT

After completion of chanting, sadhak should ignite the fire in any vessel there and offer oblation of meat mixed with wine. Leave the wine offered as Bhog there. On next day, offer curd or any food article to any dog.
After it, if sadhak want to apply this procedure, sadhak should do above procedures after 10:00 P.M in the night like poojan etc. and chant 1 round of this mantra. Then sadhak should offer 101 oblations of meat mixed with wine. Use name of person or enemy (on which procedure needs to be done) in place of Amukam in Mantra. In this manner, ucchatan of that person is done and he never troubles sadhak. If sadhak

after offering oblation throws the leftovers or ash in the house of enemy, then whole family of enemy gets into trouble. All member of family have to face troubles and enemy is destroyed along with his family.

==

तंत्र के क्षेत्र में भगवान भैरव का स्थान तो अपने आप में निराला है, यह देव अपने साधकोको शीघ्र सिद्धि एवं कल्याण प्रदान करने के कारण सदियों से महत्वपूर्ण उपास्य देव रहे है. भगवान शिव के स्वरुपसमही उनके ये विविध रूप, सभी स्वरुप अपने आप में निराले तथा विलक्षण, तंत्र के क्षेत्र में भैरव के यूँ तो ५२ रूप प्रचलित है लेकिन ८ रूप मुख्यरूप से ज्ञात है. इनको संयुक्त रूप से अष्ट भैरव के नाम से जाना जाता है. वस्तुतः भगवान भैरव से सबंधित कई कई प्रकार की तांत्रिक साधना विविध मत के अंतर्गत होती आई है. कापालिक, नाथ, अघोर इत्यादि साधना मत में तो भगवान भैरव का स्थान बहोत ही उच्चतम माना गया है. तंत्र में जहां एक और गणपति को विघ्न निवारक के रूप में पूजन करना अनिवार्य क्रम है तो साथ ही साथ सिद्धो के मत से किसी भी साधना के लिए भैरव पूजन भी एक अनिवार्य क्रम है क्यों की यह रक्षात्मक देव है जो की साधक तथा साधक के साधना क्रम की सभी रूप में रक्षा करते है. वस्तुतः भैरव को संहारात्मक देवता के रूप में प्रस्तुत कर दिया गया है जिसके कारण सामान्य जनमानस के मध्य इनको भय की द्रष्टि से देखा जाता है लेकिन इनकी संहारात्मक प्रकृति साधक के लिए नहीं वरन साधक के शत्रु तथा कष्टों के लिए होती है तथा इसी तथ्य का अनुभव तो कई महासिद्धो ने अपने जीवन में किया है, आदि शंकराचार्य गोरखनाथ से ले कर सभी अर्वाचीन प्राचीन सिद्धोने एक मत में भगवान भैरव की साधना को अनिवार्य तथा जीवन का एक अति आवश्यक क्रम माना है. यूँ तो भगवान भैरव से सबंधित कई कई प्रकार के प्रयोग साधको के मध्य है ही तथा इसमें भी बटुकभैरव एवं कालभैरव स्वरुप तो तंत्र साधको के प्रिय रहे है लेकिन साथ ही साथ भैरव के अन्य स्वरुप भी अपनी एक अलग ही विलक्षणता को लिए हुवे है. भगवान क्रोध भैरव के सबंध में भी ऐसा ही है. यह स्वरुप क्रोध का ही साक्षात स्वरुप है अर्थात पूर्ण तमस भाव से युक्त स्वरुप. यह स्वरुप पूर्ण तमस को धारण करने के कारण साधक को अत्यधिक तीव्र रूप से तथा तत्काल परिणाम की प्राप्ति होती है. इनकी उपासना शत्रुओ के मारण, उच्चाटन, सेना मारण आदि अति तीक्ष्ण क्रियाओं के लिए होती आई है. वस्तुतः इनकी साधना इतनी प्रचलित नहीं है इसके पीछे भी कई कारण है, खास कर इनकी संहारात्मक प्रकृति. इसी लिए भयवश भी इनकी साधना साधक नहीं करते है, साक्षात् तमस का रूप होने के कारण इनके प्रयोग असहज भी है तथा थोड़े कठिन भी. प्रस्तुत साधना भगवान के इसी स्वरुप की साधना है जिसको पूर्ण कर लेने पर साधक इसका प्रयोग अपने किसी भी शत्रु पर कर उसको जमींन चटा सकता है, शत्रु के पुरे घर परिवार को भी तहस महस कर सकता है, यह प्रयोग भी सिर्फ सिद्धो के मध्य ही प्रचलित रहा है क्यों की भले ही यह प्रयोग उग्र है लेकिन इसमें ज्यादा समय नहीं लगता है तथा एक बार साधना सम्प्पन कर लेने पर साधक उससे जीवन भर लाभ उठा सकता है. आज के युग में जहां एक तरफ असुरक्षा सदैव ही साधक पर हावी रहती है तथा पग पग पर ज्ञात अज्ञात

शत्रुओ का जमावडा लगा हुआ है तब एसी स्थिति में इस प्रकार के प्रयोग अनिवार्य ही है, इस लिए उग्र प्रयोग होने के कारण भी इस प्रयोग को यहाँ पर प्रस्तुत किया जा रहा है जिससे की आवश्यकता पड़ने पर साधक अपने जीवन की तथा अपने परिवार की गरिमा को रख सके तथा पूर्ण सुरक्षा को प्राप्त कर सके. यह प्रयोग अत्यधिक तीव्र प्रयोग है अतः साधक अपनी विवेक बुद्धि के अनुसार स्वयं की हिम्मत आदि के बारे में सोच कर ही प्रयोग करे, प्रयोग के मध्य साधक को तीव्र अनुभव हो सकते है.

साधक को अगर कोई व्यक्ति अत्यधिक परेशान कर रहा हो तथा बिना कारण अहित किये जा रहा हो तब यह प्रयोग करना उचित है लेकिन सिर्फ किसी को बेवजह परेशान करने के उद्देश्यआदि को मन में रख कर यह प्रयोग नहीं करना चाहिए वरना साधक को इसका परिणाम भुगतना पड़ सकता है. साधक को इस प्रयोग को रक्षात्मक रूप से लेना चाहिए तथा अपनी तथा घर परिवार की सुरक्षा के लिए साधक यह प्रयोग कर सकता है.

यह प्रयोग साधक किसी भी अमावस्या या कृष्ण पक्ष अष्टमी को स्मशान में या निर्जन स्थान में करे. समय रात्रि में १० बजे के बाद का रहे

साधक काले रंग के वस्त्र को धारण करे तथा काले रंग के आसन पर बैठे. साधक का मुख दक्षिण दिशा की तरफ होना चाहिए.

साधक अपने सामने भैरव का कोई विग्रह या चित्र स्थापित करे, उस पर सिन्दूर अर्पित करे. साधक गुरु पूजन कर चित्र या विग्रह का पूजन करे. साधक लाल रंग के पुष्प का प्रयोग करे. साधक को किसी पात्र में मदिरा भी अर्पित करनी चाहिए.

इसके बाद साधक को गुरु मंत्र का जाप करना चाहिए. जाप के बाद साधक न्यास करे.

करन्यास

भ्रां अङ्गुष्ठाभ्यां नमः

भ्रीं तर्जनीभ्यां नमः

भ्रूं मध्यमाभ्यां नमः

भ्रैं अनामिकाभ्यां नमः

भ्रौं कनिष्टकाभ्यां नमः

भ्रः करतल करपृष्ठाभ्यां नमः

हृदयादिन्यास

भ्रां हृदयाय नमः

भ्रीं शिरसे स्वाहा

भ्रूं शिखायै वषट्

भ्रैं कवचाय हूं

भ्रौं नेत्रत्रयाय वौषट्

भ्रः अस्त्राय फट्

न्यास के बाद साधक रुद्राक्ष माला से निम्न मन्त्र की ५१ माला मन्त्र जाप करे.

ॐ भ्रं भ्रं भ्रं क्रोधभैरवाय अमुकं उच्चाटय भ्रं भ्रं भ्रं फट्

(OM BHRAM BHRAM BHRAM KRODHBHAIRAVAAY AMUKAM UCCHAATAY BHRAM BHRAM BHRAM PHAT)

मन्त्र जाप पूर्ण होने पर साधक वहीँ पर किसी पात्र में आग प्रज्वलित कर के १०८आहुति बकरे के मांस में शराब को मिला कर अर्पित करे. भोग के लिए अर्पित की गई मदिरा वहीँ छोड़ दे. दूसरे दिन किसी श्वान को दहीं या कुछ भी अन्य खाध्य प्रदार्थ खिलाएं.

इसके बाद साधक को जब भी प्रयोग करना हो तो साधक को रात्री काल में १० बजे के बाद उपरोक्त क्रियाओं अनुसार ही पूजन आदि क्रिया कर इसी मन्त्र की १ माला मन्त्र का जाप कर १०१ आहुति शराब तथा बकरे के मांस को मिला कर देनी चाहिए. मन्त्र में अमुकं की जगह सबंधित व्यक्ति या शत्रुका नाम लेना चाहिए जिसके ऊपर प्रयोग किया जा रहा हो, इस प्रकार करने से उस व्यक्ति का उच्चाटन हो जाता है तथा वह साधक के जीवन में कभी परेशानी नहीं डालता. अगर साधक प्रयोग की आहुति देने के बाद निर्माल्य या भष्म को उठा कर शत्रु के घर के अंदर दाल देता है तो शत्रु का पूरा घर परेशान हो जाता है, घर के सभी सदस्यों को दुःख एवं कष्ट का सामना करना पड़ता है तथा शत्रु पूर्ण घर परिवार सहित बरबाद हो जाता है.

****NPRU****

Posted by Nikhil at 9:01 PM 4 comments: Links to this post
Labels: BHAIRAV SADHNA

THURSDAY, FEBRUARY 28, 2013

MAHARSHI KAALAAGNI RUDRA PRANEET MAAHAAKAAL BATUK BHAIRAV SADHNA PRAYOG

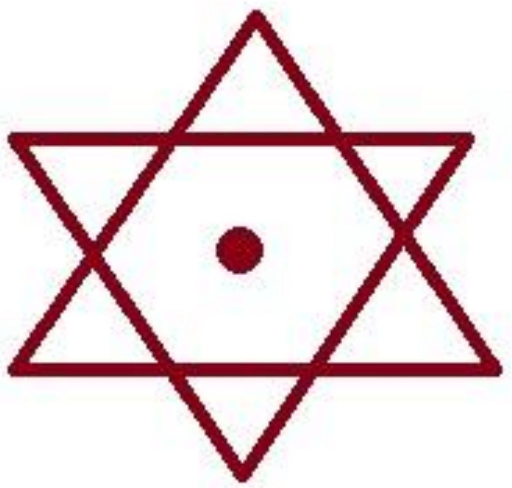

Jai Sadgurudev,
Yam YamYam Yaksh RoopamDashdishivadnamBhumikampymaanam |
Sam SamSamSanhaarmoortiShubhmukutJatashekharamChandrbimbam ||
Dam DamDamDeerghkaayamVikritnakh Mukh ChaudharvroyamKaraalam
Pam PamPamPaapnaashamPranmatSatatamBhairavamKshetrpaalam ||

Sadgurudev has not only told the various dimensions of Bhairav Upasana but also made many sadhaks competent in them. He used to say that before entering into sadhna field, every sadhak should necessarily do Bhairav Sadhna because it not only gets rid of obstacles in sadhna but also provides the blessings and grace of Lord Bhairav.

Reason for describing Lord Bhairav in alphabetical form is only this that as compared to other god, he is present everywhere in universe. The way words can't be bound in any bondage, in the same manner Bhairav also cannot tolerate any obstacle and destroy it and provides security to sadhak.
This power of him is described by sadhak in various forms and attained by sadhak after doing sadhna and get rid of pain and troubles of life.
In fact, Bhairav sadhna is sadhna of Lord Shiva only because Bhairav is form of Lord Shiva only, it is his dancing form. Bhairav is also very innocent like Shiva. On one hand, his highly intense form can cause devastation within a second and on other hand, he can provide devotee all the things.
But still, in society people shiver by listening to name of Bhairav, they connect his name with Mantra, Tantra and black magic. To get rid of these misconceptions,

Gurudev published book named “Bhairav Sadhna” so that people can know the truth and get the benefits…
One sadhna of so many sadhnas of Bhairav is **Maharishi Kaalagni Rudra Praneet “Mahakaal Batuk Bhairav”** sadhna. The speciality of this sadhna is that it is sadhna of Batuk form of intense form of Lord Mahakaal by which sadhak experiences intensity along with politeness and it uproots his scarcities of life, all visible or hidden enemies. This one day sadhna procedure can solve the problems of poverty, hidden enemies, debt and makes possible fulfilment of desire and attainment of grace of Lord Bhairav. Most of the times, we cannot feel the intensity of procedure till the time we do not do it. Do this procedure and tell me the results. This procedure needs to be done on midnight of Sunday. Sadhak should take bath, wear yellow clothes and sit on aasan facing south direction. Do panchopchar poojan of Sadgurudev and Lord Ganpati and chant their mantra according to your capacity. Thereafter spread one yellow cloth on Baajot in front of you. Make above-mentioned yantra on it using mixture of lampblack and vermillion. Make a heap of black sesame in middle of yantra and ignite a four-wicked lamp on it. Do panchopchar poojan of lamp. In poojan Naivedya of Udad (black gram) Pakode or Bade and curd should be offered. Lilly flowers or red coloured flowers should be offered. Now take Sankalp (resolution) for fulfilment of desire. Thereafter do the Viniyog procedure.
Asya Mahakaal Vatuk Bhairav Mantrasya Kaalagni Rudra Rishih Anushtup Chand Aapduddharak Dev Batukeshwar Devta Hreem Beejam Bhairavi Vallabh Shaktih Dandpaani Keelak Sarvabheesht Praptyarthe Samastaapannivaaranaarthe Jape Viniyogah
Now perform Nyaas procedure
RISHYAADI NYAS-
Kaalagni Rudra Rishye Namah Shirse
Anushtup Chandse Namah Mukhe
Aapduddharak Dev Batukeshwar Devtaaye Namah Hridaye
Hreem Beejaay Namah Guhyo
Bhairavi Vallabh Shaktye Namah Paadyo
Sarvabheesht Praptyarthe Samastaapannivaaranaarthe Jape Viniyogaay Namah Sarvaange

KAR NYAS
HRAAM ANGUSHTHAABHYAAM NAMAH
HREEM TARJANIBHYAAM NAMAH
HROOM MADHYMABHYAAM NAMAH
HRAIM ANAAMIKAABHYAAM NAMAH

HRAUM KANISHTKABHYAAM NAMAH
HRAH KARTAL KARPRISHTHAABHYAAM NAMAH

ANG NYAS
HRAAM HRIDYAAY NAMAH
HREEM SHIRSE SWAHA
HROOM SHIKHAYAI VASHAT
HRAIM KAVACHHAAY HUM
HRAUM NAITRTRYAAY VAUSHAT
HRAH ASTRAAY PHAT

Now take vermillion-mixed rice in hand and recite below mantra 11 times and meditate. Offer the rice in front of lamp.
Neel Jeemoot Sankaasho Jatilo Rakt Lochanah
Danshtra Karaal Vadnah Sarp Yagyopveetvaan |
Danshtraayudhaalankritasch Kapaal Strag Vibhushitah
Hast Nyast Kireeteeko Bhasm Bhushit Vigrahah ||
After it chant 11 rounds of below mantra by Rudraksh, Moonga or black agate rosary.
OM
HREENGVATUKAAYKSHROUMKSHROUMAAPDUDDHAARNAAYKURUKURU VATUKAAYHREENGVATUKAAY SWAHA ||
After completion of procedure, on next day keep Naivedya, yellow cloth and lamp in any uninhabited place. Sprinkle water on all its 4 sides (making a circle in process), pray and return back. Sadhak should not look back.
This procedure is self-experienced. Do share the experiences after doing it. I have not mentioned the experiences since experience of each person differs from other based on their proportion of elements in body.
"Nikhil Pranaam"
==

जय सगुरुदेव,

यं यं यं यक्ष रूपम दशदिशीवदनं भूमिकम्पयमानं |
सं सं सं संहारमूर्ती शुभमुकुट जटाशेखरं चंद्रबिम्बम ||
दं दं दं दीर्घकायं विकृतनख मुख चौर्ध्वरोयम करालं,
पं पं पं पापनाशम प्रणमत सततं भैरवं क्षेत्रपालम ||

सदगुरुदेव ने भैरव उपासना के अनेक आयाम न केवल बताए हैं अपितु अनेक साधकों को इसमें

निपुण भी किया है उनका कहना था कि प्रत्येक साधक को साधना क्षेत्र में उतरने से पहले भैरव साधना अवश्य कारण चाहिए, क्योंकि इससे ना केवल साधना में आने वाले विघ्न दूर होते हैं बल्कि भगवान भैरव कि कृपा भी प्राप्त होती है.

भगवान भैरव को शब्दमय रूप में वर्णित करने का कारण सिर्फ इतना है कि अन्य देव कि अपेक्षा पूरे ब्रहांड में सर्वत्र विद्दमान हैं, जिस प्रकार शब्द को किसी भी प्रकार के बंधन में नहीं बाँधा जा सकता उसी प्रकार भैरव भी किसी भी विघ्न या बाधा को सहन नहीं कर पाते और उसे विध्वंश कर साधक को पूर्ण अभय प्रदान करते हैं,
उनकी इसी शक्ति को साधक अनेक रूपों वर्णित कर साधनाओं के द्वारा प्राप्त कर अपने जीवन के दुःख और कष्टों से मुक्ति प्राप्त करते हैं,
वस्तुतः भैरव साधना भगवान शिव कि ही साधना है क्योंकि भैरव तो शिव का ही स्वरुप है उनका ही एक नर्तनशील स्वरुप. भैरव भी शिव की ही तरह अत्यन्त भोले हैं, एक तरफ अत्यधिक प्रचंड स्वरूप जो पल भर में प्रलय ला दे और एक तरफ इतने दयालु की आपने भक्त को सब कुछ दे डाले,
इसके बाद भी समाज में भैरव के नाम का इतना भय कि नाम सुनकर ही लोग काँप जाते हैं, उससे तंत्र मन्त्र या जादू टोने से जोड़ने लगते हैं, गुरुदेव ने इन्हीं भ्रांतियों को दूर करने के लिए "भैरव् साधना" नामक पुस्तक भी प्रकाशित की ताकि लोग इसकी सत्यता को समझें और लाभान्वित हों सकें......
भैरव की उन अनेक साधनाओं में एक साधना है **महर्षि कालाग्नि रूद्र प्रणीत"महाकाल बटुक भैरव"** साधना. इस साधना की विशेषता है की ये भगवान् महाकाल भैरव के तीक्ष्ण स्वरुप के बटुक रूप की साधना है जो तीव्रता के साथ साधक को सौम्यता का भी अनुभव कराती है और जीवन के सभी अभाव,प्रकट वा गुप्त शत्रुओं का समूल निवारण करती है.विपन्नता,गुप्त शत्रु,ऋण,मनोकामना पूर्ती और भगवान् भैरव की कृपा प्राप्ति,इस १ दिवसीय साधना प्रयोग से संभव है. बहुधा हम प्रयोग की तीव्रता को तब तक नहीं समझ पाते हैं जब तक की स्वयं उसे संपन्न ना कर लें,इस प्रयोग को आप करिए और परिणाम बताइयेगा.
ये प्रयोग रविवार की मध्य रात्रि को संपन्न करना होता है.स्नान आदि कृत्य से निवृत्त्य होकर पीले वस्त्र धारण कर दक्षिण मुख होकर बैठ जाएँ.सदगुरुदेव और भगवान् गणपति का पंचोपचार पूजन और मंत्र का सामर्थ्यानुसार जप कर लें तत्पश्चात सामने बाजोट पर पीला वस्त्र बिछा

लें,जिस के ऊपर काजल और कुमकुम मिश्रित कर ऊपर चित्र में दिया यन्त्र बनाना है और यन्त्र के मध्य में काले तिलों की ढेरी बनाकर चौमुहा दीपक प्रज्वलित कर उसका पंचोपचार पूजन करना है,पूजन में नैवेद्य उड़द के बड़े और दही का अर्पित करना है .पुष्प गेंदे के या रक्त वर्णीय हो तो बेहतर है.अब अपनी मनोकामना पूर्ती का संकल्प लें.और उसके बाद विनियोग करें.

अस्य महाकाल वटुक भैरव मंत्रस्य कालाग्नि रूद्र ऋषिः अनुष्टुप छंद आपदुद्धारक देव बटुकेश्वर देवता ह्रीं बीजं भैरवी वल्लभ शक्तिः दण्डपाणि कीलक सर्वाभीष्ट प्राप्तयर्थे समस्तापन्निवाराणार्थे जपे विनियोगः

इसके बाद न्यास क्रम को संपन्न करें.

ऋष्यादिन्यास –

कालाग्नि रूद्र ऋषये नमः शिरसि

अनुष्टुप छन्दसे नमः मुखे

आपदुद्धारक देव बटुकेश्वर देवताये नमः हृदये

ह्रीं बीजाय नमः गुह्ये

भैरवी वल्लभ शक्तये नमः पादयो

सर्वाभीष्ट प्राप्तयर्थे समस्तापन्निवाराणार्थे जपे विनियोगाय नमः सर्वांगे

करन्यास -

ह्रां अङ्गुष्ठाभ्यां नमः

ह्रीं तर्जनीभ्यां नमः

ह्रूं मध्यमाभ्यां नमः

ह्रैं अनामिकाभ्यां नमः

ह्रौं कनिष्टकाभ्यां नमः

ह्रः करतल करपृष्ठाभ्यां नमः

अङ्गन्यास-

ह्रां हृदयाय नमः

ह्रीं शिरसे स्वाहा

ह्रूं शिखायै वषट्

ह्रैं कवचाय हूम

ह्रौं नेत्रत्रयाय वौषट्

ह्रः अस्त्राय फट्

अब हाथ में कुमकुम मिश्रित अक्षत लेकर निम्न मंत्र का ११ बार उच्चारण करते हुए ध्यान करें और उन अक्षतों को दीप के समक्ष अर्पित कर दें.

नील जीमूत संकाशो जटिलो रक्त लोचनः

दंष्ट्रा कराल वदन: सर्प यज्ञोपवीतवान |

दंष्ट्रायुधालंकृतश्च कपाल स्रग विभूषितः

हस्त न्यस्त किरीटीको भस्म भूषित विग्रह: ||

इसके बाद निम्न मूल मंत्र की रुद्राक्ष,मूंगा या काले हकीक माला से ११ माला जप करें

ॐ ह्रीं वटुकाय क्ष्रौं क्ष्रौं आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीं वटुकाय स्वाहा ||

OM HREENG VATUKAAY KSHROUM KSHROUM AAPDUDDHAARNAAY KURU KURU VATUKAAY HREENG VATUKAAY SWAHA ||

प्रयोग समाप्त होने पर दूसरे दिन आप नैवेद्य,पीला कपडा और दीपक को किसी सुनसान जगह पर रख दें और उसके चारो और लोटे से पानी का गोल घेरा बनाकर और प्रणाम कर वापस लौट जाएँ तथा मुड़कर ना देखें.

ये प्रयोग अनुभूत है,आपको क्या अनुभव होंगे ये आप खुद बताइयेगा,मैंने उसे यहाँ नहीं लिखा है. तत्व विशेष के कारण हर व्यक्ति का नुभव दूसरे से प्रथक होता है. सदगुरुदेव आपको सफलता दें और आप इन प्रयोगों की महत्ता समझ कर गिडगिडाहट भरा जीवन छोड़कर अपना सर्वस्व पायें यही कामना मैं करती हूँ.

KUCHH SARAL KINTU ATYANT PRABHAAVKAARI AAYURVED PRAYOG

रस विज्ञान, ज्योतिष और आयुर्वेद तंत्र ये तंत्र विज्ञान की ही शाखाए है. मेरे आध्यात्मिक और साधनात्मक काल में तंत्र और रसायन विज्ञान पर अन्वेषण करते समय सदगुरुदेव जी के आशिर्वाद मुझे ये अवसर प्राप्त हुआ कि मै उन दिव्य संतो और साधुओ से मिला और उन्होंने भी मुझे सभी विषयो पर विस्तृत रूप से जानकारी दी और साथ में उनका आशीर्वाद और निश्छल स्नेह भी. उसी दौरान मुझे एक दिव्य और अद्भुत आयुर्वेद तंत्रज्ञ से मिलने का अवसर भी प्राप्त हुआ. उन्होंने ना केवल मुझे ऐसे उपचार बताए जो रोगों कों समाप्त कर सकते है अपितु इन दिव्य जड़ी बूटियों से और "तंत्र के माध्यम" से मुझे उन दिव्य जड़ी बूटियों के गुप्त रहस्यों कों भी समझाया. वास्तव में जब हम अपने आपको अपनी काया कों स्वस्थ और निरोगी रखते है तो वह आतंरिक और बाह्य रूप से और भी सौंदर्यवान होती जाती है...

कृपया ध्यान दे कि अपनी सौंदर्यता और आरोग्यता कों उपेक्षित करना हिंसा अधिनियम के अनुसार अपरोक्ष रूप से हानि ही पहुचाने का कार्य करते है. सो यहाँ, मै आपके समक्ष कुछ अनिवार्य बिंदुओ कों रखने जा रहा हू जिनसे ना केवल मैं लाभान्वित हुआ हू अपितु उन्हें अपने जीवन में उतारे भी है जिन्हें प्रमाणित देखा भी है और वही आपको बताने जा रहा हू.

गंजेपन का उपचार– २५० ग्राम सरसों तेल कों कटोरीनुमा बर्तन में उबालिए, और धीरे धीरे थोड़ी थोड़ी मात्रा में मेहँदी के पत्ते उसमे डालिए. जब पत्ते पूरी तरह जल जाए और

९० ग्राम ही तेल शेष बचे तो उसे छान ले. और बोतल में भर ले. उस तेल से नित्य मसाज करे. कुछ ही महीनो में घनी मात्रा में गंजे सर पर बाल उग आयेंगे...

वनस्पतिया जो नेत्रश्लेष्मलाशोथ (कन्जक्टीवायटीस) कों प्रतिबन्ध करती है - कुछ गोरखमुंडी के फूलों कों लीजिए और बिना चबाये और बिना पानी पिए निगल ले. इस प्रकार एक फूल निगलने से १ साल तक नेत्रश्लेष्मलाशोथ नहीं होता.. उसी प्रकार २ फूल निगलने से दो साल और इसी प्रकार फूलो कि मात्रा से वर्षों का अनुपात चमत्कारिक रूप से कार्य करता है.और सबसे महत्वपूर्ण तथ्य ये है की ये गोरखमुंडी के पुष्प और फल अभी होली ताका सहज प्राप्य भी हैं.

ऐसी वनस्पति जिससे एक दिन में बवासीर से निजात पाया जा सकता है – हंडे में ८ किलो इन्द्रायण के फल लें ले. और मरीज कों उस पर खड़े रहने के लिए कहदे और तब तक पाँव रखे रहे जब तक उसके मुंह में कड़वाहट नहीं आ जाती. फिर मरीज कों लेट जाने के लिए कहे. आधे घंटे में मरीज कों अत्यंत दुर्गन्धित मल होंगे और उसके बाद वह आने वाले लंबे समय के लिए इस रोग से मुक्त हो जाएगा.

महिलाओ में स्तनों कों सुदृढ़ सुगठित करने हेतु – स्त्री का सौंदर्य विभिन्न तथ्यों को संगठित कर पूर्णता प्राप्त करता है जिसमे से उसके शारीरिक उभारों का महत्वपूर्ण स्थान है और बहुधा रूप सौंदर्य होते हुए भी यदि अविकसित उभार हो तो ये प्रेम प्राप्ति और विवाह जैसे मसलों में भी नकारात्मक भूमिका निभाते हैं.बाजार में प्रचलित रासायनिक क्रीम की अपेक्षा आयुर्वेद में कुछ सरल और अत्यधिक प्रभावकारी प्रयोग बताये गए हैं उनमे से एक मैं यहाँ पर दे रहा हूँ. ये क्रिया अत्यंत ही सरल है और आयुर्वेद शास्त्रों में अनुभूत की हुई है. धतूरे के पत्तों कों गरम कर ले मध्यम आंच पर, और उसे स्तनों पर कस कर बाँध ले, इस क्रिया को कुछ दिनों तक किया जाए तो अविकसित उभार एकदम दृढ़,पुष्ट और उन्नत हो जाते है. और स्त्रियों का सौंदर्य द्विगुणित हो जाता है बिना कुछ व्यय किये.

****NPRU****

Posted by Nikhil at 2:04 AM No comments: Links to this post
Labels: AYURVED

TUESDAY, JULY 3, 2012

AAYURTANTRA SADHNA (आयुर्तंत्र साधना)

यूँ तो आयुर्वेद में सौंदर्य प्रदाता विविध प्रयोग पाए जाते हैं.जिनके प्रयोग से निश्चित ही पूर्ण सुंदरता की प्राप्ति होगी.परन्तु वे प्रयोग यदि निम्न मन्त्र के साथ प्रयोग किये जाये जो अद्भुत और तीव्र प्रभाव प्रदान करते हैं. आयुर्वेद में भी बिना अभिमंत्रित किये वनस्पति का सेवन नहीं किया जाता है,परन्तु कतिपय आलस के कारण लोगो ने इस प्रभाग का प्रयोग करना ही बंद कर दिया जिसके फलस्वरूप जो प्रभाव होना चाहिए ,वो नहीं मिल पता है.आप खुद ही एक काम करियेगा ,नीचे जो प्रयोग दिए गए हैं उन्हें किसी को बगैर मंत्र के प्रयोग करवाकर देखिये और दुसरे को मन्त्र के साथ.प्रभाव आपको खुद ही आश्चर्यचकित कर देगा. जब भी आपको सौंदर्य से सम्बंधित कोई प्रयोग करना हो,उस सामग्री या वनस्पति को आप निम्न मंत्र से ३२४ बार अभिमंत्रित कर दे फिर प्रयोग करे.ये वज्रयान साधना का मंत्र है जो स्वतः ही सिद्ध है,इसे पृथक रूप से सिद्ध करने की आवश्यकता नहीं है.

ॐ क्लीं अनंग रत्यै पूर्ण सम्मोहन सौंदर्य सिद्धिम क्लीं नमः

जिनके मुख से दुर्गंध आती हो या दांत हिल रहे हो यदि वो नित्य पिसते को खूब चबाकर खाए तो मुख की दुगंध हमेशा हमेशा के लिए दूर हो जाती है और हिलते दांत भी स्थिर हो जाते है.

जिसे अपनी देह की कृशता यानि दुबलापन मिटाना हो तो पिश्ते के साथ शक्कर का सेवन २ मॉस तक करे,दुबलापन दूर हो जाता है.

लोग अक्सर गरम पानी के साथ शहद लेते हैं मोटापा दूर करने के लिए,यदि उपरोक्त मंत्र के साथ मात्र १ माह ही प्रयोग करके देखे, लाभ देखकर आप खुद आश्चर्यचकित हो जायेंगे.

ठीक इसी प्रकार तुलसी की ११ पत्तियों को यदि छाछ के साथ १ माह सेवन किया जाये तो भी व्यर्थ की चर्बी सरलता से गलकर बाहर हो जाती है.

यदि व्यक्ति अपना वजन कम करना चाहता हो तो नीम के फूलों को पीसकर और कपडे से छानकर शहद और पानी के साथ सेवन करे,निश्चय ही वजन कम हो जायेगा.

हरसिंगार या पारिजात के पुष्पों का लेप चेहरे पर करने से चेहरे पर निखार आता है और निश्चय ही गोरापन बढ़ता है.

यदि तुलसी की पत्तियों को शहद के साथ लिया जाये तो पथरी होने की कोई सम्भावना नहीं रहती.

नीम्बू का रस या गुडहल की पत्ती पीसकर सर पर उस स्थान पर लेप करे जहाँ बाल झड गए हो,ये क्रिया २ मास तक करने पर पुनः बाल आने लगते हैं और काले हो जाते हैं.

जिन लोगों को भी भोजन के तुरंत बाद मल त्याग करने की आदत होती है,यदि वो कचनार की कली का सेवन करे तो ये बीमारी दूर हो जाती है.

यदि मधुमेह की बीमारी हो तो मेथी के पत्तों का रस पीने से ये बीमारी दूर हो जाती है.

पुनर्नवा चूर्ण का नित्य २ ग्राम सेवन करने से कायाकल्प होता ही है और सौंदर्य की वृद्धि होती ही है.

यदि १ बूँद घृत को लगाकर धतूरे की पत्ती को तवे पर गरम कर स्त्री या लड़की अपने स्तन पर रख कर कस कर बाँध ले और रात भर रहने दे,दोनों तरफ १-१ पत्ती का ही प्रयोग करना है.निश्चय ही ७ दिन में पूर्ण उभार की प्राप्ति होती ही है,बड़ी बड़ी दवाइयां जो कार्य नही कर पाती,वो कार्य ये सामान्य सा दिखने वाला प्रयोग पूरा कर देता है और नारी के सौंदर्य को उभार देता है.

खीरे के रस में शहद मिलाकर पूरे शरीर और चेहरे पर लेप कर १५ मिनट रखे और बाद में कुनकुने पानी से स्नान कर ले,सारी झुर्रियाँ धीरे धीरे दूर हो जाती हैं.

==

Despite of the fact that in Ayurved studies, there are many ways and means by which any one can gain the complete beauty, but if those processes are done with the below mentioned chants (Mantras),these Ayurvedic processes can give unimaginable and fast results…

In Ayurvedic also, no herbal plants can be intake, but due to the laziness of the people they have stopped using these processes due to which they are not getting the desired results….

You yourself do one thing that implies all the below processes one without the chants and the second time with these chants, the results will be unbelievable for you all…

If you want to go for any of the process related with the beauty then enchant that thing or the herb with the below chant 324 times and conduct the process…This is known as **"Vajra Yaan Sadhna Mantra"** which is self proven and it does not need any proof individually….

"Om Kleem Anang Ratye Poorn Sammohan Saundrya Siddhim Kleem Namah"

ॐ क्लीं अनंग रत्यै पूर्ण सम्मोहन सौंदर्य सिद्धिम क्लीं नमः

The persons who are having problem of foul smell of mouth or the teeth's are not strong should practice the chewing of Pista on daily basis, both the problems will get resolved…

Similarly, who wants to get overcome with the underweight problem one should intake Pista with the sugar for two months on regular basis; they will feel that their underweight problem is being resolved…

People often take honey with the warm water to remove the obesity but if the same process gets connected with the above mantra for one month, you will be surprised by seeing the results….

Similarly, if the process is done with the intake 11 leaves of basil (Tulsi) with the butter milk (Chhanch) for one month, the unwanted fat from the body will be dissolved easily…

If any person wants to loose the weight, the intake of grinded Neem flowers and by filtering it with honey and water will definitely give the desired results…

The face pack of Harsingar or Paarijaat flowers helps in increasing the fairness and the glow of the face…

If anyone takes the Basil leaves (Tulsi) with the honey, there is no possibility for the Stone problem…

The paste of Lime and China rose (Gudhal) leaves if applied on the area where there is hair problem fall for the 2 months, the hair fall problem gets resolved and the new hair will be black ones…

The people who are having problem of excretion just after the meal, if they make habit of eating the Kachnar flower bud (kali), they will get rid of this problem…

If anyone is having Diabetes problem, the fenugreek leaves (Methi) juice is the best remedy for the cure of this disease…

The regular intake of 2 Gms. “Punarnava Choorn” helps in complete makeover and adds the glow in the beauty…

If any lady or girl ties the Dhatura(Harebell) leaf (after making it warm) on her breast(only 1 leaf on each breast) for the overnight,undoubtedly,the rise in the breast will be natural which is difficult by the use of various medicines and will add beauty in the lady figure with just this small process…

Apply face pack of Cucumber with honey on face for 15 minutes and then wash it off with the luke warm water at the time of bath, slowly and gradually, the wrinkles will get away…

****NPRU****

Posted by Nikhil at 1:44 AM 6 comments:
Labels: AYURVED

WEDNESDAY, JULY 6, 2011

AAYURVED:- SOME TIPS FOR YOU

"तंदुरस्ती हज़ार नेमत " का मतलब यही हैं की अच्छा स्वास्थ्य अपने आप में किसी भी वरदान से कम नहीं हैं . और मानव शारीर भी इश्वर की ओर से उसे दिया गया एक सर्वोपरि उपहार हैं हम मैसे अधिकाश इस उपहार की गरिमा के प्रति सचेत रहते हैं वही अनेको ऐसे हैं जो इसे एक प्रकार का मान कर चलते हैं की जब जो होगा वह होता जायेगा

यदि हम अपने स्वास्थ्य के बारे में सचेत रहे ओर अच्छा स्वास्थ्य अपना रखे तो यह साधना के लिए तो एक आधारभूत स्तम्भ होगा साथ ही साथ जीवन में एक उच्चता के लिए भी अनिवार्यता अंग हैं .

ऐसे ही कुछ स्वास्थ्य सब्बंधित उपाय आपके लिए ....

1. सर दर्द के समय यदि सौंफ ओर पानी को मिला कर पेस्ट जैसा बना ले ओर उसे माथे पर लगाये तो लाभदायक होता हैं .
2. यदि सौंठ और थोडा सा गुड को खाने के बाद लिय अजय तो यह पाचन के लिए अच्छा होता हैं .
3. यदि खाने के बाद जीरा ओर मिस्री को थोडासा खाया जाये तो यह स्वास की दुर्गन्ध को दूर कर देती हैं .
4. यदि किसी जहरीले कीट/कीड़े ने काट लिया हैं ओर कुछ भी उपचार जो होना चाहिए वह संभव नहीं हो प् रहा हो तो थोडा सा टूथ पेस्ट उस जगह लगा दे दर्द में कमी होगी.

5. यदि कनेर की पत्तियों को मीठे तेल में उबाल कर यदि इस तेल को जोइंट्स पर लगाया जाये तो यह दर्द में कमी करता हैं .
6. यदि एक आवला रोज़ खाया जाये तो जिन बच्चों को तुतलाने की समस्या हैं उसमें काफी लाभ होता हैं .
7. यदि धृत कुमारी के गुदे को गाय के दूध के साथ मिला कर चेहरा पर लगाया जाये ओर आधे घंटे के बाद उसे हलके कुनकुने पानीसे धो लिया जाये तो चहरे में पढ़ रही झेयाँ दूर हो जाती हैं , इसे कम से कम एक /दो महीने तो करे.
8. एक आमला रोज़ खाने पर यह दांतों सेसंबंधित समस्या के लिए अच्छा होता हैं
9. त्रिफला पावडर को शहद के साथ लिया जाये तो यह भी स्वास्थ्य के लिए अच्छा होता हैं
10. आमला का तेल केश के लिए भी अच्छा होता हैं , ओर यदि इनकी मालिश सिरदर्द के समय की जाये तो यह भी लाभ दायक हैं .
11. यदि थोडा सा सौंफ यदि पानी में मिलाकर किसी तांबे के बर्तन में रात को रख दिया जाये सुबह इस पानी को एक कपडे से छान कर इसे एक गिलास पी लिया जाये तो यह यह पेट के लिए बहुत अच्छा होता हैं .

****

Ayurveda : some tips for you

"Tandurasti haazar nemat " means a good health is itself equal to thousand boon. And this manav deh /body is also a most valuable gift from god, many of us very careful about that where many take it for granted. If we like our aim / goal /manzil , than care about our body/health is must , a healthy body what a blessing….

In this series some of the tips for having good health , that ultimately good and essential foundation for achieving success in sadhana.

1. if sounth mix with water and make a paste ,and apply on your forehead at the time of headache this proves good for reducing pain ,

2, after meals take small quantity of sounth powder with little gud , your digestion will be healthy .

3.if after meals little bit jeera and misree taken than bad breath problem can be solved to much extent.

4. if some poisonous insect bite and heavy pain occurs than if other remedial measure not available than apply any tooth paste on that point, pain will be reduce .

5. boil kaner tree leaves with meetha oil apply this oil to joints , help to reduce pain.

6, eat one amala per day helps to cure child's tutlana problem.

7, take the aloe vera paste and mix it with cow's milk and apply on your face wrinkle and after half an hour wash with light hot water do this for 1-2 month this will help to reduce wrinkle

8.chew one aamla every days this helpful for your teeth problem.

9.if triphla powder taken with honey that also very helpful for health.

10. Aamala oil is very helpful for hair .its message is also very good on head is helpful for headache,

11.add one spoon sounph powder in water in copper pot and in the morning filter that water with cloth and take one Gilas of that water this is very good for indigestion.

* * * * NPRU * * * *

Posted by Nikhil at 10:09 PM No comments:
Labels: AYURVED

MONDAY, JUNE 27, 2011

AAYURVED FOR YOU

आयुर्वेद तो जीवन का सौन्दर्य हैं, इस श्रंखला
में हम आपको कुछ सरल उपयोगी उपाय आपके सामने रखते हैं जो आपके स्वास्थ्य के
लिए उपयोगी होंगे.

1. यदि शहद दो /तीन चमच्च यदि पानी के साथ सोने से पहले ली जाये तो यह शरीर का वजन कम करने केलिए बहुत अच्छा उपाय हैं पर या किसी भी हाल में २ / ३ महीने से ज्यादा उपयोग नहीं करना चाहिए .
2. यदि शहद दो /तीन चमच्च यदि दूध के साथ सोने से पहले ली जाये तो यह शरीर का वजन बढ़ाने करने केलिए बहुत अच्छा उपाय हैं पर या किसी भी हाल में २ / ३ महीने से ज्यादा उपयोग नहीं करना चाहिए .
3. प्याज ओर शहद का बराबर मात्रा में लिया गया मिश्रण कफ नष्ट करता हैं

4. नारियल के तेल से किसी भी मौसम में मालिश करना अच्छा रहता हैं .

5. एक/दो चम्मच अश्वगंधा का चूर्ण खाने के बाद एक गिलास मीठा दूध पी लेना स्वास्थ्य के लिए बहुत ही अच्छा होता हैं .

6. यदि आप थके हुए हैं तो दो/तीन बूँद शहद की एक गिलास पानी में डाल कर पी लीजिये तुरंत शक्ति अनुभव होगी .

7. यदि अर्जुन पेड़ की छाल को चाय की पत्ती की तरह ,चाय बनाने मेंप्रयोग करे तो यह ह्रदय के लिए बहुत ही अच्छी होती हैं

8. यदि खाना खाने के बाद ३ ग्राम अर्जुन पेड़ की छाल को पानी के साथ लिया जाये तो स्वास्थ्य के लिए अच्छी होती हैं .

9. रात्रि काल में दही या खट्टी चीजे नहीं खाना चाहिए

10. हल्दी ओर प्याज को मिक्स करके हल्का सा गर्म करके जहाँ पर दर्द हो रहा हो एक लेप की तरह लगाये यह मोच ओर इन्टरनल पैन के लिए अच्छा होता हैं (पर यदि कोई muscular pain स्टार्ट हुआ हैं तो पहले दो दिन तो उस जगह पर बर्फ किसी कपडे में लपेट कर हल्का हल्का लगाये .)

****

Ayurveda is the beauty of life here in this series some useful healthy tips for you to achieve healthy body.

1. If honey taken (2/3 spoon)with water in night time while sleeping good for decreasing weight to body.(never take more than 2/3 month)
2. If taken with milk good for health means adding weight to the body. .(never take more than 2/3 month)
3. Take equal quantity of onion juice and honey is good for reducing cough.
4. Massage with coconut oil is good for all the season.
5. Take one or two spoon of ***asvagandha*** and after that take one milk with sugar is very good for health.
6. If tired than take two three drop of honey in one Gilas of water , it will help you to gain energy.
7. ***Arjun*** tree's bark (chhal) is very good for heart patient if used asa tea leaves in making tea ,
8. If taken after meals just 3-3 gram with water is very good.
9. One should not eat ***dahi*** or any khatti things in night time..
10. Onion and turmeric thoroughly mix with each other and heat this mix with very light heat and apply on the place where you are feeling because moch or some internal pain as a paste. Doing that for two /three days much relief in pain . (in any muscular pain it is better first two days apply ice on that area very gently and covered with cotton cloths.

ANNAPOORNA SADHNA

There are many forms of Aadi Shakti Shree Bhagwati through which she does welfare of this world each and every moment. Certainly, we witness various forms of this Shakti, residing in each minute particle, every moment in physical or subtle form visibly or invisibly. May it be subtlest Praan Shakti of any creature or it may be vast power i.e. Mahavidya Shakti controlling the Universe. In all of these forms, we witness Shakti. Even Lord Shiva is like dead corpse without Shakti then what can be said about normal human being.

In this context, our Maha Rishis have scripted description of many forms of Bhagwati in ancient scriptures. And they have also described in very simple manner the way to get blessings and continuous cooperation of these Maha Shaktis in our life. But with the passage of time, practical aspect vanished and distorted form of Tantra came amidst common public, but many prayogs to attain grace of Devi have still remained in vogue among sadhaks due to Guru Tradition. In this context, procedure related to Bhagwati Annapoorna is very less known. This form of Bhagwati is amazing in herself. This form is capable of providing Bhiksha (charity) to even Lord Shiva, then what is the thing which it cannot provide to humans? Definitely, this Devi has capability of providing everything for the welfare of creatures. That’s why it has been said about her that the person who does Annapoorna sadhna completely, he gets darshan of MahaVidya form automatically and every sadhna becomes simple. But there are many Vidhaans related to Devi which are hidden and which can help sadhak attain happiness and pleasure. Prayog presented here is related to Devi can help sadhak attain the grace of Devi through which sadhak’s fire of desire of happiness and pleasure gets oblation of prosperity and respect. Through this prayog, sadhak can

beautify all aspects of his life, can attain wealth and fame in life. To add to that, sadhak can create environment of happiness and prosperity in his family.

Sadhak should start this prayog on Sunday.

Sadhak can do this prayog in Morning or night.

Sadhak should take bath, wear yellow cloth and sit on yellow aasan facing North direction.

Sadhak should establish yantra/picture of Devi Annapoorna in Baajot in front of him and place five types of grain on it. Any grain can be used (wheat, rice, Udad, Gram or Gram pulse and corn is best: but if sadhak wants, he can place any crop as per his convenience)

Lamp should be of pure ghee and yellow flowers should be used in sadhna. After it, sadhak should do Guru Poojan and chant Guru Mantra and thereafter do the poojan of idol/yantra of Devi Annapoorna.

After poojan, sadhak has to chant 21 rounds of below mantra. Sadhak can use Shakti rosary or Crystal rosary (sfatik) for chanting.

om hreem maheshwari annapoorne namah

After completion of mantra Jap sadhak should dedicate Jap to Devi and pray to her with full reverence. Sadhak should do this procedure for 3 days.

After 3 days, sadhak should give grain and yellow cloth to any priest or any needy person along with Dakshina. If it is possible, offer food to small unmarried girls. And whenever it is possible, chant this mantra at least 11 times in worship place. Sadhak can use this rosary in future too.

''

आदि शक्ति श्री भगवती के कई कई स्वरुप है जिसके माध्यम से वह इस संसार का नित्य कल्याण हर क्षण करती ही रहती है. निश्चय ही हर एक कण कण में बसने वाली शक्ति के विविध स्वरुप तो हम स्थूल और

शुक्ष्म दोनों रूप में हर क्षण प्रत्यक्ष अप्रत्यक्ष रूप से अनुभव तो करते ही है. चाहे वह किसी भी जिव की सूक्ष्म से सूक्ष्मतम प्राणशक्ति हो या फिर ब्रहमांड को नियंत्रित रखने वाली वृहद अर्थात महाविद्या शक्ति हो. सभी स्वरुप में शक्ति का हम साहचर्य प्राप्त करते ही रहते है. खुद आदि पुरुष भगवान शिव भी तो बिना शक्ति के शव हो जाते है तो फिर सामान्य जीव मनुष्य के बारे में तो कहना ही क्या.

इन्ही लीला क्रम में भगवती के कई स्वरुप का वर्णन हमारे महर्षियो ने पुरातन ग्रंथो में लिपिबद्ध किया. तथा किस प्रकार से इन महाशक्तियों का हमारे जीवन में कृपा कटाक्ष प्राप्त हो तथा जीवन में सहयोग निरंतर प्राप्त होता रहे इसका विवरण भी उन्होंने सहज रूप से किया. लेकिन काल क्रम में वह क्रियात्मक पक्ष लोप होता गया, और तंत्र का एक विकृत रूप ही जनमानस के मध्य में उभरने लगा, लेकिन निश्चित गति से देवी कृपा प्राप्ति से सबंधित कई कई प्रयोग तो साधको के मध्य गुरुमुखी प्रथा से प्रचलित रहे. इसी क्रम में भगवती अन्नपूर्णा से सबंधित क्रम भी तो बहोत कम ही प्रचलित है. भगवती का यह स्वरुप भी अपने आप में अत्यंत निराला है. जो स्वयं भगवान शिव को भिक्षा प्रदान कर सकती है वह भला मनुष्यों को क्या देने में असमर्थ होंगी? निश्चय ही यह देवी जिव मात्र के कल्याण हेतु सर्वस्व प्रदान करने का सामर्थ्य रखती है तभी तो इनके बारे में यह भी कहा जाता है की पूर्ण रूप से अन्नपूर्णा साधना कर लेने वाले व्यक्ति को महाविद्या स्वरुप के भी दर्शन अपने आप होने लगते है तथा सभी साधनाए सहज हो जाती है. लेकिन देवी से सबंधित कई विधान ऐसे भी है जो की गुप्त है और साधक को कई प्रकार के सुख भोग की प्राप्ति करा सकते है. देवी से सबंधित प्रस्तुत साधना प्रयोग के द्वारा भी देवी की कृपा साधक को प्राप्त होती है जिसके माध्यम से साधक के जीवन में साधक को सुख भोग की इच्छा रुपी अग्नि को हविष्य अन्न रुपी धन ऐश्वर्य और मानसन्मान की प्राप्ति होती है. इस प्रयोग के माध्यम से साधक अपने जीवन के सभी पक्षों का सौंदर्य बढ़ा सकता है, जीवन में धन और यश की प्राप्ति तो कर ही सकता है साथ ही साथ अपने घर परिवार में भी सुख तथा ऐशवर्य के वातावरण का निर्माण करता है.

यह प्रयोग साधक शुक्लपक्ष के रविवार के दिन शुरू करे.

साधक दिन या रात्री के कोई भी समय में यह प्रयोग कर सकता है.

साधक को स्नान आदि से निवृत हो कर पीले वस्त्रों को धारण करना चाहिए तथा पीले रंग के आसन पर बैठना चाहिए. साधक का मुख उत्तर दिशा की तरफ हो.

साधक अपने सामने किसी बाजोट पर देवी अन्नपूर्णा का चित्र या यंत्र स्थापित करे तथा उसके सामने पांच प्रकार के धान रखे. इसमें कोई भी धान का प्रयोग किया जा सकता है (गेहूं, चावल, उडद, चना या चने की दाल तथा मक्का उत्तम है; लेकिन साधक चाहे तो अपनी सुविधा अनुसार कोई भी धान को रख सकता है).

दीपक शुद्ध घी का हो तथा साधना में पीले पुष्प का प्रयोग करना चाहिए. इसके बाद साधक गुरुपूजन तथा गुरुमन्त्र का जाप कर देवी अन्नपूर्णा के विग्रह या यंत्र का पूजन करे.

पूजन के बाद साधक निम्न मन्त्र की २१ माला मन्त्र जाप करे. यह जाप साधक शक्ति माला से या स्फटिक माला से कर सकता है.

ॐ ह्रीं महेश्वरी अन्नपूर्णे नमः

(om hreem maheshwari annapoorne namah)

मन्त्र जाप पूर्ण होने पर साधक देवी को जाप समर्पित कर पूर्ण श्रद्धा भाव से वंदन करे.साधक को यह क्रम ३ दिन तक रखना है

3 दिन पूर्ण होने पर साधक धान तथा पीले वस्त्र को किसी ब्राम्हण को या किसी ज़रूरतमंद व्यक्ति को दक्षिणा के साथ भेंट कर दे. अगर संभव हो तो कुमारी को भोज कराये. तथा जब भी संभव हो इस मन्त्र का यथा संभव या कम से कम ११ बार उच्चारण पूजा स्थान पर करना चाहिए. साधक माला का प्रयोग भविष्य में भी कर सकता है.

अघोर आकस्मिक धन प्राप्ति प्रयोग (Aghor Aakashmik Dhan Prapti Prayog)

धर्म अर्थ काम और मोक्ष जीवन के चार मुख्य स्तंभ है. इन सभी पक्षों मे व्यक्ति पूर्णता प्राप्त करे यही उद्देश्य साधना जगत का भी है. इसी लिए व्यक्ति के गृहस्थ और आध्यात्मिक दोनों पक्ष के सबंध मे साधनाओ का अस्तित्व बराबर रहा है. हमारे ऋषि मुनि जहा एक और आध्याम मे पूर्णता प्राप्त थे वही भौतिक पक्ष मे भी वह पूर्ण रूप से सक्षम थे. साधना के सभी मार्गो मे इन मुख्य स्तंभों के अनुरूप साधनाऐ विद्यमान है ही. इस प्रकार अघोर साधनाओ मे भी गृहस्थ समस्याओ सबंधित निराकरण को प्राप्त करने के लिए कई साधना विद्यमान है. इन साधनाओ का प्रभाव अत्यधिक तीक्ष्ण होता है, तथा व्यक्ति को अल्प काल मे ही साधना का परिणाम तीव्र ही मिल जाता है. धन का निरंतर प्रवाह आज के युग मे ज़रुरी है. साधक के लिए यह एक नितांत सत्य है की सभी पक्षों मे पूर्णता प्राप्त करनी चाहिए. जब तक व्यक्ति भोग को नहीं जानेगा तब तक वह मोक्ष को भी केसे जान पाएगा. इस मुख्य चिंतन के

साथ हर एक प्रकार की साधना का अपना ही एक अलग स्थान है. व्यक्ति चाहे कितना भी परिश्रम करे लेकिन भाग्य साथ ना दे तो सफलता मिलना सहज नहीं है. ऐसे समय पर व्यक्ति को साधनाओ का सहारा लेना चाहिए तथा अपने कार्यों की सिद्धि के लिए देवत्व का सहारा लेना चाहिए. पूर्णता प्राप्त करना हमारा हक़ है और साधनाओ के माध्यम से यह संभव है. किसी भी कार्य के लिए व्यक्ति को आज के युग मे पग पग पर धन की आवश्यकता होती है. हर व्यक्ति का सपना होता हे की वह श्रीसम्प्पन हो. लक्ष्मी से सबंधित कई प्रयोग अघोर मार्ग मे निहित है लेकिन जब बात तीव्र धन प्राप्ति की हो तो अघोर मार्ग की साधनाए लाजवाब है. अघोरियो के प्रयोग अत्यधिक त्वरित गति से कार्य करते है तथा इच्छापूर्ति करते है. आकस्मिक रूप से धन की प्राप्ति करने के लिए जो विधान है उसके माध्यम से व्यक्ति को किसी न किसी रूप मे धन की प्राप्ति होती है तथा त्वरित गति से होती है. इस महत्वपूर्ण और गुप्त विधान को साधक सम्प्पन करे तब चाहे कितने भी भाग्य रूठे हुए हो या फिर परिश्रम सार्थक नहीं हो रहे हो, व्यक्ति को निश्चित रूप से धन की प्राप्ति होती ही है.

साधक अष्टमी या अमावस्या की रात्रि को स्मशान मे जाए तथा तेल का दीपक लगाये. अपने सामने लाल वस्त्र बिछा कर ५ सफ़ेद हकीक पत्थर रखे तथा उस पर कुंकुम की बिंदी लगाये. साधक के वस्त्र लाल रहे. तथा दिशा उत्तर या पूर्व. उसके बाद साधक सफ़ेद हकीक माला से निम्न मंत्र की २१ माला जाप करे.

ॐ शीघ्र सर्व लक्ष्मी वश्यमे अघोरेश्वराय फट

साधक को यह क्रम ५ दिन तक करना चाहिए. ५ वे दिन उन हकिक पथ्थरो को उसी लाल कपडे मे पोटली बना कर अपनी तिजोरी या धन रखने के स्थान मे रख दे.

==

Dharma, artha, Kaam and moksha are four main pillars of the life. The motto of sadhana world is the person gets completeness in all these major aspects. For this reason, existence of sadhana related to material and spiritual both lives have remained. Our sages on one hand were rich in spiritual field on other hand they were complete in their material life also. In every field of sadhana, sadhana related to these major pillars does exist. This way, in aghora field also, existence of various sadhana stays for to have solutions of the material life’s trouble. Impacts of these sadhana are very powerful, and in a short span of time quickly one may have result of the sadhana. Continuity of the money flow is much essential in this time era. It is basic fact for sadhak to achieve success in the entire field. Till the time one does not know about ‘Bhoga’, how does one expect to know about ‘moksha’. With this basic thinking every specific sadhana has its own particular place. However amount of the hardwork is put by the person but if fortune does not accompanies, it becomes not easy to have success. At this moment of time person should take help of the sadhana and to accomplish the works one should take blessings of divine power. It is our right to have completeness and with sadhana it could be made possible. In today’s time at every step one needs wealth for any task. Everyone owns dream to become rich. There is existence of many ritual related to goddess lakshmi in Aghor method but when it is about quick money gaining then sadhana related to this field is unbeatable. These

rituals of aghori work very quickly and fulfil desire. The ritual related to quick wealth gaining will let person have money in some or other form and that too in quick speed. If this important and secret process is done by sadhaka then however the stars of misfortune may be or hard work may not be getting ground, one will for sure gains money.
Sadhak should go to smashana on 8th night or last night of dark moon and light oil lamp. One should spread red cloth in front and place 5 hakeek stones on it and one should mark them by applying red vermillion on it. Cloths of sadhaka should be red and direction should be north or east. After that with white hakeek rosary one should chant 21 rounds of the following mantra.

Om Sheeghr Sarv Lakshmi Vashyame Aghoreshwaraay Phat

Sadhak should do this process for five days. On the 5th day one should tie those hakeek stones in the same red cloth and place it in cash coffer or at the place where money is kept.

****NPRU****

for our facebook group-http://www.facebook.com/groups/194963320549920/

PLZ CHECK : - http://www.nikhil-alchemy2.com/

For more Knowledge:- http://nikhil-alchemy2.blogspot.com

Posted by Nikhil at 6:55 AM No comments: Links to this post
Labels: AGHOR, LAKSHMI SADHNA

SATURDAY, FEBRUARY 25, 2012

अघोरेश्वर प्रत्यक्षीकरण साबर प्रयोग (AGHORESHWAR PRATYAKSHIKARAN SAABAR PRAYOG)

साबर साधनाओ के अद्बुध करिश्मो के बारे मे तो सब परिचित ही है. अघोर मार्ग का उद्धार करने वाले भगवान श्री दत्तात्रेय और साबर मंत्रो का सबंध अपने आप मे अटूट है. श्री दत्तभगवान की प्रेरणा तथा आशीर्वचन से नाथ योगियो द्वारा साबर मंत्रो का प्रचार प्रसार हुआ था. इस प्रकार अघोर साधनाओ मे भी साबर मंत्रो का प्रयोग प्रचुरमात्रा मे होने लगा था. अघोरी के लिए भगवान अघोरेश्वर मुख्य देव है,

जिनके मुख से समस्त तन्त्रो का सार निकलता रहता है. जो शिवतत्व को अपने अंदर स्थापित कर सदा शिव आनंद से युक्त हो कर अपने आप मे ही लिन रहता है वही अघोरी है. सिद्ध अघोरी की यही पहचान है जो अघोरेश्वर की तरह ही निर्लिप्त रहता है समस्त विकारों भेदभाव तथा पाशो के बंदन से छूट गया है. ज़रुरी नहीं की वह स्मशान भष्म से युक्त हो, नग्न रहे या घृणा पर विजय होने का प्रदर्शन करे. जो इन सब से ऊपर उठ चूका हो, जिसके लिए ये भेद ही न हो, वही तो है अघोरी. किसी समय मे इनका घर मे आना, स्वयं शिव के आने जितना सौभाग्यदायक माना जाता था लेकिन कुछ स्वार्थपरस्तो ने तो कुछ हमारी अवलेहना भ्रम और कुतर्क ने इस मार्ग का ग्रास कर उसे भय का रूप दे दिया. खेर, अघोरी के लिए यह ज़रुरी है की वह अघोरेश्वर के चिंतन मे लिन रहे. भगवान अघोरेश्वर स्मशान मे बिराजमान है, सर्पो से लिप्त वह स्मशान भस्म को धारण किये हुए है. जिनके चेहरे पर आनंद ही है तथा और कोई भाव हे ही नहीं. ऐसे अघोरेश्वर के श्रेष्ठ रूप का ध्यान करना साधक के लिए उत्तम है. प्रस्तुत साधना भगवान अघोरेश्वर के इसी रूप के दर्शन प्राप्त करने की साधना है. वस्तुतः यह अपने आप मे अत्यधिक महत्वपूर्ण साधना है जिसको करने के बाद साधक का चित हमेशा निर्मल रहता है, भेद से मुक्ति मिलती है तथा सर्वसर्वात्मक भाव का उसमे उदय होता है. साथ ही साथ अघोरेश्वर के वरदान से साधक अष्टपाशो से मुक्त होने लगता है. इस प्रकार की भावभूमि प्राप्त होते साधक को विविध प्रकार की साधनाओ मे सफलता प्राप्त होने लगती है. वैसे भी अघोरी के लिए यह एक अत्यधिक महत्वपूर्ण क्रम है की साधनामार्ग के इष्ट के दर्शन कर उनके आशीर्वाद प्राप्त करना.

साधक को चाहिए की वह इस साधना को स्मशान मे ही सम्प्पन करे. रात्री मे ११:३० के बाद इस साधना को शुरू करना चाहिए. साधना को सोमवार से शुरू करे. साधक को स्नान कर अघोर गुरु पूजन सम्प्पन कर विशेष शाबर मन्त्र का ५१ माला जाप करना चाहिए. मंत्र जाप के लिए साधक को रुद्राक्ष माला का प्रयोग करना चाहिए. आसान तथा वस्त्र काले हो. आसान के निचे चिता भष्म को बिछा देना चाहिए. इस क्रम को ११ दिन तक करने पर विविध अनुभूतिया होने लगती है, साधक जब इसे २१ दिन कर लेता है तब उसे भगवान अघोरेश्वर के दर्शन होते है.

ॐ अघोर अघोर प्रत्यक्ष वाचा गुरु की अघोरनाथ दर्शय दर्शय आण सिद्धनाथ की

साधक को भयभीत ना हो कर वीर भाव से यह साधना करनी चाहिए.

====================================

Everyone knows about miracle effects of sabar sadhana. There is a strong relation between up lifter of aghora way shri dattatreya and sabar mantra. With blessings and order of bhagwan datt, Nathyogi Disseminated sabar mantras. This way, in aghor sadhana also use of sabar mantra started widely. For aghori, god Aghoreshwara is major diety from whose holy mouth abstract of all tantras keeps on coming. The one who have established Shivtatva within and being merged with Shiva joy remain lost on one’s internal self is true Aghori. Identification of true Aghori is the one who stays detached mind from all the disorders & discriminations and those who have left all the boundations. Not require that he remains with smashana ash, naked or exhibits his

victory over disgusts. One who has become above all these, the one who do not have these differentiations, that one is Aghori. At some era, it was counted a great boon like visiting Shiva, if aghori visit the home but this great way became defected and re presenter of fear by few selfish and somewhat our ignorance, fallacy and sophism. Anyways, for aghori it is essential to remain in contemplation of Aghoreshwara. God Aghoreshwar is seated in Smashana, wearing smashana bhasma he is accompanied with snakes. The one who have only joy on the face and no more expression. Such meditation of aghoreshwara is boon full for sadhak. The presented sadhana is sadhana to have glimpses of the same meditated aghoreshwar. Literally this sadhana is very important sadhana when accomplished will give internal purity of the soul, get relief from differentiations and gets humour development in Sarvasarvaatmak thinking. With that blessing of Aghoreshwar is gain to get relief from eight basic loop traps or Astapasha. Reaching such mentality level, sadhak will start getting success in various sadhana. With that this is an important order for aghori to get blessings through glimpses of Isht Aghoreshwara in the long way of sadhana.

Sadhak should do this sadhana in Smashana only (cremation ground). One should start this sadhana after 11:30 in night. Sadhana could be started from Monday. Sadhak should take bath and complete Aghor Guru Poojan, after that one should chant 51 round of special sabar mantra. For mantra chanting one should use rudraksha rosary. Aasana and cloths should be black in colour. One should spread ash of cremation under aasana. If this process in continues for 11 days, one will start having divine experiences, when sadhak completes 21 days of the process at that time god Aghoreshwar will give glimpse to sadhak.

Om Aghor Aghor Pratyaksh Vaachaa Guru Ki Aghoranaath Darshay Darshay Aan Siddhanaath ki

Sadhak should not get scare and with courage one should proceed in sadhana.

http://nikhil-alchemy2.blogspot.com

TEEVRA AGHOR VASHIKARAN SADHNA

अभी महर्षि देव दत्त और में एक विशाल गुफा के अंदर बैठे हुए हैं, जहाँ पर मैं एक उर्जा के एक उच्च और विशाल स्त्रोत का अहसास कर पा रहा हूँ. एक ऐसी प्राकर्तिक रूप से स्वतः बनी हुए गुफा, जिसमे स्वतः की प्रकाश की प्राकर्तिक व्यवस्था हैं और इसमें एक अंत्यत स्वच्छ साफ जल से भरा छोटा सा ताल भी हैं | .पास की एक विशाल चट्टान रूपी दीवाल पर एक संत पद्मासन की मुद्रा में बैठे हुए हैं . पूर्णतः ध्यानस्थ अवस्था , ललाट पर त्रिपुंड सुशोभित, अत्याकर्षक चेहरा ,गले में सुशोभित रुद्राक्ष माला ,सुंदर बलिष्ठता युक्त शरीर ,और लहराते हुए केश राशि जो की चट्टान से नीचे तक पहुच रही हैं. इसमें कोई भी संदेह नहीं निश्चय ही वे एक उच्च संत हैं

महर्षि देवदत्त ने कहा की उनका नाम ऋषि मुंड केश ,जिसका शाब्दिक अर्थ तो ये हैं की वो जो अपने केश को मुडित करता हो , पर में देखा की उनके केश राशि की लाबी ५ फीट से कम तो नहीं होगी | मैंने महर्षि की

और आश्चर्यचकित दृष्टी से देखा ,उन्होंने मुस्कुराते हुए कहा कि उनके १०८ नाम हैं ,पर उनका पहला नाम मुंड केश ऋषि हैं, क्या तुम उन्हें दीक्षा कैसे प्राप्त हुए, न जानना चाहोगे

महर्षि देवदत्त ने कहा ये ही वह प्रथम व्यक्ति हैं जिन्होंने भगवान् शिव से सीधे ही दीक्षा प्राप्त की हैं, उन्होंने कुल १०८ प्रकार की अघोर दीक्षा , भगवान् शिव से सीधे ही प्राप्त की हैं.

मैं अवाक् सा खड़ा रह गया ,कि यह तथ्य तो मैं भी नहीं जनता था कि १०८ प्रकार कि अघोर दीक्षा भी होती हैं ,आज कुछ ही अघोर दीक्षा जैसे कि मुंड स्थापन, मुंड केश ,दंड दीक्षा ,लिंग पिंड प्रचलित हैं ,पर कभी भी ये किस प्रकार से संभव होती हैं उनके बारे में कभी भी विवरण नहीं मिलता हैं. मैं एक ऐसे महान संत के दर्शन करके , मैं बेहद प्रसन्न हुआ .|

देवदत्त कहते गए .."१००० से भी अधिक विभिन्न शाश्त्रों के रचियता हैं ये, शायद तुमने तंत्रेश और साबरी दर्पण के बारे मैं सुना हो , ये दोनों ग्रन्थ भी इन्ही के द्वारा लिखे गए हैं, न केबल यही बल्कि ,रसायन शाश्त्र के भी ये पूर्ण ज्ञाता और सिद्ध हस्त हैं,इन्होने भगवान् शिव से ही सीधे ही सब ज्ञान प्राप्त किया हैं और .."

और क्या .. मैं इन महान व्यक्ति के बारे मैं सम्पूर्णता से जानना चाहता था ,

देवदत्त कहते गए"..तुमने रावन के बारे मैं सुना ही हैं ,तुमने एक बार पूछा था किरावण निश्चय ही एक उच्च योगी पिछले जन्म में रहा होगा ,तो ये तुम्हारे लिए उत्तर कि यही हैं वह महान संत ,जिन्होंने रावण के रूप में जन्म लिया था .

में आश्चर्यचकित ...यद्दपि में नहीं चाहता था... इनके उपलब्धियां अनगिनत हैं ...मैंने झुक कर इस महान संत को प्रणाम किया, और हम लौट आये | जब मैंने तंत्रेश ग्रन्थ के बारे में देवदत्त जी से पूछा ,तो उन्होंने कहा कि मेरे प्रिय मित्र . तंत्रेश अब केबल सिद्धाश्रम में ही उपलब्ध हैं . पर मरे पास इस महान ग्रन्थ कि कुछ साधनाए हैं यदि तुम चाहो तो इन्हें लिख सकते हो .किसी तरह से मैंने दो साधनाए लिख पाया ,उन मेंसे एक " अघोर वशीकरण साधना " हैं .

यह साधना बहुत ही उच्च कोटि की साधना हैं वशीकरण की, इसमें कोई दो मत हैं ही नहीं ,जिसके माध्यम से आप किसी को भी अपने नियंत्रण में ला कर अनुकूल बना सकते हैं, मैंने महर्षि देवदत्त को इतने उच्च कोटि की साधना ,वह भी इस महान संत की ,प्रदान करने के लिए धन्यवाद दिया

इस साधना को किसी भी सोमबार की रात्रि में ११ बजे के बाद प्रारंभ किया जा सकता हैं ,साधना प्रारंभ करने से पूर्व स्नान करके लाल वस्त्र धारण करले .

कोई एक प्लेट ले ,जो लोहे या स्टील की बनी हो .| इसके अंदर पूरी तरह काजल लगा दे, और निम्नाकित मंत्र लिखे (काजल को इस प्रकार से हटा हैं की)

" ॐ अघोरेभ्यों घोरेभ्यों नमः "

उस प्लेट के उपर जिस व्यक्ति का वशीकरण करना हैं उसका एक वस्त्र का टुकड़ा विछा दें | यदि ये किसी भी प्रकार से संभव न हो तो ,तो कोई भी नया कपडे का टुकड़ा उस पूरी प्लेट पर बिछा दें. |उस के ऊपर उस व्यक्ति का नाम लिख दे, जिस पर ये प्रयोग करना हैं ये नाम लेखन की प्रक्रिया ,सिन्दूर से ही की जाना चाहिए |

. अपने सामने भगवान् शिव का कोई भी चित्र जो भी आपके पास हो और उस व्यक्ति का भी (जिस पर ये प्रयोग किया जाना हैं) रखे.

इसके बाद पूर्ण मनोयोग से उसी रात्रि में , काली हकीक या रुद्राक्ष माला से ५१ माला निम्नाकित मंत्र जप करें.

शिवे वश्ये हुं वश्ये अमुक वश्ये हुं वश्ये शिवे वश्ये वश्य्मे वश्य्मे वश्य्मे फट
इस मंत्र में अमुक की जगह उस व्यक्ति का नाम उच्चारित करें जिसे आपको वश में करना हैं .
जब ये मंत्र जप पूर्ण हो आप ऋषि मुंड केश और भगवान् अघोरेश्वर से इस साधना में सफलता के लिए प्राथना करें.
साधना काल के दौरान आपको कुछ आश्चर्य जनक अनुभव हो सकते हैं, पर इनसे न परेशान या बिचलित न हो , ये तो साधना सफलता के लक्षण हैं .

Maharshi Devdatt and I were now present in a nice big cave, where I can clearly feel a great source of energy. A nice cave was lighting brightly naturally from inside and there was a small pond which was filled with a crystal clear water. On the nearer main wall there was a big stone on which one sage was seated in lotus posture. He was in deep meditation. Great attractive face, tripund of ash on forehead, rudraksha rosary in the neck, perfect muscular body, and long matted hairs were reaching out of the stone. Really, he was a great sage no doubt about his.

Maharishi Devdatt then spoke that his name is Rishi Mundkesh. I was surprised by hearing his name because Mundakesha literally means the one who have shave his hairs, but here I found his matted hairs were not less than 5 feet long. I looked surprisingly to Maharishi. He smiled and said that he has 108 different names, but his one of the first name was Mundkesh Rishi. You know about Mundkesh Aghor diksha. I nodded, an Aghor diksha in which the whole hairs are been removed.

Devdatt continued “This is the first person who received that diksha from lord shiva him self. He got total 108 different Aghor Diksha from lord shiva him self.”

I was speechless, I personally was not aware that there are 108 different aghor dikshas, just few aghor diksha are found today like Mundh sthapan, mundkesh, dand diksha, ling pidan, but no more things are found anywhere about these dikshas. I was really feeling happy to see such a great sage. Devdatt told me “he is author of more than 1000 different scriptures. You might have heard about Tantresh and Shabari Darpan… those are even

written by him. Not only this, he is master and component in rasayana even. He learnt everything through shiva him self and….”

What end….I was very curious to know about this man…

Devdatt continued…you know about Ravan. You asked me once that Ravan must be a big sage in his past life, and he must have took avtar. So here is your answer, this is the sage, who took birth as Ravan…

I was surprised…though I shouldn't be…his achievements are uncountable… I bowed down to the great sage and we were back. But when I inquired about scripture Tantresh, Devdatt told me that my dear friend…Tantresh is only available in siddhashram. Thought I have some sadhana from that great scripture, if you wish you can note down. Anyways I noted two sadhanas only, in which one was Aghor Vashikaran Sadhna.

This is really a great sadhana for vashikaran and can control any one. I really thank devdatt to provide such a wonderful sadhana of such a great sage.

This sadhana should be done on Monday night only after 11 pm. One should take bath and wear red cloths before starting it.

Take any steel or iron plate. Apply collyrium (kajal) all over inside and write the following mantra (the collarium should be cuted that way)

"om aghorebhyo ghorebhyo namah"

On that place a piece of cloth of the person on which the vashikaran prayog is being done. If that is not possible anyhow, place any fresh cloth piece. On that cloth write a name of the person for whom prayog is being carried out. This name should be written with vermillion.

Place a picture of lord shiva infront of you and if available photograph of the person for which prayog is being done.

After that take black hakeek or rudraksha rosary and with concentration 51 rosaries should be completed of the following mantra on the same night only.

Shive Vashye Hum Vashye Amuk Vashye Hum vashye Shive Vashye Vashyme Vashyme Vashyme Phat.

Here, in mantra, one should chant name of the person to be vash, on the place of AMUK.

After completion of sadhana one should pray to rishi Mundakesh and lord Aghoreshwar for success in the sadhana.

During sadhana, one may have exiting experiences but really not to worry for that. Those are signs of success in the sadhana.

AAWAHAN - 39

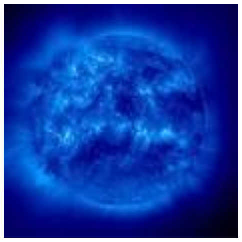

Aghor Mantra : Om AghorebhyothGhorebhyah Ghor GhorTarebhyahSarvatah Sarv Sarvebhyo Namaste Astu Rudra Rupebhyah

In this manner, I got knowledge about one very important procedure easily by blessings of Sadgurudev.

Sadgurudev continuing his talks said that this was regarding Siddh areas. Definitely gaining an entry into any siddh area is rare and cumbersome procedure but it is not impossible. Sadhak by putting his hard-work can enter such siddh areas.

There are some places which are above Siddh areas. They are called Divya Sthan (Area). Here consciousness rather than remaining as consciousness only gets transformed into divinity. Consciousness takes person to inner and after it; it takes person towards outer development. On the other hand, divinity unifies person with universe. Actually, this is one outstanding emotional base of spirituality whose attainment is test for anybody's hard-work. When sadhak's existence extends to each and every particle of nature then sadhak's existence rather than being confined to one particular procedure or area or work gets extended to each particle of nature. After it sadhak attains the capability to interfere in any incident happening in any area. The places formed by such high-order spiritual vibrations are called Divya Sthan. Such places are in fourth dimension and for gaining entry into them; sadhak has to face various types of challenges. At such places, sadhak always remains in touch with divinity and nature becomes his companion. At such places, if aavahan of any god or goddess is done, they are manifested that moment. Any wish or desire in sadhak's mind is fructified.

Suddenly I uttered Siddhashram? Because I have listened such things about Sidhhashram.He said that Siddhashram is not Divya Sthan rather it is much beyond it. About Siddhashram which common public has heard or read is not even the millionth part. Significance of Siddhashram can't be explained in words. But such Divya Sthans are definitely nearby Siddhashram. There are 8 such places near Maansarovar and Rakshashtaal. Besides it, there are Divya Sthan like Divyaganj, Raajeshwari Math (monastery), Siddh Math, Sambh Math, Gupt Math etc. which are situated in India and Nepal. In these monasteries, several siddhs reside and they always work to provide welfare to sadhaks in spiritual field.

I asked what sadhak should do to gain an entry into these places. Sadgurudev answered that this is path of Guru. It all depends upon the Guru of sadhak when and how he takes sadhak to such Divya Sthan and by ding which type of procedure.

I asked that as you told Siddhashram is above Divya Sthan.is there any other place too? Sadgurudev laughed and postponed my question .I understood that now getting further answers is not possible. His smile contains millions of secrets of universe; I have always felt it whenever I went for asking something.

In short period, whatever I understood about Siddh place and Siddh area from Sadgurudev, its millionth part I could not have understood it on my own throughout my life. His blessings are enough to eliminate any type of ignorance and make anyone knowledgeable. But still, as always answers of hundred questions gave rise to thousand new questions in mind.

In Gir Siddh area, all these incidents passed like a picture film in my mind within matter of few seconds. In front of me, it was the same Siddh who told me that only curiosity is not enough. If sadhak puts his efforts to gain knowledge then definitely he gets company of Siddhs. Many years had passed by but I did not commit any mistake recognising him. Those two siddhs were still standing in that ruins of house, my presence does not have any special influence on them. Siddhs were still smiling towards me.I greeted them with reverence. They will still in their white dress. Theirface, having no emotions was full of natural happiness and self-satisfaction. He was the guardian of that Gir siddh area who was sincerely doing welfare of so many ignorant people like me and nobody knows from what time? I did not know even his name. But still I got emotional. I don't know why. The love and affection which one gets in Siddh world, is not found in physical world. I greeted him with reverence and he gave me blessings and said "Son, the feelings which is arising in your mind, I understand them. But this is my work, my gratefulness towards siddhs. Several years before and after that also wheneverI came to you, it was the order of your Sadgurudev. It was on every big opportunity for me to provide service to him. I was speechless. I was not having anything to ask or know now. Probably if I would have stood anymore there, tears in my eyes would have fallen down. I greeted him which was sign of departure. He gave me blessing and said May Maa Shakti provides you well-being. And the two siddhs who have come there, they become busy in his salutation and conversation with him. It was evening time. Voice of Jai Girnari was falling in my ears from far-off place. I mentally remembered Sadgurudev, how each and every moment he takes care of his disciples. What I could do in front of his love and affection, I just prayed him and started moving towards destination.

==

अघोर मंत्र : **ॐ अघोरेभ्योऽथ घोरेभ्यः घोर घोर तरेभ्यः सर्वतः सर्व सर्वेभ्यो नमस्ते अस्तु रुद्र रुपेभ्यः**

इस प्रकार एक अत्यधिक महत्वपूर्ण प्रक्रिया का सहज ही ज्ञान सदगुरुदेव के आशीर्वचन से प्राप्त हुआ. सदगुरुदेव ने बात को आगे बढाते हुवे कहा की यह बात हुई सिद्ध क्षेत्रो की. निश्चय ही किसी भी सिद्ध क्षेत्र में प्रवेश करना दुर्लभ तथा कठिन क्रिया है लेकिन असंभव नहीं है, साधक अगर परिश्रम करे तो वह ऐसे सिद्ध स्थानों में प्रवेश कर सकता है.

सिद्ध स्थान या क्षेत्र के ऊपर भी ऐसे कई स्थान है जिसे दिव्य स्थान कहा जाता है. यहाँ पर चेतना मात्र चेतना न होते हुवे दिव्यता में परावर्तित हो जाती है. चेतना मनुष्य को आतंरिक तथा बाद में बाह्य विकास की और ले

जाती है जबकी दिव्यता व्यक्ति को ब्रह्माण्ड के साथ एकाकार कर देती है. वस्तुतः यह अध्यात्म की एक अत्यधिक उत्कृष्ट भावभूमि है जिसकी प्राप्ति निश्चित रूप से किसी के भी परिश्रम की कसोटी सी है. साधक की सत्ता जब प्रकृति के कण कण में व्याप्त हो जाती है तो साधक की सत्ता एक निश्चित प्रक्रिया या क्षेत्र या कार्य से सबंधित न हो कर प्रकृति के हर एक अणु में व्याप्त हो जाती है, इसके बाद साधक कभी भी कोई भी घटना किसी भी क्षेत्र में घटित हो रही हो उसमे हस्तक्षेप करने की सामर्थ्य रखता है. ऐसे उच्चकोटि के आध्यात्म तरंगों से निर्मित जो स्थान है वह दिव्य स्थान कहलाते है. ऐसे स्थान चतुर्थ आयाम में होते है तथा इसमें प्रवेश के लिए साधक को कई प्रकार की चुनोतियों का सामना करना पड़ता है. ऐसे स्थान में साधक सतत दिव्यता से संस्पर्षित रहता है तथा प्रकृति उसकी सहचारिणी होती है. ऐसे स्थानों में जो भी देवी देवता का आवाहन किया जाए वह निश्चय ही उसी क्षण प्रकट होते है. साधक जो भी कामना या इच्छा को अपने मानस में लाता है वह पूर्ण होती है.

मेरे मुह से निकल गया सिद्धाश्रम? क्योंकि सिद्धाश्रम के बारे में भी मेने ऐसा ही सुन रखा था. उन्होंने कहा की सिद्धाश्रम दिव्य स्थान न हो कर उससे भी ऊपर है. सिद्धाश्रम के बारे में जनमानस ने जितना सुना या पढ़ा है वह उसका कोटि कण भी नहीं है, सिद्धाश्रम की महत्ता को शब्दों में बंधना संभव नहीं है. लेकिन ऐसे दिव्य स्थान सिद्धाश्रम के आसपास ज़रूर है, मानसरोवर तथा राक्षसताल के निकट ऐसे ८ स्थान है, इसके अलावा दिव्यगंज, राजेश्वरीमठ, सिद्धमठ, संभमठ, गुप्तमठ जेसे कई दिव्य स्थान है जो की भारत तथा नेपाल में स्थित है इन मठो में कई सिद्ध निवास करते है तथा आध्यात्म क्षेत्र में साधको को कल्याण प्रदान करने के लिए हमेशा कार्यरत रहते है.

मेने पूछा इनमे प्रवेश के लिए साधक को क्या करना चाहिए? सदगुरुदेव ने उत्तर देते हुवे कहा की यह गुरुमार्ग है, यह साधक के गुरु के ऊपर निर्भर करता है की वह उसे कब और कैसे ऐसे दिव्य स्थान में ले जाए तथा कौन सी प्रक्रिया को सम्प्पन करा कर ले जाए.

मेने पूछा की आपने जेसे कहा की सिद्धाश्रम दिव्य स्थान से भी ऊपर है. ऐसे क्या कोई और स्थान भी है? मेरे प्रश्न को सदगुरुदेव ने हस कर टाल दिया. अब तक में समज गया था की बस इसके आगे अब उत्तर मिलना संभव नहीं है. उनकी एक मुस्कान में ब्रह्माण्ड के करोडो रहस्य समाये हुवे है ऐसा अहेसास हर बार मुझे होता था जब भी में कुछ पूछने जाता था.

अल्प समय में ही सदगुरुदेव से सिद्ध स्थान तथा सिद्ध क्षेत्रो के बारे में जितना भी जाना और समजा था उसका एक लाखवां हिस्सा भी में अपने जीवन भर प्रयत्न कर के भी नहीं जान सकता था, उनकी कृपा द्रष्टि सच में किसी के भी अज्ञान को दूर कर ज्ञानवान बनाने के लिए पर्याप्त है. लेकिन फिर भी, हर बार की तरह सेकडो सवाल के जवाबो ने नए हज़ारो सवाल को मानस में जन्म दे दिया.

गिर सिद्ध क्षेत्र में मानस में एक चलचित्र की भाँती ये सारी घटनाये कुछ ही क्षणों में गुजर गई. हाँ मेरे सामने ये वही सिद्ध है जिन्होंने मुझे कहा था की जिज्ञासा भाव काफी नहीं है, अगर ज्ञान प्राप्ति के लिए साधक प्रयत्नशील होता है तो निश्चय ही उन्हें सिद्धो का साहचर्य प्राप्त होता है. कई साल हो गए थे लेकिन पहेचानाने

में बिलकुल भी गलती नहीं हुई थी मुझसे, उस खंडहरनुमा मकान में वो दो सिद्ध अभी भी वहीँ खड़े थे, मेरी उपस्थिति का कोई विशेष असर नहीं था उन पर. सिद्ध अभी भी मेरी तरफ देख कर मुस्कुरा रहे थे. मेने उनको प्रणाम किया, श्रद्धा सहित. वे अभी भी वाही सफ़ेद चोगे में थे, बिना किसी भी भाव का उनका चेहरा जेसे प्राकृतिक प्रशन्नता और आत्मसंतुष्टि से ओत प्रोत था. यही थे वह गिर सिद्ध क्षेत्र के संरक्षक जो की न जाने कितने ही मेरे जेसे अबोध और अज्ञानी बालको का कल्याण निश्चल भाव से कर रहे है और न जाने कब से. में तो इनका नाम तक नहीं जनता फिर भी आँखें थोड़ी नम सी हो गई पता नहीं क्यों. सिद्धो के संसार में जो निश्चल प्रेम और स्नेह प्राप्त होता है वह इस स्थूल जगत में कहाँ. मेने श्रद्धा से उन्हें वंदन किया उन्होंने मुझे आशीर्वचन देते हुवे कहा ‘ बेटा, तुम्हारे मानस में जो भाव उभर रहे है उन्हें में समज रहा हू लेकिन यह तो मेरा कार्य है, मेरी कृतज्ञता है सिद्धो से. कई सालो पहले भी और उसके बाद भी तुम्हारे पास में जब जब भी आया था तब मुझे आपके श्री सदगुरुवर से आज्ञा प्राप्त हुई थी. यह मेरे लिए उनकी सेवा का एक बहोत बड़ा अवसर था.’ में क्या कहता, मेरे पास अब कुछ जानने के लिए या पूछने के लिए बचा ही नहीं था. सायद थोड़ी देर और खड़ा रहता तो मेरी आँखों में रोके हुवे आंसू बहार आही जाते, मेने उनसे प्रणाम किया जो की जाने का संकेत था. उनके मुख से आशीर्वचन निकला ‘माँ शक्ति तुम्हारा कल्याण करे’. तथा वे जो दो सिद्ध वहाँ पर आये थे उनके अभिवादन तथा वार्तालाप में संलग्न हो गए. शाम घिर आई थी, दूर कहीं जय गिरनारी के नाद के साथ जालर बजता हवा सुनाई दे रहा था. सदगुरुदेव को मन ही मन याद किया, एक एक क्षण अपने शिष्यों का किस प्रकार वे ध्यान रखते है, उनके स्नेह और प्रेम के सामने और क्या कर सकता था, बस मन में ही उनको प्रणाम किया और अपने गंतव्य की और चल पड़ा.

****NPRU****

Posted by Nikhil at 1:08 AM 1 comment:
Labels: AAVAHAN

SATURDAY, SEPTEMBER 1, 2012

AAVAHAN - 38

Sadgurudev gave answer to my question and said that after doing sadhna of Ruler god or goddess related to any siddh area, one definitely gets result upon searching in

that area. Abu area –Arbuda, Jammu Kashmir-Shri Vidya, Manali and Dehradun –Shiva and Shakti combined, northern region of Punjab- Aadi Nath, Varanasi-Vishweshwar and Vishaalakshi, in Bengal Ugra Tara, in Assam and north eastern states Kamakhya, Tripur Sundari and Mahakaali, in Gorakhpur, Amarkantak and Jabalpur area Aghoreshwar and Yogini sadhna, in Orissa Sapt Maatrika sadhna, In Gir area Lord Shiva and Valga sadhna, On western coast Haygreev or Kamla Sadhna and person taking special interest in area related to Shri Shail should do upasana of Malikaarjun i.e. Shiva. Through them, possibilities of sadhak getting benefits increase. But first of all it is very much necessary for sadhak to increase level of consciousness. Because without developing inner consciousness, it is not possible to establish contact with outer consciousness. Since siddh area is full of consciousness then if person himself does not possess inner consciousness then how can he feel the consciousness of that area. Acharya Kanaad in his own time has done various discoveries on subject of element and has offered a new dimension to the subject. He has given amazing description relating to five elements in his scriptures Kanaasrahasya

and Kanaadsootra. In composition of every material five element are important. Through this principle, he understood many unknown secrets of universe and put them in midst of common people. Definitely, this principle applies to both physical and subtle aspects. This fact also applies to humans. But subject of his search was on composition of material related to that element. In other words, his search was confined to discovering about the element and what is the role played by them in determining structure of any material or creature or their inner and outer composition. Only five elements are present in all materials, this fact is incomplete since composition of all material or level of consciousness of creature is different from each other. In humans, basis of levels of consciousness does not depend on five elements rather it depends on 12 types of elements. When we talk about level of consciousness or spirituality or establishing contact of inner universe with outer consciousness, then capable transmission of 12 elements is extremely important and this is the first essential procedure. Besides five elements, these elements are Maanas element, Aatm element, Praan element, Time element, Prakash (light)

element, Ooj (Aura) element and Jeev element. These elements are subtle elements. All these have different-different elements embedded in them. Mind is not concrete, it is subtle but for composition of subtle also, some element or the other will be required. Therefore, this element is said to be important base for composition of mind, it is called Maanas Element. Besides this, Praan element related to composition of Praan. Without time, imagination of human is not possible. It is the time element which connects inner and outer time of humans and gives the perception of time. Lightness or darkness or for feeling all elements of creature internally and externally it is necessary that they are visible and the element which is necessary for this beholding is Prakash element. Ooj element is scale for purity. It is the element which take humans towards physical and subtle purity internally and externally or impurity-less basic composition. And Jeev element or Jeev fluid is the purest form of metals contained in human body which provides the capability of creation and life. In ancient times, Maharishi Kapil provided the procedures related to 12 types of elements which are obsolete today. But it is

extremely important for sadhak that sadhak should activate these elements.
Kalps related to all siddh areas contains the description of such sadhnas through which sadhak can attain consciousness. But first of all sadhak should do the sadhna procedure related to element circulation for development of level of consciousness.

For this sadhak should do this procedure for one or four Mondays. Sadhak should take only Havishya Bhoj (only milk and rice should be taken as food).Sadhak should chant "SHIVSHIVAAY NAMAH" for one hour while doing tratak on Parad Shivling. It has to be done alone in night. Side by side, sadhak after doing this procedure should do the Jap of Aghor Mantra as much as possible. This procedure also has to be done while doing Tratak. Sadhak should face North direction and use white dress and aasan. There is no need for any rosary or other articles. Chanting while doing Tratak on Parad Shivling lead to elemental movement in sadhak as a result of which all elements of body starts activating.

After activation of these type of elements, person's life is filled with many divine experiences and he experiences

other-worldly experiences. Pure Parad is the summary element of all elements because it is life-fluid of Shiva through which Shiva does the work of creation, control and movement of universe; it is central point for all origins. Doing tratak on it and chanting definitely leads to attainment of all siddhis. Parad Shivling is not merely Shiva form rather it is combined form of Shiva and Shakti. In this manner, sadhak after attaining the blessings of Shiva and Shakti, attaining siddhis of various Kalps becomes easy. If in normal course also, sadhak does this sadhna then sadhak definitely gets different types of sadhna-related benefits.

==

सदगुरुदेव ने मेरे प्रश्न के सबंध में वृहद उत्तर देते हुवे कहा की किसी भी सिद्ध क्षेत्र से सबंधित अधिष्टात्री देवी देवता की साधना उपासना करने के बाद उस क्षेत्र में खोज करने पर निश्चय ही परिणाम प्राप्त होते है. आबू क्षेत्र– अर्बुदा, जम्मू कश्मीर – श्रीविद्या, मनाली तथा देहरादून – शिव शक्ति सम्मिलित, पंजाब के उत्तर क्षेत्र – आदिनाथ, वाराणसी – विश्वेश्वर तथा विशालाक्षी, बंगाल में उग्रतारा, आसाम में तथा उत्तरीपूर्व राज्यों में कामाख्या तथा त्रिपुरसुंदरी तथा महाकाली, गोरखपुर अमरकंटक तथा जबलपुर के क्षेत्र में अघोरेश्वर तथा योगिनी साधना, उडीसा में सप्त मात्रिका साधना, गिर क्षेत्र में भगवान शिव तथा वल्गा साधना, पश्चिमी घाट में हयग्रीव या कमला साधना, तथा श्रीशैल से सबंधित क्षेत्र में विशेष रुचि लेने वालो को भगवान मलिकार्जुन अर्थात शिव उपासना करनी चाहिए. इसके माध्यम से साधक को लाभ प्राप्ति की संभावनाए और भी बढ़ जाती है. लेकिन सर्व प्रथम साधक के लिए यह बहोत ही ज़रुरी है की वह अपने चेतना स्तर का विकास करे. क्यों की बिना आतंरिक चेतना के विकास के बाह्य चेतना से सबंध स्थापित करना संभव नहीं है. क्यों की सिद्ध क्षेत्र तो पूर्ण चेतना बद्ध होता है जब व्यक्ति खुद ही आतंरिक चेतना विहीन होगा तो वह उस क्षेत्र की चेतना को अनुभव कर भी केसे सकेगा. आचार्य कणाद ने अपने काल में तत्व विषय में विभिन्न खोज कर उस विषय को एक नया आयाम दिया था. पञ्चतत्वों के सबंध में उनके ग्रन्थ कणादरहस्य तथा कणादसूत्र में उन्होंने अद्भुत व्याख्या दी है. सर्व पदार्थो के बंधारण में पञ्च तत्व ही मुख्य होते है यह सिद्धांत के माध्यम से

उन्होंने ब्रह्माण्ड के कई अज्ञात रहस्यों को जाना तथा जनमानस के मध्य में रखा. निश्चित रूप से सभी स्थूल तथा सूक्ष्म के ऊपर यह सिद्धांत लागू होता ही है. मनुष्य के सबंध में भी यही तथ्य मूल रूप से है. लेकिन उनकी खोज का विषय तत्व सबंधित पदार्थ के बंधारण के ऊपर था अर्थात उनकी खोज का दायरा तत्व तथा उसका कार्य किस प्रकार से किसी भी पदार्थ की या जिव के बंधारण में या उनके बाह्य तथा आतंरिक संरचना में कार्य करता है यह था. लेकिन सभी पदार्थ में यह पञ्च तत्व ही मात्र है यह बात अधूरी है. क्यों की सभी पदार्थ बंधारण या जिव का चेतना स्तर अलग अलग होता है. मनुष्य में चेतना स्तर का आधार मात्र पञ्च तत्वों पर नहीं बल्कि बारह प्रकार के तत्वों से होता है. जहां पर बात चेतना स्तर की हो या आध्यात्म की हो या आतंरिक ब्रह्माण्ड का बाह्य ब्रह्माण्ड से संपर्क स्थापित करने की हो वहाँ पर साधक के बारह तत्वों का योग्य संचारण नितांत आवश्यक है तथा यह प्रथम अनिवार्य प्रक्रिया है. पञ्च तत्वों के अलावा ये तत्व है मानस तत्व, आत्म तत्व, प्राण तत्व, समयतत्व, प्रकाशतत्व, ओज़ तत्व, तथा जिव तत्व. यह सब तत्व सूक्ष्म तत्व है इन सब में भी अलग अलग तत्व समाहित है. मन ठोस नहीं है, मन सूक्ष्म है लेकिन सूक्ष्म की संरचना में भी कोई न कोई तत्व तो चाहिए ही, इस लिए इस तत्व को मन की संरचना का मुख्य आधार है उसे मानस तत्व कहा गया है. इसके अलावा प्राण संरचना से सबंधित प्राण तत्व, समय के बिना मनुष्य की कल्पना भी संभव नहीं है मनुष्य के आतंरिक तथ्य बाह्य समय को जोड़ने वाला तथा समय का बोध देने वाला समय तत्व है. प्रकाश या अंधकार या जिव के सभी तत्वों को आतंरिक या बाह्य रूप से अनुभव करने के लिए उसका द्रश्यमान होना ज़रुरी है तथा यह जो निहारने की प्रक्रिया के लिए जो अनिवार्य तत्व है वह प्रकाश तत्व है, ओज तत्व विशुद्धता का प्रमाण है जो की मनुष्य को आतंरिक तथा बाह्य रूप से स्थूल तथा सूक्ष्म शुद्धि; या अशुद्धि विहीन मूल बंधारण की तरफ ले जाने वाला तत्व है. तथा जिव तत्व या जिव द्रव्य शरीर में निहित धातुओ का विशुद्ध स्वरुप है जो की मनुष्य में जीवन की तथा सर्जन की अनन्य क्षमता प्रदान करता है. पुरातन काल में महर्षि कपिल ने १२ प्रकार के तत्वों से सबंधित क्रियाए प्रदान की थी जो की आज लुप्त है. लेकिन साधक के लिए यह नितांत आवश्यक है की साधक इन तत्वों को जागृत करे.

सभी सिद्ध क्षेत्रो से सबंधित कल्प में भी एसी साधनाएं वर्णित है जिसके माध्यम से साधक को सहायता की प्राप्ति हो सके. लेकिन साधक को सर्व प्रथम अपने चेतना स्तर के विकास के लिए तत्व संचार से सबंधित साधना क्रम करना चाहिए.

इसके लिए साधक को एक या चार सोमवार को यह प्रक्रिया करनी चाहिए. साधक को हविष्यभोज (भोजन में मात्र दूध तथा चावल को ही लेना) करना चाहिए तथा पारद शिवलिंग पर त्राटक करते हुवे एक घंटा 'शिवशिवाय नमः'का जाप करना चाहिए. यह कार्य रात्री में एकांत में होना चाहिए. इसके साथ ही साथ साधक को यह प्रक्रिया करने के बाद जितना संभव हो अघोर मंत्र का जाप करना चाहिये यह प्रक्रिया भी साधक को त्राटक करते हुवे करनी चाहिए. साधक को उत्तर दिशा की तरफ बैठ कर यह क्रिया करनी चाहिए तथा सफ़ेद वस्त्र और आसान का प्रयोग करना चाहिए. इसमें किसी भी प्रकार की माला या दूसरे पदार्थो की कोई अनिवार्याता नहीं है. पारद शिवलिंग पर त्राटक

करते हुवे जाप करने पर साधक में तात्विक संचलन होने लगता है जिसके फल स्वरुप शरीर के सभी तत्व जागृत होते है. इस प्रकार के तत्व जागृत होने पर व्यक्ति कई प्रकार की अलौकिक अनुभूतियों से परिपूर्ण होता है तथा साधक को कई परालौकिक अनुभवों की प्राप्ति होती है. विशुद्ध पारद निश्चित रूप से सभी तत्वों का सार तत्व ही है. क्यों की जो शिव का जिव द्रव्य है, जिसके माध्यम से शिव सृष्टि का कार्य, नियमन, संचलन करते हो, जो सर्व उत्पति का केन्द्र बिंदु है, उसके ऊपर त्राटक के साथ जाप करने पर निश्चय ही सर्व सिद्धि की प्राप्ति होती ही है. पारद शिवलिंग मात्र शिव स्वरुप न हो कर शिव शक्ति का सम्मिलित स्वरुप है. इस प्रकार साधक को शिव तथा शक्ति का आशीर्वाद प्राप्त करने पर विभिन्न कल्पों की सिद्धि प्राप्त करना सहज हो जाता है. यूँ भी अगर साधक इस साधना को सम्प्पन करता है तो साधक को निश्चित रूप से कई प्रकार के साधनात्मक लाभों की प्राप्ति होती है.

AAVAHAN - 37

Sadgurudev told about the guardian of Siddh area that they are those Mahasiddhs who contribute to ensure that Tantra is not used wrongly, this Vidya does not reach unsuitable persons and capable and suitable sadhaks could be helped in attaining knowledge. Their aim of life is only this that sadhaks doing sadhna in siddh area and siddhs residing in these areas does not face any type of problem, they continuously work towards it.I asked that but why they prefer this type of life, Why they prefer this type of work instead of doing sadhna to develop their own spiritual levels? Sadgurudev answered me and said that these guardians are not ordinary sadhaks, rather only those who have won over their internal and external powers are given this position. Generally it is not that somebody himself assumes as Guardian. There is one hidden monastery in Himalaya which is under Divy Sthan (divine place), through this monastery all siddh areas are controlled. After the permission of ruler of this monastery only, position of guardian is given to any siddh. For these, two ethical rules are followed. Sadhak should be willing to do this type of work and he should have blessings and orders of his Gurudev. In this manner, such siddhs dedicate their application. The chosen person has to fulfil responsibility to make secure Siddh areas for fixed time interval. After this time interval, they can continue with their own sadhna and spiritual practice. But if any feeling of ego, craving or benefit arises in sadhak on this position, then it is assumed that he has deviated from path and rule is to boycott him. However, such cases has never happened .When I asked about the duration then Sadgurudev answered that this duration can be of 1,11,21,51,101,201,501 years. Duration does not matter to these siddhs, for them it is their opportunity to serve. It is medium to attain blessings of Mahasiddhs and their affection towards their small brothers to help them. In reality, such guardian sadhaks are adorable. They may be few hundred years old but they fulfil this responsibility for hundreds of years without any ego. When I asked how they fulfil such sensitive responsibility, Sadgurudev answered that every siddh upon becoming guardian gets one particular procedure. Guardian of every siddh area wears one lengthy white-coloured garment

as dress and they do not keep any sect-related sign with them. They do not make any Sadhan sign on their body. The basic fact underlying all this is that any type of impulse or selfish feeling does not arise in them. They are only directed to only contact special siddhs and ruler of siddh areas and following their orders. Then according to their directions they can help any sadhak or they manifest themselves when some procedure is done according to Kalp. In this manner, they continuously work.

Question arose in my mind…..according to Kalpas? Sadgurudev probably read my mind and said further that relating to every siddh areas there are various mantric and tantric procedures and by doing such procedures all secrets of siddh world is attained by sadhak. These may be rare material/article related to siddh area, any chemical, any siddh stone, and siddh place or darshan benefit of siddhs. Group of these definite mantric and tantric procedures of particular siddh area is called Kalp. Such kalps exist in form of tantra scriptures or such Kalp secrets are attained from other siddh places/monasteries or siddh ashrams. In shishya tradition, these Kalpas have been made safe after writing them which are available even today with many siddhs and hidden monasteries.(After searching in this field, descriptions and prayogs are found related to siddh area near Shri Shail in some Rasayan scriptures. Besides this, some prayogs of Girnari Kalp related to Gir siddh areas are found in one ancient manuscript. Besides it, after getting few pages of Girnar Kalp I had written them and Kalp of Arbuda goddess related to Abu siddh area are safe in hands of Peethadheeshwar of Bhuvneshwari Peeth Shri Maharaj.Description of siddh area nearby Kedarnath is found in Rudryaamal, which is known by the name of Kedar Kalp. Its manuscript was in Kolkata; presently this manuscript is kept safely in Nepal's state library.Desription of Arunachaleshwar Kalp related to siddh area of Arunachal Pradesh and Kaamrooprahasya related to siddh area nearby Kamakhya is found from many siddhs but now these are obsolete. The underlying facts or Kalp related to such areas can be found upon searching. Every procedure mentioned in all these is precious then diamond piece for sadhak. I will try to give full description upon this subject).In such Kalpas, procedures are given relating to aavahan of siddhs. Upon doing these procedures, siddh i.e. guardian of area are directly manifested in front of sadhak and they guide the sadhak. Here it is about guidance, not about help. Because it is discovery, it is test for sadhak, one type of sadhna. Therefore sadhak gets guidance, but he has to help himself on his own. But those sadhaks are very few who attain these types of secrets and attain many types of siddhis easily.

After listening to all this, my getting enthusiastic was quite natural. Then I asked Sadgurudev that who are the god-goddess whose sadhna should be done by sadhak and how it should be done in order to get assistance in search of such Kalps?

==

सिद्ध क्षेत्र के संरक्षक के बारे में सदगुरुदेव ने बताया की यह वे महासिद्ध होते है जो तंत्र के दुरुपयोग या अयोग्य व्यक्ति तक यह विद्या ना पहोचे तथा योग्य और अधिकारी साधको तक विद्या प्राप्ति में मददरूप हो सके इस कार्य हेतु अपना योगदान देते है. उनके जीवन का उद्देश सिर्फ यही रहता है की सिद्ध क्षेत्र में साधनारत साधक तथा निवास करने वाले सिद्धो को किसी भी प्रकार की कोई समस्या ना आये, इस हेतु वह निरंतर गतिशील रहते है. मेने

पूछा की लेकिन वह इस प्रकार की जीवन क्यों पसंद करते है, क्या वे साधना में गतिशील रह कर अपने आध्यात्मिक स्तर का विकास करने की वजाय ऐसा कार्य क्यों करना पसंद करते हैं? इसके उत्तर में सदगुरुदेव ने बताया की इसे संरक्षक कोई सामान्य साधक नहीं होते, वरन जिन्होंने आतंरिक शक्तियों तथा बाह्य शक्तियों पर पूर्ण विजय प्राप्त की हो उनको इस प्रकार के पद पर आरूढ़ किया जाता है. वस्तुतः ऐसा नहीं है की कोई भी अपने आप को संरक्षक बना दे. हिमालय में स्थित एक गुप्त मठ है, जो की दिव्य स्थान के अंतर्गत है, उस मठ के द्वारा सभी सिद्ध क्षेत्रो का नियंत्रण किया जाता है. उसी मठ के अधिष्ठात्र की अनुमति बाद ही संरक्षक का पद किसी सिद्ध को दिया जाता है. इसके लिए दो मर्यादा का पालन होता है, एक साधक स्वेच्छा से इस प्रकार के कार्य के लिए तैयार हो तथा उनके गुरु की आज्ञा तथा आशीर्वाद हो. इस प्रकार ऐसे कई सिद्ध अपने आवेदन का समर्पण करते है, योग्य व्यक्ति को नियत काल या समय के लिए सिद्ध क्षेत्रो की रक्षा का उत्तरदायित्व निर्वाह करना रहता है. इसके बाद वापस से वह अपने साधन तथा अभ्यास में गतिशील हो सकते है. हाँ, साधक को ऐसे पद पर रहने पर किसी भी प्रकार का दंभ, लालसा या लाभ की पिपासा जागृत होती है तो उसे पथभ्रष्ट माना जाता है तथा उसका बहिष्कार किया जाए ऐसा नियम है, हालाँकि ऐसा कभी हुआ नहीं. मेरे पूछने पर की यह अवधि कितनी होती है इसके उत्तर में सदगुरुदेव ने कहा की यह अवधि १, ११,२१, ५१, १०१, २०१, ५०१ साल की भी हो सकती है. उन सिद्धो के लिए अवधि का कोई महत्त्व नहीं है, उनके लिए यह सेवा का अवसर है. महासिद्धो की कृपा प्राप्ति का साधन है तथा अपने अनुजो की मदद करना स्नेह समर्पण है. वास्तव में ऐसे संरक्षक सिद्ध वन्दनीय होते है, आयु से भले ही वह खुद कई सो वर्ष के हो, दंभ रहीत, स्वभाव से निश्छल हो कर वह अपना उत्तरदायित्व सेंकडो सालो तक निभाते रहते है. मेरे पूछने पर की वह इसका अत्यंत ही संवेदनशील उत्तरदायित्व का निर्वाह किस प्रकार करते है, सदगुरुदेव ने बताया की हर एक सिद्ध को संरक्षक बनने पर अपना क्रम मिलता है, सभी सिद्ध क्षेत्रो के संरक्षक एक लंबा सफ़ेद रंग का चोगा वस्त्र के रूप में धारण करते है, तथा अपने पास सम्प्रदाय जन्य कोई भी बाना या निशानी नहीं रखते है. किसी भी प्रकार के साधन निशान अपने शरीर पर नहीं बनाते है. इन सब के मूल में यही तथ्य मात्र है की किसी भी प्रकार से उनमे कोई भी उद्वेग ना आये या स्वार्थ जेसे भाव मानस में उत्प्पन हो ही नहीं. उसे मात्र विशेष सिद्धो से तथा नियत सिद्ध क्षेत्र के अधिष्ठात्र से ही संपर्क करने का तथा आज्ञा पालन का आदेश होता है तथा उनके निर्देशानिसार वह किसी भी साधक को मदद कर सकते है या फिर या फिर कल्पों के अनुसार क्रिया करने पर वह उपस्थित होते है. इस तरह वे निरंतर गतिशील रहते है.

मेरे मानस में प्रश्न आया ...कल्पों के अनुसार? सदगुरुदेव ने सायद मन ही मन मेरी बात को भांप गए तथा अपनी बात आगे बढाते हुवे कहा की सभी सिद्ध क्षेत्रो से सबंधित विविध तांत्रिक मांत्रिक प्रक्रियाए होती है, तथा एसी प्रक्रियाओ को करने पर सिद्ध जगत के सभी रहस्य साधक को प्राप्त हो जाते है, चाहे वह सिद्ध क्षेत्र से सबंधित दुर्लभ पदार्थ या सामग्री हो, रस-रसायन हो, सिद्ध पत्थर हो, सिद्ध स्थान हो, या सिद्धो के दर्शन लाभ हो. एक क्षेत्र के यही निश्चित तांत्रिक मांत्रिक प्रक्रियाओ के समूह को कल्प कहा जाता है, ऐसे कई कल्प तंत्र ग्रंथो के रूप में विद्यमान है या फिर दूसरे सिद्ध स्थान या मठ तथा सिद्ध आश्रमो में गुरु मुखी प्रणाली से ऐसे कल्प रहस्य की प्राप्ति होती थी. शिष्य परंपरा में ऐसे कई कल्पों को लिख कर सुरक्षित कर दिया है जो की कई सिद्धो के पास तथा गप्त मठो में आज भी मिल सकते है. (इस क्षेत्र में खोज करने पर कुछ रसायन ग्रंथो में श्रीशैल के आस पास के सिद्ध क्षेत्र से सबंधित कई प्रयोग तथा विवरण प्राप्त होते है, इसके अलावा गिर सिद्ध क्षेत्र से सबंधित गिरनरी कल्प के कुछ प्रयोग एक प्राचीन पांडुलिपि में देखने को मिले थे, इसके अलावा गिरनार कल्प के कुछ पन्ने प्राप्त होने पर उसे लिख लिया था तथा आबू सिद्ध क्षेत्र से सबंधित अर्बुदा देवी का कल्प भुवनेश्वरी पीठ के पीठाधीश्वर श्री महाराज जी के पास सुरक्षित था. केदारनाथ के आस पास के सिद्ध क्षेत्र से सबंधित रुद्रयामल में विवरण मिलता है, जो की केदार कल्प के नाम से वर्णित है, इसकी भी पाण्डुलिपि कलकत्ता में थी, वर्त्तमान में इसकी पांडुलिपि नेपाल के राजकीय पुस्तकालय में सुरक्षित है. अरुणाचल प्रदेश के सिद्ध क्षेत्र से सबंधित अरुणाचलेश्वर कल्प तथा कामाख्या के आस पास के सिद्ध क्षेत्र से सबंधित कामरूपरहस्य का विवरण कई सिद्धो से मिलता है लेकिन अब यह अप्राप्य है. ऐसे सभी क्षेत्र से सबंधित कोई न कोई आधारभूत तथ्य या कल्प खोज करने पर मिल सकते है. निश्चित रूप से इन सब में वर्णित

एक एक प्रक्रियाए हीरक खंड से भी ज्यादा मूल्यवान है साधक के लिए, इस विषय ऊपर कभी पूर्ण विवरण देने का प्रयास करूँगा) ऐसे ही कल्पों में सिद्धो के आवाहन की प्रक्रियाए दी होती है, यह प्रक्रियाए करने पर सिद्ध अर्थात क्षेत्र संरक्षक साधक के सामने प्रत्यक्ष प्रकट होते है तथा साधक का मार्गदर्शन करता है, बात सिर्फ मार्गदर्शन की है, सहायता की नहीं. क्यों कि यह तो खोज है, साधक की कसोटी है, एक प्रकार की साधना ही तो है. इस लिए साधक को मार्गदर्शन मिलता है, सहायता तो उसे खुद ही अपनी करनी पड़ेगी. लेकिन कोई विरले साधक ही होते है जो इस प्रकार के पूर्ण रहस्यों की प्राप्ति कर लेते है तथा कई प्रकार की सिद्धियों को सहज प्राप्त कर लेते है.

ये सब सुन कर दिल में उत्साह का संचार होना स्वाभाविक ही है फिर मेने सदगुरुदेव से पूछा की साधक को ऐसे कल्पों की खोज में सहायता मिले उसके लिए किस प्रकार और किस देवी देवता से सबंधित साधना उपासना करनी चाहिए?

SARVA JAN ANUKUL SARVA MOHAN KARAK YENTA SADHANA

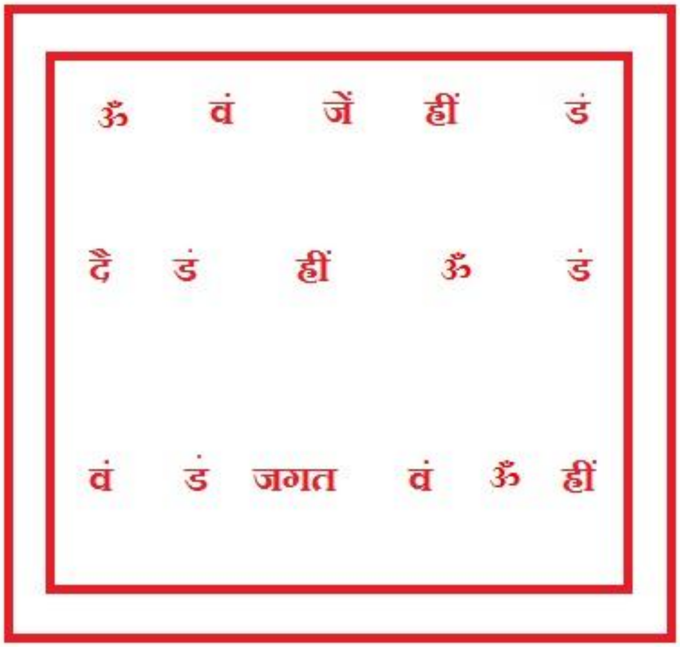

सर्व जन अनुकूल सर्व मोहन यन्त्र

Every person wants to be famous, to get respect in the society, wherever he goes, people want his company and he is the deserving candidate for getting all the affection. But how this is possible whereas everywhere only one quality has been given all the consideration i.e. money.
Sadgurudev has said in one cassette that few years before independence, person having very high character or possessing

knowledge got all the respect and recognition of the whole society. Even rich to rich person used to respect that person. Now what has happened is that money has taken the place of character. There is no special change but…..due to it, prevailing condition of society and what has happened, this is well known to you and me.
But this state cannot be achieved by attaining money in one or two months. Now the alternative left is to do Mohan or Vashikaran prayog on someone….but on how many person this prayog can be done since we daily come across so many persons in our life.
So why not do one sadhna process which automatically creates attraction automatically within us. People see us and automatically become favorable. They do not create any problem without any reason and favor us .If such thing happens; it is no less than any miracle…..
But for this, we have to do so many sadhna. However, it is not about running away from sadhna. Sadgurudev has made many of us do so many high-order prayogs .Some of them like Brahmand Vashikaran prayog, Sampurna Charachar Vashikaran Prayog, such prayogs which were done by Lord Shri Krishna and Lord Buddha and they brought entire world under their

control. But we considered only this prayogs as normal and there may be lack of trust too…..This was our shortcoming. But now is the time to understand these prayogs.
But today when there is shortage of time then yantra sadhnas can prove to be boon for us, if we do it with full trust.
Rules for making this yantra are like this.

- This can be created on any auspicious day or festival.
- This yantra can be made only on Bhoj Patra.
- Take bath in Morning and wear clean clothes..then do this work.
- Yellow dress and aasan will be more appropriate .North direction will be appropriate.
- Mixture of Red Sandal, Gorochan, Keshar and Kasturi should be used as ink for writing on yantra.
- Use the stick of Jasmine for making yantra.
- Worship it for 3 days after making yantra.
- Remain celibate for these three days.

After that, keep this yantra in amulet of triloh and wear it on your arm.As long as you wear this yantra, you can feel its affect automatically.
Now worship the yantra by dhoop and deep for 3 days. How to do Sadgurudev Poojan, chanting Guru Mantra and doing Nikhil Kavach necessarily in both beginning and end is well known to everyone. There is no point repeating it.
==

हर व्यक्ति चाहता हैं की वह लोक प्रिय हो, समाज मे उसका आदर हो ,वह जहाँ जाए लोग उसके सानिध्य मे रहना चाहे और सभी के स्नेह का पात्र हो .पर कैसे यह संभव हो जबकि चारो तरफ अब सिर्फ एक गुण का ही परिचम लहरा रहा हैं और वह हैं धन ...

सदगुरुदेव एक केसेट्स मे कहते हैं की आजादी के चंद साल पहले तक जिनका भी चरित्र उच्च रहता था या था या होता था , ज्ञानवान भी रहा तो वह पुरे समाज का स्वत ही आदर का पात्र रहा , धनी से धनी व्यक्ति भी उसका आदर करता था , अब बस इतना हो गया हैं की चरित्र की जगह धन ने ले ली हैं .कोई खास बदलाव नही हैं पर .. इस कारण समाज मे आज जो कुछ हैं या जो हुआ हैं वह हम और आप जानते समझते हैं .

पर एक दिन या महीने मे तो धन लाकर यह अवस्था नही लायी जा सकती हैं . तो अब दूसरा रास्ता बचता हैं की किसी पर मोहन या वशीकरण प्रयोग करे ..पर कितनो पर यह प्रयोग किये जा सकते हैं जबकि दिन प्रतिदिन के जीवन मे अनेको लोगों से मिलना होता हैं .

तो क्यों नही साधना का एक ऐसा विधान कर लिया जाए तो स्वतः हम मे ही आकर्षण पैदा कर दे . लोग हमे देखें और स्वत ही हमारे अनुकूल होते जाए बेवजह हमारे लिए समस्याए न पैदा करें और अनुकूलता भी दे अगर ऐसा होता हैं तो यह भी कोई चमत्कार से कम थोड़ी न हैं .

पर इसके लिए तो कितना न साधना करनी पड़ेगी .हालाकि साधना से बचने की बात नही हैं , सदगुरुदेव जी ने तो एक से एक उच्च कोटि के प्रयोग हमारे मध्य अनेको को सम्पन्न कराये हैं कुछ तो ब्रह्माण्ड वशीकरण प्रयोग , समपूर्ण चराचर वशीकरण प्रयोग ,ऐसे भी प्रयोग जिन्हें भगवान श्री कृष्ण और भगवान बुद्ध ने समपन्न कर के समपूर्ण विश्व को अपने वशीभूत मे कर लिया .पर हम उन प्रयोगों को एक सामान्य सा ही समझते रहे या यूँ कहूँ

की विश्वास की कमी की ऐसा भी हो सकता हैं ...यही हमारी नुय्नता रही . पर अब समय हैं की उन प्रयोगों को समझे .

पर आज जब समय की आत्याधिक कमी हैं तब यन्त्र विधान की साधनाए हमारे लिए वरदान सिद्ध हो सकती हैं यदि पुरे विश्वास के साथ इनको करते हैं .

इस यंत्रके निर्माण के नियम इस प्रकार हैं .

- किसी भी शुभ दिन या पर्व मे इसका निर्माण कर सकते हैं .
- O; oGqsf] ef]hkq d] tof/ s/]

.

- प्रातः काल स्नान करके स्वच्छ वस्त्र धारण करके यह कार्य समपन्न करें.
- वस्त्र और आसन पीले रंग के हो कहीं ज्यादा उचित होगा .दिशा उत्तर की उचित होगी .
- स्याही इस यंत्रलेखन के लिए –लालचंदन ,गोरोचन ,केशर और कस्तूरी से मिला कर बनायी गयी हो .
- यंत्र लेखन के लिए चमेली की लकड़ी का प्रयोग करें .
- यंत्र निर्माण के बाद तीन दिन तक इसका पूजन करना हैं .
- इस दौरान (इन तीन दिनों मे) ब्रम्हचर्य का पालन करे .

इसके बाद इस यन्त्र को त्रिलोह के ताबीज के अंदर रख कर अपनी भुजा मे धा रण कर लेना हैं , जब तक यह यंत्र आप धारण करे रहेंगे तब तक आप इसका प्रभाव स्वत अनुभव करते रहेगे .

अब यंत्र का तीन दिन धूप दीप से पूजन करना हैं और सदगुरुदेव पूर्ण पूजन , गुरू मंत्र का जप किस प्रकार करना हैं और निखिल कवच का सारी प्रक्रिया के प्रारम्भ और अंत मे क्यों अनिवार्य रूप से पाठ किया जाता हैं बार बार लिखने की आवश्यकता नही हैं यह तो सभी आप ,पहले से ही परिचित हैं .

****NPRU****

(कुछ अनुभूत टोटके)KUCHH ANUBHOOT TOTKE

कौऐ का एक एक पूरा काला पंख कही से मिल जाए जो अपने आप ही निकला हो उसे **"ॐ काकभूशुंडी नमः सर्वजन मोहय मोहय वश्य वश्य कुरु कुरु स्वाहा"**इस मंत्र को बोलते जाए और पंख पर फूंक लगाते जाए, इस प्रकार १०८ बार करे. फिर उस पंख को आग लगा कर भस्म कर दे. उस भस्म को अपने सामने रख कर लोबान धुप दे और फिर से १०८ बाद बिना किसी माला के अपने सामने रख कर दक्षिण दिशा की और मुख कर जाप करे. इस भस्म का तिलक ७ दिन तक करे. तिलक करते समय भी मंत्र को ७ बार बोले. ऐसा करने पर सर्व जन साधक से मोहित होते है

मोर के पंख को घर के मंदिर मे रखने से समृद्धि की वृद्धि होती है

गधे के दांत पर **"ॐ नमो कालरात्रि सर्वशत्रु नाशय नमः"**का जाप १०८ बार कर के उसे निर्जन स्थान मे रात्री काल मे गाड दे तो सर्व शत्रुओ से मुक्ति मिलती है.

उल्लू का पंख मिले तो उसे अपने सामने रख कर **"ॐ उल्लुकाना विद्वेषय फट"**का जाप १००० बार कर उसे जिस के घर मे फेंक दिया जाए वहा पर विद्वेषण होता है

आक के रुई से दीपक बना कर उसे शिव मंदिर मे प्रज्वल्लित करने से शिव प्रस्सन होते है, ऐसा नियमित रूप से करने से ग्रह बाधा से मुक्ति मिलती है

धतूरे की जड़ अपने आप मे महत्वपूर्ण है, इसे अपने घर मे स्थापित कर के महाकाली का पूजन कर "क्रीं" बीज का जाप किया जाए तो धन सबंधी समस्याओ से मुक्ति मिलती है

अपने घर मे अपराजिता की बेल को उगाए, उसे रोज धुप दे कर "**ॐ महालक्ष्मी वान्छितार्थ पूरय पूरय नमः**का जाप १०८ बार करे तो मनोकामना की पूर्ति होती है

निर्जन स्थान मे **"प्रेत मोक्षं प्रदोमभवः"**का ११ बार उच्चारण कर के खीर तथा जल रख कर आ जाए ऐसा ३ दिन करे तो मनोकामना पूर्ति मे सहायता मिलती है.

धुप करते समय चन्दन का टुकड़ा ड़ाल कर धुप करने से ग्रह प्रस्सन रहते है

किसी चेतनावान मज़ार पर मिठाई को बांटना अत्यंत ही शुभ माना गया है ऐसा विवरण कई प्राच्य ग्रंथो मे प्राप्त होता है, इससे सभी प्रकारसे उन्नति की प्राप्ति होती है.

===

Take a feather of crow which should not be taken out deliberately.. Take only the one which comes out naturally. Then blow air from mouth on it and chant this mantra

simultaneously **om kaakbhushandi namah sarvajan mohay mohay vashya vashya kuru kuru swaahaa.** Do as this for 108 times. Then burn it and collect ashes of it. Then place ashes in front and give the acense of Loban dhup to it and again chant the same mantra without any rosary facing towards south direction. Then do the tilak of this ash for 7 consecutive days. By doing this you will everyone enamored towards you.

By keeping peacock feather in your worship area it enhances the prosperity in life.

By chanting this mantra **Om namo kaalraatri sarvashatru naashay namah** on donkey's teeth for 108 times and entomb under lonely place can relieve you from all your enemies.

If you found owl feather and then if you chant this mantra **Om ullukana vidhveshay phat** for 1000 times and throw it at away at any house can create malicious in that house.

If you make a lamp from the cotton of calotropis gigantean plant (a medicinal plant) and flamed it at any Lord shiva temple can make him happy. By doing such act the planetary malefic effects would get away.

The root of Harebell keeps quite important in itself, by establishing it in house and worshipping goddess Mahakali and chanting the Beej mantra **Kreem** can relieve you from financial crisis.

Plant the creeping leaves of undefeated plant at your house. Give it incense on daily basis and chant the mantra **Om mahalaxmi vaanchitaarth pooray poray namah** for 108 times can complete your wishes.

At any lonely place just chant this mantra **Pret moksham pradombhavah** for 11 times and keep sweet kheer and water their itself. Do it for three consecutive days will definitely complete your wish.

While incensing use the sandal wood piece and then flame it in house. This will keep your home happy.

At any active shrine or grave place distributing sweets is termed as very auspicious. Well this is mentioned in ancient books also. This leads to progress in many ways.

पंच तत्व अपने आप मे ही महत्वपूर्ण है और यह हमारे आसपास किसी न किसी रूप मे होते ही है. अतः इन तत्वों की अवलेहना भी कई बार विविध स्वास्थ्य सबंधी तथा लक्ष्मी सबंधी समस्याओ को आमंत्रण देता है. अक्सर व्यक्ति छोटी चीजों को भूल कर विविध बड़े बड़े अनुष्ठान करवाने के लिए तैयार हो जाता है. लेकिन अगर व्यक्ति छोटी छोटी चीजों पर ही ध्यान देना शुरू कर दे, तो बड़ी समस्या की पृष्ठभूमि ही नहीं बनेगी. हमारे वेदों ने जब इन तत्वों को देवताओं की संज्ञा दी है तब इनका किसी भी रूप मे अपमान योग्य नहीं है. निचे विविध ग्रंथो से संगृहीत तत्वों से सबंधित कुछ टोटके प्रस्तुत किये जा रहे है.

- घर मे तुलसी का और यथा संभव किसी भी प्रकार का पौधा सुख जाए तो उसे घर मे नहीं रखना चाहिए, यह भूमि तत्व से सबंधित दोष है. इससे घर मे लक्ष्मी तथा स्वस्थ सबंधित समस्याए बढती है. इस प्रकार जब कोई पौधा घर मे सुख जाए तो उसे अपनी मिटटी के साथ ही नदी या समुद्र मे प्रवाहित कर दे.
- अपने घर के मुख्य द्वार के पास स्थिर पानी नहीं रखना चाहिए. यथा संभव मुख्य द्वार के सामने बहार की तरफ भरा हुआ जल स्त्रोत ठीक नहीं है. इससे भी साधक लक्ष्मी से सबंधित समस्याओ से पीड़ित रह सकता है. इसके निवारण हेतु साधक को अपने दरवाज़े पर स्वास्तिक का चिन्ह बनाना चाहिए
- घर मे जहा पर भी पानी लीक हो रहा हो उसे तुरंत ठीक करवा लेना चाहिए. घर मे पानी का टपकता रहना योग्य नहीं कहा जाता तथा ऐसे घर के सभ्यो मे मानसिक रोग की सम्भावना बढ़ जाती है.
- मंदिर की ध्वजा की परछाई अगर किसी घर पर पड़ती हो तो वहा पर पृथ्वी दोष लगता है ऐसा विवरण कई ग्रंथो मे है, ऐसे घर मे रहने वाले व्यक्ति किसी न किसी रूप मे रोग के शिकार होते रहते है. व्यक्ति को अपने घर मे क्षेत्रपाल की स्थापना कर रोज गुड का भोग लगाना चाहिए
- स्मशान के पास गृह होने पर घर के अंदर से जलती हुई चिता को देखने से अग्नि तत्व से सबंधित दोष लगता है. इसके निवारण हेतु साधक को ३ अंजुली जल सूर्य को या तुलसी को चडा कर अग्नि देव से माफ़ी मांगे तथा मृत आत्माओ की मुक्ति के लिए प्रार्थना करे
- सूर्य को सूर्योदय के समय अर्ध्य देना अत्यधिक उत्तम होता है. उस समय " औम घृणी सूर्य आदित्याय सर्व दोष निवारणाय नमः" का ११ बार उच्चारण करने से सभी दोषों से मुक्ति मिलती है
- संध्या काल मे साधक अगर निर्जन वातावरण मे ५ अगरबत्ती पंच तत्वों को याद कर के लगा दे तथा पूर्वजो को मदद के लिए प्रार्थना करे तो सर्व लक्ष्मी तथा स्वास्थ्य सबंधित दोषों की निवृति होती है

- सूर्यास्त के समय अपने जल संग्रह स्थान के पास एक दीप जलने पर आकाश तथा जल स्वास्थ्य सबंधित सर्व दोषों की निवृति होती है
- लक्ष्मी सबंधित गेबी मदद प्राप्त करने के लिए कोई कुवां खोजे और सूर्यास्त मे उसमे से जल निकाले, रात्रि काल मे उस जल से वही पर नग्न हो कर स्नान करे. इसके बाद किसी दरगाह या मज़ार पर मिठाई का भोग लगा कर एक हरा धागा वहा से उठा ले. उस धागे पर "अल्लाहु मदद" का ८८ बार जाप कर के किसी तावीज मे भर कर हाथ या गले मे पहेन ले. और रोज "अल्लाहु मदद" का यथा संभव जाप करे. एक हफ्ते की भीतर मदद प्राप्त होती है. एक हफ्ते बाद तावीज़ को उसी मजार पर चडा दे. जल कुवे का ही होना चाहिए और स्नान वही पर करना है.

==

Five basic elements are very important and they all are present nearby us in one or another form. Therefore sometimes avoiding or neglecting these elements could bring various problems related to health and wealth. Manytime person forgets small things and go for big anusthana. But if one takes care in small trouble, there would be no base to develop big incidents.When our Vedas had given these elements a name of Gods then their insult in any form would never be accepted. Following are the Totka related to these five elements collected from various scriptures.

- There should not be basil plant or possibly anyother plant which is dried inside the house, this is dosha related to Bhoomi tatva. With such thing problems related to health and money will be increase. Such plants when gets dry, should be immersed in river or ocean with mud of it.
- One should avoid possible stagnant water near main door of the house. Possibly one should avoid stagnant water filled especially in exact front of the house. With this person may suffer from the wealth related problems. As a solution, sadhak should make sign of "swastika" on the main door.
- Wherever there is water dripping problem, one should repair it as soon as possible. Dripping water is not good for house and such house members may suffer from the mental disorders.
- If shadow of the any temple's flag take place on the house of any one, this is prithvi dosh such mention could be found in many tantra scirptures, people living in such houses could also suffer from health related issues in one or another form. Person should establish 'kshetrapaal' in the worship place of house and should daily offer jaggery to him as a solution.
- If house is near Seminary ground, one should not look at any death body burning from inside the house, this cause dosha of Agni Tatva. For the solution of this, sadhak should offer 3 times water to the Sun or basil plant and should also apologies lord Agni or fire and pray for the freedom of spirits of deaths.
- It is always better to offer water to sun on the time of sun rise. That time if one chants " Aum Ghruni Sury Aadityaay Sarv Dosh Nivaaranaay Namah" 11 times may gets freedom from every dosha.
- If 5 incent sticks are lighted at the place where there is no humans by remembering 5 basic metals and if prayed to the Ancestor then all the dosha related to health and wealth does receives the solutions.

- At the time of sunset if one lights a lamp at the place where water is kept in the house all the dosha related to aakash and Jal tatva gets solution
- To have the divine help related to wealth one should search for a water-well. At the time of sun set one should take out water from it and at the night time one should bathe there with the same water by being fully naked. After that one should offer some sweets at mosque and get green thread from the same place. One should chant “Allaahu Madad” 88 times on that thread and then should be tied in neck or arm by putting it in taawiz. After that one should chant “allaahu Madad” as much possible daily. One will receive divine help in just 1 week. After 1 week that tawiz should be placed on the same mosque. Condition is Water should be only of water-well and one need to have bath at same place.

Tantra VIjay- 9 (Shabar Hanuman Sadhna)

Jai gurudev all
Hanuman sadhana is one of those fantastic sadhanas which can lead you to the really extra ordinary powers. Hanuman is form of lord siva himself. He is giver of all main siddhis. One of devotee, of such great beloved god, came across a sadhna. He had been tested for 2 and Half years but finally, he got what he wished for. How? Let we know.

The sadhak is roaming across the bank of the famous pond ‘ bramha sarovar’ of kuruksetra. From last few days people are watching him daily 24 hours nearby the ‘ bramh sarovar’ only. Especially in siddh peeth of hanuman, situated on the bank of the same pond. People there have come to know that he is devotee of hanuman.

He started hanuman sadhana from last 2 and half years, but still he is not able to make his wish come true. He got some thrilling experiences during his long long sadhana but is still not able to make it and that is to get lord hanuman before him. Today is a beautiful day. rain has just fallen and scenario is beautiful. He is really amazed for a change in the nature and being ahead to the sadhana peeth of him. its just an noon like something which we wish not le to go, but there was nothing special, he found. in white dhoti, he went to the temple, completes his inicial rituals and starts chanting his mantra, with a great hope that he might get some results today.

After chanting some mantra, he loose conciusness and being lost in his own. Suddenly he feels vibration like an elecricity wire in his spinal cordes and this is being on from last half an hour now. finelly, he unwillinly open his eyes with no control over it. and before he can undesrstand anything, he seens some devine form in front of him, with so much light, this was hanuman. People were watching

him carefully, because not even single peron was aware that people standing nearby are just watching an idol made of stone but he is watching the lord him self. and what siddhis lord not gave him after that. He mentioned about this special process of hanuman sadhana.

there is a direct connection between hanuman and sabar mantra.
Here is one of such rare sadhana, which gives so much things then your expactation,.

One can do the sadhana on any of the tuesday. dress must be red.

The mantra should be chanted for 108 time. more prefrebly continouing the process for next 10 days (total 11 days), Sadhana should be done in night time only (after and guggal pm) dhoop should be lighted.

ओम गुरूजी हनुमानजी कावल कुंडा हाथी खप्पर छडी मसान गुग्गल धुप जाप तेरा, तेरा रूप शाकिनी बांधू डाकिनी बांधू भूत को बांधू अटल को बांधू पाताल टेकरी को बांधू हनुमानजी के रोचना को बांधू ,घर घर जाओ ,ना माने चार गदा लगाओ , जेसे सीता माँ के सतको राखे वैसे मेरे सतको रखो, आवो आवो हनुमान घट्ट पिंड में समाओ हनुमान , हनुमान बेठे रानी आई , गदा बेठी, राजा इतना, अनंत कोटि सिद्धोमे , ओम गुरूजी ओम नमो नारायणाय.

Om guruji hanumanji kaval, kunda, hathi, khappar, chadi, masan, guggal dhoop jap tera, tera roop shakini bandhu, dakini bandhu, atal ko bandhu, paatal tekri ko bandhu, hanumanji ke rochna ko bandhu, ghar ghar jao, na mane char gada lagao, jese sita make satko rakhe vese mere satko rakho, aavo aavo hanuman, ghatt pind me samao hanuman, hanuman bethe, rani aai, gada beithi, raja itna, anat koti siddho me om guruji om namo narayanay

this is powerful mantra and by doing this sadhana, one will feel lord hanuman near by them everytime and they will be saved from all dangers by the grace of lord hanuman.

Jai gurudev

raghunath.nikhil@yahoo.in

अमोघ शिव गोरख प्रयोग (AMOGH SHIV GORAKH PRAYOG)

भगवान शिव का वर्णन करना भी क्या संभव है. एक तरफ वह भोलेपन की सर्व उच्चावस्था मे रह कर भोलेनाथ के रूप मे पूजित है वही दूसरी और महाकाल के रूम मे साक्षात प्रलय रुपी भी. निर्लिप्त स्मशानवासी हो कर भी वह देवताओं मे उच्च है तथा महादेव रूप मे पूजित है. तो इस निर्लिप्तता मे भी सर्व कल्याण की भावना समाहित हो कर समस्त जिव को बचाने के लिए विषपान करने वाले नीलकंठ भी यही है. मोह से दूर वह निरंतर समाधि रत रहने वाले महेश भी उनका रूप है तथा सती के अग्निकुंड मे दाह के बाद ब्रम्हांड को कंपाने वाले, तांडव के माध्यम से तीनों लोक को एक ही बार मे भयभीत करने वाले नटराज भी यही है. संहार क्रम के देवता होने पर भी अपने मृत्युंजय रूप मे भक्तो को हमेशा अभय प्रदान करते है. अत्यंत ही विचित्र तथा निराला रूप, जो हमें उनकी तरफ श्रध्धा प्रदर्शित करने के लिए प्रेम से मजबूर ही कर दे. सदाशिव तो हमेशा से साधको के मध्य प्रिय रहे है, अत्यधिक करुणामय होने के कारण साधको की अभिलाषा वह शीघ्रातिशिघ्र पूर्ण करते है.

शैव साधना और नाथयोगियो का सबंध तो अपने आप मे विख्यात है. भगवान के अघोरेश्वर स्वरुप तथा आदिनाथ भोलेनाथ का स्वरुप अपने आप मे इन योगियो के मध्य विख्यात रहा है. शिव तो अपने आप मे तन्त्र के आदिपुरुष रहे है. इस प्रकार उच्च कोटि के नाथयोगियो की शिव साधना अपने आप मे अत्यधिक महत्वपूर्ण रही है. शिवरात्री तो इन साधको के लिए कोई महाउत्सव से कम नहीं है. एक धारणा यह है की शिव रात्री के दिन साधक अगर शिव पूजन और मंत्र जाप करे तो भगवान शिव साधक के पास जाते ही है. वैसे भी यह महारात्रि तंत्र की द्रष्टि से भी अत्यधिक महत्वपूर्ण समय है. अगर इस समय पर शिव साधना की जाए तो चेतना की व्यापकता होने के कारण साधक को सफलता प्राप्ति की संभावना तीव्र होती है.

नाथयोगियो के गुप्त प्रयोग अपने आप मे बेजोड होते है. चाहे वह शिव साधना से सबंधित हो या शक्ति साधना के सबंध मे. इन साधनाओ का विशेष महत्व इस लिए भी है की सिद्ध मंत्र होने के कारण इन पर देवी देवताओं की विभ्भिन शक्तिया वचन बद्ध हो कर आशीर्वाद देती ही है साथ ही साथ साधक को नाथसिद्धो का आशीष भी प्राप्त होता है. इस प्रकार ऐसे प्रयोग अपने आप मे बहोत ही प्रभावकारी है. शिवरात्री पर किये जाने वाले गुप्त प्रयोगों मे से एक प्रयोग है अमोध शिव गोरख प्रयोग. यह गुप्त प्रयोग श्री गोरखनाथ प्रणित है.

साधक को पुरे दिन निराहार रहना चाहिए, दूध तथा फल लिए जा सकते है. रात्री काल मे १० बजे के बाद साधक सर्व प्रथम गुरु पूजन गणेश पूजन सम्प्पन करे तथा अपने पास ही सद्गुरु का आसान बिछाए और कल्पना करे की वह उस आसान पर विराज मान है. उसके बाद अपने सामने पारद शिवलिंग

स्थापित करे अगर पारद शिवलिंग संभव नहीं है तो किसी भी प्रकार का शिवलिंग स्थापीत कर उसका पंचोपचार पूजन करे. धतूरे के पुष्प अर्पित करे. इसमें साधक का मुख उत्तर दिशा की तरफ होना चाहिए. वस्त्र आसान सफ़ेद रहे या फिर काले रंग के. उसके बाद रुद्राक्ष माला से निम्न मंत्र का ३ घंटे के लिए जाप करे. साधक थक जाए तो बिच मे कुछ देर के लिए विराम ले सकता है लेकिन आसान से उठे नहीं. यह मंत्र जाप ३:३० बजने से पहले हो जाना चाहिए.

ॐ शिव गोरख महादेव कैलाश से आओ भूत को लाओ पलित को लाओ प्रेत को लाओ राक्षस को लाओ, आओ आओ धूणी जमाओ शिव गोरख शम्भू सिद्ध गुरु का आसन आण गोरख सिद्ध की आदेश आदेश आदेश

मंत्र जाप समाप्त होते होते साधक को इस प्रयोग की तीव्रता का अनुभव होगा. यह प्रयोग अत्यधिक गुप्त और महत्वपूर्ण है क्यों की यह सिर्फ महाशिवरात्री पर किया जाने वाला प्रयोग है. और इस प्रयोग के माध्यम से मंत्र जाप पूरा होते होते साधक उसी रात्री मे भगवान शिव के बिम्बात्मक दर्शन कर लेता है. एक ही रात्रि मे साधक भगवान शिव का आशीर्वाद प्राप्त कर सकता है और अपने जीवन को धन्य बना सकता है. अगर इस प्रयोग मे साधक की कही चूक भी हो जाए तो भी उसे भगवान शिव के साहचर्य की अनुभूति निश्चित रूप से होती ही है.

It is almost impossible to describe lord Shiva in the words. On one side he is on holder of maximum innocence in the universe with his worshiping form of Bholenath where as on the other hand he is Holocaust in the form of Mahakala. With complete unattached mind, living in seminary he is higher in the category of the gods and worshiped as Mahadeva. But with this nonattachment is also followed by feelings of complete welfare of mankind and thus the one who drunk the poison to save universal belongings is worshiped as nilkantha. His forms also include Mahesha who stays in Samadhi constantly with no amount of enchantment. And the one who thrilled whole universe when sati went to Agni Kunda, the one who can make fear all the three worlds with Taandava, the Nataraj also belongs to him. While being god of the destruction, he also provides fearlessness from these to his devotees in the form of Mrutyunjaya. His form is so unique and strange that always force us with love to devote our self towards him. Sadaashiv has always remained famous among sadhaka, being complete pitiful he sooner provides the desired results to sadhaka.

Relation of Shaiva sadhana and NathYogis has remained famous. Agoreshwar and aadinaath Bholenaath form of the god has remained famous among these Yogis. Shiv is provider of tantra. This way shiva sadhana of higher NathYogis has remained very important. Shiv raatri is one of the biggest days for this sect. This is a belief that anyone who do poojan and mantra chantings of the lord shiva on shivaratri, lord shiva will for sure visit that place. On other side, time of MahaShivaratri is also very important on the tantra point of view. If shiva sadhana is done on this particular time then because of the higher energy flow, possibilities to have accomplishments remain at its maximum.

The secret rituals of NathYogis are imcomparable. Rather it belongs to Shiva sadhana or shakti sadhana. These sadhana consist big importance because of being siddha mantra, various gods and goddesses bliss the sadhaka bounded by the promises with that sadhak also receives

blessings of Nath Siddhas. This way such prayogs are very effective. One of such prayog, done on shivratri is Amodh Shiva Gorakh Prayoga. This prayoga was formed by Shri Gorakshnaath. Sadhak should not have food in day time but can have milk and fruits. In the night time after 10PM one should do guru poojan followed by ganesha poojan and one should spread aasana for the guru imaging his presence on it, just near to the aasan of one's self. After that sadhak should establish paarad shivalinga in front if that is not possible one may establish any shivalinga and do panchopachaar poojan. Flowers of Dhatoora should be offered. Direction should be north. Cloths and aasan should be either white or black in color. After poojan process one should chant following mantra for 3 hours. If sadhak feels tired then one can take rest for few minutes inbetween but sadhak should not stood up from the aasana. This mantra chantings should be completed before 3:30AM.

Om Shiv Gorakh Mahaadev Kailaash se aao bhoot ko laao palit ko laao pret ko laao raakshas ko laao aao aao dhooni jamaao shiv gorakh shambhoo siddh guru ka aasan aan gorakh siddh ki aadesh aadesh aadesh

When mantra jaap is about to get over sadhak will feel the intensity of the mantra force. This process is very secret and important because this process could be done on Mahashivaraati Only. And with This prayog while mantra chantings is about to get over, sadhak gets glimpses of lord shiva. In one single night sadhak can have blessings of lord shiva and can bliss his whole life. If sadhak makes any minor mistakes in this process then too he will feel the presence of lord shiva for sure.

Tantra Vijaya-11 Shabar Mahalaxmi Sadhana(To generate maximum wealth)

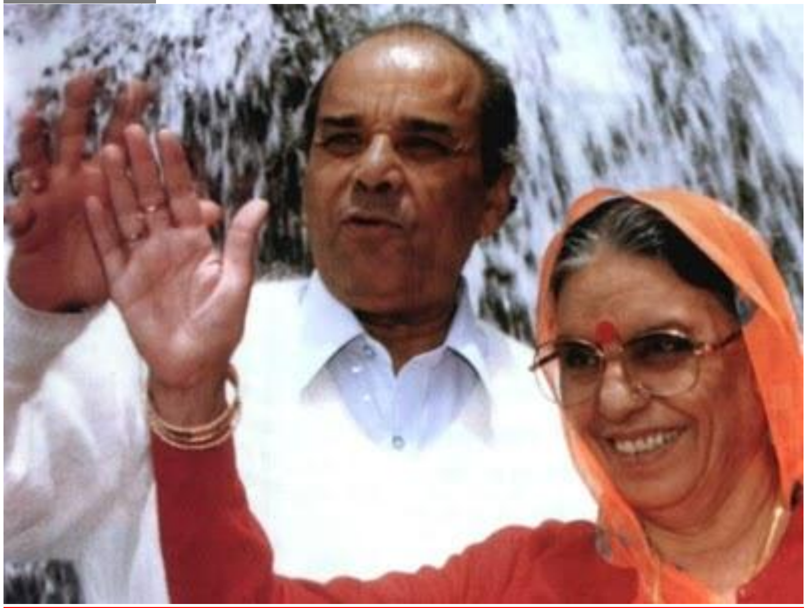

Dhamarthkamaynamah (धर्मार्थकामायनमः). Since the civilization took deep roots in spirituality thousands year before, this sentence has remained important for the great spiritual living. When we go through our great ancient scriptures, it has been mention that if a person is not able to get ride on his poorness, the one would not be able to live a great spiritual life. The one who wants to attain the higher spiritual level termed as Moksha, one needs to go through with Dharma arth kama first.

It is complete fact that without wealth, the life of everyone becomes very problematic, rather we talk about materiality or we speak from the spiritual point of view. If we go to history, we can understand, how much importance, wealth had generated from our ancient sages even. The aashama of vasistha or visvamitra had always remained full of wealth.

But what about those, who are not actually wealthy? Wealthy does not only mean money only. Wealth means to receive money from a good source, to establish the money, to generate money though good did, to have a reputation, to live a good life without diseases. In the field of sadhanas, Mahalaxmi is believed to be the goddess of wealth and there are many solutions to get her blessing.

When I was being ahead in the field of sadhanas through shabar Mantra, I came across the sadhana which can get you a complete wealth.

The sadhana is simple. One should start the sadhana from Friday. Daily one rosary of the mantra should be receited. Repeat the process for next 10 days (total 11 days).
Light a ghee lamp in front of mahalaxi picture. 'Kamalgatta rosary' should be taken into use for this sadhana.
Direction should be north. One should take sankalp before staring a sadhana indicating that ' I (your name) am doing this sadhana to get blessing of Mahalaxmi and solve my wealth problem. I request her to establish herself into me and make my life a wealth living. '
One should then chant 1 rosary of the following mantra.

श्री शुकले महाशुकले महालक्ष्मी नमो नमः लक्ष्मीमाई सत् कि सवाई आवो चेतो करो भलाई भलाई ना करो तो सात समुद्रों कि दुहाई रिद्धि सिद्धि खोवाई तो नव नाथ चोरास्सी सिद्धो कि दुहाई

(shri shukale maha shukale mahalaxmi namo namah laxmi mai sat ki savai aavo cheto karo bhalai bhalai na karo to saat samudro ki duhai riddhi siddhi khovai to nav nath chorassi siddho ki duhai)

After this sadhana, one will feel how life gets various turning points. Mahalaxmi make his way clear to generate maximum wealth and invisibly keep on guiding him/ her. Go ahead with gurudev's blessings.

FOR MORE UPDATES
OF
(Alchemical files and Mantras RELATED TO POST)
PLZ JOIN
YAHOOGROUPS